धीरे बहो दोन रे...

रूस में बदलती संस्कृति के चित्रण का –

महान्, मानवीय उपन्यास

मिखाइल शोलोखोव

अनुवादक :
गोपीकृष्ण 'गोपेश'

तृतीय खण्ड

राजकमल प्रकाशन

धीरे
वहे
दोन रे…
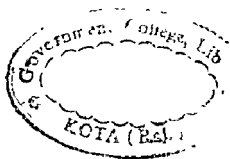
हमारी धरती पर हलों की लीकें नहीं हैं···
हमारी धरती पर घोड़ों की टापों के निशान हैं—
और
हमारी धरती में बीज नहीं,
कज्जाकों के शीश बोए जाते हैं।
हमारा शान्त दोन-नद जवान बेवाओं से जवान है—
हमारे दोन-नद के प्रदेश में फूल नहीं,
यतीम फूलते हैं—
शान्त दोन की लहरों में
हमारे पिताओं और माताओं के आँसू तरंगित हैं !
ओह, दोन-नद !
ओह, पिता दोन-नद—
तुम बहते हो तो तुम्हारी धार
इतनी गँदली क्यों होती है ?
लेकिन दोन-नद,
मेरी लहरियाँ इतनी गँदली भला क्यों हों ?
मेरी गहराइयों से शीतल सोते फूटते हैं—
मेरे अन्तराल में, शान्त दोन,
रुपहली मछलियाँ उछलती हैं।

—एक पुराना कज्जाक गीत

भाग : ३

: १ :

१९१८ की अप्रैल में दोन-प्रदेश के बीच एक बड़ी दरार-सी पड़ी। खोपर, उस्त-मेदवेदित्सा और ऊपरी दोन के पानी से हरे रहने वाले उत्तरी ज़िलों के कज्ज़ाक, लाल-गार्दों की पीछे हटती टुकड़ियों के साथ, अपनी आगे की पंक्ति से पीछे हट गये। दूसरी ओर, निचले ज़िलों के कज्ज़ाक उन्हें प्रदेश की सीमाओं की ओर खदेड़ने और ठेलने लगे।

खोपर ज़िले का एक-एक कज्ज़ाक लाल-गार्दों में शामिल हो गया। उस्त-मेदवेदित्स्काया ज़िले के लगभग आधे कज्ज़ाकों ने खोपर ज़िले के कज्ज़ाकों का साथ दिया। पर, ऊपरी दोन-क्षेत्र के थोड़े ही कज्ज़ाक उनके साथ जा सके।

यों यह दरार पूरी तो हुई १९१८ में, पर इसकी शुरुआत हो गई थी सैकड़ों साल पहले। उस समय उत्तर के कज्ज़ाक बाकी कज्ज़ाकों से कहीं गरीब थे। न उनके पास उपजाऊ ज़मीनें थीं, न अंगूर के बागान, न कीमती शिकारगाहें और न मछली शिकार के की जगहें। ये लोग जब-तब ही चेरकास्सक से अपना नाता तोड़ लेते थे और मनमाने ढंग से महान् रूस के ज़िलों में उतर आते थे। स्तेन्का-राज़िन के ज़माने से सभी बागी आम तौर पर उन्हीं के बीच से उभरे थे। वे खास तौर पर उन्हीं की ताकत पर नाचते थे।

और, इसी समय नहीं, बल्कि बाद में भी खुल्लमखुल्ला विरोध दोन के मात्र उत्तरी ज़िलों के कज्ज़ाकों ने ही किया। यानी, जब सारा प्रदेश

ज़ार की तानाशाही से रौंदा जाकर त्राहि-त्राहि कर उठा तो उन्होंने ही खुलकर बगावत की और ज़ारशाही की नीवें हिला दी। उन्होंने अपने अतामानों के नेतृत्व में शाही फौजों से डटकर लोहा लिया, दोन पर बजरों के कारवाँ के कारवाँ लूटे, वोल्गा तक अपने को बढ़ाया, और ज़ापोरोज़्ये के कुचले हुए कज़्ज़ाकों को विद्रोह के लिए उभारा।

अप्रैल के अन्त तक दोन-प्रदेश के दो-तिहाई भाग को लाल-गार्द छोड़कर चली गई। और उनके छोडकर चले जाने पर यह जरूरी हो गया कि वहां किसी-न-किसी तरह की स्थानीय सरकार कायम की जाये। २८ अप्रैल दोन-प्रदेश की अस्थायी सरकार के सदस्यों और अलग-अलग ज़िलों और फौजी यूनिटों के प्रतिनिधियों की परिषद् की बैठक के लिए तय हुआ।

तातारस्की में व्येशेन्स्काया के अतामान का एक नोटिस आया कि इस महीने की २२ तारीख को एक सम्मेलन होगा और उस सम्मेलन में परिषद् के लिए सदस्य चुने जायेंगे। मिरोन कोरशुनोव ने गाँव के लोगों की एक सभा में नोटिस पढ़कर सुनाया, और गांव के लोगों ने दादा बोगातिरयोव और पैन्तेली मेलेखोव को व्येशेन्स्काया भेजने का फैसला किया।

व्येशेन्स्काया की सभा में पैन्तेली मेलेखोव को आगे की सैन्य परिषद् के लिए प्रतिनिधि चुना गया। वह उसी दिन अपने गाँव लौट आया और ठीक समय पर नोवोचेरकास्क पहुँचने के लिए उसने अगले दिन सुबह मिरोन कोरशुनोव के साथ मिलेरोवो के लिए रवाना होने का फैसला किया। मिरोन मिलेरोवो जाना चाहता था पेराफीन, साबुन और घर के इस्तेमाल की कुछ दूसरी चीजें खरीदने के लिए, और मोखोव की चक्की के लिए चलनिया वगैरा खरीदकर थोड़ी-सी रकम सीधी कर लेने का भी उसका विचार था।

दोनों उषा की पहली किरण फूटते ही रवाना हो गए। मिरोन के काले घोड़े हलकी बग्घी आराम से खींचने लगे। रंगीन गाडी में दोनों अगल-बगल बैठे रहे। होते-होते गाडी गाँव के ऊपर की पहाड़ी पर पहुँची कि उन्होंने आपस में बातें करना शुरू किया। जर्मनों ने मिलेरोवो में पड़ाव डाल रखा था, इसीलिए मिरोन ने उत्सुकता से पूछा, "क्यों, क्या

खयाल है, ये जर्मन कहीं हमारी मरम्मत तो नहीं करने लगेंगे? बड़े उजड्ड हैं।"

"नहीं," पँन्तेली ने उसे विश्वास दिलाया, "अभी उस दिन मातवेइ-कशुलिन मिलेरोवो गया था···उसका कहना है कि जर्मन डरते हैं···उनमें हिम्मत नहीं है कज़्ज़ाकों को हाथ लगाने की···"

मिरोन होंठों-ही-होंठों मुस्कराया और चेरी की लकड़ी के अपने चाबुक से खिलवाड़ करने लगा। साफ है कि अन्दर-ही-अन्दर उसे खुशी हुई और उसने बातचीत को दूसरी बातों की तरफ मोड़ दिया—पूछा, "कैसी सरकार बननी चाहिये···क्या सोचते हो तुम?"

"हम एक अतामान चुन लेंगे अपने बीच से···कज़्ज़ाक होगा वह—"

"भगवान् करे ऐसा ही हो। अच्छा आदमी चुनना। बड़े-बड़े जनरलों को उसी तरह परखना जैसे जिप्सी घोड़ों को परखते हैं।"

"ऐसा ही करेंगे···दोन के कज़्ज़ाकों के बीच अब भी दिमाग वाले हैं—"

"हो सकता है कि हों, भाईजान, मगर हमारे बीच बेवकूफ भी तो हैं।" मिरोन के झाईं से भरे चेहरे पर उदासी का बादल-सा छा गया—"मैंने सोचा था कि मैं मीत्का को बनाऊँगा कुछ···मैंने चाहा था कि अफसर बन जाए वह···पर, उसने पादरी के स्कूल तक की पढ़ाई खतम न की, और अगले ही जाड़े में भाग खड़ा हुआ।"

दोनों को बोल्शेविकों के पीछे-पीछे बहुत दूर चले गये अपने बेटों का ध्यान हो आया और वे क्षण-भर को मौन हो गये। गाड़ी ऊँची-नीची सड़क पर उछलती, धचके खाती आगे बढ़ती रही और दाहिने हाथ वाला घोड़ा अपनी टाप से टाप बजाता रहा। गाड़ी की कड़ियां इधर-उधर लहराती रहीं, और दोनों, जाल की मछलियों की तरह, एक-दूसरे पर भहराते रहे।

"पता नहीं हमारे कज़्ज़ाक कहां होंगे इस वक्त!" पँन्तेली आह भर-कर बोला।

"वे खोपर-प्रदेश तक पहुँच गये हैं···अभी उस दिन फ़ेकोत वहां से लौटकर गाँव आया था···उसका घोड़ा खत्म हो गया था···कह रहा था—कज़्ज़ाक तिशान्स्काया की तरफ बढ़ रहे हैं।"

एक बार फिर चुप्पी सघ गई। हवा के झोंके से उनकी पीठ शीतल पड़ गई। पीछे···दोन के पार, उषा की आग की लपटें जंगलों, चरागाहों, झीलों और जंगली मैदानों में चुप-चुप खूबसूरती से आग घोल रही थीं। ऊपर का बलुहा इलाका शहद की मक्खियों के छत्ते के ऊपर की पीली पपड़ी-सा लग रहा था। रेत के टीले कांसे के रंग की हलकी-हलकी झाईं मार रहे थे।

वसन्त आ रहा था पर धीरे-धीरे। वैसे जंगल के हरे-नीले रंग ने घनी पत्तियों के गहरे हरे रंग को अपनी जगह दे दी थी, पूरा स्तेपी का मैदान फूल रहा था और बाढ़ का पानी घट गया था। इस बाढ़ ने निचली चरागाहों में जो अनगिनत ताल छोड़े थे, वे चमक रहे थे। पर, ढलवाँ किनारों के नीचे की वर्फ अब भी गली न थी। उसका चमाचम उजला रंग चुनौती-सी देता था।

ऐसे में दोनों साथी अगले दिन शाम को मिलेरोवो पहुँचे और उन्होंने एलीवेटर के पास रहनेवाले एक उक्रइनी जान-पहचानवाले के यहाँ रात बिताई। अगले दिन सुबह नाश्ते के बाद पैन्तेली रेलवे स्टेशन के लिए रवाना हो गया और मिरोन अपनी गाड़ी पर सवार होकर खरीदारी के लिए निकल पड़ा। उसने क्रॉसिंग सही-सलामत पार की, कि जिन्दगी में पहली बार उसकी निगाहें जर्मनों पर पड़ीं। सामने ही तीन जर्मन सड़क पार करते दीखे। उनमें से एक नाटे कद, घनी दाढ़ीवाला आदमी हाथ झुलाता नज़र आया।

मिरोन ने चिन्ता और परेशानी से अपने होंठ काटे और घोड़ों को रोकने के लिए रास खींची। पर, इस बीच वे जर्मन उसकी ओर बढ़े और उनमें के एक मोटे-तगड़े, लम्बे प्रशियन ने अपने उजले, चमचमाते दाँत निकालते हुए मुस्कराकर कहा—"वह देखो, उधर···जीता-जागता कज्जाक···कज्जाक कपड़े तक पहन रखे हैं उसने···उसके बेटों ने जरूर ही लोहा लिया होगा हमसे···आओ, उसे जिन्दा बर्लिन भेज दें···नुमाइशी होगा वह···लाजवाब नुमाइश लगेगी वहाँ।"

"हमें तो उसके घोड़े चाहिये। वह खुद जाये भाड़ में।" घनी, भूरी दाढ़ीवाला आदमी होशियारी से घोड़ों के सिरों के पास से गुजरता हुआ,

गाड़ी के पास पहुँचा।

"नीचे उतर, बूढ़े ! हमें स्टेशन के पास की पनचक्की से आटा लाना है। तेरे घोड़ों की हमको जरूरत है। नीचे उतर।" मैंने कहा। "पीछे कमा-डेंट के पास जाकर वापस ले आना इन्हें !" उसने पनचक्की की तरफ इशारा किया और अपने चेहरे के भाव से मन का इरादा बिल्कुल साफ झलकाते हुए मिरोन को गद्दी से उतरकर जमीन पर आने की दावत दी। उसके दोनों साथी मुड़े। वे पीछे देखते और हँसते हुए धीरे-धीरे पनचक्की की ओर बढ़े। मिरोन का चेहरा पीला पड़ गया। वह फुर्ती से नीचे आया और रासें पकड़कर घोड़ों को ले चलने के खयाल से आगे पहुँचा।

'कैसी बुरी बात है कि इस समय पेंतेली मेरे साथ नहीं है !' उसके दिमाग में विचार कौंधा और उसके सारे शरीर में कँपकँपी-सी दौड़ गई—'ये लोग घोड़े ले लेंगे—आखिर मैं अकेले आया ही क्यों ?'

जर्मन ने होंठ सिकोड़े, मिरोन की बाँह थामी और पनचक्की की ओर चलने का इशारा किया।

"चलिये, चलता हूँ।" मिरोन ने झटके से अपनी बाँह छुड़ाई। उसका चेहरा और उतर गया—"अपने साफ-सुथरे हाथ मेरे घोड़ों पर से हटा लीजिये···ये आपको नहीं मिल सकते।"

मिरोन की बात के लहजे से जर्मन ने जवाब का तरीका समझा। उसने अपने नीले, सफेद दाँत निकाले, कज्जाक पर निगाह जमाई और अपनी आवाज में अधिकार घोला। उसका हाथ कन्धे पर लटकी राइफल के पट्टे पर जा पहुँचा। परन्तु इसी क्षण मिरोन को अपनी जवानी के दिन याद आ गये और उसने जर्मन के गाल की हड्डी पर भरपूर मुट्ठी जमाई। आदमी का सिर पीछे की ओर झटका सा गया। वह मुँह के बल भहरा पड़ा और खून थूकने लगा। इस पर भी उसने उठने की कोशिश की तो मिरोन ने उसकी खोपड़ी पर दूसरा हाथ कसकर जमाया और चारों ओर निगाह दौड़ाकर उसकी राइफल छीन ली। इस समय उसके दिमाग ने बड़ी तेजी से काम किया। उसने घोड़े मोड़े तो यह विश्वास उसके मन में बराबर रहा कि यह आदमी अब उस पर गोली नहीं चला सकता, लेकिन अन्दर दूसरा डर बैठा रहा कि बाकी दो जर्मन स्टेशन से कहीं उसे देख न लें। बस, तो

उसने घोड़ों की रासें ढीली कर दीं। अब यह समझिये कि घोड़े इस तरह हवा से बातें कर चले कि क्या कहिये! शायद ही कभी पहले दौड़े हों वे इतनी तेज़ी से; और शायद ही कभी शादी-ब्याह की गाड़ियों की दौड़ मे भी किसी गाड़ी ने यह रफ्तार पकड़ी हो।

'हे प्रभु, मुझे बचाओ! हे भगवान्, मेरी रक्षा करो···प्रभु यीशु के नाम पर मेरी रक्षा करो!' मिरोन अपना चाबुक सटकारते हुए बुद-बुदाया। पर, ख़ून के अन्दर घुले लालच पर उसका ज़ोर अब भी न चला। उक्रइनी के यहाँ जाकर अपनी चीज़-वस्त ले लेने की बात उसके मन में उठी। लेकिन अक्ल की जीत हुई और उसने अपनी गाड़ी नगर के बाहरी इलाके की ओर मोड़ी। बाद मे इस घटना का ज़िक्र करते हुए उसने कहा कि पहले गाँव तक की बीस वर्स्ट की दूरी उसने पैगम्बर एलीजा के अग्नि-रथ से भी तीव्र गति से तय की और उस गाँव मे पहुँचने पर एक परि-चित उक्रइनी के अहाते मे अपनी गाड़ी घुमाई। फिर उससे भेंट हुई तो उसने अपने को ज़िन्दा से ज्यादा मुर्दा पाया। फिर भी उसे सारी दास्तान सुनाई और आग्रह किया कि उसे और उसके घोड़ों को छिपा ले कहीं।

उक्रइनी बोला, "भले आदमी, मैं तुम्हें छिपा तो लूंगा, लेकिन यदि वे लोग यहाँ आकर तुम्हें पूछेंगे और न बतलाने पर मुझे तंग करेंगे और सतायेंगे तो राज़ खोल देना पड़ेगा मुझे। तुम जानते हो सब-कुछ। अगर मैं नहीं बतलाऊँगा तो लोग मेरे घर मे आग लगा देंगे और रस्सी से जकड़कर ले जायेंगे मुझे।"

"छिपा लो मुझे···तुम जो कुछ कहोगे, मैं दे दूँगा तुम्हें। इस वक्त मुझे जैसे भी हो मौत से बचा लो, कहीं छिपा लो। मैं रेवड़ की रेवड़ भेड़ें भेज दूँगा तुम्हारे लिए। अपनी अच्छी-से-अच्छी भेड़ो मे से भी दस भेड़ें दूँगा मैं तुम्हें।" मिरोन अपनी गाड़ी शेड मे लाते हुए बार-बार गिड़-गिड़ाया और वादे करता गया।

वह रात होने तक उस उक्रइनी के साथ रहा। इसके बाद उसने गाड़ी जोती और फिर पागल की तरह गाड़ी हाँकने लगा कि घोड़ों के चेहरे भाग से नहा उठे। इसके बाद मिलेरोवो से काफ़ी दूर निकल आने पर ही उसने घोड़ों की रासें खींचीं। परन्तु अगले गाँव के आने के

पहले उसने हथियाई हुई राइफल भीट के नीचे से खींचकर निकाली, पट्टे पर हाथ फेरा, नीचे की ओर पक्की पेंसिल से लिखा जर्मन का नाम देखा और चैन की साँस लेते हुए कहा, "शैतानो, तुम नहीं पकड़ सके मुझे···मैंने ऐसी तेज़ी से घोड़े दौड़ाये कि तुम्हारे हाथ तो भला क्या आता मैं !"

पर, उसने अपना वायदा पूरा नहीं किया और उनइनी के पास एक भी भेड़ नहीं भेजी। बाद में, उसी साल शरद् के समय, उसे किसी काम से उस गाँव में जाना पड़ा तो उसने उक्रइनी की नजर अपने ऊपर आशा से गड़ी देखी। बोला, "हमारी सारी भेड़ें मर गई···जहाँ तक भेड़ों का सवाल है, हमारी हालत ज़रा नाजुक है, पर मुझे तुम्हारे पिछले एहसान की याद है, और मैं अपने बाग की थोड़ी-सी नाशपातियाँ ले आया हूँ तुम्हारे लिए।" उसने सफर के कारण कट-फट गई नाशपातियों का एक बोरा गाड़ी से बाहर खींचा और चालाकी से उक्रइनी की निगाहें बचाते हुए बोला, "हमारी नाशपातियाँ अच्छी होती हैं···बहुत अच्छी होती हैं···" इसके बाद उसने जल्दी-जल्दी अलविदा कहा और अपनी राह ली।

उधर मिरोन ने मिलेरोवो से बाहर निकल दम छोड़कर घोड़े दौड़ाये और इधर पंनेली रेलवे-स्टेशन पहुँच गया। वहाँ एक जवान जर्मन ने उसके लिए 'पास' तैयार किया, एक दुभाषिये के ज़रिये उससे पूछताछ की और एक सस्ता-सा सिगार जलाते हुए, अपने शब्दों में उदारता भरकर बोला, "यह रहा तुम्हारा 'पास'। मगर याद रखो कि तुम्हें ज़रूरत है एक समझदार सरकार की। तुम अपने लिए राष्ट्रपति चुनो, ज़ार चुनो या जो चाहे सो चुनो, मगर चुनो तो आदमी ऐसा जिसमें थोड़ा राजकौशल हो और जो जर्मनी के प्रति वफादारी की नीति चलाये।"

पंनेली ने दुश्मनों की-सी निगाहों से उसे घूरकर देखा, अपना 'पास' लिया और टिकट खरीदने चला गया। बाद में वह नोवोचेरकास्क पहुँचा तो नगर में उसने इतने जवान अफसर देखे कि अचरज में पड़ गया। उनकी भीड़ सड़कों पर नजर आई, वे रेस्तोराओं में बैठे मिले और अतामान के महल और न्यायालय के चारों ओर जमा दीखे। न्यायालय की इमारत में ही परिषद् की बैठक होने वाली थी।

बैठक में भाग लेने वाले बाहरी प्रतिनिधियों के लिए एक मकान अलग था। वहाँ पैन्तेली की मुलाकात अपने जिले के कितने ही दूसरे कज्जाकों से हुई। प्रतिनिधियों में अधिकांश कज्जाक थे। बाकी लोगों में थोड़े-से अफसर और प्रान्तीय खुफिया विभाग के सदस्य थे। खुफिया विभाग के सदस्य गिनती में अफसरों से ज्यादा थे। बातचीत का प्रमुख विषय प्रान्तीय सरकार का चुनाव रहा। मगर बातें कुछ अस्पष्ट अधिक रहीं। साफ बात एक ही सामने आई और वह यह कि एक अतामान तो जरूर ही चुना जाना चाहिये। इस सिलसिले में कई कज्जाक जनरलों के नाम सामने रखे गये और उनके गुण-दोषों पर अलग-अलग सोच-विचार किया गया।

पहले दिन शाम की चाय के बाद पैन्तेली घर की चीजों का स्वाद लेने के लिए अपने कमरे में आया। वहाँ उसने सूखी कार्प मछली मेज पर सजाई और डबलरोटी काटी कि पास के गाँवों के दो कज्जाक और कई दूसरे लोग भी आ शामिल हुए। बातचीत वर्तमान स्थिति से आरम्भ हुई और फिर सरकार के चुनाव के सवाल पर आ थमी।

"तुम्हें स्वर्गीय जनरल कालेदिन से अच्छा आदमी ढूँढे मिलेगा नहीं··· ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दे!" इने-गिने बालों की दाढ़ीवाले एक कज्जाक ने आह भरकर फतवा-सा दिया।

"हाँ, यह बात तो है।" दूसरे कज्जाक ने पहले की बात का समर्थन किया।

बातचीत में हिस्सा लेनेवाला एक जूनियर कैप्टन, जिले का एक प्रतिनिधि जरा गरम होते हुए बोला, "क्या मतलब है आपका, यानी क्या कोई काबिल आदमी इस वक्त मिल ही नहीं सकता? जनरल क्रासनोव के बारे में क्या ख्याल है आपका?"

'कौन-सा क्रासनोव?"

"भले आदमियो, आपको यह सवाल करते शर्म नहीं आती? क्रासनोव जाने-माने जनरल हैं, घुड़सवारों की तीसरी कोर के कमाण्डर हैं, बहुत ही अक्लमन्द आदमी हैं, सत जार्ज पदक से सम्मानित हैं, और बहुत ही प्रतिभावान रेजीमेंटल-कमाण्डर हैं।"

जूनियर कैप्टन के तेज, चापलूसी से भरे इन वाक्यों पर ऐक्टिव-सर्विस

रेजीमेंटों का एक प्रतिनिधि तमककर बोला, "और मैं आपको बतलाना चाहता हूँ कि हम सब जानते हैं कि कैसे प्रतिभावान आदमी हैं वे ! बड़े शानदार जनरल हैं ! जर्मनी की लड़ाई में बड़ा नाम कमाया है उन्होंने ! भाईजान, क्रांति न हो गई होती तो वे ब्रिगेडियर से आगे तो बढ़ते नहीं।"

"आप जब जनरल आसनोव को जानते नहीं तो इतना सब कहने की आपको हिम्मत कैसे पड़ती है ?" जूनियर कैप्टन ने जरा बुझे हुए लहजे में जवाब दिया, "यानी आपका हिसाब होता है ऐसे जनरल के बारे में इस तरह की बातें करने का जिसकी सभी जगह सभी लोग इतनी इज्जत करते हैं ? आप यह भूल जाते हैं कि आप हैसियत से महज एक कज्जाक हैं, और कुछ नहीं।"

कज्जाक थोड़ा गड़बड़ा गया। बुदबुदाया, "हुजूर, मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूँ कि मैंने खुद उनकी कमान में काम किया है। आस्ट्रिया के मोर्चे पर उन्होंने हमारे रेजीमेंट को काँटेदार तारों में झोंक दिया था। यही वजह है कि हम उनके बारे में कोई बहुत अच्छी राय नहीं रखते। मुमकिन है कि हमारी राय ग़लत हो।"

"तुम सोचते हो कि संत जार्ज का ग़ॉग उन्हें यों ही दे दिया गया ?" पैन्लेली क्रोध के कारण मछली की हड्डी लगभग निगलते हुए आगे की पंक्तिवाले आदमी पर टूट-सा पड़ा, "तुम्हें आदत हो गई है खुरपेंच निकालने की। तुम्हारे लिए हर चीज़ बुरी है। तुम्हें कुछ भी सुहाता नहीं। अगर तुम्हारे जैसे लोगों की जबान जरा कम लम्बी होती तो आज यह मुसीबत का पहाड़ न होता हमारे सामने। तुम महज़ कानूनी चिड़िया हो, और कुछ नहीं।"

पूरा-का-पूरा चेरकास्क जिला आसनोव के पक्ष में निकला। बूढ़े जनरल को लोग बहुत पसंद करते थे। उनमें से ज्यादातर लोग रूसी-जापानी लड़ाई में उनके साथ हिस्सा ले चुके थे। अफसर उनके अतीत को लेकर फूले नहीं समाते थे। जनरल गारद-अफसर रहे थे। उन्हें शानदार शिक्षा मिली थी। वे शाही महल और सम्राट् की सेवा में रहे थे। उदारचेता बुद्धिवादी इस बात से सन्तुष्ट थे कि आसनोव सिर्फ फौजी जनरल ही न थे बल्कि लेखक भी थे। अफसरों के जीवन की उनकी कहानियाँ कितनी ही

पत्र-पत्रिकाओ मे छप चुकी थी। नतीजा यह कि फौजी होने पर भी उन्हे काफी प्रबुद्ध और सस्कारों की दृष्टि से सजा-सँवरा माना जा सकता था।

···आसनोव के नाम को लेकर प्रतिनिधियों के बीच तूफान-सा उठ खडा हुआ। दूसरे जनरलों के नाम फीके पड गये और महत्वहीन लगने लगे। आसनोव का समर्थन करने वाले अफसरों ने कहा कि बोगायेव्स्की की देनिकिन से दाँतकाटी रोटी है, और अगर बोगायेव्स्की को अतामान चुन लिया गया तो बोलशेविकों के शक्तिहीन होते ही और श्वेत-गार्दों के मास्को मे घुसते ही कज्जाको को मिलनेवाली सभी सुविधाएँ समाप्त हो जाएँगी, और आजादी देखते-देखते उडनछू हो जाएगी।

वैसे आसनोव के विरोधी भी निकले। प्रतिनिधि बनकर आये एक स्कूलमास्टर ने जनरल के नाम पर कीचड उछालने की कोशिश की। उसने प्रतिनिधियो के कमरों के चक्कर लगाये और कज्जाको के बालदार कानो मे जहर उँडेला।

"आसनोव···जानते हो उसे ? वह है गया-बीता जनरल, और उससे भी गया-गुजरा लेखक। एकसाथ ही दोनो तरफ रहना चाहता है, कोड़ा है, कीडा ! चाहता है कि एक तरफ लोग राष्ट्रवादी मानकर उसे पूजें, दूसरी तरफ वह भोलाभाला जनतत्रवादी भी बना रहे। मेरी बात याद रखना, अगर वह अतामान बन गया तो पहली बोली बोलनेवाले के हाथो नीलाम कर देगा दोन को···ऐसा सौदा करेगा कि नाम-निशान बाकी न बचेगा। कोई हैसियत है उसकी ! फिर राजनीति का कोई ज्ञान है उसे ! हम तो आगेयेव को चाहते है। वह बिल्कुल दूसरी ही किस्म का आदमी है।"

लेकिन, स्कूलमास्टर की सारी मेहनत बेकार गई। परिषद् की बैठक के तीसरे दिन यानी पहली मई को लोगो ने जनरल आसनोव के नाम की आवाज़ लगाई तो सारे सम्मेलन मे उत्साह की लहर-सी लहरा गई।

अफसरों की जोरदार तालियो के जवाब मे कज्जाक भद्दे ढंग से हथेलियाँ पीटने लगे। उनके काले मशक्कत से कडे हाथों की खुश्क सख्त आवाज गलियारों और बरामदों मे भरी महिलाओ, अफसरों और विद्यार्थियो की कोमल हथेलियों के मधुर सगीत से बिल्कुल अलग जा पड़ी।

फिर एक लम्बे कद का जनरल मंच पर आया तो हॉल तालियों की गड़गड़ाहट और हर्षध्वनि से गूंज उठा। यह जनरल अपनी उम्र के बावजूद जवान और देखने-सुनने में सुन्दर लगा। वह खड़ा यों हुआ जैसे कि तस्वीरवाले पोस्टकार्ड में अंकित हो। उसका सीना क्रॉसों और मेडलों से सजा दीखा। चेहरे के भाव में गम्भीरता दिखाई दी। कितने ही उपस्थित लोगों को वह पिछले शासक का नया अवतार लगा।

पंतेली की आँखों में खुशी के आँसू आ गये। अपनी टोपी से लाल रूमाल निकालकर उसने नाक पोंछी। मन ही मन बोला, "यह है जनरल! पहली निगाह में ही समझ में आता है कि यह है आदमी! देखने-सुनने में बादशाह तो क्या, उससे भी इक्कीस लगता है। अरे, आदमी तो गलती से उसे सिकन्दर तक मान सकता है।"

परिषद् यानी दोन-मुक्ति-परिषद् ने अपना काम काफी धीरे-धीरे किया। परिषद् के अध्यक्ष कैप्टन यानोव के सुझाव पर, कन्धे की पट्टियाँ और सभी सैनिक-चिह्न धारण करने के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव पास किया गया।

क्रासनोव ने पहले से तैयार भाषण दिया। भाषण हर तरह से पूर्ण लगा। उन्होंने बोलशेविकों के अभिशाप से ग्रस्त रूस, रूस की पिछली सामर्थ्य और दोन-प्रदेश की किस्मत की प्रभावशाली ढंग से चर्चा की। फिर उन्होंने वर्तमान परिस्थिति पर विशेष बल दिया और सरसरे ढंग से जर्मनों के अधिकार का उल्लेख किया। अंत में उन्होंने बोलशेविकों की हार के बाद दोन के स्वतंत्र अस्तित्व की सम्भावना की ओर संकेत किया तो इतनी तालियाँ पिटीं कि आसमान सिर पर उठ गया।

उन्होंने कहा, "दोन-प्रदेश पर सैनिक परिषद् का शासन होगा। कज्जाक जाति शांति कर आज़ादी हासिल करेगी और प्राचीन कज्ज़ाक जीवन की शानदार व्यवस्था को नया रूप देगी। उस समय अपने युग-युगों के पूर्वजों की तरह हम गूंजती हुई ज़ोरदार आवाज़ में कहेंगे, हम मधुर दोन के कज्ज़ाक आपका स्वागत करते हैं, पत्थर के बने मास्को के गोरे ज़ार!'"

उसी शाम जनरल दोन-कज़्ज़ाकों के अतामान चुन लिये गए। एक

सौ सात वोट पक्ष मे ग्राये । दस लोगों ने वोट नही दिए । पर, उन्होंने यह पद स्वीकार करने के पहले परिषद् के सामने कुछ शर्तें रखी । उन्होंने ग्रतामान के रूप मे ग्रपने लिए ग्रसीमित ग्रधिकारों की माँग की ग्रौर चाहा कि कुछ बुनियादी कानूनों के मामले मे लोग एकमत हो जाएँ। बोले—"हमारा देश ग्राज बरबादी के कगार पर खड़ा है । ऐसे में मैं यह पद स्वीकार तभी करूँगा जब ग्रापका मुझमे पूरा विश्वास हो । वक्त की माँग है कि ग्रपना कर्तव्य-पालन करते समय मेरे मन मे इस बात का पूरा भरोसा रहे कि ग्रापकी मुझमे ग्रास्था है । दोन-प्रदेश के लोगों की ग्राशा-ग्राकाक्षाग्रों को सर्वोपरि ग्रभिव्यक्ति देने वाली परिषद् का मुझमें विश्वास है ग्रौर बोलशेविक लुच्चेपन ग्रौर ग्रराजकता की जगह कानून के मज़बूत हाथो ने ले ली है ।"

चूँकि कानून के ये मज़बूत हाथ पिछली शाही हुकूमत के ही कानून थे ग्रौर दोन की नई परिस्थिति से तालमेल बिठाने के लिए इनमे सिर्फ थोड़े-से उलटफेर किये गए थे, इसलिए परिषद् ने इन्हे स्वीकार किया ग्रौर सहर्ष स्वीकार किया । जनरल के द्वारा प्रस्तावित ध्वज तक पुराने दिनों की यादगार रहा । झडे की नीली, लाल ग्रौर पीली पट्टियाँ कज्जाकों, विदेश-निवासियो ग्रौर कालमीको की प्रतीक रही । हाँ, कज्जाक ग्रात्मा को ग्रधिक मुखर करने के लिए वशगत-ढाल के परम्परागत चिह्न मे ग्रवश्य ही ग्रामूल परिवर्तन किया गया । दो सिरो ग्रौर फैले हुए डैनो वाले लालची बाज़ ग्रौर शिकारी पछी के खुले हुए पजो की जगह एक नगा कज्जाक रखा गया—नगा कज्जाक, शराब के पीपे के इधर-उधर टाँगे फैलाये बैठा, सिर पर भेड की खाल की टोपी, हाथ मे तलवार, राइफल ग्रौर लडाई का दूसरा सामान ।

सहज-स्वभाव के, एक चापलूस-से प्रतिनिधि ने खुशामद के खयाल से एक सवाल किया, "महामहिम, ग्राप बुनियादी कानूनो पर नये सिरे से विचार करना या उनमे कुछ फेर-बदल करना चाहेगे क्या ?"

क्रासनोव बहुत ही शोभन ढग से मुस्कराये ग्रौर हलकी-सी चुटकी लेने के विचार से उन्होंने उपस्थित लोगो पर एक निगाह डाली । फिर सर्वथा लोकप्रिय ग्रौर सर्वसमर्थन-प्राप्त व्यक्ति के-से स्वर मे बोले, "हाँ,

मैं सोचता हूँ कि करना चाहूँगा । मैं फेर-बदल करना चाहूँगा ध्वज, ढाल के परम्परागत चिह्न और राष्ट्रगीत से सम्बंधित १४८वीं, १४९वीं और १५०वीं धाराओं में। मुझे स्वीकार है लाल ध्वज के अलावा और कोई भी ध्वज, यहूदियों के पाँच कोनेवाले सितारे या किसी भी मैसॉनिक चिह्न के अलावा सरकारी ढाल का कोई भी परम्परागत चिह्न और 'इन्तर-नेसनाल' के अलावा और कोई भी राष्ट्रगीत ।"

परिषद् ने हँसी के ठहाके लगाते हुए प्रस्ताव पास किया, और फिर अतामान का यह मजाक एक जमाने तक लोगों के होंठों पर नाचता रहा ।

पाँचवीं मई को परिषद् का अधिवेशन समाप्त हुआ । इस अवसर पर अंतिम भाषण हुए । दक्षिणी वर्ग के कमांडर और आमनोव के दाहिने हाथ वर्नन्त देनीसोव ने निकट भविष्य में ही बोलशेविकों की कार्रवाइयों को कुचल देने का बीड़ा उठाया । फिर अतामान के सफल चुनाव और मोर्चे की ताजा खबरों से जैसे प्रतिनिधियों का मन हलका हो उठा । वे बहुत ही गद्गद भाव से अपने-अपने घरों के लिए रवाना हुए ।

पैन्तेली पर सारी घटना का बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ा । वह खुशी से फूला न समाया और नोवोचेरकास्क से घर लौटने के लिए गाड़ी उसने इस अटूट विश्वास के साथ पकड़ी कि अतामान की सत्ता बहुत ही सही हाथों में आई है, बोलशेविक बहुत ही जल्दी हारेंगे और उसके बेटे अपने फार्म में लौट आयेंगे । वह डिब्बे की मेज पर कोहुनियाँ टिकाकर बैठा तो उस समय भी जैसे दोन-प्रदेश के राष्ट्रगीत के स्वर उसके कानों में आते, उसकी आत्मा में एक ताजगी-सी घोलते, और उसकी चेतना में गहरे-ही-गहरे उतरते रहे। उसे लगा कि 'शांत और धर्मपरायण दोन-प्रदेश' सचमुच नई करवट ले उठा और जाग उठा है।

पर, गाड़ी नोवोचेरकास्क से कुछ ही वर्स्ट दूर पहुँची कि खिड़की से पार देखते पैन्तेली की निगाह, आगे बढ़कर गश्त लगानेवाले बवारियाई घुड़सवार फौजियों पर पड़ी । वे रेल की पटरी के किनारे-किनारे गाड़ी की ओर बढ़े आते दीखे । फौजी अपनी काठियों पर आराम से जमे लगे। दुम-कटे घोड़ों के चिकने कूल्हे धूप में चमकते नजर आये। पैन्तेली आगे की

ओर झुक गया। पीडा मे उसके माथे मे बल पड़ गये। उसने घोड़ों को अपने खुरों से कज्ज़ाक धरती को रौंदते देखा। थोड़ी ही देर मे वे गुज़र गये, लेकिन बूढा जैसे अपनी जगह बैठे-ही-बैठे नीचे धँस गया। वह हाँफने लगा और उसने अपनी चौडी पीठ घुमाकर खिड़की की ओर कर ली।

: २ :

सफ़ेद आटे, मक्खन, अडो और ढोरों से भरी ट्रकों की कतारों की कतारें दोन-प्रदेश से, उक्रइन के रास्ते जर्मनी के लिए रवाना होती रही। हर ट्रक की रक्षा के लिए होता एक जर्मन फ़ौजी। जर्मन फौजी के बदन पर नीला-भूरा ट्यूनिक होता, सिर पर बिना चोच की गोल टोपी होती और उसकी सगीन हमेशा सीधी तनी रहती। इस तरह लोहे की नालोवाले अच्छे भूरे चमड़े के जर्मन जूते दोन-प्रदेश की सडको को बराबर रौंदते रहते। बवारिया के घुड़सवार फौजी अपने घोडों को पानी पिलाने के लिए दोन के किनारे ले जाते। पर, दोन-प्रदेश और उक्रइन की सीमा पर जवान कज्ज़ाक पेटलुरा रेजीमेंटों से लोहा लेते रहते। यह समझिये कि नव-सगठित बारहवीं दोन-कज्ज़ाक रेजीमेंट के लगभग आधे लोग स्तारोबेल्स्क के पास लड़ते-लड़ते काम आये। मगर, इस लडाई के फलस्वरूप कज्ज़ाकों ने उक्रइनी-प्रदेश का एक हिस्सा और जीत लिया।

उत्तर मे उस्त-मेदवेदित्स्काया-स्तनीत्सा मे देखते-देखते ही बार-बार परिवर्तन हुए। पहले उसे हथियाया लाल सेना के कज्ज़ाकों ने। लेकिन, एक घटे के अन्दर-अन्दर अलेक्सेयेव की गोरी पार्टीज़ान-टुकडी ने उन्हे मार भगाया, तो सडकों पर जहाँ-तहाँ स्कूलों और कॉलिजो के विद्यार्थी नजर आने लगे। वे टुकडी के प्राण बन गये।

ऊपरी दोन-प्रदेश के कज्ज़ाक एक के बाद दूसरा इलाका छोडते और लाल-सेना के सदस्यों के साथ सरातोव-प्रान्त की सीमा की ओर पीछे भागते रहे। गरमी खत्म होते-होते उन्होंने लगभग पूरा खोपर जिला खाली कर दिया। अब हथियार उठाने योग्य सभी उम्र के कज्ज़ाकों की दोन-सेना ही के अधिकार में सीमान्त-प्रदेश रह गया।

फिर, सेना को नये सिरे से सगठित किया गया। उसमें नोवोचेरकास्क

के अफ़सर आ शामिल हुए और वह दुश्मन से डटकर लोहा लेने वाली असली सेना लगने लगी। अलग-अलग ज़िलों की फ़ौजी टुकड़ियों को मिला दिया गया और जर्मनी की लड़ाई में बचे लोगों की नियमित रेजीमेंटों से डिविज़न बनाये गए। हेड-क्वार्टर्स में कॉरनेटों की जगह मँजे हुए कर्नल रखे गए और कमान के अफ़सर तक धीरे-धीरे बदल दिये गए।

गरमी के अंत तक सेना ने दोन का सीमान्त-प्रदेश पार कर लिया, वोरोनेज़ प्रान्त के समीपतम गाँवों पर अधिकार कर लिया और बागुचार नाम के प्रान्तीय नगर के चारों ओर घेरा डाल दिया।

तातारस्की गाँव के कज्ज़ाकों की टुकड़ी, प्योत्र मेलेखोव की कमान में चार दिन तक गाँव-पर-गाँव और स्तनीत्सा पर स्तनीत्सा पार करती उत्तर की ओर बढ़ती रही। उनकी दाईं ओर, बिना लड़ाई का खतरा मोल लिये, लाल-गार्द के लोग पीछे हटकर रेलवे की ओर बढ़ते रहे। कज्ज़ाकों ने अपने मार्च के सिलसिले में दुश्मनों का नाम-निशान तक कहीं नहीं देखा। पर, एक बार में ही लम्बी मंजिल उन्होंने तय कभी नहीं की। इस मामले पर उनमें वहम कभी नहीं हुई, पर प्योत्र-मेलेखोव ने, और यों सभी कज्ज़ाकों ने निश्चय यह किया कि हड़बड़ाकर मौत के मुँह में धँस जाने से क्या फायदा, इसलिए एक दिन में वे तीस वर्स्ट से ज्यादा आगे न बढ़ते।

पाँचवें दिन उन्होंने खोपर नदी पार की। पूरी-की-पूरी चरागाह पर डाँसों का मलमली पर्दा-सा तना मिला। उनकी भनभनाहट चारों ओर गूँजती सुन पड़ी। वे घोड़ों और घुड़सवारों के कानों और आँखों में घुस गये। घोड़े हींसने और गर्दनें हिलाने लगे। कज्ज़ाकों ने बार-बार हवा में हाथ लहराये और अपने खेतों में उगी तम्बाकू का धुआँ रह-रहकर उड़ाया।

"यह भी अजब तमाशा है···भाड़ में जाए यह !" ख्रिस्तोनया एक आँख में बहते पानी को आस्तीन से पोंछते हुए बड़बड़ाया।

"डाँस तुम्हारी आँख में पड़ गया क्या ?" ग्रिगोरी ने हँसकर पूछा।

"जहरीला मालूम होता है···शैतान की तरह तकलीफ दे रहा है।"

ख्रिस्तोनया ने अपनी खून-सी लाल पलक उलटी, पुतली पर उँगली

फिराई, और फिर दाँत भीचते हुए अपने हाथ के पिछले हिस्से से थोडी देर तक आँखें मलता रहा।

ग्रिगोरी उसकी बगल मे था। तातारस्की से रवाना होने के बाद से वे दोनों बराबर साथ ही रहे थे। अनीकुश्का भी इस गुट में शामिल हो गया था। पिछले कुछ हफ्तों मे वह और मोटा हो गया, और अब पहले से कहीं ज्यादा औरत-सा लगने लगा था।

टुकडी मे सौ से कम ही लोग थे। प्योत्र का सहायक था सार्जेंट-मेजर लातिशेव। उसका विवाह तातारस्की के एक परिवार मे हुआ था। ग्रिगोरी ट्रूप का इन्चार्ज था। ट्रूप मे खास तौर पर गाँव के निचले सिरे के लोग थे। ये थे ख्रिस्तोनया, अनीकुश्का, फेदोत-बादोव्स्कोव, मार्तिन शामिल, इवान तोमिलिन, लम्बा और दुबला-पतला बोदिचियोव, भालू जैसा जखार कोरोलयोव, प्रोखोर जीकोव, खून से जिप्सी मेरकुलोव, येपीफान मक्सायेव, येगोर सिनिलिन, और कोई बीस दूसरे जवान कज्जाक।

दूसरे ट्रूप का कमाडर था निकोलाइ-कोशेवोइ, तीसरे का याकोव-कोलोवोदिन और चौथे का मीत्का-कोरशुनोव। मीत्का को, पोद्त्योलकोव की फाँसी के बाद, खुद जनरल अलफ़ेरोव ने तरक्की देकर सीनियर सार्जेंट बना दिया था।

टुकडी के लोग अपने घोडों को चुस्त दुलकी चलाकर उनमे गरमी ला रहे थे। सडक भरे हुए तालो का चक्कर काटती, नये बेंतो और पौधों से भरे खड्डो से गुजरती चरागाहो के आरपार जाती थी।

घोडे की नाल—याकोव भारी गले से पीछे की पक्तियो मे ठहाके लगा रहा था, और अन्द्रेइ-काशुलिन की पतली आवाज़ में वे ठहाके गूँज रहे थे। पोद्त्योलकोव का खून बहाने के सिलसिले मे अन्द्रेइ-काशुलिन को भी सार्जेंट की पट्टियाँ मिल गई थी।

प्योत्र-मेलेखोव, लातिशेव के साथ टुकडी के बगल मे घोडे पर सवार चला जा रहा था। वे आपस मे धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। लातिशेव अपनी नई तलवार की मूंठ से खिलवाड करता जा रहा था। प्योत्र अपना दायाँ हाथ घोड़े की गर्दन पर फेर रहा था और उसके कानो के बीच का हिस्सा खुजला रहा था। लातिशेव के भरे हुए चेहरे पर मुस्कान थी और छितरी

मूंछों के नीचे तम्बाकू से गहरे पीले दांत चमक रहे थे।

कज़्ज़ाक आपस में बात करते, जब-तब ही लाइन तोड़ देते और पाँच-पाँच की कतार में आगे घोड़े दौड़ाने लगते। उनमें से कुछ उस अनजाने इलाके का, उस चरागाह का, बड़ी सावधानी से सर्वेक्षण करते। ताल चरागाह के चेहरे पर चेचक के दाग-से लगते। दूर परे हरे सरपतों की बाड़ें और चिनार नजर आते।

कज़्ज़ाकों के साज-सामान से साफ लगता था कि उनकी मंजिल लम्बी है। घोड़ों की काठियों में लटके थैले कपड़ों और दूसरी चीजों से भरे थे। उनके बरानकोट कायदे से तह किए हुए, और काठियों के पीछे कसे हुए थे। घोड़ों के साजों की हर पट्टी पर कायदे से मोम किया गया था। किसी चीज को किसी तरह की मरम्मत की जरूरत न थी। हर चीज हर तरह फिट थी। एक महीने पहले इन कज़्ज़ाकों को लड़ाई न होने का पूरा विश्वास था, पर आज ये घोड़ों पर सवार चले जा रहे थे और सविनय यह मानने को तैयार थे कि खून-खराबा किसी भी तरह बचाया नहीं जा सकता। हर-एक दिमाग में एक बात थी कि आज तुम्हारे बदन पर खाल है, पर कल यही खाल खुले मैदानों में चील-कौओं का भोजन बन सकती है।

वे सरपतों के छप्परों वाले एक गाँव की बगल से गुजरे। अनीकुश्का ने अपनी पतलून की जेब से घर की बनी थोड़ी-सी पेस्ट्री निकाली, आधी मुंह में डाली और चबानी शुरू की तो उसके दाढ़ खरगोश के दाढ़ों की तरह चलने लगे।

"भूख लग रही है?" ख्रिस्तोन्या ने उस पर निगाह डाली।

"हाँ···मेरी पत्नी ने बनाई है यह पेस्ट्री।"

"सकोसे चलो! तुम्हारा पेट सुअर की तरह न फूला तो क्या बात हुई!" ख्रिस्तोन्या ने कहा और शिकायत और क्रोध से भरी आवाज में बोला, "कितना खाता है यह गधा! और इतना आखिर भरता कहाँ चला जाता है?" फिर ग्रिगोरी की ओर मुड़ा—"देखने में भयानक लगता है आजकल यह! कद तो कुछ है नहीं, पर ठूंसता चला जाता है कि पेट फट जाए।"

"मैं जो कुछ भी खाता हूँ, अपना खाता हूँ। रात को सरपंठ भेड़ का

गोश्त खाकर सो जाम्रो तो तडके ही ग्राँख खुल जाती है···पता है, सब कुछ पिस जाता है इस चक्की मे !"

ग्रनीकुश्का होंठों ही होंठों हँसा ग्रौर उसने ग्रिगोरी को ग्राँख मारी। त्रिस्तोन्या ने ग्रोध से थूका।

"प्योत्र पैन्तेलेयेविच, ग्राज रात हम कहाँ गुज़ारेंगे ? घोड़े बोल गए है।" तोमिलिन ने चीखकर कहा।

मेरकुलोव ने उसका समर्थन किया, "सूरज डूब रहा है।"

प्योत्र ने ग्रपना चाबुक नचाया, "शायद ग्रगले गाँव मे रात गुज़ारेंगे हम। यह भी हो सकता है कि हम ग्रौर ग्रागे बढ़ चलें ग्रौर रैनबसेरा कुमिलज़ेन्स्क मे हो।"

मेरकुलोव ने ग्रपनी घुँघराली, काली दाढी के बीच से फुसफुसाते हुए सोचकर तोमिलिन से कहा, "ग्रलेफेरोव को खुश करने की कोशिश कर रहा है, सुग्रर कही का ! हडबडी मे है।"

मेरकुलोव की लहराती हुई दाढी किसीने इस तरह छाँटी थी कि टेढी खूँटी-सी लगने लगी थी। ग्रजब मज़ाक किया था उसने कि गरीब को सब लोग बरावर ही छेडते रहते थे। सो, इस समय तोमिलिन से भी न रहा गया। बोला, "ग्रौर, तुम किसे खुश करने की कोशिश कर रहे हो ?"

"तुम्हारा मतलब ?"

"यह जनरल की तरह जो तुमने दाढी छँटवाई है, तो शायद यह कि उसके बल पर ही वे तुम्हें सीधे-सीधे एक डिविज़न सौंप देंगे···क्यो ?"

"तुम बेवकूफ हो···तुम सजीदगी से चीज़ों को क्यों नही ले सकते ?"

वे इस तरह ठिठोली करते ग्रौर हँसते रहे कि ग्रगला गाव ग्रा गया। ग्रन्द्रेइ काशुलिन पहले घर के पास उन्हे मिला। वह फौजियों के ठहरने के लिए स्थान ठीक करने के लिए पहले ही यहाँ भेज दिया गया था।

बोला, "ट्रुप मेरे पीछे-पीछे ग्रायें···पहले ट्रुप के लोग वहाँ के तीन घरो मे ठहरेंगे, दूसरे ट्रुप के लोग वाई तरफ के मकानों में ग्रौर तीसरे ट्रुप के, कुए के पास की चार वगलियो मे।"

प्योत्र ग्रपना घोडा काशुलिन के पास लाया। बोला, "कुछ सुना ? कुछ पूछताछ की ?"

"यहाँ तो उनकी हवा भी नहीं है। मगर प्यारे, शहद यहाँ बहुत है। एक बुढ़िया के यहाँ शहद की मक्खियों के कोई तीन सौ छत्ते हैं···आज रात को एक छत्ता तोड़ा जाएगा और ज़रूर तोड़ा जायेगा।"

"बेवकूफी न करना···अगर तुम शहद की मक्खी का छत्ता तोड़ोगे तो मैं तुम्हें तोड़ कर रख दूँगा !" प्योत्र के माथे पर बल पड़े और उसने घोड़े को चाबुक से छुआ।

कज़्ज़ाकों ने अपने-अपने ठिकाने ढूँढे और घोड़ों को अस्तबलों में बांध दिया। गाँव वालों ने उनके खाने की व्यवस्था की। खाने के बाद लोग हातों में आकर लकड़ी की टालों पर बैठे कुछ देर तक बातें करते रहे और फिर अपने-अपने कमरों में जाकर सो रहे।

टुकड़ी सबेरे तड़के फिर चल पड़ी और कुमिलज़ेन्स्क की ओर रवाना हो गई। पर, कुछ दूर जाने पर एक हरकारा उन्हें मिला और उसने प्योत्र को एक पत्र सौंपा। प्योत्र ने लिफाफा खोला और काठी पर बैठे ही बैठे पत्र पढ़ना शुरु किया। उसने पत्र को यों थामा जैसे कि बोझ के कारण उसे साध न पा रहा हो। ग्रिगोरी अपना घोड़ा भाई के पास लाया। पूछा, "ऑर्डर है कोई ?"

"हाँ···है।"

"क्या लिखा है इसमें ?"

"मुझे टुकड़ी सौंप देनी है। मेरी एक साल की फौजी सेवा के सभी लोग वापस बुला लिए गए हैं। उनसे २८वीं रेजीमेंट बनाई जाएगी। तोपचियों और मशीनगनें चलाने वालों को भी बुलाया गया है।"

"बाकी लोगों का क्या होगा ?"

"यह रहा उनके बारे में···लिखा है कि वे २२वीं रेजीमेंट के कमांडर के हुक्म के लिए आर्जेनोव्स्काया पहुँच जाएँ, फौरन ही।"

लातिशेव पास आया, ऑर्डर उसने अपने हाथों में ले लिया और उसे पढ़ने लगा तो उसके भारी होंठ एँठने लगे और एक भौंह तन गई।

"फॉरवर्ड !" प्योत्र ने ज़ोर से हुक्म दिया। कज़्ज़ाक एक-दूसरे की ओर देखते हुए आगे आए और प्योत्र के कुछ कहने का इन्तज़ार करने लगे।

प्योत्र ने कुमिलजेन्स्क पहुँचने पर हुक्म लोगों को सुनाया। पहले वौ भर्ती के कज्जाक लौटने की तैयारी के सिलसिले में इधर-उधर करने लगे। उन्होंने रात कुमिलजेन्स्क मे बिताकर अगले दिन तड़के ही, अपनी अलग-अलग मज़िलों के लिये रवाना होने का फैसला किया।

प्योत्र आज सारे दिन अपने भाई से बातें करने का मौका ढूँढ़ता रहा था। सो अब वह उसके ठिकाने पर पहुँचा। बोला, "ग्रिगोरी, चौक में निकल आओ।"

ग्रिगोरी चुपचाप अपने भाई के पीछे-पीछे चला आया। मीत्का कोर-शुनोव उसके पीछे-पीछे दौड आया, पर प्योत्र उससे रुखाई से बोला, "तुम जाओ यहा से, मीत्का, मैं ज़रा अपने भाई से बातें करना चाहता हूँ।"

"तुम करो बात।" मीत्का ने बात समझते हुए दाँत निकाले और पीछे रह गया।

ग्रिगोरी ने कनखी से प्योत्र पर निगाह डाली और तुरन्त ही समझ गया कि भाई के दिमाग पर बोझ है। उसने वातावरण को हलकी-फुलकी बातो की ओर मोडने की कोशिश की। बोला—

"अजीब लगता है न कि हम अपने घर-गाँव से सिर्फ सौ वर्स्ट दूर आए हैं और यहाँ के लोग वहाँ के लोगो से बिल्कुल ही अलग हैं। वे हमारी तरह बातें नही करते। उनके मकान हमारे मकानो की तरह नही हैं। वह देखो···उस फाटक के ऊपर छत है···हमारे यहाँ फाटक पर ऐसी छत नही होती···और वह देखो, उधर !" उसने एक घर की ओर इशारा किया— "उस घर के बाहर के हिस्से पर एक ढक्कननुमा छत्र-सा भी है, इससे शायद लकड़ी खराब नहीं होगी···है न ?"

"अरे, खत्म भी करो न ये बातें!" प्योत्र ने गुस्से से कहा, "हम यहाँ बाहर इसलिए नही आए कि ऐसी बातें करें···चलो, बाड के पास चलें··· यहाँ लोग-देख रहे है हमे।"

चौक से आने वाले गाँव के लोगों ने दोनो भाइयो को उत्सुक निगाहों से देखा। ढीली, नीली कमीज़ पहने और उतर गए गुलाबी रंग की पट्टी-वाली कज्जाक टोपी लगाए एक कज्ज़ाक उनके पास आकर रुका और

पूछने लगा, "घोड़ों के लिए जई तो नहीं चाहिए ?" प्योत्र ने जवाब में "नहीं" कहा और बूढ़े को धन्यवाद दिया। बूढ़ा चला गया।

"हाँ, तो तुम बात किस चीज के बारे मे करना चाहते हो ?" ग्रिगोरी ने बेसब्री से माथे पर बल डालते हुए पूछा।

"हर चीज के बारे मे।" प्योत्र बरबस मुस्कराते हुए अपने गलमुच्छों के सिरे चबाने लगा, "ग्रीशा, वक्त ऐसा लगा है कि हो सकता है कि अब हमारी मुलाकात आपस में दुबारा कभी न हो···"

ग्रिगोरी के अर्द्ध-चेतन मे अपने भाई के लिए जो विरोध-भावना थी, वह सहसा ही गायब हो गई। उदासी से नहाई मुस्कान, और प्योत्र की मीठी आवाज़ उसे अपने साथ बहा ले गई। उसी तरह उदास मन से मुस्कराते हुए प्योत्र ने अपने भाई की ओर स्नेह से एकटक देखा। फिर होंठों मे मुस्कान हवा हो गई। चेहरा कड़ा हो उठा और वह बोला—"जरा देखो कि इन लोगों ने किस तरह बाँट दिया है हमें···गलीज़ कहीं के ! हम जुते हुए खेत की तरह बँट गए हैं कि एक तरफ एक तो दूसरी तरफ दूसरा। अजीब ज़माने मे जी रहे हैं हम। मिसाल के लिये देखो—हम दोनों भाई है, हमारा खून एक है। लेकिन, मैं तुम्हें नहीं समझता···ईश्वर जानता है कि मैं तुम्हे नहीं समझता। मुझे यह लगता है कि तुम बराबर मुझसे दूर ही दूर चले जा रहे हो। ठीक है न यह ? तुम खुद समझते हो कि बात यों ही है। मुझे डर है कि हो न हो, तुम लाल-सेना के लोगों से जा मिलोगे। अभी तुमने अपने-आपको पाया नहीं है, ग्रीशा !"

"और, तुमने पा लिया है अपने-आपको ?" ग्रिगोरी ने खड़िया की पहाड़ी के पीछे छिपते सूरज की ओर घूमकर देखते हुए पूछा। पश्चिम का सारा आसमान आग की बची हुई लपटों से तमतमा रहा था। बादल काले पहाड़ों को कंधों पर उठाये क्षितिज मे भागे जा रहे थे।

"हाँ, मुझे मिल गई है मेरी अपनी लीक। तुम मुझे उससे अलग नहीं कर सकते। मैं तुम्हारी तरह डगमगाऊँगा नहीं, ग्रिगोरी।"

"आह !" ग्रिगोरी के होंठों पर मुस्कान दौड़ गई।

"हाँ, मैं डगमगाऊँगा नहीं।" प्योत्र ने अपनी मूँछें खासोश से ऐंठी और यों पलकें झपाने लगा, जैसे कि आँखों में चकाचौंध पैदा हो रही

हो—"तुम मेरी गर्दन में फंदा डालकर भी मुझे लाल लोगों की तरफ घसीट नहीं सकते। कज्ज़ाक उनके खिलाफ हैं और इसीलिए मैं भी उनके खिलाफ हूँ। मैं कज्ज़ाकों के खिलाफ जाना नहीं चाहता और मैं उनके खिलाफ जाऊँगा भी नहीं।···बेमतलब बात होगी यह, और मेरे किए ऐसा होगा भी नहीं।"

"यह बात छोडो।" ग्रिगोरी ने थकान से भरे स्वरों में कहा और अपने ठिकाने की ओर जाने को मुड़ा। फाटक पर प्योत्र ठिठका और पूछने लगा, "मुझे बताओ, मैं जानना चाहता हूँ—ग्रिगोरी, मुझे बताओ कि तुम उन लोगो से तो जाकर नहीं मिल जाओगे ?"

"कह नहीं सकता···मैं नहीं जानता।"

ग्रिगोरी ने हिचकते हुए, सकोच से जवाब दिया। प्योत्र ने लम्बी साँस ली पर अपने भाई से आगे और कुछ नहीं पूछा। वहाँ से लौटा तो काफी परेशान और विचारो मे डूबा हुआ लौटा। उसके और ग्रिगोरी, दोनों के ही सामने यह तकलीफदेह बात आईने की तरह साफ रही कि जिस पथ पर वे दोनो एकसाथ बढ़े, वह अनुभव के झाड़-झाडियो के अभेद्य पसारे मे उस रास्ते की तरह ही खो गया, जिस पर भेड़-बकरियो के खुरों के निशान होते हैं, जो पहाड़ के किनारे के ढाल से नीचे उतरता है, और फिर तलहटी की झाडियो के झुरमुट मे एकाएक खत्म हो जाता है।···

दूसरे दिन टुकडी के आधे लोग प्योत्र की कमान मे व्येशेन्स्काया के लिए रवाना हो गए, और बाकी ग्रिगोरी की कमान मे आरज़ेनोव्स्काया के लिये।

उस दिन सुबह से ही सूरज बेरहमी से आग बरसा रहा था। स्तेपी का मैदान भूरी धुंध के बीच उबल-सा रहा था। कज्ज़ाकों के पीछे छूट गई थी पहाडियो की नीली रेखाएँ और बालू के विस्तार की जाफरानी बाढ। घोडे पसीने से नहाए, साधारण चाल से बढे जा रहे थे। कज्ज़ाकों के चेहरे गरमी और धूप से लाल हो रहे थे। काठियों की कमानें, रकाबें और लगामें, इस तरह जल रही थी कि नंगे हाथों उन्हे छूना आसान न था। जंगल मे भी ठडक न थी। वहाँ भी हवा मे उमस और बरसा की तेज गमक थी।

ऐसे में हल्की-हल्की-सी एक उत्कठा ग्रिगोरी को बराबर मथती रही।

वह अपनी काठी पर हिलते-डुलते हुए रह-रहकर अपने भविष्य के बारे में सोचने लगता। प्योत्र के शब्द रुद्राक्ष की माला की गुरियों की तरह उसके कानों में बजते। चिरायते की कड़ुआहट से उसके होंठ बिचक उठते। सड़क से गरमी के कारण भाप-सी निकलने लगती। स्तेपी का सुनहरा भूरा मैदान धूप में औंधा पड़ा रहा और खुश्क हवाएं उसके ऊपर मर्राटे भरती रहीं। वे जहाँ-तहाँ बची घास की पत्तियों को बराबर हिलाती-डुलाती और गर्द के पर लगाकर उसे उड़ाती रहीं।

शाम होने को हुई तो एक भलाभल धुंध ने सूरज को ढंक लिया। आसमान धुंधलाकर और भूरा पड़ गया। पश्चिम में बादल भारी मन से जमा हुए और क्षितिज के बारीक सूत के सहारे जड़-से बने लटक गए। फिर हवा ने उन्हें हांका तो वे जैसे धमकियाँ देते हुए उसकी लहरियों पर तैरने लगे और चिढ़कर अपने सिरे बहुत नीचे तक खींच ले गए। उनके किनारों पर चीनी की सफ़ेदी दौड़ गई।

टुकड़ी ने एक धारा पार की और चिनार के जंगल में प्रवेश किया। हवा के झोंके में आकर पत्तियों ने अपने अन्तर का दूधिया नीलम सामने किया और गहरे मर्मर स्वरों में कुछ कहा। खोपर नदी के पार कहीं बादलों की उजली पट्टियों से पानी की आड़ी-तिरछी फुहारें छनीं और ओले पड़े। साथ ही किसी ने चटख रंगों से इन्द्रधनुष बुन दिया।

कज्ज़ाकों ने रात एक छोटे-से एकान्त गाँव में बिताई। ग्रिगोरी ने अपने घोड़े की देखभाल की और फिर शहद की मक्खियोंवाले बाग में निकल गया। घुंघराले बालोंवाले, बुज़ुर्ग-से कज्ज़ाक ने उससे चिन्ता से कहा, "शहद की मक्खियों का वह छत्ता देखते हो? ये मक्खियाँ मैंने उस दिन खरीदी हैं, पर जाने क्यों इनके बच्चे मरते जा रहे हैं। देखो न, मक्खियाँ उन्हें घसीटकर बाहर ला रही हैं···" वे दोनों छत्तेवाले लट्ठे के पास रुके तो मेजबान ने छत्ते के खुलाव की ओर इशारा किया। शहद की मक्खियाँ हल्के-हल्के भन-भन करते हुए अपने बच्चों की लाशें बाहर ला रहीं और उनके संग उड़ी जा रही थीं।

मालिक ने सन्ताप से अपनी आँखें सिकोड़ीं और होंठ ऐंठे। वह चलता तो जैसे झटके से खाता और अपने हाथ भद्दे ढंग से, बहुत ही ज्यादा

हिलाता। उसकी चाल-ढाल का यह भद्दापन और ताकत की यह बरबादी शहद की मक्खियों के छत्तेवाले उस बाग में बेमानी-सी लगी, क्योंकि वहाँ इन मक्खियों का बड़ा परिवार था और परिवार के सदस्य अपना काम बहुत सोच-समझकर धीरे-धीरे एक संगीत की-सी लय में बंधकर कर रहे थे। सो, ग्रिगोरी ने धुंधली-सी नफरत से भरकर अपने मेजबान पर निगाह जमाई। यह नफरत उस आदमी ने खुद अपनी अटपटी बातों से और बढ़ाई, "शहद की मक्खियों के खयाल से यह बड़ा अच्छा साल है। महक-दार पत्तियोंवाले थाइम (पौधे) में खूब फूल आए, और खूब हुआ।…फ्रेम छत्तों से अच्छे होते हैं। कुछ और फ्रेम मँगा लूंगा…।"

ग्रिगोरी बावर्चीखाने में चाय पीने को आ बैठा। चाय में शहद डाला गया। शहद गोंद की तरह गाढ़ा और चिपचिपा लगा। उससे जड़ी-बूटियों और चरागाही फूलों की भीनी-भीनी महक आई। चाय मेजबान की बेटी ने उड़ेली। उसका कद लम्बा था और वह एक खूबसूरत से फौजी को ब्याही थी। फौजी लाल-सेना के लोगों के साथ पीछे हट गया था, इसीलिए उसका ससुर यानी इस लड़की का पिता इतना मेल-मिलाप और इतनी मिलनसारी दिखला रहा था। इस समय वह इस तरह बना कि बेटी ने भौंहों के नीचे से ग्रिगोरी पर तेजी से नजरें डालीं तो उसने देखा ही नहीं। लड़की ने चायदानी के लिये हाथ बढ़ाया तो ग्रिगोरी की निगाह उसकी बगल के चमकदार, काले, घुंघराले बालों पर पड़ी। फिर उसकी आँखें कई बार उसकी गहरे उतरनेवाली, उत्सुकता से भरी आँखों से मिलीं। ग्रिगोरी को लगा कि ऐसे अवसर पर हर बार उसके चेहरे पर लाली दौड़ गई और वह मुस्करा दी।

"मैं आपका बिस्तर सामनेवाले कमरे में लगाए देती हूं।" लड़की ने चाय के बाद कहा और तकिया और कम्बल लाने को चली। बगल से गुजरी तो उसने ग्रिगोरी को अपनी भूखी निगाह से झुलसा-सा दिया। बाद में तकिया ठीक करते समय, वह शान्त भाव से, धीरे-धीरे यों बोली जैसे कि बात का महत्त्व ही न रखती हो, "मैं शेड में सोती हूँ,…अन्दर बड़ी घुटन होती है और डांस काटते हैं…।"

ग्रिगोरी ने सिर्फ अपने बूट उतारे। फिर बूढ़े कज्जाक के खर्राटे ज्यों

ही उसके कान में पड़े, वह उठा और शेड में आया। लड़की ने उसके लिए अपनी बगल में जगह कर दी, भेड़ की खाल अपने ऊपर खींच ली, और ग्रिगोरी के पैरों का अपने पैरों से स्पर्श करती चुपचाप पड़ी रही। उसके होंठ खुश्क और कड़े रहे। उनमें प्याजों की बू आती रही और एक अनूठी ताजगी बरसती रही। ग्रिगोरी उसकी दुबली-साँवली बाँहों में तड़के तक बँधा रहा। सारी रात लड़की उसे भयानक ढंग से कसती और बढ़ती हुई प्यास से दुलारती रही। हँसी-ठिठोली करते हुए उसने उसके होंठ इस तरह काटे कि खून छलक आया। साथ ही गर्दन, सीना और कंधे भी इस तरह दाँत काट-काटकर चूमे कि वहाँ भी उसके जानवरों के-से छोटे-छोटे दाँतों के नीले निशान बन गए। अंत में मुर्गे ने तीसरी बाँग दी तो ग्रिगोरी ने झोंपड़ी में वापस जाने के लिये उठने की कोशिश की, पर लड़की ने उसे रोका। वह अपनी भूलती हुई मूँछों के बीच मुस्कराते और धीरे से अपने को छुड़ाने की चेष्टा करते हुए बोला, "मेरी जान, जाने दो···जाने दो अब मेरी सलोनी चिरैया !"

"थोड़ी देर और लेट लो···लेट जाओ।"

"लेकिन, लोग देख लेंगे हमें, जल्दी ही उजाला हो जाएगा।"

"देखें, तो देखें ?"

"लेकिन, तुम्हारे पापा क्या कहेंगे ?"

"वे जानते हैं।"

"क्या मतलब तुम्हारा !" ग्रिगोरी ने आँखें ऊपर उठाईं।

"क्यों, तुम खुद ही समझ सकते हो···कल उन्होंने मुझसे कहा—अगर अफसर चाहे तो तुम उसके साथ सो रहना, नहीं तो यह फौजी तुम्हारे आदमी के कारण या तो घोड़ा खोल ले जाएंगे, या कुछ इससे भी बदतर करेंगे···मेरा मर्द लाल-सेना के साथ चला गया है न !"

"तो मामला यह है !" ग्रिगोरी नफ़रत से मुस्कराया, पर अन्दर ही अन्दर उसने अपमान अनुभव किया। परन्तु, लड़की ने उसके मन की दुर्भावना दूर कर दी। वह उसके हाथ के घट्टे सहलाते हुए कांपने-सी लगी। बोली, "मेरा बाँका पिया तुम्हारा पासग भी नहीं है !"

"कैसा है वह ?" ग्रिगोरी ने गम्भीर निगाहों से पियराते आसमान

के गुम्बद की ओर निहारते हुए पूछा।

"वह बिल्कुल निकम्मा है, कमज़ोर है···" वह विश्वास के सा ग्रिगोरी के और पास सट आई और उसकी आवाज में खुश्क आँसू बजने लगे, "मैं उसके साथ रही जरूर, पर मेरी जिन्दगी में कोई मिठास कभी नहीं आई। वह औरत के काबिल नहीं।"

उस विचित्र-सी लड़की की बच्चों की-सी, भोली-भाली आत्मा ग्रिगोरी के सामने इस तरह सहज भाव से खुल गई, जैसे ओस से नहाया फूल अपनी पाखुरियां खोल देता है। ग्रिगोरी पर एक नशा-सा छा गया और उसे उस लड़की पर तरस आने लगा। वह नदी-नाव सजोग से मिली अपनी इस सगिनी के बालों पर हाथ फेरने लगा और उसने थकान से भरी अपनी आँखें बंद कर ली।

चाँद की मुरझाती किरणें शेड के छप्पर के सरपत से छनीं। एक सितारा टूटकर तेज़ी से क्षितिज की ओर लपका तो राख के रंग के आसमान में रोशनी की एक रेखा-सी खिचती और दूसरे ही क्षण मिटती चली गई। तालाब में एक बतख कीकी और एक मुर्गाबि ने वासना से भर्राई आवाज में अपना मन घोला।

ग्रिगोरी झोपड़ी में वापस आ गया। उसे अपना खाली शरीर हलका, पर बजती हुई मधुर थकान में चूर-चूर लगा। उस कज्जाक औरत के भूखे शरीर और उस शरीर से उभरती सुगध यानी जड़ी-बूटी, शहद, पसीने और गरमी से मिलजुलकर बनी सुगध की याद उसने अन्तर में सावधानी से सुरक्षित कर ली। अब उसके होंठों के नमक का अपने होंठों में रस लेते हुए वह सो गया।

उसे दो घंटे बाद कज्जाकों ने जगाया। प्रोखोर ज़िकोव अपना घोड़ा कसकर बाहर लाया। ग्रिगोरी ने अपने मेज़बान की, चिनगारियाँ बरसाती, दुश्मनी से भरी, कड़ी निगाह का दृढ़ता से सामना करते हुए उससे विदा ली। इस बीच लड़की उधर से गुजरकर अन्दर गई तो उसने झुककर उससे भी अलविदा कहा। लड़की ने अपनी गर्दन झुकाई, और पीड़ा की अवर्णनीय वेदना में नहाई मुस्कान उसके प्यारे-प्यारे-से, पीले होंठों के कोनों में झाँकने लगी।

ग्रिगोरी ने मुड़कर पीछे की ओर निगाह दौड़ते हुए, अपना घोड़ा किनारे की गली से आगे बढ़ाया। बीच में वह झोंपड़ी पड़ी जहाँ उसने रात बिताई थी और उस औरत के शरीर में वासना की गरमी दौड़ाई थी। यहाँ पहुँचने पर उसने देखा कि औरत बाड़ के उस पार खड़ी है, और आँखों पर अपनी भूरी हथेली की आड़ किए उसे एकटक निहार रही है। आशा के प्रतिकूल कलप के साथ ग्रिगोरी ने पीछे घूमकर उस औरत को भर आँख देखना चाहा और उसके चेहरे के कुल भाव पढ़ लेने चाहे। पर इरादा पूरा नहीं हुआ, क्योंकि उसके हर मोड़ के साथ आँखें मोड़ते हुए लड़की ने बिल्कुल वैसे ही अपना सिर घुमा लिया, जैसे सूरजमुखी का फूल धीरे-धीरे परिक्रमा करते सूरज के साथ-साथ घूमता चला जाता है।

मिखाइल कोशेवोइ को व्येशेन्स्काया से पैदल मोर्चे पर हाँक दिया गया। वह फेदोसेयेव स्तनीत्सा पहुँचा। पर जिले के अतामान ने एक दिन उसे वहाँ रखा और फिर एक आदमी साथ कर व्येशेन्स्काया लौट जाने का हुक्म दिया। मिखाइल ने क्लर्क से पूछा, "आप मुझे वापस क्यों भेज रहे हैं?" क्लर्क ने सकोच के साथ जवाब दिया, "हमें व्येशेन्स्काया से ऐसे ही आदेश मिले हैं।"

वह व्येशेन्स्काया पहुँचा तो पता चला कि उसके आने के बाद उसकी माँ गाँव-पंचायत में गई और बड़े-बूढ़ों के पैरों पड़ गई। उन्होंने पूरी पंचायत के नाम पर अनुरोध किया कि मिखाइल को जिले के घोड़ा-पालन फार्म में चरवाहा नियुक्त कर दिया जाए। अनुरोध मिरोन कोरशुनोव खुद अतामान के पास ले गया और उसने बड़ी आरजू-मिन्नत की।

जिले के अतामान ने मिखाइल को पूरी बात बताते हुए लम्बा भाषण झाड़ा और अंत में क्रोध से बोला, 'दोन-प्रदेश की रक्षा के मामले में हम बोलशेविकों पर भरोसा नहीं कर सकते! फिलहाल, तुम घोड़ा पालन-फार्म पर जाओ, बाद में देखा जाएगा। ··सुअर के बच्चे, तुम्हारी माँ पर तरस आ गया हम सबको, वरना···जाओ यहाँ से!"

मिखाइल गरमी से तपती गलियों से अकेला गुजरने लगा तो बरसों पैदल चलाई से चूर-चूर उसके पैर आगे बढ़ने से इन्कार करने लगे। वह किसी तरह रात भीगते-भीगते अपने गाँव पहुँचा। दूसरे दिन फूट-फूटकर

रोया तो माँ ने बड़ा धीरज बधाया। फिर, माँ की बढ़ती हुई उम्र के चित्रांकन-से उसके चेहरे और उसके बालों के चांदी के तारों की स्मृति अन्तर में सजोए वह घोड़ा-पालन फार्म के लिये रवाना होने की तैयारी करने लगा।

कारगिस्काया के दक्षिण में कोई २८ वर्स्ट लम्बा और ६ वर्स्ट चौड़ा स्तेपी का एक अछूता मैदान था। यह हजारों एकड़ जमीन जिले के स्टैलियनों की चराई के लिए अलग रखी गई थी। प्रतिवर्ष सत येगोर दिवस पर चरवाहे स्टैलियनों को जाड़े के अस्तबलों से हाँककर चरागाहों में लाते। यहां जिले की सरकारी रकम से घोड़ों के लिए एक अस्तबल और चरवाहों, ओवरसियर और घोड़ा-डॉक्टर के लिए एक झोपड़ी बनाई गई थी। हर साल व्येशेन्स्काया के कज्ज़ाक अपनी घोड़ियाँ लेकर यहाँ आते और ओवरसियर और घोड़ा-डॉक्टर इन घोड़ियों की परीक्षा करते। नापते कि वे चौदह हाथ से कम ऊँची तो नहीं हैं। देखते कि उनकी उम्र चार साल से कम तो नहीं है। फिर ये स्वस्थ घोड़ियां चालीस-चालीस के गिरोह में जमा की जातीं और हर स्टैलियन अपने गिरोह को लेकर स्तेपी में निकल जाता। वह अपनी घोड़ियों पर कड़ी नजर रखता और दूसरे स्टैलियनों से बहुत ही ज्यादा जलता।

सो, मिखाइल ने अपने परिवार की घोड़ी पर सवार होकर घोड़ा-पालन-फार्म को जाने का फैसला किया। माँ ने ऐप्रन के सिरे से अपने आँसू पोंछते हुए कहा, "हो सकता है कि इस घोड़ी के भी बछेड़ा हो जाए वहाँ···देखो, कायदे से देखभाल करना इसकी···सवारी करना तो बहुत थकाना मत इसे···हमें घर में एक दूसरे घोड़े की बड़ी जरूरत है।"

मिखाइल ने मंजिल तय की और दोपहर होते-होते भाप छोड़ती धूप के पार नीचे घाटी में झोपड़ी और अस्तबलों की, मौसम की मार से, धुंधलाई भूरी छत देखी। इसके और पूर्व में ताल की ओर दौड़कर जाते घोड़ों पर उसकी नजर पड़ी। एक आदमी उनकी बगल में घोड़ा सरपट दौड़ाता दिखा। आदमी क्या, वह तो एक खिलौना लगा। उसका घोड़ा भी घोड़े का महज खिलौना समझ पड़ा।

मिखाइल बैरक के अहाते में आया, घोड़े से नीचे उतरा और बरसाती

के खम्भे में घोड़ा बांधकर अन्दर गया। वहां चौड़े बरामदे में उसे एक कज्ज़ाक चरवाहा मिला—मोटा, तगड़ा, भाईंदार चेहरा। वह मिखाइल को सिर से पैर तक, अजीब-सी नजर से देखते हुए बोला, "किसे चाहते हो?"

"मैं ओवरसियर से मिलना चाहता हूं।"

"ओवरसियर इस वक्त यहां नहीं है···कहीं बाहर गया है···उसका नायब है···बाईं ओर के दूसरे दरवाज़े में···लेकिन तुम्हें काम क्या है उससे? कहां से आए हो तुम?"

"मैं चरवाहा बनकर आया हूं यहां···"

"कैसे-कैसे लोगों को यहां भेज दिया जाता है!" आदमी बड़बड़ाता हुआ दरवाज़े की ओर बढ़ा। कंधे पर पड़ी कमद उसके पीछे-पीछे ज़मीन पर लथड़ती रही। उसने दरवाज़ा खोला और मिखाइल की ओर पीठ-कर अपना चाबुक नचाते हुए ज़रा स्नेह से बोला, "लेकिन भाई, हमारा काम बड़े जीवट का है। कभी-कभी दो-दो दिन घोड़ों की पीठ पर सवार ही सवार गुजर जाते हैं।"

मिखाइल ने आदमी के चौड़े कंधों और नंगे पैरों को नज़र गड़ाकर देखा। ड्योढ़ी की रोशनी में उसके भद्दे चेहरे और शरीर की रेखा-रेखा साफ हो उठी। उसके कमान-से पैरों को देखकर मिखाइल को मन-ही-मन हंसी-सी आई—'लगता है कि इसने चालीस साल बराबर घोड़े की नंगी पीठ पर सवारी की है।'

ओवरसियर का नायब नये चरवाहे से बड़ी बेरुखी से मिला। ज़रा देर बाद खुद ओवरसियर आ गया। ओवरसियर हट्टा-कट्टा कज्ज़ाक और अतामान के रेजीमेंट का पहले का सार्जेंट मेजर था। उसने मिखाइल का नाम राशन के रजिस्टर में लिखे जाने का आदेश दिया और उसे साथ लेकर बाहर बरसाती में आया। बोला, "तुम घोड़ों को साध सकते हो? कभी किसी घोड़े को साधा है तुमने?"

"यह कहना तो गलत होगा कि मैंने कोई घोड़ा निकाला है कभी।" मिखाइल ने सही बात सीधे-सीधे मान ली। मगर, दूसरे ही क्षण ओवरसियर के पसीने से नहाए चेहरे पर असन्तोष की एक गहरी रेखा देखी। ओवरसियर अपनी पीठ खुजलाता मिखाइल को एकटक घूरकर देखता

रहा।

"तुम कमद इस्तेमाल कर सकते हो ?"

"कर सकता हूँ।"

"और, घोडो के साथ अच्छा बरताव कर सकते हो तुम ?"

"कर सकता हूँ।"

"घोडे इन्सानों की तरह ही होते है, सिर्फ यह है कि बोल नही सकते। उनसे हमेशा प्यार का व्यवहार करना।" ओवरसियर ने हुक्म दिया और सहसा ही आपे से बाहर होते हुए चीखा, "उनपर निगाह रखना, मगर चाबुक से नही।"

क्षण भर के लिए उसका चेहरा विचार की गहराई से खिल उठा, पर यह रग दूसरे ही पल उड गया। उसकी जगह अन्यमनस्कता की एक परत ने तुरन्त ही ले ली। बोला, "शादी हो गई है ?"

"नही।"

"तुम बेवकूफ हो। शादी कर लेनी चाहिए थी।" उसने मिखाइल के चेहरे पर खिलते हुए हाथ मारा।

ओवरसियर ज़रा देर तक विस्तृत स्तेपी के आर-पार नज़र दौड़ाता रहा और फिर जम्हाई लेकर झोंपडी के अन्दर चला गया। उसके बाद एक महीने से अधिक समय की अपनी नौकरी के काल में मिखाइल ने उसके मुँह से कभी एक शब्द नही सुना।

फार्म मे कुल ५५ स्टैलियन थे और हर चरवाहे को दो-दो या तीन-तीन गिरोहो की देखभाल करनी पडती थी। मिखाइल को जो दो गिरोह सौंपे गए, उनमे से बडे गिरोह का अगुआ बखार नाम का एक ताकतवर, पुराना स्टैलियन था, और बीस घोड़ियो के छोटे गिरोह का सरगना बनाल नाम का एक दूसरा स्टैलियन। ओवरसियर ने सोलदातोव नाम के सबसे होशियार और बेधडक चरवाहे को बुलवाया और उससे बोला, "यह हमारा नया चरवाहा है। नाम मिखाइल कोशवोइ है। तातारस्की गाँव से आया है। इसे बखार और बनाल के गिरोह दिखला दो और एक कमद दे दो। यह तुम्हारी झोंपडी मे रहेगा। इसे बता दो झोंपड़ी कहाँ है! ले जाओ इसे अपने साथ।"

सोलदातोव ने बिना कुछ बोले सिगरेट जलाई और मिख़ाइल की ओर देखकर सिर हिलाया, "चलो।" बरसाती में पहुँचने पर उसने मिख़ाइल की औंधा-सीढ़ी में धूप में खड़ी घोड़ी की ओर इशारा किया और पूछा, "यह तुम्हारी घोड़ी है ? बच्चा होने को है इसे ?"

"नहीं।"

"अस्तार से जोड़ा खिलवा दो इसको। वह कोरोलयोव के घोड़ा-फ़ार्म से आया था। उसका बाप अंग्रेज़ी था। यों भी उस फार्म के घोड़े बहुत तेज़ होते हैं।···अच्छा, तो सवार हो लो घोड़ी पर।"

घोड़ों पर सवार होकर दोनों साथ-साथ चले। आगे बढ़ने पर घोड़ों के घुटने-घुटने तक घास आ गई। झोंपड़ी और अस्तबल पीछे छूट गए। उन्हें अपने सामने नज़र आया नाज़ुक, नीली धुंध में लिपटा स्तेपी। वहाँ के सन्नाटे में उन्हें एक शोभा और शान का अनुभव हुआ। सूरज ओपली बादलों के पार की अपनी चोटी से धूप बरसाता रहा। गरम हवा से भारी बू उठती रही। दाईं ओर झील की मोटी-सी दूधिया सतह धुंध से मढ़ी रेखाओं वाले गढ़े में लौ देती रही। लेकिन, निगाहों की दौड़ की पकड़ तक हर ओर हरियाली नज़र आई, अनन्त विस्तार धुंध की लहरियों के बीच लहरें लेता दीख पड़ा, और प्राचीन स्तेपी के पैरों में दोपहर की गरमी की बेड़ियाँ दिखलाई पड़ीं। क्षितिज पर जादू, एक अमूर्त टूह-सा जमा लगा।

घासों की जड़ों के चेहरे तमतमाए हुए थे और उसमें गहरा हरा रंग घुला हुआ था। हूनीद्यु घास के फूलों में धूप ताँबे के रंग भर रही थी। लम्बी फ़ेदर घास छितरी हुई थी। उसके बीज कच्चे थे और उनके बीच-बीच में इमुरका के गोल धब्बे थे। काउच घास बीजों से बोझिल अपनी बालियाँ सूरज की ओर लपका रही थी। बौनी झाड़ियां, सेज-जड़ी के ठूँठों के बीच, जहाँ-तहाँ अघों की तरह ज़मीन से चिपकी हुई थीं। आगे फिर स्तेपी की घास की बाढ़ ठाठें मारती थी।

दोनों कज़्ज़ाक, बिना एक-दूसरे से बोले, घोड़ों पर सवार आगे बढ़ते गए। मिख़ाइल को इस बीच शांति से धुली विनय का नया अनुभव हुआ। स्तेपी के मैदान का सन्नाटा, और उसकी सधी हुई शान उसे टीसने-

.ो लगी। उसका साथी अपने घोड़े की अयाल पर झूलकर ऊँघाने-
लगा। काठी की कमान पर भुर्रियों से भरे उसके हाथ यों बँधे लगे कि
कि वह किसी धार्मिक सस्कार में हिस्सा ले रहा हो।

इसी समय घोड़ों के खुरों के बीच से एक सारंग चिड़िया निकल
और अपने पखो के नीचे की सफेदी चमकाती नाली के ऊपर उड़ने लगी
हवा के लहरें घास की पत्तियों को झूले झुलाने लगे। शायद इन्हीं लह
ने सुबह *अजीब सागर की लहरियों में बल डाल दिए थे।*

आधे घटे में उन दोनो घुड़सवारों को ताल के किनारे चरता, घोड़
का एक समूह मिला। सहसा ही सोलदातोव जाग उठा, और मुस्तो
ऐंठता हुआ सीधा हुआ।

"यह तो लोमाकिन का गिरोह है, पर वह खुद तो कहीं दिखल
पड़ता नहीं···"

"इस गिरोह के स्टैलियन का नाम क्या है?" ऊँचे, हलके,
स्टैलियन की मन-ही-मन तारीफ करते हुए मिखाइल ने पूछा।

"फेज़र नाम है इस गिरोह के स्टैलियन का···शैतान, बड़ा ही खुंख
है···वह देखो, वह जा रहा है।"

स्टैलियन एक ओर को बढ़ा तो घोड़ियाँ उसके पीछे दौड़ पड़ीं।"

मिखाइल ने अपने दोनो गिरोह सम्हाल लिए और अपनी चीज़ें
वाली झोंपड़ी में रख दीं। दूसरे तीन चरवाहे भी उसके साथ झोंपड़ी
हिस्सा बँटाते रहे। सोलदातोव उन सबका सीनियर था। उसने मिखा
को उसका काम समझाया, स्टैलियन के चरित्र और आदतों के बारे
बताया और मुस्कराकर सलाह देते हुए बोला—

"समझ गए जाता है कि तुम अपने काम अपने घोड़े पर सव
होकर ही करोगे, लेकिन अगर तुमने अपनी घोड़ी हर दिन रेती तो
खत्म हो जाएगी। तो, उसे तो तुम गिरोह में शामिल कर दो
सवारी किसी और घोड़ी पर करो। साथ ही घोड़े अक्सर ही बद
रहो।"

और मिखाइल की आँखों के आगे उसने गिरोह से एक घोड़ी चुन
बड़ी ही दक्षता से कमंद डाली, उसपर मिखाइल की घोड़ी की काठी कर

और उसे उसके पास लाते हुए बोला, "तुम इस घोड़ी पर चढ़ा करो। लेकिन, खयाल रखना, यह अभी निकाली नहीं गई है। चढ़ो और इस बहाने निकालो उसे।" उसने दाहिने हाथ से तेजी से लगाम खींचते और बायें हाथ से घोड़ी के कँपकँपाते हुए नथुने सहलाते हुए चिल्लाकर कहा, "घोड़ों की देखभाल प्यार से करना। घोड़े अस्तबल में बात मानते हैं, मगर बाहर मैदान में दूसरे ही हो जाते हैं। मगर, जहाँ तक बखार का सवाल है, आँखें खुली रखना। उसके पास अपना घोड़ा कभी न लाना, वरना वह हड्डी-पसली चूर कर देगा।" उसने रकाबों में पैर जमाते और घोड़ी के कसे हुए, रेशमी थन को स्नेह से थपथपाते हुए कहा।

: २ :

मिखाइल ने एक सप्ताह तक आराम किया और सारा समय घोड़े की काठी पर ही बिताया। स्तेपी ने उसके चित्त को थोड़ा विनम्र बनाया, और, उसे कदीमी ढंग की जिन्दगी बिताने पर मजबूर कर दिया।

घोड़ों का गिरोह आस-पास निकल जाता और वह या तो काठी पर बैठा ऊंघता रहता या घास पर लेटकर शून्य मन से आसमान में भटकते बादलों को देखता रहता। पहले जीवन में यह विराग उसके मन को खुशी से भरता रहा और लोगों की भीड़भाड़ से इतनी दूर की जिन्दगी उसे भली भी लगी। पर, वह नई परिस्थिति से अपना तालमेल बैठालता रहा कि पहले सप्ताह के अन्त में एक धुंधली-सी आशंका उसके मन में घर करने लगी। उसे खयाल आया, 'दूर लोग अपनी और दूसरों की किस्मतों का फैसला कर रहे हैं और यहां मैं इतनी सारी घोड़ियों की देखभाल कर रहा हूँ।' लेकिन, एक दूसरे स्वर ने उत्तर में उभरकर फुसफुसाते हुए कहा, 'लड़ने दो उन लोगों को। वहाँ तो मौत का पसारा है हर जगह, लेकिन यहां आजादी है, हरी घास है और नीलम का खुला आसमान है। वहाँ लोग तेहे से उबल रहे हैं, मगर यहां शान्ति है। क्यों सिर धुनो कि दूसरे लोग क्या कर रहे हैं! लेकिन, इस पर भी विचार उसके चित्त की शान्ति भंग करते रहे और इसी वजह से वह दूसरों के संग-साथ की तलाश करने लगा। अब वह पहले से कहीं अधिक सोनदानोव की संगत चाहने

और उसके करीब आने की कोशिश करने लगा।

लेकिन, सोलदातोव को अकेलेपन की कोई बीमारी न थी। वह शायद ही कभी रात झोंपडी मे काटता, प्रायः घोड़ों के अपने गिरोहों के साथ ताल के किनारे बना रहता, और जानवरों की-सी जिन्दगी बिताता। अपने खाने के लिए शिकार करता और इतनी अक्लमदी से करता, जैसे कि जीवन-भर सिर्फ यही काम करता रहा हो। एक बार मिखाइल ने उसे मछली के शिकारवाली वसी को घोडे के बाल से चमकाते देखा और पूछा, "इसमें क्या पकडोगे तुम ?"

"मछली···"

"पर, मछलियाँ हैं कहाँ ?"

"तालाब मे।"

"तुम मछलियों के लिये चुग्गा क्या इस्तेमाल करते हो ? कीड़े ?"

"रोटी और कीड़े-मकोडे।"

"इन चीजों को उबालते हो तुम ?"

"मैं इन्हे धूप मे सुखाता हूँ···लो, जरा चखकर देखो।" सोलदातोव ने अपनी पतलून की जेब से कार्प का एक टुकडा निकाला और खुशी से हँसते हुए मिखाइल को दिया।

दूसरी बार मिखाइल अपने गिरोह का पीछा कर रहा था कि सोलदातोव द्वारा बिछाए जाल में उसे एक सारस फसा दीखा। पास ही उस जानवर की बहुत ही कुशलता से बनी नकल मिली और जाल बहुत ही कला से घास में छिपा नजर आया। सोलदातोव ने उसी रात जमीन में छेदकर जानवर पकाया। इसके लिये उसने पहले उसके ऊपर अगारे बिछाये। मांस पक गया तो उसने मिखाइल को खाने की दावत दी। फिर मिखाइल ने जायकेदार मांस हाथ में उठाया कि सोलदातोव बोला, "जाल में दुबारा हाथ मत लगाना···खराब कर दोगे तुम उसे···"

"आखिर तुम यहाँ कैसे आ टपके ?" मिखाइल ने उससे पूछा।

"मैं अपने बाप-माँ का अकेला बेटा हूँ···"सोलदातोव एक क्षण को चुप रहा और फिर अचानक ही बोला, "सुनो, लड़के कहते हैं कि लाल-लोगों में से तुम भी एक हो। यह बात सही है क्या ?"

मिखाइल को ऐसे सवाल की आशा न थी, इसलिए वह अचकचा गया, "नहीं तो···हाँ, मैं चला गया था उनके गिरोह में···पर, पकड़ा गया।"

"तुम गए क्यों थे उनके गिरोह में? किस बात का लालच था तुम्हें?" सोलदातोव ने और धीरे-धीरे मुँह चलाते हुए गम्भीर भाव से पूछा।

वे दोनों एक सूखे दर्रे के ऊपर, आग के किनारे बैठे थे। कंडे की आग धना धुआँ उगल रही थी, और राख के बीच से हल्की-सी लपट उठ रही थी। उनके पीछे रात सुरक और गर्म साँसें ले रही थी और सूखे चिरायते की गंध ऊपर से आ रही थी। स्याही के रंग के आसमान में टूटते सितारों के डोरे पड़-पड़ जाते थे। सितारा टूटता तो हर बार ऐसा निशान छोड़ता जैसा कि चाबुक का घोड़े के साज की दुमची पर पड़ जाता है।

मिखाइल ने सोलदातोव के, आग की रोशनी में दमकते चेहरे पर सावधानी से नजर गड़ाई और जवाब दिया, "मैं लोगों के हक़ के लिए लड़ना चाहता था।"

"कैसा हक़, जरा मुझे बताओ।" सोलदातोव ने धीमी आवाज में राज लेते हुए पूछा, इस पर मिखाइल एक क्षण तक हिचकिचाया। उसने सोचा कि उसके साथी ने अपने मन का भाव छिपाने के लिए कंडे का ताजा टुकड़ा आग में डाला। फिर वह हिम्मत जुटाते हुए बोला, "हक़ के मानी हैं, हरएक के लिये बराबरी, यानी यह नहीं होना चाहिये कि कोई रईस हो, राजा हो, और कोई किसान हो। समझे! और, यह बराबरी आकर रहेगी एक दिन।"

"तुम्हारा ख्याल नहीं है कि जीत कैडेटों की होगी?"

"नहीं···मेरा ख्याल नहीं है···।"

"तो, यह चाहते थे तुम भी···" सोलदातोव ने लम्बी साँस खींची और झटके से उठकर खड़ा हो गया, "कुत्ते का पिल्ला कहीं का···तो तू चाहता था करजाकों के साथ गद्दारी करना और यहूदियों के साथ मिल जाना?" उसकी आवाज में गुस्सा था, "तुम हम सबकी जड़ उखाड़ना चाहते थे, क्यों? इसलिए कि यहूदी सारे स्तेपी में कारखाने बिछा दें?

इसलिए कि वे हमें यहाँ से भगा दें, हाँक दें ?"

परेशान मिखाइल भी उठकर खड़ा हुआ। उसे लगा कि सोलदातोव उस पर भरपूर हाथ जमा रहा है, सो वह उछलकर एक क़दम पीछे हो गया। सोलदातोव ने उसे पीछे हटते देखा तो मुट्ठी घुमाई। इस पर मिखाइल ने उसका हाथ थाम लिया और कलाई मरोड़ते हुए सलाह देते हुए बोला, "होश में आओ, नहीं तो तुम्हारा सारा नशा हिरन कर दूँगा मैं ···गला क्यों फाड़ रहे हो ?"

दोनों अँधेरे में एक-दूसरे के सामने खड़े रहे। उनके पैर पटने से नीचे की आग बुझ गई। केवल कंडे का एक टुकड़ा धुआँ देता रहा। वह टुकड़ा ठोकर लगने से दूर जा गिरा था।

सोलदातोव ने बायें हाथ से मिखाइल की कमीज़ का कॉलर थामा और उसे ऊपर उठाकर मुट्ठी में समेटते हुए अपना दाहिना हाथ छुड़ाने की कोशिश की।

"छोड़ो मेरी कमीज़ !" मिखाइल अपनी गर्दन ऐंठते हुए हाँफने लगा, "मैं कहता हूँ छोड़ो इसे···मैं तुम्हें भूसा करके रख दूँगा, सुनते हो ?"

"नहीं···मैं नहीं छोड़ूँगा···तू भूसा करके रख देगा मुझे···ठहर, अभी बतलाता हूँ तुझे !" सोलदातोव गुर्राया।

मिखाइल ने अपने को छुड़ाया, सोलदातोव को पीछे ढकेला और उस पर चोट करते, उसे भरपूर ठोकर देने और अपने हाथों को खुलकर खेलने का पूरा मौक़ा देने के खयाल से, काँपते हुए, अपनी कमीज़ ठीक की।

सोलदातोव ने उसकी ओर बढ़ने की चेष्टा नहीं की, दाँत पीसे और धुँआँधार गालियाँ बरसाते हुए ज़ोर से बोला, "मैं शिकायत करूँगा···मैं ओवरसियर से तेरी शिकायत करूँगा···साँप है तू···साँप···कीड़ा कहीं का ! बोलशेविक ! तेरी नौबत तो वही होनी चाहिए जो पोदत्योलकोव की हुई !"

'अब यह शिकायत करेगा मेरी···एक का ग्यारह करके बताएगा··· वे लोग मुझे जेल में ठूस देंगे···अब वे लोग मुझे मोर्चे पर न भेजेंगे यानी मैं जाकर लाल-लोगों के दल में शामिल न हो पाऊंगा···यानी मेरा सारा काम तमाम समझो !' मिखाइल के बदन-भर में ठंडक दौड़ गई और

अपनी बचत की राह सोचते हुए वह इस तरह मायूस हो गया, जैसे कोई मछली नदी की बाढ़ के पानी के उतरने के बाद किसी छोटे-से ताल में पड़ी रह जाती है। सोचा उसने—'मैं मार डालूंगा इसे···मैं गला घोंट दूंगा इसका···इसके सिवाय कोई और चारा नहीं है।···' और दूसरे ही क्षण वह अपनी बचत के बहाने ढूंढने लगा—'मैं कह दूंगा—इसने मेरी जान लेने की कोशिश की तो मैंने इसकी गर्दन पकड़ ली···धोखे से यह मर गया।'

वह थरथराते हुए सोलदातोव की ओर बढ़ा, और उसने उसे दौड़ाने की कोशिश की कि मौत और खून एक-दूसरे की जान के गाहक हो जाएं। पर, सोलदातोव खड़ा कोसता रहा तो मिखाइल ठिठक गया। उसके पैर टिकने में जवाब देने लगे और पीठ पर पसीने की धारें बह चलीं।

"बंद करो मुंह, सोलदातोव···सुनते हो, चीखना बंद करो! शुरू में तुमने वार किया था मुझ पर···" उसके जबड़े कांपने लगे, आंखें फट-कर नाचने-सी लगीं और वह दीन भाव में बोला—"यह तो महज दोस्तों की तकरार थी। फिर, मैंने पहले तुम पर हाथ नहीं छोड़ा। मैंने तो कुछ कहा नहीं। अगर मेरी कोई बात बुरी लगी हो तुम्हें तो माफ करो··· ईमानदारी से कहता हूं!"

सोलदातोव धीरे-धीरे शान्त हो गया। ज़रा देर बाद, वह अपना हाथ मिखाइल के ठंडे, पसीने से तर हाथ से खींचता हुआ बोला, "तुम सांप की तरह दुम नचाते हो! ठीक है, मैं किसी से कुछ नहीं कहूंगा··· मैं तुम्हारे गधेपन पर तरस खाऊंगा···लेकिन अब तुम मेरी नजरों के सामने न पड़ना···मुझे तुम्हारी सूरत गवारा नहीं। सूअर कहीं के, तुमने अपने को यहूदियों के हाथों बेच दिया और, जो अपने को रकम के लिये बेच देते हैं, उनके लिए मेरे मन में किसी तरह का कोई रहम नहीं होना।"

मिखाइल अंधेरे में ग्लानि और दैन्य से मुस्कराया, पर सोलदातोव की निगाह उस मुस्कान पर वैसे ही न पड़ी, जैसे कि उसकी नजर उसकी भिंची हुई मुट्ठी पर न पड़ी थी।

आगे और कोई बात न हुई और दोनों एक-दूसरे से अलग हो गये। कोशेवोइ ने उतावली से अपने घोड़े पर चाबुक जमाया और उसे सरपट दौड़ाता अपने गिरोह की खोज में निकल पड़ा। पूर्व में बिजली कौंधी और बादल गरजे।

उस रात को स्तेपी में तूफान आया। आधी रात के करीब हवा का एक लहरा उछला, और ठिठुरन और गर्द का घना बादल अपने पीछे छोड़ता धरती पर उमड़ चला। आसमान में घटाएँ घिर आईं। बिजली मिट्टी-से काले बादलों के विस्तार को अपने हल से जोतने लगी। फिर सन्नाटा हो गया। इसके बाद फिर दूर कहीं बिजली चमकी और धरती पर बूँदों के बीज पटापट बरसने लगे। बिजली की दूसरी कौंध के उजाले में कोशेवोइ ने देखा कि आसमान में काले-काले बादल उमड़-घुमड़ रहे हैं, धमका रहे हैं और नीचे धरती पर घोड़े एक जगह गोल बाँधकर, एक-दूसरे से सटकर खड़े हो गए हैं। इसके बाद बिजली भयानक रूप से कड़की और इसके साथ ही मूसलाधार पानी बरसने लगा।

स्तेपी अस्फुट स्वरों में बुदबुदाया। हवा मिखाइल की गीली टोपी उसके सिर से उड़ा ले गई और उसे घोड़े की काठी पर जैसे दबा गई। एक क्षण तक गहरा सन्नाटा रहा। फिर बिजली नये सिरे से यहाँ से वहाँ तक लहर ले गई। गिरोह के घोड़े पैर पटकने लगे। मिखाइल, अपनी घोड़ी की लगाम पूरी ताकत से खींचते हुए, घोड़ी के मन का डर निकालने की कोशिश में चिल्लाया, "सीधे खड़े हो···ए···हे···!"

बादलों के बीच, बिजली की दूध-सी टेढ़ी-मेढ़ी रेखा के चमचमाते ही मिखाइल ने देखा कि उसके गिरोह के घोड़े ज़मीन से लगभग अपना सिर सटाए, उसकी ओर दौड़े चले आ रहे हैं। उनके फैले हुए नथुने जोर-जोर से साँस लेने लगे और उनके बिना नालों के खुर नम धरती पर बजते मालूम हुए। वखार अपनी पूरी रफ्तार से आगे-आगे दौड़ता दीखा। कोशेवोइ ने अपनी घोड़ी की लगाम खींची और उसे यों हिराया-फिराया कि गिरोह बगल से निकल गया। उसने यह नहीं समझा कि परेशान और बिजली की कड़क से घबड़ाए हुए घोड़े उसकी चीख पर उसके पास सरपट दौड़ते आए। उसने इस बार और जोर से आवाज़ लगाई—

"रुको···खड़े हो जाओ···हे···ए···!"

फिर, खुरों की तेज़ पटापट, अँधेरा चीरती उसके कानों में पड़ी। वह डर गया और घबड़ाहट में चाबुक घोड़ी के माथे के बीचोंबीच भरपूर बैठ गया। पर चिड़ियाँ खेत चुग गई थीं। सहसा ही एक बौखलायी घोड़ी का सीना उसकी घोड़ी के पुट्ठे से टकराया। वह काठी से उछलकर इस तरह दूर जा गिरा, जैसे कि किसीने उछाल दिया हो। मगर, उसकी जान बच गई और इसे एक चमत्कार ही कहिए। हुआ यह कि पूरा गिरोह उसकी दाईं ओर से निकल गया। सिर्फ एक घोड़ी का खुर उसकी दाईं बाज़ू पर पड़ा। वह उठा और होशियारी से आगे बढ़ने लगा। उसने अपने को अधिक से अधिक शांत रखा। उसे पास ही गिरोह की घोड़ियों की आहट मिली। वे इन्तज़ार करती लगीं कि वह आवाज़ लगाये और वे ताबड़तोड़ फिर उसकी ओर सरपट दौड़ें। साथ ही स्टैलियन की खास हिनहिनाहट भी उसने सुनी।···वह सुबह तड़के तक झोंपड़ी वापस नहीं पहुँचा।

: ४ :

१५ मई को दोन की विशाल सेना के अतामान आसनोव, विभागीय अध्यक्षों की परिषद् के प्रधान और विदेशी मामलों के विभाग के अध्यक्ष मेजर जनरल अफ़रीकान बोगायेव्स्की, दोन-प्रदेश की सेना के जनरल स्टाफ़ के चीफ़ कर्नल किसलोव और कुबान के अतामान फ़िलीमोनोव के साथ स्टीमर से मानिचस्काया पहुँचे।

दोन और कुबान प्रदेश के जागीरदार के डेक पर खड़े होकर सब कुछ देखने लगे। जहाज़ ने लंगर डाला, जहाज़ के गंगवे में दौड़-धूप शुरू हुई और उसके नीचे की लहरें मथ-मथ उठीं। फिर, किनारे खड़ी भीड़ के सैकड़ों लोगों की निगाहें उन पर जम गईं। मेहमान किनारे आए।

आसमान, क्षितिज, और स्वयं दिनमान के चारों ओर एक नीली धुंध लिपटी रही। दोन तक गैरमामूली तौर पर पीले रंग की झाई मारती हुई नीली बनी रही, और लहरियादार बादलों के पहाड़ों की बर्फ़ीली चोटियाँ उसमें ऐसे झलकती रहीं, जैसे कि नदी का धरातल

खोखला शीशा हो।

हवा, धूप, तार से भरे सूखे दलदलों और मुर्दा घास की वास से बोझिल लगी। भीड के बीच लोग फुसफुसाने लगे। स्थानीय अधिकारियों ने जनरलों का अभिवादन किया और जनरल चौक की ओर रवाना हुए।

एक घंटे बाद दोन-सरकार और स्वयंसेवक-सेना के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन अतामान के मकान में शुरू हुआ। स्वयंसेवक-सेना का प्रतिनिधित्व किया जेनेरल देनिकिन, जेनेरल अलेक्सेयेव, जनरल रोमानोव्स्की, स्टाफ के चीफ, कर्नल र्यास्न्यान्स्की और कर्नल इवाल्द ने।

सभा का वातावरण उत्साहहीन रहा। क्रासनोव ने अपनी मर्यादा का पूरा ध्यान रखा। अलेक्सेयेव इधर-उधर, हर ओर हाथ हिलाते फिरे। फिर मेज पर बैठ गए, और उन्होंने अपने फूले हुए गाल अपनी खुश्क, उजली हथेलियों से साधकर आँखें अन्यमनस्क भाव से बंद कर ली। मोटर के सफर के कारण उन्हें अपनी तबीयत जरा भारी लगी। वे उम्र और घटनाओं के बोझ के कारण मुरझाए हुए मालूम हुए। मुंह के सिरे अजब ढंग से झूलने लगे। नीली, नसोंवाली पलकें सूजी हुई और भारी लगीं। कनपटियों के आरपार झुर्रियों के ताने-बाने दीखे। गाल से चिपकी उँगलियाँ, बुढ़ापे के कारण पिलछरे, भूरे बालों की सीमाएँ छूती रहीं। इसी समय कर्नल र्यास्न्यान्स्की ने, किसलोव की सहायता से एक नक्शा सावधानी से मेज पर फैलाया। रोमानोव्स्की नक्शे का सिरा अपनी छगुलिया के नाखून से दाबकर खड़े हो गए। बोगायेव्स्की ने, अलेक्सेयेव का निराशा पैदा करनेवाली सीमा तक थकान से उतरा, गहरी सम्वेदना वाला चेहरा देखते-देखते नीचे दोस की टेक लगा ली। चेहरा प्लास्टर के बनावटी चेहरे की तरह सफेद था। बोगायेव्स्की ने अपनी तरल, बादाम जैसी आँखें उसी तरह जमाए मन-ही-मन सोचा, 'कैसे बूढ़े हो गए हैं ये! कितने ज्यादा बूढ़े लगते हैं।'

बाकी लोग मेज चारों ओर के बैठ भी न पाए कि देनिकिन, एकाएक ही क्रासनोव को सम्बोधित करते हुए उत्तेजित स्वर में बोला, "सम्मेलन के शुरू होने के पहले मैं आपको एक जरूरी सूचना देना चाहता हूँ कि हमें आपकी बात पर बडा आश्चर्य हुआ है। बताइए को

हथियाने के लिए फौजों को भेजने की बात करते हुए आप कहते हैं, आपके कॉलम के दाहिने सिरे पर एक जर्मन तोपखाना रहेगा । मैं यह सीधे-सीधे माने लेता हूँ कि इस तरह का सहयोग मुझे अजीबोगरीब तो लगता ही है, और भी कुछ लगता है···क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ कि देश के दुश्मनों से, देश के ऐसे धोखेबाज़ दुश्मनों से आपकी इस साँठ-गाँठ के मतलब क्या होते हैं ? आप उनकी मदद क्यों मंज़ूर करना चाहते हैं ? क्या आपको यह खबर नहीं मिली कि मित्र-देश हमको सहायता देने को तैयार हैं । स्वयंसेवक-सेना, जर्मनी से आपकी इस दोस्ती को, रूस के पुनर्स्थापन के आन्दोलन के साथ गद्दारी मानती है । दोन-सरकार की कार्रवाइयों को भी व्यापक मित्र-वर्गों में कुछ इसी तरह समझा जाता है । मैं आपसे इस चीज़ की सफाई चाहता हूँ ।"

देनिकिन की भौंहें क्रोध से तन गईं और वह उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा ।

क्रासनोव आत्म-नियन्त्रण और सद्‌संस्कारों के कारण ही गम्भीर बना रह सका, पर आक्रोश दूसरी भावनाओं को दबाता गया । मूँछों के सफेदी पहनते बालों के नीचे उसका मुँह अधीरता से ऐंठता रहा । अंत में उसने बड़ी विनय के साथ, बड़े शांत भाव से उत्तर दिया—

"जब पूरे के पूरे उद्देश्य या आन्दोलन का भविष्य अनिश्चित हो उठता है तो पहले के दुश्मनों से भी मदद ली जा सकती है । इस मामले में तुनुकमिज़ाजी से काम चल नहीं सकता । खैर, तो दोन की सरकार, पचास लाख सर्वसत्तात्मक जनता का प्रतिनिधित्व करनेवाली सरकार, और किसी के भी संरक्षण से सर्वथा मुक्त सरकार के सामने इन कज़्ज़ाकों की रक्षा का सवाल है, और इनके हितों को ध्यान में रखते हुए उसे स्वतन्त्र रूप से कार्य करने और कोई भी कदम उठाने का पूरा अधिकार है ।"

इन शब्दों पर अलेक्सेयेव ने अपनी आँखें खोलीं और वे ध्यान से सुनने की गहरी कोशिश करने लगे । क्रासनोव ने बोगायेव्स्की पर एक नज़र डाली । बोगायेव्स्की बेचैनी से अपनी चिकनी, चमकदार मूँछें ऐंठ रहा था । क्रासनोव आगे बोला, "महामहिम, आपका तर्क अपने मूल-

रूप में नैतिक मालूम होता है। आपने एक दायित्वपूर्ण वक्तव्य दिया है और हमारी कार्रवाइयों को रूस के पुनःस्थापन के आन्दोलन के साथ गद्दारी और मित्र-देशों के साथ गद्दारी आदि के नाम दिए हैं। लेकिन मेरा खयाल है कि आप यह जानते हैं कि स्वयंसेवक-सेना ने हमसे बम के गोले लिए हैं, और ये गोले हमारे हाथ बेचे हैं जर्मनों ने!"

"क्या अलग-अलग तरह के दो मामलों के बीच आप कृपा कर रेखा खींचेंगे। मेरा इस बात से कोई सम्बन्ध नहीं कि आप जर्मनों से फौजी सामान किस तरह लेते हैं, लेकिन उनसे फौजी मदद लेने के मामले में हामी भरना…" देनिकिन ने क्रोध से कंधे झटके।

क्रासनोव ने अपना भाषण पूरा किया, और अंत में बड़ी सावधानी के साथ, मगर दृढ़ स्वरों में कहा, "आज मैं वह ब्रिगेडियर-जनरल नहीं हूँ, जिसे देनिकिन आस्ट्रो-जर्मन मोर्चे पर जानते रहे हैं।"

क्रासनोव के बोलने के बाद वातावरण को एक भद्दे सन्नाटे ने ग्रस लिया। देनिकिन ने यह वातावरण काटा और बहस को दोन-प्रदेश और स्वयंसेवक-सेना के संगठन, और एक मिलीजुली कमान की स्थापना की ओर मोड़ा। परन्तु, इसके पहले छिड़े विवाद से उनके बीच के सम्बंधों में जो दरार आई, वह बराबर बढ़ती ही चली गई। उसका अंत बाद में तब हुआ जब क्रासनोव ने सरकार से इस्तीफा दे दिया।

फिलहाल, इस समय क्रासनोव सीधा जवाब देने से कतराया और उसने सुझाव दिया कि हमें जारित्सिन के खिलाफ मिलजुलकर आन्दोलन करना चाहिए। इस आन्दोलन के उद्देश्य दो होने चाहिए—एक तो युद्ध की दृष्टि से एक जोरदार अड्डा हथियाना, और दूसरे, यूराल के कज्जाकों से अपना तार जोड़ना।

इस पर थोड़ी बहस हुई।

"मुझे यह बतलाने की जरूरत नहीं कि जारित्सिन का हमारे लिए कितना महत्त्व है!"

"स्वयंसेवक-सेना की टक्कर जर्मनों से हो सकती है। कुबान की आजादी के बाद ही जारित्सिन जाने की बात सोच सकता हूँ, उसके पहले नहीं।"

"ठीक है, पर ज़ारित्सिन का हथियाया जाना मूलभूत समस्या है। दोन-सैन्य-सरकार ने मुझे अधिकार दिया है कि मैं इस मामले में आपसे सहायता का अनुरोध करूँ, महामहिम !"

"मैं एक बार फिर कहना चाहता हूँ कि मैं कुबान के कज्ज़ाकों को पीठ दिखाकर भाग नहीं सकता···"

"ज़ारित्सिन पर हमले की हालत में मिलीजुली कमान का सवाल उठ सकता है।"

अलेक्सेयेव ने बात के विरोध में अपने होंठ काटे, "इसका सवाल ही नहीं उठता ! कुबान के कज्ज़ाक तब तक अपनी सरहद के बाहर एक कदम न रखेंगे जब तक कि उनके प्रदेश में बोलशेविक पूरी तरह साफ न हो जायेंगे।···स्वयंसेवक-सेना में सिर्फ ढाई हज़ार संगीनें हैं और सेना के एक-तिहाई लोग या तो ज़ख्मों की वजह से बेकार हैं, या बीमारी की वजह से।"

यानी, सन्ध्या खाने के समय जो बातें हुईं, उनमें यह बात साफ हो गई कि कोई समझौता हो नहीं सकेगा। इस समय कर्नल र्यास्न्यान्स्की ने मारकोव के एक फ़ौजी के कारनामे की मनगढ़न्त-सी, एक ऐसी मज़ेदार दास्तान सुनाई कि उसके और खाने के प्रभाव के कारण तनाव कम होने लगा। लेकिन, भोजन के बाद अफ़सर धुआँ उड़ाने के लिए बैठकखाने में आए तो देनिकिन ने रोमानोव्स्की का कंधा थपथपाया और स्वामनोव की ओर अपनी अधखुली आँखों से टेढ़ा निगाह डालते हुए फुसफुसाकर बोला, "इस इलाके का नैपोलियन समझिए !···आदमी को दिमाग नाम की चीज़ तो जैसे मिली ही नहीं।"

रोमानोव्स्की ने शांत भाव से मुस्कराकर तेज़ी से जवाब दिया, "हुकूमत सम्हालना चाहता है···है तो ब्रिगेडियर-जनरल मगर बादशाहों की ताकत के नशे में चूर है। मेरी राय में हँसी-मजाक को समझने का माद्दा उसमें है ही नहीं।"

दुश्मनी की भावना से भरकर ही वे एक-दूसरे से अलग हुए—अपने-अपने मनों में एक खटक-सी लेकर—

उस दिन से दोन-सरकार और स्वयंसेवक-सेना के बीच के सम्बन्ध

बराबर बिगड़ते ही गए, और स्वयंसेवक-सेना की कमान की जर्मन सम्राट विलहेल्म के नाम लिखे क्रासनोव के पत्र की बातों का पता चला तो यह स्थिति अपने चरम-बिंदु पर पहुँच गई। नोवोचेरकास्क के अस्पताल में स्वास्थ्य-लाभ करते घायल स्वयंसेवकों को क्रासनोव की अपनी हुकूमत की प्यास और पुराने कज्ज़ाक रीति-रिवाजों को फिर से जमाने की हसरत पर हंसी आ गई। अपने हलके में वे उसकी चर्चा नफरत से करते और देहाती लहजे में उसे 'माई-बाप' का नाम देते। दोन-सेना के सरकारी-सम्बोधन के सिलसिले में वे 'सर्वशक्तिमान्' की जगह 'सर्व-प्रसन्न' को दे देते। जवाब में, आज़ादी के पीछे पागल लोग स्वयंसेवकों के नामों के पहले 'घुमक्कड़, 'चारण' और 'बिना बादशाहत के बादशाह' जैसे विशेषण जोड़ देते।···स्वयंसेवक-सेना के एक बड़े पदाधिकारी ने चोट करते हुए एक बार कहा कि दोन-सरकार एक ऐसी रंडी है जिसकी रोटी जर्मन-बिस्तरे से चलती है। इसका उत्तर खुद जनरल देनिसोव ने दिया। बोले, "अगर दोन-सरकार रंडी है तो स्वयंसेवक-सेना एक ऐसी बिल्ली है जो उसकी जूठन के टुकड़ों पर पलती है।"

यह था स्वयंसेवक-सेना का दोन-कज्ज़ाकों पर पूरी तरह निर्भर रहने का और संकेत, क्योंकि इन कज्ज़ाकों को जर्मनों से जो फौजी सप्लाई मिलती थी उसमें उसका साझा होता था।

रोस्तोव और नोवोचेरकास्क स्वयंसेवक-सेना के पिछले मोर्चे थे और इन दिनों अफसरों से उमड़ रहे थे। इनमें से हज़ारों मुनाफाखोरी से जीते थे, पीछे के अनगिनत संगठनों में काम करते थे, नाते-रिश्तेदारों और परिचितों के यहाँ पनाह लेते थे, और जाली दस्तावेजों के बल पर घायल बनते और अस्पतालों में चारपाइयाँ तोड़ते थे। उनमें जो सबसे बहादुर थे वे या तो लड़ाई में खेत रहे थे या टाइफस बुखार और ज़ख्मों के कारण चल बसे थे। जो बाकी बचे थे उन्होंने क्रान्ति के वर्षों में अपने सम्मान और अपनी आत्मा को बेच खाया था। आज वे पीछे के मोर्चे के इलाकों में दुम दबाते फिर रहे थे, समय की तूफानी धारा पर गदले झाग की तरह उतरा रहे थे। ये रिज़र्व में रहे-आए बासी अफसर थे, माल पर कभी न चढ़े थे। और शर्म और इलज़ाम पर इलज़ाम बरसाते हुए चेरनेत्सोव

ने इन्हें कभी रूस की रक्षा करने को ललकारा था। इनमे से अधिकांश, फौजी वर्दी में, तथाकथित 'विचारशील बुद्धिवादियों के निकृष्टतम नमूने थे। वे बोलशेविकों के साथ से कट आए थे, पर 'श्वेतों' की किस्मत मे उन्होंने अपनी तकदीर का तार न जोड़ा था। वे कूप-मडूको की तरह जीते, रूस के भविष्य पर बहसें करते, अपने बच्चों के दूध के लिए जो कमा सकते सो कमाते और अन्तरतम मे लडाई के खत्म हो जाने की आशा लगाए रहते।

देश पर किसकी हुकूमत होती है और किसकी नहीं, इस बात से जैसे उन्हें कुछ लेना-देना ही न रहता। क्रासनोव, जर्मन या बोलशेविक, सब उन्हें एक-से ही लगते। वे तो सिर्फ यह चाहते कि जैसे भी हो, लड़ाई खत्म हो।

पर, घटनाओं की बिजलियाँ दिन-प्रतिदिन कौंधती रहीं। साइबेरिया मे चेक-विद्रोह हुआ, उक्रइन में मल्लाहों ने जर्मनों मे तोपों और मशीनगनों की भाषा में पूरे ज़ोर-शोर से बातें कीं—सारे का सारा रूस आग की लपटों में लिपट उठा। पूरे का पूरा रूस दर्द से ऐंठने लगा।

जून मे पुरवा हवा के झोंके की तरह यह अफ़वाह पूरे दोन-प्रदेश मे फैल गई कि जर्मनों पर हमला बोलने की तैयारी के सिलसिले में चेक वोलगा के किनारे-किनारे पूर्वी मोर्चा बना रहे हैं और सरातोव, जारित्सिन और अस्त्राखान पर अधिकार कर रहे हैं। उक्रइन में जर्मन स्वयंसेवक-सेना के रंग में रंगकर रूस के बाहर चले गए अफ़सरों को अपनी पाँतों के बीच से गुज़रने की अनुमति देने लगे, यद्यपि थोड़ी हिचक के साथ।

जर्मन कमान ने 'पूर्वी मोर्चे' की रचना की, इसी अफ़वाह से घबड़ाकर अपने प्रतिनिधियों को दोन-प्रदेश भेजा। दस जुलाई को जर्मन सेना के मेजर वॉन कॉकेनहाउसेन, मेजर वॉन स्तेफानी और वॉन श्लेलेनीस नोवोचेरकास्क पहुँचे। दोनों का उसी दिन अतामान क्रासनोव ने महल में स्वागत किया। जनरल बोगायेवस्की भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

मेजर कॉकेनहाउसेन ने अपने श्रोताओं से कहा, "जर्मन-कमान ने दोन की 'महान सेनाओं' को हर तरह की मदद दी है। दोन-प्रदेश ने जब बोलशेविकों के विरुद्ध संघर्ष किया और अपने सीमान्त-प्रदेशों को नये सिरे से

अपने अधिकार में लेना चाहा तो उसने सशस्त्र हस्तक्षेप तक किया। अब आप बतलाइए कि चेक अगर उन्हीं जर्मनों के खिलाफ फ़ौजी कार्यवाई करें तो आपका रुख क्या होगा, आप क्या करेंगे?" इस पर क्रासनोव ने मेजर को विश्वास दिलाया कि अगर ऐसी हालत पैदा हुई तो कज्ज़ाक पूरी तरह तटस्थ रहेंगे, और दोन-प्रदेश को फौजी अखाड़ा तो किसी भी सूरत में नहीं बनने देंगे।···मेजर वॉन स्तेफानी ने कहा—"हाँ, ठीक है, अतामान यही बात हमें कागज़ पर लिखकर दे दें।"

क्रासनोव ने जर्मन सम्राट् को निम्न पत्र लिखा—"महामहिम महाराजाधिराज, इस पत्र के वाहक, आपके शाही दरबार में दोन-प्रदेश की महान सेना के अतामान और उनके सहयोगियों को मैं—दोन का अतामान—यह अधिकार देता हूँ कि वे महान जर्मनी के सर्वोपरि सम्राट का, यानी आपका मेरी ओर से अभिवादन करें, और आपकी सेवा में मेरी ओर से निवेदन करें कि—

"दोन-प्रदेश के पराक्रमी कज्ज़ाक दो महीने से अपनी मातृभूमि की मुक्ति के लिये संघर्ष चलाते रहे हैं और इस संघर्ष में उन्होंने उसी साहस का परिचय दिया है, जिस साहस का परिचय इधर के ज़माने में जर्मनी के सगे-सम्बन्धी बोरों ने अंग्रेज़ों से लोहा लेने में दिया है। इन कज्ज़ाकों को राज्य की हर सरहद पर कामयाबी ने गले भी लगाया है। फलतः आज तक दोन की महान सेना का नब्बे प्रतिशत क्षेत्र जंगली लाल-फौजियों के पंजों से आज़ाद हो चुका है। इसके साथ ही देश में व्यवस्था के हाथ मज़बूत हुए हैं और कानून की पूरी हुकूमत कायम हुई है। हम बड़े आभारी हैं कि आपकी शाही फौजों ने हमें मित्रों की भाँति सहयोग दिया है। हमने उनकी सहायता से, देश के दक्षिण में शान्ति स्थापित कर ली है और कज्ज़ाकों की एक ऐसी कोर तैयार कर ली है, जो देश में व्यवस्था बनाए रखेगी और बाहर के दुश्मनों के इस ओर मुँह उठाने पर उनका डटकर सामना करेगी। पर, दोन सेना के राज्य जैसे नववयस्क राज्य के लिए अकेले अस्तित्व बनाए रखना कठिन है। यही कारण है कि उसने अस्त्राखान और कुबान की कज्ज़ाक फौजों के कर्नल राजकुमार तुन्दुतोव और फ़्लीमोनोव से समझौता किया है, ताकि अस्त्राखान और कुबान के बोल-

सोवियतों से मुक्त हो जाने पर, महान दोन-सेना, अस्त्राखान सेना, स्तावरोपोल प्रान्त के कालमीकों, कुबान-सेना और उत्तरी काकेशस का, मिले-जुले संघ के सिद्धान्तों पर एक ठोस राज्य बनाया जा सके। इन सभी राज्यों की अनुमति मिल गई है, और इस नव-निर्मित राज्य ने, दोन की महान सेना की पूरी रजामंदी से तय किया है कि वह पूरी तरह तटस्थ रहेगा और अपने इलाकों को खूनखराबे का फौजी अखाड़ा न बनने देगा। अब आपके गौरवशाली दरबार के हमारे अतामान को मेरी ओर से पूरा अधिकार है कि वह—

"महाराजाधिराज, आपसे प्रार्थना करे कि आप दोन की महान सेना के स्वतन्त्र अस्तित्व के अधिकार को अपनी मान्यता प्रदान करें, और कुबान, अस्त्राखान, तेरक और उत्तरी काकेशस के मुक्त होने पर 'दोन-काकेशस संघ' के नाम से बननेवाले सम्पूर्ण संघ के प्रभुसत्ता-सम्बन्धी अधिकारों को अनुग्रहपूर्वक मानें;

"आपसे अनुनय करे कि कुल और भूगोल के पिछले आधार पर आप दोन की महान सेना के सीमान्त-प्रदेशों को मान्यता दें; और तगानरोग ज़िले के सम्बन्ध में उक्रइन और दोन की सेना के बीच के झगड़े को दोन की सेना के पक्ष में समाप्त करवाने में सहायता दें। दोन सेना ने तगानरोग का यह ज़िला पाँच सौ से अधिक वर्षों से अपने अधिकार में रखा है और इसे वह आज भी त्मुतराकान का एक हिस्सा समझती है। इस त्मुतराकान से ही दोन-सेना का प्रदेश निकला है;

"आपसे विनय करे कि आप, दोन-प्रदेश को, युद्ध-नीति के कारणों से, सरातोव-प्रदेश के कामीशिन और जारित्सिन नगरों के साथ, वोरोनेज, लिस्की और पवारिनो के शहरों को भी अपने साथ शामिल कर लेने में मदद दें। साथ ही दोन-सेना-प्रदेश की नक्शे में दी सीमा को अंतिम सीमा मान लें। नक्शा हमारे प्रतिनिधि के पास है;

"आप से निवेदन करे कि मास्को के सोवियत अधिकारियों पर जोर डालें और उन्हें आज्ञा दें कि वे दोन-काकेशस संघ में शामिल होनेवाले महान दोन-सेना और दूसरे राज्यों के सभी क्षेत्र खाली कर दें। आज यहाँ लाल-सेना की लूट-खसोट का बोलबाला है।···साथ ही कुछ ऐसा अनुग्रह

भी करे कि मास्को और दोन के बीच शान्तिपूर्ण सम्बन्ध नये सिरे से स्थापित हो जाएँ। बोलशेविकों के हमलों से दोन-प्रदेश के लोगों के जान माल, व्यापार और उद्योग को जो नुकसान हुआ है उसका पूरा हरजाना सोवियत रूस को देना चाहिए;

"आपसे आग्रह करे कि आप हमारे नये राज्य को हथियारों, लड़ाई के सामानों और इंजीनियरिंग के प्रसाधनों की सहायता दें। इसके साथ ही, यदि आपको अपने लाभ की बात मालूम हो तो, दोन-सेना के प्रदेश में तोपखाने और छोटे हथियारों, बमों और कारतूसों के गोदाम बना दें।

"दोन-प्रदेश की महान सेना और दोन-काकेशस-संघ के दूसरे राज्य जर्मनों की मित्रतापूर्ण सेवाएँ सदा याद रखेंगे। कज्ज़ाक इन जर्मनों से कंधे से कंधा मिलाकर तीस-साला लड़ाई के ज़माने तक लड़े हैं। उस समय दोन के कज्ज़ाक वॅलेनस्तीन-सेना में शामिल थे। फिर १८०७ से १८१३ तक दोन के कज्ज़ाकों ने अपने अतामान काउंट प्लातोव के नेतृत्व में जर्मनों की स्वतन्त्रता के लिये लोहे से लोहा बजाया और अभी साढ़े तीन वर्ष प्रशिया, गैलिशिया, बुकोविना और पोलैंड के मैदानों में जब खून की नदियाँ बही तो जर्मनों और कज्ज़ाकों दोनों ने ही एक-दूसरे की वीरता और दृढ़ता का आदर करना सीखा। उन्होंने महान योद्धाओं की तरह एक-दूसरे से हाथ मिलाए। आज फिर दोनों ही हमारी मातृभूमि, हमारे दोन-प्रदेश के लिए एकसाथ लड़ रहे हैं।

"दोन की महान सेना, आपके इन सारे अनुग्रहों के बदले में संकल्प करती है कि राष्ट्रों के विश्व-व्यापी संघर्ष के समय वह बिल्कुल तटस्थ रहेगी और जर्मनों की विरोधी सेनाओं का सशस्त्र संघर्ष अपने सीमा-क्षेत्र में कहीं न होने देगी। अस्त्राखान सैनिक प्रदेश के अतामान राजकुमार तुन्दुतोव और कुबान-सरकार ने भी यह बात मान ली है, और एकीकरण होने के बाद दोन-काकेशस-संघ के हमारे सदस्य भी इस संकल्प का आदर करेंगे।

"दोन की महान सेना वचन देती है कि स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद जो कुछ बाकी बचेगा, वह प्रदेश सबसे पहले जर्मन साम्राज्य को भेजेगा। इसमें होगा अनाज, आटा, चमड़े का सामान, खालें, ऊन, मछली

मे मिलने वाली चीजें, शाक-सब्जियां और जानवरों से प्राप्त होनेवाली चर्बियां, तेल, तेल का सामान, तम्बाकू, तम्बाकू से मिलनेवाले पदार्थ, घोड़े, दूसरे पशु, अंगूर की शराब, और शाक-सब्जियों और साधारण खेतीबाड़ी से सम्बन्धित दूसरी चीजें। इसके बदले में जर्मन राज्य दोन-प्रदेश को भेजेगा खेतीबाड़ी की मशीनें, रासायनिक पदार्थ, चमड़ा सिझाने का सामान, राज्य के दस्तावेजों की तैयारी के लिये साज-सामान, कपड़ा, कपास, कमाई, रसायनों, चीनी और दूसरी चीजों की फैक्ट्रियों के लिए साज-सामग्री और बिजली की चीजें।

" इसके अतिरिक्त महान दोन सेना की सरकार जर्मन उद्योगों को दोन के औद्योगिक संस्थानों और व्यापार में पूंजी लगाने के लिए विशेष सुविधाएं देगी। इनमें भी वे निर्माण, नये जलमार्गों के उपयोग, और सचार के दूसरे साधनों में रकम खास तौर पर लगा सकेंगे।

" इस तरह के समझौतों से दोनों ही पक्षों का हित होगा और इस दोस्ती पर उस खून की मुहर होगी जो जर्मनों और कज्जाकों ने एकसाथ लड़ाई के मैदानों में बहाया है। यह दोस्ती हमारी वह बडी ताकत होगी जिसके सहारे हम अपने दुश्मनों के दांत खट्टे करेंगे।

" महाराजाधिराज, यह पत्र न आपको कोई राजनयिक लिख रहा है और न अन्तर्राष्ट्रीय कानून का कोई दिग्गज विद्वान। यह पत्र आपको लिख रहा है एक साधारण सिपाही—एक फौजी। यह एक ऐसा सिपाही और ऐसा फौजी है जो जर्मन हथियारों की शक्ति का लोहा मानता रहा है और आज भी मानता है। इसलिए आप मेरी स्पष्टवादिता और सीधी-सादी बातों के लिए मुझे क्षमा करें, इनमें कहीं भी चाल और चालाकी न समझें और मेरे हृदय की इन भावनाओं की ईमानदारी पर विश्वास करें—

सादर आपका,
प्योत्र क्रासनोव,
(मेजर जनरल)
अतामान, दोन-प्रदेश"

पत्र पर १५ जुलाई को विभागीय अध्यक्षों की परिषद् ने विचार किया। इस समय अध्यक्षों ने साफ तौर से रोकथाम से काम लिया और कुछ ज्यादा कहना पसन्द नहीं किया। लेकिन सरकार के वोगायेव्स्की जैसे सदस्यों ने साफ-साफ उसका विरोध किया। इसपर भी क्रासनोव ने, बिना हिचक के, बर्लिन के कज्जाक प्रतिनिधि लिदेनबुर्ग के ड्यूक को वह पत्र सौंप दिया। ड्यूक तुरन्त ही कीएव के लिये रवाना हो गया, और वहाँ से जनरल चेरेयाशुकिन के साथ जर्मनी गया।

पर, वोगायेव्स्की की जानकारी में, विदेशी मामलों के विभाग में पहले पत्र की कई प्रतियाँ बनाई गई, और उचित टिप्पणियों के साथ कज्जाक यूनिटों और जिलों को भेज दी गई। पत्र प्रचार का जोरदार साधन साबित हुआ। आवाजें जोर पकड़ती गई और ऐसा कहने वाले लोगों की सख्या बढती गई कि क्रासनोव ने अपने को जर्मनों के हाथों बेच दिया है। मोर्चों पर असंतोष की आग धधक उठी।

इस बीच जर्मन अपनी सफलता पर फूल उठे। वे रूसी जनरल चेरेयाशुकिन को पैरिस के रास्तों पर ले गए। वहाँ से उसने और जर्मन जनरल स्टाफ के लोगों ने क्रूप तोपखाने की आग में एंग्लो-फ्रेंच फौजों के भूनने का शानदार तमाशा देखा।

: ५

जाड़े में येव्गेनी लिस्तनित्स्की दो बार घायल हुआ। मगर, हर बार चोट मामूली आई और वह अपने यूनिट में लौट आया। लेकिन, मई में स्वयसेवक सेना नोवोचेरकास्क में आराम कर रही थी कि वह बीमार पड़ा, और उसे १५ दिन की छुट्टी दे दी गई। उसकी घर जाने की बड़ी इच्छा हुई, लेकिन उसने नोवोचेरकास्क में ही बने रहने का निश्चय किया, क्योंकि लम्बे सफरों से समय खोने का उसका जी न हुआ। प्लेटून के उसके एक साथी कैप्टेन गोरचाकोव ने भी इसी समय छुट्टी ली और लिस्तनित्स्की से नोवोचेरकास्क के अपने मकान में अपने साथ आराम करने को कहा। बोला, "मेरे बच्चे नहीं है और मेरी पत्नी को तुमसे मिलकर बड़ी ही खुशी होगी। मैंने अपने पत्रों में तुम्हारी बड़ी चर्चा

की है।"

सो, दोपहर में वे एक छोटे से मकान में जा पहुँचे। यह मकान गली के एक-दूसरे से सटे मकानों में से एक था, और यह गली रेलवे-स्टेशन से लगी हुई थी।

"यहाँ कभी मैं रहता था," गोरचाकोव ने अपने कदम तेज़ करते हुए कहा। उसकी बड़ी-बड़ी काली आँखें उमग और प्रसन्नता से चमक उठीं। वह घर में घुसा तो कमरे एक फौजी के बदन से उभरनेवाली तेज़ बास से भर उठे।

"ओलगा निकोलायेवना कहाँ हैं?" उसने मुस्कराकर बावर्चीखाने से निकलती हुई नौकरानी से पूछा। फिर खुद ही बोला, "बाग में हैं··· ···चले आओ, लिस्तनित्स्की।"

बाग में सेब के पेड़ों के नीचे की छाया में सेबों के धब्बे थे और हवा से शहद और तपी हुई धरती की बास आ रही थी। ऐसे में लिस्तनित्स्की का बिना फ्रेम का चश्मा सूरज की आड़ी किरनों के बीच चमका। दूर कहीं, कोई रेलवे एंजिन रह-रह कर भक-भक करता और धुआँ छोड़ता रहा। इस शोर के बीच गोरचाकोव ने ज़ोर की आवाज़ लगाई, "ओलगा, ओ ओलगा!"

आवाज़ के जवाब में एक लम्बी-सी औरत, पीले कपड़े पहने, उनकी ओर लपकी। वह एक क्षण तक तो सहमी-सी, हाथों से सीना दबाए, खड़ी रही और फिर हाथ फैलाए इन दोनों मित्रों की ओर दौड़ी। वह दौड़ी इतनी तेज़ कि लिस्तनित्स्की को नज़र आए सिर्फ उसके स्कर्ट से लड़ते घुटने, स्लीपरों की आगे की नोकें और सिर के चारों ओर हवा में लहराती सुनहरे बालों की लहरियाँ। औरत पास आई, अंगूठे के बल खड़ी हुई और उसने धूप से सँवराई अपनी बाँहें पति की गर्दन में डाल दीं। उसने बार-बार चूमे उसके गर्द से नहाए गाल, उसकी नाक, आँखें, होंठ और गर्दन। चुम्बनों से फूटती ध्वनि मशीनगन की आवाज़-सी लगी। लिस्तनित्स्की ने अपना चश्मा पोंछा, वरबीना पौधे की महक का अनुभव किया और उसके होंठों पर मुसकान बिखर गई। इस मुसकान में जहाँ एक बँधाव था, वहीं एक अजीब-सी बेवकूफी भी थी।

पत्नी की खुशी का तूफान उतार पर आया तो गोरचाकोव ने बड़ी सावधानी, मगर दृढ़ता से उसकी उँगलियाँ अपनी गर्दन से अलग कीं, अपना हाथ उसके कंधे पर रखा और उसे हल्के से मोड़ा—"ओलगा, ये हैं मेरे दोस्त लिस्तनित्स्की।"

"लिस्तनित्स्की ?···मुझे आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई। इन्होंने मुझसे आपकी चर्चा की है।" उसने खुशी से नहाई नजरें लिस्तनित्स्की पर डालीं, पर आनन्द के बीच जैसे उसे कुछ भी दिखाई नहीं पड़ा।

अब वे तीनों घर आए। यहाँ गोरचाकोव का, गन्दे नाखूनों वाला, रोयेंदार हाथ अपनी पत्नी की पतली कलाई पर टिक गया। लिस्तनित्स्की ने, वरबीना की महक और इस औरत के धूप में सँवराये शरीर की सुगंध में साँसें लेता वह हाथ, निगाह बचाते हुए, देखा। उसे बच्ची की तरह कुछ इस तरह बुरा लगा, जैसे कि किसी ने उसे अनुचित रूप से गहरी चोट पहुँचा दी हो। उसने औरत के रेशमी बदन और छोटे गुलाबी कानों पर नज़र डाली। एक कान का आधा निचला हिस्सा सुनहरे बालों से ढका हुआ था। लिस्तनित्स्की की आँखें उसके गाउन पर छिपकली की तरह फिसलीं। उसने देखा कि औरत के सीने दूधिया और भरे हुए हैं, और सीनों की घुंडियाँ छोटी और भूरी हैं। औरत ने भी बीच-बीच में अपनी हल्की-नीली आँखें उसकी ओर मोड़ीं, और उन दोनों की निगाहों में स्नेह और अपनापन घुल उठा। लेकिन, उसी औरत ने जब एक दूसरी तरह की प्रसन्नता से चमकते नेत्रों से अपने पति के साँवले चेहरे की ओर देखा तो लिस्तनित्स्की के मन में काँटा-सा चुभा। इस तरह उसे जो दर्द हुआ उसमें गुस्से की कुछ रेखाएँ भी आ मिलीं। लिस्तनित्स्की ने खाने के समय अपने मित्र की पत्नी को सिर से पैर तक भर-आँख देखा। उसका बदन सुडौल था और उसके चेहरे पर सौंदर्य के रंगों की पर लग रहे थे। यह सौंदर्य एक ऐसा फूल था जो किसी औरत के तीसवें शरद में फूलता है। इस पर भी उसकी चाल-ढाल में अब भी जवानी की रस लुटाती बहारें थीं। उसकी आँखों में परिहास और चेहरे पर कोमलता थी। आकर्षण कम न था, मगर नाक-नक्श शायद साधारण था। लेकिन, उसमें एक बात ऐसी थी जिसपर फौरन ही निगाह टिक जाती थी।

उसका वदन गहरा गुलाबी था, भौंहें भूरी थीं मगर होंठ दक्षिण की, पोले बालोंवाली साँवले रंग की औरतों की तरह रचे हुए और गहरे लाल थे। उसकी हँसी में एक आजादी थी, लेकिन इस पर भी जब उसके शानदार चमकते हुए दाँत कौंधते थे तो ऐसा लगता था जैसे कि वह सोच-समझकर, जानबूझकर मुस्करा रही हो। उसकी आवाज में ज्यादा दम न था, और उसमें प्रकाश और छाया की आँखमिचौनी कम-ही-कम मिलती थी। परन्तु, लिस्तनित्स्की को यह औरत ऐसी सुन्दर लगी कि क्या कहिए! कारण साफ था। उसने दो महीने से फौजी नर्सों को छोड़कर किसी औरत की परछाई तक न पाई थी। सो, उसने औरत के भारी जूड़े वाले, अभिमान से तने सिर को घूरकर सवालों के उलटे-सीधे जवाब दिए और थकान की दुहाई देता हुआ अपने कमरे में चला आया।

फिर, दिन-पर-दिन गुजरते गए। वातावरण में जितनी मिठास रही उतनी ही प्यास। बाद में लिस्तनित्स्की ने इन दिनों को अपनी कल्पना में दूसरा रूप दिया। पर, इस समय वह अपने को बचकाने ढंग से बेमतलब सताता रहा। गोरचाकोव दम्पती ने मिलजुलकर उसे बहकाने की कोशिश की। उन्होंने उसे, कमरे की मरम्मत के बहाने, अपने सोने के कमरे की बगल के घर के एक कोने वाले कमरे में कर दिया। उसने स्वयं यह अनुभव किया कि उसका वहाँ रहना उनके लिए एक मुसीबत है। लेकिन, इस पर भी कहीं और जाने का उसका मन न हुआ। वह हर दिन गर्द से भरी नारंगी ठंडक में मेब के पेड़ों के नीचे, पैकिंग-कागज पर जल्दी-जल्दी छपे अखबार पढ़ता या भारी तन-मन को और शिथिल करने वाली नींद में रहता।

उसकी इस ऊब में हिस्सा बँटाता उसकी बगल में पड़ा आहें भरता एक कुत्ता जैसे कि उसे अपनी मालकिन पर मालिक की तानाशाही हकूमत में डाह हो।

लिस्तनित्स्की कुत्ते की पीठ पर हाथ फेरता और बुनिन की प्यारी-प्यारी पंक्तियाँ गुनगुनाता। वह कवि की जितनी अधिक पंक्तियाँ याद कर सकता, याद करता और आखिरकार सिर टेककर सो जाता।

ओल्गा ने अपने नारी-स्वभाव के आधार पर उसकी इस मनःस्थिति

का कारण समझा, इसीलिए आरम्भ से ही अपने को थोड़ा खींच रखा, और फिर यह खिंचाव बराबर बढ़ता गया। एक दिन पार्क के फाटक पर गोरचाकोव को जाने-पहचाने अफसरों ने रोक लिया कि लिस्तनित्स्की और ओलगा शहर के बाहर के बाग से साथ-साथ लौटे। लिस्तनित्स्की ने औरत का बाजू अपने हाथ में साध लिया और उसकी कोहनी अपनी बगल से सटाने की कोशिश करते हुए उसे खासा परेशान किया।

औरत ने मुसकराते हुए पूछा, "आप मेरी तरफ देखकर इस तरह घूरते क्यों हैं ?" लिस्तनित्स्की को उसकी आवाज में एक हल्की-सी चुनौती लगी और उस चुनौती में खिलवाड़ की भावना घुली मालूम हुई। इससे उसे बढ़ावा मिला और उसने अपने पत्ते खेल जाने का खतरा मोल ले लिया। पिछले कुछ दिनों से उसके दिमाग में कविता यानी किसी दूसरे के दर्द का संगीत भरा रहा था। सो, उसने अपना सिर झुकाया और मुसकराकर फुसफुसाते हुए कहा—

"उसके सामीप्य के जादू से बंधा-सा,
उसके परछाईंदार पर्दे को भेदते हुए
मैं मंत्रमुग्ध-से सागर के किनारे को देखता हूँ—
यह सागर का किनारा, बहुत दूर है—
किसी तिलिस्मी पीले फैलाव के पार है—"

इसपर औरत ने धीरे से अपना हाथ छुड़ा लिया और खिली हुई आवाज में कहा, "येव्गेनी निकोलायेविच···मैं···मैं आपका रवैया अपने मामले में समझ नहीं पाती···शर्म नहीं आती आपको? और सुनिए, मेरे खयाल से काश कि आप जरा कुछ और ही तरह के आदमी होते···तो, कुछ और अच्छा होता न? ऐसे प्रयोगों के लिए मैं बहुत ही मामूली चीज हूँ।···यानी, आप मोहब्बत के सपने देख रहे हैं, क्यों? आखिर हम अपने मित्रतापूर्ण सम्बन्ध इस तरह क्यों खराब करें। आपको अक्ल से काम लेना चाहिये। मैं ठीक कहती हूँ न? लाइए, अपना हाथ इधर बढ़ाइए।"

लिस्तनित्स्की ने एक बनावटी-सी नफरत दिखलाने की कोशिश की पर यह कोशिश बहुत देर तक नहीं चली—और ओलगा का अनुसरण करते

हुए वह भी ठठाकर हँस पड़ा। इतनी देर में गोरचाकोव पास आ गया तो औरत और खिल उठी, लेकिन येव्गेनी चुप हो गया और पूरे रास्ते अपने को कोसता रहा।

ओलगा ने, अपनी सारी समझदारी के बावजूद, सोचा कि इस घटना के बाद उनके बीच मित्रता के सम्बन्ध हो जाएंगे। बाहर से लिस्तनित्स्की ने उसके विश्वास के अनुकूल ही कार्य किया, लेकिन मन-ही-मन वह उसे जैसे नफरत-सी करने लगा। इसपर भी कुछ दिन बाद उसे उस औरत के चरित्र और व्यक्तित्व में कितनी ही चीजें प्यारी लगने लगीं और उसे रह-रहकर सताने लगीं। उसने अनुभव किया कि वह उससे प्यार-सा करता है और उसका यह प्यार सचमुच गहरा है।

छुट्टी के दिन एक-एक कर बीत गए और अपनी यादें उसके अन्तर्मन में छोड़ गए। इस बीच स्वयंसेवक सेना में नये लोग आए, और सेना के लोगों ने आराम कर लिया। अब सेना ने हमले की तैयारी की और गोरचाकोव और लिस्तनित्स्की के साथ कुबान की ओर मार्च किया।

ओलगा ने उन्हें विदाई दी। उस समय काले, रेशमी गाउन में उसका रूप और निखरा लगा। वह आँसुओं से डबडबाई आँखों से मुसकराई। उसके सूजे हुए होंठों के कारण उसके चेहरे पर जितनी परेशानी झलकी, उतना ही बचपन। और, लिस्तनित्स्की के दिमाग में उसका रूप सहज ही अंकित हो गया। फिर खूनखराबे से और गंदगी से भरी लड़ाई के बीच उसने बहुत ही सावधानी से उसके इस अमिट चित्र को अपनी स्मृति में अमिट रखा। वह जैसे उसे समर्पित हो गया, और अपनी कल्पना में उसे अपनी पूजा का ताज पहनाने लगा।

स्वयंसेवक सेना जून के महीने में लड़ाई में खींची गई। पहली मुठभेड़ में ही बम के गोले के टुकड़े से गोरचाकोव का पेट फट गया। उसे सैनिक पंक्तियों के पीछे कर एक गाड़ी में लिटा दिया गया। वहाँ उसके पेट से खून बहता रहा कि एक घण्टे बाद उसने लिस्तनित्स्की से कहा, "मैं नहीं सोचता कि मैं मर जाऊँगा···मेरा आपरेशन जल्दी से जल्दी किया जाएगा। कहते हैं कि क्लोरोफॉर्म यहाँ नहीं है। चोट ऐसी नहीं कि मैं मर जाऊँ···है न? लेकिन अगर···येव्गेनी, मैं इस समय अपने पूरे होश-हवास

में हूँ, और एक बात कहना चाहता हूँ कि तुम ओलगा को छोड़ मत देना। हमारे बीच किसी तरह के कोई सम्बन्ध नहीं हैं। तुम ईमानदार और भले आदमी हो···उससे शादी कर लेना।···शायद तुम उससे शादी करना नही चाहते, क्यो?"

उसने येव्गेनी की ओर नफरत, पर मिन्नत-भरी आँखों से देखा। बढ़ी हुई दाढ़ी के बालों से भरे उसके गालो की खाल काँपने लगी। उसने अपने खून से तर, गर्द से भरे हाथ से सम्हालकर अपना घाव दबाया और अपने होंठ का पीला-सा पसीना चाटते हुए बोला, "वायदा करते हो? उसे छोड तो नही दोगे? हाँ, अगर रूसी फौजी मेरी तरह तुम्हारा भी हुलिया निखार दें तब की बात अलग है। वायदा करते हो? औरत अच्छी है।" उसका सारा चेहरा दर्द से ऐंठने लगा, पर वह अपनी बात कहता गया, "औरत क्या है, तुर्गनेव के उपन्यासों में अंकित एक नायिका है। इस जमाने मे ऐसी औरतें मिलती कहाँ है···बची ही नही···तो, वायदा करते हो?"

"वायदा करता हूँ।"

"खैर, तो अब शैतान ले जाए तुम्हे। अलविदा!"

उसने अपना काँपता हुआ हाथ लिस्तनित्स्की के हाथ मे दिया और बेचारगी से भरे भद्दे ढग से उसे अपनी ओर खीचा। इसके बाद उसने अपना पसीने से तर सिर उठाने की कोशिश की तो बुरी तरह काँपने लगा। इसपर भी वह उठा और अपने जलते होंठों से लिस्तनित्स्की का हाथ चूमा। इसके बाद तेजी से अपना सिर उसने ओवरकोट के सिरे से ढाँक और करवट बदल ली। उसके होठों पर बर्फ की एक परत बिछ गई और चेहरे पर नम सफेदी की एक भाई पड गई। येव्गेनी को इस सबकी एक झाँकी मिली।

दो दिन बाद वह मर गया। इसके अगले दिने ही लिस्तनित्स्की का बाया हाथ और जाँघ बुरी तरह जख्मी हो गई। उसे पीछे भेज दिया गया।

हुआ यह कि अधेपन से भरा लम्बा सघर्ष बराबर चलता रहा। येव्गेनी के रेजीमेंट ने हमले का जवाब हमले से दिया, और वह उसके साथ दो बार आगे बढ़ा। तीसरी बार उसकी बटालियन को और आगे बढ़ने का आदेश

दिया गया। कम्पनी के कमाण्डर ने ललकारते हुए कहा, "बढ़ते रहो जवान—बढ़ते रहो—कोरनिलोव के लिए बढ़ते रहो!" लिस्तनित्स्की अनकटे अनाज के खेतों के बीच से गिरता-पड़ता भागा। उसने बायें हाथ से एक फावड़े के सहारे अपने सिर का बचाव कर रखा था और दाहिने हाथ से अपनी राइफल साध रखी थी। सहसा ही एक गोली फावड़े के फल की बगल से सरसराती निकल गई और वह खुशी से भर उठा। लेकिन, दूसरे ही क्षण गहरे वार से उसका एक हाथ दूर जा गिरा। उसने फावड़ा नीचे गिरा दिया और सिर के बचाव के किसी साधन के बिना वह पचास गज तक आगे दौड़ता चला गया। उसने अपनी राइफल को अपने साथ घसीटने की कोशिश की। पर, उसके हाथ ने उठने से इन्कार कर दिया। दूसरी ओर दर्द हर गाँठ में इस तरह उतर गया, जैसे पिघला हुआ सीसा किसी साँचे में भर उठता है। वह खेत की एक लीक पर गिर पड़ा और बार-बार चीखने लगा। दर्द उसकी सम्हाल में न रहा। लेकिन, यहाँ इस हालत में भी एक गोली उसकी जांघ में लगी और वह दर्द से धीरे-धीरे बेहोश हो गया।

पीछे उसका हाथ काटा गया और हड्डी के टुकड़े जांघ से खींचकर बाहर निकाले गए। इसके बाद दो सप्ताह तक वह निराशा, पीड़ा और जिन्दगी की प्यास से बेचैन पड़ा रहा। इसके बाद उसे नोवोचेरकास्क भेज दिया गया। यहाँ वह तीस दिन तक और अस्पताल में पड़ा बेचैनी के दिन काटता रहा। उसे हर ओर नज़र आयी जख्मों की मरहमपट्टी और मनहूस चेहरों वाले डाक्टर और नर्सें। हवा की लहरों पर उमड़ती मिली आयोडीन और कार्बोलिक की बू···ऐसे ही एक दिन ओलगा उधर आ निकली। इस समय उसके गालों पर स्याही-मिली ज़र्दी नज़र आई। उसके मातमी लिबास में उसकी आँखों की उदासी और गहरी लगी। लिस्तनित्स्की ने उसके मुरझाए चेहरे को एकटक देखा, शर्म से चुप रहा और चोरों की तरह अपनी खाली बाँह कम्बल में छिपाने लगा। ओलगा ने न चाहते हुए भी अपने पति की मौत के बारे में तरह-तरह के सवाल किए। उसकी आँखें रोगियों के बिस्तरों पर दौड़ती रहीं और बातें सुनते हुए भी उसका दिमाग कहीं और रहा। बाद में येव्गेनी अस्पताल से छूटा तो उससे मिलने गया।

वह उसे घर की सीढ़ियों पर मिली। लेकिन, बालों के छल्लों से सुन्दर सिर येव्गेनी ने उसका हाथ चूमने को झुकाया, तो उसने अपना चेहरा दूसरी ओर कर लिया।

उसकी दाढ़ी बहुत ही साफ बनी हुई थी और उसने शानदार ट्यूनिक पहन रखा था, लेकिन उसकी खाली बाँह उसे रह-रहकर खल रही थी। उसके कटे हुए हाथ का बँधा हुआ हिस्सा रह-रहकर हिल-डुल रहा था। खैर, तो वे दोनों घर के अन्दर आए और खड़े-ही-खड़े येव्गेनी कहने लगा, "मरने के पहले बोरिस ने मुझसे कहा···मुझसे वायदा कराया कि तुम्हें छोड़ूँगा नहीं···"

"मैं जानती हूँ। यह बात उसने मुझे अपने पत्र में लिखी थी···"

"उसकी बड़ी इच्छा थी कि हम दोनों साथ रहें। अब सवाल है तुम्हारे राजी होने का, और सवाल है किसी बेहाथ के आदमी से शादी करने का। मैं चाहता हूँ कि तुम विश्वास करो—अगर मैं इस समय अपनी भावनाओं को लेकर बकबक करने बैठूँ तो बड़ा अजीब-सा लगेगा। लेकिन, मैं ईमानदारी से तुमको खुश देखना चाहता हूँ।"

येव्गेनी की परेशानी और मन की बेचैनी से भरी बातों का औरत पर बड़ा प्रभाव पड़ा। बोली, "मैंने इसके बारे में सोचा है। मैं राजी हूँ।"

"तुम मेरे साथ मेरे पिता के इलाके पर चलो। बाकी बातें बाद में तय हो जाएँगी।"

"ठीक है।"

येव्गेनी ने उसका संगमरमरी हाथ बड़े आदर से चूमा। फिर उसने विनय से भरी अपनी आँखें उठाई तो औरत के होंठों पर मुस्कान की एक छाया फिसलती देखी।

लिस्तनित्स्की को प्यार और अटूट वासना ने अोलगा की ओर खींचा। वह अब हर दिन उसके यहाँ जाने लगा। पर रोज़-रोज़ के संघर्ष से तंग आकर उसका मन किसी परी-देश के लिए ललकने लगा। उसने शायद अपने सहज शारीरिक आकर्षण पर पर्दा डालना चाहा, और उसमें चार चाँद लगाने चाहे। इसीलिए वह अपने साथ किसी क्लासिकल उपन्यास के चरित-नायक का सा व्यवहार करने और बिल्कुल अनजानी राहों

पर दौड़ने लगा। इस पर भी परी-कथा का एक पंख यथार्थ की धरती से छू गया। उसे लगने लगा कि यह औरत अचानक ही उसके जीवन में चली आई है, पर वासना की प्यास के अलावा किसी और अनजाने बंधन ने भी उसे उससे जकड़ रखा है। परन्तु उसने अपनी भावनाओं को सुलझाने की कोशिश की तो सिर्फ एक बात साफ हुई कि वह एक हाथ का, अपाहिज आदमी है और हैवानियत से भरी एक भावना आज भी बेरोक-टोक उस पर हुकूमत करती है, यानी वह अपने लिए हर चीज को वाजिब और जायज मानता है। नतीजा यह कि अोलगा के सीने पर पति की मौत के सदमे का भारी पत्थर रखा रहा, तो भी वह मृत बोरिस से डाह करता, उस आग में झुलसता उस औरत को पाने के लिए बेचैन रहा—होश-हवास खोकर बेचैन रहा। दूसरी ओर, जिन्दगी पागल भँवर की तरह हर ओर फेन उगलती रही। उसने अनुभव किया कि बारूदी हवा में साँस लेते चारों ओर के वातावरण से अंधे और बहरे हो गए लोग हर क्षण दाँत से पकड़ रहे हैं! शायद इसीलिए अपने जीवन का गठबंधन ओलगा की जिन्दगी से कराने में उसने इतनी जल्दी की। शायद उसे लगा कि जिस चीज के लिए उसने मौत का सामना किया है—उसे बरबाद होने से कोई रोक नहीं सकता। शायद होनी पहले ही उसके दिमाग में कौंध गई।······

उसने अपने पिता को सूचना दी कि मैं शादी करना चाहता हूँ और अपनी पत्नी को लेकर यागोदनोये आऊँगा। पत्र के अंत में उसने दर्द-भरे *व्यंग्य से लिखा—"मुझसे थोड़ा-बहुत जो भी बना मैंने किया।* आज भी, एक हाथ होने पर भी मैं विद्रोह का जहर निकाल फेंकने के लिए लोहा ले सकता हूँ, इस अभिशप्त 'जनता' को समाप्त कर सकता हूँ। इसके भाग्य और भविष्य को लेकर ही रूसी बुद्धिवादी दसियों सालों से आँसू बहाने और, जैसे सन्निपात में, बड़बड़ाते रहे हैं। लेकिन, सच बात तो है कि यह चीज मुझे आज बिल्कुल बेमतलब और बेमानी लगती है। क्रासनोव देनिकिन से कभी समझौता नहीं करेगा। दोनों कैम्पों की आज बड़ी बदनामी है। सांठ-गांठों, षड्यंत्रबाजियों और बदमाशियों का बोलबाला है। कभी-कभी तो मुझे डर लगने लगता है। मैं सोचता

हूँ कि आखिर यह सब खत्म कैसे होगा ? मैं अपने एक हाथ से आपको हृदय से लगाने, आपके साथ रहने और इस संघर्ष को बाहर से देखने-समझने के लिए घर आ रहा हूँ। अब मैं एक मामूली फौजी नहीं हूँ बल्कि तन और मन, दोनो से ही अपाहिज हूँ। मैं थक गया हूँ। शायद अब मैं निश्चित मन से सुरक्षित स्थान पर अपनी ज़िंदगी के जहाज़ का लंगर डालना चाहता हूँ।"

नोवोचेरकास्क से रवाना होने से कुछ दिन पहले येव्गेनी ओलगा के मकान मे चला आया। फिर जिस रात दो तन एक हुए, उसके बाद से औरत के गाल बैठने लगे और चेहरा सँवराता मालूम हुआ। वह उसकी ज़िद् बराबर मानती रही, लेकिन सतप्त बराबर लगी क्योंकि उसकी अपनी स्थिति प्रतिक्षण उसे टीसती रही। उसकी आत्मा जैसे घायल होती गई। येव्गेनी ने न जाना और न जानना चाहा कि उन दोनों को एक सूत्र मे पिरोने वाले प्यार के माप कितने ही हो सकते है पर नफरत का माप केवल एक होता है।

यागोदनोये से रवाना होने के पहले उसे कुछ यों ही अक्सीन्या का खयाल आया, तो वह अपने मन मे बहुत सकुचा-सा उठा। उसने अपने को उसके खयालों से बचाने की उसी तरह कोशिश की जिस तरह कोई आदमी हाथ की आड से अपने को सूरज की धूप से बचाता है। लेकिन उस औरत के साथ के दिनों की याद दबाए न दबी और उसे रह-रहकर परेशान करने लगी। एक बार उसे यहाँ तक लगा कि उससे अपने सम्बन्ध तोड़ना कोई ऐसा ज़रूरी नही है। उसने सोचा कि वह मान जाएगी। परन्तु शोभा की भावना ने बाकी दूसरी भावनाओं को दबा दिया। उसने निश्चय किया कि यागोदनोये पहुँचने पर वह उससे बातें करेगा और भरसक उससे सम्बन्ध तोड लेगा।

नोवोचेरकास्क से रवाना होने के बाद चौथे दिन, येव्गेनी और ओलगा यागोदनोये पहुँचे। बूढे जागीरदार ने अपनी जागीर से कोई एक वर्स्ट के फासिले पर उनकी अगवानी की। येव्गेनी ने देखा कि उसके पिता ने बहुत ही धीरे से टोप सिर से उठाया। पिता बोला, "प्यारे मेहमानो, मैं आया हूँ तुम्हारा स्वागत करने। आओ, तुम्हें भर-आँख देख तो लूँ।"

बूढे ने पुत्रवधू को बहुत ही भद्दे ढग से सीने से लगाया, और सीने से लगाया तो उसकी हरी-भूरी मूँछों के बाल उसके गालों में गड़ने-से लगे। येव्गेनी बोला—"पापा आओ अन्दर बैठें···और, कोचवान चलो! ···ओह, हेलो बाबा सादका, तुम अभी तक सही-सलामत हो?··· पापा, अब आप मेरी जगह बैठिए, मैं कोचवान के पास बैठूंगा।"

बूढा ओलगा की बगल में बैठ गया। उसने रूमाल से अपनी मूँछें पोंछीं और व्यक्त रूप से जैसे कोई विशेप राज न रखते हुए अपने बेटे को सिर से पैर तक देखा। बोला—"तो, ठीक हो?"

"मुझे आपसे दुबारा मिलकर बड़ी खुशी हो रही है, पापा।"

"यानी तुम्हारे पैरों में बेड़ियाँ पड़ गई?"

"यह तो होना ही था।"

पिता ने उसे घूरकर देखा, अपना स्नेह कठोर मुद्रा की आड़ मे छिपा रखा और अपनी नजरें ट्यूनिक मे झूलती हुई कटी बाँह से दूर रखीं।

"कोई बात नहीं है, मुझे अब यह अजीब-सा नहीं लगता।" येव्गेनी ने अपने कंधे झटके।

पिता जल्दी-जल्दी बोला—"अजीब क्यों लगेगा, ऐसे रहने की भी आदत पड़ जाती है। सिर सलामत रहना चाहिए, सो है। तुम सम्मान के साथ वापस आए और एक ऐसा खूबसूरत कैदी भी अपने साथ ले आए······"

येव्गेनी अपने पिता के मँजे हुए, पुराने ढग के बहादुरी के मापदण्ड मे खुश हुआ और उसने आँखों ही आँखों से ओलगा से पूछा—'क्या राय है पापा के बारे मे?'—और उसकी खिली हुई मुसकान और आँखों के उल्लास से उसने समझा कि बूढा ओलगा को पसन्द आया।

तेज भूरे घोडे द्रोशकी की बग्घी को रफ्तार से पहाडी के ढाल पर उड़ा ले चले। बाहर की इमारतें, बगीचों की हवा में लहराती अयालें, मैपल के पेड़ों वाले सफेद दीवारों के घर और खिड़कियों पर इन पेडों के साये दूर से नजर आने लगे।

"हर चीज कितनी प्यारी है! सचमुच कितना प्यारा दृश्य है!"

ओलगा ने खुशी से भरकर कहा।

राह मे काले हाउंड कुत्ते मकानों के अहातों से दौड़े-दौड़े आए और द्रोशकी यानी बग्घी को घेरने लगे। सारका ने गाड़ी के अन्दर कूद आने की कोशिश करने वाले पास के कुत्ते पर चाबुक सटकारा और चीखा—"अबे शैतान के बच्चे, अभी आ जाएगा पहिये के नीचे!"

येव्गेनी घोड़ों की ओर पीठ किए बैठा रहा और घोड़े हींसे तो हवा नन्ही-नन्ही, नम बूँदें उसकी गर्दन पर उड़ा लाई।

वह अपने पिता, ओलगा, गेहूँ के छितरे हुए दानों से भरी सड़क और दूर के क्षितिज को धीरे-धीरे छिपा लेने वाले, पीछे छूट गए टूह को देखता और मुस्कराता रहा—"मीलों दूर का फासिला है कहीं से भी! और, कितनी शांति है!···"

ओलगा भी, होंठों पर मुस्कान सजाए, सडक के आर-पार उडते कौओं और तेजी से बगल से गुज़रते चिरायते और तिनपतिया घास के गुच्छों को ध्यान से देखती रही।

"लोग हमारी अगवानी के लिए गाँव के बाहर जमा है···" पिता ने आँखें सिकोडकर नज़र दौडाते हुए कहा।

येव्गेनी ने गर्दन उचकाकर देखा तो लोग काफी दूर होने के कारण पहचाने न जा सके। पर, औरतों मे उसने अक्सीन्या को पहचान लिया और उसके गालों पर लाली का गहरा रंग दौड गया। उसे लगा कि गाडी फाटक से निकलेगी तो अक्सीन्या के चेहरे पर परेशानी की रेखाएं नज़र आएगी। सो इस भावना के साथ ही उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। उसने बाईं ओर देखा तो निगाह उसी पर जा थमी। मगर, उसे खुशी से खिला हुआ देखकर उसे ताज्जुब हुआ, परन्तु साथ ही ही जैसे एक बोझ उसके कधे से उतर गया। उसने सिर झुकाकर उसका अभिवादन किया।

"बडी ही खूबसूरत औरत है···कौन है यह? उसका रूप तो जैसे चुनौती-सी देता है···क्यों?" ओलगा ने अक्सीन्या की ओर आँखों से इशारा किया।

इस बीच येव्गेनी मे साहस लौट आया और उसने बहुत शांत भाव

से ओलगा की बात का समर्थन किया, "हां, औरत हसीन है···घर में काम करती है।"

ओलगा यागोदनोये में रही तो उसकी उपस्थिति ने मानो सबको जादू में बाँध-सा लिया। सोने की कमीज़ और पतलून पहनकर दिन-भर इधर-उधर घूमने वाले बूढ़े बाबा ने हुक्म दिया—"पुराने कोट और जनरल की वर्दीवाले मेरे पतलून बक्सों में बद हैं···वे बक्सों से निकाले जाए और कपूर की गोलियाँ अलग की जाए !" यानी पहले अपने मामले में पूरी तरह लापरवाही बरतने वाले लुकनित्स्की अब लिनेन मे जरा भी सिकुड़न देखते या सुबह जूते गंदे पाते तो अजीब तरह से मुँह बनाते और अक्सीन्या पर चीख उठते। उनमें जैसे ताजगी आ गई। दाढ़ी बनाने के बाद उनके गाल ऐसे चमकने लगे कि येव्गेनी को अचरज होने लगा।

अक्सीन्या तो जैसे किसी आसमानी ताकत के बस मे हो गई। वह अपनी नई मालिकिन को खुश करने की पूरी कोशिश करती। उससे बड़ी ही विनय के साथ बातें करती और हुक्म बजाने के लिए, उसकी सेवा कर पाने के लिए, उतावली रहती। लुकेरिया बढ़िया से बढ़िया खाने पकाती, और इस कोशिश में जैसे अपना दिल निकालकर रख देती। एक-से-एक नई चीजें ईजाद करती। एक-से-एक जायकेदार सलाद और चटनियाँ तैयार करती। और तो और, इतना बूढ़ा और कमज़ोर साश्का भी यागोदनोये की बदलती करवटों से अछूता नहीं रहा। बड़े मालिक सीढ़ियों के पास मिलते, उसे सिर से पैर तक देखते, और उँगली हिला-हिलाकर, आँखें नचा-नचाकर धमकाते गुस्से मे लाल हो जाते—"क्यों वे सूअर के बच्चे, क्या है यह सब ? जरा अपने पतलून की हालत तो देख !"

"क्यों, क्या खराबी है मेरे पतलून में ?" बूढ़ा साश्का ढिठाई से जवाब देता, हालांकि मालिक के गैरमामूली मुआइने और उनकी काँपती हुई आवाज़ से अन्दर-ही-अन्दर थोड़ा घबडा जाता।

"एक जवान औरत घर मे है, और तू मुझे जिन्दा कब्र मे धकेलने की कोशिश कर रहा है—गधा कहीं का ! अबे उल्लू के पट्ठे, पतलून के बटन ठीक क्यों नहीं करता !"

बूढे सारका ने अपनी उँगलियाँ नीचे के बटनों पर इस तरह फेरीं जैसे कोई अकार्दिग्रोन बजा रहा हो। इसके बाद उस ने ढिठाई से कुछ जवाब देना चाहा। लेकिन मालिक ने अपना पैर ऐसे जोर से पटका कि उसके पुराने फैशन के नोकदार बूटों का तल्ला ऊपर के चमडे से अलग हो गया। वह चीखा, "वापस…फौरन अपने अस्तबल को वापस! क्विक मार्च! मैं लुकेरिया से कहूँगा कि वह तेरा बदन खोलते हुए पानी से रगड-रगडकर साफ करे। जरा अपने बदन का मैल तो देख बुड्ढे सुअर!…"

येव्गेनी ने आराम किया और राइफल हाथ मे लेकर तीतरों के शिकार को निकल पड़ा। अक्सीन्या की समस्या उसके दिमाग में नाचती रही और उसका मन मथती रही। लेकिन, एक दिन शाम को पिता ने उसे अपने कमरे मे बुलाया, और दरवाजे की ओर ताकते और बेटे की निगाहे बचाते हुए पूछा, "तुम अपने व्यक्तिगत मामलों मे टाँग अड़ाने के लिए मुझे माफ करना, लेकिन मैं जानना चाहता हूँ कि अक्सीन्या के बारे में तुम क्या सोच रहे हो?"

येव्गेनी ने हडबडाते हुए एक सिगरेट जलाई और इस तरह अपनी परेशानी पर पर्दा डालना चाहा। इस समय भी उसका चेहरा वैसे ही लाल हो उठा जैसे यहाँ आने पर पहले दिन लाल हुआ था। और यह अनुभव करते ही उसके गालो की लाली और गहरा उठी। बोला, "मैं नहीं जानता…सचमुच मेरी समझ मे कुछ नही आता!" उसने जैसे अपने हृदय की ईमानदारी व्यक्त की।

बूढा अपने शब्द तोल-तोलकर बोला, "लेकिन मैं जानता हूँ! जाओ और फौरन उससे बातें करो। चुपचाप उसके हाथ मे पैसा रखो।" बूढा होंठो-ही-होठो मुस्कराया, "उससे कहो कि यहाँ से चली जाए। हम कोई और नौकरानी खोज लेंगे।"

येव्गेनी तुरन्त ही नौकरों के क्वार्टरों की ओर बढा गया। अक्सीन्या दरवाजे की ओर पीठ किए खडी थी। उसकी कमर झुकी हुई थी और कन्धे की कमानें हिल-डुल रही थीं। उसने आस्तीनें कोहनी के ऊपर तक चढा रखी थी और उसके भरे हुए बाजुओ के बल्ले रह-रहकर

अठखेलियाँ कर रहे थे।

येव्गेनी ने उसके बालों के घने छल्लों को गर्दन के चारों ओर मचलते देखा और बोला, "अक्सीन्या, मैं तुमसे एक मिनट बात करना चाहता हूँ।" औरत तेजी से मुड़ी। उसने शिष्टता से नमस्कार कर अपने-आपको सँभाला लेकिन येव्गेनी ने देखा कि आस्तीनें नीचे करते हुए उसकी उँगलियाँ काँप रही हैं।

अक्सीन्या ने जरा डर से बावर्ची पर निगाह डाली। मन की खुशी सँभाले न सँभली और अपनी मुस्कान में खुशी और सवाल घोलते हुए वह येव्गेनी के पीछे चल पड़ी।

बाहर की सीढ़ियों पर वह उससे बोला, "हम बागीचे में चलेंगे, मुझे तुमसे कुछ बातें करनी हैं।"

"अच्छी बात है।" वह प्रसन्नता और विनय से बोली। उसे लगा कि इस तरह उसके पुराने सम्बन्ध शायद नये हो उठेंगे। रास्ते में येव्गेनी ने उससे धीरे से पूछा, "तुम्हे पता है, मैं तुम्हें बाहर बुलाकर क्यों लाया हूँ।"

अँधेरे में मुस्कराते हुए औरत ने उसकी बाँह थाम ली। लेकिन उसने अपना हाथ छुड़ा लिया। औरत ने स्थिति समझी और वह ठिठकी, "क्या बात है, येव्गेनी निकोलायेविच, मैं आगे नहीं जाऊँगी।"

"अच्छी बात है, हम यहीं बातें करेंगे। हमें कोई नहीं सुनेगा।" येव्गेनी ने जल्दी-जल्दी अपनी बात कहनी चाही तो शब्दों के अनदेखे जाल में उलझ गया, "तुम्हें एक बात समझनी चाहिए कि मैं पहले की तरह अब तुम्हारे साथ नहीं रह सकता···मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकता··· बात समझ में आती है? अब मेरी शादी हो गई है और ईमानदार आदमी होने के नाते मैं अब ऐसा कुछ नहीं कर सकता जिससे मुझे जिल्लत उठानी पड़े। मेरी आत्मा गवाही नहीं देगी।" उसने कहा और अपने ऊँचे स्वर में कहे गए शब्दों पर खुद ही लज्जित हो उठा।

रात कजरारे पूर्व से अभी-अभी आई थी। पश्चिम में आसमान का एक हिस्सा ढले हुए सूरज की लाली से अब भी रंगीन था। खलिहान में लोग सुहाने मौसम से फायदा उठाकर, लालटेनों की रोशनी में, अब भी नाज ओसा रहे थे। मशीनों में गति थी। ओसाई की

मशीनों का मुँह, बिना थके, भरते हुए एक आदमी भर्राए हुए गले से, खुशी से उमड़ते स्वरो मे चिल्ला रहा था, "और···और !" बागीचे मे बड़ा सन्नाटा था। हर तरफ बिच्छू के पेड़, गेहूँ और ओस गमक रही थी।

अक्सीन्या ने मुंह से कुछ नही कहा। येव्गेनी ने पूछा—"क्या कहती हो तुम ? तुम इस तरह चुप क्यों हो अक्सीन्या ?"

"मेरे पास कहने को कुछ नही है।"

"अक्सीन्या, तुम जितने रूबल चाहोगी मैं तुम्हें दूँगा। लेकिन, जैसे भी हो तुम चली जाओ यहां से। मेरे लिये मुश्किल होगा कि मैं तुम्हें हर वक्त देखूं, और अपने को सँभाले रहूँ।"

"एक हफ्ते मे मेरा महीना पूरा हो जाएगा।···क्या तब तक मैं रह सकती हूँ ?"

"बेशक···बेशक !"

अक्सीन्या एक क्षण तक चुप रही। लेकिन सहसा जैसे हिम्मत ने उसका साथ छोड दिया। वह धीरे-धीरे येव्गेनी की ओर खिसकी, "ठीक है, मैं चली जाऊँगी। लेकिन क्या तुम···आखिरी बार···सिर्फ आखिरी बार···? अकेले रहते-रहते मेरा दम घुटने लगा है। मुझे बुरा मत समझना, येव्गेनी !"

उसकी आवाज खुश्क हो गई और वह कांपने-सी लगी। येव्गेनी यह समझ न पाया कि वह हँसी कर रही है या यह बात गम्भीरता से कह रही है।

"तुम चाहती क्या हो ?" वह खीझ से खाँसा और उसे लगा कि औरत अँधेरे मे उसका हाथ टटोल रही है।

कुछ समय बाद वह गीली मुनक्के की महकदार झाड़ी से बाहर आया। घर पहुँचने से पहले वह ठिटका और उसने घास की नमी से गीले पतलून के टखने पोंछे। घर पहुँचकर वह सीढियों पर चढ़ा तो उसने मुड़कर पीछे देखा। अक्सीन्या अपना जूड़ा ठीक करती नजर आई। उसके होंठों पर मुस्कान की थिरकन रही।

फेदर घास पक गई थी। स्तेपी में यहाँ से वहाँ तक चाँदी लहरा रही थी। हवा सीटियाँ बजाती हुई इस चाँदी पर उछलती फिर रही थी। वह ओपली दूधिया लहरों को कभी दक्षिण की ओर ढकेल देती थी तो कभी पश्चिम की ओर। हवा के झकोरे जिधर भी मुड़ते फेदर घास की पत्तियाँ आदर से सिर झुका लेतीं। कपूरी विस्तार पर एक गहरी-सी लीक बुन उठती।

रंगबिरंगी घासें मुरझाने लगी थीं। उतरा हुआ, बेरंग चिरायता पहाड़ी की चोटियों पर झुका खड़ा था। छोटी रातें देखते-देखते उतार पर आ जाती थीं। रात के समय काले कोयले के आसमान में जैसे कोई अनगिनत सितारे और चाँद छिड़क देता था। कज्ज़ाक इस चाँद को 'छोटा सूरज' समझते थे। यह चाँद बराबर घटता जाता और पीला पड़कर हल्के-हल्के चमकता रहता। आकाशगंगा में सितारों की दूसरी धाराएँ आ-आ कर मिलती रहतीं। वातावरण में सन्नाटा रहता। हवा खुश्क लगती। उससे चिरायते की बास आती रहती। धरती भी, सर्वशक्तिमान, चिरायते की बू में नहाई रहती और तरी के लिए कलपती। सितारों से भरे रास्ते जानवर और इन्सान दोनों से ही अछूते रहते। सितारे मुरझाते और अपने मुँह छिपा लेते। गेहूँ के दानों की तरह बिखरे हुए सितारे काले आसमान में डूब जाते। धरती की तरह ही काले आसमान के इन बीजों से न कोंपलें फूटतीं और न ही वहाँ इन्हें देखकर कोई खास खुश होता। सूखा स्तेपी की मारी घास पर मुरझाव बिछा देता। उसके ऊपर बटेरों और झींगुरों की बजती हुई झंकारों का वितान तना रहता।

स्तेपी में दिन दुखद होता। धुंध-सी हर ओर घिरी रहती। बेरंग, बिना बादलोंवाले पेडुकी के रंग के नीले आसमान में बेरहम सूरज चमकता रहता। चीलों के फैले हुए डैनों का भूरा इस्पात जहाँ-तहाँ मेहराबें बनाता रहता। फेदर घास आँखों में चकाचौंध पैदा करती और पूरे मैदान में बे-रोक-टोक फैली नजर आती। उसका रंग ऊँट के रंग का सा हल्का भूरा लगता धुआँ-सा छोड़ता। चीलें आसमान की लहरों पर लहरातीं। उनके

लम्बी-चौड़ी छाया बिना आवाज किए घास की पत्तियों पर फिसलती चली जाती।

ममलिक चिड़ियों के भर्राए हुए स्वरों में थकावट टपकती। गिलहरियाँ ऊबड़-खाबड़ पीले ढालों पर औंघातीं। स्तेपी का पूरा मैदान आग में उबलता। सिर्फ उसका दम-भर नहीं निकलता। हर तरफ बेजान सन्नाटा सायँ-सायँ करता। क्षितिज का नीला कब्रगाही दूह तक धुंधलेपन के सिरे पर इस तरह मंडराता, जैसे कि सपने में हो।

प्यारे-प्यारे स्तेपी··· तेज हवा घोड़ियों और स्टैलियनों की अयालों में उलझ रही है। घोड़ों के सूखे नथुने हवा से खारे हो रहे हैं। वे अपने रेशमी होंठ चबा रहे हैं और हवा और धूप के कारण हिनहिना रहे हैं। ···दोन नदी के ऊपर झूला झूलते आसमान के साये में पलनेवाले प्यारे स्तेपी···तुम्हारी तलहटियाँ लहरियादार हैं। घाटियाँ सूखी हैं। किनारे रतनारे हैं। फेदर घास के फैलाव में घोड़ों के खुरों के गहरे, काले निशान बुने हुए हैं। दूह बुद्धिमानी से सिर उठाए, चुपचाप खड़े कज्जाकों के विस्मृत और मृत यश की रक्षा कर रहे हैं।···दोन के कज्जाकों के स्तेपी प्रदेश, मैं तुम्हारा नमन करता हूँ। तुम्हारी मिट्टी आखों से लगाता हूँ।···यह मिट्टी खून से तर है, और यह खून ऐसा है, जिस में कभी जंग लगने वाला नहीं।

स्टैलियन का सिर साँप की तरह छोटा और पतला था। उसके कान चौरस और चचल थे। सीना भरा हुआ और चौड़ा था। पैर शानदार और मजबूत थे। खुर नदी के केकड़ों की तरह मुड़े हुए थे। पुट्ठे थोड़े ढलवाँ और मुलायम थे। पूंछ मोटी और जैसे तारों की थी। वह दोन-प्रदेश की असली नस्ल का घोड़ा था। उसकी नसों में खून की एक भी बूंद बाहर की न थी, और उसका पुश्तैनी सिलसिला हर चाल-ढाल और नाक-नक्श से साफ झलकता था। नाम उसका मलब्रुक था।

एक दिन पानी पीते समय अपनी घोड़ी का बचाव करने की कोशिश में वह एक दूसरे स्टैलियन से लड़ गया। दूसरा स्टैलियन उससे उम्र में बड़ा और कहीं मजबूत था। उसने घोड़ी के लिए लड़नेवाले स्टैलियन के एक पैर का हिस्सा, लात चला-चलाकर, बुरी तरह जख्मी कर दिया। फिर, दोनों

घोड़े एक-दूसरे को ढकेलते और एक-दूसरे पर दुलत्ती चलाते चले गए। दोनों ने एक-दूसरे को इस तरह काटा कि मांस नज़र आने लगा।

चरवाहा वहाँ न था। वह मैदान में सूरज की तरफ पीठ किए, गर्द से भरे जूतों वाले अपने पैर फैलाए आराम से सो रहा था।

ऐसे में दूसरे स्टैलियन ने मलब्रुक को पछाड़ दिया, और वह उसे उसके गिरोह से बहुत दूर खदेड़ ले गया। जब उसके बदन से खून बहने लगा तो उसने उसे छोड़ दिया, और दोनों गिरोहों पर अधिकार कर लिया।

घायल स्टैलियन अस्तबल में लाया गया। घोड़ा डॉक्टर ने उसके घायल पैर की मरहमपट्टी की। छः दिन बाद मिखाइल कोशेवोई एक रिपोर्ट लेकर वहाँ आया, तो उसने मलब्रुक को देखा। उसमें अपनी नस्ल को खत्म न होने देने की बलवती इच्छा लहरें मारती दीखी।

उसने अपना पगहा तुड़ाया, कूदकर बाहर आया, बैरक के अहाते में चरती घोड़ियों को घेरा, और पहले दुलकी और बाद में सरपट दौड़ाते हुए उन्हें स्तेपी में लाया। इस सिलसिले में जो घोड़ियाँ पीछे रह गई, उन्हें उसने दांत काट-काटकर आगे बढ़ाया। चरवाहे, ओवरसियर समेत बाहर आए, पर वे मजबूर थे। कर कुछ न सकते थे। घोड़ियाँ अपने-अपने पगहे तोड़कर रस्सियाँ भटकती-पटकती, उछलती-कूदती भाग गई थीं।

"भाड़ में जाए, गधे ने हमारी सवारी तक के लिए एक जानवर नहीं छोड़ा!" ओवरसियर ने आँखों से ओझल होते घोड़ों को एकटक घूरते हुए कहा।

दोपहर को मलब्रुक अपनी घोड़ियों को पानी पिला लाने को लाया। इस समय चरवाहों ने उसे घोड़ियों से अलगाया। मिखाइल ने उस पर ज़ीन कसी और उसे लाकर उसकी अपनी घोड़ियों वाले गिरोह में छोड़ दिया।

यहाँ की दो महीने की नौकरी में मिखाइल ने घोड़ों की चरागाही ज़िन्दगी का सावधानी से अध्ययन किया। वह उनकी समझदारी और इन्सानी बनावट से दूरी के प्रति आदर से भर उठा। उसने स्टैलियनों को घोड़ियों पर सवार होते देखा तो आदिम परिस्थितियों में यह आदिम हरकत उसे बहुत सहज, स्वाभाविक और अक्ल से भरी लगी। उसका मन अपने-आप इन घोड़ों की तुलना मनुष्यों से करने लगा, तो मनुष्यों का

पलड़ा हलका ही पड़ा। लेकिन, इसपर भी, घोड़ों के आपसी सम्बंधों में भी बहुत कुछ इन्सानियत घुली लगी। मिसाल के लिये मिखाइल ने बुढ़ाते स्टैलियन बाखर को देखा। बाखर घोड़ियों के मामले में आम तौर पर बड़ा रूखा, अक्खड़ और बेरहम था। पर, उसीने एक चार साल की, भूरी-लाल, माथे पर सितारे वाली, लौ देती आँखों की एक घोड़ी चुन ली और उसके साथ दूसरे ही ढंग का व्यवहार करने लगा। वह उसके साथ रहता तो बेचैन और अधीर नजर आता। वह उसके बदन पर साँसें छोड़ता तो खास ढंग से, हीसता तो संयम से, हालाँकि फिर भी वासना का आभास उसकी हीस में छुपा रहता। वह खड़ा होता तो अपना बड़ा-सा सिर अपनी प्रिय घोड़ी के पुट्ठे पर टिका देता और फिर घंटों ऊँघता रहता। उसकी चिकनी खाल के अन्दर मांसपेशियाँ रह-रहकर हिलती रहतीं। मिखाइल को लगता कि बाखर उस एक घोड़ी को खास किस्म का प्यार देता है, उसके इस प्यार में अपार आग के साथ ही साथ उदासी की भावना है, और यह एक बूढ़े आदमी का प्यार है।

मिखाइल अपना काम बड़ी मेहनत से करता। साफ है कि उसकी जीतोड़ मशक्कत ज़िले के अतामान तक से अनजानी न रही। सो अगस्त [illegible] कि ओवरसियर को आदेश मिला—कोशेवोई को व्येशेन्स्काया भेज दिया जाए।

मिखाइल तड़पड़ तैयार हो गया। उसने अपना सामान सहेजा और दिन शाम होते-होते व्येशेन्स्काया को चल पड़ा। उसने अपनी घोड़ी को [illegible] हाँका और सूरज डूबते-डूबते कारगिन से आगे निकल गया। वह पहाड़ी पर पहुँचा तो उसे एक गाड़ी व्येशेन्स्काया की दिशा में बढ़ती दिखलाई पड़ी।

गाड़ी हलकी-फुलकी कमानीदार थी। गाड़ी हाँकने वाला उक्रइन था और घोड़े बराबर दौड़ाए जा रहा था। घोड़े हट्टे-कट्टे, तन्दुरुस्त थे और मुँह से भाप छोड़ रहे थे। गाड़ी के अन्दर, पीछे की ओर एक शानदार-सा आदमी ओठंका हुआ था। आदमी के कंधे चौड़े थे। उसके बदन पर शहराती काट का कोट था और भूरा फेल्ट-हैट खोपड़ी के पिछले हिस्से पर जमा हुआ था।

मिखाइल ने, कुछ दूर तक, अपना घोड़ा गाड़ी के पीछे रखा। वह गाड़ी के चक्कों के साथ शानदार आदमी के कंधों की हरकत और उसके कॉलर की सफेद, धूल से भरी पट्टी देखता रहा। सफर का एक पीला थैला, और तहियाए ओवरकोट से ढका एक बोरा उसे मुसाफिर के पैरों के पास रखा दिखाई पड़ा। साथ ही सिगार की अनजानी महक से उसके नथुने भर उठे। अपनी घोड़ी को गाड़ी के बराबर लाते हुए उसने मन ही मन सोचा—'शायद कोई अफसर है, व्येशेन्स्काया जा रहा है। पर,' उसने कनखी से उस आदमी के टोप के छज्जे के नीचे का चेहरा देखने की कोशिश की तो उसके जबड़े जम गए और ताज्जुब और डर की एक लहर सिर से पैर तक दौड़ गई। गाड़ी में लेटा, सिगार का काला सिरा बेचैनी से चबाता, और अपनी हलकी, भयानक आँखें सिकोड़ता व्यक्ति स्तेपान अस्ताखोव समझ पड़ा। मगर मिखाइल को विश्वास नहीं हुआ। उसने अपने गाँव के साथी के परिचित, पर अजीब ढंग से बदल गए चेहरे पर दुबारा नजर डाली। बात ठीक निकली यानी व्यक्ति स्तेपान ही निकला। मिखाइल उत्तेजना से पसीने-पसीने हो उठा और खाँसते हुए बोला—"माफ कीजिए, आपका कुल-नाम अस्ताखोव तो नहीं है?"

इसपर गाड़ी में बैठे आदमी ने अपना टोप और पीछे की ओर सरकाया, मुड़ा और मिखाइल की ओर देखते हुए बोला—"है···मेरा कुल-नाम अस्ताखोव है···तो, तो क्या हुआ इससे? मगर···सुनो···तुम···तुम कोशेवाई तो नहीं हो?···" वह आधा उठा और होंठों-ही-होंठों मुस्कराते पर बाकी मुद्रा उसी तरह कठोर रखते हुए उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया, "तुम तो कोशेवोइ हो···मिखाइल! मुझे बड़ी खुशी हुई···" उसके चेहरे की खुशी में परेशानी मिली रही।

"लेकिन कैसे···तुम यहाँ कैसे?" मिखाइल ने रासें ढीली कर दी और अचरज से हाथ फैला लिए—"सुना तो यह था कि दुश्मनों ने तुम्हें मार डाला···और है ऐसा कि मैं तुम्हें सही-सलामत देख रहा हूँ···"

वह मुस्कराने लगा और काठी पर बैठे ही बैठे चचल हो उठा। स्तेपान के हाव-भाव और उसकी अर्ध-सभ्य आवाज ने उसे भ्रम में डाल दिया। उसे कोई अनदेखी दीवार-सी अपने और उसके बीच लगी, अतएव उसने

अपना स्वर नीचा कर लिया और दोस्ती का लहजा बदला।

दोनों बातें करने लगे। घोड़े साधारण चाल से रास्ते पर बढ़ते गए। सूर्यास्त का फूल पश्चिम में खिलने लगा और ट्यूलिप फूलों की तरह लाल बादल नीलम के आसमान की लहरों पर तैरते हुए रात के काजल में बदलने लगे। इसी समय सड़क के किनारे के जई के खेत में एक तीतर कीका। दिन की चहल-पहल और दौड़-धूप शाम की वीरानगी में बदली और गर्द-धूल से नहाए ही नहाए सन्नाटा बनकर स्तैपी पर उतरने लगी। तातारस्की और व्येशेन्स्काया को जाने वाली सड़कों को बाँटने वाला दूर का चौराहा बकइनी आसमान के साये में चमका।

"कहाँ से आ रहे हो, स्तेपान अन्द्रेइच ?" मिखाइल ने खुश होते हुए पूछा।

'जर्मनी से आ रहा हूँ···वापस आया हूँ अपनी धरती की गोद में···"

"लेकिन, हमारे कज्जाकों ने तो बताया कि उन्होंने तुम्हें मरते देखा··"

स्तेपान ने गम्भीरता के साथ, सोच-सोचकर इस तरह जवाब दिया, जैसे कि सवालों के बोझ से दबा जा रहा हो—बोला, "मैं दो जगह घायल हुआ ··जहाँ तक कज्जाकों की बात है, उनका क्या···? उन्होंने मुझे जहाँ का तहाँ छोड़ दिया···और मैं कैद कर लिया गया···जर्मनों ने मेरी मरहमपट्टी की और मुझे काम करने के लिए भेज दिया···"

"लेकिन, गाँव में तुम्हारी चिट्ठी-पत्री भी तो कभी किसीके पास नहीं आई···"

"कौन लिखता मेरी तरफ से ?" स्तेपान ने सिगार का बचा हुआ सिरा फेंका और दूसरा जलाया।

"मगर, और किसीको नहीं तो, अपनी बीवी की तो कभी खोज-खबर लेते···वह जिन्दा है और ठीक-ठाक है···"

"पर, मैं तो उसके साथ रहता नहीं था···मेरा खयाल है कि यह बात किसीसे अनजानी नहीं रही···"

उसकी आवाज सूख-सी चली। सारा उत्साह बुझा-सा लगा। परन्तु,

पत्नी के ज़िक्र मे स्तेपान को जैसे कोई परेशानी नही हुई।

"इस तरह इतनी दूर रहने पर तुम्हे अपने गाँव-घर की याद नही आई ?" मिखाइल ने आगे की ओर झुकते हुए उत्सुकता से पूछा और जैसे काठी के अगले हिस्से पर बिछ गया।

"आई···पहले गाँव-घर की बहुत याद आई, लेकिन फिर दूर रहने की आदत पड गई।" एक क्षण ठिठककर बोला, "मैं तो जर्मनी मे करीब-करीब बस गया था और वहाँ का नागरिक बन गया था। पर, फिर घर आने की हसरत ने ज़ोर पकड़ा तो सब छोड़-छाडकर चल दिया।"

स्तेपान की आँखों के कोनों की झुर्रियाँ पहली बार ढीली पडी और वह मुस्कराया—"ज़रा देखो कि हम लोग यहाँ कैसे दलदल मे फसे पड़े हैं··· आपस मे ही लडे-मरे जा रहे हैं।"

"हाँ, सुनता तो मैं भी ऐसा ही हूँ।"

"लेकिन, तुम यहाँ तक पहुँचे कैसे ?"

"फ्रास से यानी फ्रांस के मार्सेलीज़ नाम के शहर मे नाव से नोवोरो-सिस्क पहुँचा···"

"तुम्हे फिर लाम पर जाना पडेगा क्या ?"

"शायद भेजा जाए···गाँव की खबर क्या है ?"

"खबरें इतनी है कि बताना चाहूँ तो भी मैं तुम्हे बता नही सकता··· कितना ही कुछ हो गया है।"

"मेरा घर अभी साबुत है ?"

"हवा चलती है तो हिलता है···"

"पडोसी कैसे हैं ? बूढ़े मेलेखेव के लडके ज़िन्दा है अभी तक ?"

"हाँ, ज़िन्दा है···"

"तुमने मेरी पहले की बीवी के बारे में कुछ सुना ?"

"वह अभी तक यागोदनोये में ही रहती है···"

"और, ग्रिगोरी···उसके साथ ही रह रहा है ?"

"नहीं, उसने कायदे से शादी कर ली है, और अक्सीन्या को छोड़ दिया है।"

•

"···यह मुझे अभी तक पता ही नहीं था।"

एक मिनट तक दोनों शांत रहे। कोशेवाई स्तेपान को उसी तरह सिर से पैर तक परखता रहा। फिर अपनी राय को वाणी देते हुए बोला, "लगता है कि काफी आराम से रहे हो, स्तेपान अन्द्रेइच ? तुम्हारे कपड़े ऐसे हैं जैसे रईसों के होते हैं।"

"वहां तो हर आदमी कायदे के कपड़े पहनता है।" स्तेपान ने भौंहें चढ़ाईं, और कोचवान के कंधे पर हाथ मारा, "जरा घोड़े बढ़ाओ, मेरे भाई !"

कोचवान ने उदासी से चाबुक नचाया तो घोड़ों ने थकने पर भी, लाख मन न होने पर भी अपनी चाल तेज़ की। गाड़ी हिचकोले खाने लगी और बातचीत भी जल्दी ही खत्म होने को आ गई, क्योंकि स्तेपान मीशा की तरफ पीठ करते हुए बोला—"गांव जा रहे हो ?"

"नहीं, मैं ज़रा ज़िले के अतामान के यहां जा रहा हूं।"

चौराहा आने पर मिखाइल दाईं ओर को मुड़ा और रकाबों पर मचकर खड़े होते हुए बोला—"अच्छा, फिर मुलाकात होगी, स्तेपान अन्द्रेइच !"

स्तेपान ने अपनी भारी उंगलियों में गर्द-भरा टोप छुआ और शब्द-शब्द पर ज़ोर देते हुए इस तरह उदासीन भाव से बोला, जैसे कि परदेसी हो, "दोब्रेद्येन (गुड-डे) !"

: ७ :

सामने का रास्ता फिलिनोवो को पोवारिनो से जोड़नेवाली रेखा में बँधा हुआ था। लालसेना के लोग फौजें जमा कर रहे थे और जवाबी हमले की कोशिश में दाँत भींच रहे थे। कज्जाकों के पास गोला-बारूद की बड़ी कमी थी, इसलिए उनकी तैयारी की रफ्तार धीमी थी और वे प्रदेश की सीमाओं के अन्दर ही अन्दर बने रहना चाहते थे। सफलता कभी इस तरफ नज़र आने लगती थी तो कभी उस तरफ। अगस्त में लड़ाई के मोर्चों पर पहले के मुकाबले में मारकाट कम हुई थी और थोड़े दिनों की छुट्टी पर घर लौटनेवाले कज्जाक यह कहते सुने गए थे कि शायद शरद् में समझौता

हो जाए।

इस बीच पीछे के इलाकों में फसलों की कटाई होने लगी तो मजदूरों की कमी खटकी। बूढ़ों और औरतों के सम्हाले कटाई का काम सम्हलता न लगा। उन्हें अपने काम में बाधा का अनुभव ऊपर से हुआ, क्योंकि फौजी सामान और रसद मोर्चों तक पहुँचाने के लिए गाड़ियाँ और घोड़े जब-तब ही ले लिए गए। लगभग हर दिन ही तातारस्की की पाँच या छः गाड़ियाँ व्येशेन्स्काया भेजी जाती। वहाँ उनपर फौजी सामान लादा जाता और उन्हें कज्जाकों वाले लड़ाई के इलाकों को रवाना कर दिया जाता।

गाँव में जिन्दगी तो मिलती, पर उसमें ज्यादा जान नजर न आती। सभी के दिमाग में दूर मोर्चे के खयाल नाचते रहते। हर आदमी कज्जाकों से सम्बन्ध रखनेवाली खबरों की टोह में रहता। उसके मन में एक काँटा-सा खटकता रहता कि कौन जाने क्या हो! ऐसे में अस्ताखोव आया तो लोगों के बीच एक हलचल-सी पैदा हो गई।

क्या झोंपड़ी और क्या खलिहान, हर जगह लोगों के होंठों पर एक ही बात की चर्चा मिलने लगी।···जरा सोचिए, एक ऐसा कज्जाक लौटकर घर आया, जिसे एक जमाने पहले बिना कफन जमीन में दफन मान लिया गया था, जिसका खयाल अब सिर्फ गाँव की बूढ़ी-सयानियों को था, और जिसको याद करके वे बूढ़ी-सयानियाँ भी कहती थीं, "ईश्वर उसकी आत्मा को शांति दे"—कहिए, हुआ न चमत्कार! ···

स्तेपान अनीकुश्का के दरवाजे पर रुका और अपनी चीजें अन्दर ले आया। फिर अनीकुश्का की पत्नी उसके खाने-पीने की व्यवस्था में लगी कि वह अपने घर आया। मालिकाने हक में उसने चाँदनी से धुले अहाते में इधर-उधर चक्कर लगाए, अधगिरे शेडों की छतों के नीचे चहलकदमी की, घर की हालत देखी-समझी और जंगले हिला-हिलाकर देखे। इस बीच अनीकुश्का के यहाँ तले हुए अंडे मेज पर रखे-रखे ठंडे हो गए। लेकिन स्तेपान था कि अपनी उँगलियाँ चटखाते और अपने-आप बुदबुदाते हुए पूरा घर सहेजता रहा। घर में जहाँ-तहाँ घास उगी नजर आई।

उसी शाम तमाम कज्जाक उससे मिलने आए और उसके वंदी जीवन

के बारे में तरह-तरह की पूछताछ करने लगे। भ्रनीयुश्का का आगेवाला कमरा औरतों से ठसाठस भर गया। मर्द इतने जमा हुए कि ठोस दीवार-सी बन गई। उन्होंने स्तेपान के किस्से सुने तो उनके मुंह आश्चर्य से फैले-के-फैले रह गए। उसने जो कुछ बताया, सकुचाते हुए बताया। बुढ़ापे के सांचे में ढलते उसके चेहरे पर एक बार भी मुस्कान नहीं दौड़ी। लगा कि जिन्दगी ने उसे पूरी तरह बदलकर रख दिया है।

दूसरे दिन सवेरे स्तेपान अभी सो ही रहा था कि पंन्तेली मेलेखोव उससे मिलने आया। बूढ़ा मुंह पर हाथ रखकर खांसा और उसके उठ जाने की राह देखने लगा। मिट्टी के नम फर्श की गमक, तम्बाकू की दम घोटनेवाली तेज़ बास और एक खास तरह की महक कमरे से आती रही। यह खास महक सड़कों पर बराबर घूमते रहनेवाले आदमी के बदन में एक ज़माने तक लिपटी रहती है।

जल्दी ही पता लगा कि स्तेपान सोकर उठ गया है। उसने सिगार पीने के लिए दियासलाई जलाई।

"मैं अन्दर आ जाऊँ?" पंन्तेली ने पूछा, और अपनी कमीज़ की सलवटें इस तरह बराबर कीं, जैसे कि किसी बड़े अफसर के सामने जा रहा हो। कमीज़ यह नई थी और इलीनीचिना की बड़ी ज़िद पर वह इसे इस मौके पर पहनकर आया था।

"आ जाओ···"

स्तेपान, सिगार का धुआँ उड़ाते और धुएँ से बचाव के लिए आँखें दबाते हुए कपड़े पहनने लगा। पंन्तेली ने जरा घबड़ाते हुए ड्योढ़ी के पार कदम रखा, स्तेपान के बदले हुए नाक-नक्श और पतलून के गेलिस के धातु के बक्सुओं को देखकर आश्चर्य में पड़ गया, और रुककर अपनी काली हथेली आगे बढ़ाते हुए बोला—"दोब्रेऊत्रा (गुड मॉनिंग)! ···तुम्हें सही-सलामत देखकर बड़ी खुशी हुई···"

"दोब्रेऊत्रा!"

स्तेपान ने गेलिस अपने भरे हुए कंधों से नीचे खींचे और जरा शान के साथ बूढ़े से हाथ मिलाया। अब दोनों ने एक-दूसरे को भर-आँख देखा। स्तेपान की आँखों से नफरत की चिनगारियाँ फूटीं। पर बूढ़े की ऐंची-तानी

आँखों की निगाहों मे नज़र आई इज्ज़त, और व्यग्य मे भरा हलका-सा कुतूहल।

"सयाने हो गए हो···अब तो सयाने लगने लगे हो बेटे!"

"हाँ, अब तो उम्र भी हुई···"

"हमने तो तुम्हें मर गया मानकर फ़ातिहा तक पढा···ऐसा ही कभी ग्रीशा के मामले मे हुआ था···" बूढे ने दास्तान कहनी शुरू की, पर परेशानी मे स्वर टूट गया। सोचने लगा, वह बात याद करने का शायद यह वक्त नही। सो, उसने अपनी गलती ठीक करने की कोशिश की—"अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है कि तुम ज़िन्दा हो और ठीक हो···अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है···हमने तो फ़ातिहा ग्रीशा की मौत पर पढ डाला था। पर वह तो 'लजारस' की तरह सही-सलामत उठ खडा हुआ। अब उसके अल्लाह के दिए दो बच्चे हैं···उसकी बीबी नताल्या भी पहले से कही अच्छी है···बडी अच्छी औरत है···और हाँ, तुम्हारे हालचाल क्या हैं?"

"सासा अच्छा हूँ···शुक्रिया!"

"आओ···अपने पडोसियों के घर का तो एक चक्कर लगा आओ···इज्ज़त बख्शो हमे भी···वहाँ बातें भी होंगी।"

स्तेपान ने पैन्तेली के यहाँ जाने से इनकार किया, पर जब बूढा बार-बार कहने और बुरा मानने लगा तो आखिरकार उसे उसकी बात माननी पडी। उसने मुँह-हाथ धोया और कायदे से कटे बाल सँवारे। बूढा बोला—"तुम्हारा बालों का आगे का लच्छा क्या हुआ···काट फेंका?" इस पर स्तेपान मुस्करा उठा। इसके बाद उसने आत्मविश्वास के साथ सिर पर टोप रखा, और पैन्तेली के आगे-आगे अहाते मे आया।

पैन्तेली ने इतनी अपनायत का व्यवहार किया कि स्तेपान को ख्याल आया—'शायद पुरानी गलती बराबर करने की कोशिश कर रहा है, बूढा!'

उधर, पति के अनकहे हुक्म पर बावर्चीखाने मे 'यह कर, वह कर' मे लगी इलीनीचिना ने, नताल्या और दून्या को इधर-उधर दौडाना शुरू किया, और खुद मेज़ लगाई। औरतों ने जब-तब ही स्तेपान की ओर देखा और उनकी निगाहे उसके कोट, कोट के कॉलर, घडी की चाँदी की

चेन और बालों की गैर-मामूली काट पर फिसली। कई बार उन्होंने निगाहें बचाकर एक-दूसरे को देखने की कोशिश की, पर चोरी इतनी चोरी रही नहीं और आश्चर्य से भरी मुस्कान उनके होंठों पर दौड़ गई। इतने में कुछ अजीब ढंग से मुस्कराती और ऐप्रन के सिरे से अपने होंठों के किनारे पोंछती दार्‌या अन्दर आई। उससे अपनी आँखें सिकोड़ीं—"अरे स्तेपान, मैंने तो तुम्हें पहचाना ही नहीं। तुम तो अब जैसे कज्ज़ाक लगते ही नहीं।"

पैन्तेली ने समय न खोना चाहा। उसने घर की बनी वोद्का की बोतल निकाली, उसका काग अलग किया और तेज़ मीठी गंध का मज़ा लेते हुए उसकी तारीफ करनी शुरू की—"ज़रा चखो इसे···खुद मैंने बनाई है···ऐसी है कि दियासलाई लगा दो इसमें तो आग की नीली लपटें उठने लगें!"

स्तेपान पहले तो हिचका, पर एक गिलास चढ़ाने के बाद वह जमकर पीने और उसी अनुपात में बक-बक करने लगा। पैन्तेली ने कहा—"क्यों, अब तुम्हें शादी कर लेनी चाहिए!"

"शादी तो कर लूँ, मगर फिर अपनी पहली बीवी का क्या करूँ?"

"हटाओ भी···उसका···अब ज़िक्र क्या? तुम्हारा ख्याल है कि वह अब तक जैसी की तैसी होगी? बीवी घोड़ी की तरह होती है···जब तक मुँह में दाँत रहेंगे, तभी तक सवारी के काम आएगी···और हम लोग तुम्हारे लिए कोई कमउम्र, जवान औरत तलाश कर देंगे।"

"ज़िन्दगी आजकल बड़ी उलटी-सीधी है···यह निकाह-शादी का वक्त नहीं है···मैं दस दिन की छुट्टी पर घर आया हूँ। इसके बाद मैं व्येशेन्स्काया जाऊँगा और फिर वहाँ से मेरा खयाल है कि लाम के लिए रवाना हो जाऊँगा।" स्तेपान ने जवाब दिया और फिर ज्यों-ज्यों नशा चढ़ता गया, बोलचाल का विदेशी लहजा बदलता गया।

इसके बाद वह जल्दी ही चला गया और अपने साथ लेता गया अपने ऊपर जमी दार्‌या की तारीफ से सिंची निगाहें। पीछे छोड़ता गया बेकार की बातें और बेमतलब बहस।

"कितना लिख-पढ़ लिया है इस कुत्ते के बच्चे ने! कैसी बातें करता

है ! बिल्कुल एक्साइज अफसर या कोई रईस लगता है। मैं उससे मिलने गया तो वह बक्सुओं वाली रेशमी पट्टियाँ कंधों पर खींच रहा था। सच मानो, उसकी पीठ और उसका सीना घोड़े की पीठ और सीने की तरह कसा हुआ था। अब तो बिल्कुल तमीज़दार आदमी लगता है, कम्बख्त !" पैन्तेली ने सराहना-भरे स्वरों में फतवा दिया और अभिमान से ऐंठ-सा उठा कि स्तेपान ने उसकी खातिर मंजूर कर ली और पुरानी तकरार भुला दी।

फिर, लोगों ने दो और दो जोड़कर चार बनाए और निष्कर्ष निकाला कि स्तेपान लड़ाई के बाद आकर गाँव में रहेगा और अपने लिए झोंपड़ी और फार्म नये सिरे से बना लेगा। स्तेपान ने बात-बात में कहा भी तो था कि मेरे पास साधन हैं। बस, तो इसी आधार पर पैन्तेली ने अपनी कटबैठी बैठाली और उसका आदर-सा करने लगा।

स्तेपान ने अपने इने-गिने दिन अनीकुश्का की झोंपड़ी में बिताए और मुश्किल से ही किसीने उसे कहीं देखा। इस बीच पड़ोसियों ने उस पर निगाह रखी, उसकी हरकत का हिसाब रखा और अनीकुश्का की पत्नी से जिरह की कि आखिर वह करना क्या चाहता है। परन्तु औरत न जो होंठ सिए तो फिर मुँह खोलकर न दिया, और अगर कहा तो यह कहा कि मैं क्या जानूँ ? फिर, उसने मेलेखोव से घोड़ागाड़ी किराये पर ली और शनिवार के दिन तड़के ही गाँव से चल पड़ी तो तरह-तरह की अफवाहें देखते-देखते गाँव-भर में फैल गईं। कोई न समझा कि वह गई कहाँ ? सिर्फ पैन्तेली ने दूर से सूँघा और लंगड़ी घोड़ी को कसते हुए इलीनीचिना की तरफ आँख मारकर बोला—"हो-न-हो, यह औरत अक्सीन्या के पास गई है।" और सचमुच उसने बिल्कुल ठीक समझा था। स्तेपान ने उसे भेजा था कि यागोदनोय जाओ और अक्सीन्या से कहो कि जो हुआ सो हुआ। अब उसे दरगुज़र करे।

उस दिन स्तेपान का अपने ऊपर कोई काबू न रहा और उसका मानसिक सन्तुलन पूरी तरह गड़बड़ाया लगा। वह गाँव-भर में जहाँ-तहाँ भटकता रहा। बीच में वह बहुत देर तक मोखोव के घर की सीढ़ियों पर बैठा उसे जर्मनी की अपनी जिन्दगी की दास्तानें सुनाता रहा। पूरी

कहा न कहा गया कि काम में होने हुए, वह समुद्र के रास्ते कैसे घर आया। पर खुद बातें करते समय या मोरोव की बातें सुनते वक्त वह रह-रहकर बीच-बीच में उत्सुकता और चिन्ता से अपनी घड़ी देखता रहा।

अनीकुश्का की पत्नी रात होते-होते वापस आ गई और गर्मी के बावर्चीखाने में खाना पकाते-पकाते स्तेपान को बताने लगी—"अक्सीन्या तो चौंक उठी बिल्कुल और सवाल पर सवाल करने लगी। मगर लौटने से उसने साफ इनकार कर दिया।"

अपनी तरफ से बोली—"वह अब क्या लौटेगी भला! रईस घरों की औरतों की तरह रहती है···खूब चिकना गई है, और चेहरा एकदम गोरा-चिट्टा हो गया है।···किसी काम को हाथ लगाना नहीं पड़ता। और भला चाहिए क्या? कपड़े तो ऐसे पहनती है कि देखो तो तुम्हारी आँखों को यकीन न आए! आज छुट्टी का नहीं, काम का दिन था, मगर उसने बर्फ की तरह साफ स्कर्ट पहन रखी थी और उसके हाथ में कहीं नाम को भी कोई दाग नहीं था।" उसने डाह से लम्बी आह भरी।

स्तेपान के गालों पर आग दौड़ी। आँख से क्रोध की चिनगारियाँ ठंडी पड़ गईं। उसने अपना काँपता हुआ हाथ स्थिर किया, बर्तन से एक चम्मच दही निकाला और सोच-समझकर धीरे-धीरे सवाल करने शुरू किए।

"उसे यह ज़िन्दगी पसन्द है?"

"पसंद भला क्यों नहीं होगी! इस तरह ऐश-आराम से रहना किसे बुरा लगता है।"

"लेकिन, उसने मेरे बारे में तुमसे कुछ पूछा?"

"क्यों नहीं···ज़रूर पूछा···और···मैंने जब तुम्हारे लौट आने की बात कही तो वह चादर की तरह सफेद पड़ गई।···"

शाम का खाना खाने के बाद स्तेपान बाहर निकलकर अहाते में आया। अहाते में जहाँ-तहाँ घास उगी हुई थी। दिन में अगस्त के महीने की परछाइयाँ आतीं और जल्दी ही मुरझा जातीं। नम रात की तरी के बीच मशीनों की आवाज़ें आतीं। पीले, दाग-दगीले चाँद की रोशनी में कटाई की दौड़-धूप चलती। दिन में अनाजों के अम्बार गाहे जाते और इस

समय ओसाई के बाद पत्तियों को ले जाए जाते। भूसे से भरी धूल और नये, ओसाए गए गेहूँ की जलती हुई तेज़ महक गाँव को घेरे रहती। ऐसे में आज चौक के पास कहीं ओसाई की मशीन घड़घड़ाती रही और कुत्ते भूँकते रहे कि दूर के खलिहानों से गाने के स्वर उभरे। दोन से नमी का एक ताजा बादल उमड़ा।

स्तेपान ने जंगले की टेक लगाई और सड़क-पार के दोन के प्रवाह को, और चाँदनी की बदमिज़ाजी के शिकार धार-पार चक्करदार रास्ते को एकटक देखता रहा। नदी के निचले हिस्से में नन्ही-नन्ही, घुँघराली लहरियाँ लहराती रहीं। दूर चिनार के पेड़ औंधाते और आराम करते रहे। ऐसे में स्तेपान का मन जो कलपा और बेहोश हुआ तो फिर हाथ न आया···।

सुबह तड़के पानी बरसा, परन्तु सूर्योदय के बाद आसमान साफ हो गया। दो घंटे बाद बरसात की याद दिलाने को बचा गाड़ी के पहियों से लिपटा आधा गीला कीचड़, और बस! थोड़ा दिन चढ़ा तो स्तेपान घोड़े पर सवार होकर यागोदनोये को रवाना हो गया। वहाँ पहुँचा तो मन धुकपुक करने लगा। अब उसने अपना घोड़ा फाटक पर छोड़ा और खुद चोरों की तरह नौकरों के क्वार्टरों की ओर तेज़ी से लपका। लम्बा-चौड़ा घासवाला मैदान वीरान मिला। अस्तबलों के पास चूजे लीद में जहाँ-तहाँ चोंच मारते दीखे। कौए की तरह काला एक मुर्गा गिरे हुए जंगले के पास चहलकदमी करता नजर आया। सो, मुर्गियों को आवाज़ देते हुए वह यों बना जैसे कि काली चित्तियोंवाले बादामी भौंरों पर चोंचें चला रहा हो। चिकनी, मुलायम कुतिया गाड़ीखाने की छाया में पड़ी रही। चितकबरे पिल्लों ने उसे गिरा दिया और दूध पीने में जुट गए। तेज़ी से पैर रह-रहकर चलाने लगे, ऊपर से। घर की टीन की छत के छायादार हिस्से में ओस की बूँदें चमचमाती रहीं···।

स्तेपान चारों ओर देखते हुए नौकरों के क्वार्टरों में दाखिल हुआ और भारी-भरकम बावर्चिन से बोला—"अक्सीन्या से मुलाकात हो सकती है?"

"लेकिन, तुम हो कौन?" लुकेरिया ने अपना पसीने से तर, दागदार चेहरा ऐप्रन के सिरे से पोंछते हुए पूछा।

"इससे तुम्हें मतलब···मैं पूछता हूँ कि अक्सीन्या कहाँ है ?"

"वह तो मालिक के पास है···रुको !"

स्तेपान घुटनों पर टोप रखकर बैठ गया। उसके चेहरे की मुद्रा से अटूट थकान टपकी। बावर्चिन अब बिना उसकी ओर ध्यान दिये अपने काम में लगी रही। कमरे में दही की खटास के साथ गरमी के भभके उठते रहे। स्टोव, दीवारों और आटे से नहाई मेज पर मक्खियाँ जैसे कोई छिड़कता रहा। स्तेपान उत्सुकता से आहट लेता इन्तज़ार करता रहा कि अक्सीन्या की जानी-पहचानी चाल की आवाज उसके कानों में पड़ी। वह चौंक उठा और उठकर खड़ा हुआ तो टोप घुटनों से नीचे गिर गया।

अक्सीन्या ढेर की ढेर तश्तरियाँ लिए कमरे में आई। स्तेपान को देखते ही उसका चेहरा मौत की तरह जर्द पड़ गया, और उसके होंठ के सिरे फड़कने लगे। बेचारगी से तश्तरियों को अपने सीने से सटाए वह ठिठकी और उसकी घबड़ाहट से नहाई निगाहें स्तेपान के चेहरे पर जम गईं। फिर किसी तरह वह जगह से हटी, तेज़ी से मेज की तरफ लपकी, तश्तरियाँ वहाँ रख दीं और बोली, "दोब्रेऊत्रा (गुड-मौनिंग)!"

इस बीच स्तेपान इस तरह धीरे-धीरे साँसें लेता रहा जैसे कि नींद में हो। तनाव से भरी एक मुस्कान उसके होठों के बीच रेखा-सी खींचती रही कि वह, बिना मुँह से कुछ कहे आगे की तरफ झुका और उसने अपना हाथ अक्सीन्या की ओर बढ़ा दिया।

"मेरे कमरे में आओ···" अक्सीन्या ने दावत दी और कमरे की ओर इशारा किया।

स्तेपान ने अपना हैट इस तरह उठाया, जैसे कि उसमें बड़ा बोझ हो। खून उसके दिमाग में दौड़ने और उसकी आँखों के आगे पर्दा डालने लगा। फिर, वे दोनों कमरे में पहुँचकर आमने-सामने बैठे तो अक्सीन्या ने अपने खुश्क होंठ चाटते हुए पूछा—"तुम कहाँ से आ गए ?"

स्तेपान ने खुशी जताने की झूठी कोशिश की और अपना हाथ यों हवा में लहराया, जैसे कि पिए हुए हो। दर्द और प्रसन्नता से नहाई मुस्कान अब भी उसके होठों पर खिली रही।

"मैं आ रहा हूँ जर्मनी की जेल से···मैं तुमसे मिलने आया हूँ, अक्सीन्या!···"

स्तेपान ने भद्दे ढंग से जेब में कुछ खखोड़ा, एक छोटा-सा पैकेट बाहर निकाला, हड़बड़ाते हुए ऊपर का कागज़ फाड़ा, उसमें से निकाली एक ज़नानी घड़ी और सस्ते नीले नग की एक अँगूठी, और अपनी हथेली पर रखकर दोनों चीज़ें अक्सीन्या की ओर बढ़ाईं। पर औरत की निगाह उसके अपरिचित-से चेहरे पर उसी तरह जमी रही और उसके होंठों पर वैसी ही फटी-फटी-सी मुस्कान बिखरी रही।

स्तेपान बोला, "लो···यह घड़ी और अँगूठी मैं तुम्हारे लिए रखे रहा हूँ···हम साथ-साथ रहे हैं···"

"मुझे क्या करना है इन चीज़ों का ? रख लो अपनी जेब में।" औरत ने धीमी आवाज़ में कहा।

"लो···तुम्हारे लिए लाया हूँ···मुझे नफरत की निगाह से मत देखो···और अब हमें अपना पुराना पागलपन खत्म करना चाहिए।"

जैसे अपना बचाव करने के लिए उसने अपना हाथ उठाया, खुद उठी और स्टोव के पास चली आई। "लोगों ने तो तुम्हारी मौत की खबर उड़ा दी थी···"

"और अगर मैं मर गया होता तो क्या तुम्हें खुशी होती ?"

अक्सीन्या ने कोई जवाब नहीं दिया, पर अपने पति को और शांत भाव से सिर से पैर तक देखा और ज़रूरत न होने पर भी अपने स्कर्ट की चुन्नटें ठीक कीं। स्कर्ट पर बड़ी ही होशियारी से लोहा किया गया था।

फिर हाथ सिर के पीछे रखते हुए बोली, "तुमने अनीकुश्का की बीवी को मेरे पास भेजा था ? उसने कहा कि तुम चाहते हो कि मैं वापस लौट जाऊँ और फिर से तुम्हारे साथ रहूँ।"

"हाँ, लौट चलो तुम···क्या खयाल है ?"

"नहीं," अक्सीन्या की आवाज़ सख्त हो उठी, "नहीं, मैं अब नहीं लौटूँगी।"

"आखिर क्यों ?"

"मुझे अब उस तरह रहने की आदत नहीं रही···इसके अलावा यह भी है कि देर हो चुकी है···बहुत देर हो चुकी है।"

"लेकिन, मैं अपना फार्म नये सिरे से जमाना चाहता हूँ। जर्मनी से लौटा तो पूरे रास्ते इसी बात सोचता रहा।···अक्सीन्या, आखिर तुम करोगी क्या? ग्रिगोरी ने तुम्हें छोड़ ही दिया है···वैसे इस बीच तुमने कोई दूसरा मर्द खोज लिया हो तो और बात है···मैंने सुना तो है कुछ तुम्हारे और तुम्हारे मालिक के बेटे को लेकर···जो कुछ मैंने सुना है क्या वह सब ठीक है?"

अक्सीन्या के गाल सुलगने लगे और शर्म से आँखें डबडबा आईं, "जो कुछ तुमने सुना है, वह ठीक है। उसने मुझे रख छोड़ा है।"

"यह मत समझो कि मैं तुम्हारी लानत-मलामत कर रहा हूँ।" स्तेपान ने अपने को साधा, "मेरा मतलब यह था कि हो सकता है कि अभी तक तुमने अपनी ज़िन्दगी को लेकर कोई फैसला न किया हो। ऐसी हालत में···तुम्हारे मालिक का यह लड़का हमेशा तो तुम्हारे साथ रहेगा नहीं···वह तो खिलवाड़ कर रहा है तुमसे···तुम्हारी आँखों के आसपास झुर्रियाँ भी नजर आने लगी हैं···बस तो, उसका जी तुमसे भरा कि उसने तुम्हें दूध की मक्खी की तरह निकालकर फेंका और यहाँ से निकाल बाहर किया! तब···तब कहाँ जाओगी तुम?···गुलामी से तुम्हारी तबियत नहीं भरी अब तक? सोच देखो···मैं रकम लाया हूँ अपने साथ और लड़ाई खत्म होते ही आराम से रह सकेंगे हम लोग। मेरा खयाल था कि शायद फिर हम एकसाथ रह सकते! और जो कुछ हुआ, हो गया, उसे अब मैं भूल जाना चाहता हूँ।"

"यह बात तुमने इसके पहले क्यों नहीं सोची?" उसने जरा सिहरते हुए, आँसुओं के बीच मुस्कान पिरोते हुए कहा। इसके बाद वह स्टोव के पास से सीधे मेज के किनारे आ खड़ी हुई—"और क्या था तुम्हारे दिमाग में तब जब तुमने मेरी जवानी मिट्टी में मिलाकर रख दी थी? तुमने मजबूर कर दिया मुझे कि मैं जाऊँ और ग्रीशा के सीने से लग जाऊँ! तुमने मेरा दिल छलनी करके छोड़ दिया! तुम्हें खयाल है कि तुमने क्या-क्या किया मेरे साथ?"

"मैं गिले-शिकवे के लिए तो यहाँ आया नही···तुम···तुम क्या जानो कि मैंने कितना सिर धुना है, और कितना दर्द उठाया है !" स्तेपान ने मेज पर फैले अपने बाजुओं पर निगाह जमाई और इस तरह धीरे-धीरे बोलने लगा, जैसे कि शब्द मुँह के अन्दर से उखाड़-उखाड़कर ला रहा हो—"मुझे तुम्हारी याद बराबर आती रही···मेरा खून पानी हो गया···क्या दिन और क्या रात, कब ऐसा हुआ कि तुम्हारा खयाल नही आया ! वहाँ एक जर्मन विधवा के साथ रहता रहा···आराम से रहा—सब कुछ ठीक रहा, पर मैंने उसे छोड़ दिया···अपने गाँव-घर को लौटने को मेरा जी कलपने लगा !···"

"और अब तुम चाहते हो चैन की जिन्दगी बसर करना ?" अक्सीन्या ने पूछा, तो आवेश से उसके नथुने काँपने लगे—"अब तुम चाहते हो फार्म, खेतीबाडी, बाल-बच्चे, और एक बीवी, जो तुम्हारे कपड़े रगड़-रगड़कर साफ करे, धोए, तुम्हे खाना बनाकर खिलाए···है न ?" उसकी मुस्कान में कटुता घुली—"नही···यह मुझसे नही होगा···ईसा बचाए मुझे इससे ! फिर मैं बूढ़ी हो गई हूँ···मेरे चेहरे पर झुर्रियाँ नजर आती हैं तुम्हें···बच्चे पैदा करना तो जैसे मैं भूल ही गई हूँ···मैं किसीकी रखेल हूँ और रखेल के बच्चे होने नहीं चाहिए···ऐसी औरत तुम चाहते हो··· आखिर क्यों ?"

"तुम खासी तेज हो गई हो !"

"अब मैं जैसी भी हूँ, हूँ।"

"तो, तुम इनकार करती हो ?"

"हाँ, मैं इनकार करती हूँ···मैं वापस नहीं जाऊँगी···मैं नहीं लौटूँगी !"

"खैर, तो अलविदा···" स्तेपान उठा। उसने घड़ी अनिश्चय से अपने हाथ में उलटी-पलटी, और दुबारा मेज पर रख दी। बोला—"सोचना··· अगर इरादा बदले तो कहला देना।"

अक्सीन्या ने उसे दरवाजे तक पहुँचाया और एकटक देखती रही। स्तेपान की गाडी और पहियों से उड़ती धूल ने उसके कधों को ढँक लिया।

औरत आंसू बहाती अपने मन की खीझ से उलझती और हल्के-हल्के

सिसकती रही। उसे जैसे लगा कि उसकी उम्मीदें खाक में मिल गई और उसकी जिन्दगी एक बार फिर हाथ से बेहाथ हो गई। वैसे येव्गेनी की ओर से जवाब पाने के बाद जब उसने अपने पति के लौटने की बात सुनी थी तो सोचा था कि मैं उसके पास लौट जाऊँगी, और अब तक की दुर्लभ सुखों के टुकड़ों को एक-एक कर जोड़ने की कोशिश करूँगी। और इसी इरादे से उसने उसका इन्तज़ार भी किया था। पर, पति ने आने पर जिस तरह उसे नीचा दिखाना और उसका अपमान करना चाहा था, उससे उसका स्वाभिमान आहत हो उठा था, उसने उसके दिल और दिमाग को पूरी तरह घेर लिया था और वह ऐंठ गई थी। इस स्वाभिमान ने ही योगादनोये में उसे तिरस्कृत होकर एक किनारे पड़े रहने नहीं दिया था। सो, स्तेपान के सामने वह जो जी में आया सो कहती और जैसा-तैसा व्यवहार करती गई थी। वह अपने मन के शैतान पर काबू नहीं पा सकी थी। उसे पिछली जिन्दगी की जलालत का ध्यान हो आया था, और याद आ गया था कि इस आदमी के हाथों उसे किस-किस तरह की और कितनी-कितनी सख्तियाँ सहनी पड़ी थीं। यानी यह कि वह स्वयं अन्यथा चाहती थी और अपने मुंह से निकलते हर शब्द पर आशंका से सिहरती जा रही थी। इसपर भी हाँफते हुए उसने बिच्छुओं की तरह डंक-सा मार दिया था और कह दिया था—"नहीं, मैं वापस नहीं जाऊँगी···मैं नहीं लौटूँगी।"

सो, दूरी में खोती गाड़ी को उसने फिर नज़रें गड़ाकर देखा। दूसरी ओर, स्तेपान ने अपना चाबुक नचाया और सड़क के किनारे के बकाइनी चिरायते के पीछे जाकर आँखों से ओझल हो गया।

अगले दिन अक्सीन्या को तनख्वाह मिल गई। इसके बाद उसने अपनी चीज़-बस्त इकट्ठी की और येव्गेनी से विदा लेने गई तो फूट पड़ी, "मेरे बारे में कुछ बुरा-भला मत सोचना, येव्गेनी निकोलायेविच!"

"नहीं···बिल्कुल नहीं···तुम्हारे बारे में बुरा-भला मैं क्या सोचूंगा··· हर चीज़ के लिए तुम्हें बहुत-बहुत शुक्रिया!" उसने अपने मन की परेशानी छिपाने की कोशिश की तो उसकी हँसी बनावटी हो उठी।

अक्सीन्या वहाँ से चली और शाम होने के काफी पहले तातारस्की

पहुँच गई। स्तेपान दरवाज़े पर ही मिल गया। मुस्कराते हुए बोला, "आ गई? हमेशा के लिए आ गई हो न? अब तो यहाँ से कभी नहीं जाओगी?"

"नहीं।" अक्सीन्या ने सहजभाव से उत्तर दिया। और अधगिरी झोंपड़ी, घास से भरा अहाता और कूड़ा-कबाड़ देखकर जैसे उसका दिल बैठने लगा।

: ८ :

व्येशेन्स्काया रेजीमेंट ने कई दिन आगे ही आगे बढ़ते रहने के बाद आखिरकार पीछे हटते लाल-गार्दों को लड़ाई में उलझा लिया।

ग्रिगोरी मेलेखोव की कमान के स्क्वैड्रन ने, हरे-भरे बागों के बीच बसे, एक छोटे-से गाँव पर एक दिन दोपहर के समय अधिकार कर लिया। ग्रिगोरी ने अपने कज्ज़ाकों को एक छोटी नदी के पास बेंतों के साये में घोड़ों पर से उतरने का आदेश दिया। नदी की एक पतली धार गाँव के बीच से बहती थी। वहीं पास ही काली दलदली मिट्टी से कलकल सोते फूट रहे थे। पानी बर्फ की तरह ठंडा था। कज्ज़ाकों ने पानी टूटकर पिया, अपनी टोपियों में भरा और बाद में उसे अपने पसीने से नहाये सिरों पर उंडेलते हुए सन्तोष की साँस ली। सूरज की किरणें गन्दगी से सीझे गाँव पर सीधी पड़ती रहीं। दोपहर की धुँध की मुट्ठी में कसी धरती तपती रही। उमस-भरी धूप के ज़हर से घासें और बेंत की पत्तियाँ निढाल होकर झूलती रहीं। लेकिन, नदी के किनारे साये में तरी रही, पोदीने की हरियाली लौ देती रही, छोटे-छोटे नाले-नालियों में काई की मुस्कान क्वाँरेपन की झलक मारती रही और नदी में एक मोड़ के आसपास बतखें पानी छपाछप करती और अपने डैने फड़फड़ाती रहीं। ऐसे में घोड़े लगामों पर जोर देते, पानी की ओर बढ़ने की कोशिश करते, धूल उड़ाते और ताज़े पानी के लिए अपने होंठ फड़फड़ाने लगे। पास के मथे हुए कीचड़ से गधक की गंध उड़ी तो बेंत की पानी से धुली जड़ों से एक तीखी-मीठी बास हवा में घुली।

कज्ज़ाक पोदीने के पौधों के बीच लेटे और उन्होंने आपस में बातें करनी

शुरू की ही कि अगली गश्त के लिए गए लोग लौटे। फिर तो लाल-गार्दों का नाम सुनते ही लोग एक झटके में ही उछलकर खड़े हो गए। अब उन्होंने अपने घोड़ों की जीनें कसीं और पानी पीने और अपने-अपने फ्लास्कों में पानी भर लेने के लिए वे एक बार फिर नदी के किनारे आए तो हरएक ने मन-ही-मन सोचा, 'हो सकता है कि बच्चों की आँखों के आँसुओं की तरह यह ताजा पानी अब दोबारा नसीब न हो !'

वे सड़क पर बढ़े और नदी पार कर दूर के सिरे पर रुके। गाँव के उस तरफ कोई एक वर्स्ट के फासिले पर, आठ घुड़सवारों की दुश्मनों की एक गश्ती टुकड़ी झाड़-झखाड़ से भरे टीले पर चढ़कर गाँव की ओर बढ़ती दीखी।

"चलो, इन्हें तो मुट्ठी में कर ही लिया जाए, क्यों ?" मीरका कोरशु-नोव ने ग्रिगोरी से कहा।

और, आधा ट्रूप लेकर वह गश्ती टुकड़ी को घेरने के लिए चल पड़ा, पर लाल-गार्दों ने उसी क्षण उन्हें देख लिया और फौरन ही मुड़ दिए।

इसके एक घंटे बाद व्येशेन्स्काया रेजीमेंट के दो दूसरे स्क्वैड्रन आए तो आते ही आगे की ओर बढ़ दिए। गश्ती टुकड़ियाँ खबर लेकर आईं कि कोई एक हजार लाल-गार्द उनकी ओर बढ़े चले आ रहे हैं। वैसे तो व्येशेन्स्काया रेजीमेंट का ३३वें बुरकानोव्स्की रेजीमेंट से इधर सम्पर्क टूट गया था, लेकिन इसपर भी दुश्मन को उलझा लेने की बात निश्चित हो गई।

कज्जाक घोड़ों पर सवार होकर टीले पर आए और नीचे उतरे। घोड़ों को, गाँव की ओर निकलनेवाले एक चौड़े खड्ड में ले जाया गया। इस बीच कहीं दाईं ओर गश्ती टुकड़ियों ने अपना काम शुरू कर दिया तो हलकी मशीनगनों की आवाजें उनके कानों में आने लगीं।

बाद में लाल-गार्दों की कतार जल्दी ही नजर आई। ग्रिगोरी ने स्क्वैड्रन के लोगों को पहाड़ी की चोटी पर जमाया और कज्जाक घास-फूस से मढ़े फैलाव के किनारे-किनारे लेट गए। अब ग्रिगोरी ने जंगली सेब के एक बौने पेड़ के बीच से दूरबीन लगाकर दुश्मनों की दूर की कतारों को देखने की कोशिश की। उसे दो कतारें नजर आईं और उनके पीछे कटे हुए

नाज के भूरे गट्ठों के बीच फौजियों का एक जमाव और दीखा।

फिर, पहली कतार के आगे सफेद घोड़े पर सवार कमांडर खड़ा नज़र आया तो ग्रिगोरी के साथ ही बाकी कज्ज़ाकों के भी आश्चर्य का ठिकाना न रहा। दूसरी कतार के सामने दो घुड़सवार और दिखलाई पड़े। तीसरी कतार का भी नेतृत्व करता एक कमांडर समझ पड़ा। उसके पीछे हवा में फड़फड़ाता मिला एक झंडा। झंडा खेत की मटमैली-पीली पृष्ठभूमि में खून का एक छोटा, टूटा थक्का-सा लगा।

"लाल-गार्दो के कमीसार आगे-आगे रहते हैं। यह इनकी बहादुरी है।" मीत्का कोरशुनोव सराहना से हँसा।

"तो यह है लाल-गार्द! देख लो, साथियो।"

इसपर लगभग सभी कज्ज़ाक सिर उठाकर लाल-गार्दों को देखने लगे। हथेलियाँ भौंहों के पास सध गईं, बातचीत खत्म हो गई और मृत्यु का अग्रदूत, एक शानदार सन्नाटा, बादल की छाया की तरह, धीरे-धीरे स्तेपी के मैदान और घाटी पर बिछ गया।

ग्रिगोरी ने मुड़कर पीछे की ओर देखा।—गाँव से लगे बेंतों के, राख के रंग के, द्वीप के पार हवा में गर्द के बादल उड़ते लगे। दूसरा स्क्वैड्रन दुश्मन को घेरने को बढ़ता दीखा। कुछ देर तक तो गति पर एक नाले ने पर्दा डाल रखा, पर कोई चार वर्स्ट तय करने के बाद स्क्वैड्रन व्यवस्थित ढंग से, एक ढाल पर चढ़ा, तो ग्रिगोरी ने मन-ही-मन अनुमान लगाया कि कितनी देर बाद और कहाँ स्क्वैड्रन दुश्मन के बराबर आ जाएगा।

ग्रिगोरी ने दूरबीन केस में रखी और तेज़ी से मुड़कर आदेश दिया, "*आप लोग नीचे ही रहें।*" फिर, वह अपनी कतार में आया तो तमाम के तमाम कज्ज़ाकों के धूप से सँवराए पर तमतमाते चेहरे उसकी ओर मुड़ गए। लोग एक-दूसरे से निगाहें मिलाते हुए ज़मीन पर लेट गए और 'तैयार' की कमान पर राइफलों के घोड़े भयानक ढंग से खड़क उठे। ग्रिगोरी को ऊपर से नज़र आए सिर्फ फैले हुए पैर, टोपियों के सिरे, धूल से भरी कमीज़ों से ढकी पीठें, और पसीने से तर कंधों की हड्डियाँ। कज्ज़ाक किसी ढकी हुई या सुविधा की जगह की खोज में इधर-उधर रेंगने लगे। कुछ ने अपनी तलवारों की नोक से ज़मीन में गड्ढे खोदने की कोशिश की।

इस बीच गाने के से अस्पष्ट स्वर हवा के पंखों के सहारे पहाड़ों के किनारे आए।—लाल-गार्डों की कतारें अव्यवस्थित रूप से आगे बढ़ रही थी और उनकी आवाजें उमस में भरे, लम्बे-चौड़े स्तेपी मैदान में डूबती-उतरती, हल्के-हल्के इधर आ रही थी।

इसपर ग्रिगोरी का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा।—कराहों में नहाए-से स्वर उसने पहले भी सुने थे। वह पोदृत्योलकोव के साथ ग्लुबोकाया में था तो उसने नाविकों को भक्ति से अपनी-अपनी टोपियाँ उतारकर गाते सुना था। उस समय उनकी आँखें भावावेश से चमक रही थीं।

ग्रिगोरी के मन में सहसा ही एक धुंधली-धुंधली-सी चिन्ता जगी। इस चिन्ता का चेहरा डर और दहशत से बहुत कुछ मिलने लगा।

"क्या अलला रहे हैं ये लोग ?" एक बुजुर्ग-से कज्जाक ने अपना सिर चिन्ता से मोड़ते हुए पूछा।

"प्रार्थना-सी मालूम होती है।" दाईं ओर लेटे कज्जाक ने जवाब दिया।

"प्रार्थना क्या ये लोग शैतान की कर रहे हैं ?" अन्द्रेई काशुलिन ने खीसें निपोरते हुए कहा, और ढिठाई से ग्रिगोरी पर नजर डालते हुए पूछा, "ग्रिगोरी, तुम तो इनके बीच रहे हो। तुम जानते हो, ये लोग क्या गा रहे हैं ? मेरा खयाल है कि यह गाना तो तुमने खुद भी गाया होगा कभी।"

'···धरती को अपना बनाओ···" इसी समय बीच की दूरी पारकर स्पष्ट स्वर आए, और फिर एक बार फिर स्तेपी के मैदान पर सन्नाटा उतर आया। कज्जाकों के मनों पर दिल-बहलाव का लहरा उतरा और कतार के बीच से किसीकी हँसी के ठहाके गूँजे।

"सुन रहे हो ? ये लोग जमीन को अपना बनाना चाहते हैं !" मीत्का कोरशुनोव ने मजाक बनाते हुए गालियाँ उड़ाईं, "ग्रिगोरी पंतेलेयेविच, कहो तो उस आदमी को घोड़े से नीचे झोंक दूं ?"

और, उसने इजाजत के बिना ही गोली दाग दी। गोली से घुड़सवार गड़बड़ा गया। वह घोड़े की पीठ से नीचे उतरा, अपना घोड़ा एक फौजी को थमाया और पैदल ही अपनी कतार के लोगों के आगे-आगे चल दिया। उसकी नंगी तलवार चमाचम करती रही।

कज्ज़ाक गोलियाँ बरसाने लगे तो लाल-गार्द के लोग जमीन पर लेट गए। ग्रिगोरी ने मशीनगनें चलानेवालों को गोलियाँ चलाने का हुक्म दिया। गोलियों की दो बौछारों के बाद लाल-गार्द के लोग उठे, कोई तीस गज़ तक दौड़ते हुए आगे बढ़े, और फिर लेट गए। ग्रिगोरी ने दूरबीन मे देखा तो वे औज़ारों से जमीन खोदकर अपने को छिपाते नज़र आए। एक निलछरी-सी धूल उनके ऊपर तन गई, और कनार के सामने बाँबियों की तरह के छोटे ढूह उठ गए। इन बाँबियों मे तोपें दगने लगीं। लड़ाई खिंचती मालूम हुई। एक घंटे मे कम समय मे भी कज्ज़ाकों को नुकसान उठाना पड़ा। पहले ट्रूप का एक आदमी मारा गया। तीन ज़ख्मी कज्ज़ाक घोड़ोंवाले खड्ड मे रेंग गए। दूसरा स्क्वैड्रन दुश्मन के बाज़ू मे पहुँचा और हमले मे फाँद पड़ा। पर इस हमले का जवाब मशीनगनों से दिया गया तो कज्ज़ाकों के बीच खलबली मच गई। वे बिखर गए और थोड़े-थोड़े लोगों की टोलियों में घोड़ों पर सवार हो लिए। पर, उन्हें फिर से एक-जुट किया गया और वे चुपचाप दोबारा आगे बढे। मगर, मशीनगनों ने फिर आग बरसाकर उन्हें इस तरह पीछे ठेला जिस तरह हवा पत्तियों को पीछे-ही-पीछे उड़ाती चली जाती है।

लेकिन, इसपर भी हमले से लाल-गार्दों का नैतिक बल टूट गया। उनकी पहली दो पंक्तियों मे घबराहट फैल गई और पंक्तियों के लोग पीछे हटने लगे।

ग्रिगोरी ने गोलियों की वर्षा रोके बिना स्क्वैड्रन को साधा। अब लेट रहने के लिए ठिठके बिना कज्ज़ाक आगे बढने लगे। पहली डग-मगाहट खत्म हो गई, और एक तोपखाने को एक जगह जमते देखकर उनकी हिम्मत बँधी। पहली तोप खींचकर ठिकाने पर लाई गई और दागी गई। ग्रिगोरी ने एक आदमी से खड्ड के कज्ज़ाकों को अपने-अपने घोड़े लेकर आने का हुक्म भेजा और हमले की तैयारी की। जिस जंगली सेब के पेड के पास खड़े होकर वह लड़ाई का छिड़ना देखता रहा था, वहाँ तीसरी तोपगाड़ी लाई गई। कसी हुई बिरजिस पहने, एक लम्बे-से अफसर ने अपने बूटों पर चाबुक सटकारा और धीरे-धीरे बढते तोप-चियों को चिल्लाकर मन-मन-भर गालियाँ दीं, 'तोपगाड़ी जमाओ···

अपनी खाल पर खरोंच आ जाने की फिक्र छोड़ो !"

तोपखाने से आधे वर्स्ट की दूरी पर खड़े एक प्रेक्षक और एक सीनियर अफसर दूरबीनों से लाल-गार्दों की पंक्तियों को पीछे हटते देखते रहे। प्रेक्षण-चौकी को तोपखाने से जोड़ने के लिए टेलीफोन-कर्मचारी एक तार लिए इधर-उधर दौड़ने लगे। तोपखाने के सयानी उम्र के कमांडर ने सख्त उंगलियों से अपनी दूरबीन के शीशे ठीक किए तो एक उंगली में शादी की सोने की अंगूठी चमकी। वह गोलियों की धांय-धांय पर हर बार सिर झुकाता, तोप के चारों ओर पैर पटकता फिरा, और हर झटके और हर हरकत के साथ, कंधे पर लटका रसद का झोला उसकी बगल से आ-आकर लड़ा।

फिर, ज़ोर का धडाका हुआ और ग्रिगोरी गोले का गिरना देखने लगा। गोले के पहले टुकड़े ने बिखरे हुए गेहूँ का पसारा घेर लिया और नीली पृष्ठभूमि में उजला, कपासी धुआँ लटक-सा गया। चार तोपों ने कटे हुए गेहूँ पर गोले बरसाए, पर ग्रिगोरी की आशा के विरुद्ध, लाल-गार्दों को, ऊपर से देखने से कोई भी खास परेशानी नहीं हुई। वे इत्मीनान के साथ, व्यवस्थित ढंग से बराबर पीछे हटते रहे और फिर एक नाले में जाकर आँखों से ओझल हो गए। ग्रिगोरी ने हमले को बेमानी समझने पर भी तोपखाने के कमांडर से इस मामले पर बातचीत करने का फैसला किया। वह उस अफसर की ओर लपका और धूप से सँवराई मूँछ का सिरा अपने बायें हाथ से छेड़ते हुए मित्रतापूर्ण ढंग से मुस्कराया। बोला—

'मैंने तो सोचा था कि मेरी टुकड़ी के लोग हमला बोल देंगे और मैं आगे रहूँगा।"

"पर, हमला बोल कैसे सकते हो?" कैप्टेन ने कनपटी से चूता पसीना अपने हाथ के पिछले हिस्से से पोंछते हुए तेज़ी से सिर हिलाया—"देखते तो हो कि सुअर के बच्चे किस तरह जमकर पीछे हट रहे हैं ! वे हार नहीं मानेंगे, और यह सोचना गधापन होगा कि वे हार मानेंगे। उनकी यूनिटों की कमान मुकम्मल अफसरों के हाथों में है। इन अफसरों को बाकायदा फौजी ट्रेनिंग दी गई है। मेरा एक पुराना साथी भी उनमें है।"

"आप यह बात जानते कैसे हैं ?" ग्रिगोरी ने अविश्वास के भाव से पूछा।

"वहाँ से भागकर आए हुए लोगों ने बताई है······गोले दागना बंद करो !" कैप्टेन ने हुक्म दिया और जैसे कि अपने आदेश का अर्थ समझाते हुए बोला—"हमारे गोलों का कोई नतीजा नहीं निकल रहा, और गोलों की हमारे पास कमी है···तुम मेलेखोव हो न ? मेरा नाम पोलताव्त्सेव है।" उसने अपना बड़ा, पसीने से तर हाथ ग्रिगोरी के हाथ में ठूँसा और फिर जल्दी से कुछ सिगरेट अपने थैले से निकाले—"लो, पियो।"

इसी समय घुली-मिली खड़खड़ाहट-सी हुई और तोपगाड़ियाँ चलाने वाले तोपों के जुए लिए हुए कूदकर खड्ड से बाहर आए। ग्रिगोरी अपने घोड़े पर सवार हुआ और अपनी टुकड़ी को पीछे हटते लाल-गार्डों के पीछे-पीछे ले चला। दुश्मन ने दूसरा गाँव अपने अधिकार में कर लिया, पर फिर बिना किसी तरह के संघर्ष के दे दिया। व्येशेन्स्काया रेजीमेंट का तोपखाना और तीन टुकड़ियाँ गाँव-भर में फैल गई। वहाँ के रहनेवालों ने डर के मारे झोपड़ियों के बाहर सिर तक नहीं निकाला। कज्जाक खाने की तलाश में अहातों में उमड़ चले। ग्रिगोरी जरा दूर की एक झोंपड़ी के पास अपने घोड़े से उतरा और उसने अपना घोड़ा हाते में लाकर बरसाती में बाँध दिया। वह अन्दर गया तो उसने घर के मालिक, बुजुर्ग-से कज्जाक को बिस्तर पर कराहते और चिड़िया की तरह गदे तकिये पर सिर पटकते देखा। मुस्कराकर पूछा, "तबीयत खराब है ?"

"हाँ, बीमार हूँ।"

वह आदमी बीमारी का बहाना-भर करता रहा। सो, उसकी आँखों की पुतलियों के नाचने से अविश्वास टपका। उसे नहीं लगा कि ग्रिगोरी उसकी बात ठीक समझ लेगा।

"तुम मेरे साथ के कज्जाकों को कुछ खाने को दे सकोगे ?" ग्रिगोरी ने पूछा।

"कितने लोग है ?"

"पाँच।"

"खैर, तो उन्हें अन्दर ले आइए। उस नीले आसमान वाले ने जो

कुछ हमें दिया है, हम उनके सामने रखेंगे।"

ग्रिगोरी कज्ज़ाकों के साथ खाने के बाद, बाहर सड़क पर निकल आया। इस बीच तोपखाना कुए के किनारे आ गया था, और लड़ाई के लिए पूरी तरह तैयार कर दिया गया था। घोडे टोकरियों में जौ खा रहे थे। तोपचालक और तोपची या तो गोले बारूद के बक्सों के सहारे धूप से अपना बचाव कर रहे थे, या तोपों के पास बैठे और लेटे हुए थे। एक तोपची लम्बा पडा, गहरे खर्राटे भर रहा था। शायद वह लेटा साये में था, पर सूरज के जगह बदलने के कारण अब उसके सिर के घुंघराले बाल धूप में तप रहे थे। बालों में जहाँ-तहाँ घास के तिनके फँसे हुए थे।

घोडों की पीठ पर साज़ के चौड़े तस्मे थे। उनके बदन धूप में चमक रहे थे और पसीने से पीले थे।

अफसरों के घोडे जंगले से बँधे खड़े थे। उनकी दुमें नीचे झूल रही थीं। धूल से नहाए, पसीने में डूबे कज्ज़ाक सब्र खींचे आराम कर रहे थे। कमांडर-समेत, तोपखाने के अफसर ज़मीन पर बैठे धुआँ उडा रहे थे। उनकी पीठें कुए की दीवार के सहारे टिकी हुई थीं। पास ही कज्ज़ाकों का एक दल, छ पहलों के सितारे के साँचे में ढला, झुलसे हुए सरपत पर पैर फैलाए लापरवाही से पसरा हुआ था। दल के लोग रह-रहकर सुराही से दही पी रहे थे और उसमें आ पडे जौ के दाने बार-बार थूक रहे थे।

सूरज बेरहमी से आग बरसा रहा था।

पहाडी पर फैली गाँव की टेढी-सीधी गलियाँ बिल्कुल वीरान थीं। कज्ज़ाक खत्तियों और शेडों की गिरने-गिरने को हो गई छानियों की बगल में और जंगलों से लगे पोदीने के पौधों के साये में सो रहे थे। ज्यों के त्यों कसे घोडे थकान से चूर-चूर हो रहे और औंघा रहे थे। गाँव पूरा यों पडा था, जैसे कि बद स्तेपी के मैदान का एक ऐसा रास्ता हो, जो लोगों के दिमाग से उतर गया हो। तोपें और थकान से निढाल, नींद में डूबे लोग बिल्कुल गैर-जरूरी मालूम होते थे, और जैसे कि ईश्वर के सहारे पड़े हुए थे।

ग्रिगोरी ऊब रहा था कि आखिर करे क्या। सो, वह झोपडी में लौटने को हुआ कि लाल-गार्दों के एक छोटे-से दल को बंदी

बनाए, दूसरी टुकड़ी के तीन कज्ज़ाक, घोड़ों पर सवार, सड़क से आते दीखे। इसपर तोपखाने के लोगों में हलचल मच गई और अपने कोटों और पतलूनों में धूल भाड़ते हुए वे उठकर बैठ गए। अफसर उठकर खड़े हो गए।

बगल के अहाते में, एक व्यक्ति खुशी से खिलकर चीखा, "हे······ साथियो···ये लोग तो कैदियों को लिए आ रहे हैं···सच मानो दुश्मन के लोग कैद कर लिए गए हैं!"

निदासे कज्ज़ाक पास के अहातों से दौड़ते चले आए। फिर, युद्ध-बंदी आए तो लोगों ने उन्हें घेर लिया। युद्ध-बंदी कमउम्र थे। उनकी गिनती आठ थी। वे धूल और पसीने से नहाए हुए थे।

"कहाँ पकड़ा तुमने इन्हें?" तोपखाने के कमांडर ने बंदियों को सिर से पैर तक देखते हुए उत्सुकता से पूछा। उनके साथ आए लोगों में से एक ने अपनी आवाज़ में शेखी घोलते हुए जवाब दिया—"हमने इन्हें गाँव के पास के सूरजमुखी के पौधों के बीच पकड़ा। ये बिल्कुल ऐसे छिपे हुए थे जैसे चील के डर से बटेर छिपते हैं। घोड़े पर से हमारी नज़र इन पर पड़ी, और फिर हमने इन्हें घेर लिया। हमने एक आदमी को तो गोली से उड़ा दिया···"

लाल-गार्ड एक-दूसरे से सटे खड़े रहे और थोड़ी पूछताछ के बाद गोली से उड़ा दिए जाने के कारण मन ही मन डरने लगे। उनकी निगाहें कज्ज़ाकों के चेहरों पर बेचारगी से दौड़ती रहीं। उनमें से केवल एक नफरत से भरकर कहीं ऊपर देखता रहा। वह बाकी लोगों से उम्र में बड़ा था। उसका चेहरा गरमी और धूप से भूरा था। ट्यूनिक चिकटही और पतलून तार-तार था। आँखें काली थीं और कटे हुए होंठ भिंचे हुए थे। बदन दोहरा था। कंधे चौड़े थे। काले बाल घोड़े की अयाल की तरह कड़े थे। सिर पर जर्मनी की लड़ाई के ज़माने की एक टोपी थी। उँगलियों के नाखूनों पर खून सूख गया था। वह अपनी खुली कमीज़ के कॉलर और टेंटुए पर नाखून फिरा रहा था। ऊपर से पूरी तरह शांत लग रहा था, पर एक पैर दूसरे के ज़रा पीछे था और घुटने के घाव के कारण काँप रहा था। बाकी लोगों के चेहरे पीले थे और उनके बीच अन्तरेखा

खींचना कठिन था। निगाह केवल एक उसी आदमी पर जा टिकती थी, शायद उसके कंधों की मजबूती और चौड़ाई के कारण, और उसके फुर्ती से भरे तातारी चेहरे के कारण। शायद इसीलिए बैटरी के कमांडर ने उसीको सम्बोधित करते हुए पूछा—

"कौन हो तुम ?"

उस आदमी की छोटी आँखों में रोशनी दौड़ गई। उसने तुरन्त ही अपने को साधा और खट से जवाब दिया—"मैं लाल-गार्द हूँ···रूसी हूँ।"

"कहाँ पैदा हुए थे तुम ?"

"पेन्ज़ा प्रान्त में···"

"तुम स्वयंसेवक हो···साँप कहीं के ?"

"नहीं, मैं पुरानी फौज में सीनियर नॉन-कमीशंड अफसर था। १९१७ में लाल-गार्दों में खिंच आया तो तब से अब तक उन्हींके साथ हूँ···"

कैदियों के साथ आनेवालों में से एक बोला—"इसने हमपर गोली चलाई, सुअर कहीं का !"

"गोली चलाई ?" कैप्टेन ने क्रोध से त्योरी चढ़ाई और अपने सामने खड़े ग्रिगोरी की निगाहों से निगाह मिलाते हुए, उस कैदी पर नज़र जमाई —"क्या···या ? तुमने कज़्ज़ाकों पर गोली चलाई, क्यों ? और, तुम्हारे दिमाग में यह नहीं आया कि तुम पकड़े भी जा सकते हो ? अगर हम तुमसे अभी, इसी जगह अपना हिसाब-किताब साफ करने लगें तो ?"

"मैं तो निकल जाना चाहता था···" आदमी के कटे हुए होंठ हिले और उनपर नफरत से भरी मुस्कान दौड़ गई।

"क्या नमूने हो तुम भी ! निकल जाना चाहता था···तो आखिर निकल क्यों नहीं गए ?"

"मेरी सारी गोलियाँ खत्म हो चुकी थीं।"

"हूँ, यह बात है।" कैप्टेन की आँखों से उदासीनता छलकती रही, पर उस फौजी पर जमी उसकी निगाहों में सन्तोष उमड़ा। "और तुम··· तुम कुत्ते के बच्चो···तुम कहाँ के हो ?" उसने दूसरों को सिर से पैर तक देखते हुए बहुत ही दूसरे लहजे में पूछा।

"हुजूर, हमारी जबरन भरती की गई है। हम लोग सरातोव के हैं···"

वालादोव के हैं।" एक लम्बे कद और लम्बी गर्दन वाले जवान ने, पलकें झपकाते और अपना लाल सिर खुजलाते हुए कहा।

ग्रिगोरी ने दर्द और उत्सुकता से, सीधे-सादे, किसानों के चेहरों वाले उन जवानों को देखा। अपनी वर्दी वगैरा से वे पैदल सेना के लोग लगे। केवल एक उसी काले बालों वाले आदमी को देखकर उसके मन में दुश्मनी जगी। उसने क्रोध और घृणा से उससे पूछा—"अभी-अभी क्या बात मज़ाक की है तुमने? मेरे ख्याल से तुम किसी लाल कम्पनी के इन्चार्ज हो, क्यों? कमांडर हो? कम्युनिस्ट हो? क्या कहा तुमने कि तुम्हारी सारी गोलियाँ खत्म हो चुकी थीं? अगर हम अभी-अभी, देखते-देखते तुम्हारी गर्दन उड़ा दें तो?"

लाल-गार्द के नथुने काँपे और वह पहले से ज्यादा हिम्मत से बोला—"मैंने कोई कोरी बहादुरी जताने के लिए ही तो आपसे यह बात कही नहीं थी। फिर, इसमें छिपाने की भी ऐसी क्या बात है? मैंने इनपर गोली चलाई तो मुझे यह बात सीधे-सीधे मान लेनी चाहिए···है कि नहीं? जहां तक गर्दन उड़ा देने की बात है, उड़ा दें गर्दन अगर आप चाहें तो। मैं आपसे रहम की उम्मीद नहीं रखता।" वह फिर मुस्कराया—"आप सब कज्ज़ाकों का यही तो काम है!"

इसपर सभी ओर मुस्कानें खिल उठीं। उस फौजी के सधे हुए स्वर से ग्रिगोरी मुलायम पड़ा और दूसरी ओर को मुड़ गया। फिर उसने कैदियों को पानी पीने के लिए कुएं की ओर जाते देखा। कज्ज़ाकों की एक टुकड़ी एक कतार में नुक्कड़ पर मार्च करती दीखी।

: ६ :

बाद में जब रेजीमेंट को बराबर लड़ाई करनी पड़ी और पूरा मोर्चा एक लहरदार पंक्ति में बदल गया, तो ग्रिगोरी का दुश्मन से सामना बार-बार हुआ। फिर जब वह अक्सर उसके बिल्कुल पास रहा तो उसके मन में इन बोलशेविकों और रूसी फौजियों को लेकर उत्कट अभिलाषा एक बार फिर जागी। उसे लगा कि कोई कारण है कि इन लोगों से इस तरह लड़ना ज़रूरी है। ऐसी ही बचकानी भावना उसके मन में जर्मनी की

लड़ाई के शुरू के दिनों में ऑस्ट्रो-हंगेरी फौजों को देखकर जागी थी और फिर जीवन-भर उसके साथ बनी रही थी। सो इस समय भी उसे लगा कि पता नहीं ये सब कैसे लोग होंगे ! यों तो लाल-गार्डों से, चेरनेत्सोव टुकड़ी के खिलाफ ग्लुबोकाया में वह जिन्दगी-भर भी शायद ही लोहा ले पाता—पर लोहा उसने लिया ! उस समय बात दूसरी थी। उसे शत्रु-पक्ष की स्पष्ट जानकारी थी। दुश्मनों में से ज्यादातर लोग दोन-प्रदेश के रहने वाले अफसर थे, कज्जाक थे। पर इस बार सवाल बिल्कुल ही दूसरा था। इस बार पाला रूसी फौजियों से पड़ा था। ग्रिगोरी की बुद्धि से ये रूसी फौजी बिल्कुल ही अलग किस्म के लोग थे। ये लोग सोवियत सरकार का समर्थन करते थे और कज्जाकों की जमीन-जायदाद हथियाने के लिए युद्ध कर रहे थे।

लड़ाई के सिलसिले में उसका आमना-सामना लाल-गार्डों से एक बार फिर हुआ। वह एक गश्ती दस्ते के साथ चला जा रहा था कि उसके कानों में रूसी गालियाँ पड़ीं और साथ ही कदमों की आहट भी। एक चीनी-समेत कई लाल-गार्ड चोटी की ओर दौड़ते आए, लेकिन कज्जाकों को देखकर जैसे उनकी बोलती मारी गई, और वे एक क्षण तक जहाँ के तहाँ ठक खड़े रहे।

"कज्जाक !" उनमें से एक ने जमीन पर ढहते हुए भयानक आवाज में कहा।

चीनी ने गोली चलाई। इसपर जमीन पर ढह पड़े आदमी ने हकलाते हुए तीखे ढंग से कहा—"साथियो, मैक्सिम को लाओ ! कज्जाक हैं यहाँ !"

मीत्का कोरशुनोव ने अपने रिवॉल्वर की एक गोली से चीनी को गिरा दिया और अपना घोड़ा इधर-उधर नचाते हुए सबसे पहले घाटी के नुक्कड़ पर जा पहुँचा। दूसरों ने अपने घोड़े उसके पीछे दौड़ाए और एक-दूसरे से आगे निकल जाने की कोशिश की। उनके पीछे मशीनगनें दनादन दगती रहीं। गोलियाँ ढालों पर उगी झरबेरी और हॉथॉर्न की झाड़ियों के बीच सरसराती, घाटी की पथरीली सतह बेधती रहीं।

दूसरे मौकों पर भी एक तरफ ग्रिगोरी को अपने साथी नजर आए

तो दूसरी तरफ लाल-गार्द—अपने ठीक सामने। ऐसे अवसरों पर कज्जाक गोलियों ने दुश्मनों के पैरों के नीचे की ज़मीन काटी और दुश्मन ग्रिगोरी के देखते-देखते धरती पर गिरे, उन्होंने खून उगला और वे इस उपजाऊ मिट्टी पर ढेर हो गए। यह देश और यह धरती उनके लिए बिल्कुल परायी थी।

ग्रिगोरी के मन में बोलशेविकों के प्रति घृणा धीरे-धीरे गहरी जड़ें पकड़ती गई। उसे लगा कि वे उसकी ज़िन्दगी में दुश्मनों की तरह घुसते चले आए हैं, और उसे उसके घर-गाँव से छुड़ा लाए हैं। फिर, उसने अनुभव किया कि दूसरे कज्जाकों की भावना भी कुछ ऐसी ही है। वे सब समझते कि बोलशेविकों ने दोन-प्रदेश पर हमला किया है, इसी-लिए किसी तरह की कोई लड़ाई छिड़ी है। फिर, उनकी नजर गेहूँ के बिखरे हुए फूलों और घोड़ों के पैरों से रौंदे अनकटे नाज के अम्बार पर पड़ती तो उन्हें अपने घर-गाँव की याद हो आती। उन्हें वहाँ, अपनी ताकत से बाहर खटती, अपने घर की औरतों का ध्यान हो आता। उनके मन पत्थर हो उठते और वे खून के प्यासे हो जाते। कभी-कभी ग्रिगोरी को लगता कि उसके दुश्मनों, यानी तामबोव, र्याज़ान और सरातोव के किसानों को भी यह बात इसी तरह लगनी चाहिए—उनके मनों में भी अपनी धरती के लिए ऐसा ही मोह होना चाहिए। वह सोचता—'हम अपनी धरती को लेकर इस तरह लड़ रहे हैं जैसे कोई किसी औरत को लेकर लड़े!'

तो लड़ाई के सिलसिले में बहुत कम लोग बन्दी बने। अक्सर ही लोगों को ठौर के ठौर मौत के घाट उतार दिया गया। फिर मोर्चे पर लूट-पाट की लहर लहरी। कज्जाकों ने लाल गार्दों और सन्देह की परिधि तक में आनेवाले उनके हमदर्दों को लूटा। उन्होंने कैदियों को नंगा नचाया।

उन्होंने घोड़ों और गाड़ियों से लेकर घरेलू इस्तेमाल की गैरज़रूरी, भारी-भरकम चीजों तक पर बाकायदा हाथ साफ किया। यानी लूटालाटी के इस काम में जितना हाथ कज्जाकों का रहा, उतना ही उनके अफसरों का। सामान की गाड़ियाँ लूट के माल से लदने लगीं—माल कि उसमें

कपडे, समोवार, कपडा सीने की मशीनें, घोड़ों के साज और मामूली से मामूली काम की कोई भी चीज। इस सामान की धार गाड़ियों से देश-गाँव की ओर नियमित रूप से प्रवाहित होने लगी। कज्जाकों के सम्बधी अपने-आप मोर्चे पर आते। गोला-बारूद और खाने-पीने की चीजें अपने साथ लाते और अपनी गाडियाँ लूट के माल से ठसाठस भरकर लौट जाते।

वहाँ घुडसवार रेजीमेंटों की बहुतायत थी और वे खास तौर पर बेलगाम हो गई थी। पैदल सेना के लोगों के पास अपने काम की चीजों को बाँधने के कपडों के सिवाय और कुछ भी न होता, और न होता तो वे चाहने पर भी लूट की चीजें कहाँ बाँधते। पर घुडसवारों की बात बिल्कुल ही दूसरी होती। वे लूट का सामान घोडों की काठियों से बँधी थैलियों मे भर लेते और पीछे बडल पर बडल लादते चले जाते। यहाँ तक कि होते-होते फौजी घोडे घोडों से ज्यादा लद्दू खच्चर लगने लगते।

यह समझिए कि कज्जाकों ने अपने को पूरी तरह खुला छोड़ दिया। वैसे जब भी लडाई हुई थी, लूट-पाट उनकी जिंदगी का प्रमुख अग बन गया था। यह बात ग्रिगोरी अच्छी तरह जानता था—पिछली लड़ाइयों की दास्तानो के सहारे भी, और अपने अनुभव के आधार पर भी। जर्मनी की लडाई के समय उसका अपना रेजीमेंट प्रशिया के बीच से गुजर रहा था तो एक दिन ब्रिगेड के, सम्मान्य, ईमानदार कमांडर ने अपने चाबुक से पहाड़ियों की तलहटी मे बसे एक छोटे-से कस्बे की तरफ इशारा किया था, और रेजीमेंट से कहा था—"अगर तुम दो घटे को लेना चाहो तो यह कस्बा तुम्हारा है। लेकिन, दो घटे के बाद जो भी आदमी लूटमार करता पाया जाएगा, उसे दीवार मे चुन दिया जाएगा!"

पर, ग्रिगोरी को ये तरीके कभी भी समझ मे न आए। उसने मौका पड़ने पर सिर्फ अपने लिए खाना और अपने घोड़े के लिए चारा-दाना लिया और बाकी किसी भी चीज को हाथ लगाने से इन्कार कर दिया। लूटमार के माल को उसने नफरत की निगाह से देखा, और खुद अपने ही कज्जाकों को यह सब करते देख तो उसके मन ने सदा ही बहुत विद्रोह किया। उसने अपने स्क्वैड्रन पर कडी नजर रखी। ऐसे मे अगर उसके

किसी आदमी ने कुछ लिया तो चोरी-छिपे ही लिया, और सो भी ऐसे ही कभी। न उसने कभी यह हुक्म दिया कि कैदियों को नंगा कर दिया जाए और न यह कि उनका नाम-निशान मिटा दिया जाए। इस तरह उसके हृदय की असाधारण कोमलता के कारण कज्जाकों और रेजीमेंटल कमान में असन्तोष फैला। आखिरकार उसे डिविज़नल स्टाफ के सामने अपनी सफाई देने को बुलाया गया तो स्टाफ का एक सदस्य उसपर बरस पड़ा—

"कॉरनेट, तुम अपना स्क्वैड्रन चौपट क्यों किए डाल रहे हो आखिर? क्या मतलब है तुम्हारी इस उदारता का? जमीन तैयार कर रहे हो कि अगर हालत बदले तो तुम्हारे लिए सुख की सेज सजी मिले? दोनों पक्षों के साथ खिलवाड़ कर रहे हो? बहस की कोई गुंजाइश नहीं। तुम अपना अनुशासन तो जानते हो न? तुम चाहते हो कि तुम्हारी जगह किसी और को दे दी जाए? तो, दे दी जाएगी। मैं अभी हुक्म दे सकता हूँ कि तुम आज ही स्क्वैड्रन दूसरे आदमी को सौंप दो! लेकिन, तब तुम्हें हमसे किसी तरह की कोई शिकायत नहीं होनी चाहिए, समझे न! ···"

महीने के अन्त में ग्रिगोरी के रेजीमेंट और ३३वें येलान्स्काया रेजीमेंट के एक स्क्वैड्रन ने ग्रेमयाची-लॉग नाम के गाँव पर अपना अधिकार कर लिया।

गाँव के खड्ड में वेंत, ऐश और देवदारु के झुरमुट थे। पार के ढाल पर बीस-तीस मकान बिखरे हुए थे। उनकी दीवारें सफेद थीं और चारों ओर खुरदुरे पत्थरों की नीची बाड़ें थीं। गाँव के ऊपर पहाड़ी की चोटी पर एक हवाचक्की थी और हवा का हर झोंका यहाँ तक पहुँचने को आज़ाद था। उसके कसे हुए पाल पहाड़ी की चोटी के सफेद बादल की पृष्ठभूमि में टेढ़े-मेढ़े क्रॉस-से लगते थे।

उस दिन खासी तरी थी और धुंध छाई हुई थी। पीली बर्फ के फूलों की बौछार की तरह पत्तियाँ सरसराती हुई नाले में झर रही थीं। नीचे के बेंत के पेड़ सूनी लाल रंग की झाईं मार रहे थे और खलिहानों में चमचम करने भूसे की ऊंची टालें लगी हुई थीं। आनेवाले जाड़े की पूर्व-सूचना देती-सी एक कोमल-सी चादर, भीनी-भीनी ताज़ी महकवाली धरती के

ऊपर बिछ गई थी।···

ग्रिगोरी अब तक ट्रुप कमांडर बना दिया गया था। सो, इस गाँव में जो मकान उसके और उसके साथ के लोगों के लिए निश्चित किया गया, वह उसने ले लिया। मकान-मालिक लाल गार्डों के साथ पीछे हट गया लगा। उसकी पत्नी और किशोरी बेटी ने उनका बड़े आदर से स्वागत किया। ग्रिगोरी सोने के कमरे में गया और उसने चारों ओर नज़र दौड़ाई तो मालूम हुआ कि घर के लोग काफी ढंग से रहते रहे हैं। यह समझिए कि फर्श पर पॉलिश थी। कुर्सियाँ मुड़ी हुई लकड़ी की थीं। शीशा था। दीवारों पर बदस्तूर फोटो थे। साथ ही काले चौखटे में मढ़ा स्कूल का एक सर्टिफिकेट था।

ग्रिगोरी ने अपनी गीली बरसाती स्टोव पर सूखने को डाल दी और एक सिगरेट रोल करने लगा। इसी समय प्रोखोर ज़ीकोव अन्दर आया। उसने अपनी राइफल पलंग से टिकाई और तटस्थ भाव से बोला, "तातारस्की से गाड़ियाँ आ गई है, और तुम्हारे पिता ग्रिगोरी पॅन्तेलेवेविच भी उसके साथ आए हैं।"

"ठीक है'''कोई और ऐसी ही बेपर की···?"

"नहीं, बेपर की नहीं उड़ा रहा। मैं ठीक कह रहा हूँ। हमारे अपने गाँव से छ गाड़ियाँ आई हैं। जाओ, देखो।"

ग्रिगोरी अपना बरानकोट पहनकर बाहर आया तो उसने अपने पिता को घोड़ों के आगे-आगे, अहाते के फाटक में घुसते देखा। दार्या घर का बना एक कोट पहने, घोड़े की रासें साधे गाड़ी में बैठी दीखी। ग्रिगोरी को देखते ही उसकी मुस्काने नम हो उठी, और आँखें खुशी से चमकने लगी।

"आप यहाँ कैसे ?" ग्रिगोरी ने पिता की ओर देखकर मुस्कराते हुए पूछा।

"अरे बेटे, बड़ी किस्मत है कि तुम सही-सलामत हो। हम तो तुम्हारे बेबुलाए मेहमान हैं।"

ग्रिगोरी ने अपने पिता को गले लगाया और गाड़ी के बंद खोलने लगा। घोड़ों को जोत से अलग करते समय उनके बीच जल्दी-जल्दी में कुछ बातें

हुई।

"हम तुम्हारी लड़ाई के लिए गोलाबारूद लाए हैं अपने साथ।" पिता बोला। दार्या ने घोड़ों के लिए चारा और जई गाड़ी में निकाली।

"पापा आए तो आए, तुम भला क्यों आईं ?" ग्रिगोरी ने उससे पूछा।

"मैं पापा के साथ चली आई। इनकी तबीयत इधर अच्छी नहीं रही। माँ को डर लगा कि ये यहाँ अकेले आए और इन्हें कहीं कुछ हो जाए तो न कोई जान, न पहचान!"

पेंतेली ने हरी घास का एक बोझ घोड़ों के सामने डाला और फिर अपनी काली आँखों में उत्सुकता भरते हुए ग्रिगोरी के पास जाकर पूछने लगा, "क्यों, कैसा चल रहा है हिसाब-किताब ?"

"ठीक है···हम लड़ते जा रहे हैं।"

"मुझसे किसीने कहा कि कज़्ज़ाक सरहद के पार कदम रखने को तैयार नहीं हैं···क्या यह बात सच है ?"

"बात ही बात है···!" ग्रिगोरी ने बात को टालते हुए जवाब दिया।

"क्या मतलब तुम्हारा ?" बूढ़े ने विरोध और चिन्ता से भरी आवाज़ में कहा—"इस तरह काम नहीं चल सकता···हम बूढ़े लोग बड़ी उम्मीदें रखते हैं···दोन की हिफाज़त तुम सब नहीं करोगे तो और कौन करेगा ? अगर लड़ना नहीं जानते तो···अल्लाह न करे कि ऐसा हो···तुम्हारे ही साथियों ने मुझे बतलाया है···वे अफवाहें फैलाते फिर रहे हैं···सुअर के बच्चे!"

फिर बाप-बेटे घर पहुँचे तो गाँव के समाचार पाने और सुनने के लिए सारे कज़्ज़ाक उनके चारों ओर आ जमा हुए। घर की मालकिन से फुसफुसाकर कुछ मिसकौट करने के बाद दार्या ने खाने की चीज़ों का थैला खोला और शाम का खाना तैयार करने लगी।

"मैंने सुना है कि तुमसे स्क्वैड्रन कमांडर का ओहदा छीन लिया गया ?" पेंतेली ने पूछा।

"अब मैं ट्रूप कमांडर हूं।" ग्रिगोरी ने तटस्थ भाव से उत्तर दिया तो बूढ़ा खीझ उठा। उसके माथे पर बल पड़ गए। वह भचकता हुआ मेज़

के पास पहुँचा, उसने जल्दी-जल्दी एक प्रार्थना बुदबुदाई, अपने कोट के सिरे से एक चम्मच पोंछा और अपमानित स्वर में पूछा—"और ऐसा हुआ किसलिए? तुम अपने अफसरों को खुश नहीं रख सके?"

ग्रिगोरी ने दूसरे कज्जाकों के सामने इस विषय पर बातें करना उचित न समझा। उसने नाराजगी से कंधे झटककर कहा—"ऊपर के अफसरों ने एक नया, पढ़ा-लिखा कमांडर भेज दिया।"

"खैर, कोई बात नहीं। तुम अपनी तरफ से खिदमत में किसी तरह की कोई कोर-कसर न रखना। जल्दी ही उनकी समझ में तुम्हारी कीमत आ जाएगी। और, उनकी और उनकी लिखाई-पढ़ाई की खूब चलाई तुमने! जितनी सच्ची तालीम पिछली जर्मनी की लड़ाई के जमाने में तुम्हें मिली है उतनी इनके इन ऐनकबाज अफसरों को तो क्या ही मिली होगी!" बूढ़ा नफरत से भर उठा, पर ग्रिगोरी ने भौंहें चढ़ाकर, कनखी से कज्जाकों की ओर देखा कि कहीं वे तो नहीं मुस्करा रहे हैं।

वैसे अपना पद छिन जाने पर वह खीझा न था, और उसने खुशी-खुशी स्क्वैड्रन का चार्ज दे दिया था। अनुभव किया था कि कम-से-कम अपने गाँव के लोगों के मरने-जीने की जिम्मेदारी तो अब उसपर न होगी। मगर, इन सारी बातों के बावजूद उसके स्वाभिमान को ठेस लगी थी। इसलिए जब इस समय उसके पिता ने इतनी सारी बातें कहीं तो उसे गुस्सा आ गया।

उस बीच मकान मालकिन बावर्चीखाने में चली गई। पैन्तेली ने, सामान के साथ आए, अपने गाँव के बोगातिरयोव के चेहरे पर अपने विचारों की सहमति पढ़ी, मन को मथ रहे विषय पर फिर लौट आया—और कमरे में जमा कज्जाकों को सम्बोधित करते हुए बोला—"तो, यह बात सच है कि तुम सब सरहद के पार कदम रखना नहीं चाहते?"

प्रोखोर जीकोव ने गाय के बछड़े जैसी अपनी भोली आँखें झपकाईं और शान्त मन से मुस्कराया। स्टोव के पास बैठे मीत्का कोरशुनोव ने अपनी सिग्रेट बुझा दी। दूसरे तीन कज्जाक भी बेंचों पर बैठे या लेटे ही रहे, पर बूढ़े की बात का जवाब किसीने नहीं दिया। बोगातिरयोव ने कटुता से अपना हाथ नचाया और गहरी भारी आवाज में बोला—"ये सब

लोग इन सब चीज़ों के बारे में दिमाग को तकलीफ देते मालूम नहीं होते···।"

"और, सरहद के आगे आखिर हम क्यों जाएँ?" एक शान्त-से, बीमार कज्जाक ने सुस्ती से पूछा—"हम आखिर क्यों जाएँ? मेरी बीवी मर गई है और यतीम बच्चे मुझे सौंप गई है। ऐसे में मैं अपनी जान मौत के मैदान में बेवजह क्यों झोंक दूँ?"

"हमने ठेका लिया है कि हम दुश्मन को कज्जाकों के मुल्क से बीन-बीनकर बाहर कर देने के बाद ही अपने-अपने घर-गाँव को लौटेंगे!" एक दूसरे कज्जाक ने पहले व्यक्ति की बात के समर्थन में कहा।

मीश्का कोश्युनोव आँखों ही आँखों मुस्कराता और अपनी पतली-पतली मूँछें ऐंठता रहा। "मैं तो पाँच साल इसी तरह लड़ता रह सकता हूँ···मुझे तो लड़ाई पसंद है।"

इसी समय बाहर अहाते में कोई चीखा—"बाहर आइए···घोड़ों पर सवार होइए!"

"लो, देखते हो!" पहले बोलनेवाले कज्जाक ने निराशा से भर-कर कहा—"अभी हमारे बदन की बरसात की बूँदें सूखी भी नहीं हैं, और लोग हैं कि गला फाड़ रहे हैं—बाहर आइए! इसका मतलब है कि फिर कॉल-इन हो जाइए। और, तुम हो कि सरहद की बातें कर रहे हो? कौन-सी सरहदें···कहाँ की सरहदें? अब तो हमें घर लौटना चाहिए। जरूरी है कि अमन के लिए बातें की जाएँ, और तुम कहते हो कि···"

घबड़ाहट बेकार साबित हुई। ग्रिगोरी क्रोध से भरकर अपने घोड़े को अहाते में वापस ले आया और इस बीच उबलते हुए रह-रहकर उसके पेट में एड़ियाँ गड़ाते हुए कहा—"सीधे चल, शैतान की आंत कहीं का!"

"क्या बात थी?" दरवाज़े के पास धुआँ उड़ाते पेंतेली ने कज्जाकों के अन्दर आने पर पूछा।

"बात क्या होती! लोगों ने गायों के एक गिरोह को गलती से लाल-गार्दों की टुकड़ी समझ लिया!"

ग्रिगोरी ने अपना कोट उतारा और मेज़ के पास आ बैठा। दूसरे कज्जाकों ने अपनी तलवारें, राइफलें और कारतूस की थैलियाँ बेंचों पर

फेंक दी। फिर, जब बाकी लोग सो गए तो पंन्तेली ने ग्रिगोरी को अहाते में बुलाया। दोनों सीढ़ी पर बैठ गए।

"मुझे तुमसे बातें करनी हैं।" बूढ़े ने ग्रिगोरी के घुटनों पर हाथ मारते हुए फुसफुसाकर कहा—"एक हफ्ते पहले मैं प्योत्र से मिलने गया तो वहाँ काफी ठीक-ठाक रहा। प्योत्र की खेती-बाड़ी पर खासी नजर है। उसने मुझे कपड़े, घोड़ा और चीनी दी···घोड़ा बहुत ही शानदार है।"

"सुनो···" ग्रिगोरी ने सख्ती से बात काटी और बूढ़े की बातचीत का सही मतलब समझकर मन ही मन गुस्से से जलने लगा, "तो यहाँ भी तुम इसलिए तो नही आए ?"

"और, क्यों नहीं ?"

'क्या मतलब···क्यों नही ?"

"दूसरे लोग चीज़ें बाकायदा लेते हैं, ग्रिगोरी···"

"दूसरे लोग ! चीज़ें बाकायदा लेते हैं !" ग्रिगोरी ने तेज़ आवाज़ मे दोहराया और जैसेकि उसे अपनी बात के लिए शब्द नहीं मिलने लगे, "उनके पास खुद अपनी चीजें नहीं होतीं क्या ? तुम सबके सब सुअर हो ! जर्मनी की लड़ाई मे ऐसी हरकतों के लिये लोगों को गोली मार दी गई थी···"

"तुम इन चीज़ों से इस तरह परहेज़ मत करते रहो !" पिता ने उसे टोका—"मैं तुमसे कुछ नही माँग रहा। मुझे कुछ नही चाहिए। आज मैं जिन्दा हूं, लेकिन कल तो मेरे पैर फैले रह सकते हैं। तुम मेरी नहीं, अपनी बात सोचो। तुम समझते हो कि तुम बडे रईस हो···तुम्हारे घर में खजाना भरा पडा है ? फार्म पर एक गाडी है और वह···फिर, यह कि जो लोग लाल-गार्दों के साथ जा मिले हैं उनकी चीज़ें लेने में तुम्हें एतराज़ भी क्या है ? उनकी चीज़ें न लेना तो गुनाह है ! हर टूटी-फूटी चीज़ भी घर मे काम आ जाएगी।"

"अब यह बकवास बंद करो, नही तो जल्दी से जल्दी में तुम्हें यहाँ से रफूचक्कर करूँगा। मैं अपने साथ के कज्जाकों की इसके लिए खासी खबर ले चुका हूँ, और अब खुद मेरा बाप आया है यहाँ लोगों को लूटने !" ग्रिगोरी आवेश से काँपने और थरथराने लगा।

"इसीलिए तुम स्क्वैड्रन कमांडर से ट्रूप कमांडर बना दिए गए हो!" बाप ने मज़ाक बनाया।

"हाँ, और अब मैं वह ट्रूप भी छोड़ दूंगा!···"

"क्यों नहीं···अक्ल का तो मारा ठेका ले रखा है तुमने!···"

फिर, दोनों एक क्षण तक चुप रहे। इसी समय ग्रिगोरी ने सिगरेट जलाई तो दियासलाई की रोशनी में अपने पिता का परेशान, अपमान से उतरा चेहरा देखा और केवल अब उसके आने का सही कारण समझा। सोचने लगा—"और, इसीलिए यह बूढ़ा शैतान दार्‌या को साथ लाया है···यानी, उसे साथ लाया है लूट के माल की पहरेदारी के लिए।"

"स्तेपान अस्ताखोव वापस आ गया है—तुमने सुना है?" पैन्तेली ने शांत मन से कहा।

"क्या?" ग्रिगोरी की सिगरेट उंगलियों से छूट गिरी।

"लगता है कि उसे बंदी बना लिया गया था लेकिन आखिरकार मारा नहीं गया और छोड़ दिया गया। वह तमाम कपड़े-लत्ते और माल-मता लेकर लौटा है। दो गाड़ियां भरकर सामान अपने साथ लाया है।" बूढ़े ने डून की हाँकी और स्तेपान को यों सराहा जैसेकि वह उसका कोई सगा-सम्बंधी हो—"वह अक्सीन्या को जाकर यागोदनोये से ले आया और फिर फौज में चला गया। लोगों ने उसे कोई अच्छा काम दे दिया है। इस वक्त वह कज़ान्स्काया या ऐसे ही कहीं और जिला कमाण्डेंट है।"

"इस बार खलिहान का काम कैसा रहा?" ग्रिगोरी ने बात बदलनी चाही।

"कोई ४०० बुशेल[1] नाज हुआ है।"

"तुम्हारे पोता-पोती कैसे हैं?"

"क्या कहने हैं! बहुत मजे में हैं। तुम्हें उनके लिये कुछ-न-कुछ तोहफा भेजना चाहिए।"

"तोहफा···लड़ाई के मोर्चे से!" ग्रिगोरी ने आह भरी, लेकिन उसके दिमाग में अक्सीन्या और स्तेपान नाचते रहे।

---

[1] एक बुशेल—उनतीस सेर।

"तुम्हारे पास कोई फालतू राइफल तो नहीं है ?"

"तुम्हें राइफल की क्या जरूरत ?"

"घर के इस्तेमाल के लिए चाहिए—जंगली जानवरों और अजनबियों को भगाने के लिए। कारतूस मेरे पास बक्सा-भर हैं। लड़ाई का सामान गाड़ी से पहुँचाते वक्त ये कारतूस मैंने ले लिए थे।"

"तो राइफल भी किसी गाड़ी से निकाल लो। इस तरह के तोहफों का तो यहां अम्बार है।" ग्रिगोरी उदास मन से मुस्कराया। "चलो अब चल कर सोया जाए···मुझे चौकियों का एक चक्कर जाकर लगाना है।"

दूसरे दिन सवेरे ग्रिगोरी के स्क्वैड्रन समेत रेजीमेंट का एक हिस्सा उस गांव से हटा दिया। ग्रिगोरी वहां से रवाना हुआ तो उसके मन में इस बात का पक्का विश्वास रहा कि बूढ़ा काफी शर्मिन्दा हो गया है, और अब वह खाली हाथों लौट जाएगा। पर कज्जाकों को विदा करने के बाद पंतेली अन्नागार में यों गया, जैसे कि खुद उसका मालिक हो। वहां खूंटी से घोड़े के पट्टे और साज उसने उठाया और अपनी गाड़ी में ला रखा। मकान-मालकिन रोती-कलपती, चीखती-चिल्लाती, उसके कंधे से सटती पीछे लगी आई—'अरे भाई, ऐसा गुनाह करते तुम्हें डर भी नहीं लगता ? यतीमों का दिल क्यों दुखा रहे हो ? पट्टे वापस कर दो ··खुदा के नाम पर वापस कर दो !"

"छोड़···छोड़···खुदा को क्यों घसीटती है इसके साथ !" पंतेली ने उसे धक्का दे दिया—"मुझे पूरी उम्मीद है कि तुम्हारा आदमी आकर हमारा माल-मता लूट ले जाएगा···मैं तुम्हारे इन कमीसारों को खूब जानता हूँ। फिलहाल इस वक्त जो कुछ तुम्हारा है, वह सब कुछ मेरा है ! मुँह बन्द करो !"

दूसरे गाड़ीवान यह सारा कुछ देखते रहे। उन्हें हमदर्दी तो हुई, पर वे बोले कुछ नहीं। फिर उनके देखते-देखते पंतेली ने सन्दूकों के ताले तोड़े, नये-नये पतलून और कोट छांटे, उन्हें रोशनी में लाकर हाथ से देखा और बांध लिया।···

दोपहर होते-होते पंतेली दार्या के साथ अपने गाँव के लिये रवाना हुआ।

गाड़ी ऊपर तक भरी हुई थी और बंडलों के ऊपर होंठ भींचे दार्या बैठी थी। उसके पीछे रखा था एक बड़ा देगचा। यह देगचा पैन्तेली नहाने के कमरे से उठा लाया था। लाते समय यह उसके उठाए नहीं उठाया जा रहा था। इसपर दार्या ने उसे फटकारते हुए कहा था—"पापा, तुम्हारा बस चले तो तुम तो अपने बदन का मैल भी यहाँ न छोड़ो!" बस तो बूढ़ा गरम हो उठा था—"चुप कर हरामजादी! यह देगचा मैं उन सबके लिए छोड़ जाऊंगा? एक घर चलाएगा ग्रिगोरी, और एक घर चलाएगी तू, फूहड़ कहीं की! मुझे यह जँच गया है! तू अपनी जबान बंद रख!"

फिर घर की मालकिन ने फाटक बन्द किया तो पैन्तेली ने चलते-चलते उदारता से कहा—"अलविदा···बेकार नाराज न होना···ये सारी चीजें तुम्हारे यहाँ जल्दी ही फिर आ जाएँगी!"

: १० :

दिन पर दिन बीतते गए। कड़ियों में कड़ियाँ लगती गईं—सिलसिला चलता रहा—मार्च, लड़ाई, पड़ाव, आराम···गरमी-बरखा···घोड़े के पसीने और साज के गरम चमड़े की मिली-जुली बदबू···बराबर झटके लगते रहने से नसों में जमकर पारा बन जानेवाला खून···ऐसे में ग्रिगोरी को अपना सिर तोप के छः इञ्ची गोले से भी ज्यादा भारी लगने लगा। उसका सोने और आराम करने को जी करने लगा। उसकी इच्छा हुई कि इस तरह सोकर उठने के बाद वह खेत में हल के फाल से बनी लीक के किनारे-किनारे चले, बैलों को सीटी दे, सारसों की मर्मभेदी पुकारें सुने, अपने गालों के ऊपर उड़ता रुपहला मकड़ी का जाला हटाकर एक ओर कर दे और जुती हुई मिट्टी की भीनी-भीनी महक में शरद् का रस ले।

पर, इस सबके बदले उसने देखा—पगडंडियाँ और रास्तों के आरपार बिखरा अनाज, रास्तों के किनारे नंगे, धूल से लाशों की तरह काले कैदियों की भीड़ें, सड़कों को रौंदते और घोड़े की नालों से नाज की ओसाई करते हुए फौजी स्क्वैड्रन, और पीछे हटते लाल-गार्दों के परिवारों की खोज की

जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते और अपनी बीवियों और माँओं को कोड़े लगाते गाँव के लोग।

और इन सारी बातों की ऊब के दिन जैसे-तैसे बीतते गए। फिर, ये दिनों के फूल याददाश्त की डाल पर मुरझा गए और महत्व की घटना की भी कहीं कोई याद न रह गई। लड़ाई की रोजमर्रा की ज़िन्दगी जर्मनी की लड़ाई के दिनों से कहीं ज्यादा खुदक लगी, क्योंकि लोगों को सारी बातों की जानकारी पहले से थी। पिछली लड़ाई में हिस्सा लेने-वाले सभी लोग वर्तमान संघर्ष को नफरत की निगाह से देखते थे—क्या लम्बाई-चौड़ाई, क्या फौजों, और क्या होनेवाले नुकसानों, सभी दृष्टियों से यह लड़ाई जर्मनी की लड़ाई के सामने बहुत छोटी मालूम होती थी। सिर्फ एक मौत थी जो प्रशिया के मैदानों की तरह यहाँ भी हर ओर नंगा नाच कर रही थी, लोगों की हड्डियों को डर से कँपा रही थी, और उनमें आत्मसुरक्षा की पाशविक इच्छा जगा रही थी।

"इसीको लड़ाई कहते हो तुम ? यह तो लड़ाई की नकल है। जर्मनी की लड़ाई में जर्मन तोपों से आग बरसाने थे तो रेजीमेंट के रेजीमेंट ढेर हो जाते थे। और, आज, यहाँ किसी कम्पनी के दो लोग घायल हो जाते हैं, तो हम कहते हैं कि हमारा बड़ा नुकसान हो गया!" इस तरह आगे की पंक्ति के लोग बातें करते। लेकिन लड़ाई के साथ इस तरह खिलवाड़ करने से भी उन्हें खीझ होती। हर ओर असंतोष, थकान और गुस्से की लहर पर लहर आती जाती। ग्रिगोरी के स्क्वैड्रन में कज्ज़ाकों की ज़िद बढ़ती जाती और वे कहते—"हम लाल-गार्दों को इस इलाके से खदेड़ भगाएँगे, और बस! हम और आगे नहीं जाएँगे। उसके बाद रूसी अपना कामकाज अपने ढंग से करेंगे और हम अपना कामकाज अपने ढंग से सम्हालेंगे—हम अपना तरीका उनपर नहीं लादेंगे!"

शरद्-भर संघर्ष खिंचता रहता। ज़ारित्सिन लड़ाई का खास केन्द्र रहा और लाल और श्वेत गार्द, दोनों ही अपनी शानदार सेनाएँ उसी ओर भेजते रहे। नतीजा यह कि उत्तरी मोर्चे पर किसी भी पक्ष की स्थिति मजबूत नहीं हुई और दोनों ही निर्णयात्मक आक्रमण के लिए शक्तियाँ जुटाते रहे। कज्ज़ाकों के पास घुड़सवारों की बड़ी टुकड़ियाँ थीं,

इसलिए वे इस चीज से फायदा उठाते रहे। वे दुश्मन पर पीछे से भी हमला करते रहे और उसे बाजुओं से भी घेरते रहे । लेकिन कज्जाकों को थोड़ा चढ़ने का अवसर ढुलमुल चरित्र की फौजी टुकड़ियों के आने पर ही मिला । इन टुकड़ियों में लालसेना की नई भरती के लोग थे, और मोर्चे के ठीक पीछे के इलाकों मे खास तौर पर लिए गए थे।

फलतः मरातोव और तामबोव के लोगों ने बहुत बड़ी संख्या में हथियार डाल दिए । लेकिन, लाल-कमान के कामगारों की रेजीमेंट या जहाज़ी टुकड़ी के लड़ाई मे झोंकते ही सूरत बदल गई, और पहल कभी इधर के लोगों के हाथों में आ गई तो कभी उधर के लोगों के हाथ में । जीतें जो भी हुईं, कम महत्व की हुईं।

ग्रिगोरी लड़ाई में भाग लेते हुए भी उसके प्रति उदासीन रहा और जाड़े तक लड़ाई के खत्म हो जाने का पक्का विश्वास उसके मन मे रहा। वह जानता था कि कज्जाक अब शान्ति चाहते हैं, इसलिए संघर्ष के आगे खिंचने का सवाल ही नहीं उठ सकता ।···

अखबार जब-तब मोर्चे पर आते तो ग्रिगोरी छपा हुआ पीला पैकिंग का कागज नफरत से उठाता और फौजी विज्ञप्तियों पर निगाह दौड़ाते हुए दाँत पीसता । ऐसे ही ऐसे एक दिन उसके चारों ओर के कज्जाक हंसी के ठहाके लगाने लगे, जब उसने बनावटी संतोष, खुशी और शेखी से भरी पंक्तियाँ पढ़ीं—

"२७ सितम्बर—फिलीमोनोव के इलाके की लड़ाई मे हमें कमोबेश कामयाबी बराबर मिली है ! २६ की रात को सधे हुए व्येशेन्स्काया रेजीमेंट ने दुश्मन को पदगोरनाया से मार भगाया और फिर उसने लुक्यानोव्स्क में प्रवेश किया ! इस जीत के सिलसिले में कितनी ही शानदार चीजें हाथ लगी, और कितने ही लोग कैदी बनाए गए ! लाल-गार्डों की टुकड़ियों के बीच उथल-पुथल मच गई है, और वे पीछे हट रही हैं । कज्जाक बड़ी ही उमंग में है । आशा है कि दोन-प्रदेश के कज्जाकों को आगे भी एक के बाद दूसरी फतह मिलेगी !···"

"कितने लोगों को कैदी बनाया हमने ? बहुत ही ज्यादा हा···हा ! कुतिया के बच्चे ! हमने सिर्फ बत्तीस लोगों ..

और अखबार में कहा गया है…" मीत्का हँसते-हँसते लोट-पोट हो गया और हँसी के सिलसिले में उसने मुँह खोला तो उसके दूधिया दाँत चमकने लगे।

कज्जाक कैडेटों की साइबेरिया और कुबान की सफलताओं पर विश्वास न करते। समाचारपत्रों में बिना रोकथाम और शर्म-लिहाज के झूठी खबरें छापी जाती। ग्रिगोरी के ट्रुप के एक कज्जाक ने एक दिन एक अखबार मे चेकोस्लावाकिया के आन्दोलन के बारे मे एक लेख पढ़ा और ग्रिगोरी को सुनाकर कहा—"लाल-गार्द पहले चेकों की हिम्मत चूर-चूर करेंगे, फिर हमारी ओर रुख करेंगे और हमें रगडकर रख देंगे। यह रूस है! कोई मजाक नही है!"

"हमे बेकार डराने की कोशिश न करो! तुम्हारी बकवास से मेरे कानो में दर्द होने लगता है!" प्रोखोर जिकोव ने कहा।

पर अपने लिए सिगरेट रोल करते-करते ग्रिगोरी ने मन ही मन शात भाव से सोचा—'यह आदमी ठीक कहता है!'

उस दिन शाम को, अपनी कमीज़ का कालर खोले ग्रिगोरी बहुत देर तक मेज़ के पास गुमसुम बैठा रहा। उसके धूप से सँवराए चेहरे पर इस समय तक सख्ती नज़र आई। अपनी गहरी तगडी गर्दन सीधी करते हुए उसने मूँछो के सिरे ऐंठे और पिछले कुछ वर्षो की भावहीनता और कटुता से भरी निगाहों से एकटक दीवारो की ओर देखा। उसकी नसें तनी रहीं और वह गहरे विचारो मे उलझा रहा। फिर सोने को लेटा तो आम-से सवाल के जवाब में जैसे अपने-आपसे बोला—'टिकाना नहीं है कि चाहूँ भी तो कहीं चला जाऊँ!'

उस रात ग्रिगोरी की पलक नही झपकी। वह रह-रहकर उठा, घोडो पर एक निगाह डाल लेने को बाहर गया और मुलायम रेशमी सन्नाटे की सरसराहट की आहट लेते हुए सीढियों पर खड़ा रहा।

ग्रिगोरी का अपना प्रिय सितारा अब भी आसमान मे टिमटिमा रहा था। साफ है कि अभी वह क्षण न आया था कि वह टूटता, पर लगा-कर उड़ता और आसमान पर उसके प्राणहीन, बुझते हुए प्रकाश की रेखा खिच जाती।

शरद् में उसके मातहत तीन घोड़े मर गए थे और उसके बरान-कोट में पांच जगह छेद हो गए थे। मौत उसे अपने काले डैने में लपेटकर जैसे उसके साथ खिलवाड़ कर रही थी।

एक दिन उसकी तलवार की तांबे की मूंठ को एक गोली ने छेद दिया और तेगबद इस तरह घोड़े के पैर के पास आ गिरा, जैसेकि दाँत से काट दिया हो।

"कोई तुम्हारी सलामती के लिए मिन्नतें कर रहा और मन्नतें मान रहा है···" मीत्का कोरशुनोव ने कहा और ग्रिगोरी की हँसी के खोखले-पन पर अचरज में पड़ गया।···

मोर्चा रेलवे-लाइन के पार था। सो, हर दिन काँटेदार तार की गराडियों पर गराडियां मालडिब्बों में लदकर आतीं। हर दिन टेलीग्राफ के तार पूरे मोर्चे को सन्देश देते—"हमारी मित्रसेनाएं अब किसी भी दिन आ सकती है। ज़रूरी है कि नई फौजों के आने के समय तक प्रदेश की सीमाओं पर चारों खूंट चौकस रहा जाए, और लालगार्दों की ताकत तो जैसे भी हो सके तोड़ी जाए।···"

ऐसे में अपने-अपने घर-गाँव से हटाए गए ज़िले के लोग कुल्हाड़ियों से ज़मीन की बर्फ तोड़ते, खाइयाँ बनाते और उन्हें काँटेदार तारों से घेर-कर अपनी रक्षा की व्यवस्था करते। पर, रात में कज़्ज़ाक खाइयाँ छोड़-कर अपने को गरमाने के लिए गाँवों में चले जाते तो लालगार्दों की एडवांस-पार्टियाँ कज़्ज़ाक खाइयों तक रेंग आतीं, रक्षा की व्यवस्था तार-तार कर देतीं और तार के जंगलमें काँटों की नोकों पर कज़्ज़ाकों के नाम अपीलें छोड़ जातीं। कज़्ज़ाक ये अपीलें इस तरह डूबकर पढ़ते जैसेकि वे उनके घरों से आए पत्र हों।···

साफ है कि ऐसी परिस्थितियों में लड़ाई चलाना बेमतलब था। पाला पड़ने लगा था। कभी बर्फ थोड़ी गल जाती थी तो कभी आसमान से बरसती चली जाती थी। खाइयां बर्फ से भर गई थीं। उनके अन्दर एक घंटे लेटना भी दुश्वार हो गया था। कज़्ज़ाक पाले के शिकार हो रहे थे, ठिठुर रहे थे और उनके हाथ-पैर सुन्न पड़े जा रहे थे। पैदल सेना के लोगों और छुटपुट मुठभेड़ों वाली कज़्ज़ाक-टुकड़ियों के सदस्यों के पैरों में

जूते न रह गए थे। बाकी लोगों के पास सिर्फ सैंडिलें और गरमी के दिनों के हलके पतलून थे, क्योंकि वे तो अपनी बुद्धि से लड़ाई के मोर्चे पर न आकर जैसे अपने-अपने फार्मों के अहातों में चहलकदमी करने के लिए आए थे। उनकी मित्रसेनाओं में कोई आस्था न थी। ग्रिगोरी के ट्रुप के ऐसे ही एक व्यक्ति ने एक दिन कटु होकर कहा—"वे लोग गुबरैलों पर सवार होकर आ रहे होंगे यहाँ!"

फिर, कज्जाक लालगार्दों के गश्ती दस्तों के सम्पर्क में आए तो दस्ते के लोगों की तेज आवाजें उनके कानों में पड़ीं—"हे···ईसाई की पूजा करनेवालो, सुनते हो···तुम्हारे टैंक अभी तक नहीं आए क्या? हम स्लेजों पर जल्दी ही तुम्हारे पास आएंगे···इसलिए स्लेजें खींचने को तैयार रहना।···"

नवम्बर के मध्य में लालगार्दों ने अपनी ओर से हमला बोल दिया। उन्होंने कज्जाक डिवीजनों को पीछे रेलवे-लाइन तक खदेड़ दिया। लम्बे संघर्ष के बाद १६ दिसम्बर को लाल-घुडसवारों ने कज्जाकों की ३३वीं रेजीमेंट के छक्के छुडा दिए, पर व्येशेन्स्काया रेजीमेंट के अधिकार वाले क्षेत्रों में कज्जाकों ने उनके लोहे से लोहा बजा दिया। अहाते के बर्फ से मढे जंगलों के पीछे से रेजीमेंट के मशीनगन-चालकों ने गोलियों की मूसलाधार बरसात से शत्रु की पैदल टुकड़ियों का स्वागत किया। दाहिने किनारे की मशीनगन ने मौत छिडकी। दूसरी ओर, बाईं ओर की दो टुकड़ियाँ बाजुओं की तरफ से दुश्मनों को घेरने लगीं।

शाम होने-होने तक धीरे-धीरे आगे बढ़ती लालसेना की टुकड़ियों की जगह अभी-अभी मोर्चे पर आए नौसैनिकों की सेना ने ले ली। उन्होंने, बिना लेटे और बिना चीखे-चिल्लाए, मशीनगन-चालकों पर चुपचाप हमला बोला।

ग्रिगोरी दनादन गोलियाँ चलाता रहा कि होते-होते उसकी राइफल की नली लाल-भभूका हो गई और उसके अपने हाथ जलने लगे। तब उसने राइफल ठंडी की और फिर उसमें कारतूस ठूँसे। इसके साथ ही उसने आँखें सिकोड़ीं और दूर के छोटे-छोटे, काले व्यक्तियों को निशाना बनाना शुरू कर दिया।

पर, नौसैनिकों ने कज्ज़ाकों की रक्षा-पंक्ति भेद दी तो स्क्वैड्रन के लोग घोड़ों पर सवार होकर गाँव को रौंदते हुए भाग दिए। ग्रिगोरी ने पीछे मुड़कर नज़र डाली और घोड़े की लगामें ढीली कर दीं। पहाड़ी के बाज़ू से उसे नज़र आया उदासी और बर्फ से भरा स्तेपी का मैदान, मैदान के छोटे टूह, बर्फ के साँचे में ढली टूह की झाड़ियाँ, और खड्डों के किनारों पर लेटी शाम की बकाइनी परछाइयाँ। पूरे एक वर्स्ट तक मशीनगनों की आग से भुने नौसैनिकों की लाशें फैली रहीं; और अपनी जैकेटों और जरकिनों के कारण ऐसी लगती रहीं, जैसेकि किसी लम्बे-चौड़े मैदान में रक-पंछी आ बैठे हों।···

इस तरह बिखर गए स्क्वैड्रनों का दोनों ही ओर की रेजीमेंटों से सम्पर्क न रह गया और वे रात बिताने के ख्याल से, शाम को बुज़ुलुक की एक छोटी-सी सहायक नदी के किनारे बसे दो गाँवों में ठहरे।

स्क्वैड्रन-कमाण्डर द्वारा बताई गई जगह में कुमुक को ठहराने के बाद ग्रिगोरी दोनों वक्त मिलते-मिलते वापस आया तो उसकी भेंट अचानक ही रेजीमेंट-कमाडर और उसके ऐडजुटेंट से हो गई। कमाडर ने अपने घोड़े की लगामें खींचते हुए पूछा—"तीसरा स्क्वैड्रन कहाँ है?"

ग्रिगोरी ने बताया और अफसर आगे बढ़ गए। फिर थोड़ी दूर तक जाने के बाद, ऐडजुटेंट मुड़ा और बोला, "क्या स्क्वैड्रन के बहुत लोग मारे गए?" पर उसने ग्रिगोरी का जवाब नहीं सुना और फिर वही सवाल किया। दूसरी ओर ग्रिगोरी आगे बढ़ता गया, जैसेकि उसने कुछ सुना ही न हो।···

ग्रिगोरी के स्क्वैड्रन के पड़ाव वाले गाँव के बीच से सारी रात मालगाड़ियाँ घिसटती रहीं। इसी सिलसिले में एक तोपखाना बहुत देर तक गली में खड़ा रहा तो तोपची और स्टाफ के अर्दली अपने को गर्माने के लिए ग्रिगोरी की झोंपड़ी में टहल आए। आधी रात के समय एक तोप के साथ के तीन लोग झोंपड़ी में इस तरह घुसे कि झोंपड़ी के मालिक और कज्ज़ाक जाग गए। उनकी तोप गाँव के पास ही नदी में फँस गई थी और उन्होंने सोचा था कि चलो, इस समय चलें, सवेरा होते ही बैल लेकर आएंगे और इसे यहाँ से निकाल लेंगे।

ग्रिगोरी की आँख खुली तो उसने बूटों से कीचड साफ करते, कपड़े उतारते और उन्हे सूखने के लिए डालते तोपचियों को घूरकर देखा। जरा देर बाद सिर से पैर तक कीचड से नहाया तोपखाने का एक अफसर आया। उसने वहा रात बिताने की अनुमति ली, फिर अपना बरानकोट उलटा और बहुत ही अन्यमनस्क भाव से खड़ा अपना चेहरा और ट्युनिक की आस्तीन साफ करता रहा।

"एक तोप से हाथ धो बैठे हम !" उसने थके हुए घोड़े की शिथिल आँखों वाली निगाहो से ग्रिगोरी की ओर देखते हुए कहा—"हमारी तोप के दो बार आग उगलने के बाद दुश्मन को हमारी रेंज का पता चला। तोप खलिहान मे थी। इससे अधिक उसका छिपाव और कहां हो सकता था······" और बात के हर टुकडे के साथ वह धराऊ गालियाँ जोड़ता गया—"और तुम व्येशेन्स्काया रेजीमेट मे हो···चाय पियोगे ?···ए औरत, समोवार तैयार है क्या ?"

अफसर बहुत ही बातूनी और बोरिंग निकला। वह बिना थके चाय पीता रहा। आधे घटे के अन्दर-अन्दर मालूम हो गया कि उसका जन्म प्लातोव्स्की जिले मे हुआ है, उसने जर्मनी की लडाई में हिस्सा लिया है और दो बार शादियाँ की है, पर कोई भी शादी कामयाब नही रही है।

अपने ऊपरी, सफाचट होंठ का पसीना लाल जीभ से चाटते हुए वह बोला—"दोन की सेना के लिए अब 'आमिन' है, यानी उसके मन की हो रही है। लडाई करीब-करीब खत्म हो गई है। कल मोर्चा टूट जाएगा और एक पखवारे के अन्दर-अन्दर हम नोवोचेरकास्क वापस पहुँच जाएँगे। ये लोग कज्जाकों को नगे पैर रखकर एक झटके मे रूस को ले लेना चाहते रहे हैं। ये है न बेवकूफ ? फिर, इनके सारे कमान-अफसर बदमाश हैं।···तुम कज्जाक हो···है न ? और यह लड़ाई चलानेवाले चाहते रहे हैं कि शाहबलूत की गिरियाँ इनकी भुनें और इन्हे आग से तुम बाहर निकालो। लेकिन मोर्चे के पिछले हिस्से मे इन्हे मुँह की खानी पड़ रही है।"

अपना भारी शरीर मेज पर फैलाते हुए, उसने अपनी नीरस-सी आँखें झपकाई पर उसका चेहरा अब भी चूर-चूर घोड़े के चेहरे की तरह

विनय से भरा लगता रहा। बोला—"पुराने जमाने में यानी नैपोलियन के वक्त तक लड़ाई का कुछ मजा था। दो फौजें एक-दूसरे के आमने-सामने आ खड़ी होती थीं, एक-दूसरे पर बरस पड़ती थीं और अलग हो जाती थीं। न मोर्चे होते थे, और न खाइयों में छिपकर बैठने की बात होती थी। लेकिन, जरा देखिए तो कि आज हालत क्या है! ऐसे-ऐसे काम करने पड़ते हैं कि शैतान की हिम्मत जवाब दे जाए। हो सकता है कि इतिहास गढ़नेवालों ने दूसरी लड़ाइयों को लेकर भी दून की हाँकी हो, लेकिन इस लड़ाई को लेकर तो वे जमीन-आसमान के कुलाबे इस तरह मिलाएँगे कि पिछली सारी दास्तानें मुँह देखती रह जाएँगी। यह लड़ाई नहीं है, यह है जान उबा देनेवाला और तबीयत खिझा देने वाला एक तूफान! कोई मजा नहीं है इसमें। बस, यह है कि हर तरफ एक गड़-बड़ी देखिए और धूल फाँकिए। तुम जानते हो कि ऊपर के लोग मुझसे मिल जाएँ तो उनसे क्या कहूँ मैं? मैं कहूँ—'जनाब लेनिन साहब, मैं अपने साथ एक सार्जेंट मेजर आपके लिए लाया हूँ। यह आपको बन्दूक पकड़ना सिखलाएगा। और त्रासनोव साहब, आपको तो यह काम पहले से ही आना चाहिए···आता ही होगा···।' और फिर, दाविद और गोलियाथ की तरह लड़ने दीजिए उन्हें कि जो सबसे ऊपर रहे, वह हुकूमत सम्हाले··· लोगों को कोई परवाह नहीं कि उनपर हुकूमत कौन करता है।···क्या ख्याल है, कॉरनेट ?"

ग्रिगोरी ने कोई उत्तर न दिया। वह निदामा-सा उस आदमी के मांसल कंधों और बाजुओं की हरकतें, और उसकी लाल जीभ की लप-लपाहट देखता रहा। इस मतिमंद अफसर पर मन ही मन क्रोध से उबलते हुए उसने सोना चाहा। उसके पसीने से नहाए, मैल से भरे पैर देखकर उसका जी मिचलाने लगा।

सवेरे ग्रिगोरी की आँख खुली तो कुछ ऐसी खीझ का उसे अनुभव हुआ, जैसेकि कोई झगड़ा झगड़ा रह गया हो और उसका फैसला न हुआ हो। चीजों के जिस मोड़ की उसने शरद् में आशा की थी, वह सहसा ही इस समय इस तरह सामने नजर आया कि ग्रिगोरी चौंक उठा। लोग लड़ाई से थक और ऊब चले थे; और इस थकान और ऊब की छोटी-

छोटी लहरियाँ उसने स्क्वैड्रनों और रेजीमेंटों के लोगों की तबीयतों के किनारों से टकराती देखी थीं, मगर उसने उन्हें नज़रअन्दाज़ कर दिया था। पर, वे ही लहरियाँ चुप-चुप बाढ़ में बदल गई थी और आज भुखमरों की तरह, टूट-टूटकर मोर्चे का किनारा काटे जा रही थी।······

ऐसे मे, वसन्त के आरम्भ में एक आदमी घोड़े पर सवार होकर स्तेपी के मैदान मे आया।···सूरज चमकता रहा···हर तरफ़ वंजनी और अछूती वर्फ का पसारा रहा। पर, लोगो की निगाहों से दूर, ज़मीन के नीचे चमत्कार होता रहा। धरती मुक्त की जाती रही। सूरज बर्फ पर अपनी किरणें गडाता और उसपर वार करता रहा। उसमें तल के नीचे के पानी की बाढ आ गई। रात आई तो धुंध ने उसे अपनी बाँहों में कस लिया। सवेरा हुआ तो एक तरह की सरसराहट और गरज के साथ बर्फ की चोटियाँ अपने झगडे आप तय करने लगी। पहाड़ी के हरे बाज़ू से पानी की धारें हरहराती हुई आईं, और सडकों और रास्तों में भर चली। वर्फ के गीले ढोके घोड़े के पैरो से हर तरफ लुढकते चले गए। सर्दी घट गई। ढूह नगे हो गए। मिट्टी से कीचड़ और सडी हुई घास की बू आने लगी। दोपहर के समय घाटियो मे पानी ठाठें मारने लगा, ढालू किनारे फिसलती हुई वर्फ के नीचे कसमसाने लगे, और जुती हुई मखमली, काली जमीन से मीठी-मीठी-सी भाप उठने लगी। शाम होते-होते स्तेपी प्रदेश की नदी की वर्फ तडक के साथ टूट गई और भरी हुई नदी की तेज़ धार के साथ-साथ उड़ चली। धार का भराव जवान माँ के सीने के भराव की तरह लगा। और, जाड़े की अप्रत्याशित विदाई पर आश्चर्यचकित व्यक्ति ने अपना घोडा बलुहे किनारे पर ला खडा किया। उसने चारों ओर नज़र दौडाकर एक छिछली जगह खोजनी चाही और अपने पसीने से नहाए थके हुए घोडे की धूल चाबुक से झाडी। भोली वर्फ, नीले रग की झाई मारती, चारो ओर चमचमाती रही। यह रही एक तस्वीर निदाते जाड़े की रियासत की।

अगले दिन, पूरे समय, रेजीमेंट पीछे हटती रही और मालगाड़ियाँ सडकों पर दौडती रही। क्षितिज पर, दाईं ओर से पर्दा टालनेवाले भूरे बादलो के पार से तोपों के धडाके होते रहे। स्क्वैड्रन, छपाछप करते,

सड़कों की बर्फ के पिघले हुए पानी के बीच से गुजरते रहे और घोड़े गीली बर्फ अपने सुरों से मथते रहे। अर्दली सड़क के किनारे-किनारे अपने घोड़े दौड़ाते रहे। कज़्ज़ाक स्क्वैड्रनों और छुटपुट मुठभेड़ करनेवालों की पंक्तियों के साथ गाड़ियों की कतारों पर कतारों की परेड जैसे देखते रहे—सड़क के किनारे इधर-उधर, हर तरफ बैठे रुक-पंछी। वे रुक जैसे ऐसे घुड़सवार सैनिक थे, जिन्होंने चमकते हुए नीले परों की वर्दियाँ पहन रखी थीं, और जो घोड़ों के पीठों से उतरकर ज़मीन पर जमा थे और भद्दे ढंग से एक-दूसरे से सटे खड़े थे।

ग्रिगोरी ने अनुमान किया कि वसन्त के पीछे पड़ते कदमों को अब कोई रोक नहीं सकता। बस, तो उसने भी एक इरादा किया और इस इरादे से उसका मन खुशी से भर गया। वह उसी रात को रेजीमेंट से उड़ने को तैयार हो गया।

'कहाँ चले, ग्रिगोरी ?" मीत्का कोरशुनोव ने, ग्रिगोरी को अपने चरानकोट के ऊपर बरसाती पहनते और पेटी में तलवार खोंसते और रिवाल्वर अटकाते देखकर मुस्कराते हुए पूछा।

"क्या करोगे यह बात जानकर ?"

"कुछ नहीं, यों ही पूछा कि आखिर कहाँ जा रहे हो तुम ?"

ग्रिगोरी के माथे पर बल पड़े, पर उन्हें दबाते हुए उसने आँख मारी और हँसकर जवाब दिया—"अपना काम करो, दूसरों की फ़िक्र न करो, पर यकीन करनेवाले लोगों के इलाके को जा रहा हूँ···समझे ?" और, बाहर निकल आया।

घोड़ा उसे कसा खड़ा मिला। वह उसपर सवार हुआ और फिर सूरज ढलने के समय तक उसे खेतों के बर्फ से जमे रास्तों पर दौड़ाता रहा। अभी कल तक वह जिन लोगों के कंधे से कंधा मिलाकर लड़ता रहा था उसे उनका ध्यान बीच-बीच में रह-रहकर आया तो उसने मन ही मन सोचा—'मैं घर पर रहूँगा, वे उधर से गुज़रेंगे तो उनके कदमों की आहट लूगा और हो सकेगा तो फिर रेजीमेंट में शामिल हो जाऊंगा···।'

अगले दिन शाम तक उसने दो सौ वर्स्ट का फासिला तय कर डाला।

घोड़ा इस सफर से बुरी तरह थककर चूर-चूर हो गया।

अंत मे ग्रिगोरी ने अपने पिता के अहाते मे प्रवेश किया—ऐसे कि वह खुद आगे-आगे और घोड़ा पीछे-पीछे।

: ११ :

नवम्बर के अंत मे नोवोचेरकास्क में यह पता चल गया कि एन्तेन्ते से एक फौजी मिशन आया है। फिर, नगर में यह अफवाह बार-बार सुनी गई कि ब्रिटेन की एक शक्तिशाली नौसैनिक टुकडी ने नोवोरोसिइस्क के बन्दरगाह मे लंगर डाल रखा है, सालोनिका से भेजी गई मित्रदेशो की विशाल सेनाएँ जहाज से उतर रही है और फ्रेंच-जुआव[1] की एक कोर कभी की आ गई है, ये जुआव स्वयसेवक सेना मे शामिल होंगे और जल्दी ही एक बड़ा हमला किया जाएगा।

यानी, अफवाहें बर्फ के गोलों की तरह बढती गई।

क्रासनोव ने आदेश दिया कि अतामान के अंगरक्षक सलामी-गारद से मिशन का अभिवादन करे। इस काम के लिए जवान अंगरक्षकों की दो टुकड़ियाँ जल्दी-जल्दी तैयार की गई। उन्हे लाँग बूटों और कारतूस वगैरा की सफेद पेटियों से लैस किया गया और बिगुल-वादकों के एक दल के साथ अविलम्ब तगानरोग के लिए रवाना कर दिया गया।···

फौजी देखभाल की एक तरह की जासूसी के लिए, दक्षिणी रूस के ब्रिटिश और फ्रेंच फौजी मिशनों ने अपने कुछ अफसरो को नोवोचेरकास्क भेजने का निश्चय किया। तय हुआ कि वे दोन-प्रदेश की स्थिति की जानकारी हासिल करेंगे, और बोलशेविक-विरोधी भावी संघर्ष की सम्भावनाओं का अध्ययन करेंगे। इस कार्य के लिए ब्रिटेन ने चुना कैप्टेन बॉण्ड के अलावा लेफ्टिनेंट ब्लूमफील्ड और लेफ्टिनेंट मनरो को। फ्रांस का प्रतिनिधित्व किया कैप्टेन ओशिओ के अतिरिक्त लेफ्टिनेंट दूप्रे और लेफ्टिनेंट फॉरे ने। सो, किस्मत के जादू से सहसा ही राजदूतों में बदल गए ये साधारण श्रेणी के अफसर मित्रदेशो के फौजी मिशनों के प्रतिनिधि बनकर

---

१. अपने साहस के लिए प्रसिद्ध पैदल सेना (फ्रान्स की)।

आए तो अतामान के महल में तूफान-सा आ गया।

राजदूतों को बड़े ठाट-बाट के साथ नोवोचेरकास्क लाया गया। लेकिन इन मामूली अफसरों का जिस तरह स्वागत-सत्कार और सम्मान किया गया, उससे उनके दिमाग खराब हो गए। वे अचानक ही अपने को सचमुच महान मान बैठे और प्रसिद्ध कज्जाक जनरलों और सर्वशक्तिशाली जनतंत्र के दूसरे प्रतिष्ठित जनों को नीची निगाह से देखने लगे।

फिर कज्जाक जनरलों से बातचीत होने लगी तो जातिगत बाहरी शिष्टाचार और मधुर विनय के बावजूद फ्रेंच लेफ्टिनेंटों की बातों की सख्ती से अपमान भी झांका और हेकड़ी भी।

शाम को महल में एक दावत की गई तो फौजी समवेत गायकों ने पूरे हॉल के वातावरण पर कज्जाक गीतों का रुपहला आवरण बुन दिया। आवरण पर धैवत स्वरों वाले सोलो गीतों की कसीदाकारी रही। पीतल के बाजोंवाला बैंडदल मित्रराष्ट्रों की राष्ट्रीय धुनें बजाता रहा। राजदूतों ने खाना धीरे-धीरे कायदे से, मर्यादा के साथ खाया और अवसर का ऐतिहासिक महत्त्व समझा। दूसरी ओर अतामान के मेहमानों ने उन्हें उत्सुकता की दृष्टि से देखा और बड़ा आदर दिया।

आसनोव ने अपना भाषण आरम्भ किया : "सज्जनो, इस समय आप एक ऐसे ऐतिहासिक कक्ष में बैठे हैं जिसकी दीवारों से १८१२ के, एक दूसरे राष्ट्रीय संघर्ष के सेनानी आपको शांत भाव से देख रहे हैं। प्लातोव, इलोवाइस्की और देनीसोव हमें उन पवित्र दिनों की याद दिलाते हैं, जब पेरिस की जनता ने अपने मुक्तिदाताओं की यानी दोन प्रदेश के कज्जाकों की राहों में पलकें बिछा दी थीं, और जब सम्राट अलेक्सान्द्र प्रथम ने भग्नावशेषों से खूबसूरत फ्रांस को उभारा था···"

इस बीच खूबसूरत फ्रांस के प्रतिनिधि काफी शैम्पेन ढाल गए थे। उनकी आंखों में नशे के लाल डोरे पड़ रहे थे, और वे मस्ती से चमकने लगी थीं। इस पर भी राजदूतों ने क्रासनोव की बातें ध्यान से सुनीं। क्रासनोव ने विस्तार से बतलाया कि जंगली बोलशेविकों के अत्याचारों के सिलसिले में रूसियों को कितना कुछ सहना पड़ा और कैसे-कैसे दुख उठाने पड़े। फिर, उसने अपनी बात खत्म की तो जरा दर्द भरे ढंग से—

"····रूसी जनता के श्रेष्ठ से श्रेष्ठ प्रतिनिधि बोलशेविकों की जेलों में मर रहे हैं। उनकी निगाहें आपपर जमी हुई हैं। उन्हें आपकी सहायता की प्रतीक्षा है। इसलिए सहायता आपको उनकी करनी चाहिए, और मात्र उनकी करनी चाहिए, दोन प्रदेश की नहीं। हम यह बात गर्व से कह सकते हैं कि हम स्वतंत्र हैं। परन्तु, हमारे सारे चिन्तन का केन्द्र-बिन्दु और हमारे सम्पूर्ण संघर्ष का उद्देश्य महान रूस है, जो अपने मित्र देशों के प्रति ईमानदार रहा है, जिसने उनके हितों की रक्षा की है, जिसने उनकी बलिवेदी पर स्वयं अपनी बलि दे दी है, और जिसे आज उनकी सहायता की अटूट प्यास है। आज से १०४ वर्ष पहले, मार्च के महीने में फ्रांस के लोगों ने सम्राट अलेक्सान्द्र प्रथम और उनके रूसी अंगरक्षकों का स्वागत किया था। उस दिन से फ्रांस के इतिहास में एक नये युग का समारम्भ हुआ था, और दुनिया के राष्ट्रों में फ्रांस की जगह पहली हो गई थी। १०४ वर्ष पहले हमारे अतामान काउंट प्लातोव लंदन गए थे। अब हमें प्रतीक्षा है कि आप मास्को पधारें और इस तरह मास्को पधारें कि हमारी राष्ट्रीय धुन के पवित्र स्वरों के साये में, हमारे साथ मार्च करते हुए क्रेमलिन प्रासाद में प्रवेश करें, ताकि शांति और स्वतन्त्रता की सम्पूर्ण माधुरी का हमारे साथ ही सुख ले सकें। रूस महान है। इन शब्दों में ही हमारे सारे सपने और सभी आशाएं प्रतिध्वनित हैं।····"

और आसनोव से अपना भाषण समाप्त किया कि कैप्टेन बॉण्ड बोलने को खड़ा हुआ। मो अंग्रेज़ी भाषा के हवा में गूंजते ही हर तरफ सन्नाटा हो गया। दुभाषिया अनुवाद के काम में तन-मन से डूब गया—

"कैप्टेन बॉण्ड, अपनी और कैप्टेन ओशिओं की ओर से दोन के अतामान को सूचना देना चाहते हैं कि वे और उनके साथी अफसर, एन्तेन्ते के सत्ताधारियों के सरकारी दूतों के रूप में यहां आए हैं और दोन-प्रदेश की सारी स्थिति के बारे में जानकारी हासिल करना चाहते हैं।···कैप्टेन बॉण्ड विश्वास दिलाते हैं कि एन्तेन्ते के सत्ताधारी, बोलशेविक-विरोधी साहसपूर्ण संघर्ष में दोन और स्वयंसेवक सेना की हर सम्भव साधनों से सहायता करेंगे, और इन साधनों की सूची से फौजी टुकड़ियों के नाम गायब नहीं होंगे।"

लेकिन दुभापिया अपना अन्तिम वाक्य पूरा भी नहीं कर पाया कि हाल की दीवारें तालियों की गड़गड़ाहट से हिलने लगीं। सभी लोगों ने 'खूबसूरत फ्रांस', 'शक्तिशाली ब्रिटेन' और 'बोलशेविकों पर विजय' के जाम उठाए और पिए। शैम्पेन गिलासों मे दमकती और झाग छोड़ती रही। पुरानी कहोर्स शराब की भीनी-भीनी मीठी महक हर ओर गमकती रही। मित्रदेशों के मिशनों के प्रतिनिधियों से बातचीत शुरू करने की आशा की गई और मेजबानों को इन्तजार नहीं करना पड़ा। कैप्टन बॉण्ड बोला, "मैं महान रूस देश के नाम जाम उठाता हूँ, और इस समय आपका शानदार राष्ट्रगीत सुनना चाहता हूँ। शब्द समझ में न आए तो न सही, मुझे तो सिर्फ उसके संगीत का रस चाहिए! ···"

दुभापिये ने अनुरोध का अनुवाद किया। अफ्रीकनोव का चेहरा भावावेग से पीला पड़ गया। वह अपने मेहमानों की ओर मुड़ा और टूटती हुई आवाज में चिल्लाया, "रूस महान हो···रूस एक हो···रूस को कोई बाँट न सके···हुर्रा···"

बैंड ने शानदार ढंग से 'प्रभु जार की रक्षा करो' बजाना शुरू किया। अपना-अपना गिलास खाली करते हुए हर व्यक्ति उठकर खड़ा हो गया। एक सफेद बालोंवाले आर्चबिशप की आँखों से आँसू बह चले। "कैसी शानदार धुन है!" कैप्टेन बॉण्ड ने गद्गद होकर कहा। वह इस बीच कुछ मजे मे आ चला था।···दूसरी ओर एक सरलहृदय विशिष्ट अतिथि महोदय इस तरह भावावेश की धारा में बहे कि फूट पड़े और मछली के अण्डों से बुरी तरह सने नैप्किन से दाढ़ी दबाकर रोने लगे।···

उस रात को अज़ोव-सागर की ओर हवा के तेज झोंके आए और पूरे नगर पर भयानक रूप से सर्राटे भरने लगे। पहले बर्फानी अधड़ के, हवा में नाचते हुए फूलों के बीच गिरजे के गुम्बद का रंग अजीब-अजीब-सा लगा।

उस रात को, शहर के बाहर श्लासतिन्स्क के बोलशेविक कर्मचारियों को फील्ड-कोर्टमार्शल के हुक्म से गोली मार दी गई। इसके लिए उनके हाथ पीछे बाँध दिए गए, उन्हें दो-दो के क्रम से पहाड़ की चोटी के सिरे पर ले जाया गया और बिल्कुल पास से रिवाल्वरों और

राइफलों की गोलियों से उड़ा दिया गया। सिगरेट की चिनगारियों की तरह गोलियों की आवाज़ भी पाले से नहाई हवा के पंख लगाकर उड़ गई।

और अतामान के महल के फाटक पर कज्जाक सलामी गारद जाड़े की आदमी को जमाकर बर्फ बना देनेवाली हवा के बीच स्थिर खड़ा रहा। अपनी खिंची हुई तलवारों की मूँठों को साधे-साधे कज्जाकों के हाथ काले पड़ गए। सर्दी के कारण उनकी आँखों से पानी बह चला और पैर सुन्न हो गए···दूसरी ओर, नशे में डूबी आवाज़ें, बैंडों की ढमाढम और फौजी कोरस की सिसकियों से भरी गूँजें सारी रात महल से बाहर आती रहीं।

एक सप्ताह बाद सबसे बुरी बात यह हुई कि मोर्चा डगमगाने लगा। सबसे पहले मोर्चा खुला छोड़ गई २८वीं रेजीमेंट। इसी रेजीमेंट में प्योत्र मेलेखोव काम करता था। शत्रु की अपने सामने की कमान से गुप्त बातचीत करने के बाद, कज्जाकों ने हट जाने और लालसेना को वेरोकटोक ऊपरी दोन-क्षेत्र की सीमा से निकल जाने देने का निश्चय किया, और छिछले दिमाग का, याकोव फोमिन नाम का कज्जाक बागी रेजीमेंट का नेता बना। पर, वास्तव में तो उसका नाम-भर था। आन्दोलन का संचालन तो सचमुच कुछ कज्जाकों का दल करता था। ये कज्जाक बोलशेविकों के प्रभाव में थे।

लेकिन, मोर्चे को लेकर एक बैठक हुई तो उसमें जैसे तूफान ही आ गया। गोलों के पीठ के वार से डरते हुए, मन-ही-मन संकोच करते हुए अफसरों ने संघर्ष के आगे भी चलाए जाने पर ज़ोर दिया। पर, कज्जाकों ने अपनी पूरी ताक़त से, बार-बार चिल्ला-चिल्लाकर अपने पुराने शब्द दोहराए, लड़ाई को अनावश्यक बतलाया और बोलशेविकों से सुलह की बात की। इसके बाद रेजीमेंट पीछे हटने लगी। फिर, पहले दिन के मार्च के अन्त में कमांडर और अधिकांश अफसरों ने रेजीमेंट छोड़ दी, और काउंट-मोलियर के ब्रिगेड से अपना तार जोड़ लिया। यह ब्रिगेड भारी हारों के बाद पीछे हट रहा था।

फिर, २८वीं रेजीमेंट के अनुकरण पर ३६वीं रेजीमेंट ने भी अपना स्थान छोड़ दिया। अफसरों-समेत, पूरी की पूरी रेजीमेंट कज्जाकों का

गई। रेजीमेंट का कमांडर एक नाटे कद का आदमी था। उसकी आँखों मे चालबाजी टपकती थी और कज्जाकों से साँठ-गाँठ कर उसने अपनी हैसियत बना रखी थी। सो, वह घुड़सवारों के घेरे में जिला कमांडेंट के पडाव वाले घर तक आया, अपने घोड़े की पीठ से नीचे उतरा और अपने चाबुक से खिलवाड़-सा करते हुए अन्दर घुसा। पूछा, "यहाँ कमांडेंट कौन है ?"

"मैं उनका नायब हूँ।" स्तेपान अस्ताखोव उठा और मर्यादा के साथ बोला, "दरवाज़ा बन्द कर दीजिए, साहब।"

"मैं २६वीं रेजीमेंट का कमांडर हूँ···कर्नल नाउमोव···मुझे अपनी कमान के लोगों के लिए नये कपड़े और जूते चाहिए। उनके कपड़े फटे-पुराने और पैर नंगे हैं···सुना तुमने ?"

"कमांडेंट इस समय यहाँ नहीं हैं, और उनकी इजाज़त के बिना मैं एक जोड़ा बूट भी स्टोर से नहीं निकाल सकता।"

"क्यों ?"

"बात जो थी, वह मैंने आपको बता दी···"

"तुम···तुम जानते हो कि तुम किससे बातें कर रहे हो ? मैं तुम्हें गिरफ्तार कर लूँगा, समझे।···जवानो, पकड़ लो इसे।···और स्टोर की ताली कहाँ है पालतू चूहे ?···" अफसर ने मेज़ पर चाबुक सटकारा और गुस्से से पीले पड़ते हुए, भेड़ की खाल की मुड़ी-मुड़ाई टोपी फिर से अपने सिर पर औंधा ली, "चुपचाप ताली दे दो···बेकार बहस की जरूरत नहीं !"

आधे घंटे के अन्दर-अन्दर भेड़ की खाल, फेल्ट-बूटों और चमड़े के बूटों के बंडल-के-बंडल स्टोर से उड़-उड़कर बर्फ पर आने लगे और चीनी के बोरों पर बोरे एक हाथ से गुजरकर दूसरे हाथ में पहुँचने लगे। चौक में लोग खुश-खुश मन के लड्डू फोड़ने और शोर-गुल करने लगे। इस बीच अपने नये कमांडर सार्जेंट मेजर फोमिन के नेतृत्व में २८वीं रेजीमेंट पीछे हटते-हटते व्येशेन्स्काया जिले तक पहुँच गई। उनके कोई तीस वर्स्ट पीछे लाल डिविजन की कुछ टुकड़ियाँ थीं और उनके गश्ती फौजी दुब्रोवका में पहले से ही फौजी बातों की जासूसी कर रहे थे।

इसके चार दिन पहले उत्तरी मोर्चे के कमांडर मेजर-जनरल इवानोव और उनके चीफ-ऑफ-स्टाफ जनरल जामब्रीजीत्स्की ने जल्दी-जल्दी कारगिस्काया खाली किया। उनकी मोटर बर्फ में इस तरह धँस गई कि चीफ ऑफ-स्टाफ की बीवी ने दाँतों से होठों से खून निकाल लिया, और बच्चे चिल्लाने लगे।

व्येशेन्स्काया में कुछ दिनों तक पूरी तरह अराजकता का राज्य रहा। अफवाहें सुनी गईं कि कारगिस्काया में बागी २८वीं रेजीमेंट पर हमला करने के लिए फौजें जमा की जा रही हैं। पर, २२ दिसम्बर को इवानोव का ऐडजुटेंट कारगिन्स्काया से आया और मन-ही-मन हँसते हुए, कमांडर से जो चीजें यहाँ छूट गई थीं, उन्हें जमाकर उठा ले गया—यानी वह ले गया—जनरल की नये तुर्रे वाली गरमी की टोपी, बालों का ब्रश, अन्दर पहने जानेवाले कपड़े, और दूसरी छोटी-मोटी चीजें।···

८वीं लालसेना की टुकड़ियाँ उत्तरी मोर्चे की सौ वर्स्ट लम्बी दरार में आती चली गईं। जनरल सवातेमेयेव बिना लड़े दोन तक पीछे हट गया। जनरल फित्सखालाउरोव की रेजीमेंटें भी जल्दी-जल्दी पीछे हटीं। एक सप्ताह तक उत्तर में गैर-मामूली ढंग का सन्नाटा रहा। मशीनगनों ने अपनी जबानें बन्द कर लीं और तोपें शांत हो गईं। दोन के ऊपरी प्रदेशों के कज्जाकों के अत्याचारों की दास्तानों से उत्तर में लड़ाई में व्यस्त दोन के निचले प्रदेश के कज्जाकों की हिम्मत टूट गई, और वे दुश्मन का मुकाबिला किए बिना पीछे हट गए। लालसेनाओं ने सावधानी से हर गाँव की जासूसी की और तब कहीं वे बहुत ही होशियारी से, धीरे-धीरे आगे बढ़ीं।

लेकिन, उत्तरी मोर्चे पर जो बरबादी हुई थी, उसके कारण दुःखी दोन सरकार को धीरज बँधाने के लिये जैसे एक खुशी की घटना घटी। २६ दिसम्बर को मित्रदेशों का एक मिशन नोवोचेरकास्क आया। उस मिशन में थे कान्स्टेन्टिनोपल में स्थित ब्रिटिश फौजी मिशन के अध्यक्ष जनरल पूल, उनके चीफ-ऑफ-स्टाफ कर्नल कीज और फ्रेंच प्रतिनिधि जनरल फ्रांशे-द-एस्पेरे और कैप्टेन ब्रूके।

क्रासनोव मित्रदेशों के अफसरों को मोर्चे पर ले आया, तो दिसम्बर के ठंडे महीने में एक दिन सवेरे चिर स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर सलामी-गारद

की व्यवस्था हुई। अपनी झूलती हुई मूँछों और पियक्कड़ों से चेहरे वाला जनरल ममोनतोव अपने अफसरों के घेरे में प्लेटफॉर्म पर चहलकदमी करने लगा तो ज़िन्दगी में पहली बार उसके कपड़े ठीक-ठाक और उसकी दाढ़ी-मूँछ साफ बनी लगी। ये लोग गाड़ी का इन्तज़ार करने लगे। 'स्टेशन' के बाहर फौजी बैंड के लोग रह-रहकर पैर पटकते और अपनी ठिठुरी हुई उँगलियों पर मुंह की भाप छोड़ते रहे। दोन के निचले प्रदेश के अलग-अलग उम्रों और रंग-ढंग के सजे-बजे कज्ज़ाक सलामी गारद में स्टेशन की मुद्रा में खड़े रहे। सफेद दाढ़ी वाले बूढ़ों के अलावा वहाँ बिना दाढ़ी-मूँछों वाले जवान भी दीखे और बालों के छल्ले माथों पर झुलाते आगे की पंक्ति के फौजी भी। बूढ़ों के बरानकोटों पर लोवचा और प्लेवना की लड़ाई में जीते सोने और चाँदी के मैडल दमकते रहे। जवानों के सीनों पर क्रॉस ही क्रॉस लटकते रहे। ये क्रॉस उन्होंने गोयक-तेप और सन्देप के हमलों और पेरेमीथल, वॉर्सा और ल्वोव की जर्मनी की लड़ाई में पाए थे। इनके पास दमकनेवाले पदकों जैसी कोई चीज़ न थी, पर ये लोग वॉयलिन के तारों की तरह कसे खड़े थे और हर मामले में अपनों बुर्ज़ुर्गों की नकल मारने की कोशिश करते थे।···

गाड़ी भाप के दूधिया बादल में ढकी धड़धड़ाती स्टेशन में दाखिल हुई। फिर जनरल पूल के सैलून के दरवाज़ों के खुलने के पहले ही बैंड-मास्टर ने अपनी छड़ी तेज़ी से हवा में लहराई और ब्रिटेन की राष्ट्रीय धुन वातावरण में गूँजने लगी। ममोनतोव, एक हाथ अपनी तलवार की मूठ पर जमाए, जनरल पूल के सैलून की ओर लपका। आतिथ्यप्रिय मेज़बान बासनोव अपने मेहमानों को कज्ज़ाकों की कसी हुई पंक्तियों के सामने से स्टेशन की इमारत में लाया।

"आज सारे के सारे कज्ज़ाक, अपने देश को लाल गार्दों के जंगली गिरोहों से बचाने के लिए उठ खड़े हुए हैं। सबूत में तीन की तीनों पीढ़ियों के प्रतिनिधि आपको यहाँ नजर आ रहे हैं। इन लोगों ने बाल्कान, जापान, ऑस्ट्रिया, हंगेरी और प्रशिया में लोहे से लोहा बजाया है और इस समय ये अपनी पितृभूमि की रक्षा के लिए लड़ रहे हैं।····"उसने मंजी हुई फ्रेंच में कहा, शानदार ढंग से मुस्कराया और एक कतार में

खड़े बूढ़ों की ओर देखकर शोभा से सिर हिलाया। बूढ़ों की आँखें निकली चली आ रही थी, और वे जैसे अपनी साँसें रोके खड़े थे।

ममोनतोव ने ऊपर के अफसरों के हुक्म की तामील में ज़रा भी वक्त न लगाया था और फौरन ही सलामी गारद के लिए लोगों का चुनाव कर डाला था।···उसके अपने तमगे इस वक्त बड़ा रोब डाल रहे थे।···

जनरल पूल ने वहाँ से रवाना होने से पहले क्रासनोव से कहा—"आपके ट्रूपों के फौजियों के रख-रखाव, अनुशासन और बहादुरी से जगमगाते चेहरे देखकर मुझे बड़ी ही खुशी हुई है। जहाँ तक मदद का सवाल है, मैं जल्दी से जल्दी हुक्म भेजूंगा और सालोनिका से हमारे फौजियों की पहली टुकड़ी आपके यहाँ भेज दी जाएगी।···पर जनरल, मेरा आपसे अनुरोध है कि आप तीन हजार जाड़े के कोट और बर्फ में पहनने के गर्म जूते फौरन ही तैयार करवा दें।···मुझे पूरी आशा है कि हमारी मदद से आप अपने यहाँ से बोलशेविकों का नाम-निशान तक मिटा सकेंगे।"

सो, भेड़ की खाल के छोटे कोट बड़ी हड़बड़ी में तैयार हुए और उतनी ही उतावली में जाड़े के बूटों में फेल्ट लगी। लेकिन न जाने क्यों मित्रदेशों की अभियानवाली सेना नोवोचेरकास्क आई ही नहीं। पूल लन्दन चला गया और उसकी जगह आया रूखा, घमंडी ब्रिग्ज। वह आया तो लन्दन से अपने साथ ताजा हुक्म भी लाया। सधे हुए जनरल के खड़े लहजे में उसने ऐलान किया—"हमारे महाराजाधिराज की सरकार दोन की स्वयंसेवक सेना को चीजों की मदद पूरी देगी, पर फौजी एक न देगी।"

फिलहाल वक्तव्य यह रहा। उस वक्तव्य पर आगे जो कुछ भी कहा-सुना जाता बेमतलब ही तो होता!

: १२ :

फूट के उस जमाने में विरोध और दुश्मनी की भावना ने ऐसे हाथ-पैर फैलाए कि क्या कहिए! इस भावना ने साम्राज्यवादी युद्ध के जमाने तक में सिर उठाया था, और कज़ाकों और उनके अफसरों के बीच बहुत बड़ी दीवार खड़ी हो गई थी। १९१७ के अन्त में कज़ाक रेजीमेंटों ने धीरे-धीरे दोन-प्रदेश की ओर रुख करना शुरू किया था तो अफसरों के

कत्लों और उनके साथ विश्वासघात की कम मिसालें सामने आई थी। ···लेकिन, एक साल बाद यही दोनों चीजें हर आए दिन की बात हो गई थीं। कज्जाक अपने अफसरों को, लालसेना के कमांडरों के अनुकरण पर, आगे-आगे चलने पर मजबूर करते और फिर पीछे से पीठ पर गोली मार देते। सत जार्ज की गुन्दोरोव्स्की रेजीमेंट जैसी कुछ यूनिटों में चरित्र अब भी ऊँचा था, पर दोन सेना में ऐसी यूनिटें इनी-गिनी ही थीं।

प्योत्र मेलखोव का दिमाग वैसे तो जरा धीमी रफ्तार से काम करता था, पर सूझ-बूझ उसमें थी। इसलिए उसने तो यह बात एक जमाने पहले समझ ली थी कि कज्जाकों से वहम में पड़ने का मतलब मौत को दावतनामा भेजना है। यही कारण है कि विद्रोह के आरम्भिक समय में उसने अपने यानी एक अफसर और आम फौजियों के बीच की खाई बहुत ही होशियारी से पाटनी चाही थी। अपना वक्त जरा देख-समझकर वह उन्हींकी तरह लड़ाई को बेमतलब बतलाना पर मन से झूठ बोलने पर भी पकड़ में न आता। *होते-होते उसने अपने को यों दिखलाना शुरू किया* जैसेकि वह बोलशेविकों के रंग में रँगा हो। फिर, याकोव फोमिन को कमांडर के पीछे हाथ धोकर पड़ा देखकर, उसका अनुग्रह अर्जित करने, और उसका कृपापात्र बनने की जान-बूझकर कोशिशें करने लगा। यानी बाकी लोगों की तरह वह भी तुरन्त ही लूटपाट में हिस्सा लेने, अफसरों को पानी पीकर कोसने और कैदियों को छोड़ देने लगा। वैसे सचमुच तो कैदियों को देखकर उसका मन घृणा से भर उठता और उन्हें एक ही बार में खतम कर देने की इच्छा में उसके हाथ काँपने लगते। जहाँ तक अनुशासन का सवाल है, वह मित्रतापूर्ण व्यवहार करता और लोगों की दस तरह की बातें मान लेता। एक शब्द में वह एक अफसर न होकर मोम का एक गोला था।

इस तरह उसने कज्जाकों का विश्वास जीत लिया, और उनके देखते-देखते अपने रंग-ढंग बदल डाले।

फिर रेजीमेंट के कमांडर ने दूसरे अफसरों को साधा तो वह पीछे रहा। शांत रहा। उसने व्यवहार के मामले में रोकथाम से काम लिया और अपने को हमेशा आड़ में रखा। इसी ढंग से वह अपने रेजीमेंट के साथ

व्येशेन्स्काया आया, पर वहाँ दो दिन बिताने के बाद उससे गाड़ी आगे न चली और स्टाफ के लोगों या फोमिन को बतलाए बिना वह अपने गाँव के लिए चल दिया।

उस दिन व्येशेन्स्काया के बाजारवाले चौक में, पुराने गिरजे के सामने, सुबह तड़के से ही एक मीटिंग चल रही थी। रेजीमेंट को लालसेना के प्रतिनिधियों के आने का इन्तजार था। कज्जाक गिरोह बनाए, बरानकोट, फर के अस्तर की जैकेटें, ओवरकोटों को काटकर बनाए गए छोटे कोट या ऊन के अस्तरवाले कोट पहने चौक-भर में जहाँ-तहाँ चहलकदमी कर रहे थे। भला देखता तो इस लम्बी-चौड़ी, अस्त-व्यस्त भीड़ को कौन रद्दवा रेजीमेंट मान लेता। प्योत्र निराशा से भरकर एक दल से दूसरे दल के चक्कर काट रहा था, और कज्जाकों का अध्ययन कर रहा था। मोर्चे पर वह इनके लिबास के रोब में न आया था। सच तो यह है कि उसने पूरे रेजीमेंट को एकसाथ कभी देखा ही न था। सो, इस समय अपनी मूँछों के सिरे नफरत से चबाते हुए उसने भेड़ की खालों की टोपियों, टोपों और कनटोपों से मढ़े सिरों को नजर गाड़कर देखा। फिर, आँखें नीची कीं तो नजर उनके फेल्ट-बूटों और लालगार्दों से लिए गए छोटे बूटों के ऊपर बँधी पट्टियों पर पड़ी। वेवम-ने क्रोध से अन्दर ही अन्दर जलते हुए बोला, 'कमीने किसान! गए-बीते गधे! ···'

फोमिन के आदेश जंगलो पर टंगे रहे। नतीजा यह कि व्येशेन्स्काया का एक भी आदमी सड़क पर कहीं नजर न आया। जगह के कुल के कुल लोग जैसे कि वहीं जाकर छिपे रहे। बर्फ की रौ में बह गई दोन का दूधिया वक्ष किनारे की गलियों के बीच की दरारों से झलकता रहा। उसके पार चमकता रहा काली स्याही से धुला जंगल। अलग-अलग गाँवों से जो औरतें अपने पतियों से मिलने के लिए आई, वे गिरजे के भूरे पत्थरों के पास एक-दूसरे से सटी खड़ी रहीं।

इस समय प्योत्र के बदन पर फर के अस्तर और सीने पर लम्बी-चौड़ी जेबवाली जैकेट थी और सिर पर बदनसीब अफसरोंवाला अस्त्रा-खानी टोप था। इस टोप पर तो उसे अभी, कुछ समय पहले तक बड़ा अभिमान रहा था। तो उसने सभी लोगों को, अपने को, बनरसी से देखते

देखा। उसके मन की उत्सुकता सहज ही बढ़ गई। वह कुछ क्षणों के लिए ठिठक गया और चौक के बीचो-बीच, एक पीपे पर खड़े लालसेना के एक मोटे-से फौजी की बातें सुनने लगा। फौजी ने अच्छे किस्म का बरानकोट और मेमने की खाल की नई टोपी पहन रखी थी। उसके हाथों में फर के दस्ताने थे।

इस आदमी ने अपने गले में लिपटा सफेद खरगोश का फर ठीक किया और चारों ओर देखा।

"साथी कज्ज़ाको···" धीमी भर्राई हुई आवाज़ प्योत्र के कानों में पड़ी। प्योत्र ने आसपास नज़र दौड़ाई तो उसे लगा कि कज्ज़ाकों को 'साथियो' का सम्बोधन बहुत अजीब-अजीब-सा लगा है—वे परेशान होकर एक-दूसरे की ओर देख रहे और आँखें मार रहे हैं।

दूसरी ओर लालसेना का वह सदस्य कितनी ही देर तक सोवियत सरकार, लालसेना और उनके और कज्ज़ाकों के बीच के सम्बन्धों की चर्चा करता रहा। लोग बीच-बीच में उसकी बात काटते और चिल्लाते रहे, "साथी, 'कम्यून' से क्या मतलब है आपका?"

"लोग हमें कम्यून में शामिल होने भी देंगे?"

"और, यह कम्युनिस्ट पार्टी क्या है?"

वक्ता ने अपने सीने पर हाथ दबाकर रखा और बड़े धैर्य से समझाया, "साथियो, कम्युनिस्ट पार्टी अपनी इच्छा का मामला है। इस पार्टी में लोग अपने मन से शामिल होते हैं क्योंकि वे मजदूरों और किसानों को पूँजी-वादियों और जमींदारों के अत्याचारों से छुटकारा दिलाना चाहते हैं।"

ऐन इस वाक्य के बाद कोई और चीखा, "हमें कम्युनिस्टों और कमी-सारों के बारे में और कुछ बतलाइए।"

और, उस आदमी की बात पूरी भी नहीं हो पाई कि एक दूसरी ज़ोर की आवाज़ आई, "हम नहीं समझते कि आप बातें किस चीज़ के बारे में कर रहे हैं। हम यहाँ के लोग कुछ नहीं जानते। ज़रा आसान ज़बान इस्ते-माल कीजिए···"

और, लालसेना के फौजी ने अपनी बात खत्म की कि याकोव फोमिन उठ खड़ा हुआ। उसने बहुत ही नीरस और लम्बा भाषण दिया। बड़े-बड़े

व्येशेन्स्काया आया, पर वहाँ दो दिन बिताने के बाद उससे गाड़ी आगे न चली और स्टाफ के लोगों या फोमिन को बतलाए बिना वह अपने गाँव के लिए चल दिया।

उस दिन व्येशेन्स्काया के बाजारवाले चौक में, पुराने गिरजे के सामने, सुबह तड़के से ही एक मीटिंग चल रही थी। रेजीमेंट को लालसेना के प्रतिनिधियों के आने का इन्तजार था। कज्जाक गिरोह बनाए, बरानकोट, फर के अस्तर की जैकेटें, ओवरकोटों को काटकर बनाए गए छोटे कोट या ऊन के अस्तरवाले कोट पहने चौक-भर में जहाँ-तहाँ चहलकदमी कर रहे थे। भला देखता तो इस लम्बी-चौड़ी, अस्त-व्यस्त भीड़ को कौन २८वां रेजीमेंट मान लेता। प्योत्र निराशा से भरकर एक दल से दूसरे दल के चक्कर काट रहा था, और कज्जाकों का अध्ययन कर रहा था। मोर्चे पर वह इनके लिबास के रौब में न आया था। सच तो यह है कि उसने पूरे रेजीमेंट को एकसाथ कभी देखा ही न था। सो, इस समय अपनी मूँछों के सिरे नफरत से चबाते हुए उसने भेड़ की खालों की टोपियों, टोपों और कनटोपों से मढ़े सिरों को नजर गाड़कर देखा। फिर, आँखें नीची कीं तो नजर उनके फेल्ट-बूटों और लालगार्डों से लिए गए छोटे बूटों के ऊपर बँधी पट्टियों पर पड़ी। बेबस-से क्रोध से अन्दर ही अन्दर जलते हुए बोला, 'कमीने किसान ! गए-बीते गधे ! ···'

फोमिन के आदेश जंगलों पर टंगे रहे। नतीजा यह कि व्येशेन्स्काया का एक भी आदमी सड़क पर कहीं नजर न आया। जगह के कुल के कुल लोग जैसे कि कहीं जाकर छिपे रहे। बर्फ की रौ में बह गई दोन का दूधिया [illegible] किनारे की गलियों के बीच की दरारों से झलकता रहा। उसके पार [illegible] रहा काली स्याही से धुला जंगल। अलग-अलग गाँवों से जो [illegible]ें अपने पतियों से मिलने के लिए आईं, वे गिरजे के भूरे पत्थरों के [illegible] एक-दूसरे से सटी खड़ी रहीं।

इस समय प्योत्र के बदन पर फर के अस्तर और सीने पर लम्बी-[illegible] जेबवाली जैकेट थी और सिर पर बदनसीब अफसरोंवाला अस्त्रा-[illegible] टोप था। इस टोप पर तो उसे अभी, कुछ समय पहले तक बड़ा [illegible] था। तो उसने सभी लोगों को, अपने को, कनखी से देखते

देखा। उसके मन की उत्सुकता सहज ही बढ़ गई। वह कुछ क्षणों के लिए ठिठक गया और चौक के बीचों-बीच, एक पीपे पर खड़े लालसेना के एक मोटे-से फौजी की बातें सुनने लगा। फौजी ने बन्दे किस्म का बरानकोट और मेमने की खाल की नई टोपी पहन रखी थी। उसके हाथों में फर के दस्ताने थे।

इस आदमी ने अपने गले में लिपटा सफ़ेद खरगोश का फर ठीक किया और चारों ओर देखा।

"साथी कज्जाको···" धीमी भर्राई हुई आवाज प्योत्र के कानों में पड़ी। प्योत्र ने आसपास नजर दौड़ाई तो उसे लगा कि कज्जाकों को 'साथियो' का सम्बोधन बहुत अजीब-सजीब-सा लगा है—वे परेशान होकर एक-दूसरे की ओर देख रहे और आँखें मार रहे हैं।

दूसरी ओर लालसेना का वह सदस्य कितनी ही देर तक सोवियत सरकार, लालसेना और उनके और कज्जाकों के बीच के सम्बन्धों की चर्चा करता रहा। लोग बीच-बीच में उसकी बात काटते और चिल्लाते रहे, "साथी, 'कम्यून' से क्या मतलब है आपका ?"

"लोग हमें कम्यून में शामिल होने भी देंगे ?"

"और, यह कम्युनिस्ट पार्टी क्या है ?"

वक्ता ने अपने सीने पर हाथ दबाकर रखा और बड़े धैर्य से समझाया, "साथियो, कम्युनिस्ट पार्टी अपनी इच्छा का मामला है। इस पार्टी में लोग अपने मन से शामिल होते हैं क्योंकि वे मजदूरों और किसानों को पूँजी-वादियों और जमींदारों के अत्याचारों से छुटकारा दिलाना चाहते हैं।"

ऐन इस वाक्य के बाद कोई और चीखा, "हमें कम्युनिस्टों और बामी-सारों के बारे में और कुछ बतलाइए।"

और, उस आदमी की बात पूरी भी नहीं हो पाई कि एक दूसरी ओर की आवाज आई, "हम नहीं समझते कि आप बातें किस चीज के बारे में कर रहे हैं। हम यहाँ के लोग कुछ नहीं जानते। जरा आसान जबान इस्ते-माल कीजिए···"

और, लालसेना के फौजी ने अपनी बात खत्म की कि याकोव फोमिन उठ खड़ा हुआ। उसने बहुत ही नीरस और लम्बा भाषण दिया। बड़े-बड़े

शब्द इस्तेमाल कर लोगों पर रंग जमाने की कोशिश की, मगर मजाक यह रहा कि वह स्वयं भी उनका उच्चारण बड़ी-बड़ी मुश्किलों के बाद ही कर पाया। एक कमउम्र लड़का, विद्यार्थियों की सी टोपी लगाए और शानदार कोट पहने, रह-रहकर उसके आगे उचकता रहा। वक्ता की उल्टी-सीधी बातें सुनते-सुनते प्योत्र को, फोमिन का लड़ाई में पहली बार अपने सामने आना याद हो आया। साल १९१७ की फरवरी की थी। उस समय वह पेत्रोग्राद जा रहा था और दार्या उनसे मिलने स्टेशन आई थी।

प्योत्र की आँखों के आगे आ गया अतामान की रेजीमेंट से भागा हुआ फोमिन···आँखें नम और चमकती हुई···बदन पर बरानकोट···बरानकोट के कंधे की पट्टी पर, लगभग मिट गया-सा '५२' का नम्बर···और, भालू की सी जंगली चाल।

'भाई, अब और बर्दाश्त नहीं होगा!' प्योत्र को याद आए उसके शब्द और उसकी आँखें क्रोध से जलने लगीं, 'पीठ दिखाकर भाग खड़ा होनेवाला बुज़दिल···क्रिस्तोनिया की तरह बेवकूफ···और, आज वही आदमी रेजीमेंट का कमांडर है, और मैं कहीं का नहीं हूँ।···'

फोमिन की बात खत्म हुई तो सीने पर मशीनगन की पेटीवाले एक कज्जाक ने उसकी जगह ली और हाथ फैलाते हुए, भर्राई हुई आवाज में जोर से बोला, "सुनो भाई, मैं खुद पोदत्योलकोव की टुकड़ी में रहा हूँ··· अब ऐसा लगता है कि हम सब लोगों को कंधे से कंधा मिलाकर एक साथ कैडेटों से लोहा लेना होगा।"

प्योत्र मुड़ा और तेजी से अपने क्वार्टर की ओर बढ़ा। यहाँ वह अपना घोड़ा कसने लगा कि राइफलों के दगने की आवाजें उसके कानों में पड़ीं। इसका मतलब यह कि कज्जाक ग्लेबोन्स्काया छोड़कर जा रहे थे और पुरानी परम्परा के अनुसार राइफलें दागकर इस बात का ऐलान कर रहे थे कि हम फौजी अपने-अपने घर-गाँवों को लौट रहे हैं।

: १३ :

आशंका की स्थिरता से भरे छोटे दिन कटाई के दिनों से कहीं लम्बे लगते थे। गाँव अछूते, क्वारे स्तैपी के मैदान की तरह फैले हुए थे। दोन के

किनारे के सभी ज़िले किसी महामारी की मुट्ठी में बंद मुर्दा-से महसूस हो रहे थे। सभी बस्तियों के ऊपर जैसेकि काले परवाला एक बादल मँडरा रहा था। यह बादल बढ़ता गया था, बढ़ता गया था, और इसने यहाँ से वहाँ तक का पूरा पसारा घेर लिया था। अब जैसेकि इन्तज़ार था कि ज़ोर की ऐसी हवा चले जो देवदारु के पेड़ों को लचाकर धरती से मिला दे, बिजली की कड़क से बरबादी की धमकी दोन के पार के कपूरी जंगल को दे, खड़िया की पहाड़ियों से काई से मढ़े कंकड़ रह-रहकर उछाले, और आँधी-पानी की, विनाश की भाषा में गरजकर बोले।

आज सुबह से तातारस्की और पूरे स्तेपी को धुँध ने अपनी बाँहों में कस रखा था। पहाड़ियों के बीच की गड़गड़ाहट ने पाले की पूर्व-सूचना दी थी। दोपहर होते-होते सूरज धुँध की परतों से उभर आया था, लेकिन उसका बोझ हलका कहीं से न हुआ था। धुँध दोन के किनारे की पहाड़ियों में बेमतलब इधर-उधर भटक रही थी, चोटियों में भरकर भर गई थी और नम गर्द के रूप में खड़िया की पहाड़ियों के ढालों और नंगी, बर्फीली चोटियों पर बैठ गई थी।······

शाम हुई तो नंगे जंगल के भालों के बीच से चाँद की दहकती हुई ढाल उभरी। चाँदनी धुँध में नहाई रही, और साँस खींचकर पड़े गाँवों पर, लड़ाई और आग की खूनी रोशनी बरसाती रही। इस बेरहम रोशनी ने लोगों के दिलों में डर की धुँधली-धुँधली-सी रेखाएँ खींच दीं। जानवर एक अनजानी उत्सुकता से बेचैन रहे। घोड़े और बैल तड़का होने तक अहातों में इधर-उधर घूमते रहे। कुत्ते रोते रहे। मुर्गे आधी रात होने के काफ़ी पहले से ही एक-एक कर बाँग देने लगे। सुबह का झुटपुटा हुआ तो पाले ने गीले पेड़ों की शाखों पर बर्फ़ की परतें मढ़ दीं। हवा ने उन्हें झकझोरा तो वे इस्पात की रकाबों की तरह बजने लगीं। ऐसा लगा जैसेकि अनदेखे, घुड़सवारों की फ़ौज, अँधेरे जंगल और भूरी धुँध के बीच से दोन के बायें किनारे से आगे बढ़ी आ रही है और घोड़ों की रकाबें और घुड़सवारों के हथियार झनझना रहे हैं।

तातारस्की के जो कज़्ज़ाक लड़ने के लिये उत्तरी मोर्चे पर गए थे, वे दोन की दिशा में पीछे हटे थे। उन्होंने अपनी-अपनी रेजीमेंट छोड़ दी थी

और उनमें से लगभग सभी गाँव लौट आए थे। हर दिन एक-न-एक ऐसा घुड़सवार लौटता जिसे किसी-न-किसी कारण से रास्ते में देर हो गई होती। कुछ लोग ऐसे लौटते जो आते ही अपने घोड़ों की पीठ से साज उतार लेते। अपना फौजी साज-सामान भूसे की टाल या शेड में डाल देते और फिर कई-कई दिनों तक लाल-सैनिकों की राह देखते रहते। मगर बाकी लोग अपने घोड़े लेकर अहातों में आते, अपनी बीवियों के साथ एक रात बिताते, सुबह खाने-पीने की ताजी चीजें लेते और घोड़े पर सवार होकर स्तेपी के रास्तों के किनारे-किनारे बढ़ देते। वे पहाड़ी की चोटी से मुड़कर नीचे की दोन की दूधिया, बेजान धार को और अपने गाँव को भर-आँख देखते। सोचते कि उनके अपने घर-गाँव और प्यारी दोन नदी का यह शायद अन्तिम दर्शन हो !

कौन पहले से जान सकता है कि मौत से मुलाकात कब और कहाँ हो जाएगी ? कौन कह सकता है कि ज़िन्दगी का यह रास्ता कहाँ खत्म हो जाएगा ?…घोड़े गाँव से चलते तो उनके कदम, अपने गाँव के मोह के कारण कठिनाई से ही उठते। कज्ज़ाकों के दिल जमकर बर्फ हो जाते और अपने सगे-सम्बन्धियों से अलग होने का दर्द वे दिल से निकाले न निकाल पाते। फिर वे सड़क पर आगे बढ़ते तो घर-परिवार की याद रह-रहकर टीसती और तरह-तरह के ख्याल इस तरह आते कि सिर भारी हो उठता। कभी-कभी खून की तरह खारे आँसू काठी पर टपक आते, फिर वहाँ से रकाबों पर चू आते और रकाबों से घोड़ों के खुरों से घायल सड़क पर आ गिरते। और, फिर वसन्त में वहाँ विदाई का पीला-लाल फूल तक न उगता।…

प्योत्र आज रात व्येशेन्स्काया से आया तो अगली रात को मेलेखोव के यहाँ परिवार की परिषद् जुटी।

"क्यों, क्या बात है ?" प्योत्र के ड्योढ़ी लाँघते ही पॅन्तेली ने पूछा —"लड़ाई से जी भर गया ? अफसर की पट्टियों के बिना ही आ गए हो तुम ?…खैर, जाओ, अपने भाई से हाथ मिलाओ और माँ को दिल से लगाओ। तुम्हारी बीवी तुम्हारे लिए कलप-कलप कर अधमरी हो गई है …शाबाश…शाबाश…प्योत्र ! ग्रिगोरी, तुम पहाड़ी चूहे की तरह वहाँ

पड़े क्या हो ? नीचे, उतरकर आओ।"

ग्रिगोरी ने अपने नंगे पैर लटका लिए और काले बालों से भरा सीना खुजलाते हुए अपने भाई को देखने लगा। भाई ने अपनी सुन्न उँगलियों से तलवार की पेटी खोली और अपने कनटोप के बंद टटोले। दार्या मुँह से कुछ नहीं बोली। वह अपने पति की आँखों में आँखें डालकर मुस्कराई। फिर, उसने भेड़ की खाल की उसकी जैकेट के बटन खोले और उसकी दाहिनी ओर से नजर बचाई। वहाँ रिवाल्वर के केस के पास ही एक हय-बम कसा दीखा।

दून्या अपने भाई का जल्दी में चुम्बन लेकर उसका घोड़ा देखने के लिए बाहर दौड़ी। इलीनीचिना ने ऐप्रन के सिरे से अपने होंठ पोंछे और अपनी 'पहली औलाद' को चूमने की तैयारी की। नताल्या स्टोव के पास इधर-उधर करती रही। उसके बच्चे स्कर्ट से चिपके रहे। हर व्यक्ति कुछ सुन पाने की भावना से प्योत्र की ओर देखता रहा, पर उसने भर्राए हुए गले से केवल लोगों के सुस्वास्थ्य की कामना की और फिर चुपचाप ओवरकोट आदि उतारने के बाद बहुत देर तक जई की सीकों की झाड़ू से अपने जूते साफ करता रहा। इसके बाद वह सीधा हुआ। उसके होंठों में हरकत हुई और उदास मन से उसने अपना चेहरा पलंग के सिरहाने से टेका तो सभीने पाला-मारे उसके साँवले गालों पर आँसू चमकते देखे।

"वाह रे फौजी···वाह···यह क्या हुआ ?" पिता ने मन की घबड़ाहट पर हँसी का पर्दा डाला।

"हमारा खेल तो खत्म हो गया, पापा !" प्योत्र का चेहरा ऐंठा, उसकी भौंहें काँपीं, और अपनी आँखें छिपाते हुए उसने तम्बाकू के दागों-वाले गंदे रुमाल से नाक पोंछी।

ग्रिगोरी ने अपने बदन से बदन रगड़ती बिल्ली को धक्का देकर एक ओर किया और एक चीख के साथ स्टोव से नीचे उतर आया। माँ फूट पड़ी, और सिसकते हुए प्योत्र का जूओं-भरा सिर चूमने लगी। पर, दूसरे ही क्षण अलग हो गई और बोली, "बेटे···थोड़ा-सा दही ले आऊ तुम्हारे लिए ? जाओ, जाकर वहाँ बैठो···तुम्हारा शोरबा ठंडा हो रहा है।··· तुम्हें भूख लगी है···है न ?···"

प्योत्र मेज के किनारे जाकर बैठा तो भतीजा पास आ गया। फिर, उसने उस बच्चे के घुटने थपथपाए तो खुद भी खिल उठा। उसने अपने मन की उथल-पुथल पर काबू पाने की कोशिश की, और २८वीं रेजीमेंट के मोर्चे से पीछे हटने, अफसरों और फोमिन के भाग निकलने और व्येशेन्स्काया में सभा होने का जिक्र किया।

"क्या ख्याल है तुम्हारा इन सारी चीजों के बारे में ?" ग्रिगोरी ने काली नसोंवाला अपना हाथ अपनी बेटी के सिर पर रखते हुए पूछा।

"ख्याल करने को क्या है ? मैं कल घर पर रहूँगा और रात होते ही घोड़े पर सवार होकर चल दूँगा। मेरे लिए थोड़ा-सा खाना तैयार कर दो माँ !" उसने इलीनीचिना से कहा।

"इसका मतलब यह है कि तुम यहाँ से खिसक रहे हो···क्यों ?···" पैन्तेली ने उँगलियाँ तम्बाकू की थैली में डाली और तम्बाकू चुटकी में लिए खड़ा प्योत्र के जवाब का इन्तजार करता रहा।

प्योत्र उठा, काले देव-चित्रों के सामने खड़े होकर सीने पर क्रॉस बनाया और करुणा से भरकर पिता की ओर घूरते हुए तीखी आवाज में बोला—"ईसा बचाए मुझे ! बहुत हो लिया ! तुम खिसकने की बात कह रहे हो ? और हो क्या सकता है ? मैं पीछे रहकर क्या करूंगा ? पीछे रहूँगा इसलिए कि लाल तोंदों वाले लोग आए और मेरा सिर उड़ा दें ! तुम चाहो तो यहाँ बने रहने की बात सोचो, मैं तो नहीं सोच सकता। वे लोग अफसरों के साथ किसी तरह की कोई रियायत न करेंगे।"

"और इस घरबार का क्या होगा ? क्या हम इसे योंही छोड़ देंगे ?"

प्योत्र ने अपने पिता के सवाल के जवाब में सिर्फ कंधे झटके। लेकिन दार्‌या फौरन बोली—"तुम चले जाओगे और हम सब यहीं रह जाएंगे··· क्या बात है ! यानी हम यहाँ रहेंगे, तुम्हारी जमीन-जायदाद देखेंगे, और लोग नहीं बख्शेंगे तो उसके लिए जानें देंगे···क्यों ? ···ऐसी-तैसी में जाए ! ···मैं यहाँ नहीं ठहरने की !"

और तो और, नताल्या तक बीच में बोल उठी और दार्‌या की बजती हुई आवाज को दबाते हुए कहने लगी, "अगर गाँव के सभी लोग चले जा रहे हैं, तो हम भी यहाँ नहीं रहेंगे। हम पैदल चले जाएंगे।"

"बेवकूफो...कुतियो!..." पैन्तेली अपनी आँखें नचाते हुए चीखा और अपने बेंत की तलाश करने लगा—"तुम अपने मुँह बंद करो न, चुड़ैलो! यह मर्दों की बात है और तुम अपनी टाँग अड़ाए चली जा रही हो! अच्छा मान लो कि हम सब कुछ छोड़-छाड़कर यहाँ से चल दें तो पैदल चलकर कहाँ तक पहुँचेंगे? फिर इन दोनों का हम क्या करेंगे? इस मकान का क्या करेंगे? यानी, इन ढोरों और इस मकान को अपनी जेबों में भर लेंगे?"

"तुम बेकार परेशान हो रही हो लड़कियो!" इलीनीचिना ने अपने पति की हाँ में हाँ मिलाई—"तुमने तो खट-खटकर फार्म का तिनका-तिनका जोड़ा नहीं है, इसलिए तुम्हारे लिए आसान है कि उसे छोड़ दो और हाथ फटकारती चल दो। लेकिन हम दोनों ने तो मेहनत में दिन-रात एक किए हैं, हम यहाँ से कहीं नहीं जा सकते।" बुढ़िया ने होंठ भींचे और लम्बी साँस ली—"तुम जाओ...मैं यहाँ से टस से मस नहीं हो सकती... किसी अजनबी के जंगले पर दम तोड़ने से अपनी ड्योढ़ी पर साँस छोड़ना कहीं अच्छा है!"

पैन्तेली ने लम्बी साँसें लेते और कराहते हुए लैम्प की बत्ती ठीक की। एक मिनट तक बिल्कुल सन्नाटा रहा। इसके बाद दून्या ने मोजे बुनते-बुनते अपना सिर उठाया और बोली—"हम ढोरों को भी अपने साथ हाँक चल ले सकते हैं।...ढोरों की वजह से बने रहने की मुझे तो कोई जरूरत नहीं दीखती।"

इसपर बूढ़ा फिर गरम हो उठा। उसने बहुत दिनों तक अस्तबल में बँधे रहे स्टैलियन की तरह पैर पटके और स्टोव के पास पड़े बच्चे से ठोकर खाकर गिरते-गिरते बचा। फिर दून्या के सामने खड़े होकर गरजा—"हम ढोरों को अपने साथ हाँक ले चल सकते हैं!...पता है कि बूढ़ी गैया ब्यानेवाली है? उसका क्या होगा? कितनी दूर तक हाँककर कोई ले जाएगा उसे? तेरे गुनाह तुझे खा जाएँ! छिनाल कहीं की...हराम-जादी...नाली का कीड़ा...मर-मरकर तो हमने जैसे-तैसे घर बनाया है, और आज सुनने को यह मिल रहा है!...भेड़ों का क्या होगा? मेमनों का क्या इन्तजाम किया जाएगा?...कुतिया कहीं की, अच्छा हो कि तू

अपनी ज़बान बंद रख !"

ग्रिगोरी ने कनखी से प्योत्र पर निगाह डाली और अपने भाई की आंखों में पहले की तरह ही शरारत, मगर आदर-भरी मुस्कान देखी। उसकी गदुमी रंग की मूंछें भी उसी तरह ऐंठी रहीं। प्योत्र बार-बार पलकें झपकाने लगा, और रुकी हुई हँसी के कारण उसका बदन कांपने लगा। ग्रिगोरी इधर वर्षों से हँसा न था, पर आज उसकी भी हँसने की इच्छा हुई तो वह बिना बने ठठाकर हँसा—

"खैर बात छोडो, ईसा जो करेंगे, ठीक ही करेंगे···हम काफी बातें कर चुके···" बूढे ने ग्रिगोरी की ओर क्रोध से घूरकर देखा और पाले से मढी खिड़की की ओर चेहरा कर बैठ गया।

इस तरह आधी रात होने पर ही एक बात आम तौर पर तय पाई; और वह यह, कि तीनों मर्द तातारस्की से चले जाएं और औरतें फार्म और घरवार की देखभाल के लिए गाँव में ही बनी रहें।···

सो, सूरज निकलने के बहुत पहले ही इलीनीचिना ने स्टोव धधका दिया और सुबह होते-होते रोटी बना ली और दो बोरे 'सुखारी' (सूखी रोटी के टुकडे) तैयार कर लिए। बूढे ने स्टोव के पास ही बैठकर नाश्ता किया। फिर तडका होने पर जानवरो को प्यार से थपकने और रवानगी के लिए स्लेज तैयार करवाने के लिए बाहर आया। यहाँ खत्ती मे वह बहुत देर तक नाज से भरे घड़ों मे हाथ डाले खडा रहा और नाज के दानों को उँगलियों से दुलारता रहा। फिर, उसने टोपी उतारकर हाथ में ले ली और बाहर आकर दरवाजा इस तरह धीरे से बद किया, जैसेकि किसी लाश को छोडकर चला आ रहा हो।···

बाहर, शेड के नीचे वह स्लेज के चारों ओर चक्कर लगाता ही रहा कि सडक पर अनीकुश्का दिखलाई पडा। वह अपनी गाय को पानी पिलाने के लिए ले जा रहा था।···

दोनों ने एक-दूसरे का अभिवादन किया। पँन्तेली ने पूछा—"यहाँ से चले जाने की तैयारी कर रहे हो, अनीकुश्का ?"

"मैं यहाँ से जाने की तैयारी करूंगा ? अरे भाई, नगे आदमी को पेटी की जरूरत नहीं पड़ती। मेरा जो कुछ है, मेरे अन्दर है। राह में दूसरे

लोगों की चीज़ें जरूर उठा सकता हूँ।"

"कोई खबर ?"

"खबरें ही खबरें हैं, प्रोकोफियेविच !"

"क्या खबरें हैं ?" पॅन्तेली उत्सुक हो उठा और उसने अपनी कुल्हाड़ी स्लेज के बाजू में खोंस दी।

"लालफौज के लोग यहाँ आने ही वाले हैं। ब्येशेन्स्काया के पास तक पहुँच गए हैं। बोलशोई ग्रोमोक के एक आदमी ने उन्हें देखा है। उसने बताया है कि वे जहाँ से गुज़रते हैं, वहाँ के लोगों को मार डालते हैं। लालफौज के इन लोगों में यहूदी भी हैं, और चीनी भी। हमने इन सबको नहीं मार डाला······इन काने शैतानों पर गाज गिरे !"

"वे लोगों को मार डालते हैं ?"

"और, उनसे उम्मीद क्या हो सकती है ?" अनीकुश्का ने गालियाँ दीं, और बातें करते-करते बढ़ा—"जानते हो, गाँवों की औरतें वोदका तैयार करती हैं और उन्हें पिला देती हैं। बस, तो वे उन्हें नुकसान नहीं पहुँचाते। नशे में धुत होकर आगे बढ़ जाते हैं, अगला गाँव हथिया लेते हैं, और फिर उमड़ते फिरते हैं।"

पॅन्तेली ने शेड के चारों ओर नजर दौड़ाई और अपने हाथ का बना एक-एक खम्भा और एक-एक चीज हसरत से देखी। इसके बाद रास्ते के लिए सूखी घास लेने वह खलिहान मे आया तो यह बात जैसे भूल ही गया कि गाँव छोड़कर तो जाना ही पड़ेगा। उसने एक लोहे का कुदा उठाया और मामूली घास की पत्ती-पत्ती अलग करने लगा। (अच्छी घास वसन्त की जोताई के समय के लिए वह हमेशा बचाकर अलग रखता था।) पर, उसका ख्याल बदल गया, और अपने ऊपर बिगड़ता वह घास की दूसरी टाल के पास आया। उसे यह लगा ही नहीं कि अभी कुछ ही घंटों में वह यह अहाता और गाँव छोड़कर, स्लेज पर सवार होकर दक्षिण की ओर हुआ चला जाएगा, और फिर, शायद यहाँ लौटकर कभी नहीं आएगा। उसने थोड़ी-सी सूखी घास निकाली, और जमीन पर बिखरा तिनका-तिनका हेंगे से आदतन फिर उठाने लगा। पर सहसा ही उसने हाथ इस तरह पीछे खींच लिया, जैसे कि हेंगा जल रहा हो, और अपनी भौंहों से

पसीना पोंछते हुए ज़ोर से बोला—'अब मैं इसकी इतनी देख-रेख क्यों करूँ ? इसकी परवाह हो या न हो, यह हर हालत में लाल फौजियों के पैरों के नीचे डाल दी जाएगी। वे या तो इसे बरबाद कर डालेंगे या जला डालेंगे।" उसने अपने घुटने पर ज़ोर देकर हेंगा तोड डाला, दाँत पीसते हुए सूखी घास उठाई और घर की ओर लपका। इस समय उसकी पीठ भुकी हुई लगी। चेहरे पर बुढापा नजर आया।

घर पहुँचने पर, अन्दर घुसे बिना ही, खुले हुए दरवाज़े से चीखा —"तैयार हो जाओ···मैं मिनट-भर मे घोड़े जोत दूगा···अच्छा हो कि चलने मे देरी न करो।"

उसने जोत वाला साज घोड़ो पर कसा, जई का एक बोरा स्लेज के पिछले हिस्से मे डाला और बेटों के बाहर न निकलने पर अचरज करते हुए, कारण जानने के लिए, घर के अन्दर आया।

बावर्चीखाने मे एक अजीब-सा दृश्य उसे देखने को मिला। प्योत्र सफर के लिये तैयार, बडल पूरे जोश मे खोल रहा और पतलून, ट्युनिक और औरतों के छुट्टियों के दिन पहनने के कपड़े निकालकर ज़मीन पर फेंक रहा था।

बूढे का मुंह आश्चर्य से खुले का खुला रह गया और उसने अपनी टोपी तक सिर से उतार डाली। बोला—"यह सब क्या है ?"

"इनसे पूछो···इनसे !" प्योत्र ने अँगूठे से औरतों की तरफ इशारा किया—"इन लोगो ने चीख-चीखकर आसमान सिर पर उठा लिया है। बस, तो हम अब कही नहीं जाएँगे। यानी, या तो कुल के कुल लोग यहाँ से जाएँगे या कोई भी यहा से कही नही जाएगा। ज़मीन-जायदाद के बचाव के ख्याल से हम यहाँ से कैसे कही जा सकते हैं ? हम यहाँ न रहें और लालफौजियो ने यहाँ आकर इन औरतों की इज्ज़त ली तब ? अगर वे हमे यहाँ मार डालेंगे तो हम कम से कम, इन औरतो की आँखों के आगे तो मरेंगे।"

"अपनी चीज़ें हटा लो, पापा···" ग्रिगोरी ने मुस्कराते हुए अपना बरानकोट और कटारी हटाई तो नताल्या ने रोते हुए उसका हाथ थाम लिया और पीछे से चूमा। दून्या पोस्ते के फूल की तरह लाल हो गई

और मुर्गी ने तालियां बजाने लगी।

बूढ़े ने टोपी सिर पर लगा ली। दूसरे ही क्षण फिर उतार ली। वह वैसे ही देव-चित्रों के पास आया, उसने झटके से क्रॉस बनाया, तीन बार झुका, फिर उठा और चारों ओर नज़र दौड़ाने लगा—"खैर, अगर ऐसा है तो हम कहीं नहीं जाएँगे। माँ—मेरी, हमपर मेहरबानी करना···हमें बचाना।···तो, मैं अब जाकर घोड़े खोले देता हूँ।"

इसी समय अनीकुश्का आया तो पूरे मेलेखोव परिवार को प्रसन्न और हँसता हुआ देखकर आश्चर्य में पड़ गया। पूछने लगा—"बात क्या है ?"

"हमारे कज़्ज़ाक मर्द कहीं नहीं जाएंगे!" दार्या ने सबकी तरफ से जवाब दिया।

"अच्छा···बेहतरी इसीमें सोची ?"

"हाँ, हमने बेहतरी इसीमें सोची!" ग्रिगोरी मुस्कराया और उसने पलकें झपकाईं—"हम मौत की तलाश में क्यों जाएँ! वह चाहेगी तो खुद ही हमारी तलाश कर लेगी।"

"खैर···तो, अगर अफसर कहीं नहीं जा रहे तो हम तो बिल्कुल ही नहीं जाएँगे।" अनीकुश्का जोर से बोला और इस तरह बाहर भागा, जैसे कि उसके पैरों में घोड़े की नालें ठुकी हों।

: १४ :

फोमिन के हुक्म व्येशेन्स्काया के जंगलों पर हवा में फड़फड़ाते रहे। लालसेना के आने की प्रतीक्षा हर क्षण की जाती रही। इस बीच, पैंतीस वर्स्ट के फासिले पर, उत्तरी मोर्चे के स्टाफ ने अपना प्रधान कार्यालय कार्गिन्स्काया में जमा लिया। चौथी जनवरी की रात को कर्नल रोमन लज़ारेव की चेचेनोंवाली टुकड़ी कार्गिन्स्काया आई और फोमिन की बागी रेजीमेंट को सज़ा देने के लिए, टुकड़ी के लोग घोड़े दौड़ाते चल दिए।

पाँचवीं जनवरी को चेचेन व्येशेन्स्काया पर हमला करनेवाले थे। उनके पैट्रोल, लड़ाई के ख्याल से, आसपास के गाँवों की जासूसी पहले ही कर चुके थे। लेकिन उनकी सारी योजना धूल में मिल गई, क्योंकि फोमिन की रेजीमेंट से भागकर आने वाले एक फौजी ने बताया कि लाल-

सेना की बहुत अधिक टुकड़ियों ने रात में गरोखोवका में पड़ाव डाला था, और उनका इरादा अगले दिन व्येशेन्स्काया पहुँचने का था।

क्रासनोव इधर के मित्रदेशों के प्रतिनिधियों के साथ नोवोचेरकास्क में व्यस्त रहा था। उसने फोमिन को अपने प्रभाव में लाने की कोशिश की। टेलीग्राफ के तार काफी देर तक झनझनाते रहे। आखिरकार फोमिन को व्येशेन्स्काया के तारघर में बुलाया गया और उसे छोटा-सा संदेश दिया गया—

"व्येशेन्स्काया···फोमिन···सार्जेंट फोमिन, मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि होश में आओ और अपने मोर्चों पर अपनी रेजीमेंट फौरन जमा दो।··· सज़ा देने वाली टुकड़ी रवाना कर दी गई है···हुक्म न मानने की सज़ा मौत होगी!" —क्रासनोव

फोमिन, पैराफीन के लैम्प के नीचे खड़ा, अपने छोटे कोट के बटन खोले, तारबाबू के हाथ का छोटा-सा छेदवाला कागज़ देखता रहा। फिर, पाले और वोदका का भभका उस आदमी की गर्दन पर छोड़ता हुआ बोला—"यह आदमी बकता क्या है? मैं होश में आ जाऊँ? क्या किस्मत में यही बदा है? खैर···तुम मेरी ओर से लिख दो···क्या? इजाजत नहीं है? मेरे हुक्म की तामील कर, वरना तुम्हारी अंतड़ियाँ अभी निकालकर बाहर रख दूंगा···!"

और तार की गट्ट-गट्ट फिर शुरू हो गई—

"नोवोचेरकास्क···अतामान क्रासनोव···नरक में जाओ और वहीं बने रहो!" —फोमिन

इस बीच उत्तरी-मोर्चे के तार ऐसे उलझ गए कि क्रासनोव ने खुद कारगिंस्काया जाने का निश्चय किया। उद्देश्य रहा फोमिन से बदला लेने के लिए लोगों को संगठित करना और टूटे हुए कज़्ज़ाकों की हिम्मत बढ़ाकर उनमें लड़ाई की आग जगाना। दूसरी चीज़ पहिली से कहीं ज्यादा महत्त्व की लगी। इसी दृष्टि से उसने मित्रराष्ट्रों के प्रतिनिधियों को मोर्चे के मुआइने की दावत दी।

वुतुरलिनोवका में उन्होंने सन्त जॉर्ज रेजीमेंट का गुंदोरोव्स्की ऑर्डर

देखा। इसे अभी-अभी लड़ाई से वापस बुलाया गया था। सो, आसनोव ने ट्रूपों का मुआइना किया और इसके बाद रेजीमेंट की पताकाओं की बगल में आ खड़ा हुआ। गरजा—

"जिस किसीने भी दसवीं रेजीमेंट में मेरी कमान में काम किया हो, वह एक कदम आगे आ जाए!"

लगभग आधी रेजीमेंट आगे आ गई। आसनोव ने अपना जनरल वाला टोप सिर से उतारा और अपने बिल्कुल पास खड़े, सयानी उम्र के, मिलनसार-से सार्जेंट-मेजर के दोनों गाल चूमे। सार्जेंट-मेजर ने अपनी तराशी हुई मूँछें अपने बरानकोट की आस्तीन में पोंछी और फटी-फटी-सी आँखों से घूरता रहा। मित्रदेशों के अफसर अचरज से भरकर एक-दूसरे के कानों में फुसफुसाते रहे। लेकिन जल्दी ही उनकी फुसफुसाहट की जगह समर्थन की मुस्कान ने ले ली। बात यह हुई कि आसनोव उनके पास आया और समझाते हुए बोला—"ये वे बहादुर हैं जिनके साथ जर्मनों को मैंने नेज़विस्काया में और ऑस्ट्रियनों को बेलज़ेटम् और कोमारोव में मुँह की दी है!"

उजले, स्थिर आसमान में सूरज के दायें और बायें, रेजीमेंट के खजाने की रक्षा करने वाले दो सन्तरियों की तरह दो इन्द्रधनुष बुन उठे। उत्तरी-पश्चिमी हवा का ठंडा झोंका जंगलों के बीच, स्तेपी के आरपार सीटी बजाता, सर्राटे भरता रहा। उसने राह में पड़नेवाले झाड़-झखाड़ के सिर झुका दिए और उन्हें रौंद दिया।

छः जनवरी की शाम को झुटपुटा घिर करके अपनी परछाइयाँ सहेजने लगा कि ब्रिटेन के महाराजाधिराज के प्रतिनिधि एडवर्ड्स और अलकॉट और फ्रेंच कैप्टेन बेरतेलॉत और लेफ्टिनेंट एरलिश के साथ आसनोव कारगिंस्काया पहुँचा। मित्रदेशों के अफसर फरकोट पहने और खरगोश की खाल की टोपियाँ लगाए, सिगारों के धुए और यूडीकोलोन की गमक के बीच, हँसते हुए मोटरकार से बाहर आए। सर्दी के कारण कंपकपाने और पैर पटकने लगे। फिर, धनी व्यापारी लेवोचकिन के यहाँ गरम हो लेने और चाय पी लेने के बाद वे आसनोव और उत्तरी मोर्चे के कमांडर मेजर-जनरल इवानोव के साथ स्थानीय स्कूल देखने गए। स्कूल में ही

सभा हुई।

आसनोव ने कज्जाकों की उत्सुक भीड़ के सामने काफी देर तक भाषण दिया और उन्होंने उसकी बातें बहुत ही ध्यान से सुनीं। पर, आसनोव ने बोलते-बोलते जब अधिकृत जिलों के 'बोलशेविक-अत्याचारों' का वर्णन करना शुरू किया तो तम्बाकू का नीला बादल भेदती पीछे से क्रोध से भरी एक आवाज़ आई—"यह बात सच नहीं है।" और इसके साथ ही पूरे भाषण का असर खत्म हो गया।

अगले दिन सवेरे आसनोव और मित्रदेशों के अफसर तड़पड़ मिलेरोवो के लिए रवाना हो गए। उसी तरह तेजी से उत्तरी मोर्चे का प्रधान कार्यालय खाली कर दिया गया। चेचेनों ने शाम तक पूरी बस्ती साफ कर दी और जिन कज्जाकों ने वहाँ बना रहना चाहा उनको भी वहाँ से निकाल बाहर किया। उसी शाम को लड़ाई के सामान के गोदाम में आग लगा दी तो राइफल के कारतूस घनी झाड़ी की लकड़ी के धुँधुआते हुए अम्बार की तरह आधी रात तक चिटचिटाते रहे। अगले दिन पीछे हटने के कार्यक्रम के पहले प्रार्थना होने लगी कि कारगिंस्काया की पहाड़ी से एक मशीनगन ने अपनी बात कहनी शुरू की। गोलियाँ गिर्जे की छत पर बसन्त के ओलों की तरह पटापट बरसने लगीं। नतीजा यह हुआ कि ट्रूपों में खलबली मच गई और वे स्लेपी की ओर भाग खड़े हुए। लज़ारेव, उसकी अपनी टुकड़ी और कुछ कज्जाक यूनिटों ने लोगों को इस तरह पीछे भागने से रोकने की कोशिश की। कुछ सेनाओं ने हवाचक्की के पीछे मोर्चा साधा और और कारगिंस्काया के ही रहने वाले कैप्टेन फ्योद्र पपोव की कमान में काम करने वाले ३६वें कारगिंस्काया तोपखाने ने लालसेनाओं की आग बढ़ती हुई टुकड़ियों पर गोलों की बरसात-सी की। पर जल्दी ही सारा कुछ बेकार हो गया। लालसेना के घुड़सवारों ने, अपनी रक्षा के लिए प्रयत्नशील, पैदल सेना की टुकड़ियों को घेर लिया, और पास के एक गाँव में नालों के किनारे-किनारे बढ़ते हुए कारगिंस्काया के कोई बीस बूढ़े काटकर फेंक दिए। किसी क़ानूनी ने बिना समझे-बूझे इन बूढ़ों का उपद्रवी नागरिक बना दिया था।

: १५ :

गाँव में बने रहने के फैसले से पेन्तेली में चीजों की ताकत और महत्ता के प्रति आस्था जागी। शाम को वह ढोरों को देखने के लिए बाहर निकला, और उसने छोटी टाल से देहिचक सूखी घास चुन ली। अहाते के बढ़ते हुए अंधेरे में उसने गाय को सावधानी से देखा—समझा और सन्तोष की साँस लेकर मन ही मन सोचा—'गैया बहुत मोटी होती जा रही है···इसके जुड़वाँ बच्चे होंगे क्या ?'

फिर हर चीज ज्यों की त्यों हो गई। हर चीज का पहले जैसा ही महत्त्व और स्थान फिर हो उठा। शाम तक पेन्तेली को वक्त मिला, तो उसने दून्या पर बरसना शुरू किया—"तूने इधर-उधर भूसा क्यों फैलाया ?··· तूने लकड़ी के टब में बर्फ क्यों न तोड़कर डाली ? स्तेपान अस्ताखोव के सूअर ने बाड़े में जो सूराख कर दिया है, वह तूने ठीक क्यों नहीं किया ?"

इसी बीच घर की झिलमिलियाँ बंद करने अक्सीन्या बाहर निकली तो बूढ़ा बोला—"स्तेपान यहाँ से जाने की बात सोच रहा है क्या ?"

अक्सीन्या ने रूमाल से अपना सिर ढका और बोली—"नहीं···नहीं ···वह कहाँ जाएगा ? वह तो बुखार से परेशान पड़ा है। उसका माथा जल रहा है। बीमार है···ऐसे में कहाँ जाएगा भला ?"

"और हम भी तो नहीं जा रहे···कौन जानता है कि इस तरह न जाने में बुराई है कि भलाई !"

रात का समय हुआ। दोन नदी के पार जंगल की भूरी खाड़ी के पार, आसमान की हरी-सी गहराई से ध्रुवतारा उभरा। पूर्व बैंजनी चादर ओढ़े रहा। पश्चिम में सूर्यास्त की आग धधकती रही। किनारों के फैलते हुए सींगों के बीच से चाँद ने अपना कूबड़ ऊपर उठाया। बर्फ के टीलों पर धुंधली-सी परछाइयाँ एक-दूसरे में खोने लगीं। सन्नाटा चारों ओर ऐसा रहा कि किसीने, शायद अनीकुश्का ने दोन के पास बर्फ तोड़ी तो आवाज पेन्तेली ने सुनी।

घर में चिराग जलता रहा। नताल्या रोशनी और अंधेरे के बीच

आती-जाती रही। ऐसे में पैन्तेली को परिवार ने अपनी ओर खींचा तो उसने सभीको घर के अन्दर जमा पाया। दून्या क्रिस्तोन्या की पत्नी के यहाँ से अभी-अभी आई थी और एक प्याला खमीर उधार लाई थी। सो, वह प्याला उसने खत्म किया और किसीके बात काट देने से डरते हुए, जल्दी-जल्दी ताज़ी खबरें सुना डाली।

ग्रिगोरी ने सोने के कमरे में अपनी राइफल और रिवॉल्वर में तेल डाला और तलवार चिकनाई। फिर उसने दूरबीन कैन्वस में लपेटी और इसके बाद प्योत्र को आवाज़ दी। पूछा—"तुम्हारी चीज़ें तैयार हैं? क्यों न इन्हें छिपाकर रख दिया जाए?"

"लेकिन अपनी हिफ़ाजत के लिए बाद में इनकी ज़रूरत पड़ी तब?"

"छोड़ो भी बात!" ग्रिगोरी हँसा—"अगर वे इन्हें पा जाएंगे तो हमें फाँसी पर लटका देंगे।"

···दोनों भाई अहाते में आए और पता नहीं क्यों उन्होंने अपने हथियार अलग-अलग छिपाए। लेकिन ग्रिगोरी ने अपना नया, काला रिवॉल्वर अपने तकिये के नीचे रख लिया।···

फिर, खाना खत्म भी न हुआ और वे सोने की तैयारी करते रहे कि अहाते में बँधा कुत्ता बुरी तरह भौंकने, और ज़ंजीर तुड़ाने की कोशिश करने लगा। बूढ़ा उठा और कारण पता लगाने के लिए बाहर गया। लौटा तो आँखों के ऊपर तक कनटोप लगाए एक व्यक्ति के साथ। पूरी फौजी वर्दी में कसे इस आदमी ने अन्दर घुसते ही सीने पर क्रॉस बनाया। उसकी पाले से नहाई मूँछों से भाप का बादल उठने लगा।

"तुम मुझे नहीं जानते?" उसने पूछा।

"अरे, यह तो मकार है!" दार्या ने चिल्लाकर कहा।

अब प्योत्र और ग्रिगोरी ने अपने दूर के उस सम्बन्धी को पहचाना। वह सिनगिन गाँव का कज़ाक मकार नगाइत्सेव था। अपनी अच्छी आवाज़ और धुआँधार पिलाई के लिये उसका पूरे ज़िले में नाम था।

प्योत्र ने अपनी जगह से हिले बिना पूछा, "तुम भला यहाँ कैसे?"

नगाइत्सेव ने बर्फ़ का एक टुकड़ा अपनी मूँछ के बीच से खींचकर दरवाज़े पर फेंक दिया। फेल्ट के जूतों से लैस अपने पैर पटके और धीरे-

धीरे ओवरकोट वगैरा उतारने लगा।

"अकेले गाँव छोड़कर जाना मुझे अच्छा न लगा। मैंने सोचा कि यहाँ आकर तुम लोगों को ले चलूँ।···यह भी सुना था कि तुम दोनों भाई घर पर ही हो। मैंने बीवी से कहा—जाऊँ, मेलेखोव परिवार के लोगों को बुला लाऊँ तो पार्टी में और रंग आ जाए।"

उसने अपनी राइफल कंधे से उतारी और भट्ठी के बाँसों की बगल में इस तरह रखी कि औरतें हँसने लगीं। उसने अपना बाकी सामान भट्ठी के नीचे वाले हिस्सा में ठूँसा। पर, तलवार और चाबुक बड़ी होशियारी से पलंग पर रखा। हमेशा की तरह, इस समय भी उसके मुँह से घर की बनी वोदका का भभका उठा और उसकी आँखों में नशे के लाल डोरे नज़र आए। गीली दाढ़ी के बालों के बीच उसके खूबसूरत दूधिया दाँत चमके।

"क्या सभी कज्ज़ाक सिनगिन छोड़कर जा रहे हैं?" ग्रिगोरी ने तम्बाकू की थैली उसकी ओर बढ़ाई। मेहमान ने उसका हाथ एक ओर को हटा दिया।

"नहीं, शुक्रिया···मैं यह शौक नहीं करता···और, सिनगिन के कज्ज़ाक ···कुछ तो खिसक गए हैं···बाकी अपने सिर छिपाने की जगह की तलाश में हैं···आप लोग भी जा रहे हैं क्या?"

"हमारे घर के कज्ज़ाक कहीं नहीं जा रहे···उनसे कहीं जाने की बात भी न करना तुम!" इलीनीचिना ने ज़रा घबड़ाहट-भरे स्वर में कहा।

"तुम लोग यहाँ बने रहोगे? मुझे इस बात पर यकीन नहीं होता··· ग्रिगोरी, क्या यह सही है?···अगर यहा से नहीं खिसकोगे तो मुसीबत मोल लोगे, भाइयो!"

"आखिर किया क्या···" प्योत्र ने लम्बी साँस खींची और सहसा ही उसका चेहरा तमतमा उठा। पूछने लगा—"ग्रिगोरी, क्या ख्याल है? तुम्हारा इरादा बदला तो नही?···चलें हम लोग?'

"अभी नहीं।" तम्बाकू के एक बादल ने ग्रिगोरी को ढक लिया। फिर वह उसके बालो के घने छल्लों में लटक रहा।

"फादर तुम्हारे घोड़े की देखरेख कर रहे हैं ?" प्योत्र ने मकार से अचानक ही पूछा।

इसके बाद सन्नाटा छा गया। सिर्फ दून्या के चर्खे की घर्र-घर्र ही शांति भंग करती रही। नगाइत्सेव सुबह, तड़के तक बैठा दोनों भाइयों से आग्रह करता रहा कि अपने घोडों पर सवार हो जाओ, और मेरे साथ दोनेत्स नदी के पार चले चलो !···प्योत्र रात-भर में दो बार खिसका भी और उसने दो बार अपना घोडा कसा भी। लेकिन हर बार दार्या की निगाहों ने उसे पकड लिया, धमकाया और घोड़े की पीठ पर से काठी उतरवा दी।

दिन उगा। रोशनी हुई। मेहमान विदा लेने को तैयार हुआ। पूरी तरह कपडे पहन लेने पर वह दरवाज़े की सिटकनी पर हाथ रखकर खड़ा हुआ, अर्थ-भरे ढग से खाँसा और अपनी आवाज़ में आक्रोश घोलकर बोला—

"हो सकता है कि तुमने जो रास्ता चुना है, वही बेहतर हो !···वैसे, हो सकता है कि बाद में तुम्हारा इरादा बदल जाए ! हाँ, अगर हम कभी लौटे तो हमेशा याद रखेंगे कि लालसेना के लिए दोन इलाके का दरवाज़ा किसने खोला और कौन उनकी खिदमत के लिए यहाँ बना रहा···"

बर्फ सुबह तड़के से ही गिरती रही। ऐसे में ग्रिगोरी अहाते में आया और उसने लोगों का एक काला गिरोह, दूर पर दोन नदी पार करने के लिए बढ़ता देखा। ८-८ के क्रम से जुते घोड़े कुछ खींचते लगे। लोगों की बातचीत, गाली-गलौज और घोडों की हिनहिनाहट उसके कानों में पडी। मर्दों और घोडों की भूरी आकृतियाँ बर्फ के बीच से ऐसे उभरीं जैसेकि धुंध के बादल के बीच से बाहर आ रही हों। घोडों की जोत के तरीके से ग्रिगोरी ने अनुमान लगाया कि हो-न-हो, यह तोपखाना है।···'कहीं लाल फौजी तो नहीं आ गए ?'—सम्भावना-मात्र से ग्रिगोरी का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। पर, ज़रा सोचने पर उसे लगा कि नहीं, ऐसा नहीं है।···

भीड़ के बिखरे हुए लोग बर्फ के फँसे हुए-से एक काले दहाने का चक्कर लगाकर गाँव की ओर बढ़े। लेकिन, वे नदी के पास आए कि

सबसे आगे की तोप का एक पहिया किनारे की बर्फ में धँस गया। हवा हाँकनेवालों की चीख-पुकारें, टूटती हुई बर्फ की करकराहट, और घोड़ों के एकदम फिसलते हुए खुरों की आवाज़ ग्रिगोरी के पास तक ले आई। वह अपने घर के पीछे के ढोरों के बाड़े में आया और चुपचाप निकल दिया। लोगों के नाक-नक्शों से उसने पहचाना तो वे कज्जाक समझ पड़े। कुछ क्षणों बाद, एक उम्रदराज़-सा बम फेंकनेवाला, चौड़े कंधोंवाले घोड़े पर सवार, मेलेखोव के फाटक में दाखिल हुआ और सीढ़ियों के पास घोड़ों से नीचे उतरा। उसने घोड़ा जंगले से बाँधा और घर के अन्दर आया।

"कौन मालिक है इस घर का?" उसने घर के लोगों का अभिवादन करने के बाद पूछा।

"मैं हूँ···" पँन्तेली ने प्रश्न की उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हुए पूछा। "लेकिन तुम्हारे यहाँ के कज्जाक घरों पर क्यों हैं?" लेकिन, जवाब की चिन्ता किये बिना बम फेंकनेवाले ने अपने गलमुच्छों के बीच से बर्फ झाड़ी और बोला, "ईसा को प्यार करते हो तो हमें हमारी तोप बाहर निकालने में मदद दो। वह किनारे ही घुरे तक नदी में चली गई है। रस्सियाँ हैं आपके यहाँ? कौन-सा गाँव है यह? हम तो बर्फ में राह भटक गए हैं, और लाल-फौज के लोग हमारे ठीक पीछे-पीछे चले आ रहे हैं।"

"मैं नहीं जानता···" बूढ़े ने हिचकिचाते हुए कहा।

"तुम क्या नहीं जानते? तुम सब बहुत ही भले कज्जाक हो। हमें मदद के लिए आदमी चाहिए।"

"मेरी तबीयत ठीक नहीं है।" पँन्तेली झूठ बोल गया।

उस आदमी ने, एक के बाद दूसरे व्यक्ति को गर्दन बिना मोड़े, भेड़िये की तरह देखा। उसकी आवाज में और उत्साह और उमग घुली लगी, "तुम सब कज्जाक नहीं हो क्या? फौजी साज-सामान तुम सब बरबाद हो जाने दोगे क्या? तोपखाने की कमान के लिए एक अकेला मैं ही बचा हूँ··· बाकी सब अफसर भाग गए हैं। एक हफ्ते से ज्यादा हुआ कि मैं घोड़े की पीठ से नीचे उतरा नहीं हूँ···ठंडक से जमा जा रहा हूँ···एक पैर की उंगलियां पाले से बेकार हो गई हैं···लेकिन, इसपर भी अपने तोपखाने

को छोड़कर जाने के लिए मैं तैयार नहीं हूँ···और, तुम···अगर तुम मेरी मदद नहीं करोगे तो मैं कज्ज़ाकों को बुला लूंगा और फिर हम···" क्रोध से, साथ ही आखों में आँसू भरे हुए वह चीखा, "हम तुम्हें कुत्ते के पिल्लो में, बोलशेविकों में बदलकर छोड देंगे···और, बूढ़े, अगर तू यही चाहता है तो हम तुझे घोड़े की तरह कसेंगे···जा और जाकर कुछ लोगों को बुलाकर ला, और अगर वे नहीं आए तो याद रख कि हम इस गाँव का इस जमीन से नाम-निशान मिटा देंगे!"

लेकिन, बोलनेवाले के लहजे से लगा कि उसे अपनी ताकत पर खुद विश्वास नहीं है। ग्रिगोरी का मन इस बात पर दुखा। उसने झपटकर उसकी टोपी छीन ली और उस उत्तेजित फौजी की ओर देखे बिना सख्ती से कहा, "इस तरह चीखो मत! हम तुम्हारी भरसक मदद कर देंगे और इसके बाद तुम आराम से अपनी राह लोगे···"

जल्दी ही मदद करनेवालों का एक भीड जमा हो गई। तोपखाने के कर्मचारियों की सहायता से अनीकुश्का, तोमिलीन, ख्रिस्तोन्या, मेलेखोव परिवार के सदस्यों और कोई एक दर्जन औरतों ने भाडो के बाड गिराए, तोप और लडाई के सामान के बक्से ऊपर उठाए और घोड़ों को उभारकर बाहर निकाला। ठंड से अकड़े पहिये अपने धुरों पर घूम नहीं सके और बर्फ पर फिसल गए। थकान से चूर-चूर घोड़ों को छोटी से छोटी चढ़ाई भी दुश्वार लगी, तोपखाने के आधे कर्मचारी तो कभी के भाग खड़े हुए थे और जो बचे थे, वे इस समय पैदल ही आगे बढे। तोपखाने के उस यम-मार व्यक्ति ने अपनी टोपी उतारकर नमन किया, सभी मदद करनेवालों के प्रति आभार प्रकट किया और अपनी काठी पर मुड़ते हुए तोपखाने को अपने पीछे-पीछे आने का आदेश दिया।

ग्रिगोरी आदर और अविश्वास से भरे आश्चर्य की मिली-जुली भावना से उसकी ओर एकटक देखता रहा। प्योत्र अपनी मूँछों के सिरे चबाता पास आया और जैसे कि ग्रिगोरी के अनपूछे सवाल का जवाब देते हुए बोला, "काश कि वे सभी लोग इसी तरह के होते! धीरे-धीरे बहनेवाली दोन और उसके इलाकों को बचाने का रास्ता सिर्फ यही है।"

"उस यम-मार आदमी का जिक्र कर रहे हो क्या?" ख्रिस्तोन्या ने

पूछा, "लगता है कि तोपें ठिकाने तक ले ही जाएगा···कैसे ज़ोर का चाबुक जमाया उसने मुग्रर, दोगला कहीं का।···ग्रन्दर से बिल्कुल नाउम्मीद हो चुका होगा···मैं तो उसकी मदद करता नहीं, पर मैं डर गया। ग्रौर फिर नंगे पैर होने पर भी चला गया। लेकिन, ये तोपें इस बेवकूफ के किस काम की? वह तो लकड़ी के लट्ठे में बंधे सुग्रर की तरह खतरनाक है। उसे फायदा कुछ नहीं, पर साथ-साथ घसीटे लिए जा रहा है।"

कज्जाक मुस्कराए ग्रौर ग्रपने-ग्रपने घर की ग्रोर चल दिए।

: १६ :

खाने का समय हुग्रा कि दोन के पार, कहीं दूर किसी मशीनगन ने दो बार गोलियाँ बरसाईं ग्रौर फिर शांत हो रही।

ग्रिगोरी ने सोने के कमरे की खिड़की के पास पूरा दिन गुज़ार दिया था। सो, मशीनगन की ग्रावाज के ग्राधे घंटे बाद वह वहाँ से हटा, ग्रौर उसका चेहरा सियाह पड़ गया। बोला, "ग्रा गए वे लोग!"

इलीनीचिना कराही ग्रौर खिड़की की ग्रोर लपकी। ग्राठ घुड़सवार सड़क पर घोड़े दौड़ाते नज़र ग्राए। वे मेलेखोव परिवार के ग्रहाते तक ग्राए, ग्रौर दोन को पार करने की जगह को देखदाखकर लौट गए। उनके खाए-पिए घोड़ों ने ग्रपनी कटी हुई दुमें लहराईं ग्रौर उनके खुरों ने बर्फ उछाली। इस तरह वह गश्ती टुकड़ी उस गाँव को देख-समझकर लौट गई।

इसके एक घंटे बाद तातारस्की पैरों की ग्रावाज, ग्रजीब-सी बोली ग्रौर कुत्तों की भूँक से भर गया। एक पैदल रेजीमेंट दोन पार कर गाँव में घुसी। रेजीमेंट के साथ स्लेजों पर मशीनगनें थीं। सामान लादने की गाड़ियाँ थीं ग्रौर लड़ाई वाला बावर्चीख़ाना था।

यह क्षण ग्रपने-ग्रापमें बड़ा ही भीषण रहा, क्योंकि दुश्मन की टुकड़ियाँ गाँव में घुस ग्राईं। पर दून्या को जो हँसी ग्रानी शुरू हुई तो खतम ही नहीं हुई। फिर उसने ग्रपने ऐप्रन से मुँह दबाया ग्रौर बावर्चीख़ाने में भागी। डर से सहमी हुई नताल्या ने उसे बहुत ही घूरकर देखा। पूछा, "बात

क्या है ?"

"ओह···नताल्या···ये लोग कैसे सवार होते हैं घोड़ों पर ! मैंने देखा···एक आदमी काठी पर ऐंठ रहा था···हो रहा था पीछे-आगे···आगे-पीछे···उसके बाजू और कोहनियाँ बगल से लड़ रही थीं।"

दून्या ने घोड़े की काठियों पर हिलते-डुलते लाल-सेना के लोगों की नकल ऐसी खूबी से की कि नताल्या के लिए हँसी दबाना मुश्किल हो गया। वह भागी-भागी पलंग पर जाकर औंधी हो रही और तकिये में मुँह छिपाकर जी भरकर हँसी। खुलकर हँसने में ससुर के आ जाने और गुस्से से बरस पड़ने का खतरा था।

पँन्तेली सिर से पैर तक काँपता, बेंच पर बैठा मोची के काम आने वाले सूत, सुइयों और लकड़ी की कीलों के टीन से यों ही खिलवाड़ करता, खिड़की के बाहर नजर दौड़ाता रहा। उसकी आँखों में ऐसा भाव झलका जैसे कि वह जानवर हो और शिकारी के जाल में फँस गया हो।

लेकिन, बावर्चीखाने में औरतें ऐसे जोर-जोर के ठहाके लगाती रहीं कि कोई भी मुसीबत आसानी से खड़ी हो जाती।

दून्या का चेहरा हँसी से बैंजनी लगा। आँसुओं से भरी आँखें ओस से नहाई बेरियों की तरह नजर आईं। उसने दार्या के सामने घोड़ों की [illegible] पर सवार लाल फौजियों की तस्वीर खींची और एक अनजानी [illegible] में एक लय-तान के साथ नहीं हरकतें तक करके दिखाईं।

दार्या जी छोड़कर हँसी तो पेंसिल से रंगी उसकी भौंहें काँपने लगीं [illegible] वह हाँफने लगी—"मुझे तो डर है कि कहीं उनके पतलूनों में सूराख [illegible] हो जाएँ···अपने को घुड़सवार कहते हैं···।"

यहाँ तक कि ग्रीश बड़े उदास मन से अपने सोने के कमरे से बाहर [illegible], पर यहाँ आने पर उसका भी जी दूसरा हो गया। बोला, "उन्हें घोड़ों पर सवार देखकर बड़ा अजीब-अजीब-सा लगता है···लेकिन, उन्हें कोई फिक्र नहीं···एक घोड़े की पीठ टूट जाएगी तो दूसरा ले लेंगे···देहाती, गंवार किसान !···" उसने अकूत घृणा से हाथ हवा में मारा।···लाल-फौजी सड़कों और गलियों में उमड़े दलों में बंटे और अलग-अलग

ग्रहातों में घुसे। तीन लाल-फौजी ग्रनीकुश्का के फाटक में दाखिल हुए। एक घुड़सवार समेत दूसरे पांच ग्रस्ताखोव के घर के सामने ग्राकर रुके ग्रौर बाकी पाँच बाड़ के किनारे मेलेखोव परिवार की ग्रोर बढ़े। वे फाटक में घुसे। उनका नेता रहा साफ दाढ़ी-मूँछवाला एक मोटा-सा ग्रादमी, उम्र मे सयाना, चौरस चौड़े नथुने, बहुत ही फुर्तीला ग्रौर चौकस—देखने में साफ-साफ ग्रगले मोर्चे का ग्रादमी। उसने सीढ़ियों के पास रुककर एक क्षण तक कुत्ते को भूकते ग्रौर ग्रपनी जंजीर को झटके देते देखा, ग्रौर फिर राइफल ग्रपने कंधे से उतारी। गोली दागी तो बर्फ की कपूरी धुंध घर की छत से नीचे उतर ग्राई। ग्रिगोरी ने खिड़की से सभी कुछ देखा। खून से तर बर्फ पर तड़पते ग्रौर मौत की बेसब्री में ग्रपना जख्म ग्रौर जंजीर काटते कुत्ते को देखकर वह ग्रपनी कमीज के सख्त कॉलर खींचने लगा। फिर, उसने चारों ग्रोर नजर दौड़ाई तो ग्रौरतों के चेहरे सफेद मिले ग्रौर माँ की ग्राँखों में जाने कितना डर उमड़ता दीखा। बस, तो सिर पर टोप रखने की चिन्ता किए बिना वह दरवाजे की ग्रोर बढ़ा।

"रुको!" पिता ने विचित्र-से स्वर में चिल्लाकर कहा।

ग्रिगोरी ने सामने का दरवाजा झटके से खोला। एक ठस-सी ग्रावाज करता कारतूसों का खाली केस ड्योढ़ी पर गिरा। लाल-फौजी फाटक से ग्रन्दर ग्राए।

"तुमने कुत्ते को गोली क्यों मारी? तुम्हारा कुछ नुकसान किया था उसने? तुम्हें किसी तरह की कोई चोट पहुँचा रहा था वह?" ग्रिगोरी ने ड्योढ़ी पर खड़े होते हुए पूछा।

लाल-फौजी के चौड़े नथुने चौड़ाए। उसके पतले होंठों के सिरे ऐंठे। उसने चारों ग्रोर देखा ग्रौर ग्रपनी राइफल तैयार कर ली—

"इससे तुम्हें क्या लेना-देना? तुम रहम करते हो इसे, है न? यानी, तुम्हें बड़ा रहम ग्रा रहा है···मगर, मुझे रहम भी न ग्राएगा ग्रौर मैं तुम्हें देखते-देखते गोली मार दूँगा···चाहते हो तुम?"

"खैर···खैर, ग्रलेक्सान्द्र···खत्म करो यह बकवास!" एक लम्बे-से लाल बालोंवाले लाल-गार्द ने पास ग्राकर हँसते हुए कहा, "दोब्रयेद्येन[1],

1. गुड डे या, गुड ग्राफ्टर-नून।

क्या है ?"

"ग्रोह···नताल्या···ये लोग कैसे सवार होते हैं घोड़ों पर ! मैंने देखा···एक ग्रादमी काठी पर ऐंठ रहा था···हो रहा था पीछे-ग्रागे··· ग्रागे-पीछे···उसके बाज़ू ग्रौर कोहनियाँ बगल से लड रही थीं।"

दून्या ने घोडे की काठियों पर हिलते-डुलते लाल-सेना के लोगों की नकल ऐसी खूबी से की कि नताल्या के लिए हसी दबाना मुश्किल हो गया। वह भागी-भागी पलग पर जाकर ग्रौंधी हो रही ग्रौर तकिये में मुंह छिपाकर जी भरकर हँसी। खुलकर हँसने मे ससुर के ग्रा जाने ग्रौर गुस्से से बरस पड़ने का खतरा था।

पैन्तेली सिर से पैर तक कांपता, बेंच पर बैठा मोची के काम ग्राने वाले सूत, सुइयों ग्रौर लकडी की कीलो के टीन से यो ही खिलवाड करता, खिडकी के बाहर नजर दौडाता रहा। उसकी ग्रांखों मे ऐसा भाव झलका जैसे कि वह जानवर हो ग्रौर शिकारी के जाल मे फँस गया हो।

लेकिन, बावर्चीखाने में ग्रौरतें ऐसे जोर-जोर के ठहाके लगाती रहीं कि कोई भी मुसीबत ग्रासानी से खडी हो जाती।

दून्या का चेहरा हँसी से बैंजनी लगा। ग्राँसुग्रो से भरी ग्राँखें ग्रोस से नहाई बेरियों की तरह नजर ग्राई। उसने दार्या के सामने घोडो की काठियो पर सवार लाल फौजियों की तस्वीर खींची ग्रौर एक ग्रनजानी चहक मे एक लय-तान के साथ भद्दी हरकतें तक करके दिखाई।

दार्या जी छोडकर हँसी तो पेंसिल से रगी उसकी भौहे कांपने लगीं ग्रौर वह हांफने लगी—"मुझे तो डर है कि कहीं उनके पतलूनों में सूराख न हो जाएँ···ग्रपने को घुडसवार कहते हैं···।"

यहाँ तक कि प्योत्र बड़े उदास मन से ग्रपने सोने के कमरे से बाहर ग्राया, पर यहाँ ग्राने पर उसका भी जी दूसरा हो गया। बोला, "उन्हे घोडों पर सवार देखकर बड़ा ग्रजीब-ग्रजीब-सा लगता है···लेकिन, उन्हे कोई फिक्र नहीं···एक घोड़े की पीठ टूट जाएगी तो दूसरा ले लेंगे··· देहाती, गवार किसान ! ···" उसने ग्रकूत घृणा से हाथ हवा मे मारा।··· लाल-फौजी सडकों ग्रौर गलियो मे उमड़े दलों में बटे ग्रौर ग्रलग-ग्रलग

अहातों में घुसे। तीन लाल-फौजी अनीकुश्का के फाटक में दाखिल हुए। एक घुड़सवार समेत दूसरे पाँच अस्ताखोव के घर के सामने आकर रुके और बाकी पाँच बाड़ के किनारे मेलेखोव परिवार की ओर बढ़े। वे फाटक में घुसे। उनका नेता रहा साफ दाढ़ी-मूँछवाला एक मोटा-सा आदमी, उम्र से सयाना, चौरस चौड़े नथुने, बहुत ही फुर्तीला और चौकस—देखने में साफ-साफ अगले मोर्चे का आदमी। उसने सीढ़ियों के पास रुककर एक क्षण तक कुत्ते को भूकते और अपनी जंजीर को झटके देते देखा, और फिर राइफल अपने कंधे से उतारी। गोली दागी तो बर्फ की रूपरी बूँद घर की छत से नीचे ढुलर आई। ग्रिगोरी ने खिड़की से सभी कुछ देखा। खून से तर बर्फ पर तड़पते और मौत की बेसब्री में अपना जख्म और जंजीर काटते कुत्ते को देखकर वह अपनी कमीज के सख्त कॉलर खींचने लगा। फिर, उसने चारों ओर नजर दौड़ाई तो औरतों के चेहरे सफेद निले और माँ की आँखों में जाने कितना डर उमड़ता दीखा। बस, तो सिर पर टोप रखने की चिन्ता किए बिना वह दरवाजे की ओर बढ़ा।

"रुको!" पिता ने विचित्र-से स्वर में चिल्लाकर कहा।

ग्रिगोरी ने सामने का दरवाजा झटके से खोला। एक ठस-सी आवाज करता कारतूसों का खाली केस ड्योढ़ी पर गिरा। लाल-फौजी फाटक से अन्दर आए।

"तुमने कुत्ते को गोली क्यों मारी? तुम्हारा कुछ नुकसान किया था उसने? तुम्हें किसी तरह की कोई चोट पहुँचा रहा था वह?" ग्रिगोरी ने ड्योढ़ी पर खड़े होते हुए पूछा।

लाल-फौजी के चौड़े नथुने चौड़ाए। उसके पतले होंठों के सिरे ऐंठे। उसने चारों ओर देखा और अपनी राइफल तैयार कर ली—

"इसमें तुम्हें क्या लेना-देना? तुम रहम कहते हो इसे, है न? यानी, तुम्हें बड़ा रहम आ रहा है···मगर, मुझे रहम भी न आएगा और मैं तुम्हें देखते-देखते गोली मार दूँगा···चाहते हो तुम?"

"खैर···खैर, अलेक्सान्द्र···खत्म करो यह बकवास!" एक लम्बे-से लाल बालोंवाले लाल-गार्द ने पास आकर हँसते हुए कहा, "दोब्रयेद्येन[1],

१· गुड डे या गुड आफ्टर-नून।

घर के मालिक···तुमने लाल-गार्द पहले कभी नहीं देखे ?···हमें रहने की जगह चाहिए···इस आदमी ने आपके कुत्ते को गोली मार दी क्या ? क्या ज़रूरत थी इसकी ! खैर···साथियों, अन्दर चलो !"

ग्रिगोरी सबसे आखिर मे घर में आया। उसने लाल-फ़ौजियों को खुशी से खिलकर घर के प्राणियों का अभिवादन करते, अपने साज़-सामान का पुलिंदा और कारतूसों की जापानी चमड़ी की पेटियाँ उतारते और अपने बरानकोट, पैडिंगवाले कोट और टोपियाँ पलग पर लोकाते देखा। बावर्चीखाना, फ़ौजियों के बदनों से उभरनेवाली बदबू, इन्सानी पसीने, तम्बाकू, सस्ते साबुन और बन्दूक की ग्रीज़ की बू और लम्बे मोर्चों की गर्द-गुबार से देखते-देखते भर गया।

अलेक्सान्द्र नाम का वह आदमी मेज़ के किनारे आकर बैठा और सिगरेट जलाकर बातचीत का तार जैसे आगे भी जोड़ते हुए ग्रिगोरी से बोला, "तुम श्वेत-गार्दों के साथ रहे हो न ?"

"हाँ, रहा हूँ।"

"देखा न···मैं तो उड़ान देखकर उल्लू का नाम बता दूँ और तुम्हारी छींक देखकर तुम्हारा···तो श्वेत-गार्द हो···अफ़सर भी रहे हो उस गारद में ? सोने के फुँदने-वुँदने भी इनाम में मिले हैं ?" उसने नथुनों से धुएँ के दो बादल हवा मे उडाए, दरवाज़े पर खड़े ग्रिगोरी पर उदास गम्भीर दृष्टि डाली, और तम्बाकू के दागोंवाली उगली के टेढे नाखून से सिगरेट बजाई—

"अफ़सर रहे हो···है न ? बात सीधे-सीधे मान लो। यह तो तुम्हारे खड़े होने के ढग से साफ़ है। मैं तो खुद भी जर्मनी की लडाई मे रहा हूँ।"

"हाँ, मैं अफ़सर रहा हूँ," ग्रिगोरी बरबस मुस्कराया। इसी बीच नताल्या की मिन्नत और डर से भरी नज़र उसने अपने ऊपर गडी देखी तो उसके माथे पर बल पड गए और भौहें काँपने लगी। वह अपनी मुस्कान पर आप हैरान हो उठा।

"रहम आ रहा है तुम्हें ! यानी, मुझे उस कुत्ते को गोली नहीं मारनी चाहिए थी, बल्कि···" उस आदमी ने सिगरेट का सिरा ग्रिगोरी

के पैरों के पास फेंका और अपने साथियों की ओर देखकर आँख मारी। ग्रिगोरी जैसे आप अपनी वकालत करने लगा। वह मुस्कराया और उसके होंठों में हरकत हुई। लेकिन, किसी तरह सम्हाल में न आनेवाली अपने मन की कमजोरी पर उसे शर्म आई और उसका चेहरा लाल हो उठा। 'जैसे कि कोई कुसूरवार कुत्ता अपने मालिक के सामने दुम हिलाए !' उसने मन-ही-मन सोचा और इस विचार से उसके दिमाग में जैसे आग-सी जलने लगी। क्षण-भर को मुर्दा कुत्ता उसके सामने आ गया। वह कल्पना कर गया कि उसके यानी, मालिक के पास पहुँचते ही कुत्ते के होंठ किस तरह फड़कने लगते थे, और पीठ पर उलटी, हल्की भूरी, झबरी पूँछ किस तरह हिलने लगती थी।

पैन्तेली ने उसी तरह के गैरमामूली लहजे में पूछा, "आप लोग कुछ खाना तो नहीं चाहते ?···चाहते हैं तो घर की मालकिन से कह दूँ कि···"

और, जवाब का इन्तजार किए बिना इलीनीचिना स्टोव की तरफ चली गई। वहाँ बाँस की सँड़सी उसके हाथ में इस तरह काँपी कि पातगोभी के शोरबे का बरतन वह बड़ी मुश्किल से भट्ठी से उतार सकी। दार्‌या ने नीची आँखों मेज ठीक की, तो लाल-फौजी सीने पर बिना क्रॉस बनाए मेजों के किनारे आ बैठे। बूढ़ा डर और मन में छिपी परेशानी से उन्हें देखता रहा। लेकिन आखिरकार उससे रहा न गया तो उसने पूछा—

"तो, आप लोग आसमान में उस रहनेवाले की, दुनिया को बनानेवाले की इबादत नहीं करते ?"

अलेक्सान्द्र के होंठों पर बहुत ही हलकी-सी मुस्कान-सी दौड़ गई, और दूसरे लोगों के ठहाकों के बीच उसने जवाब दिया, "और इबादत की सलाह तो मैं तुम्हें भी नहीं दूँगा, बूढ़े बाबा ! एक जमाना हुआ कि हमने अपने देवताओं का पुलिंदा बाँधा और उन्हें एक तरफ को डाल दिया। ईश्वर जैसी कोई चीज कहीं नहीं है। लेकिन, बेवकूफ यह बात नहीं मानते, और लकड़ी के इन टुकड़ों के आगे माथे टेकने चले जाते हैं।"

"हाँ···हाँ···पढ़े-लिखे लोगों ने बेशक···" पैन्तेली हड़बड़ाते हुए हाँ में हाँ मिलाई।

दार्‌या ने इस बीच हर आदमी के आगे एक-एक चम्मच रख दिया।

लेकिन, अलेक्सान्द्र ने अपने सामने का चम्मच उठाकर फेंक दिया और पूछा, "लकड़ी के अलावा भी किसी चीज के चम्मच हैं तुम्हारे यहाँ? हम बीमारियों के शिकार होना नही चाहते···इसे तुम सब चम्मच कहते हो? यह चम्मच है?"

"अगर हमारे चम्मच आपको पसंद नही तो अपने चम्मच अपने साथ ले आते!" दार्या गरम होकर उबल पड़ी।

"जवान औरत, तू अपनी जबान बंद रख। दूसरे चम्मच तेरे यहाँ नही हैं? अगर नही हैं तो एक साफ़ तौलिया दे दे···मैं इसे पोंछ और साफ कर लूँगा।"

इलीनीचिना ने एक बरतन मे भरकर शोरबा मेज़ पर लाकर रखा, तो वही आदमी बोला, "पहले तुम चख लो, माँ!"

"मैं भला पहले कैसे चख लूँ? आपका खयाल है कि नमक कुछ ज्यादा पड़ गया है?" बुढ़िया ने घबड़ाते हुए पूछा।

"चखो, जब तुमसे कहा जाता है तो चखो। हो सकता है कि तुमने अपने मेहमानों की खातिर कायदे से करने के लिए इसमे कोई पाउडर या ऐसा ही और कुछ डाल दिया हो···"

"एक चम्मच चख लो···चलो।" पंन्तेली ने सख्ती से आदेश दिया और अपने होठ कस लिए। इसके बाद वह आल्दार का एक ठूँठ उठा लाया और खिड़की के नीचे रखकर उसपर बैठ गया। फिर बातचीत मे उसने किसी तरह का कोई हिस्सा नही लिया।··· पंन्तेली, जूते की मरम्मत करते समय इसी ठूँठ से स्टूल का काम लेता था।···

प्योत्र अपने सोने के कमरे मे ही बना रहा। सामने नही आया। नताल्या भी बच्चो के साथ वही जा बैठी। दून्या स्टोव के पास सिकुड़ी बैठी मोज़ा बुनती रही। पर इसी समय उसे एक लाल सैनिक ने आवाज़ दी और साथ शोरबा खाने की दावत दी तो वह उठकर बाहर चली आई। बातचीत खत्म हो गई। खाने के बाद मेहमानो ने सिगरेटे जलाईं।

"हम सिगरेट पी सकते है यहाँ?" एक लाल सैनिक ने पूछा।

"यहाँ सिगरेट सभी पीते हैं," इलीनीचिना ने न चाहते हुए भी हामी

भर दी।

ग्रिगोरी को सिगरेट दी गई तो उसने इनकार कर दिया। वह अन्दर ही अन्दर कांप रहा था। कुत्ते को गोली मारनेवाले आदमी को देखकर उसका खून खौल रहा था। उसका रवैया अब भी गुस्ताखी से भरा था और वह बात-बात में जैसे अब भी चुनौती-सी देता था। साफ है कि आदमी जैसे मुसीबत मोल लेने को तैयार था, क्योंकि वह ग्रिगोरी को बार-बार बातचीत में खींचने की कोशिश कर रहा था।

"किस रेजीमेंट में आप रहे हैं, जनाब ?" उसने पूछा।

"अलग-अलग, कई रेजीमेंटों में रहा हूँ···"

"हमारे कितने साथियों को मौत के घाट उतारा तुमने ?"

"लड़ाई में कोई गिनती तो करता नहीं···कामरेड, आप यह न सोचें कि मैं माँ के पेट से अफसर पैदा हुआ था···कमीशन तो मुझे जर्मनी की लड़ाई के जमाने में मिला···सो भी, लड़ाई की खिदमतों के बदले में···"

"मैं फौजी अफसरों का साथी नहीं। तुम्हारे किस्म के लोगों को तो हम लोग दीवार के पास खड़ा कर गोली मार देते हैं···एक से ज्यादा लोगों को गोली से खुद मैंने उड़ाया है।"

"साथी, मेरा कहना यह है कि तुम यों पेश आ रहे हो, जैसे कि तुमने गाँव पर कब्जा कर लिया हो··· तुम्हारा यह रवैया अपने-आपमें ठीक नहीं है। हमने तो मोर्चा अपने-आप छोड़ दिया और तुम्हें आ जाने दिया। लेकिन, यहाँ तुम इस तरह आए हो, जैसे कि फतह के बाद तुम किसी इलाके में मार्च कर रहे हो। कुत्ते को गोली कोई भी मार सकता है···वैसे निहत्ये लोगों को गोली मार देना या उनकी इज्जत ले लेना, कोई बड़ी अक्ल की बात नहीं···"

"तुम मुझे न बतलाओ कि मुझे क्या करना चाहिए, और क्या नहीं। मोर्चा छोड़ दिया ! हम तुम्हें अच्छी तरह जानते हैं···अगर हम तुम्हें न हराते तो तुम मैदान छोड़कर कभी न आते। और अब हम जिस तरह चाहेंगे, तुमसे बात करेंगे।"

"मुँह बंद करो, अलेक्सान्द्र, तुम काफी गाल बजा चुके !" लाल बालों-वाला आदमी बोला।

लेकिन, अलेक्सान्द्र नथुने फुलाता और लम्बी-लम्बी साँसें खींचता ग्रिगोरी के पास पहुँचा—"अच्छा हो कि तुम मेरा दिमाग खराब न करो अफसर, वरना अच्छा न होगा !"

"मैं तुम्हारा दिमाग खराब नहीं कर रहा···"

"नहीं, तुम कर रहे हो।"

इसी समय नताल्या ने डर से थरथराते हुए आगे के कमरे का दरवाजा थोड़ा खोला और ग्रिगोरी को आवाज़ दी। वह अपने सामने खड़े आदमी का चक्कर काटकर दरवाजे से इस तरह झूमता-झामता बाहर आया, जैसे कि खासी ढाले हुए हो। प्योत्र ने संताप से भरी कराह के साथ उसका स्वागत किया और फुसफुसाते हुए बोला, "तुम यह खिलवाड़ क्या कर रहे हो ? तुमने उसको उलटकर जवाब क्यों दिया ? तुम अपने को तो मिटाओगे ही, हमें भी बरबाद करके रख दोगे। बैठो यहाँ।" उसने ग्रिगोरी को जबरदस्ती एक बक्से पर बैठाला और बावर्चीखाने में गया। ग्रिगोरी जोर-जोर से साँसें लेता रहा। उसकी गालों की तमतमाहट उड़ गई और उसकी आँखों का क्रोध से जलना कम हो गया।

"ग्रिगोरी, मेरे प्यारे, उन्हें अकेला छोड़ दो!" नताल्या ने मिन्नत की और बच्चे रोने को हुए तो उनके मुँह पर हाथ रख दिया।

"भला मैं चला क्यों नहीं गया ?" ग्रिगोरी ने बहुत ही निराशा से नताल्या की ओर देखते हुए पूछा, "अच्छा फिक्र न करो···मैं कहीं नहीं जाऊँगा···लेकिन चुप रहो···अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता मैं।"

बाद में तीन लाल-फौजी और आ गए। उनमें से ऊँची, काले फर की टोपीवाला आदमी साफ-साफ कमांडर लगा। उसने पूछा, "कितने लोग ठहरे हुए हैं यहाँ ?"

"सात आदमी हैं।" लाल बालों वाले आदमी ने उन सबकी ओर से जवाब दिया और अकॉरदीयन के स्वरों पर उंगली दौड़ाने लगा।

"हम मशीनगन की एक चौकी बनाने जा रहे हैं यहाँ···उसके लिये तुम्हें जगह बनानी होगी।"

तीन आदमी उठकर बाहर चले गए। इसके ठीक बाद फाटक चरमराया और दो गाड़ियाँ अहाते में आईं। मशीनगनोंवाली एक गाड़ी

घसीटकर ग्रहाते में लाई गई। किसीने ग्रँधेरे में दियासलाई जलाकर रोशनी की ग्रौर बुरी तरह कोसा। मशीनगन-चालकों ने ब्रैंड में सिगरेटें सुलगाईं, कुछ सूखी घास नीचे डाली ग्रौर खलिहान में ग्राग जलाई।

"किसीको जाकर घोड़ों को देख ग्राना चाहिए" पैन्तेली के पास से गुज़रते समय इलीनीचिना ने धीरे से कहा। लेकिन बूढ़े ने सिर्फ कंधे झटके ग्रौर ग्रपनी जगह से हिलने की भी कोशिश न की। सारी रात दरवाज़े भड़ाक-भड़ाक खोले ग्रौर बंद किए जाते रहे। छत के नीचे दूधिया भाप लटकी ग्रौर दीवारों पर ग्रोस की बूँदों की तरह टकी रही। लाल सैनिकों ने ग्रागे के कमरे के फर्श पर ग्रपने-ग्रपने बिस्तरे लगाए। ग्रिगोरी ने ग्रपने कम्बल लाकर फैला दिए, ग्रौर भेड़ की खाल का ग्रपना कोट उनके सिरहाने के लिए दे दिया।

"मैं खुद फौज में रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि यह जिन्दगी क्या होती है।" वह उसे ग्रपना दुश्मन समझनेवाले फौजी की ग्रोर देखकर मुस्कराया। पर, ग्रलेक्सान्द्र के नथुने फूल गए ग्रौर वह ग्रिगोरी को यों देखता रहा, जैसे कि कहना चाहता हो कि कोई समझौता मुमकिन नहीं।

ग्रिगोरी ग्रौर नताल्या उसी कमरे में पलंग पर लेटने ग्राए। लाल-फौजियों ने ग्रपनी राइफलें सिरहाने रखीं ग्रौर कम्बलों पर एक-दूसरे से सटकर ग्रा लेटे। नताल्या ने लैम्प बुझाने की कोशिश की तो एक फौजी ने तड़ से पूछा—"तुमसे किसने कहा लैम्प बुझाने को? हाथ न बढ़ाना ग्रागे। उलटे बत्ती बढ़ा दो ग्रौर लैम्प सारी रात जलने दो।"

नताल्या ने बच्चों को पैताने लिटा लिया ग्रौर बिना कपड़े उतारे दीवार से सटकर लेटी रही। ग्रिगोरी चुपचाप बगल में लेट रहा। मन ही मन दाँत पीसते हुए सोचने लगा, 'ग्रिगोरी, ग्रगर तुम यहाँ से उड दिए होते, चले गए होते तो ये लोग नताल्या को इसी बिस्तरे पर लेटाते ग्रौर फिर जी-भर इसका मजा लेते···वैसे ही जैसे पोलैंड में लोगों ने फ्रान्या का रस लिया था।"

इसी समय एक लाल-गार्द कोई कहानी सुनाने लगा तो एक परिचित-सी ग्रावाज ने उसकी बात काटी ग्रौर हलके-हलके उजाले में चुनौती दी —ज़रा-ज़रा रुकते हुए।

"उफ़···औरतों के बिना भी कोई जिन्दगी हुई ! लेकिन, घर का मालिक फौजी अफ्सर है ! वह हम मोटी नाकोवाले, मामूली लोगों को अपनी बीवी भला क्यों देने लगा ! ··· सुन रहे हो, घर के मालिक ?"

इस बीच एक आदमी खर्राटे भरने लगा। दूसरा औंघाते हुए हंसा। दूसरे ही क्षण लाल बालोंवाले फौजी की फटकार बरसी, "अलेक्सान्द्र, मैं तुम्हें समझाने की कोशिश करते-करते हार गया हूँ। हर जगह तुम यही करते हो ! एक तमाशा खड़ा कर देते हो, छिछोरों की तरह पेश आते हो और लाल-सेना के झंडे पर काला धब्बा लगाते हो। यह बात अच्छी नहीं ! मैं अभी सीधे कमीसार या कम्पनी कमांडर के पास जाकर तुम्हारी शिकायत करता हूँ। सुन रहे हो ? फिर, वह तुमसे कायदे से बातें करेगा।"

इसके बाद बिल्कुल सन्नाटा हो गया। केवल लाल बालोंवाले फौजी के जूता कसने की आवाज और उसका गुस्से से बड़बड़ाना हवा में बजता रहा। एक-दो मिनट बाद वह उठकर बाहर आया और दरवाजा खड़ाक से बंद हुआ।

नताल्या अपने को अब और न साध सकी और ज़ोर-ज़ोर से फूट पड़ी। ग्रिगोरी ने एक थरथराता हुआ हाथ उसके सिर, भौंहों और आँसू से तर चेहरे पर फेरा तो दूसरे हाथ से उसने मशीन की तरह अपनी कमीज के बटन लगाये और खोले।

"चुप···चुप रहो बिल्कुल।" वह बहुत ही धीरे से बोला—पर, इस क्षण वह मन-ही-मन अपने-आपको पूरी तरह तैयार लगा कि चाहे जिस मुसीबत का सामना करना पड़े, और चाहे जितनी बेइज्ज़ती सहनी पड़े, लेकिन अपनी और अपनों की ज़िन्दगी तो, जैसे भी हो, बचाई ही जाएगी।

सहसा ही दियासलाई जली और अलेक्सान्द्र बैठकर सिगरेट पीता दीखा। वह धीरे-धीरे बुदबुदाने और कपड़े पहनने लगा।

ग्रिगोरी उस लाल बालोंवाले व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता से भर उठा और कान लगाकर आहट लेने लगा। फिर वह खुशी से कांपने, क्योंकि उसने खिड़की के नीचे किसी के पैरों की आवाज के साथ शब्द सुने, "और, हर वक्त वह कोई-न-कोई मुसीबत खड़ी ही करता रहता है, साथी कमीसार।"

बरसाती में कदमों की आवाज हुई और दरवाजा खुला तो चर-

मराया। किसीने जवानी-भरी आवाज में हुक्म दिया, "अलेक्सान्द्र तुरनिकोव, कपड़े पहनो और फौरन बाहर आओ। रात तुम मेरे साथ बिताओगे और सुबह लाल गारद के नाम बट्टा लगानेवाला इस तरह का व्यवहार करने के लिए तुम्हें सजा दी जाएगी।"

ग्रिगोरी की निगाह लाल बालोंवाले फौजी की बगल में खड़े, काले चमड़े की जकिन पहने, उस मधुर व्यक्ति की निगाह से मिली। व्यक्ति अभी कमउम्र का था और जवानी के उसी हिसाब से सख्त भी। उसके होंठ जरूरत से ज्यादा भिंचे हुए थे।

उसने हलके-हलके मुस्कराते हुए ग्रिगोरी से पूछा, "तो, आपको खासा तकलीफदेह मेहमान मिल गया है, साथी ? खैर, कल इसका मुँह बंद कर देंगे हम ! इस वक्त आप सोइए।···दोब्रयेनोच[1]···आओ, चलो, तुरनिकोव !"

वे लोग बाहर गए तो ग्रिगोरी ने चैन की साँस ली। सुबह लाल बालों वाले आदमी ने रात में वहाँ ठहरने और खाने-पीने के लिए रूबल अदा किए, और चलते समय पीछे ठिठक रहा—"आप सब नाराज न हों। इस अलेक्सान्द्र का दिमाग जरा यों ही है। पिछले साल उसके अपने नगर लुगान्स्क में कुछ फौजी अफसरों ने उसकी माँ और उसकी बहिन को उसके देखते-देखते गोली से उड़ा दिया। इसलिए ऐसा है वह ! अच्छा, शुक्रिया···अलविदा···अरे, बच्चों का तो मुझे बिल्कुल ख्याल ही नहीं रहा !" उसने चीनी के दो भूरे, गन्दे टुकड़े अपने सामान से निकाले और बच्चों के मुँह में दे दिए। दोनों जुड़वाँ बच्चे खुशी से खिल गए।

पैन्तेली ने अपने बेटे के बच्चों की ओर देखा। वह द्रवित हो उठा। बोला, "तुम्हें तोहफा मिला है।···हमें तो १८ महीने से ज्यादा हुए कि चीनी देखने को नहीं मिली। ईसा आपका भला करें, कॉमरेड।···झुको··· झुको, बच्चो, शुक्रिया अदा करो।···अरे पोल्या, मुँह सिए इस तरह खड़ा क्या है ?"

लाल फौजी बाहर चला गया। बूढ़ा क्रोध में नताल्या की ओर मुड़ा,

---

१. गुड नाइट !

"तुम्हें तौर-तरीके नही आते ? उसे सफर के लिए कम-से-कम पुए ही दिए होते ! हमें उसकी शराफत का कर्ज तो किसी तरह उतारना ही चाहिए था।"

"दौड़कर दे आओ," ग्रिगोरी ने पत्नी को आदेश दिया।

सो, रूमाल सिर पर डालकर नताल्या दौड़ी और उस फौजी के छोटे दरवाज़े तक पहुँचते-पहुँचते उसके बराबर आ गई। पर, कुछ समझ न पाई कि कैसे क्या कहे। नतीजा यह कि परेशानी से उसका चेहरा लाल हो गया। फिर भी, उसने एक पुआ फौजी के बरानकोट की लम्बी-चौड़ी जेब में डाल दिया।

: १७ :

दोपहर को लाल-गार्डों के घुड़सवारों का एक रेजीमेंट गाँव से गुजरा तो उसने राह चलते-चलते कुछ घुड़सवारों के फौजी घोड़े ले लिये। दूर, पहाड़ी के पार से तोप दगने की आवाज आई।

"चिर में लड़ाई हो रही होगी।" पैन्तेली ने फतवा-सा दिया।

शाम होने को हुई तो प्योत्र और ग्रिगोरी एक से अधिक बार अहाते में गये। वहाँ उन्होंने तोपों के धड़ाके सुने और बर्फ से मढ़ी ज़मीन से कान लगाये तो दूर, दोन के पार कहीं मशीनगनों के दागे जाने की धीमी-धीमी आवाज़ें भी पास चली आईं।

"लोग जमकर लोहा ले रहे हैं।" प्योत्र ने उठकर घुटनों और टोपी से बर्फ झाड़ते हुए कहा। फिर, यों ही बोला—"ये लाल-फौजी हमारे घोड़े ले जायेंगे। तुम्हारा घोड़ा अच्छा है, ग्रिगोरी। वे ज़रूर हथिया लेंगे।"

लेकिन, बूढ़े ने इस बात की कल्पना तो बहुत पहले ही कर ली थी। रात होने पर ग्रिगोरी ने दोनों घोड़ों को पानी पिलाने के लिये नदी के किनारे ले जाने की सोची। पर, घोड़े अस्तबल से निकाले तो देखा कि दोनों के पिछले पैर लगड़ा रहे हैं। इस पर वह प्योत्र को बुलाने गया। बोला—"घोड़े लंगड़े हो गये हैं। तुम्हारे घोड़े का दाहिना, पिछला पैर लंगड़ा रहा है तो मेरे घोड़े का पिछला बायाँ। लेकिन कोई जख्म या कोई चोट कहीं नज़र नहीं आती।"

घोड़े बैंजनी परछाइयों वाली बर्फ पर बिना हिले-डुले खड़े रहे। ऊपर सितारे टिमटिमाते रहे। प्योत्र ने लालटेन जलाई, पर इसी समय पिता खलिहान में आ गया और उसने रोक दिया—"लालटेन का क्या होगा?"

"घोड़ों के पैर कायदे से नहीं पड़ते"।

"यह कोई बड़े दुःख की बात नहीं है···समझे? आखिर तुम चाहते क्या हो कि कोई किसान इन पर काठी कसे और इन्हें लेकर चलता बने?"

"यह तो मैं नहीं चाहता लेकिन······"

"यानी, यह खराबी मैंने पैदा की है। मैंने हथौड़ा लेकर इनकी कुरकुरी हड्डियों में एक-एक कील ठोंक दी है, और अब लाल फौजियों के चले जाने तक ये बराबर लंगड़ाते रहेंगे।"

प्योत्र ने सिर हिलाया और अपनी मूँछों के सिरे चबाए, लेकिन बूढ़े की तरकीब से घोड़े बच गये।

उस रात गाँव में फिर फौजी उमड़े फिरे। घुड़सवार सड़कों पर घोड़े दौड़ाते रहे और तोपखाने चौक में जमाये जाने के लिये घसीटे जाते रहे। तेरहवें घुड़सवार रेजीमेंट ने उस रात गाँव में पड़ाव डाला। ख्रिस्तोन्या मेलेखोव परिवार में आया, जमीन पर बैठा और एक सिगरेट जलाई—"इनमें से कुछ शैतान तुम्हारे यहाँ तो नहीं ठहरे हैं?"

"अभी तक तो नीली छतरी वाले ने हमें इस मुसीबत से बरी रखा है। एक बार कुछ लोग यहाँ आकर ठहरे तो पूरा का पूरा घर उन किसानों के बदनों की बदबू से भर गया।" इलीनीचिना ने असन्तोष की भावना से भरकर कहा।

"हमारे यहाँ तो टिके हैं वे।" ख्रिस्तोन्या ने फुसफुसाकर कहा और आँख से चूता एक छोटा-सा आँसू पोंछा। पर उसने अपना सिर हिलाया। आह भरी, और अपने आँसुओं पर शर्मिन्दा हो उठा।

"क्यों, ख्रिस्तोन्या, बात क्या है?" प्योत्र ने हँसते हुए पूछा, क्योंकि उसने जीवन में पहली बार उसे रोते देखा था।

"वे लोग मेरा घोड़ा ले गए······पूरी जर्मनी की लड़ाई मैंने लड़ी

थी उसके साथ···हमने दुःख-मुसीबतें साथ-साथ सही।······घोड़ा क्या था, इन्सान था बिल्कुल···आदमी से ज्यादा अक्ल थी उसमें···सो, फौजी बोला—'कसो इसको, मुझसे नहीं सम्हलता।' मैं बोला—'तुम नहीं कस सकते? मैं ज़िन्दगी-भर तुम्हारे लिए इस पर काठी कसता रहूँगा?···घोड़ा ले जा रहे हो तो खुद ही कसो उसे।'···और, उस दोगले ने कस भी लिया उसे···यह समझो कि हाथ-भर का आदमी था···मुश्किल से मेरी कमर तक आता था। तो, वह घोड़ा लेकर फाटक पर पहुँचा कि मैं बच्चे की तरह फूट-फूटकर रोया···कितनी फिक्र करता था उसकी मैं···कैसी देख-रेख रखता था उसकी!···" ख्रिस्तोन्या की आवाज़ धीमी हो गई और फुसफुसाते हुए बोला, "अब तो अस्तबल की तरफ निगाह उठाकर देखने में डर लगता है···जैसे पूरे अहाते की जान निकल गई है!"

ग्रिगोरी ने अपने कानों पर जोर दिया तो लगा कि खिड़की के पार बर्फ चरमरा रही है, तलवारें खड़खड़ा रही हैं···और एक आवाज़ हो रही है—"यहीं···!"

"वे लोग यहीं आ रहे हैं। शायद किसी ने कह दिया है उनसे···" पैन्तेली ने हाथ नचाये और उसकी समझ में न आया कि करे तो करे क्या!

"मकान-मालिक, घर के बाहर आओ ज़रा।" एक आदमी चीखा।

प्योत्र ने भेड़ की खाल कंधों पर डाली और बाहर निकला।

"तुम्हारे घोड़े कहां हैं? उन्हें बाहर निकाल कर लाओ।" तीन घुड़सवारों के नेता ने हुक्म दिया।

"मुझे लाने में कुछ नहीं है, पर घोड़े लंगड़ाते हैं, साथी।"

"किधर से लंगड़े हैं? तुम उन्हें बाहर निकाल कर लाओ।···डरो मत···उनकी कीमत अदा किये बिना हम उन्हें नहीं ले जायेंगे।"

प्योत्र एक-एक कर दोनों घोड़े बाहर लाया।

"एक तीसरा घोड़ा भी तो है वहां···उसे बाहर क्यों नहीं लाए?" अस्तबल में लालटेन की रोशनी करते हुए उनमें से एक ने पूछा।

"वह घोड़ी है और उसे बच्चा होने को है—फिर, वह बूढ़ी है···सौ साल पुरानी।"

"ए, काठिया लाओ इनकी।···ठीक···तुम ठीक कहते हो···घोड़े लगड़े हैं···इन बे टांगों के जानवरों को कौन कहाँ ले जाएगा···वापस ले जाओ इन्हें !" लालटेन वाला व्यक्ति पूरी ताकत से गरजा। प्योत्र ने गरियावन खींची और होंठों की ऐंठन पर पर्दा डालने के लिये अपना मुंह लालटेन की रोशनी की तरफ से मोड़ लिया।

"काठियाँ कहाँ हैं ?"

"लाल-फौजी आज सुबह उठा ले गए।"

"तुम झूठ बोल रहे हो, कज्ज़ाक। कौन ले गया काठियाँ ?"

"मुझपर आसमान टूट गिरे अगर मैं झूठ बोल रहा हूँ तो···सचमुच कॉमरेड ले गए काठियाँ। घुड़सवारों का एक रेजीमेंट गाँव से गुज़रा··· उसी रेजीमेंट के लोग ले गये काठियाँ और साथ ही दो पट्टे।"

तीनों घुड़सवार कोसते हुए चल दिए। घोड़ों के पसीने और पेशाब की बू देता प्योत्र घर के अन्दर पहुँचा। उसने क्रिस्तोन्या के कंधे पर हाथ मारा तो उसके होंठ फड़कने लगे।

"यों किया जाता है काम···मैंने कहा हमारे घोड़े लंगड़े हैं और काठियाँ लोग पहले ही उठा ले गए हैं।·········और, तुम···तुम तो हो बेवकूफ!"

इलीनीचिना ने लैम्प बुझा दिया और अंधेरे में बिस्तरे ठीक करने के लिए बढ़ी। बोली। "यहाँ अंधेरा ही अच्छा···नहीं तो फिर कोई बे-बुलाए का मेहमान यहाँ आ टपकेगा।"

उस रात अनीकुश्का के यहाँ बड़ी चहल-पहल और ठाठ रहे। उसके यहाँ ठहरे लाल-गार्डों ने उससे कहा, "अपने पास-पड़ोस के कज्ज़ाकों को बुला लो···थोड़ा खाना-पीना, दिल बहलाव और मस्ती रहे।···"सो, अनीकुश्का ने मेलखोव-परिवार के कज्ज़ाकों को दावत दी।

"तुम पूछोगे कि वे कम्युनिस्ट हैं क्या ? मैं कहता हूँ कि वे कम्युनिस्ट हों भी तो क्या हुआ ? उनका बपतिस्मा हो चुका है, और अब वे वैसे ही रूसी हैं, जैसे हम! ईसा जानता है, मुझे तो उन्हें देखकर दुःख देता है। उनके बीच एक यहूदी है। लेकिन, वह भी खूब आदमी है। पोलैंड की लड़ाई में हमने कितने यहूदी मारे थे, मुझे याद है। लेकिन, इस··· ने तो

मुझे एक गिलास वोदका दी···मुझे यहूदी अच्छे लगते हैं—आओ चलो ग्रिगोरी! ···प्योत्र, मुझे नीची निगाह से मत देखो।"

पहले तो ग्रिगोरी ने जाने से साफ इन्कार कर दिया। पर, पिता अपनी ओर से बोला, "चले जाओ, नहीं तो वे समझेंगे कि हम अपने को उनसे ऊँचा मानते हैं। जाओ···इसके पहले उन्होंने क्या कुछ जुर्म ढाए हैं, इसे लेकर उनके बारे में कोई फैसला न दो।"

प्योत्र और ग्रिगोरी अनीकुश्का के साथ अहाते में आए। रात की गरमी ने अच्छे मौसम का विश्वास दिलाया। हवा मे राख और घुंघुआते हुए कंडों का धुआँ घुला दीखा। तीनों कज़्ज़ाक कुछ देर तक अहाते में चुपचाप खड़े रहे, और फिर बाहर आए। छोटे फाटक के पास उन्हें दारया मिली। रात की मद्धिम-मद्धिम-सी चाँदनी में उसकी पेंसिल से रंगी भौंहों की कमानें काले मखमल की झाई मारती लगीं।

"वे लोग मेरी बीवी को नशे में धुत्त किये दे रहे हैं।" अनीकुश्का बुदबुदाया—"लेकिन, उनकी मनचीती होगी नहीं···मेरे आँखें हैं···" घर की बनी वोदका के नशे में चूर, वह बाड़ पर लड़खड़ाता आगे बढ़ा और एक बार तो रास्ते से डगमगाकर बर्फ के अम्बार से जा टकराया।

नीली, दानेदार बर्फ उनके कदमों के नीचे चरमराई। आसमान की भूरी चादर से बर्फ की एक फुहार हुई। हवा उन तीनों के हाथों की सिगरेटों की चिनगारियाँ उड़ा ले गई। वे बर्फ के पाउडर से नहा उठे। ऊँचे सितारों के नीचे के एक बादल पर बर्फ यों टूटी जैसे बाज़ बतख पर टूटे। उसके उजले पंख विनय से झुकी धरती पर फैल गए। गाँव, स्तेपी, इन्सान या जानवरों के रास्तों, सभी पर बर्फ ने अपनी चादर डाल दी।······

अनीकुश्का के मकान में साँस लेने को हवा न थी। लैम्प अपने काजल की नोकदार, काली जीभें लपलपा रहा था। तम्बाकू के धुएं की धुंध में कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। एक लाल-फौजी सामने टाँगें फैलाए, अकॉरदीअोन जोर-जोर से बजा रहा था। दूसरे लाल-फौजी, अनीकुश्का की पड़ोसिनों के साथ, बेंचों पर बैठे हुए थे। अनीकुश्का की अपनी पत्नी को दुलरा रहा था एक भारी-भरकम-सा फौजी। उसने पेंडिंग वाल

ताकी पतलून पहन रखा था। उसके बूटों में बड़ी-बड़ी ऐड़ें लगी हुई थीं। लगता था जैसे किसी संग्रहालय से उठा लाई गई हैं। मेमने की खाल की टोपी खोपड़ी पर औंधी हुई थी और उसके भूरे चेहरे से पसीना चू रहा था। एक गीला हाथ औरत की पीठ पर दहक रहा था। औरत नशे में धुत्त और अशक्त हो चुकी थी। अगर उसमें शक्ति होती तो वह अवश्य वहां से उठकर चली जाती। उसकी निगाह अपने पति की निगाह से मिल रही थी, और दूसरी औरतों की मुस्कानों का अर्थ भी वह समझ रही थी। लेकिन, उसमें ताब न थी कि अपनी पीठ पर रखा हाथ वह एक ओर को झटक दे। ऐसी हालत में वह नशे में झूमती, हँसती बैठी हुई थी।

मेज पर खुले घड़े रखे थे, और सारे घर से शराब की बू आ रही थी। मेजपोश मैला चीकट हो चुका था।

कमरे के बीचोबीच, घुड़सवारों के ट्रूप का एक कमांडर हरे-शैतान की तरह नाच और कमर लचका रहा था। उसने बिरजिस के साथ क्रोम के पीले बूट पहन रखे थे। ग्रिगोरी ने ड्योढ़ी में ये चीजें देखीं तो सोचा, 'किसी अफसर की उड़ा दी होंगी।' आँख उठाकर देखा तो लगा आदमी का चेहरा फूला हुआ, पसीने से तर, कान बड़े, गोल, आगे की ओर उभरे हुए-से; होंठ मोटे और लटके हुए। मन ही मन बोला, 'यहूदी तो है, मगर काफी जानदार है।···'

लोगों ने उसके और ग्रिगोरी के लिए भी वोदका ढाली। ग्रिगोरी पीते वक्त भी चौकन्ना और सावधान रहा। पर, प्योत्र जल्दी ही उलट गया, और एक घंटे के अन्दर ही कज्जाक नाच करने लगा—कच्ची मिट्टी के फर्श पर। इस सिलसिले में एड़ियों से ऐसी धूल उड़ी कि क्या कहिए। यही नहीं अकॉरडीओन-वादक की ओर देखकर, फटी हुई आवाज में वह बार-बार चीखा भी—"लय और तेज करो···और तेज करो लय!"···ग्रिगोरी मेज के किनारे बैठा कुम्हड़े के बिये कुटकुटाता रहा। उसकी बगल में साइबेरिया का रहने वाला एक मशीनगनर जमा रहा।

"हमने कोलचाक की हिम्मत पस्त कर दी!" वह ग्रिगोरी से बोला'

"अब तुम्हारे आसनोव को हम कायदे से समझे-बूझेंगे···वह अपनी करनी का फल भुगतेगा। तुम लोग खेती-बारी करो···जमीन को जोतो, गोड़ो, बोओ, फसलें उगाओ। जमीन तो औरत की तरह है। वह खुद नहीं झुकती। तुम जो चाहो सो ले लो उससे। फिर, यह है कि जो भी तुम्हारे आड़े आए, उसे तलवार के घाट उतार दो। हम तुमसे कुछ नहीं चाहते। हम तो सिर्फ सबको बराबरी का हक देना चाहते हैं।"

ग्रिगोरी ने उसकी हाँ में हाँ मिलाई, पर वह प्रति पल लाल-सैनिकों को देखता-समझता रहा। चिंता का कोई कारण समझ में नहीं आया। वे सब प्योत्र का नाच देखते और दाँत निकालकर उसके कौशल की सराहना करते रहे। एक गम्भीर स्वर ने खुशी से भरकर कहा—"शैतान, क्या कमाल करता है!" लेकिन, इसी बीच ग्रिगोरी ने एक घुँघराले बालवाले फौजी की निगाहें अपने ऊपर गड़ी देखीं। वह चौकन्ना हो गया और उसने पीने से हाथ खींच लिया।

अकॉर्दिअोन-वादक ने पोलका की धुन छेड़ी। लाल-फौजियों ने कज्जाक औरतों को साथ नाचने की दावत दी। एक ने नशे में लड़खड़ाते हुए ख्रिस्तोन्या के पडोसी की जवान पत्नी को नाच में अपना साथी बनाना चाहा। पर, उसने इन्कार कर दिया और अपना स्कर्ट उठाती हुई ग्रिगोरी के पास दौड़ गई।

उससे बोली, "आओ, नाचो मेरे साथ।"

"मेरा नाचने का मन नहीं है।"

"आओ, ग्रिगोरी आओ···मेरे सुनहरे फूल, उठो।"

"बेवकूफी की बात न करो···मैं नहीं नाचूँगा।"

पर, औरत ने जबरदस्ती हँसते हुए उसे घसीटना शुरू किया। ग्रिगोरी के माथे पर बल पड़े। उसने उसे रोकने की कोशिश की, पर उसे आँख मारते देखकर राजी हो गया। नाच के दो चक्करों के बाद औरत ने गति के ठहराव से फायदा उठाया, ग्रिगोरी के कंधे पर सिर टिकाया और बहुत ही धीरे से फुसफुसाकर कहा, "ये लोग तुम्हें मारने के बाँधनू बाँध रहे हैं···किसीने इन्हें बतला दिया है कि तुम फौजी अफसर हो···तुम निकल जाओ यहाँ से।" फिर, जोर से बोली, "उफ, मेरा

सिर चक्कर खा रहा है !"

ग्रिगोरी सहसा ही खुशी से खिल उठा, मेज़ के इस पार आया, एक मग वोदका ढाली और दार्या की ओर मुड़ा, "प्योत्र नशे में धुत्त हो गया ?"

"करीब-करीब।"

"घर ले जाओ इसे।"

दार्या ने प्योत्र को उठाया और, उसके ढकेलने, धक्के देने और पूरी ताकत दिखलाने के बावजूद, उसे बाहर ले आई। ग्रिगोरी पीछे-पीछे आया।

"अरे, कहाँ चल दिए तुम ? अभी जाओ नहीं।" अनीकुश्का ग्रिगोरी के पीछे-पीछे दौड़ा। पर, ग्रिगोरी ने उसे ऐसी नजर से देखा कि उसने अपने हाथ फैला दिए और लड़खड़ा गया।

ड्योढ़ी पर ग्रिगोरी ने अपनी टोपी हिलाई। बुदबुदाया—"इस तरह मिल बैठने के लिए शुक्रिया !"

घुंघराले बालोंवाले लाल-गार्द ने अपनी पेटी ठीक की और ग्रिगोरी का पीछा किया। सीढ़ियों तक पहुँचते-पहुँचते वह हाँफने लगा, और तेज आँखें चमकती नजर आईं। ग्रिगोरी के बरानकोट की आस्तीन थामते हुए बोला, "कहाँ जा रहे हो ?"

"घर जा रहा हूँ" ग्रिगोरी ने बिना रुके, आदमी को अपने साथ ही साथ घसीटते हुए जवाब दिया, और मन ही मन संकल्प किया, 'जीते जी मैं तुम्हारे हाथ नहीं आने का !'

लाल-गार्द ग्रिगोरी की कोहनी अपने हाथ से साधे उसकी बगल में चलने लगा। दोनों छोटे फाटक पर रुके। ग्रिगोरी ने देखा कि पीछे के दरवाजे को रगड़ लगी और उस लाल-गार्द ने रिवाल्वर की ओर हाथ बढ़ाया तो नाखून केस पर बज-से उठे। उसे एक क्षण तक उस आदमी की इस्पाती आँखें अपनी ओर गड़ी लगीं। वह मुड़ा और उसने रिवाल्वर के केस पर रखे हाथ की कलाई कसकर पकड़ ली। इसके बाद उसने उसके बाजू को दाहिने कंधे के ऊपर झटका, झुका, पूरी होशियारी से उसके भारी शरीर को धक्का दिया और हाथ नीचे की ओर घसीटे। कोहनी की हड्डी के कड़कने की आवाज उसके कानों में पड़ी। गोरा, घुंघराले

बालोंवाला आदमी गिरने को हुआ और बर्फ के अम्बार में गड़ गया।

ग्रिगोरी झुकता हुआ, बाड़ों के किनारे-किनारे चलता हुआ, एक किनारे की गली मे पहुँचा और वहाँ से दोन की ओर बढ़ा। वह दौड़ने लगा। उसने किनारे की ओर उतरनेवाले मोड पर जैसे-तैसे पहुँचने की कोशिश की। मन ही मन सोचा, "अगर कोई चौकी यहाँ न हुई तो···" क्षण-भर को ठिठका। पीछे से अनीकुश्का का पूरा अहाता साफ-साफ नज़र आया। इसी समय उसने गोली दगने की आवाज़ सुनी। गोली सरसराती हुई बगल से गुज़र गई। फिर और गोलियाँ चलाई गई। ग्रिगोरी ने फैसला किया, 'दोन के पार' पहाड के नीचे चले चलो।' यानी उसने आधा फासिला तय किया ही था कि एक गोली सर्र से आई और बर्फ मे दफन हो गई। कुछ हिस्से इधर-उधर छिटके। ढोरों को हाँकनेवाले आदमी के चाबुक की तरह की आवाज गोलियाँ करती रहीं। ग्रिगोरी को बच निकलने की भावना से किसी तरह की खुशी का अनुभव न हुआ। वह सारी घटना के प्रति अन्यमनस्कता की भावना से घिरा रहा। दुबारा ठिठका तो उसका दिमाग मशीन की तरह सोच गया, 'शायद वे किसी जानवर का शिकार कर रहे हों। वे मेरी तलाश इस तरह न करेंगे। यहाँ जंगल में आने में उन्हे डर लगेगा।···और उस आदमी को तो खाने-भर को मैंने दे दिया···अब वह तो मुझे याद रखेगा। गधा कही का! उसका ख्याल था कि निहत्थे कज़्ज़ाक का कुछ बना-बिगाड़ लेगा।"

वह जाडे की टालो की ओर बढा, पर किसी आशंका से भरकर मुडा और खरगोश की तरह रास्तों के लम्बे जालों के चक्कर काटता रहा। उसने एक कोने मे पड़ी, सूखी सेवार की टाल में रात काटने का निश्चय किया, और वहाँ पहुँचने पर ऊपर से एक गढा बनाया। एक ऊदबिलाव उसके पास से गुज़रा। ग्रिगोरी, सूखी सेवार की सड़ायध और बदबू के बावजूद, टाल में सिर तक धँस गया और आराम करने लगा। उसका सारा बदन काँपने लगा। इस समय उसके दिमाग में न किसी तरह का कोई ख्याल रहा और न किसी तरह की कोई योजना। बस, एक सवाल अचानक ही कौंधा, "कल सुबह घोड़ा कसो और मोर्चा पार कर अपने तरफ के लोगों में शामिल हो जाओ तो कैसा रहे? लेकिन, सवाल कि

जवाब अन्दर से न आया तो वह शान्त मन से लेट गया।

सुबह होते-होते उसे कपकपी छूट चली। उसने झांककर बाहर देखा—ऊपर प्रसन्नता से निखरती उषा की प्रकाश-रेखियां दीख पड़ीं। ग्रिगोरी को पल-भर को ऐसा लगा जैसे कि नीले-सांवले स्वर्ग के गहन गह्वर का तल उसके सामने हो, और यह तल दोन का छिछला हिस्सा हो। क्षितिज पर नज़र आया धुएं से घिरा नीलम, और सिरों पर, मुरझाते हुए सितारों की बुझती हुई मुस्कानें।

: १८ :

लड़ाई का मोर्चा तातारस्की के पार चला गया। लड़ाई का शोर-गुल खत्म हो गया। फौजों ने गांव में पड़ाव डाला तो आखिरी दिन घुड़सवारों के एक रेजीमेंट के मशीनगन चलानेवालों ने मोखोव का ग्रामोफोन एक चौड़ी स्लेज पर रखा और सड़कों पर इधर-उधर घोड़े दौड़ाए। घोड़ों के खुरों ने बर्फ उछाल-उछालकर ग्रामोफोन के भोंपे में डाली। मशीन सर्दी से काफी खांसी। उसे बहुत छींकें आईं। इस पर साइबेरियाई टोपवाले एक मशीनगनर ने भोंपा बड़े इत्मीनानर से साफ किया और उसे यों घुमाया, गोया वह कोई मशीनगन हो। गांव के बच्चे, गौरैयों के भूरे दल की तरह, घरों से भागे आए और स्लेज से लिपटकर चीखने लगे, "डैडी, वह चीज़ सुना दो, जिसमें सीटियां बजती हैं! थोड़ा और डैडी!" इनमें से दो किस्मतवर बच्चे मशीनगनर के घुटनों पर जा बैठे। मशीनगन जब ग्रामोफोन में चाभी न देता तो खाली हाथों से छोटे बच्चे की बहती हुई नाक पोंछता।

बाद में संघर्ष की गूंज हलकी पड़ी तो खाने-पीने और लड़ाई के सामान से लद-लदकर गाड़ियां तातारस्की होती हुई दक्षिणी मोर्चे को जाने लगी। वे लाल-सेना के लिए वस्त्र और हथियार पहुंचाने लगीं।

तीसरे दिन घर-घर यह पैगाम पहुंचाया गया कि गांव में एक सभा हो रही है। आग्रह किया गया कि उसमें सभी लोग हिस्सा लें।

"हम कासनोव को अतामान चुनने जा रहे हैं!" एक हंसोड़ कज्ज़ाक ने पैन्तेली से कहा।

"लेकिन अतामान हम चुनेंगे या उसका नाम ऊपर से आएगा?" पैन्तेली ने पूछा।

"देखा जाएगा।"

ग्रिगोरी और प्योत्र भी सभा में आए। जवान कज्ज़ाकों में तो एक आदमी भी घर पर न रहा। बूढ़े ज़रूर नहीं आए। सिर्फ डींगिया और दम्भी अवदीच ही एक ऐसा निकला जिसने कुछ कज्ज़ाकों को जमा किया और बतलाना शुरू किया कि कैसे किसी लाल-कमीसारने उसके यहाँ रात गुज़ारी और कैसे उसने उसे एक बड़ा ओहदा मंज़ूर कर लेने की दावत दी।

अवदीच बोला, "जनाब, उसने मुझसे कहा, "मुझे क्या पता था कि आप पुरानी फौज में सार्जेण्ट रहे हैं…अगर ऐसा है तो हमें बड़ी खुशी होगी कि यह जगह आप सम्हाल लें।"

"कौन-सी जगह? मेरे ख्याल से तो सिर्फ एक जगह है तुम्हारे लिए, और तुम जानते हो कि वह क्या है!…" मिखाइल कोशेवोइ ने व्यंग्य से बात काटी।

कितनी ही आवाज़ों ने बात का समर्थन किया।

"तुम तो कमीसार की घोड़ी की देखभाल करना और उसके चूतड़ रगड़-रगड़ कर धोना…!…"

"क्या कहते हो तुम!"

ज़ोर के ठहाके लगे।

"तुम नहीं जानते कि तुम्हारे लिए कौन-कौन-से काम सोच रखे हैं उन लोगों ने…यानी इधर कमीसार इससे लम्बी-चौड़ी बातें करता रहा, और उधर इसका अर्दली इसकी बूढ़ी बीवी के मज़े लेता रहा…फिर यह कि कमीसार की बातें सुनने में यह बूढ़ा ऐसा खोया कि इसे अपनी नाक पोंछने तक का होश न रहा!"

अवदीच ने थूक नीचे उतारा और फटी-फटी-सी आँखों से चारों ओर देखते हुए पूछा, "किसने कहा है यह?"

"मैंने कहा है!" पीछे से साहस से भरी एक आवाज़ आई।

"क्यों भाई, तुममें से किसीने कभी ऐसा सुअर का बच्चा देखा है?" अवदीच ने हमदर्दी पाने के लिए चारों ओर नज़र दौड़ाई। काफी

लोगों ने उसके साथ हमदर्दी दिखलाई। "यह तो घिनौना सांप है—मैंने तो हमेशा यह बात कही है।"

"उसका खानदान का खानदान ही ऐसा है!"

"अरे छोड़ो, मैं जवान होता तो···"अवदीव के गाल पहाड़ीवे रियों की तरह दहकने लगे—"मैं जवान होता तो तुम्हें अपना एकाध हाथ दिखाता। तुम तो गदे टकइनियों की तरह जबान चलाते हो···तगानरोग के चिकटहे बर्तन हो तुम!"

"इसे छोड़े क्यों दे रहे हो अवदीव! तुम्हारे सामने तो यह मुर्गी का चूजा भी नहीं है।"

"अवदीव इन दिनों तरह दे रहा है।"

"उसे डर लगता है कि जोर पड़ेगा तो पेट पर का बटन टूट जाएगा।"

अवदीव शोर शराबे और हगामे के बीच वहां से शान से चला गया।

कज्जाक, चौक में, छोटे-छोटे गिरोहों में जमा हुए तो ग्रिगोरी की नजर अपने पुराने मित्र मीशा कोशेवोइ पर पड़ी। उसने वसन्त के बाद यानी सेना के विघटन के बाद से अब तक उसे न देखा था। सो, वह उसके पास गया। उसने उससे हाथ मिलाया और उसकी नीली आँखों में आँखें डालते हुए, मुस्कराकर पूछा—"हलो, मीशा, कहां हवा हो गए थे तुम? किसके झण्डे के नीचे लड़ाई लड़ते रहे हो?"

"ओहो! पहले तो मैंने चरवाहे की शक्ल में काम किया। फिर उन्होंने मुझे कालाश के मोर्चे पर कानून-कायदों वाली कम्पनी में डाल दिया···"मीशा बोला, "मैं वहां से चल दिया और घर चला आया कि मोर्चे पर लाल-गारदों में शामिल होंगे। लेकिन इस तरफ के लोगों ने मुझ पर ऐसी नजर रखी, जैसी कोई मां भी अपनी क्वांरी, जवान बेटी पर शायद ही रखे!···इसके बाद, अभी उस दिन इवान अलेक्सेयेविच, पूरी फौजी वर्दी में मेरे पास आया और बोला, 'अपनी राइफल तैयार रखो, और आओ मेरे साथ।' मैं अभी-अभी घर आया था। मैंने पूछा, 'गाँव छोड़कर तो नहीं भाग रहे?'

"उसने कन्धे झटके और कहा—'इन लोगों ने मुझे बुलवाया है। किसी जमाने में मैंने उनकी मिल में काम किया था।' उसके बाद उसने

अलविदा कहा और चला गया। मैंने सोचा कि सचमुच ही चला गया है यह। मगर अगले दिन लाल-सेना का एक रेजीमेंट गाँव के बीच से मार्च करता गुज़रा तो वह रेजीमेंट में शामिल नज़र आया। अरे, वह तो वह रहा···इवान अलेक्सेयेविच ! " उसने चौक के इस पार से आवाज़ लगाई।

इवान, मिल-मज़दूर दाविद के साथ पास आया। उसने ग्रिगोरी का हाथ अपने गट्टों से भरे चिकनी उँगलियों वाले हाथ से दबाया, और जीभ बजाई, "तुम पीछे कैसे रह गए ग्रिगोरी ?"

"और, तुम कैसे रह गए···?"

"मेरा तो मामला ही दूसरा है···"

"मेरे कमीशन की बात सोच रहे हो ?"···ग्रिगोरी ने पूछा—"मैंने उसे खतरे में डाल दिया और यहीं बना रह गया। अभी कल तो जान जाते-जाते बची। लाल-फौजियों ने मेरा पीछा किया और मुझपर गोलियां बरसानी शुरू कर दी। मेरा दिल दुखा कि मैं गाँव छोड़कर कहीं चला क्यों नहीं गया ? लेकिन अब मुझे किसी तरह का कोई अफसोस नहीं है।"

"क्या···हुआ···क्या ?"

"मैं अनीकुश्का के यहाँ गया था···किसीने लोगों से कह दिया कि मैं फौजी अफसर हूँ···उन्होंने प्योत्र को नहीं छुआ···मैंने उनमें से एक को अपनी यादगार दे दी और फिर मैं दोन के पार उड़ दिया। इसके बदले में वे घर गए और पतलून, कोट और हर चीज़ उठा ले गए। इस समय जो कुछ बदन पर है, बस वही मेरे पास है।"

"हमें जिस समय मौका मिला था उसी समय जाकर लाल-गारदों से मिल जाना चाहिये था। मगर हम यह कर लेते तो इस वक्त इस तरह बेवकूफ नज़र न आते।" इवान अलेक्सेयेविच दर्द से मुस्कराया और धुआँ उड़ाने लगा।

सभा शुरू हुई। उद्घाटन व्येशेन्स्काया से आए फोमिन के एक आदमी ने किया—

"साथी कज़ाको, सोवियत सरकार ने हमारे ज़िले में जड़ जमा ली है। अब हमें शासन-व्यवस्था करनी चाहिये। हमें एक कार्यकारिणी-समिति बनानी चाहिए। एक अध्यक्ष और उसके साथ ही एक उपाध्यक्ष चुनना

चाहिए। यह पहला सवाल है। दूसरा काम यह है कि आपको सारे हथियार हमें सौंप देने चाहिए। इसके लिये क्षेत्रीय सोवियत का आदेश मेरे पास है। मैं साथ लाया हूँ।"

"क्या बात है!" किसीने पीछे से जहर उगला। फिर कुछ देर तक सन्नाटा रहा।

"इस तरह की उलटी-सीधी बातों की कोई जरूरत नहीं है, साथियो!" फोमिन के प्रतिनिधि ने हिम्मत से काम लिया और अपनी फर की टोपी मेज पर रखी—"बेशक, हथियार तो सारे ही आपको हमें सौंप देने चाहिए। घरों में आपको उनकी कोई जरूरत नहीं। अगर कोई सोवियतों की रक्षा के लिये अस्त्र-शस्त्र चाहेगा तो उसे दे दिये जाएंगे। राइफलें सारी की सारी तीन दिन के अन्दर-अन्दर आ जानी चाहिए···और अब हम चुनाव करेंगे।"

वक्ता अपना वाक्य पूरा भी न कर पाया था कि एक आवाज गूँजी—"आपने हमें हथियार दिए थे क्या, जो अब आप उन्हें हमसे ले लेंगे?" सबकी निगाहें उसी तरफ मुड़ गईं। बोलने वाला जरूर कोरोलमोव था।

"और आप उन्हें अपने पास रखना क्यों चाहते हैं?" त्रिस्तोन्या ने सहज भाव से पूछा।

"मुझे नहीं चाहिए, लेकिन हमने जब लाल-फौज अपने इलाके में आने दी थी, तो ऐसा कोई समझौता नहीं किया था कि वे लोग हमें निहत्था कर देंगे।"

"फोमिन ने ऐसा सभा में कहा था।"

"यह ठीक है, और हमने अपनी तलवारें खुद मेहनत कर ठीक-ठाक तरीके से रखी हैं।"

"मैं अपनी राइफल जर्मनी की लड़ाई से लेकर आया था, और अब क्या वही राइफल मुझे इन लोगों को सौंप देनी पड़ेगी? ये लोग हमें लूटना चाहते हैं···बिना हथियारों के हम करेंगे क्या···बिना हथियारों के मैं ऐसा हो जाऊँगा जैसे कोई औरत बिना स्कर्ट के हो···यानी, मुझे नंगा समझिए!"

मीशा कोशेवोई चीखा। लोगों से बोला—"साथियो, मुझे बोलने दो।

आप लोगों को इस तरह बातें करते देखकर मुझे ताज्जुब हो रहा है। इस इलाके में लड़ाई की सूरत है या नहीं ! अगर है, तो बहस करने से कोई फायदा नहीं। हथियार उन लोगों को सौंप दो। उक्रइनी गाँवों को अपने हाथों में कर लेने के बाद क्या हमने भी ऐसा ही नहीं किया था ?"

प्रतिनिधि ने अपनी फर की टोपी पर हाथ फेरा और जोर देकर बोला, "जो भी तीन दिन के अन्दर-अन्दर अपने हथियार दे नहीं देगा उसे इन्कलाबी अदालत को सौंप दिया जाएगा और क्रान्ति-विरोधी मानकर गोली से उड़ा दिया जाएगा।"

एक क्षण के सन्नाटे के बाद तोमिलिन खांसा और ज़ोर से बोला—"तो, अब चुनाव कर लिया जाए।"

बस, तो कोई बारह नाम एकदम आ गए। एक कमउम्र कज्जाक चिल्लाया—"अवदीच !" लेकिन मज़ाक जमा नहीं। सबसे पहले इवान अलेक्सेयेविच का नाम लिया गया और उसे एकमत से चुन लिया गया। "मामला तय हो गया···इस पर वोट लेने की ज़रूरत नहीं।" प्योत्र मेलेखोव बोला।

कज्जाक राज़ी हो गए और मीशा कोशेवोइ बिना मतदान के ही अध्यक्ष का सहायक नियुक्त हो गया।

सभा के बाद मेलेखोव बन्धु और ख्रिस्तोन्या घर जा रहे थे कि सड़क पर उनका मुलाकात अनीकुश्का से हुई। उसकी बगल में राइफल थी, और पत्नी के एप्रन में बंधे कारतूस। उसने इन कज्जाकों देखा तो उसे खासी उलझन हुई और वह एक कोने की गली में अदृश्य हो गया। इसपर प्योत्र ने ग्रिगोरी की तरफ देखा, ग्रिगोरी ने ख्रिस्तोन्या की ओर, और वे तीनों ही ठठाकर हंसे।

· १६

पूरे स्तेपी में पुरवा सर्राटे भर रही थी। बर्फ ने सारे गड्ढे-गड्ढैया बराबर कर दिए थे। न सड़कें नजर आती थीं और न पगडंडियां। नंगे, कपूरी मैदान में हर ओर हवा का जोर था। जीवन जैसे निष्प्राण हो गया था। कभी-कभी ही स्तेपी का हमउम्र कोई काला कौआ बर्फ के ऊपर

उड़ता और काँव-काँव करता नजर आता था। हवा उसकी आवाज स्तेपी के इस पार से उस पार ले जाती थी। दर्दभरी आवाज वातावरण में बहुत देर तक गूजती रहती थी, जैसे रात के सन्नाटे मे कोई किसी वाद्य-यन्त्र के मद्र के तार को ठुनकी दे दे।

लेकिन, बर्फ के नीचे स्तेपी में अब भी प्राण बज रहे थे। रुपहली बर्फ की जमी हुई लहरियों के नीचे जहाँ जमीन जुती हुई थी, और जहाँ शरद के बाद से लोगों ने अक्सर लम्बी साँसें ली थी, वहाँ पाले के नीचे, जीवन की प्यासी, जानदार जडों के हाथो से मिट्टी को जकडे जाड़े की राई फैली हुई थी। उसका रग रेशमी हरा था और उसकी आँखो में ओस की बूँदों के जमे हुए आँसू थे। वह काली मिट्टी के जीवनदायी काले रक्त से प्राण ग्रहण कर रही थी और प्रतीक्षा कर रही थी वसन्त की, वसन्त के नारगी सूरज की, ताकि वह उभरे, हीरों से जड़ी बर्फ की शानदार परत भेदे और मई में शक्तिवान होकर अपनी हरियाली चारों ओर छिटके। उसे पूरी आशा थी कि वह समय मे उगेगी, बढेगी, बटेर उसमें चोंचें लड़ायेंगे, अप्रैल मे उसके ऊपर स्काईलार्क-चिड़ियाँ गायेंगी, सूरज उस पर धूप का सोना बरसायेगा और हवा उसे झूले झुलाएगी कि पके हुए दानों के भार से झुकी हुई बालियों को मालिक अपने हँसिए से काटेगा और खलिहान में ओसाकर दानो का अम्बार लगा देगा।

पूरे के पूरे दोन-प्रदेश का जीवन जैसे कुचल उठा था। उसकी हर साँस जैसे एक राज हो उठी थी। दिन उदासी मे लिपटकर आते थे। कुछ ऐसा था जो किसी अनजाने साँचे में ढल रहा था। दोन के ऊपरी क्षेत्रों, उसकी सहायक नदियों के आस-पास के इलाको, चीर, खोपर और येलान्का के किनारे के प्रदेशों और बडी और छोटी नदियों के कज्जाक-गाँवों से जड़ी बेसिनों में एक अफवाह धीरे-धीरे फैल रही थी। लोग कहते कि लड़ाई का मोर्चा तो दोनेत्स नदी के क्षेत्र में आकर जम गया है, उसका अब कोई डर नहीं। अब तो डर असाधारण कमीशनों और अदालतों का है···कहा जा रहा था कि लाल-फौजी किसी भी दिन कज्जाकों के जिलों मे आ टपक सकते हैं। वे मिगुलिन्स्काया और कजान्स्काया में कभी के पहुँच चुके हैं और श्वेत-गार्दों की सेवा में रह चुके कज्जाकों पर

गैरकानूनी मुकदमे चला रहे हैं। साफ है कि ऊपरी दोन के कज्जाकों का मोर्चे से पीठ दिखाकर भागना, उनकी तरफ से दी गई सफाई मानी नहीं जा रही है···मुकदमे की पूरी कार्रवाई ऐसी आसान होती है कि डर से रोंगटे खड़े हो जायें—इलजाम, एक-दो सवाल, फैसला और फिर मशीनगन से धायँ! ···बताया जा रहा था कि कज़ान्स्काया और शुमिलिन्स्काया में कितने ही कज्जाकों की लाशें झाड़ियों में पड़ी हैं, और कोई उनकी ओर आँख उठाकर देखनेवाला नहीं है···इस पर मोर्चे की आगे की पंक्ति के लोग हँस दिए थे—'ये बातें झूठ हैं! फौजी अफसरों की मनगढ़न्त है! इन कैडेटों ने ऐसी ही बेसिर-पैर की बातों से हमें हमेशा डराने की कोशिश की है।'

अफवाहों पर विश्वास किया जाता था और फिर भी नहीं किया जाता था। तरह-तरह की कहानियाँ गाँवों में चालू थीं और इन्हीं के कारण कमजोर लोग भाग खड़े हुए थे। लेकिन जब मोर्चा आगे बढ़ा था तो कितने ही लोग रातोंरातों सो नहीं सके थे, और बेचैनी से करवटें बदलते रहे थे। पत्नियों का प्यार और दुलार भी उन्हें धीरज दे नहीं पाता था। कुछ कहते—'बुरा हुआ कि हम दोनेत्स के पार चले नहीं गये। लेकिन जो हो चुका सो हो चुका। आँसू एक बार चू जाने के बाद फिर पलकों पर वापिस नहीं आते।'

तातारस्की में हर दिन शाम को कज्जाक किनारे की गलियों में जमा होते। खबरें सुनने-सुनाते और दर-दर चक्कर काटते हुए घर की बनी वोद्का पीते फिरते। गाँव की जिन्दगी में एक कटुता से भरी वीरानगी रही। इस वर्ष लग्न के समय केवल एक शादी हुई और केवल एक बार स्लेजों की घंटियाँ घनघनाईं। यानी, मीशा कोशेवोइ ने अपनी बहन की शादी की। और, इस शादी का भी पास-पड़ोस के लोगों ने खासा मज़ाक बनाया—'क्या वक्त चुना है शादी का! शादी थी क्या, ख्याल है कि करनी पड़ गई होगी।'

सो, चुनाव के अगले दिन गाँव के घर-घर ने अपने हथियार खोद लिये। मोखोव के घर की बरसातियाँ और बरामदे हथियारों से पट गये। (इस समय ये जगहें क्रान्तिकारी समिति के अधिकार में थीं।) प्योत्र

मेलेखोव ने अपनी और ग्रिगोरी की राइफिलें, दो रिवॉल्वर और एक तलवार दी। ये सारे हथियार वे जर्मनी की लडाई से वापिस आते समय अपने साथ लाये थे। लेकिन, जो रिवॉल्वर उनके फौजी-ओहदों के कारण उन्हें दिये गए थे, वे उन्होंने अपने पास ही रख छोड़े।

प्योत्र घर लौटा तो उसे अपने मन का एक बडा बोझ उतरा लगा। पर, बरसाती में उसने ग्रिगोरी को, आस्तीनें उलटे, राइफिलों के जग लगे पेंच पैराफीन से साफ करते देखा। साथ ही दो राइफिलें स्टोव के पास रखी पायीं।

"शैतान कहीं का ! ये राइफिलें तुझे कहां से मिल गई ?" प्योत्र की मूँछें अचरज से झूल गई।

"पापा मुझसे मिलने फिलानोवो गये थे तो वहां से अपने साथ ले आये थे।" ग्रिगोरी की आँखें चमकने लगी। वह हँसी के ठहाके लगाने लगा। फिर अचानक ही हँसी खत्म हो गई और वह भेड़िये की तरह दांत दिखलाने लगा—"राइफिलें ? यह तो कुछ भी नहीं हैं।" उसकी आवाज बहुत ही धीमी हो गई, और घर मे किसी के न होने पर भी वह फुसफुसाकर बोला—"तुम्हें पता है, आज पापा ने मुझे बताया है कि उनके पास तो एक मशीनगन है !"—ग्रिगोरी के होंठों पर फिर मुसकान दौड गई।

"तुम झूठ बोल रहे हो ! मशीनगन भला उन्हें कहां मिली ? फिर इसकी जरूरत भी क्या है ?"

"बताया कि कुछ कज्जाक गाड़ी से सामान कहीं ले जा रहे थे कि उन्होंने थोड़े से दही के बदले में उन्हें मशीनगन दे दी। लेकिन मेरा खयाल है कि बुड्ढा झूठ बोलता है और उसने चुराई है यह कहीं से। वह तो गुबरैले कीड़े की तरह है। जो घसीट सकेगा, साथ घसीट लायेगा। आज मेरे कानों में कहने लगा—'मेरे पास एक मशीनगन है। मैंने खलिहान में छिपा रखी है। उसके मेन स्प्रिंग से बड़ी ही शानदार कंटियाँ बन सकती थीं, पर मैंने उसे हाथ नहीं लगाया।' 'मशीनगन की तुम्हें जरूरत क्या आ पड़ी ?' मैंने पूछा। जवाब मिला—'मुझे स्प्रिंग पसन्द आ गया। मैंने सोचा कि किसी-न-किसी काम आ जायेगा। कीमती है, लोहे का बना है···"

प्योत्र क्रोध से लाल हो उठा और जाकर पिता से बातें करने के खयाल से उठा तो ग्रिगोरी ने उसे रोका—"रुको जरा ! राइफिलों की सफाई और फिटिंग में मेरी मदद कर दो···फिर यह कि तुम कहोगे क्या पापा से ?"

प्योत्र ने राइफिलों की नलियों की सफाई शुरू की और सफाई के साथ ही साथ चीखता रहा। पर, जरा देर बाद उसने गम्भीरता से विचार किया—'हो सकता है कि पापा ठीक कह रहे हों। हो सकता है कि मशीन-गन काम की साबित हो। पड़ी रहने दो जहाँ की तहाँ।'

उसी दिन तोमिलिन मेलेखोव-परिवार मे आया और अफवाह सुना गया कि कज़ान्स्काया मे गोलियाँ चल रही हैं। वे लोग स्टोव के पास बैठे धुआँ उड़ाते और बातें करते रहे। इस बीच प्योत्र के माथे पर बराबर बल पड़े रहे। तोमिलिन के जाने के बाद बोला—"मैं रूबेज़नी जाकर याकोव फोमिन से मिलना चाहता हूँ। सुना है कि वह घर लौट आया है। और इलाके की इन्कलाबी-कमेटी बना रहा है। मैं उससे कहूँगा कि कुछ हो तो यहाँ आकर हमारी मदद करे।"

फिर, पॅन्तेली स्लेज मे घोड़ी जोतने लगा कि दार्या ने भेड़ की खाल ओढ़ी और बहुत देर तक सास-बहू मे फुस-फुस होती रही। फिर, दोनों छत्ती मे गई और एक बडल उठा लाई।

'क्या है यह ?" बूढ़े ने पूछा।

प्योत्र तो चुप रहा, पर इलीनीचिना तड से फुसफुसाते हुए बोली—"मैंने कुछ मक्खन वक्त-जरूरत के लिये यहाँ बचाकर रखा था। लेकिन यह मक्खन के बारे मे सोचने का वक्त तो है नहीं, इसलिए मैंने उसे दार्या को दे दिया है। वह उसे फोमिन की पत्नी को ले जाकर देगी। हो सकता है कि इसके बाद फोमिन प्योत्र की बात की ओर कान करे"—बुढ़िया रोने लगी—'लड़के जैसे-तैसे फौजी अफसर बने हैं, अब कहीं ऐसा न हो कि फौजी-पट्टियो के कारण इन्हे···"

"यह टेसुए बहाना बन्द करो !" पॅन्तेली ने गुस्से मे चाबुक स्लेज में पटका और प्योत्र के पास पहुचा। बोला—"उसके लिए थोड़ा-सा गेहूँ भी लेते जाओ।"

"उसे भला गेहूँ की क्या जरूरत ?" प्योत्र बरस पड़ा—"अच्छा हो कि तुम अनीकुश्का के यहाँ चले जाओ और वहाँ से थोड़ी वोद्का लेते आओ। गेहूँ का क्या होगा ?"

पैन्तेली फौरन ही चला गया और कुछ ही देर बाद एक सुराही वोद्का अपने कोट में ढँके लौटा। फिर सुराही रखी तो बोला—"वोद्का अच्छी है। जारों के जमाने में ऐसी ही मिलती थी।'

"और, तुम ढालते रहे हो···है न ?" इलीनीचिना ने उसे डपटा, पर पैन्तेली ने सुना नहीं। उसने अपनी आस्तीन से काँपते हुए होंठ पोंछे। अपनी आँखें सन्तोष से सिकोड़ीं और मचकता हुआ जवानों के-से उत्साह से घर में चला गया।

वोद्का के अलावा, लड़ाई के पहले की शेविग्रोत-ट्वीड का एक टुकड़ा, एक जोड़ा बूट और एक पौंड कीमती चाय प्योत्र अपने पुराने फौजी साथी के लिए अपने साथ ले चला। आज उसी साथी के हाथ में बड़ी सत्ता और शक्ति आ गई थी।

जहाँ तक चीजों का सवाल है, ये सारी चीजें और कितना ही कुछ और भी लूट का उसका अपना हिस्सा था। यह सारी माया उसे मिली थी तब जब अठाइसवें रेजीमेंट ने लिस्की के स्टेशन पर अधिकार कर लिया था और गाड़ी के तमाम डिब्बे और गोदाम लूट लिये थे। प्योत्र ने तो नीचे पहने जाने वाले जनाने कपड़ों की गाँठ की गाँठ उड़ा दी थी, और पिता मोर्चे पर मिलने गये थे तो उन्हीं के साथ घर भेज दी थी। फिर पैन्तेली के लौटने पर दार्या ने ये कपड़े पहने थे तो नताल्या और दुन्या डाह से जलने लगी थीं। ऐसे कपड़े गाँव में कभी किसी ने आँखों से भी न देखे थे। वे बारीक से बारीक विदेशी सूत के बने थे। बर्फ से ज्यादा उजले थे। और हर चीज पर कसीदाकारी थी। दार्या के नेकर की बेल दोन के झाग से भी ज्यादा खूबसूरत थी।

प्योत्र के व्येशेन्स्काया से लौटने पर वह पहली रात उसके साथ लम्बे नेकर पहन कर ही सोयी। प्योत्र ने लैम्प बुझाने के पहले, मुसकराकर पूछा—"तो तुम्हें किसी मर्द का पतलून मिल गया पहनने को ?"

दार्या ने सपनों में खोयी आँखों से जवाब दिया—"यह कपड़ा खूब

गरम है और बड़ा आराम देता है। लेकिन, तुमने यह कहाँ से समझा कि यह किसी मर्द का है? पहले तो यह चीज मर्दानी होती तो और लम्बी होती; दूसरे मर्दों को बेल से क्या लेना-देना?"

"मेरा खयाल है कि बड़े लोग अपने पैंटों में बेल लगवाते होंगे। लेकिन खैर, मुझे कुछ नहीं। तुम्हारा जी चाहे तो पहनो।" प्योत्र ने बदन खुजलाते हुए, निराश स्वर में कहा।

पर दूसरे दिन वह अपनी पत्नी के साथ लेटा तो उसे नेकर की बेल से बड़ी बेचैनी हुई। वह उसकी ओर आदर से देखता रहा और उसे हाथ लगाने से डरा। उसे लगा कि वह औरत उसके लिए अजनबी हो गई है…

तीसरी रात को वह क्रोध में लाल हो गया और घुड़ककर बोला, "यह पतलून उतारो और इसे शैतान को दे दो। यह औरतों के पहनने की चीज़ नहीं…अलग लेटी हो जैसे किसी राव-रईस की बीवी हो…इसे पहनकर तुम एक दूसरी ही औरत हो उठती हो!"

औरत का हिआव न हुआ कि वह उसे न उतारे।

दूसरे दिन सुबह प्योत्र दार्या से पहले सोकर उठा और भौंहें चढ़ाते और खाँसते हुए उसने नेकर खुद पहनकर देखने की बात सोची। वह बहुत देर तक दुविधा-भरे मन से उसके रेशमी बंदों, बेल और अपने नंगे घुटनों के नीचे बालों से भरे पैरों को घूरता रहा। मुड़ा और उसने शीशे में देखा तो पीछे नेकर की शानदार चुन्नटें नजर आयीं। उसने भालू की तरह उस कपड़े को उतारते हुए थूका और गालियाँ दीं। उतारते समय उसका बड़ा-सा अंगूठा बेल में फंस गया तो वह क्रोध से बिलकुल पागल हो गया और उसने बंद तोड़ डाले। दार्या ने सोते ही सोते पूछा, 'तुम कर क्या रहे हो?" पर प्योत्र ने मुँह से कुछ नहीं कहा। वह चोट खाये आदमी की तरह सिर्फ गुर्राता और रह-रहकर थूकता रहा। उसी दिन दार्या ने नेकर उठाया और आह भरते हुए सन्दूक में बंद कर रख दिया। इसके पहले ही यह बहुत-सी ऐसी चीजें भी बंद कर रख चुकी थी, जिनका दूसरी औरतों के लिये कोई इस्तेमाल ही नहीं था। छोटे होने पर भी स्कर्टों का उसने इस्तेमाल कर लिया था। वह उन्हें इस तरह पहनती कि उसका अपना स्कर्ट छोटा हो उठता और दूसरे अन्दर के स्कर्ट की बेस

एक इंच नीचे तक लटकती रहती। फिर, नुमाइश के खयाल से वह बाहर निकलती तो स्कर्ट की इंच-बेल कच्ची मिट्टी का फर्श बुहारती चलती।

वह अपने पति के साथ गई तो उसने खासे कीमती और शानदार कपड़े पहने। भेड़ की खालवाले ओवरकोट के नीचे बेल चमकती रही। ऊन का कोट भी नया और शानदार रहा। इस तरह दार्या ने पूरी कोशिश की कि गरीबी की झोंपड़ी से रियासत के महल में आ बसने वाली फोमिन की पत्नी उसे मामूली कज्जाक औरत न माने, बल्कि एक अफसर की बीवी समझे।

प्योत्र ने चाबुक नचाया और अपने होंठ बजाये। घड़े-से पेटवाली बूढ़ी घोड़ी दोन के किनारे वाली सड़क पर दुलकी-चाल चलने लगी। पति-पत्नी दोपहर के खाने के समय तक रुबेजनी पहुँच गये। आशा के अनुसार ही फोमिन घर पर ही मिला। उसने प्योत्र का स्वागत किया, उसे मेज के पास लाकर बिठाया और उसका पिता प्योत्र की स्लेज से वोद्का की सुराही उतारकर लाया तो वह होंठों-ही-होंठों मुसकराया।

"कहो दोस्त, तुम एक जमाने से नजर क्यों नहीं आये?" फोमिन ने मीठी, धीमी, भारी आवाज में कहा, दार्या की ओर वासना-भरी दृष्टि से देखा और शान से मूँछें ऐंठीं।

"आप तो जानते हैं, याकोव येफिमोविच, कि रेजीमेंट पीछे हट आयी है···बहुत दूसरा वक्त लगा है।"

"यह बात सही है···लगा तो है···हे औरत!" उसने अपनी पत्नी को आवाज दी, "थोड़ा-सा सिरकेवाला खीरा, पातगोभी या थोड़ी-सी सूखी मछली ले आओ!"

वह छोटा-सा घर ऐसा गरम था कि दम घुटता था। स्टोव के इधर दो बच्चे बैठे थे—एक लड़का और एक लड़की। लड़के की आँखें अपने पिता की आँखों की तरह ही नीली थीं।

तो, शराब के एक दौर के बाद प्योत्र ने अपने मतलब की बात छेड़ी। बोला, "गाँवों में बड़ी चर्चा है कि 'चेका' आ गया है और वह कज्जाकों को अपनी लपेट में ले रहा है।"

"लाल-फौजियों की एक अदालत व्येशेन्स्काया आयी तो है···लेकिन

कर बाहर झांकने और अंधेरे में किसी चीज़ को पहिचानने की कोशिश करने लगे। पर बेकार! लेकिन, सबसे पहले फेदोत-बोदोव्स्कोव की काल्मीक-आंखों ने पास आते घुड़सवारों को देखा। उसने अपनी राइफिल गर्दन से उतारते हुए, विश्वास के साथ कहा—"वह आ रहे हैं वे लोग!"

वह राइफिल की पेटी को, सलीब के डोरे की तरह गले में डाल रखता था। राइफिल सीने पर झूलती रहती थी। वह चाहे पैदल होता और चाहे घोड़े पर, राइफिल यों ही रहती। यही नहीं, एक हाथ नली पर होता और दूसरा कुंदे पर, जैसे कि कोई औरत जुआ साथ रही हो।

कोई दस घुड़सवार सड़क के किनारे-किनारे घोड़ों पर चले जा रहे थे। घोड़ा आगे-आगे था एक सम्भ्रान्त-सा व्यक्ति। उसके बदन पर शानदार गरम कपड़े थे। उसका दुमकटा घोड़ा बड़े विश्वास के साथ, जमे हुए कदम रख रहा था। ग्रिगोरी को घोड़ों के शरीर, उनके सवारों की आकृतियाँ और उनके नेता की फर की चौरस टोपी साफ नज़र आ रही थी। घुड़सवार सिर्फ कोई तीस गज दूर थे। लग रहा था कि कज़्ज़ाकों के गलों की खरखराहट और उनके दिलों की तेज़ धड़कनें वे ज़रूर ही सुन रहे होंगे।

ग्रिगोरी ने हुकम दे दिया था कि जब तक मैं न कहूँ, गोली न चलाई जाए। वह यकीन के साथ सही घड़ी के हिसाब में था। अपनी कार्रवाई का नक्शा उसने तैयार कर लिया था। सोच लिया था कि मैं घुड़सवारों को ललकारूंगा और वे परेशान होकर घोड़ों की रासें खींचेंगे तो गोली चला दूंगा।

सड़क की बर्फ धीरे-धीरे चरमराती रही। इसी समय एक घोड़े का खुर नंगे पत्थर पर फिसला तो नन्ही-सी पीली चिनगारी निकली।

"कौन जा रहा है उधर?" ग्रिगोरी बिल्ली की तरह उछलकर नाले के किनारे आया और खड़ा हुआ। उसके कज़्ज़ाक उसके पीछे उमड़ पड़े। लेकिन, जो कुछ सामने आया, ग्रिगोरी उसके लिए तैयार न था।

"किसे चाहते हो तुम?" आगे के घुड़सवार की भर्राई हुई आवाज आई, पर आवाज़ से न अचरज टपका और न डर। उसने अपना घोड़ा

ग्रिगोरी की तरफ मोड़ा।

"कौन हो तुम ?" ग्रिगोरी तीखी आवाज में चीखा। वह अपनी जगह से हिला नहीं, मगर उसने अपना रिवाल्वर आधा उठा लिया।

आदमी ने गुस्से से भरकर जोर से जवाब दिया—"कौन हिम्मत करता है इस तरह चीखने की ? मैं सजा देनेवाली फौजी-टुकड़ी का कमांडर हूँ, और आठवीं-लाल-फौज ने मुझे बलवाइयों को दबाने को भेजा है। तुम्हारा कमांडर कौन है ? उसे यहाँ भेजो !"

"मैं हूँ कमांडर।"

"तुम हो ? हूँ !···"

ग्रिगोरी ने घुड़सवार के उठे हुए हाथ में एक काली-सी चीज देखी और जमीन पर लेट गया। चीखा—"गोली चलाओ !" इसी समय उस आदमी के हाथ के 'ब्राउनिंग' से एक चौरस नाकवाली गोली उसके सिर के ऊपर से सरसराती निकल गई। फिर तो दोनों ओर से ऐसी गोलियां चलीं कि कान के परदे फटने लगे। बोदोव्स्कोव दौड़ा और उसने लपक कर लाल-कमांडर के घोड़े की रासें थाम लीं। ग्रिगोरी झुका और उसने अपनी तलवार से घुड़सवार के सिर पर ऐसा वार किया कि वह लड़खड़ाकर नीचे आ गया। सारा खेल दो मिनट में तमाम हो गया। लाल-सेना के तीन आदमी घोड़े दौड़ाकर निकल भागे, दो मार डाले गए और बाकी को निहत्था कर दिया गया।

ग्रिगोरी ने लाल-कमांडर ही के रिवाल्वर की नली उसके जख्मी मुंह में ठूसते हुए बहुत ही रुखाई से पूछा—

"तेरा नाम क्या है, सूअर कहीं का ?"

"लिखाचोव।"

"सिर्फ नौ लोगों को अपने बचाव के लिए साथ लाकर तू आखिर उम्मीद क्या कर रहा था कि क्या कर लेगा ? तू सोच रहा था कि कज्जाक तेरे घुटने पकड़ लेंगे और तुझसे माफी मांगेंगे ?"

"मार डालो मुझे !"

"सब कुछ अपने वक्त से हो जाएगा।" ग्रिगोरी ने उसे भरोसा दिलाया—"तुम्हारे कागजात कहां है ?"

"मेरे बंडल मे हैं···ले लो···डाकू कहीं के···सूअर कहीं के !"

ग्रिगोरी ने लिखाचोव की कोसाकासी की फिक्र न कर उसकी तलाशी ली। भेड की खालवाली उसकी जैकेट से एक दूसरा 'बाउनिंग' बरामद किया और उसकी मॉजर-राइफिल और बंडल अपने अधिकार मे किया। बगल की एक जेब मे उसे एक सिगरेट-केस मिला और एक चमडे की जिल्दवाली पॉकेट-बुक।

लिखाचोव रह-रहकर कराहा और उसने गालियों पर गालियां दीं। ग्रिगोरी के वार से उसका सिर फट गया था और दाहिने कंधे में गोली धंस गई थी। आदमी कद मे ग्रिगोरी से लम्बा और भारी-भरकम था। खासा तगडा लगता था। उसकी घनी भौंहे नाक के ऊपर जुड़ी हुई थीं। चेहरा सांवला, मुंह चौरस और जबड़े चौडे थे। दाढी-मूंछ साफ थी। बदन पर ओवरकोट, और सिर पर ग्रिगोरी के वार के कारण मुडा-मुडा-सा कुबान-टोप था। कोट के नीचे चुस्त-सी फौजी ट्युनिक थी। बिरजिस चौडी थी। लेकिन, उसके शानदार जूतों से लैस, पैर गैरमामूली ढंग से छोटे थे। जूतों का ऊपरी हिस्सा पेटेंट-चमडे का था।

"अपना कोट उतारो, कमीसार !" ग्रिगोरी ने हुक्म दिया—"बदन पर मांस खूब चढा हुआ है···कज्जाकों की रोटी खा-खाकर मोटाये हो··· मेरा खयाल है कि जमकर बर्फ नहीं बनोगे !"

कैदियों के हाथ रासों और घोडों के बन्दों से पीछे बांध दिए गए और उन्हे घोडों पर बैठाल दिया गया। पार्टी ने व्येशेन्स्काया के पास ही दाजकी मे रात बिताई। लिखाचोव स्टोव के पास पडा दर्द से कराहता, दांत पीसता और रह-रहकर करवटें बदलता रहा। ग्रिगोरी ने पैराफीन के लैम्प की रोशनी मे उसके कंधे का घाव धोया और उसकी मरहम-पट्टी की। वह मेज के किनारे बैठकर हाथों मे आए कागजात, क्रांतिकारी अदालत के बचकर निकल गए लोगों द्वारा दी गई व्येशेन्स्काया के क्रांति-विरोधियों की सूची, नोटबुक, पत्रों और नक्शों के निशानों का अध्ययन करता रहा। उसने बीच-बीच मे लिखाचोव की ओर देखा और निगाहों से निगाहें मिलीं तो ऐसा लगा, जैसे कि एक तलवार, दूसरी तलवार से

टकरा गई हो। कज्जाक रात-भर जागते रहे। वे या तो जब-तब ही उठकर घोड़ों की फिक्र करने बाहर गए या बरसाती में पड़े-पड़े बातें करते और धुआ उड़ाते रहे।

सवेरा होने के जरा पहले ग्रिगोरी औंघा गया, लेकिन, फिर फौरन ही जाग गया और सिर उठाकर देखने लगा। उसने देखा कि लिखाचोव दांत से पट्टी खोल और चीर रहा है। इस पर लिखाचोव ने खून की तरह लाल आंखों से उस पर तेज निगाह डाली। उसने ऐसे दर्द से दांत पीसे और उसकी आंखों में मरने की प्यास ऐसी चमकी कि ग्रिगोरी की सारी नींद हवा हो गई जैसे कि किसी अनदेखे हाथ ने हटा दिया हो उसे। पूछा—

"यह तुम कर क्या रहे हो?"

"कम्बख्त कहीं के! तुम्हें इससे क्या लेना-देना? मैं इस जिन्दगी का खात्मा कर देना चाहता हूँ।" लिखाचोव ने गरजकर जवाब दिया और पुआल पर सिर झुका लिया। उसका चेहरा एकदम पीला पड़ गया। रात-भर में उसने आधी बाल्टी पानी पिया था और झूठ को भी पलक नहीं झपकाई थी।

सुबह ग्रिगोरी ने उसे स्लेज में बैठालकर व्येशेन्स्काया भेज दिया। साथ में भेज दिए उससे बरामद हुए सारे कागजात और एक छोटी-सी रिपोर्ट।

: ३१ :

दो घुड़सवार-कज्जाकों की निगरानी में, स्लेज सड़क पर खड़खड़ाती हुई व्येशेन्स्काया पहुँची और कार्यकारिणी समिति की लाल ईंटोंवाली इमारत के सामने जाकर रुकी। उसके पिछले हिस्से में पड़ा लिखाचोव खून से तर पट्टी एक हाथ से साधते हुए उठा। कज्जाक अपने घोड़ों से उतरे और उसे इमारत के अन्दर ले आए।

मिली-जुली विद्रोही-सेनाओं के अस्थायी सेनापति, सुयारोव के कमरे में कोई पचास कज्जाक जमा थे। सुयारोव बैठा हुआ था। कज्जाक नाटे कद का था। नाक-नक्शे में कहीं कोई खास बात न थी। सो लिखाचोव

लडखड़ाता हुआ उसकी मेज के पास पहुँचा। उसने लिखाचोव पर एक निगाह डाली और पूछा—"तो, तुम हो लिखाचोव, साहबजादे ?"

"हा···ये रहे मेरे कागजात।" लाल-कमाडर ने अपनी पॉकेटबुक मेज पर पटक दी और सुयारोव की तरफ ढिठाई से भरी, तेज नजर से देखा—"मुझे दुख है कि मैं तुम लोगो के सिर सापों के फनों की तरह कुचल नही सका। कोई बात नही। सोवियत-रूस तुम्हे तुम्हारी करनी का फल चखायेगा। बडी मेहरबानी होगी, मुझे फौरन गोली से मार दो।"

"नही, कॉमरेड लिखाचोव, लोगो के गोली से उडाए जाने का हमने खुद विरोध किया है। हम तुम लोगों की तरह नही हैं। हम लोगों को गोली नही मारते। हम तुम्हारे जख्म की मरहम-पट्टी करेंगे। हो सकता है कि तुम अब भी हमारे काम के आदमी साबित हो।" सुयारोव ने जवाब दिया। उसकी आखें हल्के-हल्के चमकती रहीं। फिर वह वहा जमा लोगों की तरफ मुडा, "आप लोग बाहर जाइए···जल्दी कीजिए !"

सिर्फ पाच स्क्वैड्रनो के कमाडर कमरे मे रह गए। वे मेज के किनारे आ बैठे। किसी ने एक स्टूल पैर से लिखाचोव की ओर बढ़ाया, लेकिन उसने बैठने से इन्कार कर दिया, दीवार का सहारा ले लिया और खिडकी के बाहर एकटक देखने लगा।

"खैर, तो, लिखाचोव !"—सुयारोव ने स्क्वैड्रन-कमाडरों की आखों मे आखें डालने के बाद कहा—"बतलाओ जरा कि तुम्हारी टुकडी मे कितने लोग हैं ?"

"मैं नही बतलाऊँगा !"

"नही बतलाओगे ? तो न सही, कोई बात नही। यह तो हम तुम्हारे कागजात से मालूम कर लेगे। अगर उनसे भी पता न चलेगा तो तुम्हारे लाल-गारदों से पूछताछ कर लेंगे। एक बात हम तुमसे और कहना चाहते हैं, तुम अपनी टुकडी को व्येशेन्स्काया आ जाने को लिख दो। हमारा तुमसे कोई झगडा नही है। हमारा सोवियत-सरकार से विरोध नही है। हम तो कम्युनिस्टो और यहूदियों के खिलाफ हैं। हम तुम्हारे साथियों से हथियार लेकर उन्हे उनके घर भेज देंगे। साथ ही हम तुम्हे भी आजाद

कर देंगे। मुख्तसर यह कि तुम उन्हें लिख दो कि हम भी मेहनतकश हैं और उन्हें हमसे डरना नहीं चाहिए। हम सोवियतों के विरोधी नहीं हैं।"

लिखाचोव ने सुयारोव की सफेद दाढ़ी पर सीधे-सीधे थूक दिया। सुयारोव ने आस्तीन से थूक पोंछ डाला। उसका चेहरा तमतमा उठा। एक कमांडर मुसकराया, लेकिन अपने नेता की इज्जत बचाने को उठा कोई नहीं।

"तो, तुम हमारा अपमान करना चाहते हो, कॉमरेड लिखाचोव ?" सुयारोव बोला, पर उसके शब्दों में ईमानदारी बिलकुल न रही—"अतामान और फौजी अफसर हम पर थूकते रहे हैं। अब तुम भी हम पर थूकते हो···कम्युनिस्ट होने पर भी हम पर थूकते हो। इस पर भी तुम्हारा दावा है कि तुम जनता के साथ हो! खैर, कल हम तुम्हें कजान्स्काया भेज देंगे।"

"इस प्रस्ताव पर आप एक बार और विचार करना नहीं चाहेंगे ?" एक स्क्वैड्रन-कमांडर ने सख्ती से पूछा।

लिखाचोव ने ट्युनिक का कंधा ठीक किया और दरवाजे पर खड़े पहरेदार की ओर मुंह कर खड़ा हो गया।

इस पर भी उन्होंने उसे गोली नहीं मारी, क्योंकि विद्रोही शूटिंग और लूटमार के खिलाफ लड़ाई चला रहे थे।

अगले दिन उसे कजान्स्काया भेज दिया गया। वह अपने घुड़सवार सिपाही के आगे-आगे पैदल चलता रहा। इस बीच बर्फ पर उसने हलके-हलके कदम रखे और उसकी भौंहें तनी रहीं। लेकिन जंगल में पहुंचने पर वह बहुत ही सफेद बर्च के पास से गुजरा कि खुलकर मुसकराया, ठिठका और उसने हाथ बढ़ाकर एक शाख तोड़ ली। शाख की नयी कलियां वसन्त के पराग से बोझिल हो चली थीं और उनसे जिन्दगी की महक आ रही थी।

लिखाचोव ने बहार में मस्त पेड़ों को धुंधली-धुंधली-सी नज़र से देखा। होंठों-होंठों मुसकराया और कलियां मुंह में ठूंसकर चबा डालीं।

वह मर गया। कलियों की सांवली पांखुरियां उसके होंठों पर बनी रहीं। व्येशेन्स्काया से सात वर्स्ट पहले, बालू के टीलों के बीच गारद के

लोगों ने उसे हैवानों की तरह काटकर फेंक दिया। फिर उसका दम पूरा निकल भी नहीं पाया कि उन्होंने उसकी आंखों में तलवारों की नोकें चुभो दी, उसके बाजू, कान और नाक उड़ा दी, और उसके चेहरे पर तलवार से भरपूर वार किया। उन्होने उसके पतलून के बटन खोले; उसका खूबसूरत, मर्दाना बदन जहा-तहा से बदशक्ल किया, खून छोड़ते ठूठ पर चोट पर चोट की, उसके सीने को पैरो से रौंदा और एक भटके मे ही सिर धड़ से अलग कर दिया।

: ३२ .

दोन के पार के इलाको, ऊपरी क्षेत्रो और सभी जिलों से व्यापक विद्रोह के समाचार आ रहे थे। सात जिले बगावत कर चुके थे और उन्होने घुडसवार-स्क्वैड्रन जल्दी-जल्दी जमा कर लिए थे। दूसरे तीन जिले खुलकर खेलने को तैयार थे। विद्रोह उत्तर की तरफ बढने की धमकी दे रहा था। व्येशेन्स्काया सारी कारंवाइयो का अड्डा बन गया था। लम्बी बातचीत और बहस-मुबाहिसे के बाद सरकार के पुराने रूप को ज्यों-का-त्यों रखने की बात तय पायी थी। कज्ञाको और उनमे भी नौजवानों मे सबसे अधिक सम्मान्य लोगो को क्षेत्रीय कार्यकारिणी समिति का सदस्य चुन लिया गया था। अलग-अलग जिलो और गावों मे सोवियतें बन गई थी, और अजीब बात तो यह है कि जिस कॉमरेड शब्द को कभी नफरत की निगाह से देखा जाता था, वह भी रोजमर्रा के इस्तेमाल में रह गया था। आम नारे बुलन्द किए गए थे—'सोवियत-हुकूमत हो, लेकिन कम्युनों, शूटिंगो और लूटमार का नाम-निशान मिटे।' बागी टोपी मे सफेद कलगी या सफेद रिबन लगाने के बजाय सफेद और लाल रिबन आर-पार बाधते थे।

सुयारोव की जगह एक अठाईस वर्ष के जवान-कॉरनेट पावेल-कुदीनोव ने ले ली थी और वह मिली-जुली विद्रोही-सेनाओ का कमाडर बन गया था। कुदीनोव को चारो तरह के सत जॉर्ज-पदक मिल चुके थे। आदमी होशियार था। बातचीत का उसे खासा ढब आता था। बुरी बात यह थी कि वह चरित्र का ढीला था और ऐसी उथल-पुथल के वक्त

बागी ज़िले की कमान सम्हालने के लिए वह नहीं बना था। लेकिन स्वभाव का सरल था और हरेक के काम आ जाता था। इसलिए कज्ज़ाक उसकी ओर सहज-रूप से खिंच आए थे। खास बात यह थी कि कुदीनोव की जड़ें कज्ज़ाक-परम्पराओं में बड़ी गहराई तक गई थीं। बिगड़े हुए लोगों में पायी जानेवाली अफसरी ऐंठ और अकड़ उसके व्यक्तित्व में बिलकुल थी ही नहीं। [वह हमेशा सीधे-सादे कपड़े पहनता था। लम्बे बाल रखता था, ज़रा-सा झुककर चलता था और जल्दी-जल्दी बोलता था। पतली नाक वाले उसके चेहरे पर किसान-परिवार की छाप-सी रहती थी। देखने में बिलकुल साधारण लगता था—दूसरों से अलग कहीं से भी नहीं।

कज्ज़ाकों ने इल्या-सफ़ोनोव नाम के एक जूनियर-कप्तान को अपने स्टाफ का चीफ चुना। उन्होंने उसे चुना, क्योंकि कुछ बुज़दिल होने के बावजूद उसकी कलम बड़ी तेज़ थी और उसके अक्षर बहुत ही खूबसूरत बनते थे। चुनाव की सभा में किसी ने कहा—

"सफ़ोनोव को हैडक्वार्टर में रख दीजिए। लड़ाई के मोर्चे पर भेजे जाने के लायक वह नहीं। वहां जाएगा तो कज्ज़ाकों को मौत के मुंह में झोंक देगा। उसे वहां भेजना ऐसा ही है, जैसे किसी जिप्सी को पादरी बना दिया जाए।"

नाटे कद का गठीला-सा सफ़ोनोव इस पर सफेद गलमुच्छों-गलमुच्छों ही मुसकराया और स्टाफ का जिम्मा लेने को खुशी-खुशी तैयार हो गया।

लेकिन स्वतंत्रों ने अभी तक जो कुछ किया-धरा था, कुदीनोव और सफ़ोनोव ने उस सब को सिर्फ एक सरकारी शक्ल दी। संगठनकर्ता और नेताओं के रूप में उनके हाथ बंधे हुए थे। न ही वे इतने सबल थे कि ऐसे बिखरे हुए संगठन को सम्हाल लेते या घटनाओं की तेज़ रफ्तार के कदम से कदम मिलाकर चलते।

घुड़सवारों का एक लाल-रेजीमेंट बलवाइयों को दबाने के लिए भेजा गया। उसने मार्च की दौरान उस्त-खोपर्सकाया, येलान्स्काया और कुछ व्येशेन्स्काया-ज़िलों के बोल्शेविक जमा किए, लड़ते हुए गांव पर गांव पार किए और स्तेपी के बीच से, दोन के किनारे-किनारे बढ़ते हुए

पच्छिम की तरफ रख किया। पाचवी मार्च को घोड़े पर सवार होकर एक कज्जाक तातारस्की आया और उसने वहा के लोगों से येलान्स्काया के विद्रोहियो के लिए सहायता भेजने की अपील की। बात यह है कि उनके पास राइफिलें और लड़ाई की दूसरी चीजें न थी, और बिना दुश्मन का सामना किए वे पीछे हट गए थे। उन पर लाल-फौजियों ने मशीनगनों से गोलिया बरसाई थी और दो तोपखानों ने आग छिड़की थी। ऐसी परिस्थितियों मे ज़िला-केन्द्र के आदेशों की प्रतीक्षा करना बेकार था। इसलिए, प्योत्र-मेलेखोव ने अपने दो स्क्वैड्रन लेकर लाल-फौजियों के खिलाफ धावा बोलने का फैसला किया।

साथ ही उसने पास-पडोस के गावो द्वारा जमा किए गए चार स्क्वैड्रनों की कमान अपने हाथ मे ली और सुबह होते-होते कज्जाकों को लेकर तातारस्की से रवाना हो गया। राह मे गश्ती-टुकडियों से छिटपुट मुठभेड हुई। असली लडाई तो बाद मे ठनी।

गाव से कोई छ. वर्स्टों की दूरी पर एक ऐसी ज़मीन थी जो ग्रिगोरी और नताल्या ने जोती थी। यही ग्रिगोरी ने नताल्या के सामने स्वीकार किया था कि वह उसे प्यार नही करता। तो आज के शीत से ठिठुरते दिन के क्षणों मे ये घुडसवार-फौजी इसी जगह अपने-अपने घोडो से उतरे और पात बनाकर गहरे दर्रो के पास की वर्फ के पसारे मे फैल गए। घोडे छायादार स्थान मे ले जाए गए। उन्होने नीचे निगाह डाली तो लाल-फौजी तीन पक्तियों में एक चौडी घाटी से निकलते दीख पड़े। फिर. दुश्मन अभी कोई दो वर्स्ट दूर ही रहे कि कज्जाकों ने इत्मीनान से लडाई की तैयारी शुरू कर दी।

प्योत्र अपने भाप छोडते घोडे को दुलकी-चाल से वहा ले गया, जहां आधा स्क्वैड्रन ग्रिगोरी के अधिकार मे था। वह खुश था और बड़े जोश मे था।

"भाइयो, अपनी गोलिया बरबाद न कीजिए। मेरे हुक्म देने पर ही गोली चलाइए···ग्रिगोरी, अपने आधे स्क्वैड्रन को यहा से कोई पचास गज़ बाएँ ले जाओ। जल्दी करो! और, घोड़ो के अलग-अलग गिरोह न बनाना।" उसने कुछ अन्तिम आदेश दिए और दूरबीन लगाकर देखा—

चिल्लाकर बोला—"अरे, वे लोग तो मातवेयेव के टूह पर तोपखाना जमा रहे हैं।"

"यह तो मैंने कुछ वक्त पहले ही देख लिया था···इसके लिए दुरबीन से देखने की क्या जरूरत !" ग्रिगोरी ने कहा, दूरबीन अपने भाई के हाथ में ले ली और देखा। टूह पर गाड़ियाँ और उनके चारों ओर दौड़धूप करते लोगों की छोटी-छोटी आकृतियाँ दीख पड़ीं।

तातारस्की की पैदल-सेना के लोग, हुक्म के बावजूद दर्रों में जमा हुए। वे धुआँ उड़ाते और फारतूसों और मजाक-ठिठोलियों में हिस्सा बँटाते रहे। ख्रिस्तोन्या जरा नाटे-कद के कज्जाकों में एक हाथ ऊँचा लगा। (वह इन दिनों पैदल-सेना में था, क्योंकि इधर घोड़ा उसके पास न रह गया था।) पैन्तेली प्रोकोफियेविच का लाल कनटोप दूर से लौ मारता रहा। पैदल-सेना में ज्यादातर लोग बूढ़े और कमउम्र थे। सूरजमुखी के डंठलों के अम्बार की दाईं ओर येलेन्स्काया के फौजी थे। उनके चार स्क्वैड्रन थे, और उनमें छः सौ लोग थे। लेकिन, उनमें से दो-तिहाई यानी दो सौ लोग दर्रों में जा छिपे थे और अपने घोड़ों की देख-रेख कर रहे थे।

"प्योत्र-पैन्तेलेयेविच !" पैदल-सेना से पुकार हुई—"लड़ाई शुरू हो तो तुम लोग हमें धोखा देकर चलते न बनना, पैदल-फौज के बहादुरो··· ठीक है न ?"

"फिक्र मत करो···हम लोग तुम्हें छोड़ेंगे नहीं।" प्योत्र मुसकराया, लाल-पक्तियों को पहाड़ी की ओर बढ़ता हुआ देखकर बेचैन हो उठा और इसी बेचैनी के कारण अपने चाबुक से खिलवाड़ करने लगा।

"प्योत्र, जरा यहाँ आओ !" ग्रिगोरी ने कतार से जरा दूर जाते हुए कहा। प्योत्र उसके पीछे हो लिया। ग्रिगोरी के चेहरे पर स्पष्ट असन्तोष झलका और उसकी भौंहें चढ़ी नजर आयीं। बोला—"मुझे यह जगह और यह तरकीब पसन्द नहीं। हमें इन नालों से दूर जाना चाहिए। अगर दुश्मन ने एक किनारे से हमला कर दिया तो हम कहाँ के रहेंगे ? क्या ख्याल है ?"

"आखिर तुम्हें हुआ क्या है ?" प्योत्र ने गुस्से में हाथ हिलाया—"वे किनारे से हमला कर कैसे सकते हैं ? मैंने एक स्क्वैड्रन रिजर्व में रख

छोड़ा है। यानी अगर हालत एकदम ही बिगड़ गई तो नाले हमारे बड़े काम के साबित होंगे। उनसे हमें कोई खतरा नहीं।"

"खैर, देखना···निगाह रखना !" ग्रिगोरी ने उसे चेतावनी दी और पूरी नाकेबन्दी पर एक बार फिर नजर डाली।

वह अपने साथियों के पास लौट गया। उनमें से अधिकांश लोग बड़े जोश मे थे, और उन्होंने अपने दस्ताने उतार लिये थे। कुछ लोग अस्थिर थे। वे अपनी तलवारें ठीक कर रहे और पेटिया कस रहे थे।

'हमारे कमाडर ने अपने घोडे से उतर जाने का फैसला किया है"—एक कज्जाक ने कहा, पक्तियो के किनारे-किनारे लम्बे-लम्बे डग भरते प्योत्र की तरफ देखकर सिर हिलाया और दांत निकाल दिये।

"हे···वह वहाँ है जनरल !" एक हाथवाले अलेक्सेइ शमील ने कहा—उसके पास हथियार के नाम पर सिर्फ तलवार थी—"कज्जाको को एक-एक मग वोद्का क्यो नही पिलवा देते ?"

"चुप बे पियक्कड ! लाल-फौजी तेरा दूसरा बाजू भी उडा देंगे, तब कैसे पियेगा ? कूड़े मे मुह लगाना पड़ेगा।"

"खैर !"

"मेरे पास तो पीने को इस वक्त भी बहुत है"—अपने गलमुच्छों पर ताव देने के लिए हाथ तलवार की मूठ से हटाते हुए स्तेपान-अस्ताखोव ने लम्बी सांस खींची।

इस बातचीत का चारों ओर के वातावरण से कोई सम्बन्ध न था, इसलिये दूह के पीछे तोपखानो की फील्ड-गनों के धड़ाके हुए कि सारी गपशप खत्म हो गई। ये धड़ाके पूरे स्तेपी मे गूज गए। पहला निशाना ठीक सधा नहीं लगा। नतीजा यह कि गोला कज्जाक-पक्तियो से आधे वर्स्ट के फासिले पर गिरा। विस्फोट का काला धुआँ झाडियो से लिपट गया। फिर, लाल-पक्तियो की ओर से मशीनगनें चलना शुरु हुई तो ऐसी आवाज हुई जैसे कि रात का पहरेदार खड़-खड कर रहा हो। कज्जाक बर्फ पर, झाड़ियों मे और सुरजमुखी के डठलो के अम्बार मे लेट रहे।

"बडा काला धुआँ है। लगता है कि यह लोग जर्मन गोले इस्तेमाल कर रहे हैं।" प्रोखोर-जिकोव ने ग्रिगोरी से चिल्लाकर कहा।

दूसरे स्क्वैड्रन में उथल-पुथल मच गई। हवा चीख लेकर आई—"मित्रोफान मार डाला गया!"

स्वेज़नी-गांव का, लाल दाढ़ीवाला एक स्क्वैड्रन-कमांडर, प्योत्र के पास दौड़ा आया। हांफते हुए बोला—"अभी-अभी एक बात दिमाग में आई है, कॉमरेड मेलेखोव···एक स्क्वैड्रन दोन भेज दो। वह स्क्वैड्रन नदी के किनारे-किनारे चलकर गांव में पहुँचे और लाल-फौजियों पर पीछे से धावा बोल दे। मेरा पूरा यकीन है कि उन्होंने अपनी सामानवाली स्लेजें बिना किसी तरह की हिफाज़त के, ऐसे ही छोड़ दी होंगी। इससे उनमें तहलका मच जायेगा।"

प्योत्र ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया। वह भागा-भागा ग्रिगोरी के पास गया। उसने उसे पूरी बात समझाई और सख्ती से हुक्म दिया—"तुम अपना आधा स्क्वैड्रन वापिस बुला लो और पीछे से धावा बोल दो।"

ग्रिगोरी ने अपने कज्ज़ाक वापिस बुलाए, एक नाले में उन्हें घोड़ों पर सवार कराया, फिर उन्हें लेकर खुद आगे-आगे चला। सारे घोड़े तेज़ दुलकी-चाल से गांव की ओर बढ़े।

मोर्चों पर डटे कज्ज़ाकों ने दो राउंड गोलियां चलाई और फिर शांत हो रहे। लाल-पंक्ति नीचे लेट गई। उसकी मशीनगनें आग बराबर उगलती रहीं। अचानक ही एक गोली मालिन-शमील के घोड़े को लगी। उसने अर्दली के हाथ से पगहा छुड़ाया और स्वेज़नी के कज्ज़ाकों की पंक्तियाँ चीरता पहाड़ी से नीचे, लाल-फौजियों की ओर भागा। मशीनगनों की गोलियां उसके आर-पार चली गई। जानवर पिछले पैरों के बल एकदम उछला और फिर भरभराकर बर्फ पर गिर गया।

प्योत्र ने मशीनगनरों पर गोलियां चलाने का हुक्म दे दिया। बस, तो सिर्फ अच्छे से अच्छे निशानाबाज़ों ने ही गोलियां चलाई और बड़ा नुकसान किया। अपने निशाने के लिए जाने-माने एक छोटे कद के कज्ज़ाक ने तीन मशीनगनरों का ढेर कर दिया। मैक्सिम-मशीनगन कूलिंग-जैकेट में पानी उबलता रहा, मगर वह खुद ठंडी पड़ गई। लेकिन, रिज़र्व-मशीनगनरों ने उनकी जगह फौरन ही ले ली और वह मशीनगन फिर मौत के बीज बोने लगी। गोलियों की बौछार की रफ्तार और तेज़ हो गई। कज्ज़ाक और

भी गहरी बर्फ में धसकर लेट गए। अनीकुश्का ने बराबर हँसी-ठिठोली करते बर्फ की ऐसी खोदाई की कि बिलकुल जमीन तक पहुँच गया। पर उसके पास कारतूस एक न रह गया था। (एक जगदार क्लिप में सिर्फ पाच कारतूस थे उसके पास!) सो, अपनी सघ से वह रह-रहकर सिर बाहर निकलता और अपनी जीभ से अजीब-सी आवाज पैदा करता।

बाई ओर स्तेपान-अस्ताखोव हँसी से रोता रहा। दाईं ओर शेखीबाज अन्तीप उसे पानी पी-पीकर कोसता रहा—"मुह भी बन्द कर, काले कीड़े···क्या वक्त चुना है बेवकूफ बनने-बनाने का!"

'एहिउ!" अनिकुश्का बनावटी डर से आखें फाड़कर उसकी ओर देखते हुए कौका।

फिर, *बात साफ हुई कि बैटरिया के पास लड़ाई के सामान की कमी* है, क्योंकि कोई तीस राउडो के बाद उन्होंने आग बरसाना बद कर दिया। प्योत्र ने पहाड़ी की चोटी की ओर बेचैनी से देखा। उसने दो आदमी गाव मे भेजकर कहलाया था कि वहाँ के सभी सयानी उम्र के लोग हँसिए और कुल्हाड़िया ले-लेकर बाहर निकल आए। उसे आशा थी कि लाल-फौजी इन्हे देखेंगे तो घबरा जाएँगे कि कज्जाक गिनती में इतने हैं।

जल्दी ही, कमान के जवाब मे लोगो की भीड की भीड पहाड़ी के बाजू पर नजर आई और ढाल पर उमड चली। कज्जाकों ने हसी की बातों से उनका अभिवादन किया।

'जरा देखो, कैसे काले-काले पत्थर ढाल से लुढकते चले आ रहे हैं!"

"क्या औरत, क्या मर्द, पूरे का पूरा गाव उलट पड़ा है!"

कज्जाकों ने एक-दूसरे को आवाज दी और खीसें बाई। गोली चलना तो बिलकुल ही बद हो गया था। केवल दो मशीनगनें अब भी चल रही थी। कभी-कभी गोलियों की बौछार-सी हो जाती थी।

"कैसी बुरी बात है कि लाल-बैटरियों ने गोले बरसाना बद कर दिया है। अगर उनका एक गोला उधर जा गिरता तो ये लोग उलटे पैरों गाव को लौट जाते। औरतों के तो स्कर्ट गीले हो जाते!" एक बाजूवाले अलेक्सेइ ने कहा और सचमुच दुख प्रकट किया कि लाल-फौजियों ने औरतों के बीच एक भी गोला नहीं मारा।

भीड़ ने दो टेढ़ी-मीधी पंक्तियां बनाई और आकर खड़ी हो गई। प्योत्र ने उन्हें कज्जाक-पंक्तियों से पीछे रहने का आदेश दिया। लेकिन, उनको देखकर ही जैसे कि लाल-फौजी बड़े हड़बड़ाए और पीछे हटने लगे। घाटी के तल में जा-जाकर गिरने लगे।

प्योत्र ने स्क्वैड्रन-कमांडरों से थोड़ी देर तक सलाह-मशविरा करने के बाद दायां सिरा बिलकुल खाली करा दिया। वहाँ से येलान्स्काया के कज्जाकों को वापिस लिया और उन्हें हुक्म दिया—"तुम सब घोड़ों पर सवार होकर उत्तर में जाओ, और ग्रिगोरी को हमला करने में मदद दो।" यानी, इस तरह लाल-फौजियों के देखते-देखते स्क्वैड्रनों ने लाइनें बनाई और दोन की ओर घोड़े दौड़ा चले।

कज्जाकों ने पीछे हटते हुए दुश्मन पर नये सिरे से आग बरसाई। इस बीच जरा ज्यादा लापरवाह औरतें और लड़के युद्ध की पंक्ति को चीरते हुए फौजियों में जा मिले। इन लोगों में दार्‌या भी थी। वह प्योत्र के पास गई और बोली—"प्योत्र, मुझे इन लाल-फौजियों पर एक बार गोली चला लेने दो।" फिर उसने प्योत्र की कारबाइन ली, घुटनों के बल बैठी, उसका कुन्दा विश्वास के साथ अपने कंधे पर टिकाया और दो बार गोलियां चलाईं।

पहाड़ी की बाजू के रिजर्व-फौजी अपने को गरम रखने के लिए पैर पटकने और कूदने लगे, तो पंक्तियां यों लगीं जैसे कि हवा में लहरा रही हों। औरतों के गाल और होंठ नीले पड़ गए। पाला, स्कर्टों के चौड़े सिरों के कारण, उन्हें आसानी से मना सका। उनमें से कितनों को ही पहाड़ी पर चढ़ने में मदद देनी पड़ी। इनमें बूढ़ा ग्रीश्का भी रहा। मगर, हवा के तेज झोंकों की बाँहों में बंधी पहाड़ी की चोटी पर बूढ़े दूर की गोलाबारी और सर्दी के कारण, बहुत ही उत्तेजित हो उठे। वे पिछली लड़ाइयों के अपने कारनामे में गिनाने-गिनाने बहुत ही जोश में आ गए। साथ ही उन्होंने इस समय की अजूबा लड़ाई की मुसीबत की भी बात चलाई—"यह लड़ाई है! इसमें भाई भाई से लड़ रहा है, बेटा बाप के खिलाफ हथियार उठा रहा है और तोपें इतनी दूर से आग उगलती हैं कि देखो तो दिखलाई न पड़ें···"

: ३३ :

ग्रिगोरी ने अपने आधे-स्क्वैड्रन से सामानवाली स्लेजों पर चोट की, आठ लाल-फौजी मार डाले, लड़ाई के सामान से भरी चार स्लेजें हथिया ली, और दो ज़ीन-कसे घोड़े मार लिए। उसका अपना एक घोड़ा मरा और एक कज्ज़ाक को मामूली-सी खरोंच आई।

लेकिन, इधर ग्रिगोरी, बिलकुल सही-सलामत, अपनी सफलता की खुशियां मनाता, लूटा हुआ माल-मता लिए-दिए आगे बढ़ा कि उधर तातारस्की के ऊपर की पहाड़ी पर लड़ाई खत्म हो गई। हुआ यह था कि लाल-गारदों के घुड़सवारों की एक टुकड़ी ने कज्ज़ाकों को बाहर-बाहर घेरने के लिए सात-वर्स्ट की मंजिल तय की थी, इस समय वह अचानक ही पहाड़ी के पास पहुंच आई थी, और घोड़ों की देख-रेख करनेवाले लोगों पर टूट पड़ी थी।

बस, तो एक हलचल-सी मच गई और कज्ज़ाक नाले से निकलकर, घोड़ों पर सवार होकर भाग निकले। इनमें से कुछ पंक्तियों तक पहुंचे, पर ज्यादातर लोग या तो लाल-फौजियों के द्वारा काटकर फेंक दिए गए या परेशानी में भाग निकले। पैदल-सेना के लोगों ने अपने ही लोगों को भून देने के डर से गोली नहीं चलाई और वे, सिरों पर पैर रखकर, उल्टे-सीधे भाग कर, नाले में इस तरह भरभराकर गिरे जैसे कि किसी बोरी से मटर नीचे गिरे। कज्ज़ाक-घुड़सवार सेना के ज्यादातर लोगों ने घोड़े कामयाबी से पकड़ लिए और जैसे कि गांव तक की दौड़ बद ली कि देखें, सबसे पहले गांव वापिस कौन पहुंचता है!

प्योत्र ने चीख-पुकार सुनते और स्थिति समझते ही आदेश दिया—"घोड़ों पर सवार हो जाओ! लातिशेव, पैदल-फौज को नाले के उस पार ले चलो!"

पर, वह स्वयं अपने घोड़े तक न पहुंच सका। यानी, निगरानी करने वाला लड़का उसके और फेद़ोत-बोदोव्स्कोव के घोड़ों को लिए हुए लम्बी छलांगें भरता उसकी ओर बढ़ा कि लाल-सेना के एक सिपाही ने पीछे से हमला कर उस पर वार कर दिया। पर, सौभाग्य से लड़के के कंधे पर

राइफिल लटक रही थी। नतीजा यह हुआ कि तलवार राइफिल की नली पर फिसल गई और वार करनेवाले के हाथ से छूटकर दूर जा गिरी। लेकिन, इस घटना से डरकर उस लड़के का घोड़ा पूरी रफ्तार से एक ओर को भागा तो प्योत्र और फ़ेदोत के घोड़े भी उसी के पीछे भाग दिए। प्योत्र के मुँह से कराह निकल गई। उसका चेहरा बिलकुल जर्द दीखा। गालों पर पसीने की धारें बहने लगीं। वह एक क्षण तक खड़ा रहा। फिर उसने निगाह मोड़ी तो कोई एक दर्जन कज्जाकों को दौड़ते हुए अपनी ओर आते देखा।

'हमारा तो काम तमाम हो गया।" बोदोव्स्कोव चीखा। उसका चेहरा भय के कारण बिगड़ा हुआ था।

"नाले में उतरो, कज्जाको! भाइयो, नाले में चलो!" प्योत्र ने अपने को साधा, उन्हें दौड़ाता हुआ नाले के किनारे लाया और जैसे-तैसे खड़े ढाल से नीचे उतारा। फिर वह खुद कूदा, नाले के तल में पहुंचने पर उछलकर खड़ा हुआ और कुत्ते की तरह बदन झाड़ने लगा। कोई दस कज्जाक उसके पीछे औंधे आ पड़े।

ऊपर अब भी गोलियां सर्राटे भरती रहीं, चीख-चिल्लाहट मचती रही और घोड़ों की टापें जमीन रौंदती रहीं। नाले में कज्जाक अपनी टोपियों से बर्फ और धूल झाड़ते और चोट की जगहें रगड़ते रहे। मार्तिन-शमील अपनी राइफल की नली की बर्फ साफ करने में जुट गया। सिर्फ पिछले अतामान का कमउम्र बेटा मानित्स्कोव ही डर से थरथराता और आंसू बहाता रहा। चीखा—"क्या करें हम? प्योत्र, हमें बतलाओ! हर तरफ मौत है। कहां जायेंगे हम? वे लोग मार डालेंगे हमें!"

फेदोत-बोदोव्स्कोव के दांत बजते रहे कि वह मुड़ा और नाले के तल के किनारे-किनारे दौड़ता हुआ दोन की ओर बढा। दूसरों ने भेड़ों की तरह उसका पीछा किया। पर, प्योत्र ने किसी-न-किसी तरह उन्हें रोका—"रुको!···कुछ सोचा जायेगा···इस तरह भागो नहीं! दुश्मन तुम्हें गोली से उड़ा देगा।"

वह लोगों को खड़े ढाल के निकले हुए हिस्से के नीचे ले आया, और मनों की बेचैनी के बावजूद उन्हें बाहर से शांत रखने की चेष्टा की।

शब्द गले मे अटकने लगे, पर किसी तरह बोला—"तुम लोग यहां से निकलकर तो जा ही नही सकते। हो-न-हो, वे हमारे साथियों का पीछा कर रहे होगे, उन्हे दौडा रहे होगे। इसलिए, हमें यहा इस नाले में ही छिपा रहना चाहिए। हममे से कुछ लोग दूसरी तरफ···हमें यही जमा रहना चाहिए···यहा से हम दुश्मन के घेरे का मुकाबला कर सकते हैं।"

"हम तो कही के नही रहे! पिताग्रो···भाइयो, मुझे यहा से निकल जाने दो···मैं नही चाहता···मैं मरना नही चाहता!" मानित्स्कोव ढार मारकर रोने लगा। बोदोव्स्कोव की काल्मीक-ग्राखें ग्रोध से जलने लगी। उसने लडके के चेहरे पर ऐसी भरपूर मुट्ठी जमाई कि उसकी नाक से खून बह चला ग्रौर वह खुद ढाल से जा-लडा। लेकिन, लडके का रोना-गाना खतम हो गया।

"हम दुश्मन का बिगाडेंगे क्या ?" मार्तिन-शमील ने प्योत्र की बांह पकडते हुए पूछा—"हमारे पास गोलिया तो हैं नही! ग्रौर, वे हमें हथबमो से ही भूनकर रख देंगे।"

"खैर, तो ग्रौर हम कर भी क्या सकते हैं?" प्योत्र सहसा ही नीला पड गया ग्रौर उसके होंठो पर झाग ग्रा गए—"लेट जाग्रो जमीन पर! मैं कमाडर हूं या नही? मैं मार डालूगा तुम्हे!" उसने ग्रपना रिवॉल्वर साध लिया।

उसकी सीटी-सी फुसफुसाहट ने उनमें नई जान डाल दी। बोदोव्स्कोव, मार्तिन-शमील ग्रौर दो दूसरे कज्जाक भागे-भागे नाले की दूसरी तरफ ग्राए ग्रौर निकले हुए हिस्से के नीचे लेट गए। बाकी कज्जाक प्योत्र के साथ बने रहे।

वसन्त मे पहाडी की बर्फ गलने पर पानी जब हरहराकर बढता है तो उसके साथ ही कंकड-पत्थर लुढकते चले ग्राते है। यह पत्थर नदी के तल को खुरच देते हैं, लाल मिट्टी की परतों की परते गायब कर देते है, ग्रौर दीवार में बडी-बडी सधे ग्रौर सूराख कर देते है।

सो, इन्ही सधो ग्रौर सूराखों मे ही इस समय कज्जाक जा छिपे।

दोलोवाज्ञ ग्रन्तीप, ग्रपनी राइफिल तैयार कर, प्योत्र की बगल मे बैठ गया ग्रौर ग्रस्पष्ट ढग से बुदबुदाया—"स्तेपान-ग्रस्ताखोव ने जैसे-तैसे

अपने घोड़े की दुम पकड़ ली, और निकल भागा···लेकिन मैं रह गया··· पैदल सेना हमें छोड़कर चली गई है···हमारा तो खेल खत्म हो गया है, भाइयो···भगवान जानता है कि हमारा खात्मा हो चुका है!"

ऊपर दौड़ते हुए पैरों की आवाज़ सुन पड़ी और बर्फ और बालू नाले में झरी।

"दुश्मन आ गए!" प्योत्र ने धीरे से कहा और अन्तीप की आस्तीन पकड़ ली। लेकिन, उसने अपना हाथ छुड़ा लिया और राइफिल के घोड़े पर अँगुली रखकर ऊपर की तरफ निगाह उठाई।

नाले के सिरे तक कोई नहीं आया। लेकिन कज़्ज़ाकों के कानों में कुछ आम आवाज़ें पड़ीं। साथ ही किसी घुड़सवार की चीख सुन पड़ी।

'लोग यहां तक पहुंचने के बधान बांध रहे हैं'—प्योत्र ने सोचा और पसीने-पसीने हो गया।

ऊपर से कोई चीखा—"हे···सुनते हो···बाहर निकल आओ···वैसे हम तुम्हें मार तो डालेंगे ही!"

बर्फ की दूधिया-धवल धारा-सी नाले में झरी। साफ लगा कि कोई पास आया। एक दूसरे व्यक्ति ने विश्वास के साथ कहा—"वे लोग यहीं से कूदे हैं···यह उनके पैरों के निशान हैं···मैंने तो खुद देखा है।"

"प्योत्र-मेलेखोव, बाहर निकल आओ!"

प्योत्र का मन एक क्षण को प्रसन्नता से नाच उठा—'लाल-गारद के लोगों में ऐसा कौन है जो मुझे जानता है? हो-न-हो, यह हमारे अपने कज़्ज़ाक हैं···लगता है कि दुश्मनों को इन्होंने मार भगाया है।' प्योत्र ने सोचा। लेकिन, दूसरे ही क्षण वही आवाज़ फिर उसके कानों में पड़ी तो उसकी हड्डी-हड्डी कांप गई।

"मैं मिखाइल कोशेवोइ हूं···हमारी मांग है कि तुम लोग हथियार डाल दो। नहीं डालोगे, तो भी यहां से बचकर तो जाओगे नहीं।"

प्योत्र ने अपनी भौंह पोंछी तो उसकी हथेली पर खूनी पसीने की धारियां-सी बन गईं। उसके मन में एक अजीब तरह की अन्यमनस्कता और उपेक्षा का भाव जगा और अन्तीप की आवाज़ उसे बहुत दूर से आती लगी।

"हम बाहर आ सकते है, मगर शर्त यह है कि तुम हमें चला जाने दो···अगर शर्त नही मानोगे तो हम गोली चलायेंगे।"

"हम तुम सब को चला जाने देगे।" एक क्षण के मौन के बाद ऊपर से जवाब आया।

प्योत्र ने बडी चेष्टा से अपनी सुस्ती दूर की और 'चला जाने देंगे' में उसे कुछ मजाक-सा लगा। वह फटी हुई आवाज मे ज़ोर से चिल्लाया—"वापिस!" लेकिन, किसी ने उसकी बात कान नही की और अन्तीप को छोडकर बाकी सभी कज्जाक रेंगकर नाले के बाहर चल गए।

वह सबके बाद बाहर आया। उसके अन्दर जीवन इस तरह बजता रहा, जैसे मा के दिल के नीचे बच्चा। आत्म-रक्षा की भावना ने संकेत दिया और उसने सीधे ढाल पर चढने के पहले राइफिल-मैगेजीन से गोलियाँ निकाल ली। उसकी आखें मटमैली हो रही थी। कलेजा मुह को आ रहा था। गहरी नीद में सोते बच्चे की तरह आवाज़ फस रही थी। उसने झटके से अपना कॉलर खोला···उसकी आंखों मे पसीना भरा रहा और उसके हाथ ठडे ढाल पर फिसल-फिसल गए। जैसे-तैसे हाफते हुए वह उन खडे-लोगो के पास तक पहुचा, उनके पैरों के पास राइफिल डाली और अपने हाथ ऊपर उठा दिये। उसके पहले बाहर आ गए कज्जाक, एक-दूसरे से सटे खडे नज़र आए। मिखाइल-कोशेवोइ उसकी ओर बढा और उसके ठीक सामने जा खडा हुआ। फिर, जमीन पर नज़र गडाते हुए उसने शात भाव से सवाल किया, "लडाई से जी भर गया?" एक क्षण तक उत्तर की प्रतीक्षा की और फिर प्योत्र के पैरों पर नज़र जमाये ही जमाये, उसी लहजे मे बोला—'इन सबकी कमान तुम्हारे हाथ में थी, है न?"

प्योत्र के होठ फडके। उसकी मुद्रा से भयानक थकान टपकी और बड़ी ही मुश्किल से वह हाथ भौंह तक उठा पाया। मिखाइल की लम्बी बरौनियां फड़फडाईं और उसके सूजे हुए होठ ऐंठे। सिर से पैर तक ऐसी कँपकँपी छूटी कि खडा रह सकना उसे कठिन लगा। लेकिन, दूसरे ही क्षण उसने प्योत्र की आखो मे आखें डाली, बिलकुल अजनबी निगाहो से जैसे उसे अन्दर तक छेदा और हड़बड़ाते हुए बोला—"कपड़े उतारो!"

प्योत्र ने भेड़ की खाल की अपनी जैकेट जल्दी-जल्दी उतारी, उसे सावधानी से लपेटा और बर्फ पर रखा। फिर, टोपी, पेटी और खाकी कमीज़ उतारी, और जैकेट के सिरे पर बैठकर बूट खींचने लगा। उसके चेहरे का पीलापन प्रति क्षण बढ़ता गया।

इसी समय इवान अलेक्सेयेविच घोड़े से उतरा और इधर आया। वह अपने दांत बराबर चलाता रहा कि कहीं आंखों में आंसू न आ जायें।

"कमीज़ रहने दो···मत उतारो।" मिखाइल ने धीरे से कहा और फिर कांपते हुए, सहसा ही जोर से चिल्लाया—"जल्दी करो, सुनते हो···"

प्योत्र ने अपने ऊनी मोज़े जल्दी-जल्दी बूटों में डाले, सीधा हुआ और नंगे पैरों से कोट को एक ओर को खिसकाया। सफेद बर्फ की पृष्ठभूमि में उसके पैरों ने केसरिया रंग की झाईं मारी। प्योत्र के होंठ मुश्किल से हिले। उसने इवान-अलेक्सेयेविच को आवाज़ देकर कहा—"तुम मेरे चचेरे-भाई हो।" इवान चुपचाप खड़ा देखता रहा और प्योत्र के नंगे पैरों के नीचे की बर्फ गलती रही। उसने गिड़गिड़ाकर कहा—'इवान, तुम मेरे चचेरे भाई हो। तुम मेरे बच्चे के मुह-बोले बाप रहे हो···देखो, मुझे गोली न मारो।" लेकिन, प्योत्र ने देखा कि मिखाइल ने अपना रिवाल्वर पहले ही तान लिया। उसकी आंखें इस तरह फटी-फटी रह गईं जैसे कि वह बिजली के कौंधने की आशा कर रहा हो। उसने अपना सिर कन्धों के बीच गड़ा लिया।

उसने गोली की आवाज़ नहीं सुनी। वह मुंह के बल इस तरह गिर पड़ा जैसे कि किसी ने उस पर जोर का एक हाथ जमा दिया हो।

उसे लगा कि कोशेवोइ के फैले हुए हाथ ने लपककर उसका दिल अपनी मुट्ठी में जकड़ा और उसका सारा खून निचोड़ लिया। प्योत्र ने आखिरी कोशिश कर अपनी कमीज़ का कॉलर खोला, तो उसकी बायीं छाती के नीचे गोली का छेद नज़र आने लगा। पहले तो ज़ख्म से खून धीरे-धीरे रिसा। लेकिन, फिर रास्ता पाकर गहरी धार बनकर वह चला।

तातारस्की से फौजी-जांच के लिए जो पार्टी भेजी गई थी वह सांझ का धुधलका होते-होते यह खबर लेकर लौटी कि लाल-फौजियों का तो नाम-निशान नही मिला, लेकिन मेलेखोव और दस दूसरे कज्जाक स्तेपी में कटे हुए पड़े हैं—कभी के मर चुके हैं।

ग्रिगोरी ने लाशें लाने के लिए स्लेजों का इन्तजाम किया। लेकिन, फिर प्योत्र की मौत के कारण औरतों के क्रन्दन और दार्या के हाहाकार से मजबूर होकर वह घर से बाहर निकल आया और उसने ख्रिस्तोन्या के साथ रात बिताने की सोची। वहा वह सुबह तक स्टोव के पास बैठा रहा, सिगरेटों पर सिगरेटें पीता रहा और गारद के उघते हुए लोगों से इस तरह बेमतलब बातें करता रहा, जैसे कि उसमें अपने विचारो का सामना करने की हिम्मत न हो, जैसे कि अपने भाई की मौत के दर्द से दो-चार हो जाने का उसे डर हो।

दिन निकला। सुबह से ही बर्फ गलने लगी। दस बजते-बजते गोबर और लीद से भरी सडक पर ताल-तलैया नजर आने लगी। छतों से पानी चूने लगा। कही कोई मुर्गा बाग देने लगा जैसे कि वसन्त आ गया हो। साथ ही कही कोई मुर्गी इस तरह चूं चू करने लगी जैसे कि वह उमस से भरी दोपहरी का वक्त हो।

अहातों मे जिस तरफ धूप आई उधर ढोर एक-दूसरे से सटकर खड़े हो गए और बाड़ों से पीठें रगडने लगे। हवा उनके भूरे-से रोयें उडा-उडाकर भागने लगी। गलती हुई बर्फ से नमी और सड़ान्ध उडी। ख्रिस्तोन्या के फाटक के पास के सेव के पेड की एक नगी डाल पर पीले सीने वाली एक छोटी फुदकी झूलने और ची-ची करने लगी।

ग्रिगोरी फाटक पर खडा स्लेजों का इन्तजाम करता रहा कि उसने अपने अनजाने फुदकी की ची-ची का अनुवाद अपने बचपन की भाषा मे कर डाला। गरमाहट से भरे उस दिन फुदकी ने जैसे कि खुशी मे भर-कर कहा—"अपने हल के फार तेज करो···अपने हल के फार तेज करो।" ग्रिगोरी को लगा कि अगर दिन सर्दी और पाले के होते तो फुदकी

से अपनी सलाह फौरन ही बदल दी होती। वह कहती—"बूट पहन लो···बूट पहन लो।"

उसने अपनी निगाहें सड़क की तरफ से हटाकर फुदकी की ओर मोड़ीं। वह गाती रही—"अपने हल का फार तेज करो···अपने हल का फार तेज करो।" इस समय अचानक ही ग्रिगोरी को अपने बचपन की याद हो आई। उस समय दोनों ही भाई छोटे थे। वे टाकियों को मैदान में हाक ले गए थे और वहां प्योत्र ने टर्की की बोली की नकल की थी और उसे बच्चों की भाषा में ढाला था। कहा था—चिड़िया कहती है—'मेरे सिवाय सबके पास बूट हैं···सिवाय मेरे सबके पास बूट हैं।" फिर प्योत्र ने अपनी आंखें नचाई थीं और अपनी कोहनियां बगलों से लगाकर बाजुओं के पंख फड़फड़ाए थे। "गुर···गुर···गुर··· हम तुम्हें बाजार में जूते खरीद देंगे, दरिद्र कहीं के!" इस पर ग्रिगोरी जी खोलकर हंसा था और उसने अपने भाई से फिर टर्की की तरह बोलने को कहा था।

अचानक ही गली के सिरे पर एक स्लेज नज़र आई और उसकी बगल में एक कज़्ज़ाक चलता नज़र आया। फिर दूसरी स्लेज दिखलाई पड़ी और फिर तीसरी। ग्रिगोरी ने आंख के कोने का एक आंसू झटके में पोंछ डाला और बचपन की एक घटना की मुसकान भी शांत भाव से धो डाली। वह तेज़ी से अपने फाटक की ओर बढ़ा। उसकी मां सन्ताप से आधी पागल हो गई थी और ऐसे भीषण क्षण में वह उसे प्योत्र की लाशवाली स्लेज से दूर ही दूर रखना चाहता था। पहली स्लेज की बगल में नंगे सिर अलेक्सेइ शामील आ रहा था। अपने बाएं बाजू के बचे हुए झूलते हिस्से से उसने अपनी टोपी अपने सीने से चिपका रखी थी। दाहिने हाथ में घोड़ों की रासें थीं। ग्रिगोरी ने स्लेज के अन्दर निगाह दौड़ाई। उसने मार्तिन शमील को पुआल पर मुंह के बल लेटा देखा। उसका चेहरा और ट्यूनिक खून से लहूलुहान नज़र आयी। दूसरी स्लेज में मानित्स्कोव था। उसका गहरे घावों से भरा चेहरा पुआल में धंसा हुआ था। सिर कन्धों के बीच गड़ा हुआ था। खोपड़ी भरपूर वार से चूर-चूर हो गई थी।

खोपड़ी की हड्डियों के किनारे-किनारे काले, बालोंवाले वर्फ के कण

थे। ग्रिगोरी ने तीसरी स्लेज मे नजर दौड़ाई। लाश उसकी पहचान में न आई पर स्लेज के बाजू से उसने एक हाथ बाहर लटकता देखा। तम्बाकू के निशानोंवाली अँगुलिया क्रॉस बनाने के लिए एक-दूसरे से जुडी नजर आई। उसने चौथे घोडे की लगाम थामी और उसे अहाते में ले आया। पडोसी, औरतें और मर्द पीछे-पीछे दौड़े। भीड सीढियो के पास आ जमा हुई।

"हमारा प्यारा प्योत्र पँन्तेलेयेविच पडा है वहा, बेचारे के दुनिया में जीने-जागने के दिन खत्म हो गए।" किसी ने धीरे से कहा।

स्तेपान-अस्ताखोव नगे सिर फाटक मे घुसा। ग्रीश्का और दूसरे तीन बूढे कही और से आए। ग्रिगोरी ने बेमन से चारों ओर निगाह डाली। बोला—'जरा हाथ लगा दो तो इसे अन्दर ले चलें।"

ड्राइवर प्योत्र को पैरो के सहारे उठाने ही वाला था कि इसी समय इलीनीचिना सीढियों से उतरी और सभी ने शान्त-भाव से आदर दिखलाते हुए उसके लिए रास्ता कर दिया।

उसने स्लेज की ओर दृष्टि गडाकर देखा। धीरे-धीरे उसके चेहरे पर मौत का पीलापन घिर आया। पँन्तेली ने स्वय कापते हुए पत्नी को साधा। सबसे पहले दून्या ने अपनी आवाज़ उठाई। जवाब मे दस दूसरे घरो की औरते विलाप करने लगी। फिर रो-रोकर चेहरा सुजाए और बाल बिखराए दार्या दौडती आई और स्लेज पर ढह पडी।

'प्योत्र···मेरे प्यारे···मेरा राजा···खडे हो जाओ···उठकर खडे हो जाओ!"

ग्रिगोरी की आखो के आगे अधेरा छा गया। "जाओ···यहा से जाओ, दार्या!" वह आपे से बाहर होकर हूश की तरह चीखा और उसने पूरी ताकत से उसे एक ओर को ढकेल दिया। दार्या बर्फ के एक ढूह पर जा पडी। ग्रिगोरी ने तेजी से प्योत्र को बगल से उठाया। ड्राइवर ने उसके नगे पैर साधे। लेकिन दार्या अपने हाथ-पैरो के बल रेंगती हुई उनके पीछे पीछे हो ली। उसने अपने पति के कडे बर्फ से जमे हाथ लपककर अपने हाथो मे लिए और उन्हे बार-बार चूमा। ग्रिगोरी को लगा कि क्षणभर बाद वह अपने काबू में बिलकुल न रह जाएगा। अतएव

उसने ठोकर मारकर दार्या को एक ओर कर दिया। दून्या ने उसके हाथ जबरन छुड़ाए और उसका सिर अपने सीने से टिका लिया। दार्या का सिर बुरी तरह घूमता रहा।

बावर्चीखाने में भयानक सन्नाटा था। प्योत्र की लाश जमीन पर रखी थी। इस समय वह इस तरह छोटा लग रहा था जैसे कि सिकुड़ गया हो। नाक पिचक गई थी। पटसन के रंग के गलमुच्छे गहरे हो गए थे, लेकिन चेहरा और अच्छा लगने लगा था। नंगे, रोओं से भरे पैर पतलून में झांक रहे थे। शरीर धीरे-धीरे पानी छोड़ रहा था और उसके नीचे गुलाबी-से पानी का एक तालाब जमा हो गया था। पानी ज्यों-ज्यों बढ़ रहा था, खून की खारी महक त्यों-त्यों तीखी हो रही थी।

पंतेली शेड में ताबूत तैयार कर रहा था। दार्या को अब तक होश न आया था और औरतें उसी में बझी हुई थीं। जब-तब ही उस कमरे में दिल तक पार हो जानेवाली चीख आ जाती थी। इसके बाद चाची, वैसीलीजा की सिसकियां सुनाई पड़ती थीं। मेलेखोव-परिवार के दर्द में हिस्सा बंटाने के लिए वह दौड़ी-दौड़ी आई थी। ग्रिगोरी एक बेंच पर बैठा था और उसकी निगाहें प्रति-पल पीले पड़ते अपने भाई के चेहरे और उसके गोल-नीले नाखूनों पर जमी हुई थीं। अजनबीपन की एक अजीब-सी ठिठुरन ने उसे प्योत्र से काट दिया था। वह अब उसका भाई न रह गया था, बल्कि एक मेहमान था, जिसे रुखसत होना था। मेहमान मिट्टी के फर्श से गाल सटाए पड़ा था और रहस्य से भरी-सी एक हल्की-सी, शान्त मुसकान मूंछों के नीचे जैसे खेल रही थी कि यह मेरी मां, यह मेरी बीवी कल ही आखिरी सफर के लिए मुझे तैयार करेंगी···

मां ने रातोंरात तीन घड़े पानी गरम किया। बीवी ने साफ लिनेन तैयार किया और सबसे अच्छा पतलून और वर्दीवाली ट्यूनिक निकाली।

अब यह बाकी रहा कि ग्रिगोरी और पंतेली, प्योत्र के उस शरीर को नहलायें जो अब प्योत्र का न रह गया था और जिसे अब नंगे होने में भी किसी तरह की कोई शर्म महसूस न होती···फिर यह कि उसे इतवार के दिन पहले जानेवाले अच्छे-से-अच्छे कपड़े पहनाएं जाएं और मेज पर लिटा दिया जाए···फिर दार्या आए और अभी कल ही उसे

सीने से लगानेवाले चौड़े बर्फ-से ठंडे हाथों पर वह मोमबत्ती रख दे जिसकी रोशनी मे शादी के दिन उन दोनों ने गिरजे में पादरी के पीछे-पीछे हलके-हलके कदमो से पाठमच की परिक्रमा की थी···यानी इस तरह लोग कज्जाक प्योत्र-मेलेखोव को वहा तक पहुंचा आने का सरंजाम करे, जहा तक घर के अलावो की आवाज नही पहुंचती और जहां से कोई लौटकर नही आता···

"यहां अपनी मा की आखो के आगे मरने से तो अच्छा यह था कि तुम कही प्रशिया वगैरह मे मरते।" ग्रिगोरी ने भर्त्सना के स्वरों मे हलके से प्योत्र से कहा। फिर उसने शरीर पर नजर डाली तो सहसा ही पीला पड गया। प्योत्र के एक गाल पर एक आसू बहता दीखा। ग्रिगोरी लपककर पास पहुचा, पर ध्यान से देखने के बाद उसके मन की शका मिट गई।

वह आसू उस मुर्दे की आख से न टपका था, बल्कि प्योत्र के माथे पर आ गए बालो के बर्फ के कणों के हाथों से एक बूंद चू पड़ी थी और अब गाल पर ढलकी चली आ रही थी।

· ३५ ·

मिली-जुली बागी-फौजों के कमाडर के हुक्म पर ग्रिगोरी-मेलेखोव को कज्जाको के दस स्क्वैड्रनोंवाले व्येशेन्स्काया रेजीमेट का कमाडर नियुक्त कर दिया गया। फिर, व्येशेन्स्काया के स्टाफ ने उसे चीर-नदी के किनारे के सभी गावो को बगावत के लिए उभारे जाने के खयाल से, कार्गिन ज़िले की ओर मार्च करने, लिखाचोव के रेजीमेट को जैसे भी हो, तार-तार कर देने और उसे प्रदेश की सीमा के बाहर तक खदेड़ देने का आदेश दिया।

जिस दिन ग्रिगोरी ने कमान सम्हाली, उसी दिन अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर व्येशेन्स्काया से बाहर जाते कज्जाको का मुआइना किया। वह अपने घोडे पर झुका बैठा रहा और घोड़ा सड़क के किनारे में, अधगली बर्फ के टीले पर खडा रह-रहकर लगामो को झटके पर झटके देता रहा। सामने से कतार बनाकर स्क्वैड्रन गुजरते रहे। ये स्क्वैड्रन दोन के किनारे के गावो के थे। ये गाव थे बाज़की, व्येलोगोरकी,

ओलशान्स्की, मेरकुलोव, ग्रोमकोव्स्की, सेमेनोव्स्की, रिविन्स्की, लेव्याजी और येरिक ।

ग्रिगोरी एक के बाद दूसरे स्क्वैड्रन को सधी हुई, गम्भीर दृष्टि से देखता, दस्ताने से मढ़े हाथ से अपनी मूंछ और बाजकी चोंच जैसी नाक पर हाथ फेरता रहा। उसके परिचित कज्ज़ाक सामने से गुज़रते समय उसकी ओर देख-देखकर मुस्कराते रहे। सिगरेटों के धुएँ के छल्ले फौजियों के सिर पर मंडराते और एक-दूसरे में हल होते रहे। घोड़ों के नथुनों से रह-रहकर भाप निकलती रही।

रेजीमेंट व्येशेन्स्काया से कोई तीन वर्स्ट बाहर रही कि एक गश्ती-फौजी ने आकर सूचना दी कि लाल-गारद के लोग चुकारिन की दिशा में पीछे हट रहे हैं और लिखाचोव की टुकड़ी ने उन्हें उलझाया नहीं है। ग्रिगोरी ने तीन स्क्वैड्रन दुश्मन की टुकड़ी को बाहर से घेर लेने को भेजे और बाकी के साथ खुद इतने जोर-शोर से बढ़ा कि लाल-गारद के लोग माल से भरी गाड़ी और लड़ाई के सामान से भरे बक्से छोड़-छोड़कर भागने लगे। लिखाचोव की बैटरी हड़बड़ाकर चुकारिन छोड़ने लगी तो उसे एक छोटी-सी नदी में कुछ तोपों से हाथ धोना पड़ा। ड्राइवर ट्रेस काटकर भाग निकले। कज्ज़ाक, चुकारिन से बारह वर्स्ट दूर तक, कारगिन्स्काया की दिशा में बढ़ते गए। उन्हें कहीं भी किसी कड़े विरोध का सामना नहीं करना पड़ा और वे नोवोचेरकास्क तक पहुंचने के मंसूबे बांधने लगे।

ग्रिगोरी को यह बैटरी पाकर बड़ी खुशी हुई। 'वे तो तोपों को जमाने तक को नहीं रुके।' उसने नफरत से भरकर सोचा। फिर कज्ज़ाकों ने बैलों की मदद से बैटरी पानी के बाहर निकाली तो अलग-अलग स्क्वैड्रनों से तोपची देखते-देखते जमा हो गए। हर तोपगाड़ी में छः-छः जोड़ी घोड़े जोते गए और आधे स्क्वैड्रन को बैटरी की रखवाली का काम सौंप दिया गया।

कज्ज़ाकों ने सांझ का धुंधलका गिरते-गिरते कारगिन्स्काया ले लिया। लिखाचोव की टुकड़ी के एक अंश समेत तीन फील्डगनें और नौ मशीन-गनें अधिकार में आ गईं। टुकड़ी के बाकी लोग बचकर उत्तर की ओर

भाग निकले।

रातभर पानी बरसता रहा। सवेरा हुआ तो नाले-नालियों में पानी गरजता दीखा। सड़कों से आना-जाना दुस्वार हो गया। घोड़े पिघलती हुई वर्फ और कीचड में लडखडाने लगे। लोग थकान से चूर होकर ढह पड़े। पीछे हटते हुए दुश्मन को खदेड़ने के लिए भेजे गए दो स्क्वैड्रनों ने सवेरे लाल-गारदों के कोई तीस फौजियों को गिरफ्तार कर लिया और वे उन्हें कारगिन्स्काया ले आए।

ग्रिगोरी ने अपना प्रधान-कार्यालय स्थानीय-सौदागर के एक बड़े घर में जमा रखा था। सौ कैदियों को हांककर अहाते में लाया गया और दोनों स्क्वैड्रनों के कमांडर येरा माकोव ने ग्रिगोरी को रिपोर्ट दी—"लाल-गारद के सत्ताईस लोग ले आए गए हैं। आपका अर्दली आपका घोड़ा ले आया है। क्या अब आप जायेंगे ?"

ग्रिगोरी ने अपने बरानकोट का बक्सुआ लगाया, शीशे के सामने खड़े होकर अपने माथे के बाल ठीक किए और येरा माकोव की ओर मुड कर बोला—"आओ, चलें। चौक में मीटिंग होगी। इसके बाद हम लोग घोडों पर सवार होकर चले जायेंगे।"

"क्या मीटिंग जरूरी है ?" येरा माकोव ने दांत निकाले और कंधे झटके—"लोग मीटिंग में हिस्सा लिए बिना ही अपने-अपने घोडों पर सवार हो गए हैं…वह देखिए, शायद व्येशेन्स्काया के फौजी आ रहे हैं… हैं न ?"

ग्रिगोरी ने खिडकी के बाहर नजर दौडाई। चार-चार की कतार में फौजी शानदार तरीके से आगे बढते चले आ रहे थे। कज्जाक और घोडे, दोनों देखते ही बनते थे।

"यह लोग आखिर कहां से आ टपके ?" ग्रिगोरी ने प्रसन्नता से भर कर कहा और अपनी तलवार सँभालते हुए घर से बाहर की ओर दौड़ा।

येरा माकोव उससे फाटक पर आ मिला। ग्रिगोरी के सामने सैल्यूट करता, स्क्वैड्रन का एक कमांडर दीखा। उसकी ग्रिगोरी से हाथ मिलाने की हिम्मत नहीं पडी।

"कॉमरेड मेलेखोव ?"

"हां···कहां के हो तुम ?"

"हमें अपनी रेजीमेंट में शामिल कर लीजिए। हमारी टुकड़ी कल रात लिखोविदोव में बनी थी। बाकी टुकड़ियां ग्राचोव, आर्खीपोव्का और वैसीलेव्का की हैं।"

"अपने कज्जाकों को चौक में ले जाओ। हम अभी-अभी एक मीटिंग करने जा रहे हैं।"

ग्रिगोरी के अर्दली प्रोखोर ज़िकोव ने घोड़े की रकाब सम्हाली। येरा माकोव ने लोहे-सा बदन काठी पर जमाया, बरानकोट सीधा किया और घोड़े को ग्रिगोरी के पास लाकर बोला—"इन कैदियों का क्या किया जाए ?"

ग्रिगोरी ने उसके बरानकोट का सबसे ऊपर का बटन पकड़ा और उसके कान के पास मुंह लाकर कुछ धीरे से कहा। उसकी आंखों से नन्ही-नन्ही चिनगारियां फूटने लगीं लेकिन गलमुच्छों के नीचे होंठ पर बिखरी मुस्कान से चालाकी झलकने लगी।

"उन्हें पहरे के साथ व्येशेन्स्काया भेज दो। समझे? लेकिन उस ढूह की दूसरी बाजू के आगे जाने न पाएं"—उसने अपने चाबुक से कारगिन्स्काया के ऊपर के ढूह की ओर इशारा किया।

'प्योत्र का हिसाब-किताब साफ़ करने के सिलसिले में उठाया गया यह पहला कदम होगा'—उसने सोचा, अपने घोड़े को दुलकी भगाया और अकारण उस पर एक भरपूर चाबुक जमाया।

: ३६ :

ग्रिगोरी साढे तीन हज़ार तलवारबंद फौजियों को लेकर कारगिन्स्काया के बाहर आया। व्येशेन्स्काया के जनरल आर्मी-स्टाफ और कार्यकारिणी समिति ने उसके लिए फौजी-हुक्म और हिदायतें भेजी। समिति के एक सदस्य ने तो एक ऐसा पत्र उसके पास भेजा कि क्या कहिए ! पत्र क्या भेजा, फूलों का एक गुलदस्ता भेज दिया—

"परम आदरणीय, साथी मेलेखोव···

"सरगरम अफवाहें हमारे कानों तक आ रही हैं कि आप लाल-

सेना के फौजी-कैदियों को बड़ी ही बेरहमी से तलवार के घाट उतार रहे हैं। लगता है कि येरा माकोव ने जो तीस लाल-फौजी कैद किए, उन्हें आपके हुक्म पर काटकर फेंक दिया गया। सुनते हैं कि उनमें एक ऐसा कमीसार था, जो हमारे बड़े काम का साबित हो सकता था, जिससे हमें दुश्मन की ताकत का पता चल सकता था। प्रिय भाई, फौजियों को कैद न कर मार डालने का अपना हुक्म वापिस ले लीजिए। इससे हमें बड़ा नुकसान पहुंचेगा। कज्जाक उस निर्ममता पर बहुत भुनभुना रहे हैं। उन्हें डर है कि लाल-गारद के लोग उनके अपने साथियों को बंदी बनाएंगे, तो उन्हें भी जिन्दा न छोड़ेंगे। फिर वे हमारे घर गांव जलाकर राख कर देंगे सो अलग से। हमारा तो आग्रह है कि आप कमांडरों को भी जिन्दा ही भेज दीजिए हमारे पास। हम व्येशेन्स्काया मे चुपचाप उन्हें इस दुनिया से विदा कर देंगे। लेकिन आप तो पुश्किन के ऐतिहासिक उपन्यास के तरास बूल्बा की तरह अपनी टुकड़ियों को साथ लेकर मार्च करते जा रहे हैं। हर चीज का फैसला आग और तलवार से कर रहे हैं। इससे कज्जाक बुरी तरह परेशान हो रहे हैं। कृपा कर रोकथाम से काम लीजिए और कैदियों को सीधे-सीधे मौत की सज़ा न देकर हमारे पास रवाना कर दीजिए। इससे हमें ताकत मिलेगी।

"आप सदा स्वस्थ रहें। हमारी हार्दिक शुभकामनायें और स्नेह, स्वीकारें। हम आपकी भावी सफलताओं के समाचारों की बड़ी ही उत्सुकता से प्रतीक्षा करेंगे।"

ग्रिगोरी ने पत्र पूरा पढे बिना ही उसके टुकड़े-टुकड़े किए और उसे घोड़े की टाप के नीचे फेंक दिया। फिर दक्षिण की ओर बढ़ने और अपने को घिर जाने से बचाने के लिए कैडेटों में शामिल हो जाने से सम्बन्धित कुदिनोव के हुक्म के जवाब में काठी पर बैठे ही बैठे एक खत लिखा—"मैं बोकोव्स्काया की तरफ से दुश्मन का पीछा कर रहा हूं। दक्खिन की ओर जाने से इन्कार करता हूं और आपके हुक्म को बेवकूफी से भरा समझता हूं। वहां सरटि-भरती हवा और उक्रइनी-किसानों के अलावा और कुछ भी नहीं है।"

इस तरह विद्रोही हेडक्वार्टर्स से उसकी सरकारी लिखा-पढ़ी बंद हो

गई। स्क्वैड्रनों को दो रेजीमेंटों की शक्ल दी गई और उन रेजीमेंटों ने वोकोव्स्काया की तरफ बढ़ना जारी रखा।

ग्रिगोरी को तीन दिन तक बराबर कामयाबी पर कामयाबी मिलती रही। उसने एक झटके में ही अचानक वोकोव्स्काया को अपने अधिकार में कर लिया, और आसनोकुत्स्काया की तरफ अपनी फौज बढ़ाई। राह में अड़नेवाली एक टुकड़ी को कैद कर लिया गया, लेकिन उसके फौजियों को मार डालने के हुक्म नहीं दिए गए। ग्रिगोरी ने उन्हें वापिस व्येशेन्स्काया भेज दिया।

इस तरह मोर्चे के पिछले हिस्से के लिए पैदा होनेवाले खतरे से घबराकर, दोनेत्स-नदी के लाल-मोर्चे की कमान ने, विद्रोह को दबाने के लिए कई रेजीमेंटें और बैटरियां भेजीं। लाल-फौजियों की चिस्त्याकोवका के पास ग्रिगोरी की रेजीमेंटों से मुठभेड़ हुई। लड़ाई तीन घंटे तक चली। फिर घिर जाने के डर से ग्रिगोरी ने अपनी फौजें आसनोकुत्स्काया की दिशा में लौटा लीं। लेकिन दूसरे दिन सबेरे खोपर्स्काया के लाल-कज्जाकों ने उसकी रेजीमेंटों पर हमला कर दिया, और एक बार फिर दोन के कज्जाक एक-दूसरे को, बड़ी आन-बान के साथ तलवारों से काट-काटकर गिराने लगे। खुद ग्रिगोरी को अपने घोड़े से हाथ धोना पड़ा और उसका गाल कट गया। उसने अपनी रेजीमेंटें वापिस ले लीं और वोकोव्स्काया को लौट गया।

उसी शाम को और सूचनाएं प्राप्त करने के विचार से ग्रिगोरी ने खोपर जिले के एक कज्जाक कैदी से तरह-तरह के सवाल किए। कज्जाक उम्र से अधेड़ था। बाल उसके भूरे और सीना संकरा था। उसके बरान-कोट के कॉलर पर लाल रिबन का एक टुकड़ा लगा हुआ था।

सो उस आदमी ने सवालों के जवाब तो मन से दिए, पर उसके बरबस मुस्कराने में शरारत नजर आई।

"कल की लड़ाई में किन-किन रेजीमेंटों ने हिस्सा लिया ?"

"हमारी रेजीमेंट के अलावा, खोपर-जिले के लगभग सभी के सभी कज्जाकोंवाली तीसरी स्तेन्का-राज़िन, पाचवीं जाग्रामूर्स्की, बारहवीं घुड़-सवार छठी म्त्सेंस्की-रेजीमेंटों ने।"

"कमाडर कौन था ? किकविदज़े ?"

"नहीं, हमारी टुकड़ी की कमान कॉमरेड-दोमबिच के हाथों में थी।"

"और तोपें कितनी थीं ?"

"कम से कम आठ।"

"तुम्हारी रेजीमेंट ने पड़ाव कहा डाला था ?"

"कामेन्स्काया के गांव मे।"

"उन्हे यह बतलाया गया था कि उन्हे भेजा कहाँ जा रहा है ?"··· *कज्ज़ाक हिचका, पर आखिर में उसने जवाब दे दिया।* ग्रिगोरी ने सहसा ही लाल-कज्ज़ाकों के मनों की स्थिति जाननी चाही।

"भरती की गई तो कज्ज़ाको ने क्या कहा ?"

"वे आना नहीं चाहते थे।"

"तुम लोगों को मालूम था कि हमने बगावत क्यों की है ?"

"यह हम कैसे जानते ?"

"तो फिर तुम सब मोर्चे पर आना क्यो नही चाहते थे ?"

"क्यों, क्या आप सब हमारी ही तरह कज्ज़ाक नहीं है ? क्या अभी लडाई काफी नहीं हुई ? लाल-फौजियों की जमात में शामिल होने के वक्त से लेकर *आज तक हम सिर्फ लड़ते ही तो रहे हैं।*"

"तुम हमारे साथ काम करना पसन्द करोगे ?"

"आप चाहेंगे तो करूँगा, वैसे मैं चाहता नहीं···"

"ठीक है···जाओ, हम तुम्हे तुम्हारी बीवी के पास भिजवा देंगे··· बीवी के लिए दिल तड़प रहा है ··है न ?"

आदमी कमरे के बाहर ले जाया गया। ग्रिगोरी उसे एकटक देखता रहा। फिर उसने अपने अर्दली प्रोखोर ज़िकोव को बुलाया, खिड़की के पास जाकर उसकी ओर पीठ कर खड़ा हुआ और शांत-भाव से आदेश दिया—"फौजियों से कहो कि मैं अभी जिस कज्ज़ाक से पूछताछ करता रहा था, वे उसे चुपचाप *बाग में ले जाएं। मैं लाल-कज्ज़ाकों को कैदी* बनाकर नहीं रखूंगा।"

वह अपने एड़ी पर घिसे बूट पहने इधर-उधर टहलता रहा। फिर

उसने खिड़की से बाहर झांककर देखा—"जाओ, अपना काम चालू करो।"

प्रोखोर बाहर चला गया। ग्रिगोरी एक-दो मिनट तक खिड़की के पास की जिरेनियम की शाखें आलस से रह-रहकर झटकता रहा। फिर मुड़ा और तेज कदमों निकलकर बाहर सीढ़ियों पर आया। यहां उसने जिकोव को खत्ती की दीवार के सहारे धूप में बैठे कज्जाकों के एक दल से चुपके-चुपके बातें करते देखा।

"उस कैदी को जाने दो। उसके लिए पास बना दो।" बिना कज्जाकों पर नजर डाले उसने चिल्लाकर प्रोखोर से कहा।

वह कमरे में वापिस आया तो एक पुराने शीशे के सामने खड़े होकर हाथ फैलाने लगा। आश्चर्य से सोचने लगा कि आखिर मैं क्यों बाहर गया, और मैंने क्यों कैदी को छोड़ देने का हुक्म दिया। वैसे उसने बड़े सन्तोष का अनुभव किया था, जब उस कैदी से कहा था—"हम तुम्हें तुम्हारी बीवी के पास वापिस भेज देंगे।" उसे पता था कि जल्दी ही उसके आदेश पर प्रोखोर उसे बाग में ले जाएगा, और उसका काम तमाम कर देगा।

उसे थोड़ी-सी खीझ भी थी कि अनायास ही उसके मन में दया उभर आई थी—आखिर विचारहीन-करुणा ही तो थी, बरबस उसके दिमाग में घसती चली गई थी, और जिसने उसे दुश्मन को छोड़ देने की सलाह दी थी? इस पर भी वह खुश था, हालांकि सारा कुछ अपने-आप में अजीब था। अभी कल ही तो उसने कज्जाकों से कहा था—"किसान हमारा दुश्मन है, पर लाल-फौज की मदद करनेवाला कज्जाक हमारा दोहरा दुश्मन है। जासूस की तरह कज्जाक को भी ज्यादा वक्त नहीं देना चाहिए कि पादरी आए, कज्जाक अपना गुनाह कबूल करे···और देखते-देखते दीवार के सहारे खड़ा किया और दूसरी दुनिया का टिकट काट दिया।"

विरोधाभास की यह अनबूझ पहेली उसके दिमाग को कुरेदती रही और अपने उद्देश्य के अनौचित्य से उसके मन में विद्रोह की भावना उठती रही कि ग्रिगोरी अपने कमरे से बाहर आया। इसी समय चिर-रेजीमेंट

का एक लम्बा-सा, कुछ-कुछ परिचित चेहरे वाला गार्डमैन, दो कम्पनी-कमांडरों के साथ, उसके पास आया।

"अरे, कुमक आ गई है!" रेजीमेंटल-कमांडर ने कहा—"तीन हज़ार घुड़सवार, दो कम्पनी-पैदल···इन सब का आप क्या करेंगे, पैंत्लेलेयेविच?"

ग्रिगोरी ने अपनी रिवाल्वर वाली पेटी कसी, लिखाचोव से प्राप्त शानदार फील्ड-केस लिया और बाहर अहाते मे आया।

इस समय सूरज जमकर चमक रहा था। आसमान ग्रीष्म के मध्य-काल के दिनों की तरह ही दूर और नीला लग रहा था। दक्षिण में नन्हे-मुन्ने दूधिया बादल हवा की लहरों पर तैर रहे थे।

ऐसे मे युद्ध-परिषद् की बैठक के लिए ग्रिगोरी ने सभी स्क्वैड्रन-कमांडरों को एक किनारे जमा किया। कोई तीस लोग एक गिरी हुई चहार दीवारी पर बैठ गए। किसी की तम्बाकू की थैली एक हाथ से दूसरे हाथ में पहुँचने लगी।

परिषद् का कार्य आरम्भ करते हुए ग्रिगोरी ने पूछा—'हम आगे के लिये कैसे और क्या नक्शे तैयार करेंगे? जिन रेजीमेंटों ने हमे पीछे ठेल दिया है, उनके साथ हम कैसा बरताव करेंगे और इसके लिए क्या रास्ता अख्तियार करेंगे?"···फिर, ग्रिगोरी ने कुदिनोव के हुक्म की भी चर्चा की।

"इनमे से कितने लोग हमारे खिलाफ हैं? आपने कैदी से इस बात का पता लगाया?" एक स्क्वैड्रन-कमांडर ने जरा ठिठकने के बाद पूछा।

ग्रिगोरी ने रेजीमेंट गिनायें और जल्दी-जल्दी उनके सदस्यों की गिनती का अंदाज़ लगाया। कमांडर चुपचाप बैठे रहे। बिना सोचे-समझे कुछ कहने को कोई भी तैयार न लगा। एक ने तो ग्रिगोरी से खुलकर ऐसा कहा भी···"ज़रा ठहरिये, मेलेखोव! हम लोग थोड़ा सोच लें। हमें कोई गलती यहां नही करनी चाहिये।"

उसी व्यक्ति ने सबसे पहले अपनी ओर से सुझाव भी दिया। ग्रिगोरी ने सारी बात ध्यान से सुनी। अधिकांश लोग सफलता के भरोसे के बावजूद

दूर जाने के खिलाफ लगे, लेकिन विशुद्ध-रूप से रक्षा के लिये जमकर संघर्ष चलाते रहने की बात सभी ने कही। लेकिन, उनमें से चिर के एक कज़्ज़ाक ने व्येशेन्स्काया स्टाफ के आगे बढ़ने के आदेश का ज़ोरदार ढंग से समर्थन किया। तर्क देते हुए बोला—"यहाँ वक्त खराब करने से कोई फायदा नहीं। मेलेखोव हमें दोनेत्स के इलाके में ले चलें। हमारा क्या, हम मुट्ठी-भर हैं, लेकिन उनके पीछे पूरा रूस है। हम उनका मुकाबला कैसे कर सकते हैं? वे हमें कुचलकर रख देंगे और फिर हमारा सारा खेल खत्म हो जाएगा। हमें यह जाल काटना चाहिए। हमारे पास लड़ाई का सामान बहुत नहीं है, मगर वह हम हथिया लेंगे। हमें जैसे भी हो, धावा बोलना चाहिए।"

"लेकिन हमारे खानदान के लोगों का क्या होगा? हमारे घरों की औरतों, बूढ़ों और बच्चों का क्या बनेगा?"

"वे सब घरों में बने रहें···"

"तुम्हारा दिमाग चालाकी से भरा है, मगर है वह दिमाग किसी बेवकूफ का!"

अब तक तो लोग फुसफुसाते ही रहे थे कि हमारी वसन्त की जोताई का क्या होगा और अगर हम आगे बढ़े तो हमारे फार्मों का क्या होगा? लेकिन, चिर के कज़्ज़ाक के बोलते ही सब गला फाड़-फाड़कर चीखने लगे। बैठक गांव की किसी सभा-सी लगने लगी। एक सयानी उम्र के कज़्ज़ाक ने अपनी बुलन्द आवाज़ से बाकी सभी लोगों के स्वर दबा दिये—"हम अपने अहातों को छोड़कर कहीं भी जाने से रहे! सबसे पहले मैं अपना स्त्वैड्न गांव को ले जाऊंगा। अगर हमें लड़ना होगा तो हम अपने गांव-घरों के आस-पास लड़ेंगे, हम दूसरों को बचाने के लिए अपनी जानें देने को तैयार नहीं हैं।"

ग्रिगोरी ने लोगों के शांत होने की राह देखी और फिर फैसला-सा देते हुए बोला—"हम मोर्चा यहीं बांधेंगे। अगर आसनोकुत्स्काया के कज़्ज़ाक हमारा साथ देंगे तो हम उनकी भी हिफाज़त करेंगे। कहीं कोई ऐसी जगह नहीं जहां हम जा सकें बैठक खत्म हुई। आप लोग अपने-अपने स्त्वैड्नों को जायें। हम फौरन ही रवाना होंगे और अपनी-अपनी जगह ले लेंगे।"

और आधे घंटे बाद ही घुड़सवारों की कतारों से सड़क भर गई। ग्रिगोरी ने उन्हें जाते देखा तो अभिमान और प्रसन्नता से उसका हृदय भर उठा। लेकिन, आत्मा को सन्तोष देने वाले उल्लास के साथ ही चिन्ता और व्यंग्य से भरी कटुता उसका अन्तर कुरेदने लगी। उसने अपने-आप से पूछा —'जिस तरह ज़रूरी है, क्या उस तरह मैं इनकी रहनुमाई कर सकता हूं? क्या हज़ारों कज्ज़ाकों को सही राह पर लगाने की समझ और अक्ल मुझमें है? एक स्क्वैड्रन नहीं, बल्कि इस वक्त एक पूरी डिविज़न मेरे मातहत है। ऐसे में, मेरे किस्म का कम लिखा-पढ़ा आदमी क्या इन हज़ारों कज्ज़ाकों पर अपना असर रख सकता है? उनकी पाक ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले सकता है?'—फिर उसने सोचा—'सवाल यह भी है कि मैं इन्हें किसके खिलाफ उभार रहा हूं? जनता के खिलाफ···? लेकिन सही आखिर कौन है?'

वह अपने घोड़े पर सवार होकर अपने दांत भींचे हुए, स्क्वैड्रनों की बगल-बगल चलने लगा। उसकी आंखों में लहरें लेती शक्ति का मद उतार पर आने लगा। चिन्ता और कटुता बाकी रह गई। जैसे किसी असह्य बोझ से उसने अपने कन्धे झुका लिए।

: ३७

वसन्त ने नदियों की अकड़ी हुई नसों में गरमी घोल दी। नसें खुल गईं। दिनों में हरियाली घुल गई। हरी पहाड़ी की धाराओं के स्वर और तेज़ हो उठे। सूरज की धूप गहरा गई। उसका पीला रंग पर लगाकर उड़ गया। उसकी तीलियों-सी किरणें मखमली हो गईं। उनमें ताप मुखर होने लगा। दोपहर के समय जुती हुई ज़मीन से भाप भी उठने लगी। हमवार बर्फ की चमक सह पाना आंखों के लिए कठिन हो गया। हवा नमी से सीझकर भारी हो उठी और जैसे महकने लगी।

धूप से कज्ज़ाकों की पीठें गरमाने लगीं। काठियों की गरमी प्यारी लगने लगी। हवा ने अपने गीले होंठों से कज्ज़ाकों के भूरे गालों को नम कर दिया। कभी-कभी वह बर्फ से मढे ढाल की दो-चार सांसें भी अपने साथ ले आई। लेकिन, गरमी ने जाड़े को दबाना शुरू कर दिया।

बसन्त की मुट्ठी में आ जाने के कारण घोड़े नाचने और रह-रहकर उछलने लगे, बदन से रोयें उड़ने लगे और उनके पसीने की गंध नाक में और गड़ने लगी। कज़्ज़ाकों ने अपने घोड़ों की गभिन बालों वाली दुमें कमी की बांध दीं, ऊंट के बाल के कनटोपे उनकी पीठों पर लटकने लगे, सिर की टोपियों के नीचे उनकी भौंहें भीगी रहने लगीं और भेड़ की खाल की जैकेटों और रुई-भरे कोटों में गरमी महसूस होने लगी।

ग्रिगोरी अपने रेजीमेंटों को गरमी के एक रास्ते से ले चला। लाल-सेना की टुकड़ियां, हवा-चक्की के पार, दूर लड़ाई के लिए तैयार होती नज़र आईं। फिर, स्विरिदोव नाम के गांव के पास मुठभेड़ हो गई।

ग्रिगोरी को किसी भी डिविज़नल-कमांडर की तरह लड़ने वालों की पंक्तियों का संचालन बाहर से करना चाहिए था। यह उसे अब भी सम्भव न लगा। व्येशेन्स्काया के कज़्ज़ाकों की अगुआई उसने खुद की और उन्हें खतरनाक से खतरनाक जगहों में ला झोंका। लड़ाई किसी संगठित-कमान के बिना ही बढ़ने लगी। हर रेजीमेंट ने पहले के हर समझौते से निगाह बचाई और नई परिस्थितियों के हिसाब से कदम उठाया।

मोर्चे के आम मानी में मोर्चा कहीं न था। इसलिए जहां-तहां से उमड़-घुमड़कर लड़ना मुमकिन था। घुड़सवार सेना की अधिकता ग्रिगोरी की डिविज़न की सबसे बड़ी विशेषता थी, और यह बात अपने-आप में एक महत्वपूर्ण निधि-जैसी थी।

ग्रिगोरी ने इस चीज़ से ज्यादा से ज्यादा फायदा उठाने और कज़्ज़ाक तरीकों से लड़ाई चलाने का निश्चय किया। ये तरीके हैं कोनों से हमले करना, दुश्मन की फौज के पिछले हिस्से पर धावे बोलना, सामान की गाड़ियों के लिए खतरा पैदा कर देना और रातों को छापे मारकर लाल-सेना के फौजियों को परेशान करना और उनकी हिम्मत तोड़ना।

लेकिन स्विरिदोव के पास उसने एक दूसरी ही योजना का सहारा लिया। उसने एक टुकड़ी के लोगों को अपने-अपने घोड़ों से उतरकर गांव के बाहर के एक बगीचे में छिपकर लेट रहने का आदेश दिया और

बाकी दो स्क्वैड्रनों को खुद दौड़ाता पहाड़ी पर चढ़ गया। धीरे-धीरे दुश्मन की टुकड़ियां लड़ाई में खिंच आईं।

यानी, उसके ठीक सामने हवाई घुड़सवारों की दो टुकड़ियां थीं। वे खोपर के कज्जाक न थे, क्योंकि उनके घोड़ों की दुमें कटी हुई थीं, और दोन के कज्जाक अपने घोड़ों की दुमें काटकर उनकी खूबसूरती कभी कम न करते थे। उसने दूरबीन से सब कुछ देखा था। यानी, वे या तो तेरहवीं घुड़सवार रेजीमेंट की टुकड़िया थी, या अभी-अभी आई कुछ दूसरी टुकड़ियां थीं।

सो, पहाड़ी की चोटी से उसने, दूरबीन के सहारे, आस-पास का सारा इलाका समझा। काठी से प्रदेश और लम्बा-चौड़ा लगा और रकाबों में बूटों की नोकों के जमने पर उसे अपने ऊपर विश्वास और अधिक हुआ।

उसने फिर नदी के किनारे दूर साढ़े तीन हजार कज्जाकों की लम्बी पंक्ति को, उस्त-मैदवेदित्सा की ओर से उमड़ते दुश्मन का सामना और येलान्स्काया के संकट में पड़े कज्जाकों की मदद करने के लिए उत्तर की ओर उमड़ते देखा।

ग्रिगोरी और लड़ाई के लिए तैयार होती लाल-सेनाओं के बीच एक वर्स्ट का फासिला था। *उसने अपने स्क्वैड्रनों को जल्दी-जल्दी पुराने तरीके* से व्यवस्थित किया और बरछों से लैस फौजियों को आगे की पंक्ति में रखा। फिर, वह अपना घोड़ा दौड़ाता आगे आया, उसे मोड़कर कज्जाकों की बगल में लाया और तलवार खींचते हुए बोला—"आराम से दुलकी चाल—मार्च !"

लेकिन, आगे बढ़ते ही ग्रिगोरी के घोड़े का एक पैर गिलहरी के बर्फ में छिपे एक बड़े बिल में जा पड़ा और घोड़ा लड़खड़ा गया। ग्रिगोरी गुस्से से लाल हो गया और उसने उस पर तलवार की मूठ कसकर जमाई। यों तो व्येशेन्स्काया के एक कज्जाक से उधार लिया गया वह फौजी घोड़ा अच्छा, अच्छी नस्ल का और तबीयत से बिलकुल आग था, लेकिन इस पर भी ग्रिगोरी *उस पर विश्वास न करता था। उसे लगा था* कि न तो दो दिनों के कम समय में घोड़ा मेरा आदी हो सकता है और

न ही मैं उसका स्विभाव, आदतें और सारी चाल-ढाल समझ सकता हूं। उसका मन डरा था कि निस्तग्राकोवका में मरे मेरे घोड़े की तरह यह लगाम की हरकत-भर से मेरे मन की बात समझेगा नहीं।

फल यह हुआ कि चोट पड़ते ही घोड़ा उत्तेजित हो उठा, और लगाम के इशारे भूलकर ताबड़तोड़ भाग निकला। इस पर ग्रिगोरी की नसों का खून ठंडा पड़ गया और घोड़े पर सचमुच विश्वास न कर सकने की स्थिति सामने देखकर उसका आत्मसंयम थोड़ा गड़बड़ा गया। लेकिन जल्दी ही घोड़ा लहराते हुए कदम-चाल में आ गया और उसकी लगाम का सूक्ष्म से सूक्ष्म इशारा समझने लगा, तो ग्रिगोरी का मन विश्वास से भर गया और शांत हो उसने क्षण-भर को दुश्मन की बढ़ती हुई कतारों की ओर से निगाह हटाई और घोड़े की गर्दन पर एक नजर डाली। उसके लाल-भूरे कान सिर से चिपके हुए थे और आगे की ओर फैली हुई गरदन एक लय-तान के साथ कांप रही थी।

ग्रिगोरी सीधा हुआ, मन भर हवा अपने फेफड़ों में भरी और बूट रकाबों में दूर तक धमाये। फिर मुड़कर देखा···

उसने घोड़ों और घुड़सवारों के पहाड़ों को गरज के साथ टूटते इस तरह मुड़कर कितनी ही बार देखा था! और हर बार आगामी संघर्ष की आशंका से उसका हृदय जकड़ उठा था, और हर बार उसने पाशविक उत्तेजना की एक अवर्णनीय भावना का अनुभव किया था। घोड़ा दौड़ाने के क्षण से दुश्मन के पास पहुँचने तक सदा ही एक ऐसा पल सामने आया था, जिसे परिभाषा की सीमा में बांध देना कठिन था, और जिसमें कितना ही कुछ अन्दर ही अन्दर एक सांचे से निकलकर दूसरे सांचे में ढला था। ऐसे भीषण पल में तर्क, धैर्य, हिसाब-किताब सभी कुछ उसका साथ छोड़ गए थे और एक पाशविक-वृत्ति ने पूरे जोर से उसकी इच्छा-शक्ति पर अपना अधिकार जमा लिया था। लेकिन इस पर भी, हमले के समय अगर कोई उसे देखता तो उसकी प्रत्येक गतिविधि को नपे-तुले भावनाहीन तर्क से संचालित समझता। उसे लगता कि उसके अन्तर में बड़ा विश्वास है, वह पूरी तरह अपने वश है, और हर कदम नाप-तोल कर आगे बढ़ा रहा है।

सो, इस समय दोनों पक्षों की सेनाओं के बीच की दूरी सहती-सहती सी तेज़ी से घटती गई। घोड़ों और घुड़सवारों की आकृतियां आकार में बराबर बढती गईं। घोड़ों की टापों ने दोनों पंक्तियों के बीच की बर्फ के छिड़काव वाली मिली-जुली पट्टी देखते-देखते पचा डाली। कुछ दूरी पर उसे एक घुड़सवार अपने स्क्वैड्रन के आगे-आगे घोड़ा दौड़ाता दिखा। गहरे रंग के उस कुम्मैत के कदम छोटे और डर से भरे लगते थे। आदमी के हाथ में तलवार थी और उसकी चांदी की म्यान रह-रहकर रकाब से लड़ रही थी और धूप में चमाचम कर रही थी।

एक क्षण बाद ही ग्रिगोरी ने उस आदमी को पहचान लिया। वह कारगिन्स्काया का एक कम्युनिस्ट और जर्मनी की लड़ाई से सबसे पहले लौटने वालों में एक था। लौटा था तो चौबीस साल का था और पट्टियां बाँहों पर ऐसी-ऐसी बांधकर आया था जैसी कभी किसी ने देखी न थी। साथ ही अपने साथ लाया था बोल्शेविक आस्थाएं और मोर्चे की ज़िन्दगी से पैदा होने वाली सुनिश्चित शक्ति। फिर वह बराबर बोल्शेविक बना रहा था, लाल-सेना में काम करता रहा था और अपने ज़िले में सोवियत-सत्ता का संगठन करने के लिए विद्रोह की आग के भड़कने के पहले अपनी रेजीमेंट में वापिस आया था। इस समय जो तलवार उसके हाथ में थी, वह उसने एक अफसर के क्वार्टर्स की तलाशी लेते समय उड़ा दी थी, और परेड के मैदान के अलावा उसका कहीं कोई और इस्तेमाल न हो सकता था।

तो अपनी तलवार चमकाता और बड़े विश्वास के साथ अपना घोड़ा दौड़ाता वह सीधे ग्रिगोरी की ओर बढ़ा।

ग्रिगोरी ने दांत निकाले और रासें उठाईं। घोड़े ने हुक्म माना और रफ्तार बढ़ा दी।

ग्रिगोरी की अपनी एक खास चाल थी और इस चाल का इस्तेमाल वह हमले के वक्त करता था। बात यह थी कि बचपन में वह बयहत्था रहा था, वह बाएँ हाथ से चम्मच थामता। यहाँ तक कि बाएँ हाथ से ही क्रॉस बनाता। इस पर पिता उसकी बार-बार मरम्मत करता और उसकी यह आदत छुड़ाना चाहता। लड़के उसे बयहत्था ग्रीशा कहकर चिढ़ाते।

शायद उसे मार-पीट और चिढ़ाने का असर ही हुआ कि दस वर्ष की उम्र होने तक उसने सिर्फ बाएँ हाथ का इस्तेमाल बंद कर दिया। पर अपने बाएँ हाथ की कुशलता उसने बना रखी और उस हाथ के साथ साथ दाहिने हाथ से भी हर काम करने लगा। पर, हमले के समय वह हमेशा ही अपने बाएँ हाथ की सफाई दिखलाता और कामयाबी उसे हर बार मिलती। वह दुश्मन के चुनिंदा घुड़सवार के मुकाबले के लिए अपना घोड़ा बढ़ाता और दाएँ हाथ से वार करने के लिए बाईं ओर से धँसता। दुश्मन भी यही करता। परन्तु जब उसके बीच कोई बीस गज़ फासिला रह जाता और दूसरा आदमी तलवार चलाने को तैयार होकर आगे की ओर झुकता तो ग्रिगोरी अपना घोड़ा नचाकर तेज़ी से दाएँ ले आता। साथ ही तलवार हवा की तेज़ी से बाएँ हाथ में साध लेता। दुश्मन परेशान हो उठता। उसे लगता कि वह तलवार चलायेगा तो उसके अपने घोड़े का ही सिर साफ हो जाएगा। उसके सिर पर मौत खेलने लगती। इस बीच ग्रिगोरी उस बेबस आदमी पर भरपूर वार कर देता।

उस्नित्सिन ने ग्रिगोरी को कभी 'बाकलानोव' वार सिखलाया था। पर तब से अब तक चीज़ें बहुत बदल चुकी थीं। फिर पटेबाजी ऐसी नहीं कि हल चलाने की तरह सीखी जा सके। मगर उसने दो लड़ाइयों में हिस्सा लिया था और इस बीच उसका हाथ अच्छी तरह मज गया था। वह इस कला में पूरी तरह दक्ष हो गया था।

ग्रिगोरी अपनी कलाई तेगबंद में कभी न फमाता था, इसलिए पलक मारने भर में एक तलवार हाथ से उछालकर दूसरे हाथ में ले लेता था। वह जानता था कि अगर कोई भरपूर वार सीधा न बैठा तो तलवार हाथ से दूर जा गिर सकती है और उसकी कलाई तक उखड़ सकती है। उसे एक ऐसी चाल पता थी जो बहुत ही कम लोगों के पल्ले पड़ सकती थी। वह अपने विरोधी के हाथ का हथियार झटके से दूर फेंकवा सकता था और तलवार के हलके स्पर्श से उसका हाथ बिलकुल बेकार कर सकता था। ग्रिगोरी ने ठंडे इस्पात से आदमी को मार डालने से सम्बन्धित कला की गहरी जानकारी हासिल की थी।

पटेबाजी के अभ्यास के सिलसिले मे कज्जाक के सधे हुए हाथ की तलवार से कटी बांस की तिरछी लकडी जिस तरह बिना कांपे, बिना नीचे-ऊपर हुए, सीधी जमीन पर आती है और अपने बांस की बगल में बालू पर आ गिरती है, ठीक वैसे ही सेमीग्लाजोव अपने पीछे-हटते घोड़े से गिरा और वार की जगह पर हाथ रखे धीरे से काठी से नीचे सरक आया। ग्रिगोरी तुरन्त ही, अपनी काठी पर तना और रकाबों पर पैर जमाकर खडा हो गया। एक दूसरा आदमी अपने घोड़े की लगाम खींच न पाया और अंधे की तरह उसकी ओर बढता चला आया। जानवर के नथुनो के झाग की बौछार ने उसके सवार को छिपा लिया, लेकिन उसकी तलवार का टेढापन ग्रिगोरी को नजर आया। उसने अपनी पूरी ताकत से घोड़े की लगाम खींची, वार झेला, दाएँ हाथ मे रासें सम्हालते हुए वार का जवाब वार से दिया और उस साफ दाढ़ी-मूछवाले आदमी की लाल गर्दन देखते-देखते उड़ा दी।

कज्जाक और लाल-फौजियों को चीरकर रास्ता बनाते और अपना घोड़ा दौडाते हुए साफ निकल जानेवाला ग्रिगोरी पहला रहा। फिर वह मुड़ा तो उसकी निगाह उमडते हुए घुडसवारों के दल पर पड़ी। उसकी हथेली नसों के तनाव के कारण खुजलाने लगी तो उसने तलवार म्यान मे रख ली, अपनी पिस्तौल झटके से हाथ मे ले ली, और अपना घोड़ा पूरी रफ्तार पर वापिस छोड़ दिया। कज्जाकों ने टेढ़ी-सीधी कतार में अपने घोड़े उसके पीछे दौडाए। बाद मे जहा-तहा ही ग्रिगोरी ने सफेद पहियोंवाली टोपियां और टोप घोड़े की गरदनों पर नीचे तक झुके देखे। लोमडी की खाल की टोपी और भेड की खाल की जाकेट पहने एक सार्जेंट उसकी बगल मे अपना घोडा दौडाता रहा। उसका एक कान और गाल ठोड़ी तक कट गया था और सीना ऐसा था जैसे कि कड़िया-भर पकी चेरियां उस पर फोड दी गई हों। उसके दाँत खून से तर थे।

लाल-फौजी भी डगमगाए। फिर, उनका दिल दढा तो उन्होंने पीछे हटते कज्जाकों का पीछा किया। ऐसे मे एक कज्जाक पिछड गया तो उसे जैसे हवा के झोंके ने जमीन पर ला पटका और घोडों की टापों ने रौंदकर वर्फ में मिला दिया। घुड़सवार गाव, बगीचों के काले पसारे,

पहाड़ी के किनारे के क्रॉस और चौड़ी सड़क के पास पहुँचे। कज्जाक जहां छिपे थे, वह जगह अब दो सौ गज से ज्यादा दूर न रह गई। घोड़ों की पीठों से झाग और खून की धारें बहने लगीं। ग्रिगोरी ने अपना घोड़ा पूरी रफ्तार से दौड़ाते हुए पिस्तौल चलाने की कोशिश की। लेकिन, कारतूस फंस गया। इस पर पिस्तौल को केस में ठूंसते हुए उसने साथियों को चीखकर आगाह किया—"कतारों में बँट जाओ !"

कज्जाक-स्क्वैड्रनों की एक ठोस कतार किसी बड़े पत्थर से टकराने-वाली नदी की धार की तरह दो कतारों में बट गई। नतीजा यह हुआ कि उनका पीछा करनेवाले लाल-फौजी घुड़सवारों के आगे किसी तरह की कोई आड न रही। इसी समय बाड के पीछे कज्जाक आग बरसाने लगे···पहली बार के बाद दूसरी बार की गोलियां बरसीं। चीख-पुकार मच गई। एक घोड़ा अपने लाल-सैनिक को लिये-दिये सिर के बल भहरा पड़ा। दूसरे के घुटने बेकार हो गए और उसने बर्फ में अपना सिर धँसा लिया। दूसरे तीन या चार लाल-फौजी अपनी-अपनी काठियों से नीचे चले आए। यानी, लाल-सैनिक जब तक अपने घोड़ों की रासें खींचें-खींचें और घोड़े मोड़ें-मोड़ें कि तब तक कज्जाकों ने अपनी सारी गोलियां खत्म कर दीं और उनकी राइफिलों के मुंह बन्द हो गए। फिर, ग्रिगोरी पूरी आवाज से 'स्क्वैड्रन···' कह भी नहीं पाया कि हजार घोड़ों की टापें तेजी से बर्फ में मुड़ीं और कज्जाक दुश्मनों का पीछा करने लगे।

लेकिन, लाल-फौजियों का पीछा उन्होंने पूरे मन से नहीं किया। उनके घोड़े थक गए थे। सो, एक वर्स्ट की दूरी तय करने के बाद वे लौट दिए। राह में उन्होंने मरे हुए लाल-फौजियों के कपड़े उतार लिए और घोड़ों की पीठों पर से काठियां खोल लीं। एक बाजूवाले अलेक्सेइ-शामील ने खुद तीन जख्मी लाल-फौजियों को मार डाला। उसने उन्हें बाड़ की तरफ मुंह कर खड़ा होने को कहा और फिर एक-एक कर काटकर फेंक दिया। इसके बाद अपने मूंहों में सिगरेट लगाए, कज्जाक लाशों के पास आ जमा हुए। तीनों के बदनों पर एक-से निशान नजर आए। तीनों के धड़ हँसुली से लेकर कमर तक बीच से दो हो गए लगे।

"मैंने तीन की गिनती को छः में बदल दिया।" अलेक्सेइ ने

आँखें चमकाते हुए अपनी डींग मारी। दूसरे कज्जाकों ने उसकी तारीफ करते हुए उसे सिगरेट दी और स्पष्ट आदर की भावना से उसकी मुट्ठी पर दृष्टि जमाई। मुट्ठी छोटी पर, कोहड़े की तरह कड़ी लगी। फूलते हुए सीने की मासपेशियाँ ट्युनिक के अन्दर से झाँकती मालूम हुईं।

घोड़े बाड़ के पास खड़े होकर पसीना छोड़ने लगे। उनकी पीठों पर बरानकोट फैले रहे। कज्जाकों ने काठियों के बंद कसे और पानी पीने के लिए कुए पर पारी-पारी से आने लगे। कितनों को तो अपने थकान से चूर घोड़ों को लगाम पकड़कर घसीटना पड़ा।

ग्रिगोरी, घोड़े पर सवार प्रोखोर और दूसरे पांच कज्जाकों के साथ, सबसे आगे रहा। इस बीच जैसे कि एक पट्टी उसकी आखों से उतर गई। उसने देखा कि फिर हमले के पहले की तरह ही धरती पर सूरज की धूप बिखरी हुई है, बर्फ गल रही है, गांव मे गौरैयां चहचहा रही हैं और वर्ष के प्रवेशद्वार पर खड़ा वसन्त अपनी मधुरतम सुगन्धियां लुटा रहा है। जिन्दगी ग्रिगोरी के पास लौट आई। वह न मुरझाई और न हाल के खूनखराबे के कारण उसके गालों पर झुर्रियां पड़ीं। वह तो साथ की खुशियों के कारण और भी अधिक आकर्षक लगी, हालांकि इन खुशियों की उम्र कम ही थी और इनमें मृग-स्वप्न जड़े हुए थे।

धरती की बर्फ के पिघलने पर कहीं अगर कुछ भी बर्फ रह जाती है तो वह इस तरह उजली लगती है और इस तरह चमकती है कि आदमी भुलावे में पड़ जाता है।

: ३८ :

विद्रोह, बाढ़ के पानी की तरह बढ़ा और फैला। दोन के किनारे के सभी गांव और पूर्व की स्तेपी का चार सौ वर्स्ट का इलाका उसने अपनी लपेट में ले लिया। पचीस हज़ार कज्जाक घोड़ों पर सवार हो गए। दोन-प्रदेश के ऊपरी हिस्से के गांवों ने दस हज़ार पैदल दिए।

लड़ाई अब एकदम नई परिस्थितियों में लड़ी गई। दोनेत्स के किनारे नोवोचेरकास्क का पूरा मोर्चा दोन की श्वेत-सेना ने सम्हाला और ऐसी तैयारी की कि फैसला अब इधर हो या उधर! दूसरी तरफ, श्वेत-सेनाओं

का विरोध करनेवाली आठवीं और नवीं लाल-सेनाओं के पार्श्व भाग में एक ऐसा विद्रोह उठ खड़ा हुआ जो खत्म होने को ही न आया। इससे दोन क्षेत्र पर अधिकार करने का कठिन कार्य और भी दुस्वार हो उठा।

अप्रैल में क्रान्तिकारी सैनिक परिषद् को श्वेत सेना से सम्बद्ध लोगों की बगावत की धमकी का सामना करना पड़ा। फैसला किया गया कि पहले इसके कि बागी पीछे से लाल-मोर्चा तोड़ दें और श्वेत-सेना के साथ मिल जाएँ, उन्हें कुचल देना है, और जैसे भी हो कुचल देना है। सो इस काम के लिए मँजी से मँजी सेनाएँ भेजी गईं, यानी भेजे गए बाल्टिक और काला-सागर बेड़े के नौसैनिक, कसौटी पर कसी हुई, विश्वसनीय रेजीमेंटें, बख्तरबन्द गाड़ियों के फौजी और बहादुर से बहादुर घुड़सवार युनिटें। साथ ही बोगुचान्स्काया-डिविज़न की पाच रेजीमेंटें संगीनों से लैस कोई आठ हज़ार फौजियों की एक सेना, कई बैटरियां और पाच सौ मशीनगनें दोनेत्स के मोर्चे से उधर भेज दी गईं। विद्रोहियों के मोर्चे के कज़ानवाले हिस्से में रयाज़ान और ताम्बोव के लाल-फौजियों ने लड़ाई पूरी ताकत से लड़ी और बड़ी बहादुरी दिखलाई। बाद में मास्को-फौजी-कॉलेज के सदस्य उनसे आ मिले। लातविक के हलके पैदल-फौजियों ने शुमिलिन्स्काया में विद्रोहियों से लोहा लिया।

बागी कज्जाकों के पास फौजी साज-सामान की कमी हो गई। पहले तो राइफलें कम पड़ीं, और बाद में गोलियां बाकी न बचीं। उन्हें खून की कीमत पर, हमलों या रातों के छापों से जीत लेने का सवाल सामने आया, और फिर उन्हें जीत लिया गया। १६१६ की अप्रैल में विद्रोही राइफलों से पूरी तरह लैस रहे। उनके पास आठ बैटरियां और डेढ़ सौ मशीनगनें रहीं।

विद्रोह के आरम्भ में व्येशेन्स्काया के फौजी-गोदाम में पचास लाख खाली कारतूस गिने गए। सो, क्षेत्रीय सोवियत ने सभी लोहारों, ताला-लोहारों और बन्दूक बनाने वाले को ले लिया और गोलियों का एक कारखाना जमा दिया। लेकिन, सीसा नहीं ही मिला, गोलियां ढालने के लिए कोई दूसरी चीज भी न मिली। इस पर क्षेत्रीय सोवियत की पुकार पर सभी गांव अपने-अपने यहां का रिजर्व सीसा और तांबा जमा करने लगे।

स्टीम मिलों के सीसे के सभी हिस्से हासिल कर लिए गए और घुड़सवारों ने संक्षिप्त अपील गांव-गांव पहुंचाई। अपील इस प्रकार थी—

"आपके पतियों, बेटों और भाइयों के पास राइफिलें हैं, मगर गोलियां नहीं हैं। वे पापी दुश्मन से जो पाते हैं, उसी से अपना काम चलाते हैं। इसलिए गोलियां ढालने के लायक जो कुछ भी आपके पास हो, दे दीजिए। नाज की ओसाई की मशीनों से सीसे की चलनियां ले आइए और दे दीजिए।"

एक हफ्ते के अन्दर-अन्दर ओसाई की एक मशीन में एक चलनी बाकी न रही। ज़िले-भर की चलनियां खिंच आईं। औरतों ने काम और बेकाम की तमाम चीज़ें ग्राम-सोवियतों में पहुंचा दीं। लड़ाई के स्थानों के आस-पास के गांवों के लड़कों ने दीवारों में लगीं गोलियां खोद डालीं और तोप के गोलों के टुकड़ों की तलाश में जमीन उलटकर रख दी। लेकिन इस कार्रवाई में भी एकरूपता न रही। गांवों की कुछ ज्यादा गरीब औरतों ने अपने बचे-खुचे बरतन-भांडे बचाने की कोशिश की तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और 'लाल-फौजियों के साथ हमदर्दी दिखलाने' के अपराध में व्येशेन्स्काया भेज दिया गया। तातारस्की में घनी, सयानी उम्र के कज्जाकों ने अभी-अभी रेजीमेंट से लौटे, एक कमउम्र कज्जाक की खासी मरम्मत की, क्योंकि असावधानी में वह ज़ोर से कह गया कि गरीब क्यों करें, अमीर-लोग अपनी ओसाई की मशीनें खराब करें। हो सकता है कि किसी वजह से वे बरबादी से ज्यादा लाल-फौजियों से डरते हों…

दूसरी ओर, सीसे का अम्बार का अम्बार व्येशेन्स्काया की वर्कशॉप में गलाया गया, लेकिन गोलियों के तैयार होने पर गिलट की केसिंग का सवाल उठा। फिर ये गोलियां भी गलने लगीं और दागी गईं तो अध-पिघली हालत में ढहानों से उड़ीं। नतीजा यह कि सिर्फ तीन सौ गज तक मार कर सकीं। लेकिन जिन्हें लगीं वे ऐसे ज़ख्मी हुए कि बस!…

पैंतीस हज़ार बागियों की पांच डिविज़नें और एक छठी, विशेष, ब्रिगेड बनाई गई। ग्रिगोरी-मेलेखोव ने चिर-नदी के किनारे की पहली डिविज़न की कमान सम्हाली। उसके मोर्चे के एक हिस्से को दोनेत्स के

मोर्चे से वापिस लाई गई लाल-टुकड़ियों के हमले का ज़ोर बर्दाश्त करना पड़ा। इस पर भी, उसे न सिर्फ दुश्मन का दबाव खत्म करने में कामयाबी मिली, बल्कि उसने ज़रा कम यकीन के लायक दूसरी डिविज़न की घुड़-सवारों और पैदल-फौजियों की कुमक से मदद भी की।

विद्रोह विफल हो गया और खोपर और उस्त-मेदवेदित्सा के ज़िलों तक फैल नहीं सका, हालांकि वहां के लोग जोश से उबलते रहे और वहां से बार-बार पैगाम आए कि कज़्ज़ाकों को उभारने के लिए बुज़ुलुक और खोपर के ऊपर के इलाकों में फौजें भेज दी जाएं। बात यह हुई कि कज़्ज़ाक कमान ने ऊपरी-दोन-प्रदेश के आगे सेनायें भेजने का खतरा मोल न लिया। उसे इस बात का ख्याल बराबर रहा कि खोपर-कज़्ज़ाकों का बहुमत सोवियत-शासन का समर्थक है, और उस सरकार के खिलाफ हथियार कभी न उठाएगा। उस पर जो कज़्ज़ाक सन्देश लेकर आए उन्होंने कोई खास भरोसा न दिलाया और यह बात मानी कि लाल-फौजियों से असन्तुष्ट कज़्ज़ाकों की गिनती बहुत थोड़ी है, अलग-अलग ज़िलों के कोने-कतरों में बच रहे फौजी-अफसर कहीं जाकर छिप गए हैं, मोर्चे के फौजी या तो घरों में हैं या लाल-फौजों के साथ हैं और बड़े-बूढ़ों में न तो उतनी ताकत है और न आज ज़िलों में उनकी पहले-जैसी इज़्ज़त है।

दक्षिण के उत्तरी ज़िलों में लाल-फौजियों ने जवानों की भरती की थी और वे पूरे उत्साह और मन से बागियों से लोहा ले रहे थे।

इस प्रकार विद्रोह ऊपरी-दोन-प्रदेश तक सीमित रहा और कमाण्डर से लेकर आम फौजी तक के सामने यह बात दिनोंदिन साफ होती गई कि वे अपने घरबार की रक्षा बहुत दिनों तक कर न पाएंगे। लाल-फौज देर-सवेर दोनेत्स के मोर्चे से लौटेगी और उन्हें कुचलकर रख देगी।

अठारह मार्च को ग्रिगोरी मेलेखोव को सर्वोच्च कमान से सलाह-मशविरा करने के लिए बुलाया गया। उसने अपनी डिविज़न की कमान अपने सहायक र्‌याबचिकोव को सौंपी और तड़के ही अपने अर्दली के साथ रवाना हो गया। वह स्टाफ-हेडक्वार्टर्स में पहुंचा तो कमांडर कुदिनोव, अलेक्सेयेव ज़िले के एक सन्देशवाहक से सवाल-जवाब करता मिला। वह अपने डेस्क के पीछे की कुर्सी पर गठरी बना अपनी काकेशियाई-पेटी

का सिरा हाथों से ऐंठता दीखा। उसने कई रातों के जागरण के कारण सूजी हुई, नीद से जल रही आंखें ऊपर न उठाईं। पूछा—"और, खुद तुम क्या सोचते हो इस मामले में ?"

"मैं···मैं भला···" कज्जाक हिचकिचाया, "मैं भला क्या कह सकता हूँ ? मैं भी वही सोचता हूँ जो दूसरे लोग सोचते हैं। और आप तो जानते हैं कि लोगों की हालत क्या है। वे डरते हैं। सिर उठाना वे चाहते हैं, मगर डरते हैं।"

"सिर उठाना वे चाहते है, मगर डरते हैं !" कुदिनोव क्रोध से चीखा। उसका चेहरा पीला पड़ गया और वह अपनी कुर्सी से इस तरह उछला जैसे कि सहसा ही नीचे आग दहक उठी हो।—"तुम सब मर्द नहीं हो, छोकड़ियां हो···छोकड़ियां, कि जी तो चाहता है, मगर दिल डरता है··· मां इजाजत नहीं देगी ! समझे···खैर···तुम अपने जिले को वापिस जाओ, और अपने यहाँ के बड़े-बुजुर्गों से कह दो कि जब तक वे खुद कदम न उठाएंगे, हम एक फौजी वहा न भेजेंगे ! लाल-फौजी चाहें तो एक-एक कर सबको फांसी पर चढ़ा दें।"

कज्जाक अपने वजनी हाथ से सिर के पिछले हिस्से में जमी, लोमड़ी की खाल की लाल टोपी टटोलने लगा। खाइयों की वसन्त के दिनों की बाढ के पानी की तरह उसका माथा पसीने से भर गया। पलकें तेजी से झँपने लगीं और उसके चेहरे पर एक कटु मुस्कान दौड़ गई—"जंगली घोड़े वहा एक काम न देंगे, यह बात मैं जानता हूँ···लेकिन सारा सवाल तो यह है कि काम किसी तरह शुरू हो···सारा दारोमदार सिर्फ शुरुआत पर है···"

ग्रिगोरी यह सारी बातचीत बहुत ही ध्यान से सुनता रहा। पर, इसी समय एकाएक दरवाजा खुला और भेड़ की खाल की जैकेट पहने, छोटे कद का, काले गलमुच्छों वाला एक आदमी अन्दर आया तो वह एक ओर को हो गया। उस आदमी ने झुककर कुदिनोव का अभिवादन किया और अपनी हथेली से गाल टिकाकर मेज के किनारे बैठ गया। ग्रिगोरी यों तो स्टाफ के सभी लोगों को जानता था, पर इस व्यक्ति को उसने नहीं पहचाना, और उसके नाक-नक्शे के उभार, चेहरे की सँवराहट और

कोमल हाथों की सफेदी पर उसकी नजर जम गई।

कुदिनोव ने नवागन्तुक की ओर आंखों से इशारा करते हुए, ग्रिगोरी से कहा—"मेलेखोव, यह कॉमरेड गिग्रोरगिदज़े हैं···यह···" वह ठिठका, उसने अपनी पेटी का चांदी का काले सिग्राई बक्सुआ ऐंठा और सन्देशवाहक की ओर मुड़ते हुए बोला—"बस, तो···तुम जा सकते हो···हम लोगों को कुछ काम की बातें करनी हैं···तुम जाओ और जिसने भी तुम्हें भेजा हो उससे वह कह दो, जो मैंने तुमसे कहा है।"

कज्ज़ाक कुर्सी से उठा तो लोमड़ी की खाल की उसकी टोपी छत से लगभग छू गई। आदमी के कंधों ने सारी रोशनी छेंक ली तो कमरा छोटा और घुटन से भरा लगने लगा।

"मदद के लिए आया था यह ?" ग्रिगोरी ने पूछा। उसे उस काकेशियन से हाथ मिलाते समय, जो बुरा-बुरा-सा लगा, उसका ध्यान अब तक रहा।

"हूं···मदद चाहिए! मदद के लिए ही आया था···लेकिन, देखिए न कि···" कज्ज़ाक ने अपनी आग्रहभरी आंखें, प्रसन्नता से ग्रिगोरी की ओर मोड़ीं। उसका लाल चेहरा पसीने से इस तरह नहा रहा था कि उसकी दाढ़ी और झूलती हुई लाल मूंछ के बालों में सफेद गुरिया-सी बिखरी लग रही थीं।

"तो आपको सोवियत-हुकूमत भी पसन्द नहीं!" ग्रिगोरी ने अपने सवाल जारी रखे, और ऐसा बना जैसे कि कुदिनोव की मुद्राओं की अधीरता उसने देखी ही नहीं, समझी ही नहीं।

"यह हुकूमत कोई ऐसी बुरी न रहेगी, मेरे भाई!" कज्ज़ाक ने विचारों में डूबते हुए कहा—"लेकिन बदतर सूरतें भी सामने आ सकती हैं।"

"आपके यहां कुछ गोली-वोली चलाई उन लोगों ने ?"

"ईश्वर बचाए···उन लोगों ने गोली-वोली कुछ नहीं चलाई, सिर्फ अनाज लिया, घोड़े बमूले और जिन्होंने उनके खिलाफ होंठ खोले, उन्हें गिरफ्तार कर लिया। लेकिन, कुल मिलाकर, उनका भौंकना उनके काटने से बुरा रहा।"

"अगर हमने फौजें भेज दी होती तो क्या आप बगावत कर देते—आप सब-के-सब उनके खिलाफ तनकर खड़े हो जाते ?"

कज्ज़ाक की छोटी-छोटी आँखें चालाकी से सिकुड़ी और ग्रिगोरी की निगाह से बचीं। टोपी, झुर्रियों से भरे, माथे पर चली आई।

"यह···यह तो मैं कैसे जान सकता हूँ···हाँ, यह है कि जो अच्छे किसान होते, वे तो बगावत कर ही देते।"

"गरीब लोगों का रवैया क्या रहता ?" ग्रिगोरी ने आखिरकार उसकी निगाह पकड़ ली। उस समय उसमें बाल-सुलभ विस्मय लहरें लेता लगा।

"उन आवारों से मतलब है आपका ?···वे भला इस मुसीबत में कहाँ पड़ने लगे···उनके लिए सरकार का मतलब है, हर तरह की छुट्टी और पूरी तरह छुट्टी।"

"तो, अब तक तुम आखिर क्या कह रहे थे, अहमक कहीं के ?" कुदिनोव गुस्से से गरजा। उसकी कुर्सी चरमरा उठी।—'तुम यहाँ किसलिए आए थे ? कहां है तुम्हारी बगावत ? या यह कि तुम सब के सब रईस हो ?···दो या दिन अमीर किसानों से बगावत नहीं हुआ करती !···निकल जाओ यहा से! ···अभी चूतड़ों में सुइयां नही चुभी हैं। चुभ जाएंगी तो पीछे के पैरों के बल उठकर खड़े हो जाओगे···हमारी मदद की जरूरत नहीं पड़ेगी···दूसरों के हाथ गदे करवाने की आदत पड़ गई है···खुद तिनपतिया के बीच रहना चाहते हो, ऐसे सूअर हो! जाओ, निकल जाओ यहां से, तुम्हे देखकर मुझे मितली आती है।"

ग्रिगोरी के माथे पर बल पड़े। वह एक ओर को चला गया। कुदिनोव के चेहरे की लाल-सूजन और बढ गई। गिओरगिदज़े ने अपनी मूँछें ऐंठीं और उसकी नुकीली नाक के नथुने फूल उठे।

"अगर बात यह है तो मुझे अफसोस है"—कज्ज़ाक ने टोपी उतारते हुए कहा—"लेकिन आपको मुझ पर इस तरह चीखने-चिल्लाने की जरूरत नही, हजूर। मैं तो आपके बुजुर्गों का पैगाम भर लेकर आया था, और अब आपने जो जवाब दिया है, वह उन लोगों तक पहुँचा दूंगा। लेकिन आप इस तरह बरसें नही। पहले हम पर श्वेत-गार्ड बरसे, फिर

लाल-फौजी बरसे और अब आप आंखें दिखला रहे है। उफ, हमारी जिन्दगी इन दिनों कैसी दुश्वार हो उठी है।" उसने क्रोध से टोपी अपने सिर पर पटकी, दवा-सिकुड़ा बरामदे में आया और दरवाज़ा बंद कर दिया। लेकिन यहां वह गुस्से के कारण आपे में न रहा और उसने बाहर का दरवाज़ा इस तरह भड़ाक से मारा कि छत का पलस्तर छूटकर गिर पड़ा।

"आजकल लोग भी क्या-क्या नजर आते है!" आदमी के बाहर जाते ही कुदिनोव ने अपने को सम्हाला और मुस्कराते हुए बोला—"१६१७ की बहार में मैं एक बार सवारी से, जिले के बीच के इलाके की तरफ जा रहा था। ज़माना बोआई का था। ईस्टर के आस-पास के दिन थे। हमारे आज़ाद कज़्ज़ाक-जवान बोआई में लगे हुए थे। वे अपनी आज़ादी के नशे में चूर थे, और सड़क भर में जोताई कर रहे थे, जैसे कि ज़मीन उनके पास कुछ कम रही हो! मैंने यह देखा तो ऐसे एक कज़्ज़ाक को पास बुलाया। वह आया। मैंने कहा—'क्या बात है, तुम सड़क पर जोताई क्यों कर रहे हो?'—आदमी घबरा गया। बोला—'अब ऐसा नहीं करूंगा और ज़मीन फिर से बराबर कर दूंगा।'···फिर, इसी तरह मैंने दो-तीन को और हड़काया। लेकिन थोड़ा आगे बढ़ा तो सड़क फिर जुती देखी और ज़ोतनेवाले को हल के साथ पाया। मैंने आवाज़ दी—'ए, 'यहां आओ!' आदमी पास आया। मैं गरजा—'किसने तुम्हें हक दिया है कि तुम सड़क तक जोतकर फेंक दो?' देखने में मजबूत बदन वाले उस छोटे कद के कज़्ज़ाक ने मुझे घूरकर देखा और उसकी आंखें क्रोध से जलने लगी। उसने मुह से कुछ नहीं कहा। चुपचाप अपने बैलों के पास गया। एक लोहे का छड़ उठाकर दौड़ता हुआ वापिस आया, मेरी गाड़ी का बाज़ू कसकर पकड़ा और पायदान पर पैर जमाते हुए चीखकर बोला—'कौन हो तुम, और कब तक हमारा खून ऐसे ही चूसते रहोगे? मैं अभी तुम्हारी खोपड़ी चूर-चूर करके रख दूंगा।'—और उसने छड़ तान लिया। मैं बोला—'अरे, अरे, इवान, यह क्या? मैं तो हँसी कर रहा था तुमसे!'···उसने जवाब दिया—'इस वक्त मैं इवान नहीं हूं, बल्कि इवान-ओसिपोविच हूं। और अगर तुम मुझसे कायदे से बात न करोगे तो मैं तुम्हारा मुंह कुचल डालूंगा!'···यानी, बिलकुल यही किस्सा इस

वक्त इस कज्ज़ाक का हुआ। कैसे भीका, किस तरह रिरियाया और आखिर में किस तरह अपनी-सी पर उतर आया। लोग एक बार फिर अपने को कुछ समझने लगे हैं।"

"समझने-वमझने कुछ नहीं लगे है···इनके अन्दर की बदमाशी और लुच्चापन उभर आया है। लुच्चेपन को आज कानून का दर्जा मिल गया है।"—काकेशियाई-अफसर ने शांत-भाव से कहा और दूसरों को विरोध का अवसर न देकर यह विषय ही समाप्त कर दिया। बोला—"तो अब कॉफ्रेंस का काम शुरू कीजिए···मैं आज ही अपनी रेजीमेंट को लौट जाना चाहूंगा।"

कुदिनोव ने अंगुलियों के गट्टों से दीवार बजाई और फिर ग्रिगोरी की ओर मुड़ा। बोला—"तुम आज यहीं रहना। कुछ सलाह-मशविरा होगा आपस में। कहावत जानते हो न कि एक अक्ल से दो अक्लें कहीं अच्छी होती हैं। किस्मत की ही बात समझो कि कॉमरेड-गिओरगिदज़े व्येशेन्स्काया ज़िला छोड़कर नहीं गए हैं। यह हमारी बड़ी मदद कर सकेंगे। यह लेफ्टिनेंट-कर्नल हैं और इन्होने स्टाफ-ट्रेनिंग कॉलेज में बाकायदा ट्रेनिंग पायी है।"

आपने क्या किया कि आप व्येशेन्स्काया मे ही बने रह सके ?' अन्दर से चौकन्ना और सावधान होते हुए ग्रिगोरी ने गिओरगिदज़े से पूछा। सवाल क्यों किया यह बतलाना ज़रा मुश्किल ही रहा।

"मुझे टाइफस हो गया था। यानी, उत्तरी-मोर्चे से फौजों ने पीछे हटना शुरू किया तो इस तरह मैं दुदोरेव्स्की मे ही छूट गया।"

"किस रेजीमेंट मे थे आप ?"

"मैं मोर्चे पर नही था, बल्कि एक खास ग्रुप के स्टाफ के साथ था।"

ग्रिगोरी ने तो आगे भी कुछ सवाल करने चाहे, मगर काकेशियन के चेहरे के भावों ने उसे और कुछ पूछने से रोक दिया और उसने अपना अगला वाक्य अधूरा ही छोड़ दिया।

एक-दो मिनट बाद चीफ-ऑफ-स्टाफ-सैफोनोव और चौथी कज्ज़ाक डिविज़न और छठी स्पेशल-ब्रिगेड के कमांडर आए। फिर कांफ्रेंस शुरू हुई। कुदिनोव ने उन्हें संक्षेप मे मोर्चे की स्थिति से अवगत कराया।

इसके बाद सबसे पहले काकेशियन खड़ा हुआ। उसने धीरे-धीरे मेज पर एक नकशा बिछाया और हलके से स्वाराघात के साथ बड़े प्रवाह से बोलना शुरू किया—"मेरा ख्याल है कि शुरू-शुरू में मेलेखोव के डिविज़न और स्पेशल ब्रिगेड के इलाके में हमें तीसरी और चौथी डिविज़नों की कुछ रिज़र्व टुकड़ियां भेज देनी चाहिए। हमें जो कुछ जानकारी है, उससे और कैदियों से हमने जो कुछ पूछताछ की है, उससे साफ है कि लाल-फौजियों की कमान इस खास इलाके पर किसी बड़े हमले की तैयारी कर रही है। हमें पता चला है कि वह तीन बैटरियों और उनके साथ की मशीन-गन-टुकड़ियों के साथ दो घुड़सवार रेजीमेंट और पांच स्पेशल मशीन की टुकड़ियां भेज रही है। उनके फौजियों कि गिनती में इस तरह मोटे तौर पर साढ़े पांच हज़ार लोग बढ़ जाएंगे। ऐसी हालत में साज-सामान के अच्छे-बुरे होने की बात छोड़ दें, तो भी गिनती में वे हमसे कहीं ताकतवर हो जाएंगे।"

दक्षिण से सूरज की पीली किरणें कमरे में उमड़ीं। तम्बाकू के धुएं का एक बादल छत से लटक गया और जड़ हो गया। घर की उगी तम्बाकू की गंध में बूटों की नमी मिल गई। धुएं के ज़हर से बौखलाकर एक मक्खी बेचैन हो उठी और कहीं छत के आस-पास भनभनाने लगी। दो रातों तक चौकसी करने के कारण ग्रिगोरी ऊंघने-सा लगा, और नींद से भरी आंखों से खिड़की के बाहर देखने लगा। कमरे की ज़रूरत से ज्यादा गरमी ने, थकान के साथ मिलकर उसकी इच्छा-शक्ति और चेतना पर एक नशा-सा मढ़ दिया। बाहर वसंती-हवा के झोंके नाचते रहे, पहाड़ी के सिरों की बची हुई, चमचमाती बर्फ गुलाबी रंग की झाईं मारती रही; और दोन-पार के चिनार हवा में इस तरह झूमते रहे कि ग्रिगोरी को उनकी गहरी फुसफुसाहट अपने कानों में पड़ती लगी।

काकेशियन की साफ और ज़ोरदार आवाज़ ने उसका ध्यान अपनी ओर खींचा तो उसने बरबस उसकी बात सुननी चाही। नतीजा यह हुआ कि पता भी न चला और औंघाई जैसे आई थी, वैसे ही हवा हो गई।

'दुश्मन ने पहले डिविज़न वाले मोर्चे में अपना ज़ोर कम कर दिया है, और वह एक पक्के इरादे के साथ मिगुलिन्स्क मेशकोव-लाइन में बढ़ने

की कोशिश कर रहा है। यह बात हमें आगाह करती है कि हम चौकन्ने रहें। मेरा ख्याल है कि···" वह 'कॉमरेड' शब्द पर हकलाया, अपनी बात कहने में अपने गोरे, जनाने हाथ की मुद्राओं से मदद लेने लगा और फिर तेज आवाज मे बोला—"मेरे ख्याल से कुदिनोव और सैफोनोव भयंकर भूल कर रहे है कि वे लाल-फौजियों की कार्रवाइयों की गहराई समझ नहीं रहे और मेलेखोव वाले इलाके की फौजी ताकत को घटा देने की बात सोच रहे हैं। यह तो लड़ाई के कायदों का क, ख, ग है कि दुश्मन के किसी इलाके से पहले अपनी फौजें हटा लीजिए और जब खतरा खत्म समझकर दुश्मन अपनी फौजी ताकत कम कर दे तो उस पर पूरे जोर-शोर से टूट पड़िए···"

"लेकिन मेलेखोव को रिजर्व-रेजीमेंटो की जरूरत नही···" कुदिनोव ने बीच मे बात काटी।

"बात इसकी उलटी है। हमारे पास रिजर्व रेजीमेंटें तो होनी ही चाहिए कि दूसरी रेजीमेंटें टूट जाएं तो हम उन्हें उनकी जगह दे दें।"

"लगता है कि कुदिनोव मुझसे यह पूछना ही नही चाहते कि मैं अपनी रिजर्व रेजीमेंटें दूंगा भी या नहीं ?" ग्रिगोरी ने गुस्से से लाल होते हुए कहा—"लेकिन जहां तक मेरा सवाल है, मै उन्हें देने को तैयार नहीं हूं—एक स्क्वैड्रन भी देने को तैयार नही हू।"

"क्यों, भाई, यह तो···" सैफोनोव ने अपने पीले गलमुच्छों पर हाथ फिरते हुए, मुसकराकर कहना शुरू किया—"भाई का इस बात से कोई ताल्लुक नही। मैं रिजर्व रेजीमेंटें देने को तैयार नही हूं, और नहीं दूंगा, और बस ! इतना ही कहना है मुझे !"

'लडाई के मुहरों के खयाल से···"

"मुझसे लडाई के कायदों और मुहरों की बात न कीजिए। मेरे इलाके और मेरे अपने साथ के फौजियों की जिम्मेदारी मुझ पर है।" ग्रिगोरी ने मुहतोड़ जवाब दिया।

पर इस तरह सहसा ही जो विवाद उठ खडा हुआ, उसका अंत गिम्रोरगिदजे ने कर दिया। उसने अपनी लाल पेंसिल से मोर्चे का खतरे वाला हिस्सा नक्शे पर दिखलाया। दूसरे ही क्षण लोग एक-दूसरे से सिर

सटाकर नक्शा देखने लगे, और सभी की समझ में यह बात साफ-साफ आ गई कि लाल कमान जिस हमले की तैयारी में लगी हुई है, वह सिर्फ दक्षिणी-क्षेत्र पर हो सकता है। क्योंकि वह दोन से लगा हुआ है, और संचार की दृष्टि से काफी फायदे का है···

कांफ्रेंस एक घंटे में खत्म हो गई। चौथे डिविज़न का मनमौजी बहुत ही कम पढ़ा-लिखा कमांडर कोन्द्रात-मेदवेदेव पूरी बहस के वक्त तो मुंह सिये बैठा रहा, पर जब बात खात्मे पर आई तो अपने चारों ओर अविश्वास से देखता हुआ बोला—"मेलेखोव की मदद के लिए हम रिज़र्व रेजीमेंटें भेज सकते हैं। इसमें ऐसी कोई बात नहीं। पर मुझे तो एक बात की परेशानी हो रही है, और वह यह कि मान लीजिये कि दुश्मन तमाम मोर्चों पर एक साथ ही हमला कर दे तब क्या होगा? यानी, हमारे तो हाथों के तोते उड़ जाएंगे और हमारी समझ में कुछ न आएगा कि हम करें तो करें क्या। हमारी हालत ऐसी हो जाएगी जैसे किसी छोटे जज़ीरे (द्वीप) पर पकड़े गए सांपों की।"

"सांप तो तैर भी सकते हैं, मगर हम तैरकर कहां जाएंगे!" उनमें से एक ने हंसते हुए कहा।

"इस सवाल पर हमने गौर कर लिया है।" कुदिनोव ने विचारों में डूबते हुए कहा—"लेकिन, अगर वह सूरत पैदा होती है तो जो लोग हथियार नहीं सम्हाल सकते, हम उन्हें छोड़ देंगे। साथ ही अपने-अपने खानदानों को भी जहां का तहां छोड़ेंगे और जैसे भी होगा दोनेत्स की तरफ बढ़ेंगे। हमारी फौज कोई ऐसी छोटी नहीं है। हमारे फौजियों की गिनती तीस हज़ार है।"

"लेकिन कैडेट ले जायेंगे हमें? उन्हें ऊपरी-दोन के कज्ज़ाकों से हज़ार शिकायतें पहले से हैं!"

"इस तरह के पचड़े लेकर इस वक्त मत बैठिए···इस तरह की बातों से फायदा कोई नहीं।" ग्रिगोरी ने टोपी सिर पर रखी और बाहर निकल आया। उसने दरवाज़ा बंद किया कि गिग्रोरिगदज़े के शब्द उसके कानों में पड़े—

"व्येशेन्स्काया के कज्ज़ाक और हमारे दूसरे फौजी अगर बोल्शेविकों

से डटकर लोहा लेंगे तो दोन और रूस के मामले में उन्होंने जो भी गुनाह किया है, वह सब धुल जाएगा···"

'ऐसा यह कहता-भर है, लेकिन मन में इसके कुछ और है···आस्तीन का साप है यह !' ग्रिगोरी ने मन ही मन सोचा, और, उससे पहली बार मिलते ही उसे जिस तरह की आन्तरिक-चिन्ता और अकारण क्रोध का अनुभव हुआ था, वैसा ही अनुभव एक बार फिर हुआ।

दरवाजे पर उससे कुदिनोव आ मिला। फिर दोनों साथ-साथ दो-एक मिनट तक चुपचाप चलते रहे। लीद से भरे चौक के गढ़े-गढैया में हवा पानी की लहरियों को रह-रहकर छेड़ती लगी। साँझ नियराने लगी। गरमी के गोल-गोल भारी-भारी बादल हंसों की तरह दक्षिण की ओर से तैरते आये। बर्फ को विदा दे चुकने के बाद धरती की नमी से महक में एक गमक-सी अनुभव हुई। बाड़ों के नीचे की घास हरियाती लगी। और ऐसे में ग्रिगोरी ने सचमुच दोन के पार के किनारों की उत्तेजना से भरी फुसफुसाहट सुनी।

"दोन की बर्फ जल्दी ही टूटेगी।" कुदिनोव बोला।

"हाँ···"

"भाड़ में जाये···लगता है कि हम तो सिगरेट का मजा लिये बिना ही मर जायेंगे···इस वक्त घर की उगी एक तम्बा तम्बाकू चालीस केरेन्स्की-रूबलों में आती है।"

"सुनिये," ग्रिगोरी ने झटके से पूछा—'काकेशियनों का वह अफसर भला यहाँ क्या कर रहा है!"

"तुम्हारा मतलब गिओरगिदजे से है! फौजी-कार्रवाइयों के महकमे का मुखिया है वह। शैतान बड़े दिमागवाला है! वही तो सारी स्कीमें तैयार करता है···लड़ाई की चालों और दाँव-पेंचों के मामले में वह हम सब के कान काटता है।"

"वह क्या हमेशा व्येशेन्स्काया में ही तैनात रहता है?"

"नहीं, हमने उसे चेरनोव्स्की-रेजीमेंट की मालगाड़ी का काम सौंपा है।"

"अगर ऐसा है तो वह सारी बातें जानता कैसे रहता है?"

"वह घोड़े पर सवार होकर, करीब-करीब हर दिन ही व्येशेन्स्काया जाता रहता है।"

"तुम उसे यहाँ क्यों नहीं रखते ?" ग्रिगोरी ने पूछा और मामले की तह तक पहुँचने की कोशिश की।

कुदिनोव खाँसा, मुंह पर हाथ रखा और जरा हिचकिचाते हुए जवाब दिया—"कज्ज़ाकों के मोर्चे के मामले में यह कदम उठाना वाजिब नहीं रहेगा। तुम तो जानते हो कि कैसे हैं वे लोग ! वे कहेंगे—'अफसर फिर गद्दियों पर बैठने लगे। अब वे चाहेंगे कि हम भी उन्ही की लकीर के फकीर बनें। सोने की पट्टियों और भव्वों का बोलबाला फिर से हुआ।"

"हमारी फौजों में उसकी तरह के लोग और भी हैं ?"

"दो या तीन कज़ानस्काया में हैं। पर तुम उन्हें लेकर परेशान न हो। मुझे पता है कि तुम क्या सोच रहे हो। लेकिन, साहबज़ादे, कैडेटों से मिलने के अलावा हमारे पास कोई रास्ता नहीं। है न ? या यह कि दस ज़िलों का तुम अपना कोई अलग जनतंत्र बनाने के मसूबे बांध रहे हो ? नहीं, कोई चारा नहीं···हमें तो सिर झुकाकर क्रासनोव के पास जाना ही होगा और कहना ही होगा—'हमें बुरा न समझें, प्योत्र-निकोलायेविच क्रासनोव···हमसे थोड़ी भूल हुई कि हम मोर्चे छोडकर चले आए।"

"थोडी भूल हुई ?" ग्रिगोरी बीच में बोल उठा।

"तो क्या हमसे भूल नहीं हुई ?" कुदिनोव ने सचमुच ताज्जुब में पड़ते हुए कहा और बड़ी ही होशियारी से सामने का गड्ढा बचाने की कोशिश की।

"बात समझा···" ग्रिगोरी का चेहरा लाल हो उठा। वह बरबस मुस्कराया—"मेरा ख्याल है कि गलती तो हमने तब की, जब बगावत के लिए सिर उठाया। आपने खोपर के उस कज्ज़ाक की बात सुनी ?"

कुदिनोव कुछ नहीं बोला और उत्सुकता से ग्रिगोरी की ओर देखता रहा।

फिर चौक के पार चौराहा आया तो वे एक-दूसरे से अलग होकर अपने-अपने रास्ते पर चल दिये। कुदिनोव अपने क्वार्टरों को लौटा।

ग्रिगोरी स्टाफ-कार्यालय में वापिस आया और उसने अपने अर्दली को घोड़े लाने का आदेश दिया। फिर वह घोड़े पर सवार हुआ और लगामें ढीली कर धीरे-धीरे आगे बढ़ा तो भी सोचने की कोशिश करता रहा कि आखिर उस काकेशियन के लिये मेरे मन में दुश्मनी के ऐसे भाव क्यों जगे? सहसा ही उसका दिमाग साफ हो गया, और वह आशंका से काँप उठा—'हो सकता है कि लाल-मोर्चे के पिछले हिस्से में बगावत की आग भड़काने और हमें अपने रास्ते पर ले जाने के लिये कैडेटों ने इन पढ़े-लिखे लोगों को जान-बूझकर हमारे बीच छोड़ दिया हो!' फिर याद ने तुरन्त ही उसके निष्कर्ष के पक्ष में सबूत पेश कर दिया—'उसने अपनी रेजीमेंट का नाम नहीं बतलाया। उसने अपने को स्टाफ से जुड़ा बताया, लेकिन इधर तो कोई और स्टाफ पड़ता नहीं। फिर, कौन-सी ऐसी मुसीबत आई कि वह दुदोरेव्स्की-जैसे बिलकुल अलग-अलग गाँव में पहुंच गया? उफ, बात साफ हो गई। हमने अपने को आप मुसीबत के मुँह में झोंक दिया है। पढ़े-लिखे लोगों ने हमें जकड़ लिया है। इन आला-हुजूरों ने हमें अपने जाल में फँसा लिया है, हमारे पैरों में पगहा बाँध दिया है, और अब वे हमें अपनी गौं के लिये इस्तेमाल कर रहे हैं! किसी पर रत्ती-भर भी यकीन नहीं किया जा सकता···"

और, दोन पार करते ही उसने अपने घोड़े को पूरी रफ्तार से दुलकी दौड़ा दिया। अपनी काठी चरमराते हुए उसके अर्दली ने अपना घोड़ा उसके पीछे डाल दिया। आदमी शानदार फौजी और बहादुर कज्जाक था। ग्रिगोरी आग और पानी में अपने साथ के लिये ऐसे ही लोगों को चुनता था और जर्मनी की लड़ाई की कसौटी पर खरे उतरे ऐसे ही लोगों से घिरा रहता था।

सो, कभी का स्काउट, वह अर्दली रास्ते-भर चुप रहा। बस, दुलकी दौड़ाते-दौड़ाते उसने कभी-कभी सिगरेट-भर जलाई। फिर जैसे ही वे एक गांव में पहुंचे, उसने ग्रिगोरी से कहा—"अगर कोई खास जल्दी न हो तो कहीं पड़ाव डालकर रात काट ली जाये। घोड़े थकान से चूर हो गये हैं। उन्हें थोड़ा आराम मिल जायेगा।"

इस पर वे रात-भर के लिये एक गाँव में रुक गये। स्तेपी की हड्डी

जमा देने वाली ठंडक के बाद, दो कमरों वाला एक मकान उन्हें घर की तरह आरामदेह और सुखद लगा। भरक भी वहाँ खासी महसूस हुई। पर कच्ची मिट्टी के फर्श से बछड़े और बकरे के खारे पेशाब की बदबू आती रही और स्टोव से पातगोभी के पत्तों पर सेंकी रोटी की जलायंध उड़ती रही। ग्रिगोरी ने मकान-मालकिन, बूढ़ी कज्ज़ाक-औरत के सवालों के जवाब जैसे-तैसे, बचते-बचते दिये।

बूढ़ी, तीन बेटों के साथ-साथ, अपने पति को भी विद्रोह में भाग लेने के लिए विदा दे चुकी थी। आवाज़ उसकी गहरी और मर्दानी थी। सो, ग्रिगोरी से पहले-पहले मर्दे ढंग से यही बोली—"हो सकता है कि तुम फौजी-अफसर हो और हो सकता है कि तुम बेवकूफ-कज्ज़ाकों के कमांडर हो। मगर मुझ पर तुम्हारा कोई रोब नहीं चल सकता। मैं बूढ़ी हूँ, और तुम्हारी मां की उम्र की हूँ। मुझसे बातें करो, समझे? बैठे जम्हाई पर जम्हाई लेते चले जा रहे हो। मैं तो सोचती हूँ कि तुम औरत समझकर मुझसे बात नहीं करना चाहते। तुम्हारी यह लड़ाई है कि गुनाह है। मैं अपने तीन बेटों और अपने बुड्ढे को भी इस लड़ाई के नाम पर रुखसत कर चुकी हूँ···तुम मेरे बेटों पर हुक्म चलाते हो, लेकिन मैंने उन्हें पैदा किया, दूध पिलाया, पाला-पोसा और अपने दामन में ले-लेकर खेतों पर गई। इनमें से कोई भी काम मुँह का कौर नहीं रहा। तो, इस तरह अपनी नाक न फुलाओ, बल्कि बतलाओ मुझे कि क्या यह लड़ाई जल्दी ही खत्म हो जायेगी?"

"जल्दी ही खत्म हो जायेगी···पर, अब तुम्हें जाकर सो जाना चाहिये, बूढ़ी मां!"

'जल्दी ही खत्म हो जायेगी···मगर, कितनी जल्दी खत्म हो जायेगी?···मुझे सोने के लिये भेजने की कोशिश तुम न करो। यहाँ मालिक मैं हूँ, तुम नहीं। मुझे ज़रा बकरियों और मेमनों को देखने जाना है। हम हर दिन रात को उन्हें अहाते से अन्दर ले आते हैं···तो, ईस्टर तक लड़ाई खत्म हो जायेगी?"

"पहले लाल-फ़ौजियों को निकाल बाहर कर दें···पीछे उनसे सुलह कर लेंगे।"

"यह क्या कह रहे हो तुम ?" बुढ़िया ने सूजी हुई कलाइयों और काम और गठिया से टेढ़ी अँगुलियों वाले हाथ अपने हड्डे-घुटनों पर गिरा लिए और अपने सूखे हुए, भूरे होंठ कटुता से चबाने लगी। "ईश्वर के नाम पर जरा बतलाओ तो कि उन्होंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ? तुम उनसे किसलिए लड रहे हो ? लोग एकदम बौखला गये है। बिलकुल पागल हो गये है। बन्दूकें उठाकर लोगों को गोली से उड़ा देना और घोडों पर अकड-कर चलना, तुम हँसी-खेल समझते हो·· मगर, तुमने कभी हम माँओं की बात सोची है ? मारे तो हमारे बेटे जा रहे है, है न ? ···यह हो तुम और यह हैं तुम्हारी ये बेशकीमती लडाइयां।"

"लेकिन, हम क्या अपनी माँओं के बेटे नहीं हैं···हम कुछ कुतियों के बेटे है ?" ग्रिगोरी का अर्दली गुस्से से गुर्राया और औरत की बात पर बिलकुल आपे मे न रहा— "दुश्मन तो हमें गाजर-मूली की तरह काट रहा है, और तुम्हें हमारा घोडों पर अकडकर चलना दीखता है···बुढ़िया, तूने तो इतनी जिन्दगी देख ली है···तेरे तो बाल सफेद होने को आ गए हैं··· लेकिन तू बडबड़ाती जाएगी, और किसी को सोने तक नहीं देगी।"

"सोने नहीं देगी···सोने नही देगी···प्लेग के शिकार हो, बेवकूफ कहीं के ! तो, फिर पहले इस तरह बरसे क्यो थे ? पहले तो कुए की तरह गुमसुम बैठे रहे, और फिर एकाएक उबलने लगे !" बुढ़िया ने जवाब दिया।

' इसकी जीभ हमे सोने नहीं देगी, ग्रिगोरी पन्तेलेयेविच।" अर्दली ने निराशा से आह भरी। फिर उसने सिगरेट जलाने के लिए चकमक-पत्थर इतनी जोर से रगडा कि उससे चिनगारियां फूटने और उड़ने लगीं—"तू आदमी को बर्रे की तरह थका डालने वाली है, औरत ! मैं तो सोचता हूं कि अगर तेरे आदमी को गोली लग जाएगी तो उसे बड़ी ही खुशी होगी। कहेगा—'अल्लाह का लाख-लाख शुक्र···उस बूढी कंकाला से तो पीछा छूटा !"

ग्रिगोरी ने उनके बीच बरबस समझौता करा दिया। फिर, वह फर्श पर सोने को लेटा तो भेड़ की खाल की गरमी बड़ी मधुर लगी। इसी समय दरवाजा खड़का और ठंडी हवा के झोंके उसके पैर से आ टकराये। फिर एक मेमना उसके कानों के पास आकर 'मे-मे' करने लगा। फर्श पर जवान

बकरियों के पैर बजे और ग्रिगोरी की नाक में सूखी घास, भेड़ के दूध और पाले की ताजा महक आई, यानी ढोरों के अहाते की बू आई।

···वह कोई आधी रात के समय जागा और फिर आंखें खोले लेटा रहा। स्टोव में ओपली-राख के नीचे अंगारे धीमे-धीमे चमकते रहे। मेमने वहीं आस-पास एक-दूसरे से सटे बैठे रहे और उनके दांत बजाने और जब-तब नथुने फड़काने या छींकने की आवाज उसके कानों में आती रही। खिड़की से दूर का पूरा चांद झांकता रहा। चांदनी के पीले चौखटे में एक नन्हा-मुन्ना बकरी का बच्चा रह-रहकर पैर चलाता, उछलता-कूदता और गर्द उड़ाता रहा। पिलछरी-नीली रोशनी में उस घर में रात में भी दिन का-सा उजाला लगा। स्टोव की टांड पर शीशे का एक टुकड़ा चमका और एक कोने में देव-मूर्ति का चांदी का चौखटा अंधेरे में भी लौ दे उठा। ऐसे में ग्रिगोरी को फिर व्येशेन्स्काया, खोपर ज़िले और काकेशियन-लेफ्टिनेंट कर्नल का ध्यान हो आया। लेफ्टिनेंट का खयाल आते ही उसकी दिमागी-बनावट और उसका बोलने का तरीका सामने आया और एक चिन्ता-सी उसका मन कुरेदने लगी। इस बीच बकरी का बच्चा भेड़ की खाल के पास आया, बहुत देर तक बेवकूफी से भरी निगाहों से उसके पेट की तरफ देखता रहा और फिर हिम्मत कर उसने अपने पैर फैला दिए। ग्रिगोरी की बगल में लेटे अर्दली की हथेली पर धार-सी पड़ने लगी। अर्दली कराहा, जागा, हाथ पाजामे पर रगड़ने लगा और बुरी तरह सिर हिलाकर बोला—'भिगो दिया मुझे···ऐसी-तैसी में जाए! ···भाग यहां से!"··· उसने बकरी के बच्चे के माथे पर जोर का हाथ जमाया। बच्चा में-में करता भेड़ की खाल से उछला, ग्रिगोरी के पास पहुंचा और अपनी खुरदुरी नन्हीं जीभ से उसका हाथ चाटने लगा।

: ३६ :

तातारस्की से भाग खड़े होने के बाद मिलिशियामैनों के रूप में काम करते स्तॉकमैन, कोशेवोइ, इवान-अलेक्सेयेविच और कुछ दूसरे कज्जाकों ने अपना तार चौथी लाल-जाआमूर्स्की-रेजीमेंट से जोड़ लिया।

१६१८ के आरम्भ में, जर्मनी के मोर्चे से लौटने पर, यह रेजीमेंट

लाल-सेना की एक टुकड़ी में शामिल हो गया था और गृह-युद्ध के अलग-अलग मोर्चों पर अठारह महीनों तक लड़ने के दौरान उसने अपनी बुनियादी ताकतें बराबर बना रखी थीं। रेजीमेंट के पास साज-सामग्री बहुत ही अच्छी थी। उसके घोड़े, ट्रेनिंग के खयाल से, बहुत तैयार, साफ-सुथरे और तेज थे। रेजीमेंट का, लडने की क्षमता, ऊंचे चरित्र और हौसले के लिए बड़ा नाम था।

···विद्रोह आरम्भ हुआ तो जाग्रामूर्स्की-रेजीमेंट ने, पहली-मास्को-पैदल-रेजीमेंट की मदद से, बागियों का उस्त-मेदवेदित्सा की तरफ बढ़ना रोक दिया। फिर कुमक आ गई तो रेजीमेंट ने व्यवस्थित ढंग से च्रीवाया नदी के किनारे के उस्त-खोपर्स्काया क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। मार्च में विद्रोहियों ने उस्त-खोपर्स्काया ज़िले के कई गांव लेकर लाल-सेना की यूनिटों को येलान्स्काया से बाहर खदेड दिया। फिर सेनाओं के नये सन्तुलन के कारण मोर्चे की हालत कोई दो महीने तक एक-जैसी रही। मास्को-रेजीमेंट की एक बेटैलियन ने, उस्त-खोपर्स्काया के पश्चिमी किनारे पर फैलकर, एक तोपखाने की मदद से, दोन के किनारे का क्रूतोव्स्की गांव ले लिया। लाल-सेना का तोपखाना एक खलिहान में छिप गया और क्रूतोव्स्की से शुरू होने वाली, दोन-नदी के दाहिने किनारे की पहाड़ी की ऊंची चोटी से पैदल-सेना के हाथ मजबूत करता रहा। वह दायें किनारे की पहाडियों मे केन्द्रित विद्रोही सेनाओं पर हर दिन सुबह से शाम तक तोपों से गोले बरसाता रहा। बीच-बीच में अपनी तोपों के दहाने उसने दोन-पार के येलान्स्काया गांव की तरफ भी मोड़े। एक-दूसरे से सटे खड़े मकानों और अहातों के ऊपर, कहीं ऊंचाई और कहीं नीचाई पर, धुएं के छोटे-छोटे बादल मडराने लगे।

गोले जब-तब गांव मे आकर गिरे तो लोग और जानवर बौखलाकर सड़कों और गलियों मे इधर-उधर भागने-दौडने लगे। कभी-कभी वे कब्र-गाह के पार की बालू की वीरान पहाड़ियों की ओर टूटकर उमड़े तो आधी बर्फ से जमी मिट्टी आसमान में ऊपर तक उड़ी।

फिर, उस्त-खोपर्स्काया में कम्युनिस्टों और कामगारों की एक नई कम्पनी के बनाए जाने की खबर पाकर, १५ मार्च को स्तॉकमैन, इवान और

मीशा ने जाकर उसमें शामिल होने का इरादा किया। उन्होंने एक स्लेज किराये पर ली, और वे चल पड़े। स्लेज-चालक प्राचीन-धर्म माननेवाला एक कज्जाक था। उसकी लम्बी-चौड़ी दाढ़ी के बीच उसका बच्चों के चेहरों की तरह गुलाबी और साफ-सुथरा चेहरा ऐसा उभरता लगा कि उस पर नज़र पड़ते ही स्तॉकमैन तक के होंठों पर मुसकान दौड़ गई।

कज्जाक ग्रमी कमउम्र था, पर इसके बावजूद उसकी दाढ़ी खासी बड़ी और घुघराली थी। उसका गुलाबी मुंह तरबूज की फांक की तरह ताज़ा लगता था और उसके गालों के निचले हिस्से सुनहरे-से थे। चाहे घनी दाढ़ी के कारण हो और चाहे लाल चेहरे के कारण, पर उसकी खास तौर पर झलाझल आंखों में जैसे नीलम चमकता था।

ऐसे में मीशा पूरे रास्ते मन-ही-मन में कोई गीत गुनगुनाता रहा। इवान, अपने घुटनों पर अपनी राइफिल रखे स्लेज के पिछले हिस्से में बैठा, हिलता-डुलता रहा। पर, स्तॉकमैन ने स्लेज-चालक से बातें शुरू कर दीं। बोला—"तुम बिलकुल ठीक रहते हो, कॉमरेड ? कभी बीमार-सीमार तो नहीं पड़ते न ?"

स्वास्थ्य और शक्ति से दमकता व्यक्ति खिलकर मुसकराया—"नहीं ···प्रभु की बड़ी कृपा है···! फिर, किसी तरह की कोई बीमारी मुझे सताने भी क्यों लगी ? हमारे मजहब के लोगों में से सिगरेट कभी किसी ने हाथ से नहीं छुई। हम खालिस वोद्का पीते हैं और जिन्दगी-भर अच्छे गेहूं की रोटी खाते हैं। हमें बीमारी पूछ कहां से सकती है ?"

"तुम फौज में रहे हो कभी ?"

"कुछ दिनों रहा हूँ···कैडेट ले गए थे मुझे।"

"तो, तुम उनके साथ दोनेत्स के इलाके में क्यों नहीं चले गए ?"

"आप तो अजीब-अजीब सवाल पूछते हैं, कॉमरेड।" उसने घोड़े के बालों की बुनी हुई रासें नीचे धर दीं, दस्ताना हाथ से उतारा, मुंह पोंछा और इस तरह त्योरी चढ़ाई जैसे कि नाराज हो गया हो।—"मैं वहां भला क्यों चला जाता ? अगर वे मजबूर न करते तो मैं उनके साथ जाता ही नहीं। आपकी सरकार ठीक है, हालांकि आप सब थोड़े गलत रास्ते पर चले गए हैं।"

"यह कैसे ?" स्तॉकमैन ने एक सिगरेट रोल कर जलाई, पर जवाब के लिए उसे अब भी इन्तज़ार करना पड़ा।

"किसलिए जलाये डाल रहे हैं यह सब ?" कज्ज़ाक ने अपना चेहरा मोड़ते हुए कहा—"ज़रा देखिए कि चारों तरफ की वसन्ती-हवा कैसी साफ है और आप हैं कि इस बदबूदार तम्बाकू से अपने फेफड़े चौपट कर रहे हैं ···मैं बतलाता हूं कि आपने गलती कहां की है। आपने कज्ज़ाकों को चूसा है और ऐसी-ऐसी भूलें की है कि बस ! अगर आप ये भूलें न करते तो आपकी सरकार हमेशा चलती। फिर, यह कि आपके बीच बेवकूफ कितने ही है। यही वजह है कि लोगों ने आपके खिलाफ इस तरह सिर उठाया है।"

"हमने ऐसी-ऐसी भूले की है कि बस ! ···कौन-सी भूले की हैं ?"

"यह तो आप भी जानते हैं और मैं भी जानता हूं···आपने लोगों को गोलियों से उड़ाया है, आप लोगों को गोलियों से उड़ा रहे हैं। आज एक की पारी आती है तो कल दूसरे की। और, अपनी पारी का इन्तज़ार चुपचाप भला कौन कर सकता है ? गरदन हलालने को पास जाइए तो गर्दन तो बैल तक हिलाता है। मिसाल के लिए वहा वह एक गांव है बुकानोव्स्काया। मैं अपने चाबुक से जहा इशारा कर रहा हूं, वह गिरजा देख रहे हैं आप ? खैर, तो वहा एक कमीसार था···उसका नाम मालकिन था। उसने क्या लोगो के साथ इन्साफ किया ? मैं बतलाता हू आपको। वह लोगों को घेरकर गाव के बाहर विरायतो के बीच ले गया, उनके कलेजे बदन से अलग करके रख दिए, और उनके घर के लोगों को उन्हें दफनाने भी नही दिया। और, उनका गुनाह सिर्फ यह था कि वे अपनी जिन्दगी में कभी न कभी जज चुने गए थे। और, आप जानते है कि वे कैसे जज थे ? उनमे से एक सिर्फ अपना दस्तखत बना सकता था। दूसरा आदमी सिर्फ दावात मे अपनी अंगुलियाँ डुबा सकता था या क्रॉस बना सकता था। मगर, उनकी सबसे बड़ी खासियत यह थी कि उन सबकी दाढ़िया लम्बी थीं, मगर वे पतलून के आगे के बटन बन्द करना भूल जाते थे, क्योंकि बहुत ही बूढ़े थे। तबीयत से बिलकुल बच्चे थे। और, यह मालकिन दूसरों के जिन्दगियो के मामले इस तरह तय करता था, जैसे कि कोई खुदा हो।

एक दिन एक बूढ़ा अपनी घोड़ी को लगाम लगाने के लिए चौक के इस पार से उस पार जा रहा था, तो कुछ लड़कों ने पीछे से मजाक किया—'यह देखो, यह कमीसार बुला रहा है तुम्हें।' बूढ़े ने क्रॉस बनाया और कमीसार के मकान में घुसने से पहले अपनी टोपी उतार ली—'आपने बुलाया है मुझे?' जवाब में हँसी का ठहाका लगाते हुए कमीसार बोला—'नहीं, तुम्हें किसी ने नहीं बुलाया, मगर अब आ गए हो, तो जो इनाम दूसरों को मिलता है, तुम भी लेते जाओ···कॉमरेडो, इसे बाहर ले जाओ!' तो, लोगों ने उसे ले जाकर दीवार से सटाकर खड़ा कर दिया। फिर, घर पर बीबी इन्तजार करती रही, करती रही, मगर वह कभी वापिस नहीं लौटा। वह इस दुनिया से चला गया···इसी मालकिन ने एक दूसरे गांव के एक दूसरे आदमी को सड़क पर देखा। आवाज दी, पूछा—'किस गाव के हो? क्या नाम है तुम्हारा?' फिर गुर्राया—'तुम्हारी दाढ़ी है कि लोमड़ी की दुम। बिलकुल संत निकोलस लगते हो···हम तुम्हारा चूरन तैयार करेंगे।' उसने अपने आदमियों को हुक्म दिया—'ले जाओ इसे।' और, उन आदमियों ने उसे गोली से उड़ा दिया, सिर्फ इसलिए कि उसकी दाढ़ी लम्बी थी, और किसी कुघड़ी मे कमीसार की नजर उस पर पड़ गई थी···अब यह बतलाइये कि ऐसा करना लोगों के लिए शर्म की बात है या नहीं?"

इस आदमी के बोलना शुरू करते ही मीशा ने अपना गुनगुनाना बन्द कर दिया था। सो, अब उसकी बात खत्म हुई तो गुस्से से भरकर बोला—"तुमने दून की हांकी तो, मगर कुछ जमी नहीं।"

"आप कुछ उससे बेहतर झांककर दिखला दें। मेरी बातो को झूठ पीछे कहें, पहले इनकी सच्चाई का पता लगायें···यानी, बात उसके बाद मे करें, पहले नही!"

"तुम खुद जानते हो कि ये बातें बिलकुल सच है?"

"लोग चर्चा कर रहे थे।"

"लोग! लोग तो कहते है कि तुम चूजों को दुह सकते हो। पर, दुह सकते हो! उनके चू-चू ही नहीं होते। तुम तमाम झूठ बातें सुनते रहे हो, और तुम्हारी जबान औरतों की जबान की तरह चलती है।"

"पर, वे बूढ़े तो अमनपसन्द थे।"

"अमनपसन्द!" मीशा ने मज़ाक बनाया, "शायद तुम्हारे इन अमन-पसन्द बूढ़ों ने ही बगावत की आग भड़काने में लोगों को मदद दी। तुम्हारे यह जज अपने अहातों में मशीनगनें गाड़कर रख सकते थे, और तुम कहते हो कि उन्हें गोली से उड़ा दिया गया, क्योंकि उनकी दाढ़ी लम्बी थी या उन्होंने कभी कोई बात हँसी में कह दी थी। भला किसी ने तुम्हें गोली से क्यों नहीं उड़ा दिया? तुम्हारी दाढ़ी भी बूढ़े बकरे की दाढ़ी की तरह लम्बी है।"

"मैंने तो वह कहा जो सुना। कौन जाने, हो सकता है कि लोग झूठ बोलते हों। हो सकता है कि उन्होंने नई सरकार को किसी तरह से कोई नुकसान पहुंचाया हो।" वह तटस्थ-मन से बोला, उस बास्केट-स्लेज से कूदा और सड़क के किनारे-किनारे चलने लगा, तो निलछरी बर्फ पर उसके पैर फिसलने लगे। सूरज स्तेपी पर शान से सोना बरसाता रहा। चम-चम करते आसमान का नीलम दूर की, एक-दूसरे से सटी, पहाड़ियों और घाटियों को अपनी विशाल बाहों में भरता रहा। सरसराती हुई हवा दरवाज़े पर दस्तक देते बसन्त की सुगन्धियों से बसी सांसों का हलका-हलका पता देती रही। पूर्व में, दोन के किनारे की पहाड़ियों के टेढ़े-सीधे पसारे के उस पार, उस्त-खोपर्स्काया के ऊपर की पहाड़ी-चोटी धुंध से घिरकर बकाइनी लगती रही। क्षितिज के किनारे के उजले, घुंघराले बादलों की लहरदार चादर धरती के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैली रही।

ऐसे में चालक कूदकर स्लेज पर जा बैठा और आंखों में और सख्ती घोलकर फिर बोला—"मेरा बाबा अब भी जिन्दा हैं। लोग कहते हैं कि एक सौ आठ साल के हैं। सो, उनके बाबा ने यानी मेरे परबाबा ने उन्हें बतलाया था कि एक बार ज़ार-प्योत्र ने अपने एक शाहज़ादे को हमारे ऊपरी दोन के इलाके में भेजा था। उसका नाम दिल्लनोरुकोव या दोलगोरुकोव था। तो, यह शाहज़ादे साहब सिपाहियों को लेकर वोरोनेज़ से आये और उन्होंने तमाम कज़्ज़ाक-बस्तियों को बरबाद करके छोड़ दिया, क्योंकि वहाँ के लोगों ने पैट्रिआर्क-निकोन का शैतानियत से भरा मज़हब मानने और ज़ार की खिदमत करने से इन्कार किया। सिपाहियों ने कज़्ज़ाकों को पकड़ा, उनकी नाकें उड़ा दीं, कुछ को फांसी दे दी और बाकी को बजरों में

बैठाकर दोन की लहरों पर बहा दिया।"

"तुम यह सब हमें क्यों सुना रहे हो आखिर?" मीशा ने झटके से पूछा।

"इसलिए कह रहा हूँ कि शाहजादे दिलननोरकोव को भी जार ने ऐसा कुछ करने का हक तो नहीं दिया था···और, बुकानोव्स्काया का हमारा यह कमीसार भी कुछ ऐसा ही था। एक बार बुकानोव्स्काया के एक जलसे में चीखा—"सूअर के बच्चो, मैं तुम लोगों के दिमाग से कज्जाकपन झाड़-कर रख दूँगा···तुम्हें ऐसा मजा चखाऊँगा कि मेरा नाम याद रखो···" लेकिन क्या सोवियत-सरकार ने उसे ऐसा कोई हक दिया था? बात सारी यह है। उसे कोई हुक्म नहीं था कि ऐसे काम करे या सभी कज्जाकों को एक ही डंडे से हाके। कज्जाकों-कज्जाकों में भी फर्क होता है, आप तो जानते ही हैं।"

स्तॉकमैन के गालों की खाल हिली। बोला—"मैं तुम्हारी सुन चुका। अब तुम मेरी सुनो।"

चालक बोला—"हो सकता है कि ठीक-ठीक न जानने के कारण मैंने कुछ ऐसा कह दिया हो जो सच न हो। तो, उसके लिए मुझे माफ कर दीजिये।"

"सुनो···सुनो···तुमने कमीसार के बारे में अभी-अभी जो कुछ कहा वह तो बेशक ठीक नहीं लगा। लेकिन, मैं पता चलाऊँगा। अगर तुम्हारी बात सही निकलेगी और मालूम होगा कि उसने कज्जाकों के साथ सचमुच बुरा बरताव किया है तो हम उसे यों ही नहीं छोड़ देंगे।"

"क्या पता!"

"क्या पता की बात नहीं···इसे सच मानो। यह बतलाओ कि लाल-फौजी जब तुम्हारे गांव में पहुँचे थे तो उन्होंने अपने ही एक साथी को गोली मार दी थी या नहीं, क्योंकि उसने किसी कज्जाक-औरत का कुछ चुरा लिया था?···मैं नहीं जानता, मैंने तो तुम्हारे गांव में ही यह बात सुनी है।"

"बात ठीक है। वह आदमी तो उस औरत के बक्से की हर चीज लूट ले गया था···सही है···ऐसा हुआ था···यह सही है कि मामला बहुत दबाकर

रखा गया मगर यह भी सच है कि उसके साथियो ने उसे खलिहान के पीछे ले जाकर गोली मार दी। बाद में हम आपस मे यह सोचते रहे कि इस आदमी को दफनाया कहाँ जाए! कुछ ने कब्रगाह का नाम लिया मगर कुछ ने कहा कि जगह नापाक हो जाएगी। आखिर में जहाँ गोली मारी गई थी, वही उसे दफना दिया गया।"

"यानी ऐसी एक मिसाल है तुम्हारे सामने ?' स्तॉकमैन ने जल्दी-जल्दी सिगरेट रोल की।

"हाँ, है···इस बात से मैं कहाँ इन्कार करता हूँ।" आदमी ने सहमति प्रकट की।

"तब तुम यह क्यो नही समझते कि अगर इलज़ाम सही साबित हो जाएगा तो, हम उस कमीसार को भी वाजिब सज़ा देंगे ?"

"लेकिन कॉमरेड प्यारे, हो सकता है कि उसके ऊपर कोई न रहा हो! आदमी वह फौजी होने पर भी था तो कमीसार···"

"इसीलिए तो उसके मामले में और भी ज्यादा सख्ती बरती जाएगी, समझे ? सोवियत-सरकार सिर्फ अपने दुश्मनों के साथ मार-काट से काम लेती है। लेकिन अगर हमारी सरकार का कोई आदमी अपने मेहनतकशों को गलत ढंग से सताता मिलता है तो बहुत ही बेरहमी से हम उसके मिजाज ठिकाने लगा देते हैं।"

स्तेपी मे मार्च की दोपहरी के सन्नाटे का तार सिर्फ स्लेज की आवाज और घोड़े की टापों से टूटता रहा कि अचानक तोप की गरज कानों में पड़ी। क्रुतोव्स्को-गाव के तोपखाने ने दोन के बायें किनारे पर गोले बरसाना शुरु कर दिया था।

स्लेज की बातचीत खत्म हो गई। तोप के अजनबी धड़ाके ने वसन्त के आरम्भ की नीद से भरी सुस्ती से ऊघते स्तेपी का पीला जादू तोड़ दिया। घोड़ों तक के कदम और चुस्ती से पड़ने लगे। उन्होंने अपने कान खड़े कर लिए।

स्लेज हेतमान की चौडी सड़क पर मुड़ी और पीली रेत पर गलती. बर्फ के चमचमाते चप्पो से भरे दोन-पार के लम्बे-चौड़े खेत, सरपत के ·· द्वीप और देवदारु के जगल नज़र आने लगे। उस्त-खोपर्स्काया

पहुँचने पर स्लेज-चालक ने क्रांतिकारी समिति वाले घर के सामने घोड़ों की रासें खींचीं। इसकी बगल में ही मास्को-रेजीमेंट का प्रधान-कार्यालय था। स्तॉकर्मन ने अपनी जेब खखोड़ी, चालीस रूबल का केरेन्स्की-नोट निकाला और चालक को दे दिया। आदमी मुस्कराया तो उसके नम गलमुच्छों के नीचे पीले दाँत चमके। वह थोड़ा परेशान हुआ और हिचकचाया—"अरे, कॉमरेड···यह तो बहुत है···इतना क्यों दे रहे हो?"

"अपने घोड़ों की मेहनत के नाम पर इस नोट को जेब में रखो और सरकार के मामले में अपना मन साफ कर लो। याद रखो कि हम मेहनतकशों और किसानों की सरकार के हिमायती हैं। यह तो हमारे दुश्मन यानी कुलक, अतामान और फौजी अफसर हैं जिन्होंने तुम सबको हमारे खिलाफ उभारा है···बगावत की खास वजह वे ही हैं। दूसरी तरफ अगर हमारे ही साथ का कोई आदमी ऐसा है जिसने हमसे हमदर्दी रखने वाले और क्रांति में मदद देनेवाले किसी भी मेहनतकश को गैरवाजिब तौर पर सताया है, तो हम उससे हिसाब-किताब चुकता करने के रास्ते निकालेंगे।"

"कॉमरेड, आपने सुना तो होगा कि ईश्वर बहुत ऊंचा है और जार बहुत दूर है। सो, आपके इस जार तक भी दूरी काफी है। कहते हैं कि न तगड़े से झगड़े और न अमीर पर फैसला दे। तो, आप तो तगड़े भी हैं और अमीर भी हैं।" उसने दांत निकाले—"चालीस रूबल आप इस तरह फेंक रहे हैं! पांच रूबल काफी होते···खैर, दे ही रहे हैं तो शुक्रिया!"

"यह रकम तुम्हें इन्होंने तुम्हारी बातों के लिये दी है"—मीशा-कोशेवोइ मुसकराया और उसने पतलून से लैस अपने पैर हिलाये—"हां, और थोड़ी कीमत इन्होंने तुम्हारी दाढ़ी की भी अदा की है। तुम्हें पता है किसको लाये हो तुम, बुद्धू कहीं के! तुम लाल-सेना के जनरल को लाये हो।"

"हूँ!"

"हां, अब 'हूँ' करो। तुम भी बाकी लोगों जैसे ही हो···ऐसी-तैसी में जाओ!···थोड़ा मिलता तो ज़िले-भर में चिल्लाते घूमते—'मैं कॉमरेडों को अपनी स्लेज में ले गया और उन्होंने सिर्फ पांच रूबल मुझे

दिये ?' बारह महीने बाद भी तुम इस बात को लेकर मन मैला करते। और, जब तुम्हें ज्यादा मिल गया तो और ढंग से चिल्ला-चिल्लाकर आसमान सिर पर उठा रहे हो—'कितने अमीर है यह लोग ! चालीस रूबल फेंक दिये। रूबल गिने तक नहीं, इतनी रकम थी पास में !' मैं तो तुम्हें कुछ भी न देता···तुम्हे तो सब्र न इस तरह होगा, न उस तरह होगा···खैर, अलविदा, लम्बी दाढ़ी !"

मीशा का जोरदार भाषण समाप्त हुआ तो इवान अलेक्सेयेविच मुसकराया। मास्को-रेजीमेंट के प्रधान-कार्यालय वाले मकान के अहाते से एक लाल-गार्ड अपना घोड़ा दौड़ाता आया और लगाम खींचते हुए चिल्लाया—"स्लेज कहा से आई है ?"

'क्यों, क्या बात है ?" स्तॉकमैन ने पूछा।

"हमें लड़ाई का सामान कुतोव्स्की पहुचाना है···"

"लेकिन, यह स्लेज तुम्हें नहीं मिल सकती, कॉमरेड !"

"और, तुम कौन हो ?" कमउम्र के उस रेड-गार्ड ने स्तॉकमैन की ओर अपना घोड़ा बढ़ाया।

"हम जाआमुर्स्की-रेजीमेंट से आए है···यह स्लेज अपने काम के लिये इस तरह न लो।"

"ठीक···चला जाए यह आदमी···चलो, बढाओ अपनी गाड़ी, बूढे बाबा !"

: ४० :

स्तॉकमैन ने पूछताछ की तो मालूम हुआ कि उस्त-खोपर्स्काया में नहीं, बल्कि बुकानोव्स्काया मे पार्टीजानों की एक कम्पनी बनाई जा रही है, और स्लेज-चालक ने जिस कमीसार मालकिन का जिक्र किया था, वही उसके लिए सारी भरती कर रहा है। लाल-सैनिकों की सहायता से येलान्स्काया, बुकानोव्स्काया और दूसरी जिलो के कम्युनिस्टों और सोवियत-कार्यकर्ताओं ने एक काफी जोरदार लडाकू युनिट बना ली थी। इस युनिट के पास घुड़सवार-गश्ती-टुकड़ी की दी हुई दो सौ संगीनें और ‥६ दर्जन तलवारें थीं। कम्पनी फिलहाल बुकानोव्स्काया मे थी और

येलान्का और जिमोवनाया-नदियों के ऊपरी हिस्सों से आगे बढ़ने की कोशिश करने वाले विद्रोहियों को मास्को-रेजीमेंट की एक टुकड़ी की सहायता से रोके हुए थी।

मास्को-रेजीमेंट का स्टाफ-चीफ पहले का एक नियमित फौजी-अफसर था। आदमी कुछ सताया हुआ-सा लगता था। चेहरे पर उदासी रहती थी। सो, उससे और मास्को के एक कामगार, राजनीतिक-कमीसार से बातें करने के बाद, स्तॉकमैन ने उस्त-खोपर्स्कॉया में बने रहने और रेजीमेंट की दूसरी बेटैलियन में शामिल हो जाने का फैसला किया। उसने टेलीफोन के तारों और दूसरे फौजी-सामानों से भरे, साफ-सुथरे, छोटे-से कमरे में राजनीतिक-कमीसार से बातें कीं।

"देखिये, कॉमरेड!" अपेंडिसाइटिस के तेज़ दौरे से परेशान, पीले चेहरे वाला कमीसार जल्दी-जल्दी बोला—'यहां की हालत काफी उलझी हुई है। *हमारे यहां के फौजी ज्यादातर मास्को और रयाज़न के* हैं। थोड़े-से लोग निज़्नी-नोवगोरद के हैं। ठोस लोग हैं। आमतौर पर कामगार हैं। लेकिन, चौदहवीं रेजीमेंट का एक स्क्वैड्रन भी यहां आया था। पर, वह किसी काम का साबित नहीं हुआ। हमें उसे उस्त-खोपर्स्कॉया वापिस भेज देना पड़ा। आप यहां रहें। आपके लिये काम यहां बहुत है। हमें तो आबादी के लोगों के बीच रहना और उन्हें समझदार बनाना है। आप तो जानते हैं कि कज़्ज़ाक कैसे होते हैं। अपना कान आपको तेज़ मगर हमेशा ही खुला रखना होगा।"

"आपको मुझे यह सब बतलाने की ज़रूरत नहीं।" स्तॉकमैन ने उत्तर दिया और सरक्षकों के-से उसके लहजे पर उसे हँसी आ गई। उसने उस आदमी की बीमारी का संकेत देती आंखों की पीली सफेदी पर एक निगाह डाली और पूछा—"लेकिन, ज़रा यह बतलाइये कि वुकानोव्स्काया का यह कमीसार कौन है?"

आदमी ने अपनी छोटी, भूरी मूँछों पर हाथ फेरा और धीरे-धीरे बोला—"एक ज़माना था कि उसने बहुत ज्यादती की थी। आदमी अच्छा है, पर आज की राजनीति और हालत को अच्छी तरह नहीं समझता··· जो चैलियों के कटकर हवा में इधर-उधर उड़ने से डरता है, वह लकड़ी

नही काट पाता···वह जिले की सारी मर्दानी-आबादी को इस वक्त इस के बीच के हिस्से में भेजे दे रहा है···आप जाइये और मैनेजर से मिल लीजिये···वह आपका नाम भी फेहरिस्त पर चढा लेगा।" कमीसार ने रुई भरे चिकने पाजामे पर हथेली जमाते हुए दर्द से त्योरी चढाई।

अगले दिन सबेरे दूसरी बेटेलियन को मोर्चे पर जाने का आदेश दे दिया गया, और एक घटे के अन्दर वह दुनीव्स्की-गांव की ओर बढने लगी। स्तॉकमैन, कोशेवोइ और इवान-अलेक्सेयेविच भी उसके साथ भेज दिए गए। दोन-पार कुतोव्स्की से एक घुड़सवार-गश्ती-टुकड़ी रवाना कर दी गई और बेटेलियन की कतार उसके पीछे-पीछे लोद से नहाई सड़क पर बढ़ने लगी। नदी की बर्फ में जहाँ-तहाँ रुजी, नीले सूराख नजर आए। पीछे की पहाडी से तोपें येलान्स्काया-गांव के पार नजर आते चिनारों के झुरमुट की दिशा में गोले बरसाती रही। बेटेलियन को हुक्म था कि कज्जाकों द्वारा खाली छोड दिये गए येलान्स्काया गांव से गुजरे और बुकोनोव्स्काया से आगे बढती पहली बेटेलियन के साथ जिला पार करे।

दूसरी बेटेलियन का रास्ता बेजबोरोदोव की दिशा में था। सो, जासूसी घुड़सवार-दस्ता जल्दी ही यह खबर लाया कि बेजबोरोदोव में दुश्मन की फौजें नहीं हैं, पर ऐन मौके तक दोनों ओर से राइफिलें गोलियों से सवाल-जवाब कर रही है। फिर तोप के गोले सिरों के ऊपर नाचने लगे और पास ही हथगोलों के धडाकों से धरती कांपती-सी लगी। कतार के पीछे दोन की बर्फ चटखती और टूटती रही। ऐसे में स्तॉकमैन और मीशा के साथ मार्च करते इवान-अलेक्सेयेविच ने पीछे मुड़कर देखा। बोला—

"लगता है जैसे कि पानी बढ़ा आ रहा है।"

"ऐसे वक्त पर दोन पार करना समझ की बात नही होगी। देखो न, बर्फ टूट रही है।" मीशा गुस्से से गुर्राया। पैदल-सेना के कदम से कदम मिलाकर चलने का अभ्यास उसे हो नही पा रहा था।

स्तॉकमैन ने सामने के फौजियों और एक लय-तान के साथ लहराती धुआं-धुआं-सी, नीली संगीनोंवाली राइफिलों की नलियों पर नज़र जमाई। फिर चारों तरफ निगाह दौडाई तो उसे दीख पड़े गम्भीर, या अन्यमनस्क, . . इस पर भी एक-दूसरे से बहुत ही ज्यादा मिलते फौजियों के चेहरे

पांच पहलों वाले सितारों वाली भूरी टोपियों की लहरें, और उम्र और इस्तेमाल से पीले भूरे बरानकोट। उसने सुनी भारी कदमों की धमक, और लोगों की भुनभुनाहट और खामने की आवाज़। उसकी नाक में आई गीले बूटों, तम्बाकू और चमड़े के फीतों की बू। उसने अपनी आंखें मूंद लीं और इन जवानों के प्रति उसके मन में सहज-स्नेह उमड़ आया। अभी कल तक तो उसने इनकी शक्लें तक न देखी थीं !—वह कुतूहल से सोचने लगा—'ऐसा महसूस करना तो बुरा नहीं है, पर एकाएक मुझे इनसे इतनी मोहब्बत आखिर कैसे हो गई है ? वैसे तो वह आग एक ही है जो हम सबको आगे बढ़ा रही है, पर इस मोहब्बत का राज़ इससे कुछ ज्यादा है। शायद हम सबकी मंजिल एक है, शायद मौत और खतरे का ख्याल हम सबको एक-सा है···यह लोग मुझे कितने प्यारे लगने हैं···' उसकी आंखें मुसकराने लगीं···'कहीं मैं बूढ़ा तो नहीं हो रहा ?'

उसने पिता-सुलभ स्नेह से अपने ठीक सामने मार्च करते फौजी की पीठ और कॉलर और टोपी के बीच चमकती, जवानी के प्रमाण-सी लाल, मोटी गर्दन की पट्टी को एकटक देखा। फिर अपने पड़ोसी की ओर मुड़ा। पड़ोसी की दाढ़ी-मूंछ साफ थी। उसके भूरे गालों पर लाली थी और खूबसूरत मुंह से दृढ़ता टपकती थी। माथे पर दर्दभरे बल थे और आंखों के चारों ओर झुर्रियों का जाल था।

स्तॉकमैन का उससे बात करने को जी हुआ। पूछा—"फौज में बहुत वक्त से हो ?"

आदमी की हल्की भूरी आंखों ने, बिना किसी उत्साह के, उसे सिर से पैर तक देखा और दांत भींचे ही भींचे बोला—"१९१८ से हूं।"

इस नपे-तुले जवाब से स्तॉकमैन की हिम्मत नहीं टूटी। उसने आगे पूछा—"कहां के हो ?"

"घर के किसी आदमी की तलाश है, डैड ?"

"कोई मिल जाए तो बड़ी खुशी होगी।"

"मैं मास्को का हूं।"

"कामगार हो ?'

"···ह···हां !"

स्तॉकमैन ने आदमी के हाथों के निशानों पर एक निगाह डाली तो वह उसे लोहे का काम करने वाला लगा।

"धातु का काम करते रहे हो?"

भूरी आंखों की नजर फिर स्तॉकमैन के चेहरे से गुजरी—"मैं खराद का काम करता रहा हूं—क्या आप भी यही काम करते रहे हैं?" और, सख्ती से भरी आंखें उछाह से चमकने लगीं।

"मैं ताला-लोहार रहा हूं···पर, तुम हर वक्त अपनी आंखें सिकोड़े क्यों रहते हो?"

"बूट पैर दाब रहे हैं। कड़े पड़ गये हैं। कल रात भीग गए थे।"

"वैसे इसकी वजह तुम्हारे मन के अन्दर का डर तो नहीं?" स्तॉकमैन मुसकराया।

"किस बात का डर?"

"इस बात का कि हम लड़ाई पर जा रहे हैं···"

"मैं कम्युनिस्ट हूं।"

"और, क्या कम्युनिस्ट मौत से नहीं डरते?" मीशा भी इस बातचीत में शामिल हो गया।

आदमी ने एक क्षण सोचने के बाद जवाब दिया—"साफ है कि आप अब तक इन मामलों के लिए बिलकुल नये हैं, मेरे भाई। मुझे डरना नहीं चाहिए। मैंने अपने-आपको हुक्म दे दिया है। समझे? इसलिए जब तक कि आपके अपने हाथ साफ न हों, मुझे अन्दर से थाहने की कोशिश न कीजिए। मैं जानता हूं कि हम क्यों लड़ रहे हैं और किससे लड़ रहे हैं। साथ ही मुझे यह भी पता है कि जीत हमारी होगी। और, यही है काम की बात।" सहसा ही उसे कुछ याद हो आया तो वह मुसकरा दिया, और फिर स्तॉकमैन पर निगाह डालते हुए कह चला—"पिछले साल मैं एक टुकड़ी के साथ उक्रइन में था। हम हर वक्त हर तरफ से दबे जा रहे थे। हमारे कितने ही साथी खेत रहे थे और हमें अपने साथ के जख्मियों तक को छोड़ देना पड़ा था। ऐसे में हम फिर घेर लिए गए। हमे हुक्म दिया गया कि रात को हम में से कोई श्वेत-गार्दों की कतारें भेदता पीछे तक पहुँचे और नदी के ऊपर का पुल उड़ा दे, ताकि बख्तरबन्द गाड़ी उसके ऊपर से गुजर न सके। फिर

गया था, इसके लिए वॉलंटियर बुलाये गए, लेकिन वे मिले ही नहीं। हमारे बीच के इने-गिने कम्युनिस्टों ने नाम निकाले जाने का सुझाव दिया। लेकिन मैंने सारे सवालों को सोचा-समझा और अपना नाम दे दिया। इसके बाद सुरंगें, एक धीमा फ्यूज और दियासलाई लेकर मैं अपने साथियों से रुखसत हुआ। रात अंधेरी और धुंध से नहाई लगी। दो सौ कदम चलने के बाद मैंने खड़ी-राई के खेत और फिर एक नाला रेंगकर पार किया। मुझे याद है कि इसी वक्त एक चिड़िया मेरी नाक के ऐन नीचे तक पर फड़फड़ाती चली आई। मैंने कोई बीस कदम दूर की सतरी की चौकी रेंगकर पार की, और जैसे-तैसे पुल के पास पहुँच गया। मशीन-गनों से लैस एक फौजी-टुकड़ी पुल की रखवाली करती मिली। सही वक्त के इन्तजार में मैं कोई दो घंटे तक वहां लेटा रहा। फिर, मैंने सुरंग गाड़ी और कोट के पल्ले की आड़ में दियासलाई जलाने लगा। पर, तीलियां जलीं नहीं, क्योंकि दियासलाई मेरे सीने वाली जेब में रही थी और मेरे पेट के बल रेंगते समय गीली हो गई थी। इस पर मैं सचमुच डर गया। जल्दी ही तड़का होने के ख्याल से मन दहला। मेरा हाथ कांपने लगा और पसीना बह-बहकर आंखों में आने लगा। मैंने सोचा—'सारा खेल खतम समझो!' फिर मैंने अपने-आप से कहा—'अगर पुल नहीं उड़ा पाऊंगा तो अपने-आपको गोली से उड़ा लूंगा।' मगर, मैं कोशिश करता रहा, करता रहा कि आखिरकार दियासलाई जल गई और मैंने फ्यूज के तार में आग छुआ दी। मैं खुद बर्फ के अम्बार के पीछे छिप गया। इसके बाद धड़ाका हुआ तो मजा आ गया। दो मशीनगनें सड़ाघ आग उगलने लगी और घुड़सवार घोड़े दौड़ाते मेरी बगल से निकल गये उस रात में वे मुझे खोजने की कोशिश करते तो उन्हें दांतों पसीने आ जाते। दूसरी तरफ, मैं बर्फ के पर्दे के पीछे छिपता-छिपता नाज के बीच जा पहुँचा। यहाँ पहुँचने पर मेरे हाथ-पैरों की पूरी ताकत ने जवाब दे दिया और अपनी जगह से हिल पाना भी मेरे लिए दुश्वार हो गया। मैं पड़ा रहा। जब मैं पुल की तरफ बढ़ा था, तो बहुत खुश था, पर अब लौटते वक्त बात ही दूसरी थी। मैं वहां पड़ा तो जैसे बीमार कुत्ते की तरह निढाल हो गया···वैसे आखिर को तो मैं लौट ही आया। दूसरे दिन

मैंने अपने साथियों को दियासलाई के मामले में अपनी बदकिस्मती की कहानी सुनाई, तो एक ने पूछा—'लेकिन, तुमने अपने सिगरेट-लाइटर से फायदा क्यों नहीं उठाया ? खो गया था क्या ?' अब जो मैंने हाथ डाला तो सिगरेट-लाइटर जेब में मिला, और पहली बार खटका दबाते ही जल गया।"

इसी समय किनारों के दूर के एक द्वीप से दो कौवे, ऊंचे आसमान में हवा की लहरों पर लहराते नजर आए। हवा उन्हें कूद-कूदकर आगे उछालने लगी। होते-होते वे फौजी पंक्ति में कोई दो सौ गज दूर रह गए कि एक घंटे का सन्नाटा तोड़कर, मुनोव्स्की पहाड़ी पर जमी तोपें फिर आग उगलने लगीं और एक गोला उधर से गरजता हुआ आया। फिर उनकी चीख बिखरने की स्थिति को पहुँची कि उन दोनों में से एक कौआ अधड़ में फूस के तिनके की तरह ऐंठने लगा और अपने को बचाने की कोशिश में पंख फैलाते हुए, नाचता हुआ, इस तरह धरती पर आ गिरा, जैसे कि कोई बड़ी काली पत्ती हो।

"उड़ते-उड़ते मरा"—स्तॉकमैन के पीछे मार्च करते एक लाल-सैनिक ने सराहना से भरकर कहा—"मौत उसे किस तरह नचाती रही ?"

कम्पनी-कमांडर एक ऊँची कुम्मैत घोड़ी पर उधर से पिघली हुई बर्फ बिखराता गुजरा—"एक कतार में····"

इसके बाद मशीनगनों से लदी तीन स्लेजें तेजी से निकलीं तो बाहर की पंक्ति में चुपचाप मार्च करता इवान अलेक्सेयेविच बर्फ से नहा उठा। इस बीच दूसरी स्लेज से एक मशीनगनर नीचे आ गिरा तो लाल-सैनिक हँसी से ठहाका लगाने लगे। इस पर स्लेज-ड्राइवर ने जी भरकर कोसा और अपने घोड़े घुमाए कि मशीनगनर कूदकर स्लेज पर सवार हो जाय।

· ४१

विद्रोही-सेनाओं के पहले डिविजन ने कारगिन्स्काया को लाल-सैनिकों के विरोध की अपनी कार्यवाहियों का केन्द्र बनाया। ग्रिगोरी ने युद्ध की दृष्टि से इस जगह का महत्व समझा और इसे किसी भी कीमत पर अपने हाथों बनाये रखने का फैसला किया।

चिर नदी के बाएँ किनारे पर पहाड़ियों का एक सिलसिला था, और इसकी शानदार ऊंचाइयों में कज्ज़ाक अपनी पंक्तियों की रक्षा बहुत ही अच्छे ढंग से कर सकते थे। नीचे, नदी के दूर के किनारे पर कारगिन्स्काया था। उसके पार कई-कई वर्स्ट तक स्तेपी के मैदान फैले हुए थे। बीच-बीच में जहाँ-तहाँ दर्रे और नाले थे। ग्रिगोरी ने अपनी तीन तोपोंवाली बैटरी के लिए जगह खुद चुनी थी। यह जगह शाहबलूतों से ढँके एक टीले से बहुत दूर न थी और यहाँ से सब-कुछ बहुत ही साफ़-साफ़ नज़र आता था।

कारगिन्स्काया के आस-पास लड़ाई लगभग हर दिन होती थी। लाल-सैनिक प्रायः दो तरफ़ से हमले करते—एक तो दक्षिण के स्तेपी मैदानों की तरफ़ से दूसरे पूर्व में चिर के किनारे से। कज्ज़ाक-पंक्तियाँ छोटे नगर के पार कोई दो सौ गज तक फैली रहतीं और जब-तब गोलियाँ बरसातीं। लाल-सेनाओं की गोलाबारी उन्हें सदा ही पीछे हटने को मजबूर कर देती। वे कारगिन्स्काया के बीच से गुज़रतीं, सकरे नालों के सीधे ढालों वाले तल में उतरतीं और पहाड़ियों में पहुँच जातीं। लेकिन दुश्मन उन्हें इसके आगे न खदेड़ पाता। उसकी ताक़त नाकाफ़ी हो उठती। बात यह है कि घुड़सवार सेना की कमी के कारण वह खुद आगे न बढ़ पाता। अगर घुड़सवार सेना होती तो कज्ज़ाकों को बाहर से घेरकर उन्हें मजबूरन पीछे ठेल देती, और नगर के बाहर यों ही समय बिताती पैदल सेना आगे की फ़ौजी कार्यवाहियों के लिए आज़ाद हो जाती। लेकिन घुड़सवार-सेना का काम तो इस समय पैदल सेना न कर सकती, क्योंकि उस स्थिति में कज्ज़ाक घुड़सवार इस पर टूट पड़ते और उसे तार-तार करके रख देते।

फिर यह कि विद्रोही-कज्ज़ाक ज़िले को अच्छी तरह जानते थे और मौक़ा मिलते ही उन्होंने हर बार घुड़सवार-सेना रवाना कर दी थी। यह सेना दुश्मन पर पीछे और किनारों से हमला करने के लिए दर्रों के किनारे-किनारे चुपचाप बढ़ती। उससे लाल-सेनाओं को ख़तरा बराबर बना रहता और उनका आगे बढ़ना वह हर बार नामुमकिन कर देती।

ग्रिगोरी ने होने-हवाने दुश्मन को चूर-चूर कर देने की योजना बना डाली। तय हुआ कि एक ओर तो कज्ज़ाक झूठ-मूठ पीछे हटें और लाल-

सेनाओं को कारगिन्स्काया की ओर खींचें, दूसरी ओर कज्जाक घुड़सवार सेना घाटियों के बीच से किनारे-किनारे बढ़े और उन पर पीछे से हमला बोल दे। यानी योजना के पूरे ब्यौरे तैयार किये गए और हमले से पहली शाम को एक कान्फ्रेंस में अलग-अलग टुकड़ियों के कमांडरों को पूरे-पूरे आदेश दे दिए गए। कहा गया कि बाहर-बाहर बढ़ने की कार्यवाही तड़के की जाएगी क्योंकि उस समय दुश्मन की निगाहों से बचना आसान होगा··· हर चीज क, ख, ग की तरह आसान लगी। ग्रिगोरी ने हर परिस्थिति को तोलकर देखा और अप्रत्याशित-रूप से योजना के आड़े आने वाली हर चीज़ की काट निकाल ली। इसके बाद उसने घर की बनी दो गिलास वोद्का चढ़ाई, कपड़े पहने ही पहने बिस्तर पर पड़ रहा, और गीला बरानकोट अपने सिर पर डालकर इस तरह सो गया जैसे कि मुर्दा हो।

लाल-सेना ने अगले दिन सुबह कारगिन्स्काया पर अधिकार कर लिया। सेना के लोगों को अपने पीछे-पीछे खींचने के लिए कज्जाक पैदल सेना के कुछ फौजी सड़कों से होते हुए पहाड़ियों की ओर भागे। स्लेजों पर जमी दो मशीनगनें उन पर गोलियों की बौछार करने लगीं। लाल-सैनिक धीरे-धीरे उस छोटे-से नगर-भर में फैल गए।

ग्रिगोरी ने बैटरी की बगल के ढूह पर चढ़कर लाल-पैदल-सेना को कारगिन्स्काया में घुसते और चिर नदी के पास जमा होते देखा।

तय यह हुआ था कि बैटरी की पहली तोप के दगते ही पहाड़ियों की तलहटी के बगीचों में पड़ी दो कज्जाक बैटेलियनें हमला कर देंगी और घुड़सवार-फौज पीछे से टूट पड़ेगी। सो, बैटरी के कमांडर ने कारगिन्स्काया में उछलती मशीनगनवाली स्लेज पर पहला गोला दागने का हुक्म देने की बात सोची ही थी कि इसी समय पर्यवेक्षक ने आकर बतलाया कि कोई तीन वर्स्ट की दूरी पर, लाल-सेना की एक टुकड़ी, एक बैटरी के साथ, पूर्व की ओर से पुल पर बढ़ रही है।

"मॉर्टर-तोप से दुश्मन पर गोले बरसाओ!" ग्रिगोरी ने दूरबीन से आँखें हटाए बिना ही सलाह दी।

तोपची ने मॉर्टर तुरन्त ही निशाने पर लाकर खड़ी की और तोप

भयानक ढंग से गरजी। फिर लाल-बैटरी की दूसरी तोप पास पहुंची कि उधर के पहले गोले ने ही पुल के सिरे पर चोट की। गोले से तोपगाड़ी के घोड़े तुड़ा-निकले और बाद में पता लगा कि छः में से सिर्फ एक घोड़ा चोटीला नहीं हुआ। गोले के एक टुकड़े से स्लेज-चालक का सिर धड़ से अलग होकर दूर जा गिरा। ग्रिगोरी ने दूरबीन से देखा तो उसे तोप के आगे पीला भूरा धुआं उठता दीखा। धुए से घिरकर घोड़ों ने पिछाड़ी काटी और लोग गिरे और इधर-उधर भागे। तोपगाड़ी के जुए के पास एक सवार घोड़े समेत उठा लिया गया और पुल से झोंका दिए जाने पर बर्फ पर आ गिरा।

तोपचियों ने पहले गोले के साथ उतनी सफलता की आशा न की थी। तो, क्षण-भर तक कज्ज़ाक मॉर्टर के आस-पास सन्नाटा रहा और ज़रा दूर के टीले पर खड़ा पर्यवेक्षक ही हाथ नचा-नचाकर कुछ कहता रहा।

पर, इसी समय नीचे के चेरी के बगीचों और बागों की घनी झाड़ियों से 'हुर्रा' की अस्पष्ट-सी गूंज कानों में पड़ी। राइफिलों के चलाए जाने की आवाज़ हुई। सावधानी की चिन्ता को गोली मार ग्रिगोरी ढूह पर चढ़ गया, तो लाल-सेना के लोग सड़कों से भागते दीखे। साथ ही बेतरतीब चीखें, कमान की तेज़ आवाज़ें और गोलियों की कड़ाक्‌ड़ उसके कानों में पड़ी। लाल-सेना की मशीनगन वाली स्लेज एक ढाल पर तेज़ी से चढ़ती नज़र आई। पर कब्रगाह के पास पहुचते ही वह एकाएक झटके से मुड़ी और मशीनगन लाल-फौजियों के सिरों के ऊपर से बगीचों से बाहर उमड़ते कज्ज़ाकों पर आग बरसाने लगी।

कज्ज़ाक-घुड़सवार की टोह में ग्रिगोरी ने क्षितिज पर दृष्टि दौड़ाई, पर वहीं कोई नज़र न आया। लाल-सेना बाईं ओर के कारगिन्स्काया को बगल के आरख़ीपोवका नाम के गांव से जोड़ने वाले पुल की ओर भागते रहे। दाईं ओर वे अब भी कारगिन्स्काया के बीच से दौड़ते और कज्ज़ाकों की गोलियों से भुनते रहे। कज्ज़ाकों ने चौक के पास की दो सड़कों पर अब तक कब्ज़ा कर रखा था।

आखिरकार पहाड़ियों के आस-पास कज्ज़ाक-घुड़सवार सेना का

पहला स्क्वैड्रन नजर आया। बाद में दूसरा, और फिर तीसरा, और चौथा। फिर वे एक कतार में बढ़े और लाल-सैनिकों की भागती हुई भीड़ को बाकी से काट देने के लिए हवा की गति से झपटे। ग्रिगोरी अपने हाथ के दस्ताने मसलते हुए संघर्ष की सारी गति को अधीरता से देखता-समझता रहा। कज्जाक-घुड़सवार तेजी से साग सड़क पर पहुँचे। लाल-सेना के फौजी एक एक, दो-दो या छोटे-छोटे दलों में मुड़े और आरखी-पोवका गांव की दिशा में वापिस दौड़े। यहां उनका स्वागत कज्जाक पैदल-सेना की राइफिलों की गोलियों ने किया तो वे एक बार फिर लौटे और सड़क की ओर भागे। लाल-सेना के केवल कुछ लोग सिंगोवका के बीच से जैसे-तैसे भाग सके।

टीले के भयानक सन्नाटे में कज्जाकों ने लाल-फौजियों को तलवार के घाट उतार दिया। कज्जाक-घुड़सवार कारगिन्स्काया के सामने आ गए और उन्होंने दुश्मन को हवा में नाचती पत्ती की तरह पीछे ठेल दिया। एक पुल के पास कोई तीस लाल-सैनिकों को उनके दाकी साथियों से ऐसा काट दिया गया कि उनके दुबारा मिल पाने की आशा न रही। अब वे लोग अपने को बचाने में लग गए। उनके पास एक मशीनगन और गोलियों की कितनी ही रिजर्व पेटियां थीं। सो, विद्रोही पैदल सेना के लोग बगीचों से कायदे से निकल भी न पाए कि दुश्मन की मशीनगन भयानक तेजी से खड़खड़ाने लगी और डेडों और पत्थर की बाड़ की तलाश में रेंगते कज्जाक गिरने लगे। ग्रिगोरी ने अपनी जगह से कज्जाकों को कारगिन्स्काया के बीच से एक मशीनगन घसीटते देखा। फिर, बाहरी सीमा के एक अहाते के पास वे हिचकिचाए और फिर उसके अन्दर दौड़ गए। कुछ क्षणों बाद उसकी मशीनगन रसोई की छत में उभरती नजर आई। एक कज्जाक आड़ के पीछे, छत पर टाँगें फैलाकर लेट गया। दूसरा गोलियोंवाली पेटियाँ अपनी कमर में लपेटकर एक सीढ़ी पर चढ़ने लगा।

कज्जाक-बैटरी, लाल-फौजियों पर अपनी गोलियाँ केन्द्रित करते हुए, पैदल-सेना की सहायता करने लगी। पन्द्रह मिनट के अन्दर-अन्दर पुल के पास की लाल-सेना का मशीनगन की बोली सहसा ही रुक गई, एक

हमका-सा 'हुर्रा' हवा मे गूजा, घुड़सवार कज्जाकों की आकृतियाँ सामने आईं और वॅनों के नंगे तनों के बीच अदृश्य हो गई।

देखते देखते सारा-कुछ खत्म हो गया।

ग्रिगोरी के आदेश पर कारगिन्स्काया और आरखीपोवका के रहने वाले, एक सौ सैंतालीस मृत लाल-सैनिकों को गाव के बाहर खोदी गई एक खाई में घसीट ले गए। घोड़ों-समेत दो-दो पहियों वाली लड़ाई के सामान की छः गाड़िया, एक बिगडी हुई मशीनगन, और रसद से भरे चालीस माल-डिब्बे कज्जाकों के हाथ लगे। जहा तक कज्जाक-पक्ष का सवाल है, चार कज्जाक मारे गए और पन्द्रह जख्मी हुए।

उस लड़ाई के बाद कारगिन्स्काया के आस-पास एक सप्ताह तक शान्ति रही। लाल-सेना ने दूसरी विरोधी डिविजन का मुकाबला करने के लिए फौजें भेजी और उसे बरबस पीछे खदेड़कर मिगुलिन्स्काया-ज़िले के कई गाव हथिया लिए। हर दिन सबेरे दूर की तोपों की गरज कारगिन्स्काया तक आई। पर लड़ाई की पूरी खबर कायदे से नहीं मिली, और जो मिली, उससे स्थिति का सही अनुमान नहीं हो सका।

इस बीच अपने मन की उदासी काटने, चारों ओर के वातावरण मे पैदा होने वाले अपने विचारों से छुटकारा पाने और अपने महत्त्वपूर्ण कारनामों की बात दिल से भुलाने के लिए ग्रिगोरी ने अधाधुंध पिलाई शुरू कर दी।

बात यह थी कि विद्रोही-सेनाओं के पास आटे की सख्त कमी थी, क्योंकि आटे की चक्कियां फौज की जरूरत पूरी कर नहीं पाती थीं, और कज्जाकों को अकसर ही उबला-चावल खाकर सब्र कर लेना पड़ता था। लेकिन आम अनाज की कमी न होने के कारण वोद्का की कमी तो थी नहीं। उसकी नदिया बहती थी। लोगों के छककर मोर्चे पर जाने की मिसालें भी अकसर ही सामने आई थीं। एक बार तो कज्जाक-घुड़सवार सेना के एक पूरे के पूरे स्क्वैड्रन के लोगों ने हमला बोला तो वे आधे नशे मे चूर थे। नतीजा यह कि वे एक मशीनगन के ठीक सामने तक अपने घोड़े दौड़ाते चले गए थे और आखिर को उनका पूरी तरह नाम-निशान मिट गया था। ग्रिगोरी को मनमानी मात्रा में वोद्का मिलती रहती थी, क्योंकि

उसके अर्दली प्रोखोर जिकोव ने शराब हासिल करने के मामले में नाम कर रखा था।

तो कारगिन्स्काया की लड़ाई के बाद, ग्रिगोरी के आग्रह पर वह तीन घड़े वोद्‌का ले आया और गानेवालों को बुला लाया। ग्रिगोरी को मन की रोकथाम से छुटकारा पाने और अपने विचारों से दूर भागने का एक मौका मिला। वह खुशी से खिल उठा और दूसरे कज़्ज़ाकों के साथ दिन का उजाला फैलने तक पीता रहा। सुबह, रात की खुमारी से निजात पाने के लिए, एक गिलास चढ़ाया और फिर दूसरा गिलास खाली कर दिया। अगले दिन उसने फिर गवैयों को बुलाया और फिर वही हँसी-खुशी और शोर-शराबे के दौर चलने लगे। इस सबसे सच्ची खुशी की एक खाम-खयाली बुन उठी और पत्थर-जैसी सख्त हकीकतों पर पर्दा पड़ गया।

होते-होते शराब की तलब लत में बदल गई। अब ग्रिगोरी सबेरे ज्यों ही मेज़ के पास आकर बैठता, उसमें वोद्‌का की अबुझ प्यास जाग उठती। वह काफी पीता, पर बहुत ज्यादा कभी न पीता। उसके पैर कभी भी न डगमगाते। यानी, जब दूसरे नशे में धुत्त होकर मेज़ों के नीचे उलट रहते, या अपने बरानकोट अपने ऊपर डालकर फर्श पर निढाल हो जाते, तो भी वह गम्भीर नज़र आता, हालांकि उसका चेहरा पीला पड़ जाता, निगाहें एक जगह जमी रह जातीं और वह रहे-रहे हाथों से अपना सिर दबाने लगता।

मगर, चार दिन के अटूट दौर के बाद शराब उस पर भी अपना असर दिखलाने लगी। उसकी आंखों के नीचे थैलियां-सी लटक आईं और काजल-सा बिखर गया। निगाहों से जहालत और सख्ती टपकने लगी। पांचवें दिन प्रोखोर जिकोव ने मुसकराते हुए अपनी ओर से कहा—"आज शाम को चलिए, आपको एक बढ़िया माल दिला दूं। मैं लिखोविदोव्र में एक औरत को जानता हूं। ठीक ? लेकिन अपना मौका हाथ से जाने न दीजिएगा। हालांकि मैंने तो नहीं चखा। लेकिन मैं जानता हूं कि औरत तरबूज़ की तरह मीठी है। पर, एक बात है कि शैतान तेज़ और थोड़ी जंगली है। पहली बार वह आपकी हसरत पूरी नहीं करेगी और बदन को हाथ नहीं लगाने देगी। मगर, उससे अच्छी वोद्‌का तैयार करने वाला

आपको दूसरा नहीं मिलेगा। चिर के किनारे के गांवों में सबसे अच्छी योद्का उसकी होती है। उसका आदमी भागकर दोनेत्स के पार चला गया है।" उसने यों ही से ढग से अपनी बात खत्म कर दी।

उस शाम को वे घोड़ों पर सवार होकर लिखोविदोव के लिए रवाना हुए। ग्रिगोरी के साथ रहे उसके दो कमांडर, र्यावचिकोव और येरमाकोव, एक हाथवाला अलेक्सेइ-शामील और तीसरी डिविज़न का कमांडर मेदवेदेव। प्रोखोर ज़िकोव सबसे आगे रहा। गांव में पहुंचने पर उसने अपने घोड़े को कदम-चाल में डाला, किनारे की एक गली में मुड़ा और खलिहान को रास्ता देने वाला एक फाटक खोला। ग्रिगोरी के चाबुक छुआते ही, उसके घोड़े ने छलांग मारी, फाटक के आस-पास की अधगली बर्फ का अम्बार साफ किया, एक क्षण तक डगमगाता रहा और फिर सम्भल कर हांफते हुए, दुलकी चाल से अहाते में दाखिल हो गया।

फिर कोई पांच मिनट तक वे प्रोखोर के पीछे-पीछे पुआल और सूखी घास की टालों के बीच से गुज़रते रहे। फिर चेरी की एक बगिया आई। चांद का सुनहरा कटोरा गहरे नीले आसमान में नज़र आता रहा। सितारे टिमटिमाते रहे। हर ओर एक जादुई-सन्नाटे का पसारा रहा। आवाज़ के नाम पर कभी दूर कोई कुत्ता भौंका और घोड़ों की टापें बजीं, और बस! होते-होते रात के अंधेरे के आंचल में एक पीली रोशनी लौ देने लगी। फिर, मरघत के इधर वाला एक बड़ा मकान दीखा। प्रोखोर ने घोड़े पर बैठे-ही-बैठे, झुककर चरमराता हुआ छोटा फाटक खोला। सीढ़ी के पास के गढ़े के जमे हुए पानी में चांद झांका। ग्रिगोरी के घोड़े ने अपने खुर से जमे हुए पानी का किनारा चूर-चूर कर दिया और फिर हांफते हुए रुक गया। ग्रिगोरी काठी से नीचे कूदा और लगाम के चारों ओर रासें लपेटकर बरसाती में घुसा।

सिटकनी टटोलने के बाद उसने दरवाज़ा खोला और अन्दर से गुज़र कर एक लम्बे-चौड़े बावर्चीखाने में आ निकला। वहां एक जवान कज़्ज़ाक-औरत, स्टोव की ओर पीठ किये खड़ी, मोज़ा बुनती दीखी। औरत बदन की भारी, पर तीतर की तरह साफ़-सुथरी थी। चेहरा सांवला था। काली भौंहें जैसे सांचे में ढली थीं। स्टोव की टाट पर भूरे बालों वाली एक

लड़की सो रही थी। रही होगी ऐसे ही कोई नौ साल की। उसका एक हाथ बाहर की ओर निकला हुआ था।

ग्रिगोरी ने अपना वरानकोट वगैरह नहीं उतारा और वैसे ही मेज़ के किनारे बैठ गया। बोला—"तुम्हारे यहां थोड़ी वोद्का है ?"

"कुछ दुआ-सलाम भी ज़रूरी है, ऐसा तुम नहीं मानते ?" औरत ने ग्रिगोरी की ओर नज़र उठाये बिना जवाब दिया और अपनी बुनाई करती रही।

"तुम कहती हो तो सही···दोब्रयेवेचर (गुड-ईवनिंग)···अब यह बताओ कि तुम्हारे यहां वोद्का मिलेगी ?"

औरत ने अपनी भौंहें ऊँची कीं और अपनी गोल, धुंधलाई आखों से उसकी ओर देखकर मुसकराई—"मेरे यहां थोड़ी-सी वोद्का तो है, लेकिन तुम्हारे साथ तो इतने सारे लोग हैं और शायद सारी रात पीने को आये हैं···है न ?"

"हां, पूरा डिविज़न का डिविज़न है।"

र्‌याबचिकोव ड्योढ़ी से कूदता-उछलता, उट्ठक-बैठक करता, तलवार नचाता और मेमने की खाल की अपनी टोपी टॉप-बूटों पर बजाता अन्दर आया। दूसरे कज्ज़ाक दरवाज़े पर जमा हो गये। एक लकड़ी के दो चम्मचों से नाच की तेज़ धुन बजाने लगा। लोगों ने अपने वरानकोट एक चारपाई पर जमा कर दिये और अपने हथियार बेंचों पर रख दिये। प्रोखोर मेज़ लगाने में औरत का हाथ बंटाने के लिये लपका। एक हाथवाला अलेक्सेइ सिरके की पातगोभी लेने के लिए तहखाने की ओर बढ़ा, सीढ़ियों पर गिर पड़ा और टूटी हुई तश्तरी के टुकड़े और अपने वरानकोट में बहुत सारी गीली पातगोभी लिए हुए लौटा।

फिर तो, आधी रात होते-होते तक उन्होंने दो बाल्टी वोद्का पी डाली और जाने कितनी पातगोभी खा डाली। इसके बाद लोगों ने एक भेड़-हलालने की बात सोची। प्रोखोर ने भेड़ों के बाड़े में जाकर भेड़ टटोली और येरमाकोव ने एक हाथ में ही उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। औरत ने आग जलाई और भेड़ का गोश्त पकाने को रख दिया। एक बार फिर लकड़ी के दो चम्मच खड़के, नाच की धुन बजी और र्‌याबचिकोव पैर

पटक-पटक और हाथ से कूल्हे पीट-पीटकर नाचने लगा। साथ ही मध्यम स्वर में उसने एक गाना भी छेड़ा।

'हाथ साफ करने को जी करता है।" येरमाकोव गरजा और सिड़की के चौखटे की मस्ती अपनी तलवार से परखता रहा। वह अपने गैर-मामूली बहादुरी और कज्जाक-हौसले के लिये ग्रिगोरी को बहुत प्रिय था। सो, ग्रिगोरी ने अपना तांबे का मग मेज पर पटका—चीखा—"यारलाम्पी, बेवकूफ न बनो!"

येरमाकोव ने आज्ञा मानकर अपनी तलवार म्यान में डाल ली और प्यास से व्याकुल होने के कारण वोद्का का गिलास झटके से उठाया।

'ऐसा लुत्फ और ऐसा जमघट हो तो मैं मौत से भी न डरूँ।" ग्रिगोरी की बगल में बैठे हुए एक हाथवाले अलेक्सेइ ने कहा—"ग्रिगोरी पेन्तेलेयेविच, तुम हमारे इस फौजी खानदान की शान हो! अगर तुम न होते तो अब तक हम सब दूसरी दुनिया में होते!···एक गिलास और हो जाय एक साथ···क्यों? भरो गिलास, प्रोखोर!"

काठियां उतार ली गई थीं, अतएव घोड़े नंगी-पीठ यों ही सीढ़ियों के पास खड़े थे। वे बंधे न थे और कज्जाक पारी-पारी से उन्हें जाकर देख आते थे।

और, इस तरह दौर पर दौर चलते रहे। सिर्फ तड़का होने के समय ग्रिगोरी को नशा होने लगा। उसे दूसरों की आवाजें दूर से आती मालूम हुईं। उसने अपनी खून की तरह लाल आंखों से जैसे-तैसे ऊपर देखा, और बहुत ही यत्न से अपने होश-हवास ठिकाने रखे।

"सुनहरे भब्बे हम पर फिर हुकूमत कर रहे हैं! उन्होंने सरकार अपने हाथों में ले ली है।" येरमाकोव ने ग्रिगोरी को बाहों में भरते हुए गरजकर कहा।

"कौन-से भब्बे?" ग्रिगोरी ने उसके हाथ अलग करते हुए पूछा।

"व्येशेन्स्काया के भब्बे! तुम क्या यह कहना चाहते हो कि तुमने यह बात सुनी ही नहीं? एक कार्कसियाई-शाहजादे का दबदबा है वहाँ! कर्नल है। मैं उसे मार डालूँगा!···मेलेखोव, मैं अपनी जिन्दगी तुम्हारे कदमों पर रखता हूं। देखो, हमें छोड़कर चले न जाना···कज्जाक भुन-

भुना रहे हैं। हमें व्येशेन्स्काया ले चलो। हम सबको मार डालेंगे और सारी जगह में आग लगा देंगे ! ···इल्या-कुदिनोव को···उस कर्नल को··· और उसके साथ ही सबको काटकर रख देंगे ! उनकी हुकूमत बहुत हुई ! आओ, हम लाल-फौजियों से भी लड़ें और कैडेटों से भी समझें ! यह है जो मैं सचमुच चाहता हूं !"

"हम कर्नल को मार डालेंगे। वह जान-बूझकर वहां बना रह गया है, ग्यारलाम्पी ! आओ, सोवियत-सरकार के आगे हथियार डाल दें···हम सही रास्ते पर नहीं हैं।" ग्रिगोरी ने अचानक ही एकाध क्षणों को अपने होश सँभाले और चालाकी से मुसकराया—"मैं तो सिर्फ मज़ाक कर रहा हूं···गिलास खत्म करो, येरमाकोव !"

"मज़ाक किस चीज़ का कर रहे हो, मेलेखोव ? ···इस तरह बात हँसी में न उड़ाओ···यह मामला दूसरी किस्म का है।" मेदवेदेव ने सख्ती से कहा—"हम सरकार को झकझोरकर रख देना चाहते हैं··· हम उन सबको बोरिया-बिस्तरा बांधकर रवाना करेंगे और तुम्हें उनकी जगह बैठायेंगे। मैं कज्ज़ाकों से बात कर चुका हूं, और वे राजी हैं···हम कुदिनोव और उसके गिरोह के लोगों से कहेंगे—'निकल जाओ यहाँ से ! तुम हमारे लायक नहीं !' अगर वे सीधे-सीधे अपना मुंह काला कर जायेंगे तो ठीक, वरना हम एक रेजीमेंट व्येशेन्स्काया भेजेंगे और उन्हें वहां से खदेड़कर दम लेंगे···नाम-निशान मिटाकर सांस लेंगे ! '

"खत्म करो अब इस तरह की बात !" ग्रिगोरी बड़े ज़ोर से गरजा।

मेदवेदेव ने अपने कंधे झटके, मेज छोड़ दी और पीना बंद कर दिया। र्‍याबचिकोव बेंच पर उलटा-सीधा पड़ा रहा। उसका सिर नीचे की ओर झूलता रहा और हाथ जमीन खरोंचता रहा कि उसने दर्द-भरे स्वर में गाना शुरू किया—

'आओ, सीने पर सिर रक्खो, मेरी रानी···
आओ, सीने पर सिर रक्खो, मेरी प्यारी···
तुम थकान से चूर-चूर हो,
और तुम्हारा है सिर भारी···

चाहो तो इस तरफ टिकाओ,
चाहो तो उस तरफ टिकाओ—
मेरे उजले सीने पर सिर रक्खो, आओ !"

और, उसके दर्द-भरे, मध्यम-स्वर में अलेक्सेंद्र-दामील ने अपना मोटा स्वर जोड़ा—

"मैंने सीने पर सिर रक्खा,
और दर्द से खूब कराहा—
आहें भरता रहा बराबर,
मैंने कब इतना दुःख चाहा !—
आखिरकार कहा मैंने यह—प्यार, अलविदा···
मेरे प्यारे प्यार, अलविदा···
मौत तुम्हें ले जाये कि
मेरे यार, अलविदा !"

फिर बाहर की परछाइयां बकाइनी होने लगीं तो वह औरत ग्रिगोरी को उठाकर सामने के कमरे में ले चली।

"काफी पिला चुके इसे···अब तो बस करो, शैतान के बच्चो ! तुम्हें नजर नहीं आता कि आदमी किस तरह बेकाबू हो रहा है ?" उसने एक हाथ से ग्रिगोरी को साधने और दूसरे हाथ में येरमाकोव को एक ओर ढकेलते हुए कहा। येरमाकोव वोद्का-भरा मग लेकर उनके पीछे हो लिया।

"इसके साथ वहीं सो न जाना···इस वक्त कुछ भी हाथ नहीं आयेगा।" येरमाकोव ने नशे से झूमते और मग से वोद्का छलकाते हुए आख मारकर कहा।

"इससे तुम्हें कुछ लेना-देना नहीं—तुम मेरे बाप तो हो नहीं।" औरत ने उलटकर जवाब दिया।

"एक छोटा चम्मच अपने साथ लेती जाओ !" येरमाकोव ने नशे में डूबी हँसी के ठहाके लगाते हुए कहा।

औरत ने ग्रिगोरी को कमरे में ठेल दिया, पलंग पर लिटा दिया और पास बैठकर उदासी और दर्द-भरी निगाहों से उसका भयानक रूप से पीला चेहरा देखती रही। ग्रिगोरी की पलकें एक बार नहीं झँपी। आंखें जैसे किसी को घूरती रहीं। औरत ने उसका सिर सहलाना और उसके बालों पर हाथ फेरना शुरू किया। होने-होते ग्रिगोरी को नींद आ गई। इसके बाद औरत ने स्टोव पर अपनी बेटी की बगल में अपना बिस्तर लगाया। पर, शामील ने उसे सोने ही नहीं दिया। बाजुओं पर हाथ टिकाये वह चौंके हुए घोड़े की तरह रह-रहकर नाक बजाता रहा। फिर, सहसा ही उठकर बैठ गया और किसी गाने का एक टुकड़ा छेड़ दिया। थोड़ी देर बाद फिर उसका सिर हाथों पर टिक गया, फिर वह कुछ देर तक सोया, फिर कुछ देर तक एकटक इधर-उधर देखता रहा, और फिर उसके कंठ से स्वर फूट पड़े।

४२

दूसरे दिन सवेरे ग्रिगोरी की आंख खुली तो उसे येरमाकोव और मेदवेदेव के शब्द याद आये। वह नशे में ऐसा धुत्त तो हुआ न था कि उसे ज़रा भी होश ही न रहा हो। अतएव बहुत ही आसानी से उसे सरकार का तख्ता उलटने की उनकी बात का ध्यान आ गया। अब उसे लगा कि लिखोविदोव में शराबनोशी का वह कार्यक्रम सोच-समझकर, अपनी योजना के लिए उसका समर्थन प्राप्त करने के खयाल से बनाया गया था···यानी वामपन्थियों की ओर झुके हुए कज्जाक···पूरे दोन-प्रदेश से कट जाने और कम्युनिस्टों के बिना ही अपनी छोटी सोवियत-सरकार बनाने का सपना चुप-चुप देख रहे थे और कुदिनोव के खिलाफ जाल बिछा रहे थे। कुदिनोव ने दोनेत्स तक पीछे हट जाने और श्वेत गार्दों में शामिल हो जाने की बात साफ-साफ कह दी थी। कज्जाकों ने कभी समझा ही नहीं कि अगर लाल फौजें दोनेत्स पर रोकी न जाएं और वे उमडकर किसी भी क्षण उन्हें वहां से खदेड बाहर करें तो बागियों के बीच के झगड़ों के नतीजे कैसे भयानक हों···

'बच्चों का खिलवाड़ है।' ग्रिगोरी ने धीरे से नीचे पैर रखते हुए

सोचा। फिर कपड़े पहन लेने के बाद उसने येरमाकोव और मेदवेदेव को कमरे में बुलाया और उनके आ जाने पर दरवाजा अन्दर से बन्द कर दिया। बोला—"सुनो, भाइयो, कल की बात इसी समय अपने दिमाग से निकाल दो। साथ ही अन्दर ही अन्दर भुनभुन भी न हो, वरना तुम लोगों के हक में अच्छा न होगा। यह सवाल न इस बात का है कि कमान किसके हाथों में है और न कुदिनोव या किसी दूसरे का है। सारा सवाल तो यह है कि हम लोग एक घेरे में हैं और हमारी हालत ऐसी है जैसी चक्कों में धुरों की होती है। अगर आज नहीं तो कल हमें तो रगड़ ही जाना है। ऐसे में हमें अपनी रेजीमेंटें व्येशेन्स्काया की तरफ न भेजकर मिगुलिन या काजानोकुल्स्काया की तरफ भेजनी चाहिए।" ग्रिगोरी ने यह बात जोर देकर कही और मनमौजी मेदवेदेव के अनमने चेहरे पर से अपनी निगाहें नहीं हटाईं—"मामला यह है, कोन्द्रात! अच्छा हो कि तुम मुसीबत खड़ी करना बन्द कर दो। जरा सोचो, तुम्हें लगेगा कि अगर हमने इन कमांडरों से छुटकारा पाना और गदरों के बीज बोना शुरू किया तो हमारा काम तो हो लिया। फिर या तो हम श्वेत गार्दों के हाथों में पड़ जाएँगे या हमें लाल-गारदों का लोहा मानना पड़ेगा···बीच का कोई रास्ता हमारे सामने होगा नहीं। इन दोनों में से कोई न कोई हमें कुचलकर फेंक देगा।"

"हमारी इस बात का गाना अब जहान-भर से गाते मत फिरना।" येरमाकोव ने मुड़ते हुए कहा।

"यह बात यहीं की यहीं रह जाएगी, पर शर्त एक है कि तुम कज्जाकों को भड़काना बन्द कर दो। मैं पूछता हूँ कि कुदिनोव और उसके सलाहकारों के बारे में क्या सोचते हो तुम? जब तक एक डिविजन की कमान मेरे हाथों में है, तब तक पूरी ताकत उनके हाथों में नहीं कही जा सकती। मैं जानता हूँ कि वे अजीब लोग हैं, और तुम यकीन मानो कि वे हमें कैडेटों की लपेट में लेना चाहेंगे। लेकिन, हम करें तो करें क्या? हमारे सामने रास्ता क्या है? हमारे तो घुटनों की नसें काट दी गई हैं।"

"यह सही है"—मेदवेदेव ने न चाहते हुए भी हाँ में हाँ मिलाई और कमरे में दाखिल होने के बाद से अब तक के समय में पहली बार आँखें उठाकर ग्रिगोरी को देखा।

ग्रिगोरी दो दिनों तक और कारगिन्स्काया के आस-पास के गांवों मे शराब ढालता और शरावनोशी की महफिलों में खोखली जिन्दगी बिताता रहा। उसकी काठी का कपडा तक वोद्का की बू से बसने लगा। कुँआरेपन के फूल की शोभा से वंचित औरतें और लड़कियाँ, इस बीच उसके सीने से लगती और उसके प्यार के इने-गिने क्षणों मे हिस्सा बँटाती रहीं। लेकिन, वासना के बुखार के हर ताजा उतार के बाद ग्रिगोरी हर दिन सुबह गम्भीर और अन्यमनस्क हो उठता। सोचता—'मैंने अपने जमाने मे जिन्दगी पूरी तरह देखी। हर चीज का तजुर्बा किया। औरतों और लड़कियों से मोहब्बत की, स्तेपी मैंभाया अपने बच्चों, का सुख देखा, लोगों को तलवार के घाट उतारा, खुद मौत का सामना किया और नीले आसमान का लुत्फ लिया। अब क्या ऐसा बाकी बचा है, जो जिन्दगी मेरे सामने पेश करेगी? कुछ भी तो नही। और ऐसे मे आज अगर मेरी आखें हमेशा-हमेशा के लिए मुँद जाएँ तो मुझे जरा भी तकलीफ न हो। अब मैं खतरे के खयाल के बिना उसी तरह लडाई मे हिस्सा ले सकता हूँ, जिस तरह कोई अमीर जुए पर दाँव लगाता है। मेरा नुकसान अब कोई खास न होगा।'

इसी समय धूप से धुले दिन की तरह उसका सारा बचपन उसकी आँखों के आगे आ गया—सामने आ गए मैना पछियो के घोंसले···गर्म धूल से सने उसके पैर, किनारे के जगलो की परछाइयों को अपनी गहराई मे घोलती, शानदार, धीरे-धीरे बहने वाली दोन···उसके अपने बाल-मित्रो के चेहरे···और तरुणाई के साचे मे ढली माँ की आकृति···ग्रिगोरी ने हाथ से अपना चेहरा ढक लिया···पुराने दोस्त···पुराने चेहरे···भूली हुई आवाजें···बातचीत की झलकियाँ···हँसी के लहरे···

फिर, उसे स्तेपी के सुहाने प्यारे मैदानों का खयाल आया तो वे अचानक ही उसके सामने यहाँ से वहाँ तक फैल गये कि उसके लिए आख उठाना मुहाल हो गया। फिर भी, उसने देखा मैदान के इस पार से उस पार जाने वाला गरमी के दिनो का रास्ता···रास्ते पर एक बैलगाड़ी··· बैलगाडी पर सवार उसका पिता···जुती हुई जमीन···कटे हुए नाज की सुनहरी बालें···और सडक पर जहा-तहा बैठे कौवों के काले धब्बे!

पर, अतीत की स्मृतियों मे भटकते-भटकते मस्तिष्क अक्सीनिया के

सामने आया तो ठोकर खा गया। मेरी रानी···मेरे दिल की रानी··· इसे तो मैं कभी भूल ही नहीं सकता !' ग्रिगोरी ने सोचा, और नफरत से भरकर बगल में पड़ी औरत से दूर हट गया। फिर आहें भरता और बेचैनी से सुबह की राह देखता रहा। इसके बाद सूरज की किरणें पूर्व के आसमान पर रसभरी और सोने के रंगों को अपनी तूलिका पूरी तरह चला भी न पाईं कि वह उछलकर उठा, और मुह-हाथ धोकर अपने घोड़े की ओर बढ़ दिया।

: ४३ :

विद्रोह, स्तेपी के मैदान को निगल जाने वाली आग की तरह फैला। लेकिन, बागी जिलों के चारों ओर मोर्चों का इस्पाती घेरा घिरा रहा। लोगों पर नियति की छाप मुहर की तरह पड़ती रही। कज्जाक मौत से खिलवाड़ करते रहे, और उनमें से कितनों ने ही सिक्का उछालकर कहा— 'शेर' पर निकला 'बकरी'—कहा 'जूस' पर निकला 'ताक'। जवान छककर जिन्दगी का मज़ा और मोहब्बत का रस लेते रहे। सयानी उम्र के लोग खड़े न हो सकने की हालत तक शराब ढालते रहे। वे गोलियों को नकद रकम से बड़ा मानते, दोनों की बाजियां लगाकर ताश खेलते और छुट्टी मिलते ही घोड़ों पर सवार होकर अपने-अपने घरों को भागते। यहां, चाहे थोड़ी देर के लिए ही सही, वे अपनी राइफलें रख देते, फावड़ा-कुल्हाड़ी से काम करते, अपने प्रियजनों के बीच आराम करते, बाड़े की मरम्मत करते और बसन्त की मशक्कत के लिए हेंगा या घोड़े की जगह ठीकठाक करते। इनमें से कितने ही शान्तिपूर्ण जीवन का सुख लेकर अपनी रेजीमेंटों को लौटते तो नशे में चूर लौटते। वे फिर गम्भीर होते तो हमले में धुआंधार टूट पड़ते और मशीनगनों के ऐन दहानों तक घसते चले जाते। अगर यह न करते तो भावावेश की आग सम्हाल न पाते। घोड़ों पर सवार होकर रातों को छापे मारते, लोगों को कैद करते, और बुनियादी हैवानियत के सहारे उनके साथ मनमानी बेरहमी का बरताव करते। यानी, गोलियां बचाना चाहते तो तलवारों से उनका काम तमाम कर देते।

१६१६ का वसन्त अमित प्रकाश और असाधारण सुषमा लेकर आया। अप्रैल के दिन सुहाने और शीशे की तरह झलाझल लगे, आसमान के नीलम की गहराई में जंगली कलहंस और तांबे की वाणियो वाले सारस उडने लगे। वे हवा की लहरों पर लहरते जाते, लहरते जाते, तेजी मे उडकर बादलों को पकड लेते और उत्तर की ओर मुड़ जाते। तालाबो के पास के स्तेपी के पीले-हरे पसारे के पास चोंचें मारती बत्तखें बिखरे हुए मोतियो-सी लगती। नदी के किनारे की नम चरागाहों में चिडिया बराबर चहचहातीं। पानी से लबालब तालों पर कलहस कीकते और उड़ने को पर तोलते रहते। श्रोसियर बेंत, वासना से भरे ड्रेक-कीड़ो की ज्यादतियो पर, बराबर फुफकारते रहते। सरपत कलियों और फूलों से हरे लगते। चिनारो मे महकदार कलियां अपनी पखुरियाँ खोलतीं। गालो पर धूप की लाली वाला हरा मैदान शब्दों मे न बँध पाने वाले जादू मे डूबा रहता। वहाँ बाढ-सी आती रहती नगी काली मिट्टी की भीनी-भीनी गध की और सदाबहार घास की हरियाली की।

विद्रोहियो के सघर्ष की एक अच्छी बात यह रही कि कज्जाक अपने घर-गाव के पास ही रहे। अगर वे सीमा की चौकी पर ड्यूटी देते-देते या छिपते-छिपते थक गए, या पहाडियों पर चढते और घाटियो में उतरते-उतरते थकान का अनुभव करने लगे तो उन्होंने स्क्वैड्रन-कमाडरों से इजाजत ले ली, घोडों पर सवार होकर घर पहुच गए और अपने बूढ़े पिताओ या नाबालिग बेटो को अपनी जगह भेज दिया। स्क्वैड्रनो मे लडने वालों की कमी कभी न हुई, पर लोग तो बदलते ही रहे और लडाई की ताकत भी घटती या बढती रही, लेकिन कुछ कज्जाक ज्यादा चालाक साबित हुए। वे सूरज के नीचे उतरते ही घोड़ों पर सवार होकर स्क्वैड्रनो के रात के क्वार्टरो से भाग खड़े होते, बीस या तीस वर्स्ट का फासला तय करते और रात भीगने-भीगने तक घर पहुच जाते। यहा वे अपनी बीवियों या औरतों के साथ रात बिताते और दूसरे मुर्गे के बाग देने-देने तक यानी स्वर्गगा के आकाश मे रहने-रहने तक अपने-अपने स्क्वैड्रनों मे लौट आते। कितने ही खुशमिजाज कज्जाक तो इस बात से ही खुशी से फूले न समाते कि लडाई हुई तो उनके अहातो के पास ही दरवाजे पर हुई। वे अकसर

ही घर जाते तो अपनी पत्नियों से हंसते हुए कहते—"मरने की भला ऐसी क्या जरूरत है !"

ऐसे में कमान को इस बात का खासा डर लगा कि बसन्त आने पर खेतों का काम शुरू होते ही लोग भरभराकर भाग खड़े होंगे। इसलिए कुदिनोव ने हर डिविज़न का खास तौर पर दौरा किया और खुली मस्ती में ऐलान किया—"मुझे कोई परवाह नहीं, हमारे खेतों पर हवाएँ मरसिए भरें तो भरें और ज़मीन में एक बीज न बोया जाए तो न बोया जाए ! लेकिन, खयाल रहे कि मैं एक कज्ज़ाक को भी छुट्टी पर जाने नहीं दूँगा। और, जो आदमी बिना छुट्टी के घर जाएगा, उसे काटकर फेंक दिया जाएगा या गोली से उड़ा दिया जाएगा।"

: ४४ :

ग्रिगोरी ने विलमोवका के नीचे होने वाली एक लड़ाई में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया। अप्रैल के महीने में एक दिन गांव के सिरे के अहातों के आसपास गोलाबारी शुरू हुई और कुछ मिनटों बाद ही लाल फौजी गाँव में घुस आये। बाएं सिरे पर, बाल्टिक बेड़े के किसी जहाज़ के नौसैनिक जान-बूझकर आगे बढ़े। उन्होंने कज्ज़ाक स्क्वैड्रनों को गांव के बाहर कर दिया और उन्हें एक घाटी के किनारे-किनारे पीछे खदेड़ दिया।

फिर, लाल सैनिकों का ज़ोर बढ़ने लगा तो पहाड़ी से सब-कुछ देखते-समझते ग्रिगोरी ने अपना दस्ताना हिलाकर प्रोखोर-ज़िकोव को अपना घोड़ा लाने का इशारा किया। घोड़ा आने पर वह उछलकर काठी पर सवार हुआ और दुलकी-चाल में घोड़ा दौड़ता घाटी के एक खास हिस्से में पहुंचा, जहाँ उसने घुड़सवार सेना का एक स्क्वैड्रन रिज़र्व में रख छोड़ा था। बागीचे और बाड़े पार करता वह जगह पर पहुँचा तो उसने कज्ज़ाकों को आराम से वक्त गुज़ारते पाया। वह थोड़ी दूर से ही चिल्लाया—"घोड़ों पर सवार !" और देखते-देखते दो के दो सौ कज्ज़ाक घोड़ों पर सवार हो गए। स्क्वैड्रन-कमांडर ग्रिगोरी से मिलने को आगे बढ़ा। पूछने लगा—"क्या हमें हमला करना है ?"

"हा···करना है···करना तो बहुत पहले चाहिए था।" ग्रिगोरी की आंखें लौ दे उठीं।

वह लगाम खींचकर नीचे उतरा और फिर जीन बन्द करने में उसे कई मिनट लग गए। उसका उत्तेजित, पसीने में नहाया घोड़ा कभी अकड़ गया तो कभी घूम गया, जैसे कि बन्द बंधवाने से इन्कार कर रहा हो। पर जल्दी ही सब-कुछ दुरुस्त हो गया तो रकाबों में पैर डाले। उसके बाद गोलाबारी की बढ़ती हुई गरज पर आश्चर्यचकित स्क्वैड्रन-कमांडर की ओर देखे बिना बोला—"स्क्वैड्रन के आगे मैं खुद रहूँगा।" फिर बाकी लोगों की ओर घूमते हुए बोला—"गाव के दूसरे सिरे तक ट्रुप-फारमेशन मे चलो···मार्च!"

गाव के पार पहुचने पर उसने स्क्वैड्रन को हमले के लिए तैयार होने का हुक्म दिया और देखा कि तलवार म्यान से आसानी से बाहर आ जाती है या नहीं। इसके बाद वह कोई पचास कदम आगे होकर, अपने घोड़े को सरपट दौड़ाता स्क्वैड्रन को क्लिमोवका की ओर ले चला। क्लिमोवका के ऊपर के टीले पर पहुचने पर उसने घोड़े की रास क्षण-भर को खींची और सारी स्थिति का अध्ययन किया। उसके नीचे पैदल और घुड़सवार लाल फौजी दौड़ते और घोड़े दौड़ाते हुए पीछे भागते दीखे। ग्रिगोरी स्क्वैड्रन की ओर आधा मुड़ा।

"तलवारें खींचो और दुश्मन पर हमला बोल दो। मेरे पीछे-पीछे आओ, जवानो!" उसने अपनी तलवार झटके से म्यान के बाहर खींची और सबसे पहले चिल्लाया—"हुर्रा!" उसके बदन मे एक हल्की-सी फुरफुरी दौड़ गई और चिर-पहचाने ढग से उसका मन हलका हो उठा। उसने अपना घोड़ा गाव की ओर सरपट दौड़ा दिया। उसके बाएं हाथ मे पूरी ताकत से खींची गई लगाम कांपती रही और दायें हाथ मे सधी तलवार सनसनाती रही···

वसन्त की हवा के कन्धों पर सवार एक लम्बे-चौड़े दूधिया बादल ने अचानक ही एक-दो क्षणों को सूरज को ढँक लिया और एक कपूरी छाया बहुत ही धीरे-धीरे उस टीले पर से गुजरी। ग्रिगोरी ने क्षण-भर को
। ह क्लिमोवका की झोपड़ियों की ओर से हटा ली और नम

भूरी-सी धरती पर फिसलती छाया और उसके आगे-आगे दौड़ते उल्लास-भरे प्रकाश पर जमा दी। उसके अचेतन मन में एक अवर्णनीय अभिलाषा जगी कि वह अपना घोड़ा दौड़ाकर धरती पर तेजी से दौड़ती उस रोशनी को पकड़ ले। बस तो उसने घोड़े को एक हाथ जमाया और उसे पूरी रफ्तार से सरपट छोड़ दिया। कुछ ही क्षणों की धुआंधार दौड़ के बाद घोड़े की आगे की ओर हुई गर्दन पर धूप की एक बौछार हुई और उसके लाल बदन पर सहसा ही चमचमाता हुआ सोना दमकने लगा। इसी समय सामने की सड़क से गोलियाँ बरसने लगीं। हवा धाँय-धाँय की आवाज ला-लाकर कानों में उँडेलने लगी। इसके बाद एक क्षण और बीता और फिर गोलियों की सनसनाहट, अपने घोड़े की टापों की आवाज, और हवा की भकभोर के बीच अपने पीछे घोड़े दौड़ाते स्क्वैड्रन की गरज उसने सुनी ही नहीं, जैसे कि इतने सारे घोड़ों की टपाटप उसके कानों के लिए मर गई हो, जैसे कि कहीं दूरी में जाकर खो और डूब गई हो। राइफलों की खटाखट उसे ऐसी लगी जैसे कि किसी अलाव में कहीं चिरायते की लकड़ी चटख रही हो। गोलियाँ बगल से सरसराती रहीं। ऐसे में परेशानी और घबराहट में उसने मुड़कर देखा और क्रोध और विस्मय में उसका चेहरा बिगड़ गया। उसे लगा कि स्क्वैड्रन के फौजी अपने घोड़े मोड़कर पीछे भागे जा रहे और उसे अकेला छोड़े दे रहे हैं। उससे थोड़ा पीछे स्क्वैड्रन का कमांडर रकाबों पर सधा खड़ा, अपनी तलवार भद्दे ढंग से भाँजता, रोता और भर्राई हुई टूटी आवाज़ में चिल्लाता रहा। सिर्फ दो कज्ज़ाक ग्रिगोरी के पीछे आते रहे। दूसरी और प्रोखोर जिकोव ने अपना घोड़ा मोड़ा और वह उसे सरपट दौड़ाता हुआ स्क्वैड्रन कमांडर के पास जा पहुंचा। दूसरे लोग तितर-बितर हो गए। अपनी तलवार म्यानों में डालते, चाबुक सटकराते और अपने घोड़े दौड़ाते हुए पीछे भागते दीखे।

ग्रिगोरी ने एक क्षण को घोड़े की रास खींची और सोचने लगा कि आखिर यह हुआ क्या? और एक आदमी के भी गिरने या मारे जाने के पहले *स्क्वैड्रन के लोग इस तरह भाग खड़े क्यों हुए? और* उसी क्षण उसने संकल्प किया—"मैं पीछे नहीं लौटूंगा···मैं लड़ाई को पीठ

दिखाकर नहीं जाऊंगा···मैं आगे-ही-आगे बढ़ता जाऊंगा।"

उसी समय सामने कोई दो सौ कदम के फासले पर, एक बाड़ के पीछे गाड़ी पर रखी मशीनगन के आसपास उसने सात लाल नौसैनिकों को कुछ इधर-उधर करते देखा। वे मशीनगन का दहाना कज्जाकों की ओर मोड़ना चाहते थे, पर काम मुश्किल नजर आ रहा था, क्योंकि गली सकरी थी। उस बीच राइफलों की आग हलकी पड़ गई, और ग्रिगोरी के सिर के ऊपर सर्राटे भरती गोलियों की गिनती घट गई। उसने एक गिरी हुई बाड़ को पार कर गली में पीछे से दाखिल होने के लिए अपना घोड़ा मोड़ा। फिर बाड़ की ओर से उसने अपनी निगाह हटा ली और सहसा ही, जैसे कि दूरबीन से सात नौसैनिकों को पास ही घोड़ों के साज खोलने के लिए झपटते देखा। काली कीचड़ में सनी जैकेटों और बिना नोकवाली चुस्त टोपियों में उनके चेहरे अजीब ढंग से गोल-मटोल फूले हुए लगे। उनमें से दो नौसैनिक गाड़ी के बम काटने लगे, तीसरा मशीनगन पर जा बैठा और बाकी झुककर या खड़े होकर अपनी रायफलों से ग्रिगोरी पर गोलियां बरसाने लगे। वह अपना घोड़ा दौड़ाता उनकी ओर बढ़ा तो उसने उनकी अंगुलियों को मशीन की तरह राइफलों के खटके दबाते देखा। गोलियों की धांय-धांय तो बिलकुल सामने से सुनी। गोलियां इतनी हड़बड़ी में दागी जातीं, और राइफलों के कुंदे इतनी जल्दी-जल्दी कन्धों पर आ-आकर टिकते रहे कि पसीने से तर-बतर ग्रिगोरी सहसा ही खुशी से खिल उठा। उसे पूरा विश्वास हो गया कि दुश्मन उस पर गोली नहीं चला पाएगा।

बाड़ ग्रिगोरी के घोड़े की टापों के नीचे चरमराई और फिर पीछे छूट गई। उसने अपनी तलवार उठाई और सबसे आगे के नौसैनिक पर अपनी नजर जमाई। पर बिजली की तरह एक आशंका उसके मन में कौंध गई—'अब उन्हें बिलकुल पास से गोली चलाने का मौका मिलेगा···वे घोड़े के ऐन सीने पर गोली मारेंगे···वह सबसे आगे का फौजी मुझे उठाकर फेंक देगा···और मेरा काम तमाम हो जाएगा।' ···इसी समय दो गोलियां उस पर चलाई गईं और एक चीख हवा में गूंजी—"हम इसे जिन्दा गिरफ्तार करेंगे।"···और ग्रिगोरी ने सामने

देखा एक दात पीसता साहस से चमकता चेहरा, खाली माथा, नौसैनिक की टोपी के रिबन और टोपी पर सोने के डोरों मे कढा जहाज का नाम ···नाम गर्द में गन्दा लगा···ग्रिगोरी ने रकाबों पर जोर दिया, घोडा फेरा···उसने अनुभव किया कि उसकी तलवार ने नौसैनिक का कोमल शरीर छेद दिया। एक दूसरे भारी बदन वाले नौसैनिक ने ग्रिगोरी के दाएँ कन्धे पर गोली चलाई और गोली मांस मे घँस गई। पर इसी समय प्रोखोर ने अपनी तलवार मे वार कर उसका सिर बीच मे दो कर दिया। ग्रिगोरी ने राइफल के खटके की आवाज पर घोड़ा मोडा तो मशीनगन की गाडी के पीछे से राइफल की एक नली की काली आँख को अपने ऊपर जमा पाया। पर, वह अपने घोडे पर इस तरह तेजी मे दाएँ बाएँ, इधर-उधर हिला-डुला और लहराया कि काठी अपनी जगह से खिसक गई, और हींसता, डर मे काँपता घोडा बिदकने लगा। गोली सिर के पास मे सरसंती गुजर गई। इसके बाद वह घोड़े मे कूदकर गाड़ी के बीच के बाम के पास पहुंचा और राइफल से दुबारा गोली भरने का मौका दिए बिना, उसने उस आदमी को काटकर फेंक दिया।

(जो क्षण ग्रिगोरी को बाद में एक युग लगा, उस) एक दूसरे क्षण के अन्दर-अन्दर उसने चार नौसैनिकों को तलवार के घाट उतार दिया। और प्रोखोर की चीख-पुकार की चिन्ता किए बिना, वह तो गली के नुक्कड के चारों ओर दौडते पाचवें नौसैनिक का भी काम तमाम कर देता; पर हुआ यह कि स्क्वैड्रन-कमाडर अपना घोड़ा दौडाता उसके ठीक सामने आ गया और उसने उसके घोडे की लगाम लपककर थाम ली।

"आप घस कहाँ रहे हैं? वे लोग आपको मार डालेंगे। उन्होंने एक दूसरी मशीनगन शेड के पास जमा रखी है।"

प्रोखोर के साथ दो और कज्जाक अपने-अपने घोडे से उतरकर ग्रिगोरी की ओर दौडे और उन्होंने उसे जबरदस्ती घोड़े मे नीचे खींच लिया। इस पर अपने को छुड़ाने की उसने बड़ी कोशिश की—"मुझे जाने दो—सुअर के बच्चो! मैं मार डालूंगा···मैं उनमे मे एक-एक को मार डालूंगा।"

"ग्रिगोरी—पंन्तेलेयेविच···कॉमरेड मेलेखोव··· होश में आइए।" प्रोखोर ने मिन्नत की।

"मुझे जाने दो, भाइयो !" ग्रिगोरी ने एक दूसरे बुझते हुए लहजे में कहा। इस पर उन्होंने उसे छोड़ दिया। स्क्वैड्रन-कमांडर ने प्रोखोर के कानों मे कहा—"इन्हें घोड़े पर सवार कर वापस ले जाओ···मेरा खयाल है कि इनकी तबीयत ठीक नही है।"

ग्रिगोरी अपने घोड़े की ओर बढने ही वाला था कि उसने अपनी टोपी ज़मीन पर पटक दी और खडा लडखडाता रहा। सहसा ही उसका चेहरा भयानक रूप से बिगड गया, मुह से कराह निकल गई और वह दात पीसते हुए अपने बरानकोट के बद खोलने लगा। स्क्वैड्रन-कमांडर ने पीछे हटकर उसकी ओर कदम बढाया कि वह जहा खडा था वही गिर पड़ा। उसका नगा सीना बर्फ के गले लग गया। रोते और इस रोने के कारण कांपते हुए वह बाढ के बीच जमा बर्फ पर कुत्ते की तरह मुह मारने लगा। फिर उसका दिमाग साफ हुआ और उसने उठने की कोशिश की। लेकिन लाभ कुछ न हुआ और अपने आस-पास खडे कज्ज़ाकों की ओर अपना आंसू से तर चेहरा कर वह जगलियों की तरह टूटी हुई आवाज मे चीखा—'किसे मारा है मैंने ?"

जीवन मे पहली बार उसे दौरा आया, उसके हाथ-पैर इस तरह ऐंठे, वह चीखा-चिल्लाया और उसके मुह से झाग निकले।

"भाइयो, मुझे माफी नही मिलेगी···मुझे मार डालो···ईश्वर के नाम पर मेरे टुकडे-टुकडे कर डालो···मुझे दूसरी दुनिया मे भेज दो···"

कमाडर और एक ट्रूप अफसर उसकी ओर दौडे। उन्होंने उसे चारो ओर से कस लिया। जल्दी-जल्दी उसकी तलवार की पेटी खोली, लडाई के सामान का थैला अलग किया, मुह पर हाथ रखा और उसके पैर सीधे किए। पर, वह उसके बोझ के बावजूद कितनी ही देर तक अपने ऐंठते हुए पैर पटकता, उनसे बर्फ उछालता और घोड़ों के खुरों के निशानो से पटी, सोना उगलने वाली, काली मिट्टी पर रह-रहकर अपना सिर पटकता रहा। इसी मिट्टी मे उसका जन्म हुआ था···इसी मिट्टी मे वह पला, बढा और रहा था···इसी मिट्टी मे उसने अपने हिस्से मे पड़ी ज़िन्दगी का पूरा रस लिया था··· लेकिन यह ज़िन्दगी है कि दुखो की इसके पास क्या कमी और सुखों का इसके पास कहाँ नाम !···इस मिट्टी मे सिर्फ घास

उगती है। यह घास धूप और बरखा को उदासीन भाव से स्वीकारती है, उससे प्राण और शक्ति लेकर पलती और बढ़ती है, और फिर तूफान की बरबादी की फुफकार के आगे विनम्रता से गर्दन झुका देती है। इसके बाद, उसकी सूखती हुई फुनगियाँ शरद के सूरज की अगवानी में लगी रहती हैं कि वह हवा को अपने बीज सौंपकर उसी तरह विरक्त मन से दम तोड़ देती है।

: ४५ :

दूसरे दिन ग्रिगोरी ने डिविजन की कमान एक रेजीमेंटल-कमांडर को सौंप दी और खुद प्रोखोर के साथ व्येशेन्स्काया के लिए रवाना हो गया। राह में एक गहरे खड्ड के ताल में उन्होंने जंगली कलहंसों का एक बहुत बड़ा जमाव देखा। प्रोखोर ने अपने चाबुक से उनकी ओर इशारा किया और बोला—'एक कलहंस का शिकार कर लो···मज़ा रहेगा, ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच ! घर पर दलिया के साथ अच्छा रहेगा।"

"जरा और पास पहुँच चलो···तब राइफल से निशाना साधूँगा।" ग्रिगोरी ने जवाब दिया।

वे दोनों खड्ड में उतरे। यहाँ प्रोखोर घोड़ों के साथ पहाड़ी के सिर पर रुक गया। दूसरी ओर ग्रिगोरी ने अपना बरानकोट उतारा, राइफल का सेफ्टी-कैच ठीक किया और पिछले साल के कूड़ा-करकट से भरे नाले में रेंग गया। फिर बिना सिर उठाए बहुत देर तक रेंगता रहा, रेंगता रहा, जैसे कि दुश्मन की किसी चौकी की जासूसी कर रहा हो। ऐसा ही तो उसने स्लोखोद नदी पर तैनात जर्मन संतरी को पकड़ने के सिलसिले में किया था। सो इस समय उसकी कमीज़ का उतरा हुआ खाकी रंग ज़मीन के हरे-भूरे रंग से मिलकर एक हो गया और नाले ने उसे पानी के किनारे एक दर में खड़े कलहंस की तेज़ निगाह से बचा लिया। इस तरह वह कायदे के निशाने की जगह तक पहुँचा और उसने अपने को थोड़ा उचकाया। कलहंस ने अपनी उजली, सर्पीली गर्दन मोड़ी और चारों ओर चौकन्नी नज़र डाली। दूसरे कलहंस पानी में तैरते और डूबते-

उतराते रहे। उनकी कीकों और पानी की बौछार की आवाज़ ग्रिगोरी के कानों में पडी। 'मैं निगाह जमाकर निशाना साध सकता हूं।' उसने सोचा और फिर राइफल कन्धे पर टिकाकर निशाना साधा तो उसका दिल धडकने लगा।

इसके बाद उसने गोली चलाई, और फिर उसके कान के पर्दे कलहंसो के परों की फडफडाहट और कातर कीकों से इस तरह फटने लगे कि उछलकर खडा हो गया। जिस कलहस को उसने निशाना बनाया था, वह उड गया और धीरज खोकर ज्यादा-से-ज्यादा ऊँचाई पर पहुंचने की कोशिश करने लगा। दूसरे कलहस भी दल बांधकर ताल के ऊपर उड़ गए। ग्रिगोरी ने चिड़ियों के बादलो पर दो गोलिया और चलाई, एक चिड़िया को गिरते हुए देखता रहा, फिर मुडा और निराश मन से प्रोखोर के पास लौट गया।

"देखो···देखो!" प्रोखोर ने उछलकर घोडे पर सवार होते, रकाबों पर सीधे खडे होते और नीले आसमान में मुरझाते कलहस की ओर चाबुक से इशारा करते हुए चीखकर कहा।

ग्रिगोरी मुडा। उसे कामयाब शिकारी की तरह रोमांच हो आया और वह खुशी से कापने लगा। दल से पीछे रह गया एक कलहस तेज़ी से नीचे उतरने और बीच-बीच मे धीरे-धीरे अपने पख फडफड़ाने लगा। ग्रिगोरी पजे के बल उचका और आखो पर हथेली की आड कर उस कलहस को देखने लगा। बीच मे उसके कपूरी पख धूप मे चमक-चमककर आखों मे चकाचौंध पैदा करने लगे। सहसा ही चिड़िया एक पत्थर की तरह ज़मीन पर आ गिरी।

प्रोखोर ने खुशी से खिलकर मुसकराते हुए अपना घोडा ग्रिगोरी की ओर बढाया और उसके घोडे की रासें उसकी ओर लोका दी। फिर दोनो साथ-साथ ढाल के किनारे चल पडे। उन्हें कलहस आगे की ओर गर्दन फैलाये पडा मिला, जैसे कि बेरहम धरती को बांहों मे भरने की कोशिश कर रहा हो। ग्रिगोरी अपनी काठी से झुका और उसने अपना शिकार उठा लिया।

"गोली इसके कहाँ लगी?" प्रोखोर ने पूछा।

पता चला कि गोली ने चिड़िया की चोंच छेद दी और उसकी आंख के गड्ढे के चारों ओर की हड्डी चूर-चूर कर दी है। दम उसका उड़ान के दौरान निकला। यानी, मौत ने उसे बाकी दल से अलग किया और धरती पर लोका दिया। प्रोखोर ने उसे काठी की कमानी में बांध लिया और उनके घोड़े आगे बढ़ दिए।

उन्होंने बाज़की गांव में अपने घोड़े छोड़कर दोन नाव से पार की।

व्येशेन्स्काया में ग्रिगोरी एक पुराने परिचित कज्ज़ाक के घर ठहरा। उसने उससे कलहंस फौरन ही पकवाने को कहा और प्रोखोर को वोदका लेने के लिए भेजा। पर स्टाफ में जाकर रिपोर्ट करने की कोई कोशिश नहीं की। वे तीसरे पहर के बाद तक बैठे शराब ढालते रहे। इस बीच बातचीत के दौरान बूढ़ा कज्ज़ाक शिकायत-सी करने लगा।

"अफसरों ने यहां बड़ी ज़मीन सिर पर उठा रखी है, ग्रिगोरी पंत्ले-येयेविच···"

"कौन-से अफसरों ने ?" ग्रिगोरी ने पूछा।

"अरे, हमारे अपने ही अफसरों ने···कुदिनोव और उसके साथियों ने।"

"करते क्या हैं वे लोग ?"

"वे गैर-कज्ज़ाकों की हड्डी-पसली ढीली किये दे रहे हैं। लाल फौजियों में जाकर मिल जाने वाले के घरों के लोगों को गिरफ्तार कर रहे हैं। औरतों, बच्चों और बूढ़ों को पकड़ रहे हैं। मेरी एक रिश्तेदार औरत को उसके बेटे के नाम पर बांध ले गए हैं। लेकिन, आखिर इससे बात क्या बनती है ? मान लो तुम कैडेटों में शामिल हो जाते और लाल फौजी तुम्हारी वजह से तुम्हारे बूढ़े बाप पंत्लेई को गिरफ्तार कर ले जाते, तो यह तो कोई इन्साफ की बात नहीं होती···है कि नहीं ?"

"बिलकुल नहीं होती !"

"लेकिन, इस वक्त तो हमारी अपनी ही सरकार यह बरताव कर रही है। लाल फौजी यहां आये तो उन्होंने किसी को किसी तरह का कोई नुक-सान नहीं पहुंचाया···लेकिन ये लोग तो जैसे पागल हो गए हैं···कहीं कोई रोकथाम ही नहीं है।"

ग्रिगोरी ज़रा लड़खड़ाता हुआ उठा और उसने हाथ बढ़ाकर पलंग के किनारे टंगा अपना बरानकोट उतारा। नशा उसे नाम-भर को ही था।··· चिल्लाकर बोला—"प्रोखोर, मेरी तलवार और पिस्तौल···"

"तुम जा कहां रहे हो, ग्रिगोरी, पैन्तेलेयेविच ?"

"तुम्हें इससे कोई मतलब नहीं···तुम वह करो जो तुमसे कहा जाता है।"

ग्रिगोरी ने अपनी तलवार और रिवॉल्वर सम्हालीं, बरानकोट की पेटी कसी और सीधा चौक में स्थित जेलखाने की ओर बढ़ा। वहां पहरेदार ने उसका रास्ता रोका और 'पास' मांगा।

"एक तरफ हो जाओ···मैं तुमसे कहता हूं।"

"मैं बिना 'पास' के किसी को अन्दर जाने नहीं दे सकता।"

लेकिन, ग्रिगोरी ने अपनी तलवार म्यान में आधी ही खींची कि सन्तरी दरवाजे से भाग खड़ा हुआ। ग्रिगोरी ने हाथ तलवार की मूठ पर रखे-रखे उसका पीछा किया।

"मुझे जेल का हाकिम चाहिये!" वह चीखा। उसका चेहरा पीला पड़ा रहा और नोकदार नाक के ऊपर की भौंहें तनी रहीं। इसी समय एक छोटे कद का कज्ज़ाक मचकता हुआ उसकी ओर भागा आया। एक क्षण बाद नींद में डूबा गुस्से से लाल जेल का हाकिम सामने आया।

"तुम जानते हो कि बिना 'पास' के···" वह गरजा, ग्रिगोरी को पहचानते और उसके चेहरे पर नज़र गड़ाते ही उसकी ज़बान लड़खड़ा गई—"आप हैं···आपका···यानी, आप हैं कॉमरेड मेलेखोव? क्या चाहिए आपको?"

"चाहिए तहखानों की कुंजियां!"

"तहखानों की कुंजियां?"

"हां, हां, तहखानों की कुंजियां···क्या यह बात मुझे हज़ार बार दोहरानी होगी? मुझे चाभियां दो, कुत्ते के बच्चे!" ग्रिगोरी जेल के हाकिम की ओर बढ़ा। हाकिम पीछे हटा, पर दृढ़ स्वर में बोला—"मैं आपको चाभियां नहीं दे सकता···आपको हक नहीं है···"

"ठीक!" ग्रिगोरी ने दांत पीसे और अपनी तलवार खींची, तो

बरामदे की नीची छत के नीचे सीटी-सी बज उठी। इस पर क्लर्क और वार्डर डरी हुई गौरैयों की तरह देखते-देखते हवा हो गए और जेल का हाकिम दीवार से सट गया। उसका चेहरा दीवार के चूने से ज्यादा सफेद हो गया। वह दांत भींचे-ही-भींचे जैसे फुफकारा—"चाभियाँ यह रहीं··· मगर मैं इसकी शिकायत करूँगा।"

"मैं तुम्हें शिकायत करने का खासा मौका भी दूंगा। तुम पीछे से कार्रवाई करने के बहुत आदी हो। बड़े बहादुर हो। औरतों और बूढ़ों को गिरफ्तार करते फिरते हो। मैं तुम लोगों को झकझोरकर रख दूँगा। गुम्म यहाँ के, घोड़े पर सवार हो और मोर्चे पर जाओ वरना जहाँ खड़े हो, मैं तुम्हें यहीं काटकर फेंक दूंगा।" ग्रिगोरी ने तलवार म्यान में डाल ली और उस पर भरपूर मुट्ठी जमाकर उसे घुटनों से बाहर के दरवाजे की ओर ठेल दिया। गरजा—"मोर्चे पर आओ! जाओ! मोर्चे पर जाओ··· मौत ले जाए तुम्हें···पीछे रहने वाले जुएँ हो तुम!"

उसने उस आदमी को बाहर अकेला और जेल के अन्दर के अहाते से आहट पाकर उस ओर दौड़ा। बावर्चीखाने के दरवाजे पर तीन वार्डर खड़े दीखे। उनमें से एक के हाथ में जंग लगी एक जापानी राइफल थी और वह हड़बड़ी में चिल्ला रहा था—"जेल पर हमला हो गया है···हमें हमला करने वाले को यहाँ से मार भगाना चाहिये···पुराने कानून इस मामले में क्या कहते हैं?"

ग्रिगोरी ने अपना रिवॉल्वर निकाला और वार्डर सिर के बल बावर्चीखाने में भागे।

"बाहर निकलो तुम सब···और अपने-अपने घर गावों को जाओ!" ग्रिगोरी कुल मिलाकर कोई सौ लोगों से ठसाठस भरे तहखानों के दरवाजे खोलते और कुंजियों का गुच्छा हिलाते हुए बोला। उसने सभी कैदियों को रिहा कर दिया, जो डरे उन्हें घसीटकर सड़क पर पहुँचाया और खाली तहखानों में ताला लगा दिया।

इस बीच जेल के फाटक पर भीड़ जमा होने लगी। रिहा कैदी चौक में उमड़े और फिर जल्दी-जल्दी अपने-अपने घरों के लिए रवाना हुए। गारद के कज्जाक स्टाफ-हेडक्वार्टर्स से भागे आये। कुदिनोव उनके साथ

नजर आया।

खाली जेलखाने से सबसे आखिर में बाहर आया ग्रिगोरी। वह भीड़ के बीच से गुजरा तो उसने उत्सुक चहचहाती औरतों की भीड़ की ओर देखकर गालियाँ दीं और झुककर धीरे-धीरे कुदिनोव की ओर बढ़ा। चौक के उस पार से इस पार दौड़ते गारद के लोगों ने उसे पहचाना और उसका अभिवादन किया। उसने चिल्लाकर उनसे कहा—"जवानो, अपने क्वार्टरों को लौट जाओ···इस तरह दौड़-भाग क्यों कर रहे हो?···क्विक मार्च!"

"हमने तो सुना कि जेल में गदर हो गया है, कॉमरेड मेलेखोव!"

"झूठी अफवाह है।" उसने उत्तर दिया।

कज्जाक मुड़े और हँसते और आपस में बातें करते हुए लौट दिये। कुदिनोव अपने बाल ठीक करता और उन पर हाथ फेरता ग्रिगोरी के पास आया।

"हलो, मेलेखोव, क्या मामला है?" कुदिनोव ने पूछा।

"तुम तन्दुरस्त रहो, कुदिनोव! मैंने अभी-अभी तुम्हारे जेलखाने का ताला तोड़ डाला है।"

"किस लिए? यह तमाशा क्या है?"

"मैंने सारे कैदियों को छोड़ दिया है···तुम इस तरह घूर क्या रहे हो? आखिर औरतों और बूढ़ों को तुम सब किस जुर्म के नाम पर इस तरह गिरफ्तार करते रहे हो? आखिर तुम्हारा यह तमाशा क्या है?"

"अपनी ही लकीर के फकीर बनने की कोशिश न करो। तुम मनमानी-घरजानी कर रहे हो।"

"मैं मनमानी-घरजानी कर अभी तुम्हें कब्र में पहुँचाकर दम लूँगा, समझे! कारगिस्काया जाकर अभी अपनी रेजीमेंट ले आऊँगा और तब तुम मेरी सही मनमानी-घरजानी देखोगे।" ग्रिगोरी ने सहसा ही लपककर कुदिनोव की चमड़े की कानेशियाई पेटी थाम ली, और गुस्से से लड़खड़ाते हुए सधे स्वर में बोला—"अगर कहो तो अभी मैं तुम्हारा सीना चाक कर दूँ और कहो तो यहीं खड़े-खड़े अभी तुम्हारा कलेजा चीरकर रख दूँ।"

उसने दाँत पीसे और शांत भाव से मुस्कराते कुदिनोव की पेटी की पकड़ ढीली कर दी। बोला—"खीसें किस बात पर बा रहे हो?"

कुदिनोव ने पेटी ठीक करते हुए ग्रिगोरी का हाथ थामा—'आओ, मेरे कमरे में चलो! आखिर तुम इस तरह उबल किस बात पर रहे हो? जरा देखो तो इस वक्त तुम लग कैसे रहे हो! खुद शैतान जमीन पर उतर आया हो जैसे! हम तो तुम्हारे यहाँ आने का इन्तजार देखते रहे हैं। जहाँ तक जेलखाने का सवाल है, वह कोई ऐसी बात नहीं है। तुमने कैदियों को छोड़ ही तो दिया न!···ठीक···ऐसा कोई नुकसान नहीं कर दिया। मैं जवानों से कह दूँगा कि जिन औरतों के आदमी लाल फौजों में हों, उन्हें जहाँ तक बने गिरफ्तार न करें। लेकिन, तुम हमारी रोब-दाब और ताकत पर इस तरह कीचड़ क्यों उछाल रहे हो?···उफ, ग्रिगोरी, तुम बहुत ही तेज और जिद्दी आदमी हो। तुम हमारे पास आ सकते थे, हमसे कह सकते थे कि इन कैदियों को छोड़ दिया जाना चाहिये। हम फेहरिस्त देखते और कुछ लोगों को रिहा कर देते···लेकिन तुमने एक तरह से सभी को छोड़ दिया···यह तो खैरियत समझो कि हम बड़े मुजरिमों को अलग रखते हैं···अगर वहीं तुम उन्हें छोड़ देते तो तुम्हारा क्या, सिरफिरे हो तुम!" उसने ग्रिगोरी के कन्धे पर हाथ मारा और हँसा—"क्या अजब है कि इस घड़ी जो तुमसे असल की बात करेगा उसे मार डालोगे या इससे भी बदतर करोगे कि कज्जाकों को भड़काना शुरू कर दोगे···।" ग्रिगोरी ने कुदिनोव की पकड़ से अपना हाथ छुड़ाया और स्टाफ-हेडक्वार्टर्स के दरवाजे पर ही ठिठक रहा—

"हमारी पीठ फिरते ही तुम सब यहाँ बड़े बहादुर बनने लगे हो—तुमने लोगों को जेल में ठूँस दिया है। जरा वहाँ मोर्चे पर चलकर अपनी अक्ल और हाथ दिखलाओ, तो जानें!"

'अपने जमाने में हमने भी तुमसे कुछ कम जौहर नहीं दिखलाया है, और अब भी मैं हिचकता नहीं···आओ, तुम यहाँ मेरी जगह ले लो और मैं तुम्हारा डिविजन सम्हाले लेता हूँ।"

"नहीं, शुक्रिया!"

"देखा न···"

"लेकिन, इन बेकार की बातों मे हम अपना वक्त महज खराब कर रहे हैं। मैं घर जाकर आराम करना चाहूँगा। तबीयत जरा ढीली है···और, यह भी है कि मेरा कन्धा गोली से जख्मी हो चुका है।"

"यह तबीयत तुम्हारी ढीली क्या है ?"

"जी घबराता है।" ग्रिगोरी व्यग्य मे मुस्कराया—"मुझे घबराहट होती है, मन ठीक नही है।"

"वैसे मजाक की बात अलग है···लेकिन, आखिर बात क्या है ? हमारे यहाँ एक डॉक्टर कैद है···शायद प्रोफेसर भी रहा है कभी···श्मिलिन्स्काया के जहाजियो के साथ था···खासा बड़ा आदमी मालूम होता है···काले चश्मे लगाता है···वह तुम्हें देख सकता है।"

"ऐसी-तैसी मे जाए वह !"

"खैर, तो घर जाओ और थोड़ा आराम कर लो।···पर, डिविज़न तुमने किसे सौंपा है ?"

"र्याबचिकोव को।"

"लेकिन, जरा ठहरो न···ऐसी भी क्या जल्दी है ? कुछ मोर्चे के हाल-चाल सुनाओ। हमने कल सुना कि तुमने क्लिमोवका मे अनगिनती जहाजी मार डाले। यह खबर ठीक है ?"

"अलविदा !" ग्रिगोरी चल दिया, लेकिन कुछ कदम जाने पर मुड़ा और चिल्लाकर बोला—"अगर मैंने सुना कि तुमने फिर लोगों को गिरफ्तार करना शुरू किया है तो···"

"नही···फिक्र न करो ! जाओ चैन से आराम करो !"

दिन सूरज के पीछे-पीछे पश्चिम की ओर बढता रहा। दोन की तरफ से हड्डी कँपा देने वाली हवा के ठडे झोके आये। मुर्गाबियों का एक दल सर्राटे भरता ग्रिगोरी के सिर के ऊपर से गुज़रा। उनके पखो से सीटियाँ-सी सुन पडी। फिर, घोडो के अस्तबल की ओर से ग्रिगोरी अहाते मे घुसा कि दोन के ऊपरी हिस्से मे आती तोप की आवाज उसके कानो मे पडी।

प्रोखोर ने घोडो पर जल्दी-जल्दी जीनें कसीं और उन्हे बाहर लाकर पूछा—"अब कहाँ चलोगे, तातारस्की ?"

ग्रिगोरी ने रासें अपने हाथों में ले लीं और मुंह से कुछ बोले बिना सिर हिलाया।

: ४६ :

तातारस्की कज़्ज़ाकों के बिना बड़ा उदास-उदास और खाली-खाली-सा था। तातारस्की के लोगों का एक पैदल स्क्वैड्रन बनाकर दोन के पार भेज दिया गया था और उसे फिलहाल पांचवीं डिविज़न की एक रेजीमेंट में जोड़ दिया गया था।

लाल फौजों को कुमक मिल चुकी थी। उन्होंने उत्तर-पूर्व से ज़ोर-शोर से हमला कर कई गांव जीत लिए थे और वे येलान्स्काया की ओर बढ़े थे। पर, इसके बाद से दांत-से-दांत बजा देने वाली जो लड़ाई हुई थी, उसमें जीत विद्रोहियों की हुई थी। इसका कारण यह था कि लाल सेना के मास्को-रेजीमेंट को सामने पाकर पीछे हटती येलान्स्काया और वुका-सेवस्काया की रेजीमेंटों को भी ताकतवर कुमक मिल चुकी थी। पहली डिविज़न की चौथी विद्रोही रेजीमेंट को, तातारस्की के एक स्क्वैड्रन, तीन तोपोंवाली एक बैटरी और घुड़सवार फौजियों के दो रिज़र्व स्क्वैड्रनों के साथ दोन के बाएं किनारे-किनारे येलान्स्काया भेज दिया गया था। साथ ही येलान्स्काया के लगभग सामने, दोन के दाए किनारे के गांव में ज़ोरदार कुमक जमा कर दी गई थी। श्रीन्स्काया की पहाड़ी पर एक बैटरी जमा दी गई थी और अपने निशाने के लिए प्रसिद्ध उसी गाव के एक कज़्ज़ाक ने अपने पहले गोले से ही लाल सेनाओं का मशीनगनों का जाल तार-तार कर दिया था। इसके अलावा फटनेवाली गोलियों से भरे दो-तीन बमों से लाल सैनिक बेंत की झाड़ियों में जा छिपे थे। इस तरह जीत का सेहरा विद्रोहियों के सिर पर रखकर लड़ाई खत्म हुई थी।

फिर यों हुआ कि विद्रोहियों ने येलान्का नदी के पार पीछे हटती लाल टुकड़ियों को जी भर दबाया और घुड़सवार सेनाओं के ग्यारह स्क्वैड्रन उनके पीछे भेजे। इन स्क्वैड्रनों ने ज़ातोलोव्स्की गांव के पास की पहाड़ी पर लाल सेना के पूरे-के-पूरे एक स्क्वैड्रन को पकड़ा और काटकर फेंक दिया।

इस लड़ाई के बाद तातारस्की के पैदल लड़ाकू दोन के बाएं किनारे बलुही पहड़िया मभाते रहे। शायद ही उनमें से कोई कभी छुट्टी पर घर न आया। केवल एक बार ऐसा हुआ कि ईस्टा पर जैसे कोई गुप्त समझौता कर, तातारस्की पैदल कम्पनी के पूरे आधे लोग गांव को लौट आए। उन्होंने बस एक दिन वहां बिताया। इस तरह कपड़े बदले, सुअर के नमकीन मांस की चरबी, डबलरोटी के सूखे टुकड़े और खाने-पीने की दूसरी चीजें ली, लकुटियों के बजाय राइफलें हाथ में लेकर तीर्थयात्रियों के बड़े दल की तरह दोन पार की ओर येलान्स्काया जिले की ओर बढ़े। उनकी बीवियां, माँएं और बहनें उन्हें पहाड़ी की चोटी से देखती रहीं। ये स्त्रियां सन्ताप से बिलखती, रूमालों और शॉलों के सिरों से अपनी आखें पोंछती और समीज के सिरों मे नाकें छिनकती रहीं। दूसरी तरफ, दोन के दूर के किनारे पर, बालू के ढोकों के ऊपर कज़्ज़ाक मार्च करते रहे—ख्रिस्तोन्या, अनीकुश्का, पैन्तेली-प्रोकोफियेविच, स्तेपान-अस्ताखोव और दूसरे लोग। राइफलों में सधी सगीनों पर खाने की चीजों से भरे उनके थैले लटकते रहे। हवा, उनके उदासी से भरे गानों के स्वरों को जगली अजवाइन की महक की तरह, दूर पहुचाती रही। वे आपस मे जाने कितने-कितने विषयों पर बातें करते रहे। अधिकाश यों चलते रहे जैसे कि उनमें दम न हो। पर, यों वे साफ-सुथरे थे और उनके पेट भरे हुए थे। त्योहार के पहले उनकी पत्नियों और माताओं ने पानी गरमाया था, मैल की पपड़ियों वाले उनके बदन रगड़-रगड़कर साफ किए थे, और खून मे फूली हुई जुएँ उनके बालों से निकाली थी। सवाल उठा था कि क्यों न घर पर ही रहा जाए और जिन्दगी के मजे लिए जाए ? लेकिन नहीं, उन्हें तो मौत का सामना करना था और वे चल पड़े हुए थे। उनमें सोलह-सत्रह साल के लड़के भी थे। उन्हें अभी-अभी विद्रोहियों की सेनाओं के लिए भरती किया गया था। वे अपने बूट और सैंडिल उतारकर गरम बालू पर नगे पैरों चलते खुशी का काम जाने बिना ही खुश दीखते, खुशी से खिलकर बातें करते और अपने अल्हड़ स्वरों मे गीत छेड़ देते। उन्हें लड़ाई किसी नए खेल-सी लगती। लड़ाई के शुरू-शुरू मे वे कड़ी धरती …से अपने सिर उठा लेते और ऊपर सरसराती गोलियों की सीटियां

सुनते। मोर्चे के कज्जाक उन्हें खाइयां खोदना, गोली चलाना, मार्च के समय सामान ले चलना, बालों से जुएं निकालना, और भारी बूटों के कारण तकलीफ महसूस न करने के लिए पैरों में कपड़े बांधना तक सिखलाते तो नफ़रत से भर उठते और 'हरा मुस्ता'[1] के नाम से बुलाते। लेकिन इस बीच कोई हरा मुस्ता अपने चारों ओर की दुनिया को चिड़िया की-सी निगाहों से अचरज से देखता। वह अपना सिर उठाता, उत्सुकता के आवेग में खाई के बाहर नज़र गड़ाता और लाल फौजियों को देखने की इस तरह ताबड़तोड़ कोशिश करता कि किसी लाल सैनिक की गोली उसे अपना निशाना बना लेती। अब अगर मौत हिस्से में पड़ जाती तो भरे हुए बाजुओं, भद्दे-से कानों और पतली गर्दन में फूटता हुआ कंठ लिये वह सोलह साल का फौजी अपने हाथ-पैर फैला देता और एक महान् बालक की तरह चिर-निद्रा में डूब जाता। उसके बाद उसे उसके गांव ले जाया जाता और जहां उसके पुरखे सड़ रहे होते, उसी कब्र में उसे भी दफ़नाने की तैयारी की जाती। उसकी मां अपने हाथ मलते हुए उससे मिलने आती, उसकी लाश पर गिरकर गला फाड़-फाड़कर रोती और सिर के सफ़ेद बाल नोचती। फिर लड़के को दफ़ना दिया जाता और कब्र के ऊपर का ढूह सूखने लगता तो बुढ़िया कमर झुकाकर अपना लाइलाज दर्द लेकर गिरजे में जाती और अपने 'मर गए और दुनिया से उठ गए' बेटे की याद में आंसू के फूल चढ़ाती।

पर अगर कहीं ऐसा होता कि गोली तो लगती, मगर जान बच जाती तो लड़का लड़ाई की भयानकता का अनुभव करने लगता। उसके होंठ कांपते और ऐंठते। 'फौजी' बचकानी आवाज़ चीखता—"उफ़···मां··· मेरी मां!" और उसकी आंखों से नन्हे-नन्हे आंसू बहने लगते। इसी बीच बिना लीकों के खेत में झाते एम्बुलेंस की गाड़ी आ जाती, कम्पनी का मेडिकल अफ़सर उसके घाव धोता और हंसते हुए उसे इस तरह धीरज बधाता जैसे कि छोटा-सा बच्चा हो—"देखो वान्या, अब मरने का नाम कभी न लेना!" लेकिन फौजी वान्या आठ-आठ आंसू रोता, घर जाने

---

[1] कीचड़ या पानी के किनारे उगनेवाला घास की तरह का एक पौधा।

की बात करता और मा की गुहार लगाता। आखिरकार अगर वह ठीक ही जाता तो सचमुच ही लडाई के राज़ को पूरी तरह समझने लगता। फिर एक-दो हफ्ते की लड़ाइयां और सगीनों की मुठभेड़ें उसे पक्का कर देती। वह किसी कैदी लालफौजी के सामने टाग फैलाए खड़ा नजर आता, किसी खूंखार सार्जेंट-मेजर की तरह थूकता और दात भीचकर फुफकारता—"हा तो किसान, पकड़ गया तू! दोगला कही का!···यानी, हुजूर जमीन चाहते थे? बराबरी चाहते थे? मेरा खयाल है कि कम्युनाक हो तुम···बतलाओ, हमें अपने राज़ बतलाओ···साप हो तुम!" इतना ही नहीं, अपनी हिम्मत और बहादुरी का सिक्का जमाने के लिए कज़्ज़ाक राइफल उठाता और उस आदमी को गोली मार देता, जो सोवियत सरकार, कम्युनिज्म और धरती से लड़ाई के खात्मे के लिए लड़ता हुआ दोन की धरती पर जीता और दोन की धरती पर दम तोड देता।

दूसरी तरफ महान् सोवियत रूस के मास्को या व्यात्का प्रदेश के किसी एकाकी गाव मे किसी मा को खबर मिलती—'तुम्हारा बेटा मेहनतकशो को जमीदारों और पूंजीपतियो के जुएं से छुटकारा दिलाने के लिए श्वेतगार्दों से लोहा लेते-लेते खेत रहा।"···उसके गालों पर आंसुओं की धार बह चलती और वह उस समाचार को बार-बार पढ़ती। मा के कलेजे मे आग-सी सुलगने लगती, उसका दिल दर्द से फटने लगता और अपनी आखिरी सांस तक अपने उस बेटे के लिए कलपती रहती। सोचती, मैंने उसे इतने महीने अपनी कोख मे रखा, अपने खून से बडा किया और कितनी-कितनी तकलीफें नही उठाई और नही सहीं, और वही दोन के किसी अनजाने कोने में दुश्मन के वार का शिकार हो गया!···

तातारस्की की आधी पैदल कम्पनी बालू के ढोकों और लाल बेतों के ऊपर से मार्च करती गई। इस सिलसिले मे कम उम्र के लोग सोच-विचार मे डूबे बिना खुश-खुश आगे बढ़ते जाते, पर सयानी उम्र के लोग आहें भरते और उनकी आंखो की कोरों मे अनदेखे आसू छिपे रहते। बात यह है कि यह समय जुताई, निराई और बोआई का था और उनकी धरती दिन-रात उनकी गुहार करती थी; लेकिन उन्हें जाना था, चाहे

या अनचाहे लड़ाई मे हिस्सा लेना था और वरवस अपने ऊपर लादे गए निकम्मेपन, डर, चीजों की कमी और कलप और तडप के वातावरण मे अजीब-अजीब भावों में तिल-तिलकर घुलना था। यही कारण है कि दाढीवाले कज्जाकों की आखें रह-रहकर भर आती थी और मार्च करते-करते वे उदास हो उठते थे। उनमें से हर एक को याद आ जाते थे अपने छूटे हुए फार्म, अपने ढोर और अपने कामकाज की चीजें। उसे लगता कि हर चीज को एक हाथ की दरकार है और मालिक की निगाह सामने नहीं है तो हर चीज की आखों मे आसू हैं···आखिर एक अकेली औरत कितना और क्या कर लेगी?···जमीन सूख जाएगी···बीज में कल्ला नही फूटेगा और अगले साल अकाल पड़ने का डर पैदा हो जाएगा···कोई यों ही तो नहीं कहा गया कि खेत पर झेंपू लड़की से कहीं ज्यादा काम का तो मेहनती बूढा साबित होता है···।

इस तरह बुजुर्ग बालू पर चुपचाप चलते गए। उनमे थोडी गरमी तब आई जब साथ के किसी छोकरे ने किसी खरगोश को गोली मार दी। उन्होंने अच्छी-खासी गोली की इस तरह की बरबादी के लिए उसे सजा देने का फैसला किया, क्योंकि विद्रोही फौजों के कमांडर ने हुक्म निकालकर इस तरह के कामों की बिलकुल मनादी कर रखी थी। वे लडके पर बरस पड़े। पंन्तेली ने सुझाव पेश किए—"इसे चालीस बेंत लगाए जाएँ।"

"बहुत ज्यादा होंगे···उसके बाद वह मोर्चे तक पहुंच न पाएगा।"

"तो सोलह ही सही," ख्रिस्तेन्या गरजा।

फैसला सोलह बेंतों का हुआ। उसके बाद लड़का रेत पर लिटाया गया और उसकी पतलून उतारी गई। ख्रिस्तोन्या ने किसी गाने की कोई पंक्ति गुनगुनाते हुए बेंत तोड़े और अनीकुश्का ने सजा देने का काम शुरू किया। दूसरे लोग चारों तरफ बैठे धुआ उड़ाते रहे। इसके बाद फिर मार्च शुरू हुआ। सबके पीछे अपने आंसू पोंछता और पतलून की पेटी कसता घिसट चला बेंत खानेवाला।

फिर वे ज्यों ही बलुहे बीराने के सिरे पर पहुँचे और खेतीबारी के लायक जमीन सामने आई, उनके बीच युद्ध के अन्त और शांति की चर्चा

छिड़ गई।

वह रही···हमारी प्यारी दुलारी जमीन···अपने मालिक के इन्तजार में···और मालिक है कि उसके पास उसके लिए वक्त ही नहीं है···वह, शैतान ही जानता है कि क्यों, पहाड़ियों पर पहाड़ियाँ और घाटियों पर घाटियां छानता फिर रहा है—सूखी हुई मिट्टी की एक टुकड़ी की ओर इशारा करते हुए एक बूढे ने आंख भरकर कहा।

यानी वे जुती हुई जमीन के पास से निकले तो उनमें से हर एक ने झुककर मिट्टी का सूखा, धूप में तपा हुआ एक ढोंका उठाया और हथेली पर रखकर मला। अन्तर कराह उठा—"जमीन तैयार है···"

"यही वक्त है जुताई का···"

"तीन दिन और निकल जाने दो, फिर यहां बोआई हो नहीं सकेगी।"

"दोन के हमारे इलाके में बहार इस बार कुछ पहले आ गई है।"

"कुछ पहले कैसे! जाकर देख आओ, नाले-नालियों में अब भी बर्फ पड़ी है।"

दोपहर का समय हुआ और वे आराम करने को रुके। अब प्रोकोफियेविच ने उस सजावार लड़के को थोड़ा दही खाने को दिया। दही राइफल की नली में लटकी लिनेन की थैली में वह साथ लाया था और रास्ते-भर थैली से पानी चूता रहा था। इस पर अनीकुश्का ने उसे छेड़ा था—बूढ़े बैल की तरह अपने पीछे अपना निशान छोड़ते जा रहे हो, प्रोकोफियेविच! सो वही दही लड़के को देते हुए पंन्तेली बोला—'तुम्हें अपने बड़ों से नाराज नहीं होना चाहिए। बेवकूफ कहीं के! तुम्हें बेंत लगाये गए है, पर इसमें तकलीफ की ऐसी कोई बात नहीं है। तुम्हें मालूम है, जिसे बेंत लगा दिए जाते है वह एक बेंत न खानेवाले दो के बराबर गिना जाता है।"

"ठीक है, चाचा पंन्तेली···मगर मेरे बजाय यह बेंत तुम्हे लगते न, तो तुम दूसरे ही लहजे में बात करते।"

"मैंने इससे कहीं ज्यादा कुछ देखा-सुना और सहा है, मेरे बच्चे! मेरे बाप ने एक बार गाड़ी के बम से मुझे मारा···"

"गाड़ी के बम से!"

"कहा न, गाही के बम से !···तुम मेरा दिया दही खा रहे हो···है न ? तो फिर वहम किस लिए कर रहे हो ? तुम्हारे चम्मच का हत्था कहा है ? तोड दिया···है न ?···कुत्ते के बच्चे···तुम्हें खाने-भर को आज सुबह नही मिला।"

तो खाने के बाद उन लोगों ने वसन्त के दिनों की तेज हवा का मजा लेते हुए आराम किया। वे धूप की तरफ पीठ कर थोडी देर को ओंघाए और फिर चल पड़े—भूरे-से स्तेपी मैदान के अनजुते खेतों के ठूँठों के ऊपर से होते हुए।

उन्होंने पहने रखे थे ट्युनिक, बरानकोट और चरवाहों के कोट या ओढ रखी थी भेड़ों की खालें। कुछ के पैरों में बूट थे। कुछ के पैरों मे सैंडिल। बाकी के पैर नंगे थे। उनके खाने के थैले संगीनों पर झूल रहे थे।

इस तरह विद्रोहियों के इस स्क्वैड्रन के लोग देखने-सुनने और चाल-ढाल से बहुत ही गैर-फौजी लगते, यहाँ तक कि वे मार्च करते तो नीले आसमान को अपने स्वरों से गुंजाती लवा चिड़िया उनके पैरों की धमक से धरती पर आ गिरती।

ग्रिगोरी को गाव मे एक कज्जाक न मिला। दूसरे दिन सवेरे उसने अपने सयाने हो रहे बेटे मिशातका से घोडे को नदी पर ले जाकर पानी पिला लाने को कहा और खुद नताल्या के साथ ओरका बाबा और अपनी सास से मिल आने को चल पडा।

लुकीनीचिना ने उन दोनों का आसुओं से स्वागत किया। "ग्रिशा बेटे, हम तो मिरोन के बिना मिटकर रह जाएँगे। भगवान् उसकी आत्मा को शांति दें···हमारे खेतों पर खेती अब कौन करेगा ? खत्तियां बीजों से भरी पड़ी हैं, मगर बोआई करानेवाला कोई नही है। हम यतीम होकर रह गए हैं। कोई हमारी बात नहीं पूछता···हम हर एक के लिए अज-नबी हो गए हैं। देखो न, हमारा फार्म किस तरह चौपट हो रहा है। हम तो अब कहीं कुछ करा ही नही पाते।"

और सचमुच ही फार्म तेजी से चौपट हो रहा था। अहाते गन्दे और सड़ायंध से भरे थे, उनकी बाड़ों को ढोरों ने कुचल डाला था, शेड की

मिट्टी की दीवार वसन्त के पानी ने बहा दी थी, खलिहान में कहीं कोई बाड न रह गई थी, और जग लगी टूटी मशीनें जहाँ-तहाँ बिखरी पड़ी थी। हर तरफ मायूसी और बरबादी का बोलबाला था।

बिना मालिक के चीजें देखते-देखते तीन-तेरह हो गई हैं—ग्रिगोरी ने फार्म के अहाते का चक्कर लगाते हुए तटस्थ भाव से सोचा। वापस आया तो उसने नताल्या को मा के कानों में फुसफुसाकर कुछ कहते देखा। लेकिन उसे देखते ही वह चुप हो गई और उसके होंठों पर खुशामद से भरी मुसकान दौड़ गई। बोली—"माँ अभी कह रही थी कि कल तुम खेतों पर चले जाओ और न हो तो एक एकड़ को ही बोआई पूरी कर दो।"

"लेकिन मां बोआई क्या चाहती है?" उसने पूछा—'तुम्हारी गुआर के बीज मे गेहूँ भरे पड़े है।"

लुकीनीचिना ने अपने हाथ बजाए—"लेकिन, ग्रीशा, जमीन का क्या होगा? हमारा मीरोन जिन्दा था तो कितनी ही जमीन की बोआई कर डालता था?

"खैर, तो अब उस जमीन का क्या, वह पड़ी रहेगी…और हो क्या सकता है? अगर हम सब सही-सलामत रहे, तो इस पतझर मे उसकी बोआई होगी।"

"लेकिन, जमीन को बरबाद आखिर हम कैसे होने दे सकते हैं?"

"लडाई के मोर्चे जरा पीछे हट जाएँ तो बोआई हो जाएगी" ग्रिगोरी ने अपनी सास को समझाने की कोशिश की। लेकिन लुकीनीचिना अपनी ज़िद पर अड़ी रही और आखिरकार अपने कांपते हुए होंठ सिकोड़ती हुई बोली—"ठीक है, अगर तुम्हारे पास वक्त नही है तो…मालूम होता है कि तुम हमारी मदद करना नही चाहते।"

"अच्छा, तो रहा…कल सारा कुछ देख लिया जाएगा, और फिर आपकी दो एकड की बोआई मैं पूरी कर दूंगा। मेरा खयाल है कि इतना काफी होगा।…ग्रिश्का-बाबा तो सही-सलामत है?"

"शुक्रिया…शुक्रिया!" लुकीनीचिना एकदम खिल उठी—"मैं एग्रीफीना से कह दूँगी और बीज तुम्हारे पास पहुंच जाएँगे…और, हाँ, बाबा!

अभी भगवान् ने उन्हें नहीं पूछा। वे अभी जिन्दा हैं, पर उनका दिमाग जरा यों ही हो गया है···दिन-रात घर में बैठे बाइबिल वगैरह पढ़ते रहते हैं···कभी-कभी बातें करने पर आते हैं तो बेरोकटोक बोलते चले जाते हैं···बेमतलब···जवान गिरजे की होती है। तुम चाहो तो जाओ और उनसे मिल आओ···सामने वाले कमरे में हैं।"

"मैं अभी-अभी उनसे मिली थी···" नताल्या आंसुओं के बीच मुसकराती हुई बोली—"मुझसे कहने लगे—रानी-बिटिया, तू तो कभी यहां आती ही नहीं···मैं अपनी पोती के लिए ईश्वर से अरदास करूंगा कि वह तुझे हमेशा खुश रखे! जहां तक मेरा सवाल है, मेरे दिमाग में तो हर वक्त ज़मीन की गहराइयां नाचती रहती हैं, नताल्या! धरती मुझे आवाज दे रही है। काफी उम्र हुई···अब तो···!"

ग्रिगोरी बूढ़े से मिलने गया। उसकी सांसों से बुढ़ापे और जिन्दगी के आखिरी दिनों का संकेत मिला। ग्रिश्का ने अब भी, कॉलर की लाल पट्टियोंवाली, अपनी ट्युनिक पहन रखी थी। पतलून ठीक-ठाक थी। ऊनी मोज़े रफ़ू किये हुए थे। नताल्या की शादी के बाद से बूढ़े की देख-रेख का भार उसकी छोटी पोती एग्रिप्पना पर आ गया था और वह नताल्या की तरह उसकी पूरी चिन्ता करती थी। इस समय उसके घुटनों पर बाइबिल रखी हुई थी। सो, उसने चश्मे के नीचे से ग्रिगोरी पर निगाह डाली, मुंह खोला और मुसकराया तो दांत झलकने लगे। बोला—"अब भी ठीक-ठाक हो—फौजी। ईश्वर ने गोलियों के बीच भी तुम्हारा बाल बांका नहीं होने दिया, उसका लाख-लाख शुक्र!··· बैठो!"

"बाबा, अच्छे तो हैं?"

"क्या?"

"मैंने कहा कि आप अच्छे तो हैं?"

"तुम भी अजीब लड़के हो···सचमुच अजीब लड़के हो! मैं इस उम्र में अच्छा कैसे हो सकता हूं? अब तो सौ का हो रहा हूं। हां, सौ साल पूरे हो रहे हैं···अभी कल तो लगता था कि मैं जवान हूं और जवानों और रईसों का एक जमघट मेरे साथ है···और, आज सबेरे आंख

खुली तो ऐसा लगा जैसे कि मैं एकदम मौत के दरवाज़े पर पहुँच गया हूँ। जिन्दगी बिजली के कौंधे की तरह आंखों से ओझल हो गई है ।··· मेरा ताबूत इतने-इतने सालों से शेड में रखा है, लेकिन ईश्वर है कि जैसे उसे मेरा खयाल ही नहीं है। कभी-कभी मैं प्रार्थना करता हूँ—"भगवान, अपने इस ग्रीश्का पर मेहरबानी करो···मैं ज़मीन के लिए बोझ बन रहा हूँ, और ज़मीन मेरे लिए बोझ बन रही है।"

"अभी बहुत दिन जियेंगे बाबा ! अभी तो आपके सारे दांत साबित है।"

'यह क्या कह रहे हो तुम ?"

"ठीक ही तो कह रहा हूँ···अभी तो आपके इतने दात है !"

"दात ! बेवकूफ हो तुम, बच्चे !" ग्रीश्का नाराज़ हो उठा—"जब रूह बदन से निकलने पर आएगी तो दात उसे रोक नहीं लेंगे !··· तो, तुम्हारी लडाई अभी चल रही है ?"

"हा, चल रही है।"

"यही तो मैंने कहा···लेकिन, तुम सब आखिर लड़ क्यों रहे हो ? शायद तुम लोग खुद नहीं जानते। यहाँ जो कुछ होता है, उसी परमात्मा के इशारे पर होता है। हमारा मिरोन आखिर क्यों मरा ? वह मरा क्योंकि वह परमात्मा के खिलाफ गया और उसने लोगों को सरकार के खिलाफ उभारा। बात यह है कि हर सरकार ईश्वर की भेजी हुई होती है। ईसा की खिलाफत करने वालों की सरकार होती है, तो भी ईश्वर की बनाई हुई होती है। मैंने तो मिरोन से कहा था—"मिरोन, लोगों को लालच में न फसाओ ! उन्हे सरकार के खिलाफ न उकसाओ।"···लेकिन, उसने जवाब दिया—"नहीं, पापा, यह नहीं चलेगा। हमे तो सीना तानकर खड़ा होना चाहिए। हमे इस सरकार का तख्ता उलटना चाहिए। यह हमें बरबाद किए डाल रही है। कभी हम आदमियों की तरह जीते थे, मगर आज तो हम फकीर बनकर रह गए हैं।" इस तरह उसने लालच के सामने अपने हथियार डाल दिये। और, कहते हैं कि जो तलवार उठाता है, वह तलवार के ही घाट उतरता है। और, यह सच भी है !···सुना है कि तुम जनरल बन गए हो और एक डिविज़न

की कमान तुम्हारे हाथ में है। क्या यह सही है ?

"जी हाँ।"

"लेकिन, तुम्हारी पट्टियां और फब्बे कहाँ हैं ?"

"अब हम लोग उनका इस्तेमाल नहीं करते।"

"उनका इस्तेमाल नहीं करते ! तो फिर, कैसे जनरल हो तुम ? पुराने जमाने में बड़ी बात मानी जाती थी यदि कोई जनरल हो तो जनरल की तरह लगे। उस वक्त जनरल लोग खूब खाते-पीते थे, उनकी बड़ी तोंदें होती थीं और वे बड़े नजर आते थे। लेकिन तुम···तुम ज़रा अपने को देखो—तुम्हारा बरानकोट गर्द में सना हुआ है, पट्टियां और फब्बे तुम्हारे पास नहीं हैं, सफेद डोरी तुम्हारे सीने पर नहीं है, और तुम्हारे सिर में जुएँ भरे हुए हैं। तुम्हारे ये जुएँ तुम्हें खा जाएंगे।"

ग्रिगोरी ने ज़ोर का ठहाका लगाया। लेकिन, ग्रिश्का उसी तरह कहता गया—"हंसो मत, बदमाश कहीं के। तुम लोगों को मौत के मुंह में झोंक रहे हो। तुमने उन्हें सरकार के खिलाफ उभारा है। बहुत बड़ा गुनाह किया है। इस पर भी, वे लोग तुम्हें बरबाद कर देंगे और तुम्हारे साथ हमें कहीं का न रखेंगे। ईश्वर तुम्हें समझाएगा कि उसका चाहना और न चाहना कितनी बड़ी चीज़ है। क्या बाइबिल में मुसीबतों से भरे हमारे इस जमाने का ज़िक्र नहीं है ? सुनो और मैं तुम्हें सुनाता हूं कि पैगम्बर जेरेमिआह ने क्या कहा।"

बूढ़े ने अपनी पीली अंगुलियों से बाइबिल के ज़र्द पन्ने उलटे और हर शब्द के उच्चारण पर बल देते हुए धीरे-धीरे पढ़ने लगा—"तुम राष्ट्रों के बीच घोषणा कर दो···खुलमखुल्ला लोगों से कह दो···छपवा दो, इस बात को छिपाओ नहीं।···कह दो···कह दो···बेबीलोन ले लिया गया—बेल परेशान है, मेरोदाश के टुकड़े-टुकड़े हो गये हैं—उसकी देव मूर्तियां कुछ सोच नहीं पा रही हैं।···उसकी आकृतियां तार-तार हो गई हैं···क्योंकि उत्तर का एक राष्ट्र उसके खिलाफ उठ रहा है···यह राष्ट्र उसकी सारी धरती को वीरान कर देगा और कोई वहां रह न पायेगा। वहां के सारे लोग वहां से हट जायेंगे। वे सब वहां से चले जायेंगे ···लोग भी और जानवर भी।

"समझते हो, ग्रीशा ? लोग उत्तर से आयेंगे और तुम बेबीलोनियनों की खाल खींचकर रख देंगे। और, यह सुनो···" परमपिता ने कहा—"उन दिनों और उस काल में इज़राइल की सन्तानें आयेंगी और जूडा के साथ सारे बच्चे आंसू बहाते हुए चले जायेंगे। वे जायेंगे और अपने परमात्मा, अपने परमपिता की शरण ग्रहण करेंगे···मेरे साथ के लोग भटकी हुई भेड़ों की हालत में हैं। उनके चरवाहों ने उन्हें झटका दिया है। उन्होंने उन्हें पहाड़ों पर इधर-उधर भेज दिया है···वे खुद पहाड़ों से पहाड़ियों पर चले गये हैं···वे अपना विश्राम स्थल भूल गये हैं।"

"लेकिन, इस सबसे आप नतीजा क्या निकालना चाहते हैं ? और हम इससे क्या मतलब निकालें ?"···ग्रिगोरी ने बाइबिल की भाषा को आधार समझते हुए पूछा।

"इसी तरह, तुम बदमाश, लोगों को मुसीबत में डालने वाले, पहाड़ियों पर भाग जाओगे। साथ ही, यह भी है कि तुम कज़ाकों के गड़रिये नहीं हो बल्कि खुद बेअक्ल भेड़ों से गये-बीते हो। तुम खुद नहीं समझते कि तुम कर क्या रहे हो। सुनो, लिखा है—जो कुछ उन्हें मिला, उसने उन्हीं को निगल डाला। यह बात है।···यह बतलाओ कि जुएं तुम्हें निगले नहीं डाल रही हैं क्या ?"

"इन जुओं से बचने का कोई रास्ता नहीं।" ग्रिगोरी ने कहा।

"तो बात जमती खूब है।···आगे कहा गया है···" और उनके विरोधियों ने कहा—"हम बुरा नहीं मानते, क्योंकि उन्होंने परमात्मा, न्याय-व्यवस्था और यहाँ तक कि अपने पिताओं की आशा परमपिता तक का विरोध कर पाप कमाया है···

बेबीलोन से चले जाओ, शैलडियनों का प्रदेश छोड़कर आगे निकल जाओ और बकरियों के झुंड के सामने बकरों की तरह हो जाओ—

क्योंकि सुनो, मैं उत्तर के महान् राष्ट्रों को बेबीलोन के विरुद्ध उभारूंगा और उकसाऊंगा और वे पंक्तियां बनाकर उसके सामने जमेंगे···वहीं से वे बेबीलोन को जीतना शुरू करेंगे···उनके तीर सधे हुए तीरन्दाजों के-से होंगे···एक भी तीर चूकेगा नहीं···वापस नहीं आयेगा—

और, शैलडिया तहस-नहस हो जाएगा—उसे तहस-नहस करने वाले

सन्तोष की साँस लेंगे—परमपिता ने कहा—क्योंकि तुम प्रसन्न हुए, क्योंकि तुम खुशी से फूले नहीं समाये, मेरे उत्तराधिकारी को विनाश में बदलने वालो···"

"ग्रीश्का बाबा, आप तो मुझे यह सब आसान ज़बान में समझा दें, मेरी समझ में यह सब बिलकुल नहीं आता।" ग्रिगोरी बीच में बोला। लेकिन बूढ़े ने होंठ चबाये, खोई-खोई-सी नजर से उसकी ओर घूरकर देखा और जवाब दिया।

"मैं अभी-अभी अपनी बात खत्म करता हूँ। सुनो—'क्योंकि तुम हरी घास में छूटे बछड़े की तरह मोटे हो गए हो और अब साँडों की तरह डकारते हो। तुम्हारी मा इससे दुखेगी और परेशान होगी। तुम्हें जिसने जन्म दिया है, उसकी आखें शर्म से ऊपर नहीं उठेंगी···देखो न, राष्ट्रों के पीछे-से-पीछे के प्रदेश तक उजाड हो गए हैं, सूखे हैं, रेगिस्तान में बदल गये हैं। परमपिता के क्रोध के कारण इन प्रदेशों में कोई नहीं बसेगा, इनमें उल्लू बोलेंगे···ये पूरी तरह वीरान होंगे···फिर जो भी बेबीलोन से होकर निकलेगा, अचरज में पड जायेगा और उसके सभी तरह के दुर्दिनों पर साँप की तरह फुफकारेगा।"

"लेकिन, इस सबका मतलब आखिर क्या है?" ग्रिगोरी ने थोड़ा खीझते हुए पूछा।

बूढ़े ने उत्तर कुछ नहीं दिया, पर बाइबिल बन्द कर दी और कोच पर लेट गया।

'और हर आदमी कुछ यों ही होता है।' ग्रिगोरी ने कमरे से बाहर जाते हुए सोचा—'जब जवान होता है तो जीभर ऐश करता है, वोदका ढालता है, और दूसरे लोगों की तरह ही अच्छे-बुरे काम करता है। पर, जब बुढ़ापा आता है तो जिस हद तक जवानी बेकाबू रही है, उसी हद तक परमात्मा की आड़ लेकर अपने को बचाना चाहता है। ग्रीश्का को ही ले लो। दांत अब भी भेड़ियों के-से हैं। कहते हैं कि अपनी जवानी के दिनों में जब फौजी नौकरी से घर वापस आता था तो गांव की सारी औरतें उससे तंग आकर रोने लगती थीं। क्या दुबली-पतली, और क्या मोटी, सभी को अपने कदमों पर झुकाकर दम लेता था। लेकिन मैं···

अगर बूढा होने तक जिया तो मैं ऐसा बिलकुल न रहूँगा, मैं बाइबिल का कीडा नही हू।'

फिर, वह नताल्या के साथ घर लौटा तो उसे बूढे की बातचीत और बाइबिल की रहस्यपूर्ण दुर्बोध भविष्यवाणियों का ध्यान आने लगा। नताल्या भी रास्ते-भर चुपचाप रही। इस बार पति के घर आने पर उसने उसके प्रति वह ममता और आग न दिखलाई थी। साफ है कि कार्गिन्स्काया जिले की औरतो के साथ उसकी ऐयाशी के किस्से उसके कानो मे पड चुके थे। पीछली शाम को उसने उसका बिस्तर सोने के कमरे मे लगा दिया था और खुद भेड की खाल ओढकर बड़े बक्से पर जा लेटी थी। उसने न उसे डाँटा-फटकारा था और न उसके बारे में कुछ पूछताछ ही की थी। दूसरी तरफ ग्रिगोरी ने भी उस रात कुछ न कहा था। सोचा था कि फिलहाल उस बेरुखी की वजह उससे न पूछना ही अच्छा है।

सो वे वीरान सडक पर चुपचाप चलते रहे। एक-दूसरे के प्रति इतना परायापन उन्होने पहले कभी अनुभव न किया था। दक्षिण की ओर से गर्म, प्यारी-प्यारी हवा बह रही थी और पश्चिम मे सफेद बादल जमा हो रहे थे। दूर वे हलके-हलके लुढक-से रहे थे। गाँव काली गीली मिट्टी की सुवास और चटखती हुई कलियों की महक से महमहा रहा था। दोन के नीले पसारे पर सफेद बालो वाली लहरे ले रही थी। यहां हवा मे सडती हुई पत्तियों और भीगी हुई लकडी की तीखी बू थी। पहाडी के ढाल की मखमली काली पट्टी यानी जुती हुई जमीन के सिरे से भाप उठ रही थी। धुन्ध उठ रही थी और दोन के किनारे की पहाडियों की तरफ बढ रही थी। एक स्काईलार्क चिडिया सडक पर गा रही थी और गिलहरियां सीटियां बजाती फिर रही थी। धरती उर्वरता की अमित सामर्थ्य से जीवनदायी तत्त्वो की प्रचुरता अपनी सासो मे पिरो रही थी। सूरज आकाश की ऊचाई पर घमड से दमक रहा था।

तो, गाँव के मध्य मे पहुचने पर बाढ़ के पानी से उमडते एक नाले के छोटे पुल के पास नताल्या रुक गई, और इस तरह झुकी, जैसे कि जूते के फीते बाध रही हो। पर सचमुच उसने अपना चेहरा ग्रिगोरी की निगाह से बचाना चाहा। पूछा—"क्यो, तुमने इस तरह मुह क्यों सी

रखा है? करने को कोई बात जैसी बात भी हो!"

"ऐसा क्या है, करने पर आओ तो तमाम बातें कर सकते हो। बतला सकते हो कि कारगिन्स्काया में तुमने किस तरह पिलाई की और तुम किस तरह रंडियों के पीछे दौड़ते फिरे···"

"तो, तुम्हें पहले से ही पता है···?" उसने तम्बाकू की थैली निकाली और एक सिगरेट रोल करने लगा। तिनपतिया और घर की तम्बाकू के चूरे में बटी अच्छी-सी महक उठी। ग्रिगोरी ने एक-दो कश लिये और पूछा—"तो, तुमने सुन लिया? किसने बताया तुम्हें?"

"मैं जब बात कर रही हूं तो साफ है कि मैंने सुना ही है। वैसे मैं क्या सारा गांव जानता है और तमाम लोगों से तमाम बातें सुनी जा सकती हैं।"

"खैर, अगर तुम जानती हो तो फिर तुम्हें बतलाना क्या है?"

वह लम्बे-लम्बे कदम भरने लगा। बसन्त के दिनों के झलामल सन्नाटे में नताल्या के तेज़ कदमों के साथ उसके पैरों की आवाज़ भी हवा में गूंजने लगी। फिर सिसकियों में नताल्या का गला रुंध उठा और उसने पति का हाथ जकड़ते हुए पूछा—"यानी, तुम अपनी पुरानी हरकतें फिर शुरू कर रहे हो?"

"छोड़ो भी नताल्या।"

"तुम्हारा जी कभी नहीं भरता···पाजी कुत्ते हो तुम! मुझे दुबारा सताना क्यों शुरू कर दिया है तुमने?"

"तुम दूसरों की बातों पर ज़रा कम ही कान दिया करो।"

"लेकिन दूसरों का क्या सवाल, तुमने तो खुद ही अभी सारी बात मानी है?"

"लगता है कि बात काफी बढ़ा-चढ़ाकर बनाई गई है तुम्हें। थोड़ा गुनाह तो मेरा है···खुद जिन्दगी का है···आदमी हर वक्त मौत के दहाने पर खड़ा रहता है, तो कभी-कभी आख बचाकर, मेंड़ तोड़कर भाग खड़ा होता है·····"

"अब बच्चों के मामले में क्या करोगे? उनकी आंखों में आंखें मिलाने में तुम्हें शर्म नहीं आयेगी?"

"फु:···शर्म!" ग्रिगोरी ने दांत निकालकर मुस्कराते हुए

कहा—"खयाल ही नहीं है कि शर्म आती है तो आती कैसे है! फिर, शर्म ही क्या आएगी, जब सारी जिन्दगी ही चौपट होकर रह गई हो? ···लोग लोगों को मारते हैं···मगर यह नहीं जानते कि यह सारा तूफान है क्या! ···लेकिन यह बात मैं तुम्हें कैसे समझा सकता हूं···तुम कभी नहीं समझोगी। औरत की सारी बेरहमी से भरकर तुम आग-बबूला हो रही हो···मगर, तुम्हें क्या पता कि मेरे दिल पर क्या बीत रही है···कौन-सी चीज़ है जो मेरा दिल बराबर कुरेद रही है···मुझे चूसे डाल रही है ··इसी से परेशान होकर मैं वोदका की तरफ मुड़ा···अभी उस दिन मुझे दौरा आ गया···लमहा-भर को दिल की धड़कन बिलकुल थम गई और मेरा सारा बदन बर्फ हो गया। · " उसका चेहरा सवरा उठा और वह बड़ी कठिनाई से आगे बोल सका—"ज़िन्दगी बहुत भारी पड़ती है, और आदमी इसे भूलने के लिए कुछ भी कर सकता है। वोदका और औरत दोनों में से किसी का भी सहारा ले सकता है।··· रुको···मुझे अपनी बात खतम करने दो। कुछ है जो हर लमहा मेरा कलेजा छलनी कर रहा है···ज़िन्दगी ने एक झूठा मोड़ ले लिया है··· हो सकता है कि इसमें भी मेरी गलती हो! ···हमें शायद लाल सेनाओं से मिल जाना चाहिए, और कैडेटों पर हमला करना चाहिए···लेकिन सवाल यह है कि यह हो कैसे? कौन हमारा तार सोवियतों के तार से मिलाए? हमने एक-दूसरे के साथ जो कुछ किया है, उसकी खाई अब हम कैसे पाटें? आधे कज़्ज़ाक दोनेत्स के पार हैं···और जो बाकी बचे हैं वे बौखलाए जा रहे हैं, अपने नीचे की जमीन खोदे डाल रहे हैं।··· मेरे दिमाग में कुछ भी साफ नहीं है, नताल्या! तुम्हारे बाबा ग्रीश्का तक ने मुझे बाईबिल पढ़कर सुनाई। कहा कि हमने ठीक नहीं किया, हमें बगावत करनी नहीं चाहिए थी। उन्होंने तुम्हारे पापा तक को बुरा-भला कहा।"

"बाबा का दिमाग खराब हो गया है। उसके बाद अब पारी तुम्हारी है।"

'तुम इतना ही सोच सकती हो। इसके आगे तुम्हारा दिमाग काम ही नहीं कर सकता।"

"देखो, तुम मुझे बातों में उलझाने की कोशिश न करो। तुमने मेरा दिल दुखाया है, और तुमने यह बात साफ-साफ मानी है। अब सारा गुनाह तुम लड़ाई के सिर मढ़ने की कोशिश कर रहे हो। सब मर्द एक ही जैसे होते हैं। तुम्हारी वजह से अभी तक मैंने क्या कुछ कम दुख-दर्द उठाए हैं, शैतान कहीं के? ...दुख सिर्फ इस बात का है कि उस वक्त मैंने अपने को खतम नहीं कर लिया।..."

"फिर तो बात करने की ही जरूरत नहीं। अगर तुम्हें तकलीफ है तो रो डालो। आंसुओं से औरत का दिल हमेशा हलका हो जाता है। लेकिन, जहां तक मेरा सवाल है, मैं तुम्हें किसी तरह की कोई तसल्ली नहीं दे सकता। मैंने अब तक इन्सान के खून से इस तरह खिलवाड़ की है कि मुझमें किसी के लिए कोई हमदर्दी बाकी नहीं बची है। मुझे बच्चों की कोई फिक्र नहीं और अपनी भी कोई परवाह नहीं। लड़ाई ने मेरे अन्दर का सारा रस सुखा दिया है...मैं कड़ा पत्थर हो गया हूं... तुम मेरी रूह में आखें डालकर देखो। तुम्हें वह खाली कुए-सी काली नजर आएगी। ..."

...और, वे घर पहुंच भी न पाए कि बरखा की आड़ी-तिरछी फुहारें पड़ने लगीं। फुहारों ने सड़क की धूल बिठा दी और छतों पर अंगुलियां बजाईं। मौसम में ताजगी व तरी आ गई। ग्रिगोरी ने अपने बरानकोट के बंद खोले और बिलखती हुई नताल्या को उसमें छिपाकर उसके गले में हाथ डाल लिया। इस तरह एक ही कोट में लिपटे एक-दूसरे से सटे वे अहाते में दाखिल हुए।

शाम को उसने अहाते में हल और बीजबोना तैयार किया। लोहार के पन्द्रह साल के बेटे सेम्योन ने जैसे-तैसे मेलेखोव के पुराने हल में फाँट जोड़ दिया। सेम्योन ने अपने पिता का धंधा सीख लिया था और वह तातारस्की में एक अकेला लोहार था।

इस तरह बोआई की पूरी तैयारी हो गई। बैल तो थे ही। जाड़े-भर उनका हिसाब पूरी तरह ठीक रहा था। पैन्तेली ने जो सूखी घास बचाई थी, वह उसके लिए काफी निकली थी।

दूसरे दिन ग्रिगोरी ने स्तेपी में जाने की तैयारी की। इलीनीचिना

और दून्या मुंहअंधेरे उठी और उन्होंने आग जलाकर हलवाहे के लिए खाना तैयार करने का सरंजाम किया। ग्रिगोरी ने पांच दिन के काम की योजना बनाई। सोचा, चार एकड़ ज़मीन की जुताई कर अपने और अपनी सास के लिए खरबूजे और सूरजमुखी के बीज बो दूंगा। इसके बाद पापा को पैदल सेना से बुला लूंगा और वे बाकी बोआई पूरी कर देंगे।

बकाइनी धुएं के छल्ले चिमनी से निकलकर आसमान की ओर उड़ने लगे। दून्या अहाते मे दौड़-दौड़कर आग के लिए चिरायते की लकड़ी जुटाने लगी। ग्रिगोरी ने उसकी लचकदार कमर और भरी हुई छातियों पर निगाह डाली और उदास और परेशान मन से सोचने लगा—'लड़की कितनी बड़ी हो गई है! वक्त को गुज़रते देर नहीं लगती। अभी कल ही तो यह दून्या छोटी-सी बच्ची थी, चोटी पीठ पर झुलाती भागती फिरती थी और आज शादी के लायक है और मैं हूं कि मेरे सिर के बाल सफेद हुए जा रहे हैं। ग्रीश्का बाबा ने ठीक ही कहा था कि ज़िन्दगी बिजली के कौंधे की तरह सामने से गुज़र गई है···और आदमी है कि उसे जीने को कितना कम मिलता है···और उस छोटी-सी ज़िन्दगी को भी हम जान-बूझकर छोटा कर देते है।···खैर, मौत आती हो तो आए, जल्दी से जल्दी आ जाए।"

दारया ग्रिगोरी के पास आई। प्योत्र के बिछोह का दर्द बहुत ही जल्दी हल्का पड़ गया था। थोड़े समय तक वह बड़ी सतप्त रही थी। उसका चेहरा पीला पड़ गया था और उससे उम्र झलकने लगी थी। पर, बहार की हवाओ के सनकते और सूरज के धरती को गरमाते ही गलती हुई बर्फ के साथ ही उसका गम भी गल गया था। फिर चेहरा कोमल लगने लगा था, उस पर हलकी-हलकी-सी लाली दौड़ गई थी, आंखें चमकने लगी थी और चाल मे वही मस्ती लौट आई थी। पुरानी आदतें लौट आई थी। भौंहे रंगी नज़र आने लगी थी और गाल क्रीम-से चमकने लगे थे। हँसी-मज़ाक करने और फूहड़ बातों से नताल्या को चिढ़ाने का शौक भी करवट लेकर उठ बैठा था। होठों पर हलकी-हलकी सी मुस्कान फिर खिली रहने लगी थी। ज़िन्दगी ने अपनी जीत का डंका पीटकर उसकी तबीयत फिर अपने हाथों मे ले ली थी।

मो, वह ग्रिगोरी के पास आकर मुस्कराने लगी। उसके हसीन चेहरे से खीरे की क्रीम की गमक उमड़ी। बोली—"मैं तुम्हारी कुछ मदद करूं, ग्रिगोरी ?"

"किस किस्म की मदद ?"

"उफ···ग्रीशा, तुम मेरे मामले में किस तरह पत्थर हो गए हो। यह तो खयाल करो कि मैं बेवा हूं। तुम मुझे देखकर कभी मुसकराते तक नहीं।"

"तुम जाकर नताल्या के काम में हाथ बटा लो। मीशात्का भी वहीं है। दौड़ते-दौड़ते धूल में नहा उठा है।"

"यानी, मेरा काम यह है कि तुम बच्चे पैदा करो और मैं उन्हें नहलाती फिरूं ? नहीं, शुक्रिया ! तुम्हारी नताल्या तो खरगोश की मादा की तरह बच्चे देती है। अभी क्या, अभी तो दस और जनेगी। और मैं उन्हें नहलाने-नहलाते मर जाऊंगी।"

"खैर बहुत हुआ, बस करो···जाओ यहां से !"

"ग्रिगोरी पैन्तेलेयेविच, अब कज्जाकों के नाम पर एक तुम्हीं रह गए हो गांव-भर में। मुझे इस तरह भगाओ नहीं। कम-से-कम दूर से ही अपने प्यारे-प्यारे गलमुच्छों को एक नजर देख लेने दो।"

ग्रिगोरी हँसा और उसने पसीने से भीगे माथे से बाल पीछे झटके—'मैं नहीं समझ पाता कि पेत्रा ने तुम्हारे साथ जिन्दगी किस तरह काटी ···तुम्हारी बदन की आग कभी नहीं बुझेगी, और तुम इसके पीछे बराबर ही दौड़ती रहोगी···ऐसा मुझे लगता है।"

"तुम्हें डरने की जरूरत नहीं।" उसने उत्तर दिया, हसरत-भरी, अधमुंदी आंखों से उस पर एक नजर डाली और बनावटी घबराहट के साथ मुड़कर घर की ओर देखा—"मान लो, नताल्या इस वक्त आ जाए तो क्या हो ? तुम्हारे मामले में दूसरों से बहुत ही जलती है। आज तुम्हें झांककर एक निगाह देखा तो उसके चेहरे का रंग बदल गया। कल गांव की जवान औरतें मुझसे कह रही थीं— 'यह कहां का कानून है ? गांव में एक भी कज्जाक बाकी नहीं है। एक ग्रिगोरी वापस आया है तो बीवी की परछाईं नहीं छोड़ता। आखिर हम सब क्या करें, कैसे रहें ? वह जख्मी

हो और चाहे आधा रह गया हो, हमे उस आधे का ही मज़ा लेने मे खासी खुशी हासिल होगी। उससे कह देना कि रात में कही गांव में नज़र न आए, वरना हम उसे छोड़ेंगे नही। फिर, मज़ा चखेगा बाहर निकलने का !"···लेकिन, मैंने कहा—"नहीं, लड़कियो नही, हमारा ग्रिगोरी सिर्फ दूसरे गावों मे उमड़ता फिरता है···घर पर होता है तो नताल्या के पेटीकोट से चिपका रहता है···उसे छोडता नही।···ग्रिगोरी देखते-देखते बहुत ही अच्छा लड़का हो गया है।"

"तुम तो कुतिया हो···कुतिया !" ग्रिगोरी ने मज़ा लेते और हँसते हुए कहा—"तुम्हारी जीभ झाड़ू की मूठ की तरह चलती है।"

"मैं जो हूँ सो हूँ···मगर तुम्हारी पाक-साफ, शादीशुदा, कानूनी बीवी नताल्या ने कल रात तुम्हें अपने बिस्तरे मे घुसने नही दिया। और, बिलकुल ठीक किया। इससे तुम्हें कायदे से पेश आने का सबक मिलेगा··· शैतान कही के !"

"तुम दूसरो के मामलो में पडने की कोशिश न करो, दार्या !"

"मैं बिलकुल नही पडती। मैं तो महज़ तुम्हें यह समझाने की कोशिश कर रही थी कि तुम्हारी नताल्या बेवकूफ है। आदमी घर आता है, तो वह उससे झगडा मोल लेती है और जाकर बडे बक्से पर अकेले पड रहती है···पर···मुझे मौका मिले तो मैं तो किसी कज़्ज़ाक को हाथ से कभी न जाने दूं···मैं तो तुम्हारे जैसे बहादुर आदमी की हिम्मत तक तोड दूं···" दार्या दांत निकालकर जोर से हसी और घर की ओर बढ दी। फिर, उसने परेशान, मुस्कराते हुए ग्रिगोरी की ओर मुड़कर देखा तो उसके कान के बुंदे दूर से ही दमके।

'बडे किस्मत वाले थे कि अपने वक्त से दुनिया से चले गये, भाई प्योत्र !' ग्रिगोरी ने मन ही मन सोचा—'यह दार्या औरत नही बल्कि चुड़ैल है···चुड़ैल···वह देर-सबेर, आज नही तो कल प्योत्र को चप ही डालती।'

: ४७ :

वासमुतकिन में आखिरी चिराग भी गुल किए जा चुके थे। गड्ढे-गड्ढैया के ऊपर जमे हुए पानी की एक परत थी और उसके ऊपर कते हुए पाले की एक चादर। गाव के बाहर ठूठों से भरे किसी खेत में देर से उड़ने वाले सारसों ने बसेरा ले लिया था और उत्तर-पूर्वी हवा के झोंकों के साथ उनके मन्द स्वर कभी-कभी कानों में आ जाते थे। ये स्वर इन पक्षियों की थकान का पता देते थे, और अप्रैल की रात के सन्नाटे पर मुहर मारते थे। बगीचों में रात के साये गहरा रहे थे। ऐसे में किसी अहाते में कोई गाय हकारती थी और फिर शांत हो जाती थी। चहा पक्षी अधकार भेदते और हसरत-भरे स्वरों में बोलते हुए उधर से निकल जाते थे। बाढ के पानी से लबालब दोन के आजाद पसारे की ओर तेजी से उड़ती हुई बत्तखों के अनगिन परों की फटफड़ाहट हवा में गूंज-गूंज उठती थी।

गांव के बाहर आवाजें सुनाई पड रही थीं और सिगरेटें अंधेरे में लौ दे रही थी। घोड़े हीस रहे थे और उनकी टापों के नीचे जमकर बर्फ हो गया कीचड चरमरा रहा था। छठे, स्पेशल-ब्रिगेड ने गाव में ही पड़ाव डाल रखा था और उसके दो स्क्वैड्रन खास सड़क पर गश्त करते चले जा रहे थे। स्क्वैड्रन के लोग आपस में बातें कर रहे और गाने गा रहे थे।...

आखिरकार वे नुक्कड़वाले मकान के अहाते में दाखिल हुए। यहाँ उन्होंने अपने घोड़े एक उलटी स्लेज में बांधे और चारा उनके सामने डाला।

इसी समय किसी ने मोटे स्वर में एक हो-सा गाना छेड़ा तो दूसरे ही क्षण कई लोगों ने स्वर मिलाए। देखते-देखते कोरस छिड़ गया और उमग और खुशी हवा में घुल गई।

सारसों के मर्मर के साथ परों की फड़फडाहट और कज्जाकों की आवाजें, हवाचक्की के पार चौकसी के लिए तैनात दूसरे कज्जाकों के कानों में पड़ी।

...रात की ठंडी बर्फ-सी जमीन पर पड़ा रहना कुछ सुख की बात

न थी। गारद के वे लोग न सिगरेट पी सकते थे और न आपस में बातचीत ही कर सकते थे। अपने को भड़काने के लिए आपस मे कुश्ती लड़ना भी उनके लिए सम्भव न था। वे पिछले साल के सूरजमुखी के पौधों के ठूठों के बीच लेटे हुए थे। उनकी निगाहें स्तेपी के जम्हाई लेते अंधकार पर जमी हुई थी, और उनके जमीन से सटे हुए कान हर मुमकिन आहट पर जमे हुए थे। दस कदम के फासले पर कुछ भी नजर न आता था। वह रात सरसराहटों और मन मे संदेह पैदा करने वाली आहटों के मामले में इतनी धनी थी कि कोई लाल सैनिक उन कज्जाकों की तरफ बढ़ता तो भी साधारण रूप से कुछ भी गुमान नहीं हो सकता था।

ऐसे मे दूरी पर नज़र गडाए रहने के कारण एक जवान कज्जाक की आंख मे आंसू आ गया तो उसने उसे अपने दस्ताने से पोंछ डाला। फिर, कहीं पास ही किसी टहनी के टूटने का खटका और किसी के हाफने का सन्देह हुआ। उसने बगल मे औंधाते पड़ोसी को कोहनियाया, अब चिरायते की झाडियों की सरसराहटे और लम्बी-लम्बी सांसें और साफ हो उठी। साथ ही आशा के विपरीत वे उस जवान के ठीक ऊपर से आती लगी। वह कोहनी के बल उठा और उसने झाड-झाडियों मे निगाह दौड़ाई तो उसे एक भाऊ-चूहा अपनी नाक मिट्टी मे गड़ाए, एक चूहे के पीछे-पीछे तेज़ी से भागता दीखा। भाऊ-चूहे को अचानक ही किसी दुश्मन के पास होने का खयाल हुआ और उसने सिर उठाया तो एक आदमी को अपनी ओर घूरते देखा। दूसरी ओर कज्जाक ने चैन की सास ली—शैतान कही का! कैसा डरा दिया इसने मुझे! भाऊ-चूहा सिर अन्दर घसाकर कांटेदार गेंद बन गया और फिर धीरे-धीरे अपने असली रूप मे आकर सूरजमुखी के ठूठों से टकराता, सूखी लताओं से सटता आगे बढ चला। इसके बाद सन्नाटे ने फिर जाला बुन दिया और रात परीदेश की एक कहानी-सी लगने लगी।

गाव मे दूसरे मुर्गे ने बाग दी। बादल छट गए और पहले सितारे धुंध की चादर के बीच से झांकने लगे। फिर, हवा धुंध को उड़ा ले गई, और आसमान अनगिन सोने की आखों से अपनी धरती को एकटक

देखने लगा।

इसी समय घोड़े की टापों की आवाज़ और लोहे की झनझनाहट सामने से जवान कज़्ज़ाक के कानों में पड़ी। एक क्षण बाद ही घोड़े की काठी की चरमराहट भी साफ-साफ सुनाई दी। दूसरे कज़्ज़ाकों ने भी कुछ सुना और उनकी अंगुलियाँ राइफलों के घोड़ों पर पहुंच गई। घुड़सवार की आकृति उभरकर सामने आई। वह अपने घोड़े को कदम-चाल में डाले गांव की ओर बढ़ता समझ पड़ा।

"रुको···कौन है ?"

कज़्ज़ाक उछलकर खड़े हो गए और गोली चलाने को तैयार हो गए। घुड़सवार रुक गया और उसने अपने दोनों हाथ उठा दिए। चिल्लाकर बोला—"गोली मत मारो कॉमरेडो !"

"पासवर्ड क्या है ?" चौकी के इन्चार्ज ने चीखकर पूछा।

"कॉमरेडो···"

"पासवर्ड क्या है ? ट्रूप···"

"ठहरो···मैं अकेला हूँ और हथियार डालता हूँ।"

"ज़रा ठहरो, साथियो···गोली मत चलाओ···हम इसे ज़िन्दा गिरफ्तार करेंगे।"

ट्रूप कमांडर दौड़कर घुड़सवार के पास पहुंचा। घुड़सवार काठी से पैर लटकाकर नीचे उतरा।

"कौन हो तुम ? लाल फौजी हो ?—हां भाइयो, इसके टोप पर सितारा है···तुम अपना काम तमाम समझो।"

घुड़सवार शांत मन से बोला—"मुझे अपने कमांडर के पास ले चलो। मुझे एक बड़ा पैगाम उन तक पहुंचाना है। मैं सेरदोब्स्की रेजीमेंट का कमांडर वोरोनोव्स्की हूँ और तुम्हारे कमांडर से बातचीत करने के लिए आया हूँ।"

"कमांडर··· ? गोलियों से उड़ा दो इसे, भाइयो !"

"कॉमरेडो, मुझे गोलियों से उड़ा देना और बेशक उड़ा देना, लेकिन पहले मुझे अपने कमांडर से मिला दो। मैं उन्हें यहां आने की वजह *बतला दूंगा। फिर कहता हूं कि बात बहुत ही जरूरी है। वैसे अगर*

तुम्हें मेरे भागने का खतरा हो तो तुम मेरे हथियार ले लो ।" वह तलवार की पेटी खोलने लगा।

ट्रुप-कमांडर ने उसकी तलवार और रिवॉल्वर ले लिया और उसके घोड़े पर बैठते हुए आदेश दिया—"तलाशी लो ।"

तलाशी के बाद ट्रुप-कमांडर, एक दूसरे कज्ज़ाक के साथ कैदी को गांव की ओर ले चला। कैदी पैदल, कज्ज़ाक की बगल-बगल चला । ट्रुप-कमांडर, घोड़े पर सवार, पूरी तरह सन्तुष्ट उसके पीछे हो लिया।

कैदी जब-तब ही सिगरेट जलाने को ठिठका । सिगरेट की बढ़िया तम्बाकू की महक से कज्ज़ाक का मन ललचाया । बोला—"एक सिगरेट मुझे भी दो ।"

इस पर अफसर ने अपना पूरा सिगरेट-केस उसकी ओर बढ़ा दिया। कज्ज़ाक ने एक सिगरेट निकाली और सिगरेट-केस अपनी जेब मे डाल लिया। लाल सेना के उस कमांडर ने कुछ नही कहा, लेकिन गाव पास ही नजर आने पर पूछा—"तुम लोग कहा लिये जा रहे हो मुझे ?"

"तुम्हें जल्दी ही मालूम हो जाएगा ।"

"लेकिन, वतला जो दो !"

"स्क्वैड्रन-कमांडर के पास ।"

"मुझे तुम स्क्वैड्रन-कमांडर नही, अपने ब्रिगेड-कमांडर बोगातिरयोव के पास ले चलो ।"

"यहां इस नाम का कोई ऐसा आदमी नहीं ।"

"नही है । मुझे पता है, अपने स्टाफ के साथ कल ही बाखमुतकिन आया है ।"

"हम इस बारे मे कुछ नही जानते ।"

"खैर, बेकार की बातें न करो, कॉमरेडो···मैं जानता हूँ और तुम नही जानते ?···यह कोई फौजी राज नही है···फिर वह फौजी राज भी क्या हो सकता है, जब तुम्हारे दुश्मनों को उसकी जानकारी है ।"

"आगे बढ़ो ।"

"मैं आगे बढ़ता हूँ···लेकिन तुम मुझे बोगातिरयोव के पास ले चलोगे न ?"

"चुप रहो···हमें कैदियों से बात करने की इजाजत नहीं।"

"लेकिन, मेरी सिगरटें लेने की इजाजत है ?"

"चलो आगे बढ़ो और अपनी जबान बन्द रखो, वरना इस तरह तिनकोगे तो मैं तुम्हारा बरानकोट भी ले लूंगा।"

ये लोग वहां पहुंचे तो स्क्वैड्रन-कमांडर सोता मिला। वह अपनी आखें मलते और जम्हाई लेते हुए उठकर बैठा तो पहले तो ट्रुप-कमांडर की बात ही उसकी समझ में न आई। आखिरकार बोला—"तुम कौन हो···क्या बतला रहे हो ? सेरदोव्स्की रेजीमेंट के कमांडर हो ? झूठ तो नही बोलते ? तुम्हारे कागजात कहां हैं ?"

और, कुछ क्षणों बाद ही वह लाल सेना के कमांडर को ब्रिगेड-कमांडर बोगातिरयोव के पास ले गया। बोगातिरयोव कैदी का नाम सुनते ही अपनी जगह से उछल गया। उसने जल्दी-जल्दी पतलून के बटन बन्द किए, लेम्प जलाया और अफसरों से बैठ जाने को कहा। फिर पूछा— "क्या हुआ···आप आखिर पकड़ कैसे गए ?"

"मैं अपने मन से यहां आया हूं, और आपसे जरा अकेले मे बातें करना चाहता हूं। बाकी लोगों को बाहर भेज दीजिये।"

बोगातिरयोव ने हाथ हिलाया और कम्पनी-कमांडर के साथ, आश्चर्य मे मुह फैलाता घर का मालिक भी बाहर निकल आया। अब, अपना सांवला, मुड़ा हुआ, तरबूज-जैसा गोल सिर रगड़ते हुए बोगातिरयोव गदे कपड़ो मे ही मेज के पास आ बैठा। उसके गोल, फूले हुए चेहरे से बढ़ी हुई उत्सुकता टपकी। कमांडर बोरोनोव्स्की साफ-सुथरा, भारी बदन का अफसर था। उसने शानदार बरानकोट पहन रखा था और कंधे पर बाकायदा फौजी पट्टियां लगा रखी थीं। मूछें उसकी काली थीं।

सो, वह होंठों-ही-होंठों मुसकराया—"क्या सचमुच ही मुझे एक अधिकारी से बातें करने का सम्मान प्राप्त हो रहा है ? अगर ऐसा है तो एक-दो बात शुरू मे बतला दू। इसके बाद अपने यहां आने के उद्देश्य की चर्चा करूंगा।···मेरा जन्म एक सम्भ्रान्त परिवार मे हुआ है और मैं जार की फौज में स्टाफ-कैप्टन रहा हूं। जर्मनी की लड़ाई के जमाने में मैं मोर्चों पर रहा। १९१८ के सोवियत सरकार के फरमान के

बल पर मैं सोवियत सेना में चला आया और इस समय लाल सेरदोव्स्की रेजीमेंट का कमांडर हूँ। इधर एक अर्से से एक मौके की तलाश में था कि बात बने और बोलशेविकों से लड़ने वालों यानी आप सबमें शामिल हो जाऊँ।"

"लेकिन, इसके लिए आपने बड़ा इन्तजार किया, कैप्टन ?"

"मैं जानता हूँ कि मैंने बड़ा वक्त लगाया। बात यह है कि मैं अकेले आना चाहता तो बहुत पहले ही आ जाता, पर मैं तो यह चाहता था कि रूस के मामले में मैंने जो गुनाह किया है, वह न सिर्फ खुद आकर बल्कि लाल फौजियों की पूरी एक यूनिट लाकर धोऊँ। फिलहाल, इस यूनिट के लोगों पर भरोसा किया जा सकता है। ये सब-के-सब ऐसे लोग हैं जिनके साथ कम्यूनिस्टों ने धोखा किया है और जिन्हें जबरदस्ती इस लड़ाई में घसीटा है कि भाई, भाई का खून बहाए।"

वोरोनोव्स्की ने बोगातिरयोव पर एक निगाह डाली और उसकी मुसकान में संदेह झलकता देखा, तो उसके चेहरे पर लड़कियों के चेहरों की तरह लाली दौड़ गई, और वह जल्दी-जल्दी अपनी बात कहने लगा—"बहुत स्वाभाविक है कि आप मुझ पर या मेरे शब्दों पर विश्वास न करें। मैं भी आपकी जगह होता तो यही करता। लेकिन मैं अपनी बात के सिलसिले में ऐसे सबूत रखूँगा, जो आसानी से काटे न जा सकेंगे…" उसने अपना बरानकोट पीछे फेंका, अपनी जेब से कलम बनाने वाला एक चाकू निकाला, बरानकोट के किनारे की सीवन काटी और पीले रंग के कागजों के साथ एक फोटो निकाला। बोगातिरयोव ने हर कागज बहुत ही होशियारी से देखा-समझा। एक दस्तावेज पर फौजी अस्पताल के सर्जन के दस्तखत थे। उसे मुहरबंद भी उसी ने करवाया था। उसमें लिखा था कि इन दस्तावेजों के वाहक का नाम लेफ्टिनेंट-वोरोनोव्स्की है और वह ११७वीं लुबोमीर्स्की-रेजीमेंट का सदस्य है। बाकी दस्तावेजों और उस फोटो से भी वोरोनोव्स्की के वक्तव्य की ही पुष्टि हुई।

"खैर…तो…आगे… ?" बोगातिरयोव ने पूछा।

जवाब मिला—"मैं आपको यह बतलाने आया हूँ कि मैं अपने सहायक भूतपूर्व लेफ्टिनेंट वोलकोव के साथ, अपनी कमान के अधीन, लाल

फौजियों के बीच काम करता हूँ, और इस समय पूरी-की-पूरी सेरदोव्स्की-रेजीमेंट किसी भी क्षण आपकी तरफ आने को तैयार है। कम्यूनिस्ट बेशक नहीं आएँगे। बाकी जो आएंगे, उनमें ज्यादातर लोग सरातोव और समारा प्रान्तों के किसान होंगे। वे सब बोलशेविकों से लड़ने को तैयार हैं। जरूरत सिर्फ इस बात की है कि हमारे बीच रेजीमेंट के आत्म-समर्पण के बारे में एक समझौता हो जाए। इस वक्त रेजीमेंट उस्त-खोपरस्काया में है। रेजीमेंट में कुल कोई बारह सौ संगीनबंद फौजी हैं। इनमें से अड़तीस कम्यूनिस्टों के बीच हैं। इनके अलावा कोई तीस फौजियों ने स्थानीय कम्यूनिस्टों का एक प्लैटून बना लिया है। रेजीमेंट के साथ की बैटरी तो हम छीन लेंगे, लेकिन शायद उसके कर्मचारियों को खत्म कर देना होगा, क्योंकि उनमें से ज्यादातर लोग कम्यूनिस्ट हैं। अपने जिलों में खाने की चीजों के हथियाए जाने के कारण मेरे साथ के लाल फौजी गुस्से से उबल रहे हैं, और हमने इस स्थिति को कज्जाकों की तरफ ले आने के लिए इस्तेमाल किया है। लेकिन वे सब मन-ही-मन डर रहे हैं कि हथियार डालते ही उनके साथ हिंसा बरती जाएगी। इसलिए, हालांकि बात तफसील की है, तो भी, इस मामले में आपके साथ एक समझौता हो जाना जरूरी है।"

"हिंसा से क्या मतलब ?"

"यानी यही कि या तो उन्हें मार डाला जाए या लूट लिया जाए।"

"नहीं, यह नहीं होने देंगे।"

"एक शर्त और। फौजियों का आग्रह है कि सेरदोव्स्की-रेजीमेंट को ज्यों-का-त्यों रखा जाए और बोलशेविकों से लड़ाई हो तो उसे एक अलग पूरे यूनिट के रूप में आपके अपने फौजियों के कंधे से कंधे मिलाकर लड़ने दिया जाए।"

"इस मामले में मैं अभी कुछ नहीं कह सकता···"

"समझा···शायद इस बात का जवाब देने से पहले आप अपने ऊपर के अफसरों को सारा-कुछ बतलाना चाहेंगे···है न ?"

"हां, व्येशेन्स्काया के स्टाफ को यह खबर देना जरूरी है।"

"लेकिन, माफ कीजिए, मेरे पास समय बहुत थोड़ा है। अगर मुझे लौटने मे देर हो गई तो रेजीमेंट के कमीसार को मेरी गैरहाजिरी की जानकारी हो जाएगी। मेरा खयाल है कि आत्म-समर्पण की शर्तों के बारे में हमारे बीच कोई-न-कोई समझौता हो जाएगा। कृपया अपनी कमान का फैसला हमे जल्दी-से-जल्दी बताए, वरना अगर कही रेजीमेंट को दोनेत्स के मोर्चे पर भेज दिया गया या घुमक मा गई, तो···"

"मैं आदमी फौरन ही व्येशेन्स्काया भेजता हूं।"

"एक बात और—अपने कज्जाकों से कहिए कि मेरे हथियार मुझे लौटा दें। उन्होंने न सिर्फ मेरे हथियार मुझसे लिये···" वह ज़रा ठिठका और सकोच से मुसकराया—'बल्कि मेरा सिगरेट-केस तक मुझसे ले लिया। बात छोटी है, लेकिन वह सिगरेट-केस मेरे लिए बड़ी चीज़ है, क्योंकि मेरे बुजुर्गों से मुझे विरासत मे मिला है···"

"आपकी हर चीज आपको वापस कर दी जाएगी।···लेकिन, सवाल यह है कि व्येशेन्स्काया मे जो जवाब आएगा, वह आप तक कैसे पहुँचेगा?"

"दो दिन बाद उस्त-खोपरस्काया से एक औरत वाखमुतकिन आएगी··· पहचान के लिए साकेतिक शब्द···यूनियन मान लीजिए। आप उसे सब-कुछ यों ही बतला देंगे···मुहज़बानी···साफ है कि लिखकर कुछ नही देंगे···"

आधे घण्टे के अन्दर-अन्दर एक कज्जाक घोड़े पर व्येशेन्स्काया दौड़ा दिया गया।

अगले दिन कुदिनोव का निजी अर्दली वाखमुतकिन आया, ब्रिगेड-कमांडर के क्वार्टरों तक गया, घोड़े को बांधने के लिए रुके बिना अन्दर दाखिल हुआ और उसने बोगातिरयोव को एक पैकेट दिया—पैकेट पर लिखा था—फौरी और व्यक्तिगत। बोगातिरयोव ने जल्दी-जल्दी लिफाफा खोला और पढना शुरू किया। पत्र कुदिनोव का था। असीट में लिखा गया था—

"इस खबर से बड़ा हौसला बढता है। मैं तुम्हें सेरदोब्स्की-रेजीमेंट से बातचीत करने का पूरा अधिकार देता हू। जैसे भी हो, रेजीमेंट से

आत्म-समर्पण करवा लो। मेरा अपना सुझाव है कि हम उनकी सभी शर्तें मान लें, पूरे रेजीमेंट को बुला लें और उनसे उनके हथियार तक न लें। शर्त सिर्फ यह लगा दें कि वे रेजीमेंट के कमीसार के साथ-ही-साथ कम्यूनिस्टों को भी खुद ही गिरफ्तार कर हमें सौंप देंगे। इन कम्यूनिस्टों में व्येशेन्स्काया, येलान्स्काया और उस्तखोपरस्काया के कम्यूनिस्ट खास तौर पर होंगे। इनके अलावा बैटरी, मालगाड़ी और रेजीमेंट का फौजी सामान भी हमारे हाथ लगना चाहिए। फिर जब रेजीमेंट आत्म-समर्पण को तैयार हो जाए, तो बड़ी-से-बड़ी फौज लाकर उन्हें घेर लें, और फौरन ही उनके सभी हथियार छीन लें। अगर वे हथियार न दें तो उनमें से एक-एक को, बीन-बीनकर तलवार के घाट उतार दें। काम पक्के इरादे के साथ होशियारी से करें। निहत्थे होने पर उन्हें व्येशेन्स्काया, दोन के दाहिने किनारे की तरफ से भेजें, ताकि वे मोर्चे से दूर रहें और उन्हें खुले हुए स्तेपी मैदान से होकर गुजरना पड़े। उस हालत में अपना फैसला बदलने पर भी वे वहां से निकलकर भाग नहीं सकेंगे। हम उन्हें दो-दो, तीन-तीन के हिसाब से अलग-अलग स्क्वैड्रनों में बाट दें और देखें कि वे लाल फौजियों से किस तरह लड़ते हैं। बाद में अगर दोनेत्स के अपने लोगों को एक करने में हमें कामयाबी मिल जाएगी, तो वे खुद जैसा चाहें वैसा करें। अगर वे एक-एक को फांसी दे देंगे तो मुझे किसी तरह कोई एतराज नहीं होगा। तुम्हारी कामयाबी मेरी खुशी है। इस बारे में मुझे सूचना हर दिन भेजते रहना।

—कुदिनोव"

पुनश्च

अगर सेरदोब्स्की रेजिमेंट हमारे स्थानीय कम्यूनिस्ट हमें सौंप दें तो जोरदार सिपाहियों की निगरानी में उन्हें व्येशेन्स्काया भेजना और दोन के किनारे के गावों की तरफ से भेजना। लेकिन, रेजीमेंट को पहले रवाना कर देना। कम्यूनिस्टों के साथ ज्यादा-से-ज्यादा भरोसे, तेज किस्म के और जरा सयानी उम्र के कज्जाक रखना। उनसे कह देना कि वे इन कम्यूनिस्टों के उधर से गुजरने की सूचना गांवों के लोगों को पहले से दे दें।

उनके बदनों को छूकर हम अपने हाथ गंदे क्यों करें ? बिलकुल बेकार है। अरे अगर साथ के कज्जाक अपना काम ढंग से करेंगे तो औरतें इन कम्यू-निस्टों की धूल खूँटे-खूँटियों से भाड़ेंगी। हमारे लिए सबसे अक्लमंदी का रास्ता यही है। अगर हम इन्हें गोली मारेंगे तो बाकी लाल फौजियों के बीच खबर फैल जाएगी कि हम अपने कैदियों को इस तरह खत्म कर रहे हैं। इससे ज्यादा आसान है कि हम लोगों को इन पर तुहा दें, वे खून के प्यासे ताज़ी कुत्तों की तरह इन पर टूट पड़ें और अपने मन का पूरा गुस्सा निकाल लें। यानी, यह कि बेंतों से खाल उधेड़ ली जाए, मगर न कोई किसी तरह का कोई सवाल पूछे और न कोई जवाब दें।

: ४८ :

१२ अप्रैल को येलान्सकाया जिले में विद्रोहियों ने पहली मास्को रेजीमेंट के फौजियों के दांत से दांत बजा दिये।

लाल फौजों ने ठौर-ठिकाना न समझा और वे लड़ती हुई अन्तोनो-व्सकी गांव की ओर बढ़ने लगीं। वहां कटी चिकनी मिट्टी के द्वीपों पर कज्जाकों के मकान दूर-दूर बने थे, लेकिन चिरायते के पौधों से भरी सड़कें और गलियां ऐसे दलदली इलाके से होकर गुजरती थीं कि उधर से निक-लना दुश्वार था। फिर यह कि सारा गांव आल्डर वृक्षों के कुंजों से ढंका हुआ था। गांव के चारों ओर येलान्का नाम की छोटी, छिछली नदी बहती थी। नदी का तल कीचड़ से भरा और बड़ा ही खतरनाक था।

सो, पहली मास्को रेजीमेंट की पैदल सेना ने आराम और आसानी से गांव पार करने की सोची। लेकिन, गांव के पहले मकानों से गुजरते ही और आल्डर कुंजों के पास पहुंचते ही लगा कि काम आसान नहीं है। यानी, यह समझिए कि सार्जेंट मेजर का घोड़ा अभी-अभी गहरे दलदल में फंस गया था और वह जैसे-तैसे उसे वहां से निकालकर लाया था। लेकिन दूसरी बेटेलियन के ज़िद्दी कमांडर ने उसकी एक न सुनी, अपने फौजियों को आगे बढ़ने का हुक्म दिया और दलदली जमीन में जलजला पैदा करता हुआ सबसे पहले खुद आगे बढ़ा। लाल फौजियों ने अपनी मशीनगनों के साथ हिचकिचाते हुए उसका अनुकरण किया। वे घुटनों-

घुटनों गहरे कीचड़ में कोई सौ कदम तक गये कि दाहिनी ओर से उन्हें एक चीख सुनाई दी—"वह देखिए—कज्जाक हमें घेर रहे हैं।"

सचमुच ही दो विद्रोही स्क्वैड्रनों ने बैंटेलियन को घेर लिया था। सो, अब उन्होंने पीछे से हमला बोल दिया। आल्डर के झुरमुट में पहली और दूसरी बैंटेलियन को अपने तीसरे बैंटेलियन के साथियों से वंचित होना पड़ा और वे पीछे हट गई।

इस लड़ाई में विरोधियों की एक घर की बनी गोली इवान अलेक्से-येविच के पैर में लगी और वह जख्मी हो गया।

मीशा कोशेवोई उसे लड़ाई के मैदान से बाहर ले गया और लड़ाई के सामान से भरी एक लॉरी के ड्राइवर को उसने संगीन दिखाकर दोनों को गाड़ी पर बैठा लेने को राजी कर लिया।

रेजीमेंट को येलान्स्काया गाँव तक खदेड़ दिया गया। इस हार का इस इलाके में लाल सेनाओं के आगे बढ़ने के पूरे नक्शे पर बहुत ही विनाशकारी प्रभाव पड़ा। फौजें आम तौर पर पीछे हटने लगीं। खोपर के दहाने पर जमी बर्फ के टूटने से अपने को बाकी साथियों से कटा हुआ पाकर पहली मास्को रेजीमेंट ने दाहिने किनारे से दोन नदी पार की और उस्त-खोपरस्काया में रुककर कुमक का इन्तजार करने लगी। थोड़ी देर बाद सेरदोब्स्की रेजीमेंट उससे आ मिली। उस रेजीमेंट के फौजी पहली मास्को रेजीमेंट के फौजियों से बहुत अलग थे। मास्को रेजीमेंट के खास लड़ाकू लोग मास्को, तुला और नीज़नी-नोवगोरद के कामगार थे। उन्होंने अक्सर ही अपनी जानों का मोह छोड़कर दुश्मन से लोहा लिया था। बहुत बार लड़ाई आमने-सामने भी हुई थी, पर वे बराबर ही जख्मी होते रहे थे और उनके बीच से लोग लगातार मरते रहे थे। अन्तोनोव्स्की गाँव की अपनी हार के बाद लड़ाई के सामान की एक भी गाड़ी खोये बिना वे निकल गए थे। लेकिन, योगोदिव्स्की गाँव की पहली लड़ाई में ही सेरदोब्स्की रेजीमेंट की एक कम्पनी विद्रोहियों की घुड़सवार सेना की चपेट में आ गई थी। कज्जाकों को घोड़े दौड़ाकर अपनी ओर आता हुआ देखकर कम्पनी के लोग अपनी-अपनी खाइयों से भाग खड़े हुए थे और उनमें से एक-एक मार डाला जा सकता था। पर, बचत सिर्फ यह हुई थी कि कम्यूनिस्टों ने अपनी मशीनगनों से गोलियों

की बौछार कर हमले का जवाब हमने में देना शुरू कर दिया था।

सेरदोव्स्की रेजीमेंट के फौजियों की भरती सरातोव प्रान्त के सेरदोव्स्की में हड़बड़ी में की गई थी, उनमें से अधिकांश लोग मुख्यतया सयानी उम्र के किसान थे। वे प्रायः बेपढ़े-लिखे थे और उनमें से कितने ही धनी कुलक परिवारों के थे। जिन लोगों के हाथों में कमान थी उनमें से ज्यादातर लोग कभी शाही फौज में अफसर रहे थे। लाल सेना का कमीसार बिना रीढ़ की हड्डी का ढुलमुल आदमी था। उसका सैनिकों पर कोई प्रभाव न था और हर चीज की ओर से आँखें मूँदे रहने वाली कम्युनिस्ट पार्टी के दल की निगाहों के आगे वोरोनोव्स्की और दूसरे बागी उनके बीच जोरदार आन्दोलन चला रहे थे। वे उनसे कहते—"विद्रोह का दबाना सम्भव नहीं लगता। आप सबको कज्जाकों के हाथों आत्म-समर्पण कर देना चाहिए।"

स्तॉकमैन, इवान और मीशा, सेरदोव्स्की रेजीमेंट में भेज दिये गए थे और सेरदोव्स्की के अन्य तीन सैनिकों के साथ एक ही मकान में ठहरे हुए थे। स्तॉकमैन को अपने नये साथियों की बुझी हुई तबीयतें देखकर चिन्ता हो उठी थी और वह इस नतीजे पर पहुंच गया था कि रेजीमेंट किसी गम्भीर खतरे में पड़ सकती है।

ऐसे में एक दिन शाम को सेरदोव्स्की रेजीमेंट के दो फौजी वहाँ आये, और स्तॉकमैन या इवान से अभिवादन का एक शब्द कहे बिना बोले—"तो जनाब यह अंजाम हुआ इस लड़ाई का! घरों पर वे लोग हमारे खानदानों का अनाज छीन रहे हैं, और यहां हम अपनी जानें दे रहे हैं—लड़ाई में पता नहीं क्यों···।"

"तुम्हें पता है कि तुम सब क्यों लड़ रहे हो ?"

"नहीं, हमें पता नहीं है। कज्जाक भी हमारी तरह ही किसान हैं। हम जानते हैं कि उन्होंने बगावत क्यों की···हां, हम उनकी बगावत की वजह जानते हैं।"

स्तॉकमैन की सदा की रोकथाम इस समय काम न दे सकी। "और, तुम जानते हो कि तुम किस जबान में बातें कर रहे हो, सुअर के बच्चो !" वह चीखा—"यह श्वेत गारदों की जबान है !"

"तुम्हारे 'सुअर के बच्चों' की जबान तो यह रही ही है···जबान सम्हालो, नहीं तो हम तुम्हें अभी इसका मज़ा चखा देंगे।···इस आदमी की बातें सुन रहे हो, साथियो ?"

"आपे में रहो, ज़रा अपने आपे में रहो, लम्बी दाढ़ी ! हमने तुम्हारे जैसे कितने ही लोग पहले भी देखे हैं।" नाटे कद का आटे के बोरे की तरह मज़बूत एक दूसरा आदमी बीच में बोला—"चूंकि तुम कम्यूनिस्ट हो, इसलिए तुम्हारा खयाल है कि तुम जब चाहोगे तब हमारा मुंह बंद कर दोगे ? तुम यहां से बाहर जाओ, वरना हम तुम्हारी हड्डी-पसली एक करके रख देंगे !" वह अपने मज़बूत हाथ पीछे बांधे स्तॉकमैन की तरफ बढ़ा और उसकी क्रोध से जलती आंखें धमकी-सी देने लगीं।

"यह क्या है ? तुम सब-के-सब क्या श्वेत-गार्दों की तरह सोचने लगे हो ?" स्तॉकमैन उस आदमी को धक्का देते हुए हांफने लगा।

फौजी लड़खड़ाता हुआ फिर पास आया और उसने स्तॉकमैन का हाथ जकड़ना चाहा, लेकिन जो आदमी पहले बोला था, उसने उसे रोक दिया। "बेकार तंग न करो उसे !"

"तुम लोग क्रांति-विरोधियों की तरह बातें कर रहे हो। तुम बागी हो, और हम सोवियत सरकार के विरोधियों के रूप में तुम्हें अदालत में पेश करेंगे।"

"तुम पूरी-की-पूरी रेजीमेंट को तो अदालत में पेश कर नहीं दोगे।" सेरदोब्स्की के एक फौजी ने जवाब दिया—"कम्यूनिस्टों को चीनी और सिगरटें मिलती हैं, और हमें कुछ भी नहीं मिलता।"

"यह बात झूठ है !" बिस्तरे से थोड़ा उठते हुए इवान अलेक्सेयेविच चीखा—"हमें बिलकुल वही मिलता है जो तुम्हें।"

इसके बाद स्तॉकमैन ने एक शब्द नहीं कहा। उसने अपना बरान-कोट पहना और बाहर निकल गया। किसी ने उसे नहीं रोका। उलटे, उसका मज़ाक ऊपर से बनाया। उसने जाकर रेजीमेंट के कमीसार की खोज की। कमीसार रेजीमेंट के स्टाफ हेडक्वार्टर में मिला तो वह उसे एक दूसरे कमरे में ले गया और झगड़े की पूरी तफसील बयान कर बोला कि उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाए। कमीसार ने अपनी दाढ़ी खुजलाते

हुए पूरी बात सुनी और गीग के रिमवाला अपना चश्मा ठीक करते हुए यों बोला, जैसे कि कोई फैसला कर न पा रहा हो—"कल कम्यूनिस्ट-दल की बैठक बुलाये लेते हैं। उसी समय सारी स्थिति पर विचार कर लिया जाएगा। लेकिन आज की हालत में उन्हें गिरफ्तार करना मुमकिन नहीं है।"

"क्यों नहीं है ?" स्तॉकमैन ने झटके से पूछा।

"देखो, साथी स्तॉकमैन, मैंने खुद महसूस किया है कि रेजीमेंट में कहीं कोई गड़बड़ी है। शायद कुछ क्रांति-विरोधी तत्त्व काम कर रहे हैं। सिर्फ यह है कि मेरी पकड़ में आ नहीं रहा। लेकिन यह जरूर है कि रेजीमेंट के अधिकांश लोग ऐसे लोगों के प्रभाव में हैं। किसान तो हमेशा अपने ढंग से काम करेंगे। हम-तुम कर क्या सकते हैं ? मैंने डिविजनल-स्टाफ को सारी बातों की सूचना दे दी है और कहा है कि रेजीमेंट को वापस बुलाकर उसे नए सिरे से सगठित किया जाए।"

"लेकिन, श्वेत-गार्दों के इन एजेंटों को इस वक्त गिरफ्तार क्यों नहीं किया जा सकता और उन्हें डिविजनल-क्रांतिकारी अदालत के सामने पेश क्यों नहीं किया जा सकता ? जिस तरह की बातचीत ये लोग करते हैं, वह तो सिर्फ विश्वासघात है, और कुछ नहीं।"

"यह बात मैं जानता हूँ। लेकिन इस वक्त इन्हें गिरफ्तार करने से हद के बाहर जा सकते है—गदर तक हो सकता है।"

"मगर, अधिकांश लोगों का रवैया समझने के बाद भी तुमने आज से बहुत पहले राजनीतिक विभाग को इसकी सूचना क्यों नहीं दी ?"

"ऐसा नहीं है। मैंने सूचना दी है। लेकिन उधर से जवाब हमेशा देर में आता है। यानी, रेजीमेंट के वापस बुलाए जाते ही हम अनुशासन तोड़नेवालों को सख्त सजा देंगे। फिर, जिस तरह की बातें तुमने बतलाई हैं, वैसी बातें करनेवालों को तो खास तौर पर समझ लिया जाएगा।" त्योरी चढ़ाते हुए वह बोला—"और वोरोनोव्स्की और चीफ ऑफ स्टाफ वोलकोव पर भी मेरा अपना सन्देह है। ग्रुप की कल की बैठक के बाद मैं घोड़े पर सवार होकर उस्त-मेदवेदित्स्काया जाऊंगा और राजनीतिक विभाग से सारी स्थिति पर बातचीत करूंगा। हमें खतरे को सीमित करने

के लिए फौरन ही कदम उठाने चाहिए। वैसे देखो, मेरी-तुम्हारी यह बातचीत यहा से आगे न जाने पाए।"

"लेकिन ग्रुप की मीटिंग तुम फौरन ही क्यों नही बुला लेते? समय हमारा इन्तजार तो करेगा नहीं, कॉमरेड!"

"मैं जानता हूं, पर उस वक्त बैठक नहीं हो सकती। अधिकांश कम्यूनिस्ट बाहर की चौकियो पर है। मैंने खुद इस बात पर जोर दिया, क्योंकि ऐसी परिस्थिति मे पार्टी के बाहर के तत्वों पर विश्वास करना खतरे से खाली नहीं है। इसके अलावा यह भी है कि जिस बैटरी मे मुख्य रूप से कम्यूनिस्ट हैं, वह तो सिर्फ आज रात को आएगी। रेजीमेंट के इस सकट के सिलसिले मे ही मैंने उसे यहाँ बुलाया है।"

स्तॉकर्मन स्टाफ मे अपने पडाव पर आया, और उसने कमीसार से हुई अपनी बातचीत का सारांश इवान और मीशा को बताया।

"तुम अब कायदे से चल सकते हो?" उसने इवान अलेक्सेयेविच से पूछा।

"अभी हिचकता हूँ मैं। पट्टी खोलने में डर लगता है मुझे। लेकिन अगर जरूरी होगा तो खोल दूगा।"

फिर, जब बाकी लोग सोने चले गए तो स्तॉकर्मन ने रेजीमेंट की सारी स्थिति का ब्यौरा विस्तार में लिखा, आधी रात होने पर मीशा को जगाया, और उसकी ट्युनिक की जेब मे खत ठूसते हुए बोला—"कहीं से एक घोडा हासिल करो, फौरन उस्त-मेदवेदित्स्काया चले जाओ और हर कीमत पर यानी अपनी जान की बाजी लगाकर भी इस पत्र को चौदहवीं डिविजन के राजनीतिक विभाग मे पहुँचा दो।···कितना समय लगेगा वहा तक पहुँचने मे? घोड़ा तो मिल जाएगा?"

मीशा ने सूखे हुए, कडे बूट चटाए और जवाब दिया—"मैं किसी घुड़सवार गश्ती-फौजी का घोडा उड़ा दूंगा और ज्यादा-से-ज्यादा दो घंटे मे उस्त-मेदवेदित्स्काया पहुंच जाऊंगा। घोड़े अच्छे हैं नहीं, वरना तो मैं और जल्दी पहुँच जाता। मैं तो घोड़ों के गिरोह को चराने के लिए ले जाता रहा हू। मैं उन्हें दौड़ाना खूब जानता हूं।" उसने पत्र ट्युनिक की जेब से निकाला और बरानकोट की जेब में डाल लिया।

"चिट्ठी बरानकोट की जेब में क्यों डाल ली ?" स्तॉकमैन ने अचरज से पूछा।

"अगर मैं कहीं पकड़ गया तो यह झट से मेरे हाथ में आ जाएगा।"

"यह तो ठीक है···लेकिन···" स्तॉकमैन ने कुछ कहना चाहा। पर मीशा बोला—"अगर मैं पकड़ गया तो चिट्ठी फौरन लेकर चबा डालूंगा।"

"शाबाश !" स्तॉकमैन हलके से मुसकराया। फिर जैसे कि किसी अपशकुन पर काबू पाते हुए, उसने अपने हाथ उसकी गर्दन में डाले, उसे सीने से लगाया, ठंडे थरथराते हुए होंठों से उसे चूमा और बोला—"अच्छा, जाओ।"

मीशा बाहर गया। उसने निगाह बचाकर किसी गश्ती फौजी का सबसे अच्छा घोड़ा उड़ाया और अपनी अगुली घुड़सवारों की नई, कारबाइन राइफल के घोड़े पर जमाकर बढ़ चला। वह बड़ी सावधानी से गांव के बीच और चौकी की बगल से गुजरा। सिर्फ सड़क की ऊंचाई पर पहुंचने पर ही उसने राइफल कंधे पर लटकाई और सरातोव के उस छोटे कद के घोड़े को पूरी रफ्तार से रपटा दिया।

: ४६ .

तड़के से धीमा-धीमा पानी पड़ने लगा, हवा सर्राटे भरने लगी और पूर्व की ओर से तूफ़ानी बादल उमड़ने लगे। सुबह होते ही स्तॉकमैन के साथ रहने वाले सेरदोब्स्की रेजीमेंट के फौजी उठे और निकलकर बाहर आए। आधे घंटे बाद, स्तॉकमैन और उसके साथियों की तरह ही सेरदोब्स्की रेजीमेंट से सम्बद्ध तोलकाचेव नाम के येलान्स्काया के एक कम्यूनिस्ट ने मकान के दरवाज़े भड़ाक से खोले और हांफता हुए चीखा—"स्तॉकमैन, कोशेवोइ, तुम लोग यहां हो ? बाहर आओ।"

"बात क्या है ? यहां आओ।" स्तॉकमैन ने बरानकोट उठाते और जल्दी-जल्दी पहनते हुए कहा।

"रेजीमेंट में मुसीबत खड़ी हो गई है।" तोलकाचेव ने स्तॉकमैन के पीछे जाते हुए बुदबुदाकर कहा—"बैटरी अभी ऊपर गई तो पैदल

फौज ने उससे हथियार छीनने की कोशिश की। फौज के लोगों ने गोली चलानी शुरू कर दी, लेकिन तोपचियों ने उन्हें खदेड़ दिया, गनलॉक निकाल लिए और नाव से नदी पार कर दूसरी तरफ चले गए।"

"और अब···अब क्या होगा?" कराह के साथ बूट चढ़ाते हुए इवान अलेक्सेयेविच ने उससे पूछा।

"इस वक्त गिरजे में सभा चल रही है···पूरा रेजीमेंट···"

"कपड़े पहलो···फौरन!" स्तॉकमैन ने इवान अलेक्सेयेविच को आदेश दिया···और तोलकाचेव की बांह जकड़ते हुए पूछा—"कमीसार कहा है? बाकी कम्यूनिस्ट कहा हैं?"

"मैं नही जानता। कुछ लोग उन लोगों के साथ भाग गए हैं, लेकिन मैं आपके पास चला आया हू। खबर यह है कि उन लोगों ने तारघर ले लिया है, और किसी को अन्दर जाने की इजाजत नही है। हमें वहा से निकल आना चाहिए···लेकिन सवाल है कि निकलें तो निकलें कैसे?" घुटनों के बीच हाथ दबाकर आदमी निढाल होकर बिस्तर पर पड रहा।

उसी समय बरसाती की सीढ़ियों पर आहट हुई और मेरदोव्स्की के छः फौजी दौड़ते हुए मकान के अन्दर दाखिल हुए। उनके चेहरे लाल थे और उनसे बदनीयती टपक रही थी।

वे चीखे—"सभी कम्यूनिस्ट बैठक में चलें! जल्दी···फौरन···।"

स्तॉकमैन ने इवान की नजर से नजर मिलाई और अपने होंठ भींचे। बोला—"चलो, हम लोग आते हैं।"

"अपने हथियार यहीं छोड दो···मोर्चे पर तो जा नही रहे हो।" उनमे से एक आदमी बोला। लेकिन स्तॉकमैन ने जैसे उसकी बात सुनी ही नहीं और अपनी राइफल कंधे पर लटकाकर सबसे पहले बाहर निकल आया।

चौक में ग्यारह सौ लोग उबल रहे थे। स्थानीय लोग वहाँ बिलकुल नहीं थे, क्योंकि यह अफवाह बार-बार उडी थी कि रेजीमेंट के लोग विद्रोहियों में मिल जाएँगे और सड़कों पर कम्युनिस्टों के लोहे से लोहा बजेगा।

सो, स्तॉकमैन भीड में घसता गया। उसकी निगाहें रेजीमेंटल कमान के लोगों की तलाश करती रहीं। उसी समय कमीसार उसकी बगल से निकला। दो सैनिक उसके हथियार सम्हाले उसके साथ दीखे। अचानक ही किसी ने उसे पीछे में भीड के बीच ढकेला। कमीसार का चेहरा उतर गया और एक-दो क्षण बाद वह लोगों के बीच रखी एक मेज़ पर चढ़ता नज़र आया। स्तॉकमैन ने चारों ओर निगाह दौड़ाई। पीछे राइफल के सहारे टिका दिखलाई पडा इवान अलेक्सेयेविच और इन लोगों को बुलाने के लिए जानेवाले फौजी। "लाल सेना के कॉमरेडो!" आवाजों की रोक के बीच उसके स्वर हलके से गूँजे—"आज जब दुश्मन दरवाजे पर दस्तक दे रहा है, तब सभाएँ करना...कॉमरेडो..."

कमीसार को आगे बोलने नहीं दिया गया। दूसरे क्षण मेज़ के चारों ओर लाल फौजियों की भूरी टोपियां और नीली सगीनें इस तरह चमक उठीं, जैसे कि हवा में लहरा रही हों। साथ ही लोग उसकी ओर हाथ हिला-हिलाकर मुट्ठियां दिखलाने लगे और एक-से-एक तीखी बातें पिस्तौल की गोलियों की तरह हवा में गूँजने लगीं—

"तो, हम ऐसे कॉमरेड हैं।"

"अपनी चमड़े की जैकेट तो उतार डालो।"

"तुम कौन हो हमें लड़ाई में झोंकने वाले?"

"मार डालो इसे... सगीन भोंक दो...बहुत देखी हमने इसकी कमीसारी!"

स्तॉकमैन ने देखा कि एक लम्बा-चौडा, सयानी उम्र का लाल सैनिक मेज पर कूदकर चढ़ा और उसने लपककर उसकी छोटी दाढ़ी हिला दी। मेज डगमगाई और वे दोनों चारों ओर जमा लोगों के फैले हुए हाथों में जा पडे। मेज की जगह भूरे कोटों का अम्बार लग गया और कमीसार की मायूस चीख लोगों की ठोस, गगनभेदी गरज में डूब गई।

स्तॉकमैन भीड चीरते और बहुत ही बेरहमी से लोगों को इधर-उधर ढकेलते हुए तेज़ी से आगे बढ़ा। किसी ने उसे नहीं रोका, पर राइफल के कुंदे और मुट्ठियां उस पर बरसने लगीं। उसकी पीठ से राइफल उतार ली गई और सिर से कज्ज़ाक टोपी उड़ा दी गई।

"आखिर तू वहां कहां बढ़ता चला जा रहा है, शैतान कहीं का !" स्तॉकमैन को लपकते देखकर एक लाल फौजी चीखा।

उलटी हुई मेज के पास उसका रास्ता एक ट्रूप अफसर ने रोक लिया। इस बीच मेमने की खाल की उसकी टोपी पीठ पर आ गई थी। चेहरा ईंट की तरह लाल और पसीने से तर हो गया था। पलकें झपक-झपककर अन्दर के आक्रोश का पता दे रही थीं। "आखिर कहां मरने को चले जा रहे हो ?" आदमी गरजा।

"मैं कुछ कहना चाहता हूँ। एक आम फौजी को भी दो बातें कह लेने दो।" स्तॉकमैन मेज को सीधा करते हुए भर्राये हुए गले से बोला। इस पर उसके आसपास के कुछ लोगों ने मेज पर चढ़ने में उसकी सहायता तक की। लेकिन चौक का शोरगुल जरा भी कम नहीं हुआ, तो स्तॉकमैन पूरी आवाज से गला फाड़कर चीखा—"शांत !"

एक क्षण बाद शोरशराबा थोड़ा कम हुआ, तो खांसी को दबाते हुए वह काफी जोर से बोला—"लाल सेना के साथियो, लानत है तुम पर ! ऐसे गम्भीर क्षण में तुम सब जनता की सरकार के साथ गद्दारी कर रहे हो। तुम सब तब डगमगा रहे हो जब जरूरत है दुश्मन पर भरपूर, सीना-तोड़ वार करने की ! जब सोवियत देश दुश्मनों के लोहे के शिकंजे में जकड़ा अपने अस्तित्व के लिए जान की बाजी लगा रहा है, तब तुम ये मीटिंगें कर रहे हो, तुम सब सीधी-सीधी गद्दारी पर उतर आए हो। और सो भी क्यों ? इसलिए कि तुम्हारे कमांडरों ने तुम्हारे साथ विश्वासघात कर तुम्हें कज्जाक जनरलों की तरफ झुका लिया है! तुम्हारे पहले के अफसरों ने सोवियत सरकार का विश्वास तोड़ा है और तुम्हारी गैर-जानकारी से फायदा उठाकर अब वे तुम्हारी रेजीमेंट को कज्जाकों को सौंपने के मसूबे बांध रहे हैं। इसलिए जरा अपने होश में आओ ! वे तुम्हारे हाथों से मेहनतकशों और किसानों की सरकार का गला घोंटवाना चाहते हैं।"

दूसरी कम्पनी के कमांडर और पहले के जारशाही अफसर ने अपनी राइफल कंधे पर साधी, पर स्तॉकमैन ने उसकी हरकत देख ली और चिल्लाकर बोला—"इसकी हिम्मत न करना ! इसके लिए बहुत वक्त

मिलेगा। मैं माग करता हूँ कि तुम एक फौजी कम्यूनिस्ट की बात कान देकर सुनो ! ···हम कम्यूनिस्टों ने अपनी पूरी जिन्दगी लगा दी है''···
स्तॉकमैन का स्वर पचम पर पहुच गया और उसका चेहरा ज़र्द पड़ गया—
"मेहनतकशों और सताए हुए किसानो की सेवा के बिरवे को सीचने मे हमने बूद-बूद कर अपना सारा खून खपा दिया है। हम मौत की आखों मे आखें डालने के आदी हैं। मारना चाहते हो तो मार दो मुझे गोली···"

अलग-अलग लोग एक साथ चीखने लगे—"हम काफी सुन चुके। इस आदमी से कहो कि यह बकवास बन्द करे।"

"···चाहो तो मार दो मुझे गोली, लेकिन मैं फिर कहता हूँ कि अपने होश में आओ। यह मीटिंग करने का समय नही है। इस वक्त तो तुम सबको बढ़कर श्वेत गार्डों से लोहा लेना चाहिए।"

उसने अपनी सिकुड़ी हुई आखों से फौजियों की आधी शांत भीड़ पर नजर डाली। उसे थोड़ी दूर पर रेजीमेंट का कमाडर वोरोनोव्स्की बर-बस मुस्कराता और बगल मे खड़े लाल सैनिक के कानों मे कुछ फुसफुसाता दीखा।

"तुम्हारी रेजीमेंट का कमाडर···" स्तॉकमैन ने हाथ फैलाकर वोरोनोव्स्की की ओर इशारा करते हुए कहा। लेकिन अफसर ने अपने मुह पर हाथ रख लिया और बगल के फौजी से धीरे से कुछ कहा। फिर स्तॉकमैन अपना वाक्य पूरा भी न कर पाया कि अप्रैल के बरसात से नहाए दिन मे एक गोली हवा में सर्राई। स्तॉकमैन अपना कलेजा थामकर गिर पड़ा और लोहे के रग के बालों से भरा सिर लोगों की आखों से ओझल हो गया। लेकिन वह कूदकर खड़ा हो गया, हालाकि लड़खड़ाता रहा।

"ओसिप-दाविदोविच !" स्तॉकमैन को उठते हुए देखकर इवान के मुह से कराह निकल गई। वह लोगों को चीरते हुए उसकी ओर बढ़ने लगा, लेकिन उसके आसपास के लोगों ने कुहनी पकडकर उसे रोकना चाहा और बडबडाने लगे—"मुंह बन्द कर और अपनी राइफल हमे सौंप, सुअर कही का···"

उन्होंने उसे निहत्था किया, उसकी जेबों की तलाशी ली और उसे

बाहर चौक में ले गए। बाकी कम्यूनिस्टों को भी एक-एककर बीना और निहत्था किया गया। पास की सड़क पर एक सौदागर के मकान के पास चार-पांच बार गोलियां चलाई गईं और इस तरह एक कम्यूनिस्ट मशीन-गनर मार डाला गया। उसने अपनी लेविस मशीनगन उन लोगों को सौंपने से इनकार कर दिया था।

इस बीच स्तॉकर्मन मेज़ पर खड़ा लड़खड़ाता रहा। उसके चेहरे पर मौत की सफेदी दौड़ गई और उसके होंठ गुलाबी खून से तर हो उठे। अपनी अंतिम शक्ति और मनोबल का प्रयोग कर वह जैसे-तैसे चीखा—"लोगों ने तुम्हारे साथ चाल खेली है·· गद्दार हैं वे···वे खुद अपने गुनाहों के लिए माफी मांगने और अफसरी के नए ओहदों पर पहुंचने की कोशिश में हैं।···लेकिन उससे कुछ नहीं···कम्यूनिस्ट मरेगा नहीं, जिन्दा रहेगा अपने होश में आओ, कामरेडो···!"

वोरोनोव्स्की की बगल में खड़े फौजी ने फिर राइफल अपने कंधे पर जमाई और दूसरी गोली लगते ही स्तॉकर्मन मेज़ से भड़भड़ाकर नीचे जा गिरा। फौजियों ने उसे रौंदकर रख दिया। चेचक के दागों से भरे चेहरे और पतले, भद्दे मुंहवाला एक सैनिक लपककर मेज़ पर चढ़ गया और गरजा—"साथियो, हमने बड़े-बड़े वायदे सुने हैं, पर वे धमकियां और कोरी बातें रही हैं और इस वक्त यह शानदार लेक्चर झाड़ने वाला आदमी कुत्तों की मौत मर रहा है। कम्यूनिस्टों और जीतोड़ मेहनत करनेवाले किसानों के लिए सिर्फ मौत है। मैं कहना चाहता हूं कि हमारी आंखें खुली हुई हैं और हम जानते हैं कि हमारा दुश्मन कौन है! गावों में तुमसे लोगों ने आखिर क्या कहा था! कहा था कि ग्राम लोगों के बीच भाईचारा होगा, उनके बीच बराबरी होगी। यही तो कहा था हमसे कम्यूनिस्टों ने! लेकिन सचमुच हमने पाया क्या? लूटपाट···भाइयो··· लूटपाट! मेरे पापा ने मुझे चिट्ठी लिखी है कि ये लोग दिन-दहाड़े चोरी कर रहे और लूट रहे हैं। इन लोगों ने हमारे घर का सारा अनाज हथिया लिया और मेरे पापा की मिल छीन ली है। दूसरी तरफ इनके फरमान में क्या है? फरमान में कहा गया है कि हर चीज मेहनतकश किसानों की है। तो क्या मेरे पापा मिल पर जीतोड़ मेहनत नहीं करते

थे ? अब मैं यह पूछता हूँ कि कम्यूनिस्टों की यह लूटपाट आखिर क्या है ? इन्हे कुचल दो···इनके टुकडे-टुकडे कर डालो !"

परन्तु वक्ता अपनी वात खत्म भी न कर पाया कि कज्जाक घुडसवारों के दो स्क्वैड्रन पश्चिम की ओर से गाव मे दाखिल हुए। साथ ही दोन के किनारे की पहाडियो के दक्षिणी ढाल से कज्जाक पैदल सेना मार्च करती आई और ब्रिगेड का विशेष कमाडर बोगातिरयोव अपने स्टाफ के लोगों और आधे स्क्वैड्रन रक्षकों के साथ घोडे पर सवार वीच-चौक में आया।

इस पर सेरदोव्स्की रेजीमेंट के लोग जल्दी-जल्दी दोहरी कतार मे खडे होने लगे, मानो वोगातिरयोव का दल दूर सिर्फ झलका ही कि कमाडर वोरोनोव्स्की की आवाज हवा मे गूजी—"रेजीमेंट···अ··· टेन्शन !"

वोरोनोव्स्की की आवाज़ में इतना ज़ोर लाल फौजियों ने पहले कभी अनुभव न किया था।

: ५० :

ग्रिगोरी-मेलेखोव ने गाव मे पाँच दिन बिताए और इस बीच अपनी और अपनी सास की कई एकड जमीन की बोआई पूरी कर दी। फिर अपने घर-परिवार के लिए हुडक कर और सिर मे जुए भरकर पिता रेजीमेंट से लौटा कि वह खुद अपने डिविजन को लौटने के लिए चल पडा। कुदिनोव ने, सेरदोव्स्की-रेजीमेंट से चल रही सारी बातों की सूचना उसे गुप्त रूप से दे दी थी और उससे जल्दी-से-जल्दी लौटने को कहलाया था।

पर ग्रिगोरी ने जिस दिन तातारस्की से कारगिंस्काया जाने का निश्चय किया, उस दिन दोपहर को वह अपने घोड़े को पानी पिलाने के लिए दोन नदी के किनारे गया, और वागीचो के सिरो तक बढ़ी नदी के पास पहुँचा कि उसकी नजर अकसीन्या पर पड़ी। वह अपनी बालटियां जान-बूझकर धीरे-धीरे भरती लगी, जैसे कि उसके पास आने की प्रतीक्षा मे हो। लेकिन उसने अपने कदम तेज कर दिए और उसके पास पहुंचा तो अपने रुपहले पख फडफड़ाती, उदास स्मृतियों ने उसे घेर लिया।

अकसीन्या पैरों की आहट पाते ही मुड़ी और उसके चेहरे पर बनावटी आश्चर्य के भाव खिल उठे। लेकिन, मुस्कान की खुशी और दिल के पुराने दर्द ने उसका साथ न दिया। वह मुस्कराई और इस तरह मुस्कराई कि अन्तर में छिपी पीड़ा बरस-बरस उठी। उसकी जैसी अभिमानिनी के लिए यह बहुत ही असाधारण रहा और ग्रिगोरी का दिल हमदर्दी और प्यार से तड़प उठा। पुरानी यादों के सहारे एक कलप ने जैसे उसे डस लिया और वह अपना घोड़ा रोककर बोला—"दोब्रयेद्येन (गुडडे) अकसीन्या रानी !

"दोब्रयेद्येन !"

अकसीन्या की आवाज़ में अचरज, ममता और कटुता एकसाथ घुल उठीं।

"यानी, एक-दूसरे को आंखों से देखे एक ज़माना हुआ।"

"हां, एक ज़माना हुआ।"

"मुझे तो तुम्हारी आवाज़ तक की पहचान नहीं रही···"

"तुम भूलते बहुत जल्दी हो।"

"इसे बहुत जल्दी कहोगी ?"

ग्रिगोरी ने पास आकर उससे मुंह रगड़ते घोड़े को पीछे ठेला। अकसीन्या ने सिर झुका लिया और बहुँगी में बालटी लटकाने की कोशिश की, पर वह कब्ज़े में फंसी ही नहीं। फिर एक क्षण तक चुपचाप खड़े रहे। अचानक ही एक जंगली बत्तख सिर के ऊपर इस तरह सर्राटे भरने लगी, जैसे कि किसी कमान से छोड़ी गई हो। नदी की लहरें अनबुझ प्यास से भरकर खड़िया-मिली मिट्टी को जीभ से चाटती और किनारे पर सिर पटकती रहीं। दूर बाढ़ के पानी से लबालब जंगल में कपूरी वृक्षोंवाली लहरियां लहराती रहीं। हवा नदी के झाग और सोंधी-सोंधी महक से भरी रही। दोन का पानी रह-रहकर पूरे ज़ोर से उमड़ता रहा, जैसे कि दूर-से-दूर किनारे को अपनी लपेट में ले लेना चाहता हो।

ग्रिगोरी ने अकसीन्या की ओर से निगाह हटाकर नदी पर एक नज़र डाली। देवदारु के पेड़ अपनी नंगी शाखें हिलाते हुए अपने पीले-भूरे तने पानी में डुबोए खड़े रहे, बेंत के पौधे अपनी क्वारी कलियां सजाते रहे और

हरे चोंडों के बादल नदी पर झुक-झुक आते रहे। ग्रिगोरी की आवाज में परेशानी और कटुता घुल उठी। पूछा—"क्यों, कोई बात दिमाग में आ नहीं रही क्या? इस तरह चुप क्यों हो?"

पर अकसीन्या ने इस बीच अपने ऊपर काबू पा लिया था। सो, चेहरे पर शिकन लाए बिना उसने जवाब दिया—"लगता है, करने जैसी बातें हम सभी कर चुके···"

"सचमुच?"

"और होना भी ऐसा ही चाहिए···पेड़ साल में एक बार ही तो फूलता है।"

"और तुम्हारा खयाल है कि हमारा पेड़ पहले ही फूल चुका है?"

"तुम्हारा ऐसा खयाल नहीं है?"

"ठीक है, लेकिन बात कुछ अजीब ही लगती है···" ग्रिगोरी ने घोड़े को पानी तक जाने की छूट दी, और अकसीन्या पर नजर डालते हुए मुस्कराया—"मैं तो आज तक तुम्हें अपने दिल से अलग नहीं कर सका, अकसीन्या! यानी मेरे बच्चे बड़े हो रहे हैं·· खुद मेरे सिर के बाल आधे सफेद हो गए हैं - सचमुच कितने-कितने सालों की खाई पड़ गई है हमारे बीच! लेकिन मुझे अब भी तुम्हारा खयाल आता है, मैं तुम्हें अब भी अपने सपनों में देखता हूं और तुम्हें अब भी प्यार करता हूं। कभी-कभी तुम्हारे खयाल के साथ ही लिस्तनित्स्की के यहां की अपनी जिन्दगी की भी याद आने लगती है ··सोचो तो कि उस वक्त हम एक-दूसरे को कितना प्यार करते थे। कभी-कभी जब गुजरी हुई जिन्दगी पर नजर डालता हूं तो यह खाली, उलटी हुई जेब-सी लगती है··"

"मुझे भी ऐसा ही लगता है···लेकिन, अब मुझे जाना चाहिए··· हम खड़े बातें कर रहे हैं, और···" उसने दृढ़ता से बालटी उठाई, अपने धूप से संवराए हाथ बहंगी पर रखे और ढाल पर चढ़ने के लिए कदम आगे बढ़ाए। पर सहसा ही उसने अपना चेहरा ग्रिगोरी की तरफ मोड़ा और उसके गाल पर हलकी-हलकी सहती-सहती सी जवानी की लाली दौड़ गई—"यही, ठीक इसी जगह हमारा प्यार शुरू हुआ था, ग्रिगोरी, तुम्हें याद है? उसी दिन गांव के कज्जाक फौजी ट्रेनिंग के कैम्प

में गये थे।" उसने मस्कराते हुए कहा और उसकी आवाज में खुशी बजने लगी।

'मुझे सब-कुछ याद है।"

ग्रिगोरी घोड़े को लेकर अहाते में लौट आया और उसने उसे नाद के के पास खड़ा कर दिया। पेन्तेली उसे विदा देने के लिए घर में बना रहा था। सो, उसने बाहर निकलकर पूछा—

"तो तुम जल्दी ही जाओगे न ? तुम्हारे घोड़े के सामने घास डाल दूं ?"

"कहाँ जाऊंगा ?" ग्रिगोरी ने अपने पिता पर यों ही-सी नज़र डाली।

'क्यों, कारगिन्स्काया नहीं जाओगे ?"

"नहीं, मैं आज नहीं जा रहा।"

"यह क्या हुआ ?"

"मैंने इरादा बदल दिया है।" ग्रिगोरी ने अपने सूखे होंठ चाटे और अपनी आंखें आसमान की ओर उठाईं—"बादल घिर आ रहे हैं···लगता है, पानी बरसेगा···कोई यह हुक्म तो मिला नहीं है कि मैं भीगता चला जाऊँ।"

"यह तो ठीक है।" बूढ़े ने हां-में-हां मिलाई, पर उसने ग्रिगोरी की बात का यकीन नहीं किया, क्योंकि अभी कुछ देर पहले वह जब मकान के पीछेवाले अहाते में गया था, तो उसने उसे अक्सीन्या से बातें करते देखा था। सो चिन्ता में सोचने लगा—'फिर पुराने रंग-ढंग नज़र आते हैं! ···नताल्या को दुबारा तो तंग नहीं करेगा···भाड़ में जाए···ताज़ी कुत्ता है!' उसके पीछे जाते बेटे की पीठ पर निगाह लड़ाई और उसे अपनी जवानी याद आई। मन-ही-मन सोचने लगा—'बिलकुल मेरी नकल है, शैतान कहीं का। सिर्फ यह है कि इस मामले में अपने बाप को भी मात दे चुका है। लेकिन अगर इसने अक्सीन्या का दिमाग फिर खराब किया और खानदान में नए सिरे से मुसीबत पैदा की, तो मैं इसके बदन की सारी गर्द झाड़कर रख दूंगा। लेकिन यह मैं करूंगा किस तरह ?'

अगर पहले की बात होती और वह ग्रिगोरी को अकसीन्या से बातें करते देख लेता, तो जो हाथ में आता उसी को खीचकर उसकी पीठ पर दे मारता। लेकिन इस समय उसने कुछ नहीं किया और यह भी नहीं जताया कि मैं यह अच्छी तरह जानता हूं कि तुम्हारा इरादा क्यों बदला ! बात यह है कि ग्रिगोरी अब पुराना, जगली-सा कज्ज़ाक छोरा न था। हालाकि भले वह न पहनता था, पर आज वह डिविजनल-कमाडर था, जनरल था और उसकी मातहत हजारो कज्ज़ाक थे। तो माना कि ग्रिगोरी उसका बेटा था, पर अनुशासन के विचार से वह उसके खिलाफ सिर उठाने की बात न सोच सकता था। उसके अपने हाथ बधे हुए थे। फौज मे वह खुद ज्यादा-से-ज्यादा सार्जेन्ट ही तो रहा था। अभी उस दिन जमीन की जुताई करते समय बेटा बाप पर एकदम चीख पड़ा था—"वहाँ खडे मुह क्या फैला रहे हो ? वह हल उठा लो न !" इस पर बाप के मुह से बोल न फूटा था, और वह चुप रह गया था। हाल में उन दोनों ने जैसे अपनी-अपनी भूमिकाए बदल ली थी। ग्रिगोरी अपने बूढे बाप पर चिल्लाया तो पंन्तेली उसके हुक्म की भर्राई हुई आवाज के सामने हथियार डाल देता और मचकता हुआ उसे खुश करता फिरता।

सो, पंन्तेली बुदबुदाया—'पानी का डर है !' फिर मन-ही-मन सोचने लगा—'यह डर तब है जब बरसात का कहीं नाम-निशान नहीं है, जब पुरवा बह रही है और आसमान मे सिर्फ एक छोटा-सा बादल है। ···मैं नताल्या को सारा कुछ बतला दू क्या ?' इस भावना से उसे थोडी तसल्ली हुई और वह घर की ओर चला। पर फिर उसे सद्-बुद्धि उपजी और वह यह सोचकर अपने काम पर लौट आया कि बेकार को झगड़ा खडा हो जाएगा।

अक्सीन्या घर पहुँची तो उसने बालटियाँ खाली की और फिर फौरन ही शीशे के सामने खडी होकर अपना चेहरा चिन्ता से देखने लगी। चेहरे से उम्र टपकने लगी थी, पर खूबसूरती मे कोई कमी न हुई थी। उसके हुस्न मे अब भी वही कसाव और जादू था। वैसे जिन्दगी की खिज़ा के उडनेवाले रग उसके गालों पर उतरने लगे थे। उसकी

पलकें पीली पड़ने लगी थी, बालों में जहाँ-तहाँ चांदी के तार नजर आने लगे थे, और आंखें उदासी और थकान से धुधलाने लगी थीं।…

इसीलिए अकसीन्या अपना रूप देखते-देखते मुड़ी, बिस्तरे पर पड रही और उसकी आंखों के बादल टूटकर बरस चले। ऐसे मधुर आंसू उसने पिछले कितने ही दिनों से न जाने थे। उसके दिल का बोझ जैसे उतर गया।

जाड़ा आता है तो दोन के ऊपर के खड़े ढालों पर काटती हुई हवाएँ दौड़ती फिरती हैं। वे नगी चोटियों से बर्फ उडा-उडाकर जहाँ-तहाँ अम्बार लगा देती हैं और फिर उन्हें फूंक-फूंककर पत्थर की तरह कठोर बना देती हैं। चोटी के ऊपर सधा बर्फ का लम्बा-चौड़ा टीला धूप में चीनी की तरह चमकता है, सांझ के धुधलके मे नीलम-सा दमकता है, तड़के गुलाबी रग की भाई मारता है और सुबह के समय पीले रग में बैंजनी रग घोलने लगता है। फिर, अपने एकान्त-मौन से सभी को डराते हुए वह ज्यों-का-त्यों बना रहता है कि बर्फ नीचे से गलने लगती है या अपना ही बोझ नही सह पाती, और हवा का एक झोंका उसके पैर उखाड देता है। इसके बाद टीला एक गरज के साथ नीचे की ओर भरभराकर गिरना शुरू करता है और नाटी कांटेदार भाड़ियो और सकोच से ढाल से लिपटी वर्ड-चेरी को कुचलता और तोड़ता-मोड़ता चला जाता है। उसकी चाल से बर्फ की गर्द उड़ती है और आसमान की ओर बढ़ती है।…

अकसीनया का प्यार भी, इतने वर्षों से, टीले की इसी बर्फ की तरह जमा होता रहा था और इस समय उसे भी सिर्फ एक हलके झटके की जरूरत थी। सो, ग्रिगोरी का उससे मिलना और उसका 'दोब्रयेद्येन, अक-सीनया-रानी' कहना ही काफी हो गया था। वैसे भी ग्रिगोरी का क्या? क्या अकसीनया को उससे प्यार न था? क्या इतने वर्षों उसे उसका ध्यान बराबर नहीं रहा था? क्या उसकी यादों में वह हर वक्त डूबी नही रही थी, और क्या हर दिन और हर लमहा वह लौट-लौटकर उसके पास चली नहीं जाती थी? बिलकुल वैसे ही जैसे कोई अंधा घोड़ा रहट के सदाबहार घेरे का चक्कर काटता रहता है…काटता रहता है…

वह शाम तक पलग पर पटी रही, फिर उठी, मुंह-हाथ धोया, बाल ठीक किये और होने वाले दूल्हे के सामने पेश की जाने वाली लड़की की तरह, जल्दी-जल्दी कपड़े पहनने लगी। उसने साफ कमीज पहनी, फ्रांसीसी-लालशराब] वर्लरेट के रग की स्कर्ट पहनी, सिर पर रुमाल डाला, शीशे में अपने को एक नजर देखा और बाहर निकल आई।···

तातारस्की के ऊपर पेड़ की को रग के भूरे साए मँडरा-से रहे। बाढ के पानी से भरी चरागाहों के ऊपर जगली वत्तख चीखती रही। दोन के किनारे के देवदारुओं के पार पीला, धुंधला चाँद उगा और चाँदनी का लहराता हुआ रिबन पानी के इस पार से उस पार तक बध गया। ढोर दिन का उजाला रहते ही लौट आये। उनमे गायें अहातों मे जहाँ-तहाँ डकारने लगीं। हरी घास से उनका पेट पूरी तरह भरा न था।···

मगर, अकसीन्या अपनी गाय को दुहने को रुकी नहीं। उसने सफेद नाक वाला बछडा बाडे से खोल दिया, और बस! बछडा उछलता-कूदता अपनी माँ के पास पहुँचा और अपनी माँ के पतले थन से मुंह लगाकर दूध पीने लगा। इस बीच वह अपनी दुम फटकारता रहा। उसके पिछले पैर अपनी जगह सख्ती से जमे और फैले रहे।

दार्या मेलेखोव ने अभी-अभी दूध दुहने का काम खत्म किया और वह दूध-भरी बालटी लिये घर की ओर बढी कि बाड की तरफ से किसी के पुकारने की आवाज़ उसके कानो में पडी।

"दार्या ?"

"कौन है ?"

'मैं हूँ, अकसीन्या ! जरा यहाँ आओ !"

'क्या काम है ?"

"मुझे तुम्हारी सख्त जरूरत है···ईसा के नाम पर आ जाओ !"

"दूध छान लूँ जरा ··फिर अभी आती हूँ।"

कुछ क्षणों वाद दार्या बाहर आई तो उसने अकसीन्या को अस्ताखोव के फाटक के पास अपने इन्तजार मे खडा पाया। दार्या के वदन से गायों के बाडे और ताजे दूध की महक उडती रही। उसे अकसीन्या को खास मौकों के कपड़ो मे सजा-बजा देखकर बड़ा ताज्जुब हुआ। बोली—

"तुमने काम-काम आज बड़ी जल्दी खत्म कर लिया, पड़ोसिन !"

"कोई खास काम है नहीं···स्तेपान बाहर है इन दिनों। गाय एक है···खाना कभी-कभी पका लेती हूँ···कभी कुछ मुँह में डाल लिया, और बस !"

"क्या काम है तुम्हें मुझसे ?"

"ज़रा अन्दर चलो···मुझे तुमसे कुछ पूछना है।" अकसीन्या की आवाज़ काँपने लगी। दार्या ने उसका मतलब आधा समझा, और उसके पीछे-पीछे बावर्चीखाने की तरफ कदम बढ़ाये। अकसीन्या ने, बिना लैम्प जलाये, अपना बक्सा खोला, इधर-उधर खखोरकर कुछ निकाला, दार्या का हाथ अपने खुश्क, दहकते हाथों में लिया, और जल्दी-जल्दी उसकी अँगुली में एक अँगूठी पहना दी।

"क्या है यह? अँगूठी है? मुझे दे रही हो वह ?" दार्या ने आश्चर्य से पूछा।

जवाब मिला—"हाँ, यह तुम्हारे लिए है···मेरी यादगार···"

"सोने की है ?" दार्या ने खिड़की के पास जाते और हलकी चांदनी में अँगूठी को देखते हुए पूछा।

"हाँ, सोने की है···तुम इसे पहने रहो।"

"खैर, शुक्रिया···इसके बदले तुम मुझसे चाहती क्या हो ?"

"तुम अपने ग्रिगोरी को जरा देर के लिए मेरे पास भेज दो।"

"फिर,पुराना खिलवाड़ शुरू हुआ ?" दार्या जान-बूझकर मुसकराई।

"नहीं, नहीं···तुम यह कह क्या रही हो !" अकसीन्या चौंकी और उसकी आँखों में आँसू आ गए। "मुझे स्तेपान के बारे में उससे कुछ बातें करनी हैं। शायद वह उसे छुट्टी दिलवा दे।"

"लेकिन, तुम हमारे यहाँ क्यों नहीं चली आईं ? काम था तो उससे वहीं बातें कर लेतीं।" दार्या ने अपने विरोध में कपट घोला।

"नहीं, नहीं···नताल्या जाने क्या सोचती···भद्दा लगता है···"

"तो, ठीक है। मैं उससे कह दूंगी और भरसक भेजने की कोशिश करूँगी।"

ग्रिगोरी खाना खत्म कर रहा था। उसने अपना चम्मच रख दिया था, और हाथ से मूंछें पोछ रहा था कि मेज के नीचे से किसी का पैर उसके पैर से लगा। उसने नजर उठाई तो देखा कि दार्या बहुत सफाई से आँख मारकर उसे बुला रही है।

'अगर इसने मुझे प्योत्र की जगह देनी चाही और इस मामले में कुछ कहा तो इसे धुनकर रख दूँगा। खलिहान में ले जाऊँगा, स्कर्ट सिर के चारों ओर बाध दूँगा और ऐसे बेंत लगाऊँगा कि इन्सान से कुतिया बनकर रह जाए!' ग्रिगोरी ने अन्दर-ही-अन्दर उबलते हुए सोचा। पर, मेज़ के पास से उठने के बाद, एक सिगरेट जलाकर वह सीधे बरसाती में चला आया। उसके ठीक पीछे-पीछे दार्या बाहर आई और उसके बराबर आकर फुम-फुमाती हुई बोली—"उफ···सूअर हो तुम!·· जाओ, वह बुला रही है तुम्हें।"

"कौन?"

"वही···अकसीन्या!"

और एक घंटे बाद नताल्या और बच्चे सो गए तो बरानकोट के बटन कायदे से बन्द किये, ग्रिगोरी अकसीन्या के साथ अस्ताखोव के अहाते से बाहर आया। फिर वे दोनों क्षण-भर तक किनारे की अंधेरी गली में खड़े रहे। इसके बाद सन्नाटे, अंधेरे और नई घास की महक ने जैसे उन्हें इशारा कर अपनी तरफ बुलाया, और वे उसी तरह चुपचाप स्तेपी के मैदान की ओर निकल गये। ग्रिगोरी ने अकसीन्या को बरानकोट में छिपाकर अपने सीने से कसा, तो उसे वह सिर से पैर तक कांपती लगी। ब्लाउज के नीचे उसका दिल तेजी से धड़कता रहा। कभी-कभी धड़कन धीमी भी हुई।

: ५१ :

अगले दिन, रवाना होने से पहले ग्रिगोरी की नताल्या से कुछ कहा-सुनी हो गई। बात यह हुई कि उसने उसे अकेले में बुलाया और धीरे से पूछा—"कल रात कहां गये थे तुम, और इतनी देर से क्यों लौटे थे?"

"बहुत देर हो गई थी?"

"यानी, नहीं हुई थी ? मेरी आंख खुली तो पहला मुर्गा बांग दे रहा था और तब तक तुम्हारा कहीं पता न था···"

"कुदिनोव यहां आ गया था। फौजी मसलों पर उससे बातचीत करनी थी। उन सवालों का तुम्हारी-जैसी औरत के दिमाग से कोई ताल्लुक नहीं।"

"लेकिन वह यहाँ क्यों नहीं आ गया ? रात को यहीं ठहर जाता।"

"हड़बड़ी में था। उसे व्येशेन्स्काया जाना था।"

"ठहरा कहाँ था ?"

"अवोन्याचिकोव के यहां। वह उसका दूर का रिश्तेदार है, या··· ऐसा ही कुछ है।"

नताल्या ने आगे और कुछ नहीं पूछा। वैसे ग्रिगोरी की बात पर उसे पूरी तरह यकीन हुआ नहीं। पर उसकी आंखों से सच्चाई न टपकी, और उसका पति उसके विश्वास अथवा अविश्वास करने के बारे में कुछ भी निश्चय न कर पाया।

ग्रिगोरी जल्दी-जल्दी नाश्ता करने लगा, और पँन्तेली बाहर जाकर उसका घोड़ा कसने लगा। इलीनीचिना क्रॉस बनाने और उसे चूमने के बाद धीरे से बोली—"उस आसमानवाले को याद दिल से कभी न भुलाना···उसे कभी न भुलाना, बेटे ! हमने सुना कि तुमने कुछ जहाजियों को काटकर फेंक दिया···हे भगवान् ! ग्रिगोरी, जरा सोचो तो कि तुम कर क्या रहे हो! देखो कि कैसे प्यारे-प्यारे बच्चे हैं तुम्हारे ! और जिन्हें तुमने मारा, शायद उनके भी बच्चे होंगे। तुम छोटे थे तो कैसे भले थे, लेकिन अब तो जब देखो तभी तुम्हारी त्योरी चढ़ी रहती है···तुम्हारा दिल भेड़िये का दिल हो गया है। अपनी माँ की बात को कान दो, ग्रिगोरी ! तुम्हारी जिन्दगी किसी आसमानी जादू से बंधी नहीं है··हो सकता है कि किसी बेरहम की तलवार तुम्हारी गरदन नापने को भी लपलपा रही हो।"

ग्रिगोरी ने रकाब में पैर रखा और घोड़े की रास अपने हाथ में सम्हाली तो उसे खयाल आया—'जिन्दगी ने एक नया मोड़ ले लिया है, लेकिन मेरा दिल खाली और वीरान है···अब इस खालीपन को तो अकसीन्या भी भर नहीं सकती···'

फिर फाटक पर जमा अपने घर के लोगों पर उसने मुड़कर निगाह न डाली और घोड़े को कदम-चाल से ले चला। वह अस्ताखोव-परिवार के घर की ओर से गुजरा और उससे कनखी से देखा तो सामने के कमरे की आखिरी खिड़की पर अकसीन्या खड़ी देखी। अकसीन्या मुस्कराई, और उसने कसीदाकारी वाला रूमाल हिलाया। फिर अकस्मात् ही उसने उसे मरोड़कर अपने होंठों और पिछले रात के जागरण से निंदासी आंखों से लगाया।

ग्रिगोरी ने घुड़सवार-फौजियों वाली तेज़ दुलकी से घोड़ों को पहाड़ी पर चढ़ाया। ऊपर अपनी ओर आते रास्ते पर उसने दो घुड़सवारों और एक गाड़ी को धीरे-धीरे बढ़ते देखा। घुड़सवारों को पहचाना। एक था अन्तीप और दूसरा गांव के सिरे का एक दूसरा मोटा, जवान कज़्ज़ाक। ग्रिगोरी बैलगाड़ी देखकर कटबैठी बैठाते हुए बोला—"कज़्ज़ाकों की लाशें घर ला रहे हो?" फिर और पास पहुँचा तो पूछा—"कौन लोग हैं?"

"अलेक्सेइ-शामील, इवान-तोमिलिन और घोड़े की नाल याकोव।"

"मर गए?"

"हां।"

"कब?"

"कल, सूरज डूबने के वक्त···"

"बैटरी सही-सलामत है?"

"हां···लाल फौजियों को ये लोग ऊंघते मिल गए; और अलेक्सेइ तो बेमौत मारा गया।"

ग्रिगोरी ने अपनी टोपी उतारी और घोड़े से नीचे आ गया। गाड़ीवान ने बैल रोक लिए। मृत कज़्ज़ाक गाड़ी में अगल-बगल लेटे थे। अलेक्सेइ-शामील बीच में था।

ग्रिगोरी पास पहुँचा तो लाशों की सड़ायध उसकी नाक में आई।

अलेक्सेइ की पुरानी, नीली कमीज़ खुली हुई थी, छूंछी आस्तीन सिर के नीचे मुड़ी पड़ी थी और उसके हाथ का ठूंठ, गन्दे कपड़े में लिपटा, उसके सीने से सटा हुआ था। उसने जंगलियों की तरह हमेशा-हमेशा के

लिए खोस वा रखी थी। पर, शान्ति और उदासी से भरी और विचारों में डूबी उसकी आँखें नीले आसमान और स्तेपी के ऊपर लहराते बादलों पर जमी हुई थीं।

तोमिलिन का चेहरा पहचानना मुश्किल था। सच पूछिये तो चेहरा जैसा कुछ न था। था बिना शक्ल का एक लोंदा। तलवार के तिरछे वार से बीच से दो हो गया था। जूते की नाल याकोव का चेहरा केसरिया-पीला था। सिर धड़ से बिलकुल अलग हो गया था। धड़ की हड्डी कमीज़ के खुले हुए कॉलर से बाहर झांक रही थी और भौंह के आर-पार गोली का काला ज़ख्म था। साफ है कि किसी लाल सैनिक ने मरते हुए कज़्ज़ाक की यन्त्रणा पर तरस खाकर बिलकुल पास से गोली मारी थी, क्योंकि पूरा चेहरा झुलसा हुआ था, और जहाँ-तहाँ बारूद के काले निशान थे।

"खैर, भाइयो, आओ, अपने मरे हुए दोस्तों की याद करें और उनकी रूहों के चैन के लिए एक-एक सिगरेट पी डालें।" ग्रिगोरी ने तजवीज़ की, एक ओर जाकर उसने अपने घोड़े की तंग ढीली की, लगाम मुँह से नीचे गिराई, रासें आगे के पैरों में बाधी और घोड़े को रेशमी हरियाली पर चरने को छोड़ दिया। अन्तीप और उस दूसरे कज़्ज़ाक ने भी नीचे उतरकर अपने घोड़े छोड़ दिए। इसके बाद वे लेट गए और धुआँ उड़ाने लगे। ग्रिगोरी ने घास की ओर बढ़ने के लिए जुए को झटके देते बैलों की ओर देखा और पूछा—"लेकिन, आखिर शमील मारा कैसे गया?"

"कुसूर उसका अपना था।"

"कैसे?"

"कैसे क्या···सुनो···कल दोपहर को हम चौदह लोग गश्त के लिए निकले। शमील हमारे साथ था। वह घोड़े पर सवार खुश-खुश आगे बढ़ रहा था। इसके मानी यह कि आगम का उसे सपने में भी गुमान न था। होते-होते अपने हाथ का ठूंठ उसने हिलाया, रासें काठी की कमानी पर टिका दीं और पूछने लगा—'हमारा ग्रिगोरी-पंतेलेयेविच लौट कब रहा है? मैं एक बार और उसके साथ पीना और गाना गाना चाहता हूँ।'

और सचमुच फिर वह सारे रास्ते गाता रहा। आखिरकार सार्जेण्ट बोला—'भाइयो, लाल फौजियों का तो कोई निशान कहीं नजर आता नहीं। रूसी किसान सोकर जल्दी कभी नहीं उठते। मेरा खयाल है कि वे अब भी उबड़नी चूजें ठूंस रहे होंगे। आओ, थोडा आराम कर लें···घोड़े पसीने से नहा गए हैं।' तो, हम घोडों से उतरे और पहाडी पर एक संतरी तैनात कर नाले की घास पर जा लेटे। मैंने शमील को घोड़े की तग ढीली करते देखा और उससे बोला—'अलेक्सेइ, यह न करो। कहीं हमें जल्दी मे भागना पडा तो क्या होगा ? तुम हड़बड़ी मे एक हाथ से तग फिर कैसे कसोगे ?' उसने तड़ से जवाब दिया—'मैं तुमसे जल्दी कस लूँगा···मुझे पढाने की कोशिश न करो···अभी बच्चे हो तुम !' और उसने घोडे की तग ढीली कर दी और लगाम मुँह से गिरा दी। फिर हम वहाँ लेटकर धुआँ उडाते, बातें करते और ऊंघते रहे। पर हमारा सतरी झाडी की झाड में जा लेटा और वह भी ऊँघने लगा। सहसा ही मैंने थोडी दूर पर किसी घोड़े के हीसने की आवाज सुनी। मेरा अपनी जगह से हिलने को जी न हुआ। इस पर भी मैं उठा और पहाडी की चोटी पर पहुँचा। मैंने लाल फौजियों को घोडो पर सवार सीधे अपनी ओर बढते देखा। इस पर मैं भागा-भागा नाले में पहुँचा और चिल्लाया—'लाल फौजी आ रहे हैं···फौरन अपने-अपने घोडो पर सवार हो जाओ !' फिर तो लाल फौजियो ने मुझे भी देखा और मैंने उनके कमाडर को कुछ हुक्म देते सुना। इस पर हमारे सार्जेण्ट ने तलवार खीच ली, और चाहा कि हम हमला कर दें। लेकिन, हम करते क्या ! हमारी गिनती थी महज चौदह और वे थे पूरे आधे स्क्वैड्रन के लोग। तो, हम घोडों पर सवार होकर उड़ दिए। उन्होने अपनी मशीनगन चलाई, मगर हम थे यों कि उनका निशाना बेकार गया। इसलिए वे राइफलें चलाने लगे। लेकिन हमारे घोडे उनके घोडों से कहीं अच्छे थे। नतीजा यह कि हम काफी दूर निकल गए और फिर अपने घोडो से उतरकर गोलियों का जवाब गोलियों से देने लगे। और, इस वक्त जो मैंने गौर किया तो शमील कहीं न दीखा। हुआ यह था कि मेरे चिल्लाने पर जब सब लोग घोड़ों की ओर लपके थे तो वह भी अपने घोड़े की तरफ बढ़ा था और अपना

साबुत हाथ काठी की कमानी पर रखकर एक पैर रकाब पर जमाने लगा था। लेकिन उसने सवार होने की कोशिश की तो काठी फिसल-कर घोड़े के पेट के नीचे आ रही। फिर घोड़ा जाने कैसे उसके बिना ही भाग निकला और काठी झुलाता हमारे पीछे-पीछे चला आया। यानी, इस तरह् शमील लाल फौजियों के बीच अकेला रह गया और अपनी मौत को आप दावत दे बैठा। अगर वह घोड़े की तंग ढीली न करता तो इस वक्त जीता-जागता होता। उन्होंने उसे इस तरह हलाला कि उसके खून को देखते तो तुम समझते कि कोई बैल काटा गया है वहाँ। जहाँ तक हमारा सवाल है, जब हमने लाल फौजियों को खदेड़ दिया तो हम फिर नाले की ओर से गुजरे और हमने शमील को उठा लिया।"

"तो, आगे बढ़ा जाए अब।" गाड़ीवान औरत ने धूप से बचाने के लिए चेहरे पर पड़े रूमाल को हटाते हुए कहा।

"इस तरह हड़बड़ाती क्यों है, औरत ? अभी चलते हैं।"

"मैं भला हड़बड़ाऊँगी क्यों नहीं ! लाशें इस तरह गधा रही हैं कि आदमी का दिमाग खराब हो जाए।"

"और भला वे गधायेंगी कैसे नहीं !" अन्तीप ने विचारों में डूबते हुए कहा—"अपनी जिन्दगी में इन्होंने छक-भर मांस उड़ाया और जी-भर औरतों का मजा लिया। इनके-जैसे लोग मरने के बाद हमेशा बू देते हैं। लोग कहते हैं कि सिर्फ फकीरों की कब्रों से खुशबू आती है। लेकिन अगर तुम मुझसे पूछो तो मैं तो इस बात को सफेद झूठ कहूँगा। कुदरत कुदरत है। फकीर-से-फकीर आदमी मरने के बाद सड़ता और बू देता है। वह भी अंतड़ियों की मदद से ही खाना पचाता है और हर आम आदमी की तरह उसे भी तीन गज लम्बी अंतड़ियाँ मिलती हैं।"

लेकिन, जाने क्यों, दूसरा कज्जाक गरम हो उठा—"क्या बकवक लगा रखी है तुमने ? फकीर और यह और वह। चलो, चलो अब।"

ग्रिगोरी ने कज्जाकों से रुखसत ली और अपने गांव के मृत साथियों से अन्तिम विदा लेने के लिए गाड़ी की ओर बढ़ा। केवल अब उसने देखा कि तीनों नंगे पैर हैं और बूट पैरों के पास रखे हुए हैं। उसने

पूछा—"बूट किसने उतारे इनके ?"

"हमारे कज्जाकों ने उतारे, ग्रिगोरी-पेन्तेलेयेविच। इनके बूट अच्छे थे, इसीलिए हमारे स्क्वैड्रन के लोगों ने सोचा कि ये उतार लिए जाएँ और उन्हें दे दिये जाएँ, जिनके बूट पुराने हैं। यह तो है कि मरने वालों के भी घर के लोग हैं, लेकिन पुराने बूट भी उनके बाल-बच्चों के लिए काफी होंगे।" अनीकुश्का बोला—"मुर्दों को न पैदल चलना पड़ता है और न घोड़ों की सवारी करनी पड़ती है। तल्ले अच्छे हैं। अलेक्सेइ के बूट मुझे दे दो, वरना लाल फौजियों से जूते मिलने-मिलने तक सर्दी लग जाएगी और मैं टें हो जाऊँगा।' सो, नये बूट उतार लिये गए और उनकी जगह तीन जोड़ी पुराने बूट रख दिये गए।"

ग्रिगोरी ने अपने घोड़े को दुलकी दौड़ाना शुरू किया कि उसके कानों मे दोनों कज्जाकों की बहस की आवाज पड़ी कि कज्जाकों के बीच कोई फकीर हुआ भी है या नहीं ! ···ग्रिगोरी ने कारगिन्स्काया तक अपने घोड़े की एक-सी रफ्तार रखी। बीच मे हवा हौले-हौले चलकर जानवर की अयाल के बाल उलझाती रही।

लम्बी, भूरी, जमीनी गिलहरियाँ सड़कों के आर-पार दौड़ लगाती रहीं। उनकी सीखी, आग ही से भरी सीटियों का तार स्तेपी की गहन शांति के तार से अजीब ढग से मिलता रहा। सड़क के किनारे के टीलों पर मुर्गाबियाँ उड़ती रहीं। एक मुर्गाबी धूप मे बर्फ की तरह दमकती, तेजी से अपने डैने फड़फड़ाती ऊँचाई की लहरियों पर यों लहरती रही, जैसे कि नीलम के सागर मे तैर रही हो। तेज उड़ान के साथ उसकी मखमली गरदन आगे की ओर बढ़ी रही। मुर्गाबी कोई दो सौ कदम उड़ी और अपने पंख और तेजी से फड़फड़ाती हुई नीचे गिरने लगी। धरती के पास आने पर डैने अन्तिम बार चमके और फिर चिड़िया हरियाली के समुन्दर मे डूब गई।

बौखलाई-सी मुर्गाबियों की चुनौती से भरी चीखें चारों ओर गूँजने लगीं। ग्रिगोरी ने सड़क से कुछ कदम दूर, कोई तीन फुट का एक घेरा देखा। जमीन नर-मुर्गाबियों ने एक मादा के लिए रौंदकर रख दी थी। घेरे मे घास की एक पत्ती कहीं न थी। चिरायते के पीले डण्ठल

जहाँ-तहाँ पड़े थे और उनमें सीनों और दुम के पर लिपटे हुए थे।

सो उस जगह के पास ही एक भूरी मुर्गाबी अपने घोंसले से रवाना हुई और, उड़ने की हिम्मत न कर, छोटे-छोटे पैरों के सहारे तेजी से दौड़ी तो उसकी पीठ किसी बुढ़िया की तरह कुबड़ी लगी। बाद में वह घास में गायब हो गई।

वसन्त से प्रेरणा लेकर एक अनदेखी जिन्दगी स्तेपी में अपनी पाखें खोल रही थी। यह जीवन अपने-आप में सबसे अधिक शक्तिशाली था। घास जहाँ-तहाँ भरभराकर उग रही थी। घास के आंचल में छिपी जगहों में चिड़ियां और जानवर जोड़े खा रहे थे। जुती हुई जमीनों में जहाँ-तहाँ अनगिनत कल्ले फूट रहे थे। केवल पिछले साल का घास-फूस, स्तेपी की सतरी-सी कब्रों के ढूहों के ढालों के किनारे-किनारे मायूसी से दबकर, धरती से सटकर मौत की निगाह बचा जाने की फिराक में था। लेकिन ताजी हवा के तेज झोंके उसे सूखी हुई जड़ से उखाड़कर दूर-दूर तक खदेड़ रहे थे और जीते-जागते स्तेपी में उड़ा रहे थे।

ग्रिगोरी तीसरे पहर के बाद कारगिन्स्काया पहुँचा। अगले दिन सुबह उसने डिविजन की कमान सम्हाल ली और व्येशेन्स्काया की ताजी रिपोर्ट पढ़ने के बाद और चीफ ऑफ स्टाफ से सलाह-मशविरा करने के बाद हमला करने का फैसला कर लिया। इसका कारण यह था कि रेजीमेंटों में लड़ाई के सामान की बड़ी कमी थी, और हमला कर इसे लाल सेनाओं से हासिल करना जरूरी था।

शाम होते-होते एक पैदल और तीन घुड़सवार रेजीमेंट कारगिन्स्काया बुला ली गईं। कारतूसों की पेटियों की कमी के कारण रेजीमेंट की बाईस मशीनगनों में से केवल छ: को इस्तेमाल करने की बात सोची गई। अगले दिन सवेरे कज्जाक सेनाओं ने हमला बोल दिया। ग्रिगोरी ने खुद तीसरी घुड़सवार रेजीमेंट की कमान सम्हाली, घुड़सवार-गश्ती फौजी आगे भेजे और रेजीमेंट को तेजी से दक्षिण की ओर ले चला। रिपोर्टों के अनुसार वहाँ लाल सेनाओं के दो रेजीमेंट कज्जाकों पर हमला करने को पूरी तरह तैयार थे।

कारगिन्स्काया से कोई दो वर्स्ट के फासले पर उसे कुदिनोव का

एक संदेशवाहक मिला। पत्र इस प्रकार था—

"दूसरे सेरदोब्स्की रेजीमेंट ने आत्म-समर्पण कर दिया है। सभी फौजियों ने हथियार सौंप दिए हैं। सिर्फ बीस लोग ऐसे निकले, जिन्होंने चरका देने की कोशिश की। उन्हें तलवार के घाट उतार दिया गया है। चार तोपें, दो सौ से ज्यादा तोप के गोले और नौ मशीनगनें हाथ लगी हैं। बुरी बात सिर्फ यह है कि कम्यूनिस्ट तोपचियों ने तोपों के लॉक उड़ा दिए हैं। खैर···यहाँ बड़ी खुशियाँ और बड़े जश्न मनाये जा रहे हैं। अब हम लाल-फौजियों को अलग-अलग कम्पनियों में बाटकर उन्हें उन्हीं के साथियों से भिड़ा देंगे। हां, एक बात तो मैं बिलकुल भूल ही गया। तुम्हारे गांव के इवान कोतल्यारोव और मिखाइल कोशेवोइ नाम के दो कम्यूनिस्टों के साथ येलान्स्काया के भी कितने ही कम्यूनिस्ट पकड़े गए हैं। उन्हें सड़क के रास्ते व्येशेन्स्काया रवाना किया जा रहा है। तुम्हारे क्या हाल-चाल हैं? जरूरत हो तो कहला देना, तुम्हें पांच सौ कारतूसें भेज दी जायेंगी।

—कुदिनोव"

"अर्दली!" ग्रिगोरी चीखा।

प्रोखोर-जिकोव तुरन्त ही अपना घोड़ा दौड़ाता आया, पर ग्रिगोरी के चेहरे का भाव पढ़कर एकदम घबरा गया और उसने सैल्यूट तक मार दी।

"र्‌यावचिकोव! र्‌यावचिकोव कहाँ है?" ग्रिगोरी ने चिल्लाकर उससे पूछा।

"कतार के आखिर में।"

"घोड़े पर जाओ और उसे फौरन लेकर आओ।"

जिकोव ने घोड़ा दौड़ा दिया और जरा देर में र्‌यावचिकोव ग्रिगोरी से मिलने के लिए चल पड़ा। उसका चेहरा थोड़ा संवरा गया था और उसकी भौंहें और मूँछें वसन्त की धूप में लोमड़ी-सी भूरी हो गई थीं। वह मुसकरा रहा था और एक बड़ी सिगरेट से धुआं उड़ा रहा था। उसका

कुम्मैंत वसन्त के बावजूद चिकना था और बड़ी शान से चढ़ा जा रहा था।

"व्येशेन्स्काया से कोई खत आया है ?" सन्देशवाहक को ग्रिगोरी की बगल में खड़ा देखकर उसने पूछा।

"हां।" ग्रिगोरी ने तुरन्त उत्तर दिया—"रेजीमेंट और डिविजन की कमान तुम सम्हाल लो। मैं तो चला।"

"ठीक···लेकिन ऐसी जल्दी क्या है ? खत में क्या लिखा है ? किसने लिखा है खत ? कुदिनोव ने लिखा है ?"

"सेरदोब्स्की-रेजीमेंट ने उस्त-खोपर्स्काया में हथियार डाल दिए हैं।"

'क्या बात है ? यानी, हम अब भी जिन्दा हैं! तुम्हें फौरन जाना है ?"

"हां, फौरन जाना है।"

"अच्छा, तो जाओ···ईश्वर का हाथ तुम्हारे सिर पर रहे। लौटोगे तो हमें काफी आगे पाओगे।"

ग्रिगोरी ने अपने घोड़े पर भरपूर चाबुक जमाया और उसे पहाड़ी से नीचे दौड़ाते हुए सोचा—'मुझे मीशा और इवान से उनके जिन्दा रहते मिलना है···मुझे पता लगाना है कि प्योत्र को किसने मारा है···साथ ही इवान और मीशा को मौत से बचाना है···उनको तो बचाना ही है··· माना कि हमारे बीच खून से सनी तलवार है, लेकिन हम पुराने दोस्त भी तो हैं···'

: ५२ :

विद्रोही स्क्वैड्रनों के उस्त-खोपर्स्काया में घुसते ही और सेरदोब्स्की-रेजीमेंट को घेरते ही ब्रिगेड कमांडर बोगातिरयोव, वोरोनोव्स्की और वोलकोव के साथ बातचीत करने के लिए चला गया। बातचीत चौक के पास एक व्यापारी के घर में हुई और बहुत ही संक्षिप्त रही। इस सिल-सिले में बोगातिरयोव वहां पहुँचा तो उसने चाबुक रखे बिना वोरोनो-व्स्की को बधाई दी और बोला—"हर काम शानदार ढंग से हुआ है···

इसका सेहरा तुम्हारे सिर बंधेगा···लेकिन तोपें तुम क्यों नहीं बचा सके ?"

"मौके की बात कहिये···महज एक मौके की बात कि तोपें नहीं बच सकी, कमांडर !" वोरोनोव्स्की ने जवाब दिया—"तोपचियों में भी एक-एक आदमी कम्यूनिस्ट था। हमने उन्हें निहत्था करने की कोशिश की तो उनमें से एक-एक ने हमारा जमकर मुकाबला किया। उन्होंने हमारे दो आदमी मार डाले और फिर लॉक लेकर रफूचक्कर हो गए।"

"बहुत ही बुरा हुआ।" बोगातिरयोव ने कहा, अपनी टोपी मेज पर फेंकी, अपना तमतमाया हुआ, पसीने से तर चेहरा गंदे रूमाल से पोंछा और गम्भीरता से मुसकराते हुए बोला—"खैर, जो हुआ खूब हुआ। अब आओ और अपने फौजियों से कहो कि अपने हथियार हमें सौंप दें।"

कज्जाक अफसर की कमान से वोरोनोव्स्की के कान झनझनाने लगे। उसने लड़खड़ाती जबान से पूछा—"सारे हथियार ?"

"मैं अपनी हर बात दोहराऊँगा नहीं···मैंने कहा कि वे अपने 'सारे हथियार' सौंप दें और मेरा मतलब है कि वे अपने 'सारे हथियार' सौंप दें।"

"लेकिन हमारे बीच तय तो यह हुआ था कि रेजीमेंट के फौजियों से हथियार न लिए जायेंगे। वैसे यह तो मैं समझता हूँ कि मशीनगनें, हथ-बम और ऐसी ही दूसरी चीजें हमें बिना किसी शर्त के आपको सौंप देनी चाहिये···लेकिन जहां तक लाल फौजियों की अपनी चीजों का सवाल है···"

"अब यहाँ लाल फौजी कोई नहीं है।" बोगातिरयोव गरजा और उसने अपने पैर पर चाबुक सटकारा—"वे अब लाल फौजी नहीं हैं, बल्कि ऐसे फौजी हैं जिन्हें दोन के इलाकों की हिफाजत के लिए लड़ना होगा···अगर वे इसके लिए राजी न होंगे तो हम उन्हें राजी करने के रास्ते निकालेंगे···हम आख-मिचौनी खेलने नहीं जा रहे। तुम सबने हमारे देश में अपनी गंदगी घोली है, और अब अपनी ओर से शर्तें भी लगाना चाहते हो। हमारे बीच शर्तें कुछ नहीं हो सकतीं। समझे ?"

सेरदोव्स्की-रेजीमेंट के चीफ ऑफ स्टाफ वोलकोव को बोगातिरयोव

की बातें बहुत बुरी लगीं। उसने अँगुलियाँ काली साटन की अपनी कमीज के बटनों पर फेरीं, बालों के आगे के छल्लों को ऐंठा और तीखे स्वर में पूछा—"तो आप हमें कैदी मानते हैं? है न?"

"मैंने ऐसा नहीं कहा और तुम अपनी कटचँटियों से मुझे परेशान न करो, समझे!" बोगातिरयोव ने उसकी बात काटी और अपनी बात के लहजे से यह समझा दिया कि तुम दोनों का सब-कुछ मेरे मेहरबान रहने या न रहने पर पूरी तरह निर्भर करता है।

कमरे में क्षण-भर को सन्नाटा रहा। चौक की तरफ से मिले-जुले शोरगुल की गूँज आई। कोरोनोव्स्की अपनी अँगुलियाँ चटखाता इधर-उधर चहलकदमी करता रहा और फिर अपनी ट्युनिक के बटन बंद कर बोगातिरयोव की तरफ मुड़ा—

"आप जिस तरह बातें कर रहे हैं, वह आप-जैसे स्पी अफसर के जरा भी योग्य नहीं है और हमारे लिए बड़ा अपमानजनक है···यह बात हम आपके मुँह पर साफ-साफ कह देना चाहते हैं। जहाँ तक आपकी चुनौती का सवाल है, अब हम सोचेंगे कि कैसे और क्या करें। कैप्टन वोलकोव, मेरा हुक्म है, तुम चौक से जाओ और अपने अफसरों से कह दो कि वे अपने हथियार किसी भी सूरत से कज्जाकों को न सौंपें··· रेजीमेंट को हथियारों से लैस होकर तैयार रहने की कमान दो! मैं इन ···इन बोगातिरयोव महोदय से एक क्षण में बात खत्म करता हूँ और चौक में आता हूँ।"

बोगातिरयोव का चेहरा गुस्से से ऐंठ उठा और उसने कुछ कहने को अपना मुँह खोला। लेकिन उसे लगा कि मैं तो पहले ही जरूरत से ज्यादा कह चुका। अतएव उसने अपनी जबान रोक ली, अपना स्वर फौरन बदल लिया और सिर पर टोपी बजाते और अपने चाबुक से अब भी खिलवाड़ करते हुए अप्रत्याशित रूप से मधुर, शिष्ट ढंग से कहा—"मेहरबान, आपने मेरी बात ठीक-ठीक समझी नहीं। वैसे मेरी लिखाई-पढ़ाई कोई खास हुई नहीं और कैडेट अकादमी में भी मैं कभी गया नहीं। शायद मैं अपना मतलब आपको कायदे से समझा नहीं पाया। लेकिन हम सब एक ही तरफ के लोग हैं और हमें एक-दूसरे की बात से ठेस नहीं पहुँचनी

चाहिये। मैंने तो सिर्फ यह कहा कि लाल-फौजियों से हथियार ले लिये जाने चाहिये, और उन लाल फौजियों से तो खास तौर पर फौरन ही हथियार ले लिये जाने चाहिये, जिन पर न हम भरोसा कर सकते है, न आप यकीन कर सकते है। बस इतनी-सी बात है।"

"अगर, ऐसा था तो आपको अपनी बात और साफ ढग से कहनी चाहिए थी। आप मानेंगे कि आपकी आवाज़ मे छिपी चुनौती और आपके पूरे व्यवहार···" वोरोनोव्स्की ने अपने कधे भटके और अधिक शांत स्वर मे बोला, लेकिन उसमे असन्तोष अब भी झलकता रहा—"हमारी तो खुद यह राय थी कि हमारे बीच जो लोग मन से डगमग और एतबार के लायक नही है उन्हे निहत्था कर आपको सौप दिया जाए कि आप उनके साथ जैसा चाहे वैसा बरताव करे···"

"हां, यही बात तो मैंने कही।"

"लेकिन उन्हे निहत्था करने का काम खुद हम करना चाहते थे। परन्तु जहाँ तक हमारे लड़ाकू दल का सवाल है, हम उसे आगे भी एक स्वतत्र यूनिट बना रखेंगे। उसकी कमान खुद मेरे और आपके परिचित लेफ्टिनेंट वोलकोव के हाथों मे होगी और हम लाल सेना मे रहने की अपनी शर्म सम्मानजनक ढग से धोयेंगे। आपको हमे इसका पूरा मौका देना चाहिए।"

"आपके रेजीमेंट मे कितनी संगीनें होंगी?"

"कोई दो सौ।"

"अच्छा···ठीक है।" बोगातिरयोव ने सकुचाते हुए हामी भरी। वह उठा, दरवाज़े खोलकर मकान-मालकिन को आवाज़ दी और सिर पर शाल लपेटे एक सयानी उम्र की औरत के झांकने पर उसे थोड़ा-सा दूध लाने का हुक्म दिया।

"माफ कीजिए, दूध है नही।"

"मैं शर्त लगाकर कह सकता हूं कि लाल फौजियों के लिए दूध तुम्हारे यहा था, लेकिन हमारे लिए नही है। है न?" बोगातिरयोव ने व्यग्य किया।

इसके बाद ऐसा सन्नाटा छा गया जो सासा खला। उस सन्नाटे का

तार फिर तोड़ा वोलकोव ने। पूछा—"मैं जाऊं ?"

वोरोनोव्स्की ने जवाब दिया—"हां, तुम जाओ और जिन लोगों का नाम फेहरिस्त में हमने लिखा था उनसे हथियार ले लिये जाने का हुक्म दे दो।"

अफसर के रूप में अपने सम्मान के चोट खा जाने पर ही स्टाफ-कैप्टन वोरोनोव्स्की के मुह से निकल गया था कि अब सोचेंगे कि हम कैसे और क्या करें। वैसे वह यह बात अच्छी तरह जानता था कि खेल खत्म हो गया है, और अब बच निकलने का कोई रास्ता नहीं है। उसे खबर मिल चुकी थी कि सेरदोब्स्की-रेजीमेंट को निहत्था करने के लिए हेडक्वार्टर्स ने जो फौजें भेजी हैं वे उस्त-मेदवेदित्सा से रवाना हो गई हैं और अब कुछ ही घंटों में पहुंचने वाली हैं। लेकिन दूसरी ओर बोगातिरयोव को समय मिल गया था, और उसने समझ लिया था कि वोरोनोव्स्की बहुत ही विश्वसनीय आदमी है, उससे नुकसान बिलकुल नहीं पहुंच सकता और पीछे हटने का उसके सामने अब कोई रास्ता नहीं है। इसलिए रेजी-मेंट के इत्मीनानी लोगों के स्वतंत्र यूनिट के निर्माण की बात पर वह राजी हो गया। इस तरह बातचीत खत्म हुई।

इस बीच कज़्ज़ाकों ने बातचीत के नतीजे का इन्तज़ार किए बिना ही, रेजीमेंट के लोगों से बड़े ही जोर-शोर से हथियार छीनने शुरू कर दिए थे। इस सिलसिले में लोभी कज़्ज़ाकों की आंखों ने हर चीज़ पर पैनी नज़र डाली और हाथों ने हर चीज खखोरी। उन्होंने रेजीमेंट की माल-गाड़ियों की तलाशियां लीं और न सिर्फ लड़ाई का सामान हथियाया, बल्कि शानदार बूट, पट्टियां, कम्बल, पतलून और खाने की चीजें भी छीन लीं। कज़्ज़ाक न्याय के इस नए अनुभव के बाद सेरदोब्स्की-रेजीमेंट के कोई बीस लोगों ने विरोध करने की कोशिश की। एक कज़्ज़ाक उनमें से एक की तलाशी लेने लगा तो उसने अपनी राइफल का कुंदा उसके सीने से अड़ा दिया और चीखा—"चोर कहीं के! यह क्या उठा रहे हो तुम? दे दो मुझे वापस, नहीं तो संगीन तुम्हारे सीने के आर-पार कर दूंगा!"

उसका समर्थन उसके साथियों ने किया और वे सब नफरत से

चिल्लाने लगे—

"साथियो, हथियार सम्हालो !"

"इन लोगों ने हमारे साथ चाल खेली है।"

"अपनी राइफलें मत देना।"

फिर आमने-सामने लड़ाई शुरू हो गई। बाद में इन विरोधी लाल सैनिकों को ले जाकर दीवार से सटा दिया गया और विद्रोही घुड़सवारों ने कोई दो मिनट में उन्हें गाजर-मूली की तरह काटकर फेंक दिया।

वोलकोव चौक मे पहुचा तो हथियार छीने जाने का काम और जोर पकड़ गया। सेरदोब्स्की-रेजीमेंट के फौजी कतार में खड़े किये गए और वहा अम्बार लग गया उनकी चीजों का—राइफलों का, हथबमों का, कारतूस की पेटियों का, लड़ाई के मैदान में काम करने वाले टेलीफोन के साज-सामान का, कारतूसों के बक्सों का और मशीनगनों की पेटियों का।

बोगातिरयोव अपना घोड़ा दुलकी दौड़ाता चौक में पहुँचा। यहां घोड़ा पीछे हटने लगा तो उसे सेरदोब्स्की सैनिकों के सामने लाते और चाबुक हवा मे सटकारते हुए चिल्लाकर बोला—"मेरी बात सुनो ! आज से तुम लोग पापी कम्यूनिस्टों और उनके फौजियों से लड़ोगे। तुममें से जो लोग हमारा साथ देंगे, वे माफ कर दिए जाएँगे और जो लोग साथ देने से बच निकलने की कोशिश करेंगे, उन्हें इसी तरह इनाम दिया जाएगा।" उसने अपने चाबुक से दीवार के नीचे पड़े शरीरों की तरफ इशारा किया। यहा लोगो ने अपने ऊपर के सारे कपड़े उतार रखे थे और वे उजले ढेर की तरह गुड़ीमुड़ी पड़े हुए थे।

"लाल सैनिकों की पक्तियो के बीच लोग धीरे-धीरे भुनभुनाने लगे, लेकिन न किसी ने विरोध में मुह खोला और न कोई कतार से बाहर आया। घुड़सवार और पैदल कज्जाक सैनिक ठोस घेरा बनाकर पूरा चौक घेरे रहे और सेरदोब्स्की-रेजीमेंट की मशीनगनें रेजीमेंट की ओर ही अपने दहाने खोले सधी रहीं। कज्जाक मशीनगनर उनकी बगल मे आलथी-पालथी मारे बैठे रहे।

एक घंटे के अन्दर-अन्दर वोरोनोव्स्की और वोलकोव ने बाकी रेजीमेंट से विश्वसनीय सैनिक चुन लिए। इन सैनिकों के नए रेजीमेंट को 'पहला ख़ास बाग़ी बटेलियन' कहा गया और इसे उसी दिन मोर्चे की आगे की पंक्ति में भेज दिया गया। अफ़वाह सुन पड़ी कि प्रसिद्ध मीशा-किनोव के नेतृत्व में बत्तीसवीं रेजीमेंट अपने सामने की हर चीज तूफ़ान की तरह उड़ाती मैदान पर मैदान मारती बढ़ती चला आ रही है. और उसने सामना करने के लिए भेजे गए उस्त-खोपरस्काया ज़िले के एक गाँव के स्क्वैड्रन का नाम-निशान मिटाकर रख दिया है। तो, इस क्लिकोव के सामने टालकर ही बोगातिरयोव ने नई रेजीमेंट के सैनिकों को हिम्मत और बहादुरी की कसौटी पर कसने का इरादा किया।

सेरदोब्स्की रेजीमेंट के बाकी कोई आठ सौ फ़ौजियों को दोन के लिए रवाना कर दिया गया और सेरदोब्स्की मशीनगनों से लैस तीन तीन कज्ज़ाक-स्क्वैड्रन रक्षकों के रूप में साथ कर दिए गए। बोगातिरयोव ने उस्त खोपरस्काया से रवाना होने के पहले गिर्जे की पूजा में हिस्सा लिया और पादरी की प्रार्थना समाप्त भी न हुई कि वहाँ से बाहर निकल आया। प्रार्थना की गई—"हे परमपिता ईसा को प्यार करने वाले इन कज्ज़ाक-योद्धाओं को विजय का गौरव प्रदान करो!"

बोगातिरयोव ने घोड़े पर सवार होने के पहले विद्रोही-स्क्वड्रनो के कमांडरों में से एक को बुलाया और आदेश देते हुए बोला—"इन कम्युनिस्टों पर ऐसी निगाह रखना जैसी बारूद के ढेर पर रखी जाती है। कल सवेरे इन्हें इरमीनानी गारद के साथ सड़क के रास्ते से व्येशेन्स्काया ले जाना। और आज ही लोगों को गावों में भेजकर उनके उधर से गुज़रने की ख़बर पहुंचवा देना। गाँवों के लोग इन पर अपना फ़ैसला आप दे लेंगे।"

: ५३ .

मई के महीने में, एक दिन, कोई दोपहर के समय व्येशेन्स्काया ज़िले के सिनगिन गाँव के ऊपर एक हवाई जहाज नज़र आया। जहाज के एंजिन की भड़भड़ाहट से हैरान होकर बच्चे, औरतें और बूढ़े अपनी-अपनी

झोंपडियो से निकल आये और, गर्दनें उचका और आँखों पर हथेलियों की आड़कर उसे एकटक देखने लगे। फिर गाँव के बाहर की चरागाह मे किसी समतल जगह की खोज करते हुए जहाज ज्यों-ज्यों नीचे उतरा, उसके एंजिन की गरज त्यो-त्यो बढी।

"इस पर सवार लोग अभी-अभी बम गिराते ही है—देखना!" कोई अक्ल का धनी बूढा डर कर चीखा। गली के नुक्कड पर जमा भीड़ पानी की बूंदों की तरह बिखर गई। औरतें अपने-अपने चीखते चिल्लाते बच्चों को घसीटने लगी। बूढे बकरियोंकी तरह बाडें फाद-फादकर बगीचो मे भागने लगे। सिर्फ एक बुढ़िया कोने मे रह गई। भाग तो वह भी गई होती पर हुआ यह कि बेचारी भय के कारण तो उसके पैर जवाब दे गए या वह दूह से लड़खड़ा गई, क्योंकि बेचारी गिर पड़ी। फिर वह जहां गिरी वही अपने हडुहे पैर पटकी पडी रही। रह-रहकर धीमी आवाज मे चिल्लाई—"अरे ···बचाओ कोई बचाओ रे···मैं मर गई···हाय, मैं मर गई।"

लेकिन, बुढिया की मदद के लिए कोई नही आया। हवाई जहाज भयानक गर्जन के साथ खती के ठीक ऊपर से गुजरा, तो उसके पखों की छाया ने क्षण भर को उसकी आंख के सामने का दिन का प्रकाश पा लिया। वृद्धा डर से अधमरी हो गई और आस पास नीचे ऊपर न उसे कुछ सुनाई पडा और न अनुभव हुआ। बच्चों की तरह उसका पेशाब निकल गया। स्वभावतया वह बहुत घबड़ा गई थी। नतीजा यह कि न तो उसने जहाज को चरागाह में उतरते देखा और न उसकी कॉकपिट से, काले चमड़े की जरकिनें पहने दो लोगो कोकूदकर बाहर आते देखा। वे लोग यही से गाँव की ओर मुडे और चौकन्ने होकर चारों ओर देखते गए।

परन्तु, बगिया मे छिपा उस बुढिया का पति बहादुर निकला। जाल मे फसी गौरैया के दिल की तरह ही अपने दिल के बैठते रहते के बावजूद वह हिम्मत से सभी कुछ देखता रहा और उनमे से एक को यानी अपनी रेजीमेंट के साथी के फौजी अफसर के बेटे प्योत्र बोगातिरयोव को पहिचाना। प्योत्र, विद्रोही विरोध ब्रिगेड के कमाण्डर ग्रिगोरी बोगातिरयोव का चचेरा-भाई था और श्वेत गार्दों के साथ पीछे हटकर दोनेतस के इलाके ··· आ गया था। जी हा, वही था।

सो, बूढ़ा खरगोश की तरह बैठा, सामने हाथ झुकाता, कुछ देर तक उत्सुकता से एकटक घूरता रहा। आखिरकार जब उसे पूरी तरह विश्वास हो गया तो उसने मन ही मन कहा—"हैं, यह तो प्योत्र बोगातिरयोव ही है। वही नीली आंखें हैं। नई बात सिर्फ यह है कि ठोढ़ी एक ठूठ सा नजर आने लगा है। अभी पार साल ही तो गाव में आया था"···बस, तो पैरों के सध सकने या न सध सकने का अनुमान लगाते हुए बूढ़े ने खड़े होने की कोशिश की। पर पैर उसे साध ले गए। हां थोड़ा थरथराते जरूर रहे। होते होते, वह धीरे-धीरे बगिया से निकलकर बाहर आया।

उसकी पत्नी अब भी धूल में पड़ी रही पर वह उसके पास नहीं गया बल्कि अपनी टोपी उतारते हुए प्योत्र और उसके साथी की ओर बढ़ा। प्योत्र-बोगातिरयोव ने उसे पहचाना और मुसकराते हुए हाथ हिलाकर उसका स्वागत किया। बूढ़े ने पूछा—"सुनो, तुम प्योत्र-बोगातिरयोव ही हो न?"—

'हां, मेरा नाम प्योत्र-बोगातिरयोव ही है बाबा!"

"यानी, मेरी खुशकिस्मती देखो कि जीते-जी मैंने चील-गाड़ी भी देख ली।"

'इस जिले में लाल फौजी हैं क्या, बाबा?

"नहीं बेटे, जो थे वे चिर—नदी पारकर उत्तरनी जिलों में चले गए हैं।"

"और, क्या सिनगिन के हमारे कज्जाकों ने भी सिर उठाया?"

"सिर तो उठाया था, लेकिन उनमें से ज्यादातर लोग दबा दिए गए।"

"लेकिन, यह हुआ क्या?"

"मेरा मतलब यह है कि सब के सब मारे गए।"

"उफ···और मेरे पापा···मेरे घर के लोग वे तो ठीक हैं?"

"सभी जिन्दा और सही सलामत हैं। लेकिन दोनेत्स के इलाके से आ रहे हो क्या? तुम वहा मेरे बेटे तिखोन से तो नहीं मिले?"

"हा, मैं उससे मिला था और उसने तुम सबको आदर और प्यार भेजा है। तो बाबा, जरा जहाज पर नजर रखना। कहीं लड़के इसे छेड़ने छाड़ने न लगें। मैं घर जा रहा हूँ।" प्योत्र अपने साथी की तरफ मुड़ा—

"आओ, चलें।"

प्योत्र अपने साथी के साथ गाँव की ओर बढ़ा तो बागीचों, शेडों। तहखानों और हर मुमकिन जानी अनजानी जगह से डरे हुए गाँव के लोग निकल निकलकर बाहर आने और उस हवाई जहाज के चारों ओर जमा होने लगे। जहाज से पेट्रोल और तेल की बू अब भी आती रही। उसके पंखों मे जगह-जगह गोलियों और बमों के टुकडो के छेद नजर आए।

अब प्योत्र बोगातिरयोव को सबसे पहले पहचानने वाला बूढा, पत्नी को बेटे की सलामती की खबर देने के लिए उस खास गली की ओर लपका, जहा बुढिया गिरी थी। उसने सोचा कि बुढ़िया बेटे का नाम सुनते ही गदगद हो जाएगी। पर वह वहा वही नजर न आई। पहले ही उठ गई और कपडे बदलने के लिए झोपडी में भाग गई थी। इसलिए बूढा झोपडी मे पहुचा और चिल्लाकर बोला—"प्योत्र बोगातिरयोव गाँव आया है और तिखोन का पैगाम लाया है।"—पर, बुढ़िया को कपड़े बदलते देखकर और इसका कारण न समझकर वह एकदम उबल पड़ा—"तू इस वक्त सज क्या रही है, बुढिया? तुझे देखने कौन जा रहा है, चुड़ैल की ठठरी!"

गाव के बडे-बूढे देखते-देखते प्योत्र बोगातिरयोव के पिता की झोंपडी में आ जमा हुए। उनमें से हर एक ने ड्योढी पर टोपी उतारी, देव-मूर्तियों के सामने क्रॉस बनाया और अपनी-अपनी लकुटियाँ का सहारा लेकर, गम्भीरता से बेंच पर बैठ गए। प्योत्र ने गिलास मे भरे ठडे दूध की चुसकियां लेते हुए लोगों को बतलाया, "मैं नोवोचेरकास्क की दोन-सरकार के हुक्म पर यहाँ आया हू, और मेरा काम है बागी कज्जाकों से अपना तार जोड़ना और लाल-फौजियों के खिलाफ लडाई के लिए, हवाई जहाजों से, उनके पास हथियार और फौजी अफसर पहुँचाना।" ···फिर उसने सूचना दी, "दोनेत्स-सेना जल्दी ही पूरे मोर्चे पर हमला बोलेगी और बागी फौज मे शामिल हो जाएगी।" इसके बाद उसने बुजुर्गों को खींचा—"अजब है कि जवान कज्जाकों पर आपका इतना भी असर बाकी नहीं बचा। आखिर यह भी क्या हुआ कि वे लडाई के मोर्चे से पीठ दिखा- कर चले आए और उन्होंने लाल-फौजियों को दोन के इलाके में कदम रख

लेने दिया ! लेकिन खैर···चूंकि आपने आखिरकार आपनी भूल समझ ली और सोवियत सरकार को जिले से बाहर खदेड़ दिया, इसलिए दोन की सरकार आपका हर कुसूर माफ कर देगी।"

जवाब में एक बूढ़ा अनिश्चयात्मक-स्वर में बोला—"पर, प्योत्र-बोगातिरयोव हमारे यहाँ सोवियत-सरकार तो इस वक्त भी है : फर्क सिर्फ इतना ही है कि कम्युनिस्ट नहीं हैं। हमारा झंडा तीन रंगोंवाला नहीं है, बल्कि लाल और सफेद रंग का है।"

दूसरा बोला—"और मुअर के बच्चे हमारे जवान आपस में मिलते हैं तो अब भी एक दूसरे को 'कॉमरेड' कहकर बुलाते हैं।"

बोगातिरयोव होंठों-होंठों मुसकराया और अपनी आंखें सिकोड़ते हुए हँसकर बोला—आपकी सोवियत सरकार बहार के दिनों की बर्फ है। अपने आप गल जाएगी। जरा सूरज को आसमान में चमकने तो दीजिए! लेकिन जहाँ-तक मोर्चों से भागने के लिए फौजियों को भड़काने वाले लोगों का सवाल है, उनमें से एक-एक को गिन-गिन कर कोड़े लगाए जायेंगे—जरा हम दोनेत्स से लौट आए।

"ठीक है उन शैतानों को कोड़े मारते-मारते खून निकाल लेना चाहिए और कोड़े भी आप लोगों के सामने लगाए जाने चाहिएं।" बूढ़ा खुशी से खिल उठा।

सन्देशवाहक से हवाई-जहाज के आने का समाचार पाकर बागी-फौजों का कमांडर कुदिनोव फूला न समाया और चीफ-ऑफ इल्यासफोनोव के साथ, मिगुलिन के लिए रवाना हो गया। उसकी तीन घोड़ोंवाली तारान्तास गाड़ी से बोगातिरयोव के दरवाजे पर पहुंची तो उनका उछाह सम्हाले न सम्हला। वे बूटों और बरसातियों की धूल झाड़ने तक के लिए न ठहरे और दौड़ते हुए झोंपड़ी के अन्दर जा पहुंचे।

: ५४ :

सेर्दोब्स्की रेजीमेंट के छल के शिकार पच्चीसों कम्युनिस्ट, जोरदार पहरेदारों की निगरानी में उस्त खोपरस्काया से रवाना हुए। अब तो

भाग निकलने का खयाल भी किसी को न आ सकता था। इवान अलेक्से-येविच ने दल के बीच मे चलते हुए कज्जाक पहरेदारो के पत्थर से चेहरों को नजर गडा कर देखा और मन ही मन सोचा, "अब तो खेल खत्म ही समझो! अदालत मे पेश होने का मौका मिला तो मिला, वरना अब चारा कोई नहीं है।"

साथ के कज्जाकों मे ज्यादातर सयानी उम्र के दाढ़ीवाले लोग थे। उनका कमाडर अतामान रेजीमेट का पूर्व-सार्जेट, पुराना ईसाई था। सो, कैदी उस्त खोपरस्काया से रवाना हुए कि उसने हुक्म दिया—'न कोई बात करे, न सिगरेट वगैरा पिए और न किसी तरह का कोई सवाल जवाब करे।"

अपनी पिस्तौल उनकी ओर तानते हुए वह चीखा—"भगवान को याद कर लो, ईसा के दुश्मन की गुलामी करने वालो! तुम अभी-अभी मौत को गले लगाओगे, इसलिए आखिरी वक्त गुनाह करने की जरूरत नही। तुम अपने सिरजनहार को भूल गये हो! तुमने अपने को शैतान के हाथों बेच दिया है। खुल्लमखुल्ला दुश्मनों का साथ दिया है।"

कैदियो मे सेरदोब्स्की-रेजीमेट के केवल दो कम्युनिस्ट थे। इवान के अलावा बाकी सभी लम्बे कद के गठे हुए जवान येलान्स्काया जिले के थे। वे सोवियत सेनाओं के यहा पहुचने पर कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हुए थे, उन्होने मिलिशिया के सिपाहियो और अलग-अलग गावों की क्रातिकारी समितियो के अध्यक्षों के रूप मे कार्य किया था, और वे, क्राति छिड़ने पर, लाल सेना मे सम्मिलित होने के लिए उस्त खोपरस्काया भाग आए थे। अमन से जमाने मे वे सभी बढई, पीपा-निर्माता सगतराश, बेकर, जूते बनाने वाले और दर्जी रहे थे उनमे से किसी की भी उम्र पैंतीस से अ[illegible] लगती थी। सबसे छोटा कोई बीस साल का था। हट्टा-कट्टा जैसे ह[illegible] मे ढले हुए, नाक-नक्शे मरावकत मे गठीले, बडे-बडे हाथ। यह हाथ बुबडे, बूढे पहरेदार कज्जाकों के हाथों से बिलकुल अलग थे।

"यह लोग हमे अदालत में पेश करेंगे! क्या खयाल है तुम्हारा?" इवान की बगल मे चलते येलान्स्काया के एक कम्युनिस्ट ने धीरे से

पूछा !

"ऐसा लगता नही···"

"तो हम मार डाले जायेंगे ?"

"मेरा खयाल है कि हाँ।"

"लेकिन यह लोग तो अपने कैदियों को गोली मारते नहीं। कज्जाकों ने ही यह बात बतलाई थी। तुम्हें याद है ?"

इवान अलेक्सेयेविच इसी बीच चुप रहा। लेकिन उसके अन्तर में आशा की एक चिनगारी लौ देती रही। उसने सोचा—"यह बात ठीक है। वे हमें गोली मारने की हिम्मत न कर सकेंगे। उनका नारा है— "कम्यून और लूट पाट खत्म हो। गोली बन्दूक का नाम मिटे।" लोगों को कैद रखने से आगे अब तक वे बढ़े नहीं है। कहते लोग यही हैं। यानी कोड़े लगाए और जेल में ठोंक दिया, और बस खैर तो यह ऐसे डरने की बात नहीं। हम जाड़े तक जेल में बन्द रहेंगे। इसके बाद दोन के बर्फ बनते ही हमारे साथी आएंगे और श्वेतगार्दों को भगाकर हमें यहाँ से छुटकारा दिला देंगे।"

आशा चिनगारी की तरह दहकी और चिनगारी की तरह ही बुझ गई—"नहीं, यह लोग हमें मार डालेंगे। यह लोग जंगली हैं, बिलकुल शैतान हैं ! तो जिन्दगी, अलविदा ! उफ—हमने सही रास्ता नहीं चुना। हमें इन पर रहम न दिखाकर इनसे लड़ना चाहिए था। हमें इन्हें बख्शना नहीं चाहिए था, बल्कि इन्हें नेस्तनाबूद कर देना चाहिए था।" —उसने मुट्ठियां भीचीं और असमर्थ क्रोध से कंधे से कंधे झटके। पर, दूसरे ही क्षण पीछे से सिर पर ऐसा घूसा पड़ा कि लड़खड़ा गया, और गिरते-गिरते बचा।

"वह मुट्ठियाँ किस लिए भींच रहे हो, सुअर कहीं के ?" पहरेदारों का मुखिया सार्जेंट चीखा और उस पर अपना घोड़ा चढ़ाने लगा। फिर उसने ऐसा चाबुक जमाया कि उसके चेहरे पर कनपटी से ठुड्डी तक बद्धी पड़ गई।

"किसकी खाल उधेड़े ले रहे हो इस तरह ? वह आदमी जख्मी है ! उसे क्यों मार रहे हो? येलान्स्काया के एक फौजी ने अपनी मुसकान

मे मिन्नत भरकर काँपती हुई आवाज में पूछा। इसके बाद वह भीड़ से निकला और इवान के आगे आकर पहाड़ की तरह जम गया।

"तुम्हारी खाल खीचने मे भी किसी तरह की कोई कमी न की जाएगी! जरा इसकी मरम्मत करो, कज्जाको! इन कम्युनिस्टों को जरा अपने हाथ तो दिखलाओ! —सार्जेंट गरजा।

फिर, उस आदमी के बदन पर बैंत इतने झटके और जोर से पड़ा कि पतली कमीज की धज्जी-धज्जी उड गई और गरम के काले खून से धज्जी-धज्जी भी तर-बतर हो गई। सार्जेंट ने गुस्से से भर कर उन पर अपना घोड़ा चढा-चढा दिया और बेरहमी से चाबुक बरसाए।

इवान पर फिर चाबुक पडा, तो उसकी आंखों से आग की नीली लपटें निकलने लगी पैरो के नीचे की जमीन डगमगाने लगी और नदी के सामने के किनारे का हरा जगल हिलता-डुलता नजर आने लगा। वह लपका। उसने रकाब कसकर पकडी और सार्जेंट को घोडे से नीचे घसीट लेने की कोशिश की। लेकिन तलवार की मूँठ उसके सिर पर ऐसे जोर से बैठी कि वह मुह के बल जमीन पर गिर पडा उसके मुह में खुश्क धूल भर गई, आवाज फँसने लगी और नाक और कानो से गरम खून की धार बह निकली।

इस तरह साथ के संरक्षकों ने उन्हें जमकर पत्थर दिल से मारा और रेवड की भेड़ों की तरह हाका। इवान ने जमीन पर पड़े-पड़े जैसे कि सपने मे चीख-पुकारे कदमो की खोखली धसक और बौखलाये हुए से घोड़ों की हिनहिनाहट सुनी। घोड़े का गरम झाग सहसा ही उसके नंगे सिर पर पडा और, फिर पास ही कही ठीक ऊपर से भयानक सिसकियां और चीखें उसके कानो मे पडी।

"सुअर के बच्चे···परमात्मा तुम पर आसमान ढाहे। मजलूम लोगों पर हाथ छोड रहे हो! तुम···"

इसी समय किसी घोडे की टाप इवान की जख्मी टागों पर पडी, जूतो की कीलें उसकी पिंडलियों मे धस-धस गई और उस पर धमाधम घूंसे और तमाचे पड़ने लगे। एक क्षण बाद ही पसीने और खून से नहाया किसी दूसरे का भारी शरीर उसकी बगल मे रौंदा हुआ दीखा। इवान ने

आवाज सुनी। उस आदमी के गले में खून इस तरह छल-छल करता रहा जैसे कि कोई द्रव किसी बोतल से उँड़ेला जा रहा हो।

और, जब कज्ज़ाक कैदियों की धुनाई का काम खत्म कर चुके तो उन्हें हांककर नदी के किनारे लाए और जबरदस्त जख्म धुलाने लगे। इवान घुटने-घुटने पानी में अपने बदन के छिले हुए हिस्से और घाव धोने लगा। साथ ही उसने अंजुरी-अंजुरी कर पानी भी पिया। उसका मन डरा कि शायद यों प्यास के सूखते कंठ को सींचने का मौका ही न मिले।

कैदी पहले गांव के पास पहुँचे कि एक कज्ज़ाक अपने घोड़े को दुलकी दौड़ाता उनकी बगल से गुजरता गांव की ओर बढ़ा। फिर यह लोग गांव का पहला अहाता भी पार न कर पाये कि कुदालों, हेंगों और बड़े-बड़े खूंटों से लैस भीड़ की भीड़ लोग इनकी ओर उमड़ते दीखे। इवान और उसके साथियों ने इन कज्ज़ाक-मर्दों और औरतों को देखा तो उन्हें लगा कि बस, यहीं और इन्हीं लोगों के हाथों अपनी मौत होगी।

एक कम्युनिस्ट भरकर बोला—"आओ, एक-दूसरे से विदा ले लें, कॉमरेडो।"

उस पहली मार के बाद उन लोगों पर जो कुछ बीती, वह दिवा-स्वप्न में घटनेवाली घटनाओं-सी लगी। बीस वर्स्ट तक उन्हें एक के बाद दूसरा गांव पार करना पड़ा और हर जगह तरह-तरह से सतानेवाले लोगों के जत्थों ने अपने ढंग से उनका स्वागत किया। बूढ़ों, औरतों और सयाने बच्चों ने उन्हें जी भर पीटा उनके खून से नहाए, सूजे हुए चेहरों पर थूका, कड़ी मिट्टी के ढोंके और पत्थर उन्हें खींच-खींचकर मारे और उनकी आंखों में मिट्टी और राख झोंकी। औरतों ने तो और भी जोश दिखाया और उन्हें किस-किस ढंग से नहीं सताया! फलतः मंजिल के पास आते-आते वे पच्चीस के पच्चीसों कैदी इस तरह बदशक्ल हो गए, और उनके बदनों पर धूल मिले-नीले खून की पपड़ियां इस तरह जम गईं कि उन्हें पहिचानना मुश्किल हो गया। वे जैसे इन्सान ही न रह गए।

सबसे पहले उनमें से हरएक ने मारपीट से बचने के लिए, रक्षकों से दूर से दूर रहने और एक-दूसरे को ठेलते हुए बीच में पहुंचने की कोशिश की। नतीजा यह हुआ कि वे एक-दूसरे से सट गए और शरीरों

के ठोस ढेर में बदल गए। लेकिन कज्जाकों ने उन्हें बराबर अलगाया और और छिटक-छिटककर चलने को मजबूर किया। आखिरकार उन्हें बचाव की कोई आशा न रही, वे अव्यवस्थित ढग से आगे बढने लगे और उनके मनों को केवल एक हसरत कचोटने लगी कि जैसे भी हो आगे बढ़ो और गिरो नही। उसका कारण साफ था। वे एक बार गिर जाते तो फिर उठना असम्भव हो जाता। सो पहले तो कुदालों के काटों या खूटों की नोकों के सामने आने पर उन्होने अपने चेहरों पर हाथ रख लिया और आखों पर हथेलियों की आड करने की कोशिश की। पर आखिर में उन्हे किसी चीज की कोई परवाह न रही। शुरू-शुरू में उन्होंने गिडगिडाकर दया की भीख मागी। वे असहय पीडा से जानवरो की तरह बिलबिलाए, कराहे, चीखे-चिल्लाए और गाली-गलौज तक की। लेकिन दोपहर होते-होते उनके मुह जैसे बिलकुल-सी उठे। केवल येलान्स्काया का एक फौजी ही ऐसा निकला जो सिर पर हाथ पडने पर हर वार दर्द से कराह-कराह उठा। वह रेजीमेट मे सबसे कम उम्र, सबसे हँसमुख और सबके गले का हार था। बेचारा अपना बदन ऐंठता, वास की चोट से भूसा-भूसा हो गई अपनी एक टाग घसीटता, एक पैर के सहारे जैसे-तैसे कूद-कूदकर आगे बढ़ता गया।

दोन के शीतल जल में अवगाहन करने के बाद इवान अलेक्सेयेविच में नई जान आ गई थी। सो कज्जाक औरतों और मर्दो को उसने अपनी ओर दौडकर आते देखा तो जल्दी-जल्दी अपने निकट-साथियों से विदा ली और धीरे से बोला—"भाइयो कभी हमने साबित किया था कि हम लडना जानते हैं, और इस समय हम प्रमाणित करें कि हम शान से मरना भी जानते है। एक बात हमे अपनी आखिरी साँस तक याद रखनी चाहिए और वह हमारा बहुत बडा बल है वह यह है कि वे कुदालो से हमारे सिर तोड सकते हैं, पर अपनी कुदालो से वे सोवियत-सत्ता की हत्या नही कर सकते। कम्युनिस्टो···भाइयो···मरना है, बहादुरी से मरो, ताकि दुश्मन हम पर हँस न सके!"

···बोरोव्स्की गाव मे एक कैदी को बुजुर्गो ने इतनी निर्ममता से हीक भर-भरकर पीटा कि उसके लिए सहना कठिन हो गया। वह दुख से

कातर, बचकानी आवाज में चिल्लाया, अपनी कमीज का कॉलर चीर डाला और एक धागे के सहारे गले में लटकता काला-सा क्रास कज्जाकों को दिखलाकर बोला—

"कॉमरेडो, मैं पार्टी में अभी हाल में ही शामिल हुआ हूँ···रहम करो, मुझ पर रहम करो! मैं ईश्वर में आस्था रखता हूँ। मेरे दो बच्चे हैं···मुझ पर रहम करो। तुम्हारे भी बाल-बच्चे होंगे।"

"हम तेरे कोई कॉमरेड-कॉमरेड नहीं, जुबान बन्द कर! अब तुझे अपने बच्चों की याद आई है। बदमाश, सुअर कहीं का!" एक चिपटी नाक वाला कज्जाक उसकी ओर बढ़कर हाँफते हुए बोला— 'यानी, अब तुझे होश आया है, है न? अब क्रास बाहर निकालकर दिखलाने की सूझी है! लेकिन जब तूने हमारे साथी कज्जाकों को गोलियों से उड़ाया था और उन्हें दीवार से सटाकर खड़ा किया था, तब परमात्मा की याद नहीं आई थी।" और जवाब का इन्तजार किए बिना उसने अपने हाथ का डंडा उसके सिर पर दे मारा।

लेकिन इवान अलेक्सेयेविच की आखों ने जो कुछ देखा और उसके कानों ने जो कुछ सुना, उसमें से एक चीज भी उसका ध्यान अपनी ओर खींच न सकी—क्षण भर को भी खींच न सकी। उसका हृदय जैसे पत्थर हो उठा। उसने करवट ली तो सिर्फ एक बार ली—

दोपहर को गालियों और चोटों के बीच वे एक गांव में पहुंचे और जैसे-तैसे आगे बढ़ने लगे। सहसा ही इवान की निगाह कोई सात साल के एक बच्चे पर पड़ी। बच्चा अपने मां की स्कर्ट से चिपटा जा रहा था। उसकी आंखों में आंसू बहे चले आ रहे थे और वह चिल्ला रहा था— "मा···न मारो···मा···नहीं···मारो नहीं···मेरा दिल दुखता है···मुझे डर लगता है···यह आदमी खून की नदी में डूब रहा है!"

औरत का हाथ ढीला पड़ गया, उसके मुंह से अचानक ही चीख निकल गई, उसने हेंगा जमीन पर फेंक दिया और अपने बच्चे का हाथ पकड़कर उसे घसीटती, किनारे की एक गली में भाग गई। बच्चे के आंसुओं और करुणा को देखकर इवान की पलकें गीली हो गई और उसके होंठ आंसुओं से खारे हो उठे। उसे सहसा ही अपने बच्चे और पत्नी की

याद आ गई और मुँह से एक सिसकी-सी निकल गई। वह बेचैन हो उठा। उसका मन बार-बार हुआ कि मेरी मौत हो तो मेरी बीवी और मेरे बच्चे की आखों के सामने न हो···और होनी हो तो जितनी जल्दी हो जाए, उतना ही अच्छा।···

कैदी थकान और दर्द से लड़खड़ाते अपने को घसीटते जैसे-तैसे आगे बढ़ते गए। गाव के पार के मैदान के कुएँ में उन्होंने मुखिया सार्जेंट से मिन्नतें की कि हमें पानी पी लेने दो। पर जवाब में सार्जेंट चीखा—"नही, पानी पीने की कोई जरूरत नही। यों ही देर हो गई है। आगे बढ़ो!'

पर रक्षकों मे से एक उनकी वकालत करते हुए बोला—"इतनी सख्ती न बरतो, अफीम साजोनोविच! यह लोग भी हमारी तरह इन्सान हैं।"

"इन्सान? कम्युनिस्ट इन्सान नही होते और तुम मुझे पटाने की कोशिश न करो।" इनकी जिम्मेदारी मुझ पर है, तुम पर नही! तुम सबका मुखिया मैं हूँ तुम नही!"

"तुम्हारे जैसे मुखिये कदम-कदम पर मिलते हैं। जाओ, जवानो पी आओ पानी।" बूढ़ा कज्जाक बोला। यही नहीं, वह अपने घोड़े से उतरा और उसने एक घड़ा पानी कुएँ से खीचा। कैदियों ने तुरन्त ही उसे घेर लिया, उनकी चोट-चोटीली बुझी हुई आखें एक बार फिर चमक उठी और पच्चीस जोड़े हाथ घड़ा लपक लेने को आगे बढ़ गए। बूढ़ा हिचकिचाया। उसकी समझ मे न आया कि सबसे पहले पानी किसे दे। पर एक क्षण के विचार के बाद ही उसने पानी एक बँठे हुए कूडे मे उँडेल दिया और एक किनारे हटकर जोर से बोला—यह लो···पर तुम सब जानवर हो क्या?···पारी-पारी से पियो।"

पानी कूडे के हरे कीचड़ से सने तल मे लहरने लगा। कैदी तेजी से उस ओर लपके। दूसरी ओर उस बूढे सिपाही की भौंहे सम्वेदना से बुन उठी। उसने ग्यारह घड़े पानी खीचा और कूडा भर दिया।

इवान घुटनो के बल आगे बढ़ा और जी भर पानी पीने के बाद उसने अपना सिर ऊपर उठाया तो गैरमामूली, आम्बों को अंधा कर देने

वाली स्पष्टता से उसने सामने देखी, दोन के किनारे की सड़क पर खड़िया की गर्द की पारदर्शी कपूरी चादर, दूर की पहाड़ियों का नीलम और उनके ऊपर तेज़ी से बहती दूधिया अयालवाली दोन के ऊपर आसमान के, पहुंच के बाहर के, नीले गुम्बद के नीचे एक नन्हा-सा बादल।

बादल हवा के परों पर सवार था और चमचमाते हुए सफेद पाल की तरह उत्तर की ओर उड़ता चला जा रहा था। उसकी ओपली परछाईं नदी के दूर के मोड़ में छन रही थी।

· ५५ ·

कुदिनोव के व्येशेन्स्काया लौटने के बाद विद्रोही सेनाओं की सर्वोच्च कमान की एक गुप्त कॉन्फ्रेंस हुई और उसमें दोन-सरकार और अतामान बोगायेव्स्की से सहायता मांगने का फैसला किया गया। कुदिनोव को आदेश दिया कि वह एक पत्र लिखे कि लाल-सेनाओं से बातचीत चलाने और १९१८ के अन्त में मोर्चा छोड़कर चले आने का विद्रोही सेनाओं को बड़ा पश्चाताप और दुख है। सो कुदिनोव ने अपने पत्र में वचन दिया कि लाल-फौजियों के खिलाफ घुआंधार लड़ाई तब तक चलाई जाएगी, जब तक कि जीत न हो जाएगी। अन्त में उसने अनुरोध किया कि स्टाफ अफसर और कारतूस हवाई जहाज़ से मोर्चे के इस ओर भेज दिए जाएं।

···प्योत्र···बोगातिरयोव विद्रोहियों के साथ बना रहा और विमान चालक कुदिनोव का पत्र लेकर नोवोचेरकास्क लौट गया इसके बाद दोन सरकार और विद्रोही-सेनाओं के बीच घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित हो गया। अब करीब-करीब हर दिन ही काम के बने हवाई जहाज़ फौजी अफसरों, कारतूसों और हलकी तोपों के लिए थोड़े-से गोले ले-लेकर दोनेत्स के उस पार से इस पार आने लगे। विमान चालक दोन-सेना के साथ पीछे हट गए। ऊपरी दोन कज़ाकों के पारिवारिकों के नाम पत्र भी ले गए और वापिसी में उनके जवाब भी ले जाने लगे।

दोन श्वेत सेना के कमांडर जेनेरल सिदोरिन ने, दोनेत्स के मोर्चे की स्थिति और मोर्चेबन्दी से सम्बन्धित अपने विचारों के आधार पर फौजी कार्रवाइयों की योजनाएं, आदेश, रिपोर्ट और विद्रोही मोर्चे पर भेजे

जाने वाली लाल-सेना के बारे में खबरें कुदिनोव को भेजीं । कुदिनोव ने इने-गिने लोगों को ही अपने पत्र-व्यवहार की सुनगुन होने दी। बाकी के लिए सारी बात राज बनी रही ।

: ५६ :

कैदी तातारस्की में तीसरे पहर कोई पाच बजे पहुँचे । बसन्त का कुछ क्षणो की साँसोवाला साभ का धुधलका दरवाजे पर दस्तक देता लगा। सूरज डूबने को हुआ और उसकी आग से तपती हुई थाली, पश्चिम के भूरे-नीले बादलो के कधे पर टिक गई।

ऐसे मे तातारस्की-कज्ज़ाक पैदल सेना के लोग गाव की बडी खत्ती के साचे मे बैठे या खड़े हुए थे। येलान्स्काया स्क्वैड्रनों के लाल-सेनाओं का धक्का सम्हाल न पाने के कारण यह लोग दोन के दाहिने किनारे पर भेजे जा रहे थे, परन्तु उधर जाते-जाते गाव की ओर मुड़ आए थे कि ज़रा अपने घर के लोगों से मिल लें और खाने की चीजें नए सिरे से ले लें। वैसे मार्च इन लोगो को फौरन ही करना था, लेकिन इसी समय उन्हें खबर मिल गई कि कम्युनिस्ट कैदी व्येशेन्स्काया ले जाए जा रहे है, उनमें मीशा कोशेवोई और इवान अलेक्सेयेविच भी हैं और वे जल्दी ही तातारस्की पहुचने वाले है।

इस खबर का परिणाम यह भी हुआ कि लोग ठहर गए और जिन कज्ज़ाको के सगे-सम्बन्धी, तातारस्की के बाहर की लडाई में, प्योत्र मेलखोव के साथ मारे गए थे, वे रुककर मीशा कोशेवोइ और इवान अलेक्सेयेविच को देखने की खास ज़िद पकड गए।

वे बच्चो औरतों, बूढो से घिरे, खत्ती की दीवार से अपनी राइफलें टिकाए, धुआ उडाते और सूरजमुखी के बिए कुटकुटाते रहे। सारा गाव बाहर निकलकर सडक पर आ गया और कैदियों के आने की खबर देने के लिए मकानो की छतों पर लडके तैनात कर दिए गए।

आखिरकर एक लडका ज़ोर से चिल्लाया—"आ रहे हैं वे लोग!"

इस पर जो फौजी बैठे थे। वे उठकर खडे हो गए। सभी लोगों के बीच तूफान-सा आ गया, ज़ोर-ज़ोर की चीख-चिल्लाहट हवा में गूंजने

लगी और कैदियों को देखने के लिए भागकर आगे जानेवाले लड़कों के पैरों की आवाज़ अलग से कानों में पड़ने लगी। अलेक्सेइ-शामील की विधवा के मुँह से दुखभरी चीख निकल गई। उसका गम अभी तक ताज़ा था।

अचानक ही एक बूढ़ा कज्ज़ाक बोला—"आ रहे हैं···हमारे दुश्मन आ रहे हैं।"

"शैतानों को बीन-बीनकर मार डालो। इन्होंने हमारे-अपने लोगों को मारा है। मीशा कोशेवोइ और उसके दोस्त से हम आज हिसाब-किताब करेंगे!" एक-दूसरा कज्ज़ाक चिल्लाया।

दार्या मेलेखोवा अनीकुश्का की पत्नी के साथ आ खड़ी हुई और सबसे पहले उसने पास आते कैदियों में इवान अलेक्सेयेविच को पहिचाना।

"तुम्हारे गाव के एक आदमी को हम लाये हैं तुम्हारे लिए। आओ और ज़रा तारीफ करो इस सुअर के बच्चे की! ईसाइयों की तरह इसे चूमो।" लोगों के शोरगुल और औरतों की चीखों और विलापों से तेज स्वर में सार्जेण्ट ने गरजकर अपनी बात कही, और हाथ फैलाकर इवान की ओर इशारा किया।

"लेकिन दूसरा आदमी कहाँ है? वह मीशा कोशेवोइ कहाँ है?" अन्तीप ने पूछा और अपनी राइफल कधे से उतारकर भीड़ चीरते हुए आगे बढ़ा।

"तुम्हारा एक ही आदमी है हमारे साथ···दूसरा कोई नहीं। लेकिन अगर उस आदमी को ही चीरा जायेगा तो भी तुममें से हरएक को एक-एक टुकड़ा मिल जायेगा।" सार्जेण्ट ने लाल रूमाल से चेहरा पोंछते और थके हुए ढग से घोड़े से नीचे उतरते हुए कहा।

औरतों का चीखना, चिल्लाना और गरजना अपने चरम-बिन्दु पर पहुँच गया। दार्या लोगों को धक्के देती रक्षकों की ओर बढ़ी तो उसकी निगाह कुछ ही कदमों के फासिले पर खड़े इवान अलेक्सेयेविच पर पड़ी। उसके चेहरे पर जहाँ-तहाँ चोटों के नीले-काले निशान थे और उनसे खून रिस रहा था। माथे की खाल जहाँ-तहाँ से झूलकर हवा में फड़फड़ा रही थी। खून से चिकटे बालों वाला, बुरी तरह सूजा हुआ सिर उलटी हुई

बालटी-सा लग रहा था। वहाँ के खुले घाव को धूप और मक्खियों से बचाने के लिए इवान ने उसके ऊपर ऊनी दस्ताने रख लिए थे। पर वे अब जख्मों से चिपक गये और वहीं जम गये से लगते थे।

इवान अलेक्सेयेविच ने जाल मे फँसे जन्तु की तरह देखते हुए चारों ओर नजर दौड़ाई। उसका मन बड़ा आशंकित रहा कि ऐसा न हो कि भीड मे कहीं मेरी पत्नी और मेरा बच्चा भी हो! उसने सोचा—"अगर वे लोग होंगे तो किसी से उन्हें यहाँ से ले जाने को कह दूँगा, क्योंकि उनके सामने मैं मरना नही चाहता और हालत यह है कि तातारस्की से आगे जा सकना मुमकिन नही है···मौत यहो गले लगने को बेचैन लगती है।"

सो, उसने अपने कधे झुकाकर, धीरे-धीरे मेहनत से सिर मोडा और अपने गाव के सभी जाने-पहचाने चेहरों को एक-एक कर हेरा। उसके एक चेहरे पर भी सहानुभूति और सवेदना के भाव नहीं दीखे। कज्जाक-मर्दो और औरतो, दोनो की ही आखों से उसके लिए बदी टपकती रही।

उसकी, उतरे हुए रगवाली, खून से चिकटी खाकी कमीज हर हरकत पर सरसराई। लाल सेना वाले उसके दोहरे पतलून और गाठ-गठीले पैरों पर भी खून नजर आया।

दार्या उसके ऐन सामने जा खडी हुई। वह नफरत से, दर्द से और किसी-न-किसी अनहोनी घटना के वहीं, उसी जगह घटने की आशका से भरकर हाफने लगी और इवान अलेक्सेयेविच के चेहरे को एकटक घूरने लगी। परन्तु इवान अलेक्सेयेविच ने भी उसे पहचाना या नही, इसका कोई निश्चय वह नही कर सकी।

इवान की एक आख तो चोट के कारण बद थी। परन्तु उसी तरह चिन्ता और उत्तेजना से भरकर वह अपनी दूसरी आख से अलग-अलग व्यक्तियों को एक एककर देखता रहा। इसी सिलसिले मे उसकी निगाह दार्या पर जा जमी और वह इस तरह आगे को गिरने-गिरने को हो गया, जैसे कि धुंआधार नशे मे हो। इस बीच खून की भयानक कमी के कारण उसका दिमाग चक्कर खाने लगा और वह बेहोश होने की हालत मे आ गया। सक्रमण की जिस स्थिति मे हर चीज बनावटी और झूठी लगने लगती है और प्रकाश अधकार मे बदलने लगता है, वह इस समय उसे भी

अपने पंजों में लेने लगी, लेकिन अपनी अधिक से अधिक इच्छा-शक्ति के सहारे उसने अपने पैरों को उखड़ने नहीं दिया। उसने देखा, दार्या को पहिचाना और डगमगाते हुए एक कदम आगे रखा। उसके वददावल होंठों ने मुसकान सजाने की विफल चेष्टा की। दूसरी मुसकान के इस प्रेत ने दार्या को गड़बड़ा दिया और उसका दिल इस तरह ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा, जैसे कि प्राण कंठ में समा गए हों।

दार्या बुरी तरह हाफने लगी और उसका चेहरा जर्द से जर्दतर होता गया। होते-होते वह इवान के चेहरे के ठीक सामने जा पहुंची।

"कहो, कैसे हो, इवान भाई ?" उसने पूछा। उसके अन्दर के जोश, बजती हुई आवाज और बात के खास लहजे के कारण भीड़ में सन्नाटा छा गया। इस वातावरण में इवान का, कुछ न होने पर भी, जमा हुआ स्वर साफ सुन पड़ा—"और तुम कैसी हो बहिन दार्या ?"

"भाई बतलाओ ज़रा कि तुमने कैसे मारा" दार्या की आवाज़ फंस गई और कलेजा जैसे किसी ने मसल दिया। क्षण भर को वह ज़ोर से बोल न सकी। पर उसकी फुसफुसाहट भीड़ के सिरे के लोगों ने भी सुनी—"अपने ही चचेरे-भाई, मेरे प्योत्र को ?"

"नहीं बहिन, मैंने उसे नहीं मारा।"

"तुमने नहीं मारा ?" उसकी आवाज एकदम तेज हो गई—"यानी उसका कत्ल तुमने और तुम्हारे मिखाइल कोशेवोइ ने नहीं किया ?"

"नहीं, बहिन···हमने···यानी मैंने उसे नहीं मारा।"

"अगर तुम नहीं थे, तो फिर कौन था जिसने उसे इस दुनिया से रुख्सत कर दिया ?" दार्या का स्वर और चढ़ा—"कौन था वह ? कौन था बतलाओ मुझे !"

"ज़ग्रामुर्स्की-रेजीमेंट ने मारा उसे···"

"नहीं, मारने वाले तुम थे···तुमने मारा उसे···कज्ज़ाकों का कहना है कि उन्होंने तुम्हें पहाड़ी पर देखा। तुम सफेद घोड़े पर सवार थे। इस बात से इन्कार कर सकते हो तुम, कुत्ते के बच्चे कहीं के ?"

"मैं उस लड़ाई में था···" इवान का बायां हाथ धीरे से उठा, सिर पर पहुंचा और घाव से चिपके दस्तानों को इधर-उधर करने लगा। उसकी

आवाज़ में स्पष्ट संदेह घुला—"उस लड़ाई में मैं ज़रूर था, पर तुम्हारे आदमी को मैंने नहीं मारा···उसे मारा मिखाइल कोशेवाइ ने। उसने उसे गोली से उड़ा दिया। प्योत्र के खून का गुनहगार मैं नहीं हूं।"

"उसे न सही, पर हमारे गांव के दूसरे किन लोगों को तुमने तलवार के घाट उतारा? हम सबके आम दुश्मन, और किन-किन लोगों के बच्चों को तुमने इस दुनिया मे अकेला छोड़ दिया?" जूते की नाल, याकोव की पत्नी की चीखें भीड़ के बीच से उभरकर लोगों के अन्तर भेदने लगी। उसके साथ ही बाकी औरतें भी जो आपे से बाहर होकर सिसकने लगीं तो वातावरण का तनाव कहीं ज्यादा बढ़ गया।

बाद में दार्या ने बतलाया कि तुझे याद नहीं कि इस वक्त घुड़सवार फौजियों की कारबाइन-राइफिल कैसे और कहा से मेरे हाथों मे आ गई। तो, राइफिल किसी ने थमा दी होगी उसके हाथो मे। लेकिन, जब औरतों का आर्त्तनाद बढ़ा तो उसने एक अजीब-सी चीज अपने हाथ मे पाई और उस पर निगाह डाले बिना ही राइफिल को उसने राइफिल समझ लिया। सो कुंदे की तरफ से मार करने के खयाल से उसने पहले उसे नली की ओर से पकड़ा। लेकिन, नली की खास बनावट के कारण उसके हथेली मे तकलीफ होने लगी तो उसने राइफिल उलट ली, उसे अपने कंधे पर जमाया और इवान के बाएं सीने पर निशाना तक साधा।

उसने देखा। उसके पीछे के कज़्ज़ाक भाग कर एक तरफ को हो गए। इससे खत्ती की दीवार साफ नज़र आने लगी, साथ ही डरे हुए लोगों की चीख पुकारें सुन पड़ी—"तुम्हारा दिमाग खराब हो रहा है! तुम हमें गोली मार दोगी···ठहरो···गोली न चलाओ!"

लेकिन उसे अन्दर से उभाड़ा लोगों की नजरों की हैवानियत से भरी किसी एक उम्मीद ने अपने पति की मौत का बदला लेने की भावना ने, और सहसा ही अपने को दूसरी औरतों से अलग पाने और देखने की आत्मश्लाघा ने उसने मन ही मन सोचा, सभी कज़्ज़ाक मेरी तरफ अचरज तो अचरज, डर तक से भरकर देख रहे हैं और मेरे अगले कदम का इन्तज़ार कर रहे हैं। इसलिए मुझे कोई-न-कोई ऐसा काम इस वक्त ज़रूर करना चाहिए कि वे ताज्जुब और हैरत में पड़ जाए।···बस, तो ऐसी और

ऐसी ही दूसरी भावनाओं के कारण वह धुआंधार रफ्तार से किसी खास फैसले के अमल के साचे की तरफ बढ़ी। यह फैसला उसके अन्तरतम में बहुत पहले ही हो चुका था। लेकिन, इस समय उसकी समझ की पकड़ में न आया और राइफिल के घोड़े पर सावधानी से रखी अँगुली के बावजूद वह हिचकिचा गई। मगर, फिर सहसा ही, अपनी आशा तक के विपरीत उसने पूरी ताकत से घोड़ा दबा दिया।

राइफिल के धक्के ने उसके पैर उखाड़ दिए और वह गिर पड़ी। गोली दगने की आवाज से उसके कान के पर्दे फटने लगे। लेकिन, अपनी सिकुड़ी हुई आंखों से उसने देखा कि इवान का चेहरा एकाएक भयानक रूप में बदला, उसने हाथ आगे की ओर फेंके और फिर इस तरह बाधे जैसे कि किसी बड़ी ऊंचाई से पानी में गोता लगाने जा रहा हो। फिर मुंह के बल गिर पड़ा, सिर झटकों पर झटके खाता रहा, सारा बदन थरथराता रहा और फैले हुए हाथों की अंगुलियां जमीन को अपने पंजों में भरने लगी।

दार्या ने अब भी पूरी तरह यह न समझा कि उसने किया क्या! उसने राइफिल जमीन पर फेंकी, मुंह के बल गिरे आदमी को पीठ दी और अपने सरल और सहज स्वभाव के लिए बिलकुल अनजाने अन्दाज से अपना रूमाल ठीक किया और बाहर निकले बाल अन्दर खोंसे।

"अब भी सांस ले रहा है।" एक कज्जाक ने कहा और दार्या को निकलने का रास्ता देने के लिए बड़े आदर से एक ओर को हो गया।

दार्या ने बिलकुल चिन्ता नहीं की कि क्या कहा और किसने कहा। उसने मुड़कर पीछे देखा और लम्बी आह सुनी। यह लम्बी आह उसे किसी और के कंठ से नहीं, बल्कि अपने ही दिल से निकलती लगी। पर दूसरे क्षण कराह मौत की आवाज में बदल गई। केवल तब दार्या ने समझा कि वह आह इवान अलेक्सेयेविच की थी और उसने उसे गोली मार दी है।

वह हलके मन लेकिन तेज रफ्तार से खत्ती के पास से निकलकर चौक की तरफ बढ़ी। इस समय इनी-गिनी निगाहें ही उस पर गड़ी रहीं, क्योंकि लोगों का ध्यान इस बीच अन्तीप की ओर खिंच गया था।

वह पता नहीं क्यों एक संगीन पीठ के पीछे छिपाये, पंजों के बल, तेजी से इवान अलेक्सेयेविच की तरफ यों दौड़ा, जैसे कि परेड के मैदान में हो। वहां पहुंचने पर, नपे-तुले ढंग से जमीन पर बैठते हुए उसने संगीन की नोक इवान के सीने पर रखी और शांत मन से बोला—'अच्छा अब तुम चलो, कोत्यालोव ?" और संगीन कलेजे के आर-पार हो गई।

इवान की मौत दर्दभरी रही और धीरे-धीरे हुई। जिन्दगी उसके स्वस्थ, गठे हुए बदन को छोड़ने को राजी मुश्किल से हुई। यानी, संगीन के तीसरे वार के बाद भी उसकी सांस चलती रही और उसके खून से भरे दांतों के बीच से 'आह···आह। सुनाई पड़ती रही।

"है···जाओ शैतान के मुंह में!" रक्षकों का एक मुखिया बोला, अन्तीप को एक ओर को ढकेला, अपना रिवॉल्वर खींचा और सधे हुए हाथ से इवान पर निशाना साधा।

उसकी यह गोली बाकी कज्ज़ाकों के लिए संकेत रही और वे कैदियों पर टूट पड़े। जाल में फंसे लोगों में खलबली मच गई और वे तितर-बितर होने लगे। फिर राइफिलों की खुश्क और तीखी धाय-धाय में लोगों की चीख पुकारें घुल गईं।

ग्रिगोरी मेलेखोव कोई आधे घंटे बाद अपना घोड़ा दौड़ाता तातारस्की आया। उसने अपने घोड़े की भगाते-भगाते जान निकाल ली थी, और वह दो गांवों के बीच गिर गया था। फिर अपनी काठी लादकर वह सबसे पास के गांव में गया था और उधार मांगने पर उसे एक बहुत ही गया बीता घोड़ा मिला था। सो, वह तातारस्की बहुत देर में पहुंचा था। तातारस्की-कम्पनी पहाड़ी के पार जाकर आंखों से ओझल हो गई थी और गांव में सन्नाटा हो गया था। कम्पनी उस्त-खोपरस्काया की सरहद की ओर बढ़ गई थी। वहां विद्रोही-सेनाएं लाल-घुड़सवार सेनाओं से लोहा ले रही थीं। रात ने तातारस्की और उसके आस-पास की पहाड़ियों पर अपनी सुरमई चादर डाल दी थी।

ग्रिगोरी अपने अहाते में आया, घोड़े से उतरा और घर में घुसा। [illegible] अन्धेरा अन्दर आया। भारी-भारी परछाइयों के बीच मच्छर

भनभन करते मिले। कोने की देवमूर्तियां हलके-हलके चमकती रहीं। अपने घर के वातावरण की घुटन का अनुमान लगाते हुए उसने आवाज दी—"कोई घर में है? मां? दूनया!"

"ग्रिगोरी, तुम हो?" सामने के कमरे से दूनया की आवाज आई। ग्रिगोरी को नंगे पैरों की आहट मिली और कमीज पर पेटी कसती बहिन की गोरी आकृति सामने आई। उसने पूछा—"आज इतनी जल्दी घर में सोता कैसे पड़ गया?···मां कहां हैं?"

"गांव में···" दूनया आगे बोल न सकी। उत्तेजना से भरी उसकी तेज सांसों की आवाज ग्रिगोरी ने सुनी।

"मामला क्या है? कैदी कितनी देर पहले आए थे यहां?"

"सारे के सारे कैदी मार डाले गए···"

'क्या?"

"कज्जाकों ने मार डाला उन्हें। उफ ग्रीशा, हमारी यह दार्या··· तो चुड़ैल है पूरी!" दूनया की आवाज में नफरत के आंसू घुटने लगे—"उसने इवान अलेक्सेयेविच को मार डाला···खुद···।"

"क्या बक रही है तू?" ग्रिगोरी अपनी बहिन का कॉलर पकड़ते हुये, डर से भरकर चीख उठा। दूनया की पलकों में आंसू झलकने लगे और उसकी पुतलियों में जमे भय को देखकर ग्रिगोरी को लगा कि उसने जो सुना है, ठीक ही सुना है।

"और, मिखाइल कोशेवोइ? स्तॉकमैन?"

"वे कैदियों के बीच नहीं थे।" दूनया ने टूटे हुए स्वरों में, संक्षेप में भाई को लाल-कैदियों की हत्या और दार्या की पूरी दास्तान सुनाई। बोली—

"मां को रात में दार्या के साथ घर में रहने में डर लगा, इसलिये वे पड़ोसियों के यहां सोने चली गई हैं और जानते हो, दार्या घर आई तो नशे में चूर, जंगली जानवर की तरह नशे में चूर···इस वक्त पड़ी सो रही है।"

"कहां?"

"खत्ती में?"

ग्रिगोरी मुड़ा, बाहर निकला, अहाता पारकर खत्ती मे पहुँचा और भड़ाक से दरवाजा खोला। दार्‌या गहरी नींद में डूबी फर्श पर पड़ी थी। स्कर्ट बेहयाई से उलटा हुआ था। दुबले-पतले हाथ फैले हुए थे। दाहिने गाल पर थूक चमक रहा था। मुह से घर की बनी वोदका की बू आ रही थी। औरत खर्राटों के बीच लम्बी-लम्बी सांसें ले रही थी। सिर भद्दे ढंग से धसा हुआ और बाया गाल जमीन से सटा हुआ था।

ग्रिगोरी को अपनी तलवार इस्तेमाल करने की जैसी हसरत इस समय हुई, वैसी पहले कभी न हुई थी। वह दार्‌या के बदन पर झुका कितने ही क्षणों तक खड़ा रहा। इसी बीच वह दाँत पीसता और अपने पैरों के पास पड़े शरीर को नफरत से भरकर एकटक घूरता रहा। इसके बाद उसने एक कदम आगे बढाया, अपने नाल-जड़े बूट की एड़ी उसके चेहरे और काली, कमान-सी भौंहों पर रख दी और फटती सी आवाज मे धीरे से कहा—"जहरीली नागिन है तू !"

दार्‌या नशे के बीच कराही और उसने बुदबुदा कर कुछ कहा। ग्रिगोरी ने अपना सिर थाम लिया, और दौड़ता हुआ अहाते से बाहर निकल आया।

फिर, वह उसी रात मोर्चे के लिये रवाना हो गया। अपनी मां से मिलने तक को नहीं रुका।

: ५७ .

आठवीं और नवीं लाल-सेनायें न सेना को दबा पाईं और न वसन्त की बाढ़ के पहले दोनेत्स पार कर सकीं। इसलिये कुछ क्षेत्रों में अपनी ओर से हमले करने की कोशिशें वे अब भी करती रहीं। इनमें से ज्यादातर कोशिशें बेकार गईं और पहल दोन-सेना की कमान के हाथों मे आ गई।

फिर, मई के मध्य तक दक्षिणी-मोर्चे पर कोई परिवर्तन न हुए। परन्तु, फिर जल्दी ही होने लगे। इस समय तक दोन-सेना के पूर्व-कमांडर जनरल देनीसोव और उसके चीफ-ऑफ-स्टाफ जनरल-पोल्याकोव की —योजना के अनुसार, दोन-सेना के अफसरों और रेजीमेंटों की एक जोर-

दार सेना को कायेन्स्काया के इलाके में जमाने का काम पूरा हो चुका था। इस हमलावर फौज में कोई सोलह हजार संगीनें और तलवारें, पच्चीस तोपें और एक सौ पचास मशीनगनें थीं।

जनरल पोल्याकोव की योजना यह थी कि यह सेना, दूसरी युनिटों को साथ लेकर मार्केयोव्का की ओर हमला करे, बारहवीं-लाल-सेना-डिविजन को खदेड़ बाहर करे, ऊपरी दोन के इलाके में घुसे, वहां विद्रोही-सेना में शामिल हो, और पीछे बोलशेविकों से प्रभावित कज्जाकों का वाजिब इलाज करने के लिये खोपर जिले में दाखिल हो।···

उधर दोनेत्स् के मोर्चे को भेदने के लिए ज्यादा-से-ज्यादा तैयारियां की जा रही थीं। हमलावर-फौज की कमान जनरल सेक्रेतेव को सौंप दी गई थी, और सफलता दोन-सेना को अपनी बांहों में भरने लगी थी। क्रासनोव की और स मन्तान देनीसोव की जगह जनरल सिदोरीन ने ली थी और वह पुनर्निर्वाचित अतामान जनरल अफरीकाम-बोगा-येव्स्की से मिलकर पश्चिमी-देशों के साथ सहयोग की नीति चला रहा था। साथ ही ब्रिटिश और फ्रेंच-फौजी-मिशनों की सहायता से इन दोनों ने, मास्को पर मार्च करने और रूसी-राज्य भर से बोलशेविकवाद का नाम-निशान मिटाने के नक्शे बनाने शुरू कर दिए थे।

हथियारों से भरी सवारियां काला-सागर के बन्दरगाहों में चली आ रही थीं। समुद्री-जहाज ब्रिटिश और फ्रेंच-हवाईजहाजों, टैंकों, तोपखानों, मशीनगनों और राइफिलों के साथ खच्चरों के दल के दल और खाने और कपड़े के अम्बारों पर अम्बार भी लादे ला रहे थे। इन खच्चरों और इन चीजों की जर्मनी से संधि के बाद कोई कीमत न रह गई थी। ब्रिटेन के शेरों वाले बटनों वाली खाकी ट्युनिकों से नोवो-चिर्कस्क के मालखाने भरे जा रहे थे। गोदाम अमरीकी आटे, चीनी, चॉकलेटों और शराबों से पटे पड़े थे। पूंजीवादी-योरोप, बोलशेविकों की बढ़ती हुई ताकत से घबड़ाकर, गोलों और कारतूसों की दक्षिण-रूस में बरसात-सी किए दे रहा था। यह वही गोले और कारतूस थे, जिन्हें मित्र-देशों की सेनाओं को जर्मनी के खिलाफ इस्तेमाल करने का मौका न मिला था। दुनिया के सारे प्रतिक्रियावादी, तार-तार, खून से तर,

सोवियत रूस का गला घोंटने की जैसे कसम-सी खाए बैठे थे। ब्रिटेन और फ्रांस के जो सैनिक निर्देशक, कज्जाक और स्वयंसेवकों की सेनाओं के लोगो को टैंक और ब्रिटिश-तोपों का चलाना सिखलाने के लिए दोन और कुबान के इलाको मे आए थे, वे विजयी के रूप मे मास्को में प्रवेश करने के सपने जाने कब से देख रहे थे।

इसी समय दोनेत्स के इलाके मे कुछ ऐसी घटनाए घटी, जिन्होंने लाल-सेना के १९१९ के हमले की सफलता के निश्चय मे अपना बड़ा योग दिया।···

इसमे कोई सन्देह नहीं कि लाल-सेना अपनी ओर से हमला करने के प्रयास मे जो असफल हो रही थी, उसके मूल मे ऊपरी-दोन के कज्जाको का विद्रोह था। इस विद्रोह ने लाल-सेना के पार्श्व-भाग पर कैंसर की तरह अपने दांत लगा रखे थे। इसके कारण सेनाओं का इधर-उधर भेजा जाना जरूरी था। नतीजा यह कि रसद और खाने-पीने की चीजो का मोर्चे तक लाया जाना मुश्किल हो रहा था। बगावत को दबाने के लिए महज़ आठवीं और नवीं लाल-सेनाओं से बारह हज़ार सगीन बद फौजी बुला लिये गए थे।

क्रांतिकारी सैनिक-परिषद को विद्रोह की व्यापकता के बारे मे पूरी सूचनाए न मिल पाती थी, इसलिए उसे दबाने के लिए कारगर-कदम उतनी तेजी से न उठा पाती थी। पहले, जैसे केन्द्रीय कमेटी-स्कूल ने सिर्फ दो सौ लोग भेजे थे, वैसे ही अलग-अलग, छोटी टुकडियां या दूसरी अर्द्ध-सगठित यूनिटें विद्रोह को दबाने भेजी गई थी। यह प्रयत्न ऐसे थे जैसे कोई दो-चार गिलास पानी से आग बुझाना चाहे। लाल-सेना की इन अलग-अलग यूनिटों ने, कोई एक सौ वर्स्ट के घेरे मे फैले विद्रोहियों से भरे क्षेत्र को घेर लिया और वहां मनमाने ढग से काम किया था। इनके सामने कोई स्पष्ट योजना न थी। यही वजह थी कि विद्रोहियों से लोहा लेने वाले लाल-फौजियों की सख्या के पच्चीस हज़ार सगीनधारी फौजियों तक बढ़ा दिए जाने पर भी कोई ठोस नतीजा न निकला था।

चौदह पैदल सेनाए और दर्जनों रक्षक-टुकड़िया, विद्रोह को एक विशेष क्षेत्र मे सीमित कर देने के लिये, एक-एक कर झोंक दी गई थी।

तामबोव, वोरोनेज और र्याजान से कम्युनिस्ट टुकड़िया चली आ रही थी। विद्रोह के अपना मुंह फैला लेने और विद्रोहियों के, हथियाई गई मशीनगनों और तोपखानों से, सशक्त हो जाने पर ही, तोपखाने और मशीनगनों के विभागों वाली अभियान-सेना की कमी पूरी करने के लिए आठवीं और नवीं लाल-सेनाओं ने एक-एक डिविजन भेजा था। इससे विद्रोहियों की बड़ी क्षति हुई थी। पर कुचले वे इस पर भी न जा सके थे।

ऊपरी दोन की लड़ाई की चिनगारियां खोपर जिले तक फैल गई थी। थोड़े से फौजी अफसरों के नेतृत्व में कुछ योंही से कज्जाक दलों ने सिर उठाने की कोशिश की थी। उर्युपिन्स्काय के इलाके में अलीमोव नाम के किसी कर्नल को काफी बड़ी संख्या में, अब तक दिये, कज्जाक और फौजी अफसर मिल गये थे। बगावत पहली मई की रात को छिड़ने वाली थी। लेकिन, षड्यन्त्र का पता समय से पहले ही चल गया था और अलीमोव के कितने ही साथियों को पकड़कर क्रान्तिकारी अदालत के फैसले पर गोली से उड़ा दिया गया था। इस तरह अपने नेता से वंचित होकर विद्रोह बुझ गया था और खोपर जिले के क्रान्तिविरोधी-तत्व ऊपरी-दोन के विद्रोहियों से मिलकर उनके हाथ मजबूत करते-करते रह गए थे।···

फिर, मई के आरम्भ में एक कम्युनिस्ट फौजी टुकड़ी चेर्तकोवो-स्टेशन पर गाड़ी से उतरी थी। चेर्तकोवो दक्षिण-पूर्वी-रेलवे का आखिरी स्टेशन था, और यह रेलवे-लाईन बागियों के मोर्चे के पश्चिमी भाग में पड़ती थी। उस समय इस क्षेत्र में अलग-अलग जिलों के कज्जाक, कजानस्काया जिले की सीमा पर, बहुत बड़ी मात्रा में घुड़सवार-सेना जमा कर रहे थे और लाल-फौजियों से धीरज छोड़कर लोहा ले रहे थे। इन सेनाओं ने अपनी ओर से हमला जो कर दिया था।

ऐसे में स्टेशन पर स्थित लाल सेना के बीच एकाएक एक अफवाह उड़ी कि कज्जाकों ने चेर्तकोवो घेर लिया है और वे हमला करने को तैयार हैं। ···वैसे स्टेशन मोर्चे से चालीस वर्स्ट से कम दूर न था और लाल-सेना की ऐसी टुकड़िया आगे थीं, जो किसी ऐसी सम्भावना की सूचना समय से पहले-पहले दे सकती थीं। तो भी, स्टेशन पर खलबली

मच गई। लाल सैनिक अस्थिर हो उठे। गिरजे के पीछे किसी ने जोर से कमान दी—'हथियार सम्हालो!" और लोग बौखलाकर सड़कों पर इधर-उधर दौड़ने लगे।

बाद में पता लगा कि लोग यों ही घबरा गये थे। किसीने पास आते लाल-फौजियों के स्क्वैड्रन को कज्जाकों का स्क्वैड्रन समझ लिया था। कम्युनिस्ट-टुकड़ी के साथ दो फुटकर रेजीमेंटें कजान्स्काया की तरफ मार्च कर रही थीं।···

अगले दिन क्रान्स्ताद-रेजीमेंट के एक-एक आदमी का नाम-निशान कज्जाकों ने मिटा दिया। रेजीमेंट हाल ही में आई थी।—

कज्जाकों ने पहले दिन की लड़ाई के बाद रात को धावा बोला।

कान्स्ताद-रेजीमेंट ने विद्रोहियों द्वारा छोड़े गये गांव में पड़ाव डालने का खतरा मोल न लिया था और रेजीमेंट के लोग स्तेपी के मैदान में रात बिता रहे थे।

सो, आधी रात के समय कज्जाक-घुड़सवार सेना के कई स्क्वैड्रनों ने रेजीमेंट को घेर लिया और घनघोर आग बरसाई। उन्होंने लकड़ी के बड़े-बड़े चिमटों से बड़ा फायदा उठाया और इन्हें मशीनगनों की जगह इस्तेमाल किया। इनसे जो आवाज़ हुई उसे मशीनगनों की आवाज़ से अलगाना मुश्किल हो गया। यह चीज़ किसीने दुश्मनों को डराने के लिए ईजाद की थी।

रेजीमेंट के फौजियों ने अभेद्य अन्धकार में कज्जाकों की उन 'मशीनगनों', अपनी चौकियों की ओर से होने वाली, आसमान को हिला देने वाली धाय-धाय और अपनी ओर बढ़ती आती घुड़सवार-सेना की की धमक सुनी तो वे तेजी से दोन की ओर बढ़े और उन्होंने रास्ते की काई चीरते हुए नदी तक की मंजिल जैसे तैसे तय कर ही डाली। लेकिन उनके वहां पहुंचते-पहुंचते कज्जाक-घुड़सवारों ने उन्हें जा पकड़ा, उनपर हमला बोल दिया। फलतः बचे केवल इने-गिने वे, जिन्होंने बरसात के पानी की बाढ़ से उमड़ती नदी तैर कर पार कर ली। बाकी वहीं खत्म हो गये।

मई के महीने में लाल-सेनाओं की ओर ज्यादा कुमक दोनेत्स से

विद्रोहियों के मोर्चे की ओर भेजी गई। इसी सिलसिले मे ३३वीं कुवान-डिवीजन लडाई में आ शामिल हुई, और केवल तब-ग्रिगोरी-मेलेखोव ने हमले के धक्के का सही मतलब पहली बार समझा। इस डिविजन ने ग्रिगोरी के पहले डिविजन को भयानक रूप से तोड़ा। ग्रिगोरी को गाव-पर-गाव छोड़ना और उत्तर की तरफ से दोन की दिशा मे पीछे हटना पड़ा। कारगिन्स्काय के पास चिर नदी के किनारे उसने एक दिन जरा हौसला दिखलाया और पैर जमाये। लेकिन, और समर्थ और बहादुर फौजों के सामने उसे न सिर्फ बरबस पीछे हटना पड़ा, बल्कि कुमक की मांग भी करनी पड़ी।

तीसरी डिविजन के कमांडर, कोन्द्रात-मेदवेदेव ने घुड़सवार फौजियों के आठ स्क्वैड्रन भेज दिए। इन फौजियों के पास अद्भुत साज-सामान की कोई कमी न थी। लाल-कैदियो से हथियाई गई वर्दिया और बूट, बहुत अच्छी हालत में थे। गरमी के बावजूद सबके बदनो पर चमड़े की जरकिनें और तमाम लोगों के पास पिस्तौलें और दूरबीनें थी।···उन्होंने फिलहाल ३३वी कुवान-डिविजन का आगे बढ़ना रोक दिया, और कुदिनोव के अनवरत्-आग्रह के जवाब मे ग्रिगोरी खास सलाह-मशविरे के लिए व्येशेनस्काया रवाना हो गए।

: ५८ :

ग्रिगोरी सुबह-तड़के व्येशेन्स्काया पहुचा।···

दोन की बाढ़ का पानी उतर चला था। हवा देवदारुओं की मधुर गन्ध से बसी हुई थी। नदी के किनारे शाह-बलूत की कासनी-पत्तिया, आखों में सपने भरे हुये, हवा मे सरसरा रही थी। नंगे ढूहों और टीलों से भाप-सी उठ रही थी, और हरी घास की पतली-नुकीली पत्तिया जहाँ-तहाँ नजर आ रही थी। गढों में बचा हुआ पानी अब तक बना हुआ था और बगुलों की कीकें गूंज रहीं थीं। सूरज आसमान में चमक रहा था। मगर, इसके बावजूद काई से सड़े पानी के ऊपर मच्छरों के दल-के-दल भनभना रहे थे।

हेडक्वार्टर्स में एक पुराना टाइप-राइटर खट-खटा रहा था, और

कमरे, लोगों और तम्बाकू के धुँए की घुमस से भरे हुए थे।

ग्रिगोरी ने कुदिनोव को किसी अजीब से काम में व्यस्त और विचारों मे डूबा हुआ पाया। उसका चेहरा बहुत ही गम्भीर लगा। ग्रिगोरी के कमरे मे चुपचाप आने के कारण उसने आँखें ऊपर नही उठाई और पन्ने की तरह हरी, एक बडी ममनी के पैर रह-रहकर खीचता और तोड़ता रहा। वह उसका एक पैर तोडता, फिर उसपर अपनी चौडी हथेली रख लेता और कान लगाकर, कैदी-कीडे की भन-भन सुनता। यह भन-भन कभी तेज हो जाती तो कभी धीमी हो जाती।

सहसा ही उसकी नजर ग्रिगोरी पर पडी तो उसने खीझ और गुस्से से भरकर ममनी को मेज़ के नीचे झटक दिया। अपनी हथेली पतलून मे पोंछ ली और अपनी कुर्सी की चमकती पीठ के सहारे यों टिक गया, जैसे कि बहुत थक गया हो। बोला—"बैठो, ग्रिगोरी-पँन्तेलेयेविच।"

"कैसे है आप?"

"कैसे क्या! हमारी हालत तो तुम समझ सकते हो! मगर, तुम्हारे हाल-चाल कैसे है? तो, कम्युनिस्ट तुम्हे पीछे खदेड़ रहे है?"

"पूरे मोर्चे पर···"

"चिर मे तो तुमने उन्हे आगे बढने से रोका?"

"बहुत देर तक नही रोक सका। लेकिन मेदवेदेव के फौजियो ने थोड़ी इज्जत बचा ली।"

"तो, गूरत यह है, मेलेखोव।" कुदिनोव अपनी काकेशियाई, भूरी पेटी के चमडे पर हाथ फेरते और उसके, चादी के, काले बक्सुए पर निगाह जमाते हुए आह भरकर बोला—"जहा तक मेरा दिमाग चलता है, मुझे तो लगता है कि अभी हालत और पतली होगी। दोनेत्स में कुछ तमाशा हो रहा है। वहा या तो हमारे दोस्त लाल-फौजों को चीर कर आगे बढ रहे हैं, या लाल-फौजियो ने हमे सारी बीमारी की जड समझ लिया है और वे हमें जुल्म के ढक्कन के नीचे बन्द कर हमे घोंट डाल रहे हैं।"

"और, कैडेटों की तरफ की खबर क्या है? आखरी दवाई-जहाज से कोई खबर भेजी?"

"कोई खास बात नहीं है। वे तुम्हें या मुझे तो अपनी स्कीमें बताते नहीं। सिदोरिन चालाक आदमी है। कैडेट लाल-फौजियों का मोर्चा तोड़कर हमारी मदद के लिए आना चाहते हैं। उन्होंने हमें मदद देने का वायदा किया है। मगर, मदद के वायदे का यह मतलब तो नहीं कि वह हमेशा मिल भी जाएगी। मोर्चा तोड़ना कोई बच्चों का खेल तो है नहीं! कभी मैंने भी इसी तरह की कोशिश की थी! फिर हमें क्या पता कि दोनेत्स के इलाके में कम्युनिस्टों की ताकत क्या और कितनी है? हो सकता है कि कोलचक के मोर्चे से वे कुछ कोर यहां ले आये हों। हमें किसी चीज़ की कोई जानकारी नहीं है और अपनी नाकों की नोकों से आगे हमारी निगाहें जाती नहीं।"

'खैर, तो आप मुझसे क्या बातें करना चाहते थे? किस तरह की कान्फ्रेंस के लिए आपने मुझे यहां बुलाया है?' ग्रिगोरी ने जम्हाई लेते हुए पूछा। बगावत के अंजाम के बारे में उसे खास फिकर नहीं हुई। बात यह है कि बेलन को जैसे-तैसे घसीटते हुए खलिहान का चक्कर लगाने वाले घोड़े की तरह उसका दिमाग भी एक ही और पुरानी समस्या के चारों ओर घूमता रहा था। आखिरकार, उसने अपने कन्धे झटके थे—"अब एक बात तय है कि सोवियत-लोगों से किसी तरह का कोई समझौता नहीं हो सकता। उन्होंने हमारा खून बहाने में कोई कसर नहीं रखी, और हमने उनका खून बहाने में किसी तरह की कोई रियायत नहीं बरती। लेकिन हमने उन्हें अपने देश के इलाके में आने दिया। और, हालांकि इस वक्त कैडेट-सरकार हमसे मीठी-मीठी बातें कर रही है, पर बाद में यही हमारी खाल खींचकर रख देगी। खैर भाड़ में जाए फैसला, इस पार हो या उस पार हो, होगा तो वायदे से ही होगा।'···"

अब भी ग्रिगोरी की नजर से नजर न मिलाते कुदिनोव ने एक नक्शा खोला और बोला—"तुम्हारे यहां न रहने पर हमने एक कॉन्फ्रेंस बुलाई थी। उसमें हमने तय किया कि···"

"किसके साथ हुई आपकी यह कॉन्फ्रेंस? राजकुमार के साथ?"—ग्रिगोरी ने बीच में बात काटी और उसे याद आ गया कि जाड़े में इसी कमरे में युद्ध-परिषद् की बैठक हुई थी और उस समय कार्वेशियाई-

लेफ्टिनेंट कर्नल भी उपस्थित थे।

कुदिनोव के माथे पर बल पड़े और उसका चेहरा काला पड़ गया। बोला—"राजकुमार अब जिन्दा नहीं है।"

"यह क्या हुआ, कैसे हुआ?" ग्रिगोरी ने उत्सुकता से पूछा—

"क्यों, मैंने तुम्हें बतलाया नहीं क्या कि कॉमरेड गिग्रोर-गिदजे मार डाला गया?"

"आप उसे 'कॉमरेड' कैसे कहते हैं? वह कॉमरेड सिर्फ तभी तक रहता था, जब तक उसके बदन पर भेड़ की खाल की जैकेट रहती थी। परमात्मा अब ऐसा न करे, लेकिन अगर कहीं हम कैडेटों में शामिल हो जाते और वह आज जिन्दा होता, तो उसी दिन अपनी मूँछें चिकनाता, अपना हाथ आपकी तरफ बिलकुल न बढ़ाता और अँगूठा दिखला देता··· ऐसे!" ग्रिगोरी ने अपना सांवला अँगूठा दिखलाया और हँसा तो उसके दांत चमक उठे।

कुदिनोव की त्योरी अब भी चढ़ी रही। उसकी नजर और आवाज से असन्तोष, खीझ और बंधा हुआ गुस्सा टपकने लगा। चीखकर बोला—"इसमें हँसने की तो ऐसी कोई बात नहीं···किसी दूसरे आदमी की मौत पर इस तरह बिलकुल मत हँसो।"

. ग्रिगोरी को जैसे बिच्छू ने डंक मार दिया, पर वह फिर भी हँसते हुए बोला—"उस गोरे चेहरे और गोरे हाथ वाले कर्नल के लिए मेरे मन में किसी तरह की कोई हमदर्दी नहीं···"

"खैर, तो वह लड़ाई में मार डाला गया···"

"लड़ाई में? आखिर कैसे?"

"कैसे का जवाब मुश्किल है···अजीब कहानी है और सच्चाई की तह तक पहुँचना आसान नहीं है। बात यों हुई कि मेरे हुक्म पर उसे ट्रांसपोर्ट में लगा दिया गया। पर, लगता है कि कज्ज़ाकों से उसकी बनी नहीं। फिर, दुदोरेवका के पास लड़ाई चलने लगी और जिस सवारी पर वह सवार रहा वह गोलाबारी की जगह से कोई दो वर्स्ट दूर रही कि एक गोली सरसराती हुई आई और ऐन चेहरे पर बैठ गई। सारा किस्सा बतलाया कज्ज़ाकों ने।

वह अपनी जगह से हिलडुल भी नहीं सका···कज़्ज़ाकों ने मार डाला होगा उसे···सुअर के बच्चे हैं !"

"और, मारा तो ठीक ही मारा।"

"बंद करो अपनी बकवास ! तुम मुसीबत पैदा करते ही रहोगे क्या ?"

"नाराज़ न होइये···मैं तो महज मज़ाक कर रहा था।"

"अगली बार अपनी यह बेअक्ली से भरे मज़ाक तुम अपने तक ही रखना। तुम तो उस बैल की तरह हो, जो अपना चारा आप गंदा कर लेता है ! ···तो, तुम्हारे हिसाब से सारी फौजी-अफसरों को मार डाला जाना चाहिये ? यह झंडे फिर धूल चाटें···है न···यही चाहते हो तुम ? ग्रिगोरी, तुम्हें अब भी समझ आयेगी या नहीं ?"

"खैर, वह किस्सा तो पूरा कीजिये।"

"आगे पूरा करने को कुछ नहीं है···बस, मुझे लगा कि इन्हीं कज़्ज़ाकों ने मारा है उसे ! इसलिए, मैं निकलकर बाहर आया और मैंने उनसे खुलकर दो-दो बातें कीं। मैंने कहा—"तो, तुम अपनी पुरानी शरारतों पर फिर उतर आये हो ? अपने अफसरों को गोली से उड़ाने की ऐसी जल्दी क्या पड़ी है तुम्हें ? यह तेजी तो तुम पिछले पतझर में ही दिखलानी शुरू कर देते। लेकिन, तुम करते क्या, तुम्हारे लाल फौजियों ने नकेल लगाई तो तुम्हें आखिरकार अफसरों की जरूरत पड़ी और तुम हमारे पास भीख माँगने आये कि हमें रास्ता दिखलाने वाले चाहिए।··· और अब फिर वही कहानी दोहराई जा रही है। मैंने उन्हें जी भरकर झाड़ा। वे तो कत्ल से बराबर मुकरते रहे, पर मैंने उनकी निगाहों से उनके मन का झूठ भाँप लिया। लेकिन, उनका कोई करता क्या ? हममें से कोई उनके चेहरे पर पेशाब कर देता उस वक्त तो वे उसे कसमें खा-खाकर जन्नत से बरसाती ओस बतलाते।" कुदिनोव ने हाथ की पेटी मसली और उसका चेहरा क्रोध से तमतमा उठा—"इन कज़्ज़ाकों ने एक होशियार आदमी की जान ले ली। मुझे तो आज ऐसा लगता है, जैसे कि मेरा दाहिना हाथ कट गया है। अब हमारी स्कीमें कौन तैयार करेगा ? हम यहाँ बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, लेकिन लड़ाई की चालों का सवाल

आता है तो बगले झाकने लगते है। मैं तो शुक्रिया अदा करता हूँ कि प्योत्र बोगातिरयोव आ गया, वरना ऐसा एक आदमी न था यहाँ जिससे मैं ज़रूरत पड़ने पर दो बात तो कर लेता। खैर···मारो···काम की बातों पर आओ।'' बात यह है कि अगर हमारी तरफ के दोनेत्स् के इलाके मे दुश्मन का मोर्चा भेदेगे नही, तो हम साध न पायेगे। इसलिए, जैसा कि कह चुका, मैंने फौज के तीस-के-तीसों हज़ार लोगों को लड़ाई में झोंक देने का फैसला किया है, ताकि किसी तरह उन लोगों का मोर्चा टूटे। ऐसे मे अगर तुम पिट जाओ तो दोन की तरफ पीछे हट जाना। हम उस्त-खोपरस्काया से कज़ान्स्काया तक का दाहिना किनारा साफ करेंगे। दोन के किनारे-किनारे खाइयाँ खोदेंगे और अपनी बचत का सरन्जाम करेंगे···''

वह अपनी बात पूरी भी न कर पाया कि किसी ने दरवाजा खट-खटाया। उसने चिल्लाकर कहा—'अन्दर आ जाओ···कौन है ?''

छटी स्पेशल-ब्रिगेड का कमाडर ग्रिगोरी बोगातिरयोव अन्दर आया। उसके लाल चेहरे पर पसीना झलक रहा था और पीली भौहों मे क्रोध बना हुआ था। सो, अपनी टोपी उतारे बिना ही वह मेज़ के पास आ बैठा।

"कैसे आये ?" कुदिनोव ने होंठो पर आती मुसकान को बटोरते और बोगातिरयोव की ओर घूरते हुए पूछा।

बोगातिरयोव बोला—'हमे कारतूस चाहिये।''

"थोड़े कारतूस तो हम तुम लोगो को दे चुके···और कितने चाहिये? तुम्हारा खयाल है कि यहाँ, मेरे पास कारतूसो का कोई कारखाना है ?''

"और आपने हमें दिये ही कितने कारतूस ? एक आदमी के लिए एक कारतूस···दुश्मन हम पर मशीनगनों से गोलियाँ बरसा रहे हैं···ऐसे मे हम सिर्फ यही कर सकते हैं कि दोहरे हो जायें और कही छिप जायें। इसे लड़ाई कहेंगे आप ?''

"ज़रा ठहरो, बोगातियोरव ! हम ज़रूरी बातें कर रहे थे।'' कुदिनोव ने कहा, और बोगातिरयोव जाने को उठा तो फिर बोला—"लेकिन, जाओ नहीं, तुमसे ऐसा क्या राज है ?'' फिर वह ग्रिगोरी की ओर मुड़ा—"खैर

तो, मेलेखोव, अगर हम इस तरफ भी साध न पाएँगे तो निकल जाने की कोशिश करेंगे। जो फौज में नहीं हैं, हम उन सबको छोड़ देंगे, सारा साज-सामान छोड़ देंगे, पैदल-फौजियों को गाडियों में भरेंगे। तीन बैटरियाँ अपने साथ लेंगे और दोनेत्स को मार्च कर देंगे। और इस सिलसिले में हम तुम्हें रखना चाहते हैं। तुम्हें कोई एतराज तो नहीं ?"

"मेरे लिये इसमें कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन हमारे घरवालों का क्या होगा ? हमारी लड़कियाँ, बीवियाँ और हमारे बूढ़े-बुजुर्ग जहाँ-के-तहाँ रह जायेंगे।"

"हो क्या सकता है ? हम सब उनके साथ भुगतें, इससे बेहतर तो यही है कि वे अकेले भुगतें।"

कुदिनोव कुछ क्षणों तक चुप रहा और फिर उसने अपनी मेज से एक अखबार उठाया—

"इसमें एक खबर और भी है तुम्हारे लिये, फौजों की कमान सम्हालने और अगुआई करने के लिए कमांडर-इन-चीफ खुद आ गये हैं। कहते हैं कि वे इस वक्त मिलेरोवो या कान्तेमिरोवका में हैं। उनके यहाँ तक पहुँच आने का इन्तजार करना चाहिये।"

"ठीक कह रहे हैं आप ?" ग्रिगोरी ने पूछा।

"हा, हां···यह लो···खुद पढ़ लो। इस खबर के लिये यह अखबार मुझे कजान्स्काया से भेजा गया है। हमारी एक गश्ती-टुकड़ी ने लाल फौज के दो पैगाम लानेवालों को पकड़ लिया और उन्हें काटकर फेंक दिया। टुकड़ी के लोगों ने बतलाया कि उनमें दो से एक आदमी कमीसार जैसा लगता था और उसकी जेब में इस महीने की बारह तारीख का यह अखबार था। इसका नाम है 'रास्ते पर' और इसमें हम लोगों का बड़ा ही शानदार ढंग से बयान किया गया है !" कुदिनोव ने फटा-चिरा पन्ना ग्रिगोरी को थमा दिया। ग्रिगोरी ने पक्की पैंसिल में रेखाङ्कित शीर्ष-पंक्ति पर एक निगाह डाली और पढ़ना शुरू किया—

सेना के पीछे की कतारों में बगावत

दोन के कज्जाकों के एक हिस्से की बगावत को अब कई हफ्ते हो रहे

हैं। इन विद्रोहियों ने देनिकिन के एजेंटों, यानी क्राति-विरोधी फौजी-अफसरों से प्रेरणा ली है। इस विद्रोह को कज्जाक-कुलकों का समर्थन प्राप्त है, और इन कुलकों ने बीच के कितने ही कज्जाकों को अपने साथ घसीट लिया है। वैसे यह बिलकुल सम्भव है कि कुछ कज्जाकों के साथ सोवियत सरकार के प्रतिनिधियों ने अन्याय किया हो। मगर, अजब तो यह है कि देनिकिन के एजेंटों ने ऐसी मिसालों का बहुत ही होशियारी से इस्तेमाल कर इनसे विद्रोह की आग भडकाई है। विद्रोहियो के क्षेत्र के पिछलग्गू श्वेत-गार्द बीच के कज्जाको की नज़र मे उठने के लिये सोवियत-सरकार के साथ होने का बहाना करते हैं। इस तरह क्राति-विरोधियो के षडयत्रों, कुलक-हितो और कज्जाको की जहालत ने मिल-जुलकर दक्षिणी-मोर्चे के पिछले हिस्से की हमारी फौजों के बीच बगावत के बीज बोये है। यह बगावत जितनी अक्ल से खाली है, उतनी ही खूखार है। और किसी सेना के पिछले हिस्से मे विद्रोह हो जाना वैसा ही है, जैसा किसी मजदूर के कधे पर जख्म हो जाना। दूसरी ओर, कायदे से लडने, सोवियत-देश की रक्षा करने और देनिकिन के ज़मीदार-गिरोहों को कुचलने के लिये जरूरी है कि हमारे मोर्चे के पिछले हिस्से के लोग विश्वसनीय, शातिप्रिय, मित्रता की भावना से भरे मजदूर और किसान हों। इसलिए सबसे महत्त्व का काम है विद्रोह और विद्रोहियों को मांजना···

केन्द्रीय सोवियत-सरकार ने आदेश दे दिए है कि यह काम कम-से-कम समय मे पूरा हो जाना चाहिये। शानदार कुमक आ गई है, और, और आ रही है। यह सेनायें भीषण क्राति-विरोधी-विरोध से टकर लोहा लेंगी। इस फौरी काम के लिये अच्छे-से-अच्छे पार्टी-कार्यकर्त्ता भेजे जा रहे हैं।

बगावत तो खत्म होनी ही चाहिए। हमारी लाल सेना के लोगों को यह बात साफ-साफ समझनी चाहिये कि व्येशेन्स्काया, येलान्स्काया और बुकानोव्स्काया ज़िलों के फौजी-अफसरों ने श्वेत-गार्दों के जनरल देनिकिन और कोलचक के साथ अपराध मे बराबर से हिस्सा लिया है। अब यह है कि यह विद्रोह जितने दिनों तक चलने दिया जायेगा, दोनों पक्षों का उतना ही नुकसान होगा। यह खूनखराबा सिर्फ जबरदस्त हमले की मदद

से ही रोका जा सकता है। पर, हमला ज़्यादा-से-ज़्यादा तेज़ी से इस तरह किया जाना चाहिये कि दुश्मन तार-तार हो जाये।

विद्रोह समाप्त होना ही चाहिये। हमें कधे के इस फोड़े को चीरना चाहिये और इसे धधकते लोहे से दागना चाहिये। इसके बाद ही दक्षिणी-मोर्चे के हमारे साथियों के हाथ खाली होंगे और वे दुश्मन पर भरपूर चोट कर सकेंगे···"

ग्रिगोरी ने लेख पढ़ा और गम्भीर मन से हँसा। उसका मन कटुता और आशंका से भर उठा। सोचने लगा—"मुझे इस मानी में देनिकिन का साथी बता दिया गया···इतनी आसानी से···कलम के महज़ एक झटके से!"

"खैर···लेकिन, है शानदार···है न? वे हमें गरम लोहे से दागना चाहते हैं। अब देखा जायेगा कि कौन, किसको दागता है!···क्यों, देखा जायेगा न मेलेखोव?" कुदिनोव उत्तर का इन्तज़ार करते-करते बोगातिरयोव की ओर मुड़ गया—"तुम्हें कारतूस चाहिये···यही कहा न तुमने? मिल जायेंगे तुम्हें कारतूस···पूरी ब्रिगेड के लिये, तीस पी घुड़सवार के हिसाब से···काफी होंगे? गोदाम चले जाओ और ले लो···क्वार्टर-मास्टर तुम्हें पर्चा बनाकर दे देगा···लेकिन, बोगातिरयोव अपनी तलवारों का इस्तेमाल ज़रा ज़्यादा करो···और होशियारी और अक्ल का इस्तेमाल भी ऐसी कोई बुरी चीज़ नहीं है।"

"आप तो पत्थर से खून की मांग करने जैसी बात कर रहे हैं!" बोगातिरयोव ने प्रसन्नता से दांत निकाले और अलविदा कहकर कमरे से बाहर चला गया।

पूरी आशा थी कि ग्रिगोरी की सेना पीछे हटेगी—दोन की तरफ। तो उसके पूरे इन्तज़ाम की बातें कर वह भी उठ खड़ा हुआ। लेकिन, बाहर जाने के पहले उसने कुदिनोव से पूछा—"अगर मैं पूरी डिविज़न को बाज़की ले आऊँ तो क्या नदी पार कर व्येशेन्स्काया जाने के लिए कोई चीज़ मिल जायेगी?"

"क्या बात कही है! घुड़सवार अपने घोड़ों को तैराकर नदी पार कर सकते हैं। किसी ने कभी सुना है कि घुड़सवार घोड़े समेत किसी चीज़ के

सहारे नदी पार करें ?"

"लेकिन मेरी डिविज़न में दोन की तरफ के बहुत लोग नही है···और चिर के कज़्ज़ाक अच्छा तैरना नही जानते···अपनी सारी ज़िन्दगी तो उन्होंने स्तेपी के मैदान मे बिताई है, तैरना कहाँ से जानेंगे ?"

"वे घोड़ों पर सवार होकर नदी पार करेंगे···जर्मनी की लड़ाई में और यों भी पहले वे ऐसा कर चुके है।"

"मैं तो पैदल-सेना की बात कर रहा हूँ !"

"उसके लिये नावें तैयार रहेंगी···इन्तज़ाम हो जायेगा···फ़िक्र न करो।"

"बाकी लोग भी तो आयेंगे !"

"यह बात मैं जानता हूँ !"

"आप हरएक के पार जाने के लिये पूरा इन्तज़ाम रखें, नही तो आने पर मैं आपका कलेजा चीर कर रख दूंगा···लोगों का नदी के उस पार जाना कोई मज़ाक की बात न होगी।"

"ख़ैर·· ख़ैर···हो जायेगा···सब कुछ हो जायेगा।"

"और तोपों का क्या होगा ?"

"मॉरटर-तोपों को तो उड़ा देना, मगर फ़ील्ड-तोपों को अपने साथ ले आना। हम इतने बड़े बजरे तैयार रखेंगे कि बैटरियाँ उधर-से-इधर आ सकें।"

ग्रिगोरी हेडक्वार्टर्स से लौट पड़ा, लेकिन अभी-अभी पढ़े असवार के लेख की बातें उसके दिमाग मे चक्कर काटती रहीं।—"वे हमें इस मामले मे देनिकिन का साथी बतलाते हैं···लेकिन, यह नही हैं तो और हम हैं क्या ? यही तो हैं हम·· सच्चाई से निगाह बचाना ठीक नही···" उसे घोड़े की नाल यावोव की कभी की एक बात का खयाल आया। हुआ कुछ यों कि कारगिन्स्काया मे एक दिन शाम को ग्रिगोरी घर लौटने लगा तो तोप-चियों के चौक मे स्थित क्वार्टर्स में चला गया। वहाँ फाटक पर अपने जूते साफ करते समय उसने यावोव को किसी से बहस करते सुना—"हम अपने पैरों पर खड़े हो गये हैं, यही कहा न तुमने ? किसी ताकत की मातहत रह कर काम न करेंगे···यही न ? क्या कहने हैं ! तुम्हारे कधों के ऊपर सिर

की जगह सड़ा हुआ तरबूज है। अगर जानना चाहते हो तो सुनो···इस वक्त हमारी हालत बेघर कुत्ते की हालत से जरा भी बेहतर नहीं है। अगर कुत्ता कोई गलत काम कर बैठे और भाग जाये तो वह भागकर जायेगा भी कहां ? भेड़ियों के साथ भागकर जाने में उसका दिल कांपता है, और घर लौटने में उसे मालिक की मार का डर लगता है। आज बिलकुल यही हालत हमारी है। मेरी बात लिख लो कहीं—जल्दी ही वह दिन आयेगा जब दुम अपनी टांगों के बीच दबाये हम वापिस कैडेटों के पास आयेंगे और उनसे गिड़गिड़ाकर माफी मांगेंगे। लिख लो मेरी बात···हम ऐसा ही करेंगे···"

···लड़ाई में नाविकों को मारने के बाद से ग्रिगोरी के मन में अजीब उदासीनता घर कर गई थी। वह मायूसी से सिर लटकाए इधर-उधर आता-जाता था। उसके होंठों पर मुसकान तो कभी आती ही न थी। कुछ समय तक इवान अलेक्सेयेविच ने उसे हिलाये रखा था और उसका दिल दर्द से कचोटता रहा था। मगर फिर यह दर्द भी खत्म हो गया था। सिर्फ एक चीज उसकी जिन्दगी में बाकी रह गई थी और वह था अक्सीन्या के लिए उसका नशा। बाकी रहा हो और चाहे न रहा हो, पर लगता उसे ऐसा ही था। यह नशा ताजा होकर, नई ताकत लेकर उसके मन में लौट आया था। मात्र वही उसे अपनी ओर खींचती थी, और बिलकुल वैसे ही खींचती थी जैसे पतझर की रात के बर्फ-बरते अंधेरे के बीच से स्तेपी के मैदान के किसी पड़ाव के अलाव की टिमटिमाती आग किसी मुसाफिर को अपनी तरफ खीचती है।

सो, इस समय हेडक्वार्टर्स से लौटते समय उसे अक्सीन्या का ख्याल हो आया—"हम यहां से निकल जाने की बातें सोच रहे हैं, मगर उस हालत में उसका क्या होगा ?" और बिना किसी तरह की हिचक के उसने मन ही मन फैसला कर लिया—"नताल्या मां और बच्चों के साथ गांव में ही बनी रहेगी, मगर अक्सीन्या को मैं अपने साथ ले जाऊंगा। उसके लिए कहीं से एक घोड़े का इन्तजाम कर लूंगा, और वह उस पर सवार होकर मेरे स्टाफ के साथ चली जाएगी।"

फिर, वह दोन पार कर बाजकी आया और अपने क्वार्टरों में पहुंचते

ही उसने अपनी नोटबुक से एक पन्ना चीर कर पत्र लिखा—"अकसीन्या, हो सकता है कि हमें पीछे हटकर दोन की बाईं तरफ जाना पड़े। अगर ऐसा हो तो तुम सब कुछ छोड़ देना, घोड़े पर सवार होकर व्येशेन्स्काया जाना, और वहां मेरा इन्तजार करना। फिर, मैं तुम्हें अपने साथ ले चलूंगा।"

उसने पत्र मोड़ा, उस पर चेरी के गोंद की मुहर लगाई, उसे प्रोखोर जिकोव को दिया और अपने मन की बेचैनी को छिपाने की कोशिश में लाल पड़ते हुए बोला—"तुम घोड़े पर तातारस्की चले जाओ और यह चिट्ठी अकसीन्या अस्ताखोवा को दे आओ। देखना कि उसे तुम यह दो तो मेरे घर का कोई आदमी तुम्हें न देखे। अच्छा हो कि रात में ले जाओ। जवाब के लिए रुकने की जरूरत नहीं है। इसके लिए तुम्हें दो दिन की छुट्टी मिल जाएगी।···अच्छा···जाओ!"

अब प्रोखोर अपना घोड़ा लाने के लिए मुड़ा, पर ग्रिगोरी ने आवाज देकर उसे फिर बुला लिया। बोला—"साथ ही मेरे घर भी चले जाना और मेरी मां या नताल्या से कह देना कि अच्छा हो कि कपड़े-लत्ते या दूसरी कीमती चीजें वे लोग दोन के इस पार भेज दें। अनाज चाहें तो जमीन के नीचे गाड़ दें, मगर ढोरों को इस पार भेज देना ही बेहतर होगा।"

५६ .

२२ मई को विद्रोही-फौजें पूरे मोर्चे से हटने लगीं। वे लड़ते और एक-एक बित्ता जमीन के लिए जूझते हुए पीछे हटीं। उनके देखते-देखते गांवों के लोग सिरों पर पैर रखकर दोन की तरफ भागने लगे। बूढ़ों और औरतों ने अपने सभी सूखे हुए ढोर जोते और गाड़ियों पर बक्से-सन्दूक बरतन-भांडे, यन्त्र-औज़ार, नाज-फसल और अपने सभी बच्चियां बच्चे लाद लिए। मालिक बाकी ढोरों को छोड़कर अपनी-अपनी गायों और भेड़ों को सड़क के किनारे-किनारे हांक-चले। शरणार्थियों से भरी लम्बी-चौड़ी गाड़ियों पर गाड़ियां फौज के सामने के दोन-तटवर्ती गांवों की ओर रवाना होने लगीं। हेडक्वार्टर्स ने पैदल-सेना को एक दिन पहले

ही पीछे हटने का आदेश दिया। २१ मई को तातारस्की के पैदल कज्ज़ाकों और व्येशेन्स्काया की ग़ैर कज्ज़ाक मिलिशिया ने उस्त-ख्रोपरस्काया जिले की अपनी-अपनी जगहें छोड़ दीं और उन्हें जबरदस्ती तीस वर्स्ट से ज्यादा दूर तक मार्च कर व्येशेन्स्काया जिले के पड़ोस के रिबनी गाव तक आना पड़ा।

२२ मई के सवेरे आसमान पर धूप की एक पतली-सी जाली तनी रही। कहीं एक बादल नज़र न आया। केवल दक्षिण में सूर्योदय के ठीक पहले एक छोटा-सा, कौंधता-सा, गुलाबी बादल दीखा। उसकी पूर्व की ओर वाली भुजा खून से तर-बतर लगी। फिर, नदी के बाए किनारे के बलुहे टीलों के पीछे से सूरज उगा तो बादल पर सगाकर कहीं उड़ गया। सहसा ही नदी के छिछले पसारों के ऊपर तेज़ पखों वाली समुद्री चिड़िया नजर आई और फिर चमकती रुपहली मछलियां अपनी निर्मम चोंचों में दबाकर ऊपर उड़ गई।

दोपहर तक ऐसी गरमी हो गई, जैसी मई के महीने में प्रायः होती नहीं। हवा में इस तरह भाप उठती रही जैसी बरखा के ठीक पहले उठती है। सुबह-तड़के से ही शरणार्थियों से भरी गाड़ियां दोन के दाहिने किनारे से व्येशेन्स्काया की ओर बढ़ती रहीं। फलतः गाड़ियों के पहियों की चरमराहट, घोड़ों की हिनहिनाहट, बैलों की डकारें और लोगों की आवाज़ें नदी के इस पार से तैरकर उस पार जाती रहीं।

२२वीं मई तक व्येशेन्स्काया की ग़ैर-कज्ज़ाक टुकड़ी रिबनी में ही बनी रही। सवेरे कोई दस बजे उसे हेनमान की बड़ी सड़क ग्रोमोक गांव जाने, वहां फौजी-टुकड़ी जमाने और व्येशेन्स्काया पहुंचने की कोशिश करने वाले सैनिक आयु के सभी कज्ज़ाकों को गिरफ्तार कर लेने का हुक्म दिया गया।

व्येशेन्स्काया जाने वाले शरणार्थियों से भरी गाड़ियों की लहर ग्रोमोक तक लहर उठी। धूल से नहाई, धूप से सवराई औरतें ढोर हांकती रहीं। घुड़सवार सड़कों के किनारे-किनारे चले। पहियों की चरर-मरर, घोड़ों की हींसें, गायों की डकारों, बच्चों की चीख-पुकारों और टाइफस के रोगियों की आहों-कराहों से गांवों और चेरी की बगियों के अटूट सन्नाटे

का तार टूटने लगा। यह सारी घुली मिली आवाजें ऐसी रहीं कि कुत्तों के गले भूकते-भूकते बैठ गए उन्होंने हर राहगुज़र की ओर लपकना बंद कर दिया और वे आम दिनों की तरह गाड़ियों के पीछे-पीछे काफी दूर तक दौड़ नहीं सके।

प्रोखोर ज़िकोव ने दो दिन घर पर बिताए, ग्रिगोरी का पत्र अक्सीन्या को दिया, इलीनोचिना तक बेटे का ज़बानी पैगाम पहुंचाया और २२ मई को व्योशेन्स्काया के लिए रवाना हो गया। उसने बाज़की में अपनी कम्पनी के मिलने की उम्मीद लगाई। लेकिन, चिर-नदी के पार कहीं दूर से तोपों की धुआंधार गरज सुनाई दी, तो लड़ाई की आग में झुलसती जगह की ओर जाने का प्रोखोर का बहुत जी न चाहा। उसने बाज़की जाकर ग्रिगोरी और पहली डिविज़न की राह देखने का इरादा किया।

वह हेतमार्ग की बड़ी सड़क पर अपना घोड़ा बड़े इत्मीनान से धीरे-धीरे चलाता रहा। यहां तक कि शरणार्थियों की गाड़ियाँ उसके बराबर आ गईं। उसने बढ़ कर उस्त खोपरस्काया के अभी-अभी संगठित एक रेजीमेंट के स्टाफ को पकड़ लिया और उसमें शामिल हो गया, स्टाफ के लोग हलकी कमानीदार द्रोश्की बग्घियों और दो छोटी गाड़ियों में सफर कर रहे थे। छः ज़ीन-कसे घोड़े पीछे-पीछे दौड़ रहे थे। एक गाड़ी में दस्तावेज़ और टेलीफोन का साज-सामान था और दूसरी में एक सयानी उम्र का कज़्ज़ाक जख्मी…नाक बैठी हुई…चेहरा बिलकुल बिगड़ा हुआ…सिर पर फौजी-अफसरों वाली कराकुल की भूरी टोपी। साफ है कि वह टाइफस की बीमारी से अभी-अभी उठा था, ठोढ़ी तक बरानकोट ढके लेटा था और इस पर भी किसी से किसी गरम चीज़ से अपने पैर ढकने को कह रहा था। तो हड्डी भर रह गए अपने हाथ से उसने माथे का पसीना पोंछा और गुस्से से लाल होकर गालियां देता हुआ बोला—"ओ सुअर के बच्चे, मेरे पैरों के नीचे हवा भर रही है! पोलीकार्प जरा कम्बल ओढ़ा दे! जब मैं तन्दुरुस्त और किसी लायक था, तब मेरी ज़रूरत थी, लेकिन आज…।" उसने चारों तरफ नज़र दौड़ाई तो उसकी आंखों से साफ लगा कि इस आदमी ने खतरनाक और लम्बी बीमारी भेली है।

तो, पोलीकार्प नाम का कज्जाक अपने घोड़े से उतरा और बीमार वाली गाड़ी की ओर लपका। वहां पहुंच कर बोला—'अरे, तुम्हारा बदन तो इतना जल रहा है कि तुम्हें सर्दी लग जाएगी, मैमोइलो इवानोविच।"

"कह तो रहा हूं कि मेरा बदन ढक दो।"

पोलीकार्प ने आदेश का पालन किया और पीछे चला गया।

"यह कौन है?" प्रोखोर ने बीमार की तरफ आंखों से इशारा करते हुए पूछा।

"उस्त मेदवेदित्स्काया का एक फौजी-अफसर है। हमारे स्टाफ के साथ जुड़ा रहा है।" कज्जाक ने जवाब दिया।

स्टाफ के साथ उस्त खोपरस्काया के शरणार्थियों का एक बड़ा दल पीछे हट रहा था। प्रोखोर ने तरह-तरह की, घरेलू बेशकीमती चीजों से भरी गाड़ी के ऊपर बैठे एक कज्जाक को आवाज दी—'हे···आखिर किस मौत के मुंह में जा रहे हो तुम लोग?"

"हम लोग व्येशेन्स्काया जा रहे हैं।" जवाब मिला।

"तुम्हें बुलाया गया है?"

"हमें किसी ने नहीं बुलाया···लेकिन आखिर मरना कौन चाहता है? जब किसी की आंखों में डर झांकने लगता है तो घोड़ा बहुत तेज हांका जाता है।"

"मैंने तो यह पूछा कि तुम लोग जा कहां रहे हो?" प्रोखोर ने ज़ोर देकर कहा—"तुम लोग येलान्स्काया में भी दोन पार कर सकते थे। उस हालत में इतना वक्त भी नहीं लगता।'

"वहां हम क्यों पार करते? लोग कहते है कि वहां भीड़ की भीड़ लोग जमा है और नावें मिलती नहीं।"

और अब व्येशेन्स्काया में नदी कैसे पार करोगे? यानी, लोग फौजों को छोड़ देंगे और तुम्हें और तुम्हारी गाड़ियों को इस पार से उस पार पहुंचा देंगे? भेड़ों के रेवड़ की तरह भटकते फिर रहे हो···जाने कहां-कहां और जाने क्यों, और यह सारा कुछ क्या लाद रखा है?" प्रोखोर

ने खीझ भरे ढग से चाबुक से गाड़ी पर लदे बंडलों की तरफ इशारा किया।

"इनमें हमारे कपड़े-लत्ते हैं, घोड़ों के पट्टे हैं, आटा है और फार्म पर काम आने वाली तमाम चीजें है इन्हें हम वहाँ कहाँ छोड़ आते? फिर खाली हाथ आते तो हमारी अगली झोपड़िया छूछी नजर आती। साहब जादे, पसीने और आसुओं की कमाई से जुटाई गई चीजें इस तरह छोडी नहीं जाती। अरे हमारा बस चलता तो हम तो अपनी झोपडियाँ भी अपने साथ ले आते, ताकि वह लाल फौजियों के हाथ न लगतीं··· हैजा निगल जाए इन्हे!"

"लेकिन यह इतना बडा कूडा तुम अपने साथ क्यों और कहाँ ढोये लिए जा रहे हो? और वे कुसियाँ···? लाल फौजियों को इनकी कोई जरूरत नहीं पड़ेगी!"

"हम इन्हे भी छोड नही सकते थे। वे इन्हे तोड डालते या जला डालते। नही, हमारा माल-मता भुनाकर वे अपने खजाने भर नहीं सकेंगे। मैंने तो अपनी झोपड़ी का तिनका-तिनका साफ कर दिया।" बूढ़े ने थकान से चूर, धीरे-धीरे बढते घोडे के सिर पर चाबुक नचाया, मुड़ते हुए पीछे की बैलगाडी की ओर सकेत किया और बोला—"वहाँ कपडों में बधी-लिपटी वह लड़की बैल हाँक रही है, नजर आती है तुम्हे? वह मेरी बेटी है। उस गाडी मे उसकी सुअरिया और उसके ढेर सारे बच्चे हैं। बच्चे रात में गाड़ी मे ही हुए हैं। उनकी चीखें आ रही हैं तुम्हारे कानों मे? नही, लाल फौजी हमारे बल-बूते पर मोटा नही हो सकते··· प्लेग खा जाए उन्हे!"

"बजरे पर मुझसे जरा दूर ही दूर रहना, बूढे-दादा!" प्रोखोर ने कहा—"नही तो तुम्हारे यह सुअर और तुम्हारा यह सारा साज-सामान नीचे नदी में नजर आएगा।"

"लेकिन, आखिर क्यों?" बूढे ने आश्चर्य से पूछा।

"इसलिए कि लोग मर रहे हैं और अपनी हर चीज से महरूम हो रहे हैं और तुम हो कि मकड़ी के जाले की तरह हर चीज अपने साथ घसीटे फिर रहे हो!" प्रायः शात रहने वाला प्रोखोर चीखा—"तुम्हारी

तरह के मक्खीचूस मुझे पसंद नहीं।"

"जाओ···जाओ, अपना काम करो !"बूढ़ा मुड़ते हुए भुनभुनाया—"क्या-क्या नेता मिले हैं हमें कि किसी दूसरे का सामान लेंगे और नदी में फेंक देंगे !···मैं तो इस आदमी से शरीफ-आदमी की तरह बातें करता हूँ, और वह···वैसे ऐसा भी क्या है···मेरा अपना भी तो एक बेटा ऐसा है जो अपने स्क्वैड्रन के साथ लाल फौजियों की बाढ़ को रोकने की कोशिश कर रहा है···जाओ···इधर से···मेहरबानी करो, जाओ। दूसरे के माल पर नज़र मत गड़ाओ। अगर दूसरों से इस तरह डाह न करते तो तुम अपना ज्यादा भला करते।"

प्रोखोर ने अपने घोड़े को थपथपाया, और वह हलकी चाल से उड़ चला। उसके ठीक पीछे सुअर के एक बच्चे ने इस तरह चीखना शुरू किया कि उसके कान के पर्दे फटने लगे। गाड़ी में लेटे फौजी अफसर की त्यौरी चढ़ गई। वह रोया भर नहीं, और उसकी सारी दुर्गति हो गई—"यह सुअर यहां कहां से आ गया ? पोलीकार्प···।"

"एक सुअर गाड़ी से नीचे गिर गया है और उसके पैर के ऊपर से गाड़ी का पहिया उतर गया है" पोलीकार्प ने पूरी बात बतलाई।

"इसके मालिक से कहो कि इसका गला काटकर फेंक दे···उसे बतला दो कि बीमार लोग भी यहां हैं···ऐसे ही कौन बड़ा चैन है कि यह सुअर भी हमारे कानों के पर्दे फाड़े। जाओ···जल्दी करो !"

प्रोखोर इस बीच गाड़ी के बराबर आ गया। उसने देखा कि फौजी अफसर की भौंहें तनी हुई हैं, वह सुअर की चीखें सुन रहा है और अपनी भूरी टोपी से अपने कान ढकने की बेमतलब कोशिश कर रहा है !···

पोलीकार्प फिर अपना घोड़ा वापिस लाया।—"सैमोइलोइवानोविच, वह आदमी उस सुअर को मारना नहीं चाहता। कहता है कि वह ठीक हो जाएगा, नहीं ठीक होगा तो देखकर शाम तक मार देगा उसे।

अफसर का चेहरा पीला पड़ गया। उसने जैसे-तैसे ही अपने को उठाने की कोशिश की, उठकर बैठ गया और गाड़ी की बाजू से अपने पैर नीचे झुलाने लगा—'मेरी पिस्तौल कहां है ? रोको घोड़ा। कहां है उस सुअर का मालिक ? अभी मजा चखाता हूँ उसे। किस गाड़ी पर

है वह ?" वह चिल्लाया तो बढे, मक्खीचूस—कज्जाक को अपने सुअर की गरदन हलाल कर देनी पडी।

प्रोखोर ने हंसते हुए अपना घोड़ा दौड़ा दिया। वह और आगे बढ़ा तो उसे उस्त ग्योपरस्काया की गाडियों की एक दूसरी कतार मिली। इन कज्जाकों की गिनती दो सौ से कम न थी, और उनके साथ के घुड़सवार ढोर और भेड़ें कोई एक वर्स्ट तक फैली हुई थी।

प्रोखोर ने सोचा—"घाट पर मजा आएगा···आतिशबाजी की फुलझड़ियां छूटेंगी!"

कतार के आगे से एक औरत खूबसूरत सी गहरे रंग की कुम्मैत घोड़ी दौड़ाती उसकी तरफ आई। पास आने पर उसने लगाम खींची।

घोड़ी की काठी पर बहुत ही शानदार काम था। तंग की पेटी और सीट का शानदार चमड़ा चमचमा रहा था। कहीं नाम को भी खरोंच न थी। लगाम और जीन वगैरा के जो हिस्से प्राय. धातु के होते हैं, वे चांदी के थे। औरत काठी पर बहुत आराम और होशियारी से जमी हुई थी। उसके मजबूत, सांवले हाथों ने रासें बहुत कायदे से साध रखी थीं। पर देखने से साफ झलकता था कि तन्दुरस्त, फौजी घोड़ी अपने सवार को काफी नीची निगाह से देखती है। घोड़ी अपनी आंखें नचाती, गरदन टेढ़ी करती और अपने पीले दांतों की कतार दिखलाते हुए स्कर्ट के अन्दर मुंह डालकर औरत का कसा हुआ घुटना काटने की कोशिश करती।

औरत ने आंखों तक सफेद, नीला रूमाल लपेट रखा था। सो मुंह से उसे हटाते हुए उसने प्रोखोर से पूछा—"आपको जख्मी लोगों की कोई गाड़ी तो रास्ते में नहीं मिली ?"

"गाडियों की क्या, जाने कितनी गाडियां रास्ते में मिलीं! आपका मतलब क्या है ?"

"मुझे अपने आदमी का पता नहीं चलता। औरत ने धीमी आवाज में जवाब दिया—उसका पैर जख्मी हो गया और वह जंगी अस्पताल के साथ उस्त खोपरस्काया से लाया जा रहा है। लगता है कि उसका जख्म पक गया है। उसने मुझसे अपना घोड़ा लाने को कहा था। यह रहा वह घोड़ा।" औरत ने अपने चाबुक से घोड़ी की पसीने से तर गर्दन थपथपाई।

"मैंने यह घोड़ा कसा और मैं इस पर सवार होकर उस्त गोपरस्काया तक गई, पर अस्पताल रास्ते में कहीं नजर नहीं आया। फिर मैं घोड़ा दौड़ाती रही, दौड़ाती रही ! पर वह मुझे अभी तक नहीं मिला।"

कज़्ज़ाक औरत के खूबसूरत, भरे हुए चेहरे पर मन-ही-मन रीझ उठा। उसकी मीठी आवाज़ बड़ा रस लेकर सुनता रहा और फिर भाव-विभोर होकर बोला—"तुम अपने आदमी के लिए दर-दर क्यों भटकती फिर रही हो ? जाने दो उसे मोर्चे के फौजी अस्पताल के साथ। तुम्हारी जैसी हसीन औरत के साथ तो कोई भी शादी कर सकता है। ऐसा घोड़ा दहेज में उसे ऊपर से मिलेगा। और कहो तो यह सारा खतरा मैं ही उठा लूं!"

औरत लाज से मुसकराई और स्कर्ट का सिरा अपने घुटने के ऊपर खींचने को झुकी—"मज़ाक छोड़िये···यह बतलाये कि कोई जंगी-अस्पताल आपको कहीं मिला या नहीं ?"

"उस गिरोह में बीमार और ज़ख्मी हैं।" प्रोखोर ने आह लेकर जवाब दिया और कुछ दूर की गाड़ियों की कतार की तरफ इशारा किया।

औरत ने चाबुक हवा में नचाया, तेज़ी से अपना घोड़ा मोड़ा और हवा की तरह तेज़ी से उड़ चली।

गाड़ियां धीरे-धीरे आगे बढ़ती रहीं। उनके बैल अपनी दुमें हिला-हिलाकर भनभनाते हुए डांस उड़ाते रहे। गरमी ऐसी रही और हवा में उमस ऐसी रही कि सड़क के किनारे के सूरजमुखी के बौने पौधों की नई पत्तियों के चेहरे मुरझाने लगे।

प्रोखोर गाड़ियों के सिलसिले के किनारे-किनारे फिर चलने लगा और गाड़ियों के साथ इतनी बड़ी गिनती में जवानों को देखकर वह अचरज में पड़ गया। यह वह लोग थे जो अपने स्क्वैड्रनों से अलग हो गए थे, या उन्हें छोड़कर भाग आये थे, अपने घर परिवार वालों से आ मिले थे और अब उनके साथ नदी के उस पार जा रहे थे। उनमें से कुछ ने अपने फौजी घोड़े गाड़ियों के पीछे बांध दिये थे और लेटे-लेटे या तो अपनी पत्नियों से बातें कर रहे थे या अपने बच्चों को दुलार रहे थे। बाकी लोग तलवारों और राइफलों से लैस अपने-अपने घोड़ों पर सवार चले

जा रहे थे। ऐसे में ग्रोगोर को लगा कि यह लोग ग्रपनी-ग्रपनी यूनिटें छोड ग्राए हैं ग्रौर ग्रब मौत के मुह में घसे जा रहे हैं।

···हवा मे जानवरो के पसीने, धूप मे तपती लकडी, घरेलू बरतनो ग्रौर गाडियो के ग्रीज की बू थी। बैल उदास-मन से, धीरे-धीरे चले जा रहे थे। उनकी बाहर निकली हुई जीभो से निकलते हुए भाग का तार मुहो से जमीन तक बधा हुग्रा था। बैलगाडियों की रफ्तार से घोड़ा-गाडिया भी चली जा रही ग्रौर एक-दूसरे से ग्रागे निकलने की कोशिश बिलकुल न कर रही थी। पूरी टोली की रफ्तार दो या तीन वर्स्ट फी घटे से ज्यादा न थी। लेकिन इसी समय सहसा ही दूर दक्षिण मे कही तोप का धडाका हुग्रा ग्रौर फौरन ही घुडसवारों के उस कारवा में खल-बली मच गई। एक या दो घोडागाडियों ने कतार तोड दी, लोगों ने घोड़ों को दुलकी दौडा दिया गया, चाबुक हवा मे सीटिया बजाने लगे ग्रौर हवा मे चीख पुकार घुल उठी। सरपत की भाडिया बैलों के पीछे सरसराने लगी ग्रौर पहिये ग्रौर ज़ोर से ग्रावाज करने लगे। घबडाहट में हरएक के कदम तेज़ हो गए। सडक पर गर्द के भारी बादल उठे, हवा की लहरों पर लहराते पीछे की ग्रोर उड़े, ग्रौर घास की पत्तियो ग्रौर नाज के पौधों के डठलो पर उतर गए।

इस बीच प्रोखोर का ग्रपना छोटा घोडा ग्रपने नथुने नीचे की ग्रोर घसाता, तिनपतिया ग्रौर सरसों को चीरता, गरदन को बार-बार झटके देता घास की ग्रोर बढने की कोशिश करता रहा। लेकिन तोप का धड़ाका होते ही प्रोखोर ने जो एड लगाई तो उसने फौरन समझ लिया कि यह घास खाने का समय नही है। बस, तो इसके बाद वह दुलकी मार चला।

फिर तोपो के धडाको पर धडाके होने लगे। इसके बाद राइफलों की धाय-धाय उनमे घुल गई ग्रौर उमस मे भरी हवा उसकी गूंज से थरथराने लगी।

"हे प्रभु ईसा !" किसी गाडी पर सवार एक जवान ग्रौरत ने क्रॉस बनाया ग्रौर दूध से भरी, सूजी हुई, पीली छाती ग्रपने बच्चे के होंठों से बरबस छुडाई।

"यह गोलाबारी क्या हमारे ग्रपने फौजी कर रहे है !, सिपाही ?"

अपने बैलों की बगल-बगल चलते एक बूढ़े ने ओमोर से चिल्लाकर पूछा।

"यह गोलाबारी तो लाल फौजी कर रहे हैं, बाबा! हमारी तोपों के पास तो गोले ही नहीं हैं।"

"स्वर्ग की महारानी बचाओ इन्हें!" बूढ़े ने रासें नीचे रख दीं अपनी फटी-पुरानी कज्जाक-टोपी सिर से उतारी और पूर्व की ओर चेहरा करते हुए क्रॉस बनाया।

दक्षिण में देर की फसलवाली मकई की डंठलों के पीछे से एक टेढ़ा-मेढ़ा काला बादल उठा, क्षितिज के आधे विस्तार तक फैला और आसमान पर धुंध की एक चादर-सी डालने लगा।

"देखो, कैसी आग नजर आ रही है वहां?" कोई चीखा।

"क्या हो सकता है यह?"····"कहां लगी हुई है यह आग?"—गाड़ियों के पहियों की खड़खड़ाहट को अलग-अलग आवाजों ने भेदा।

"आग चिर-नदी के किनारे-किनारे लगी मालूम होती है।"

"लाल फौजी चिर के किनारे के गांव फूंक रहे हैं।"

"हे प्रभु···!"

"जरा देखो तो कि धुएं का कैसा काला बादल उठ रहा है वहां से एक से ज्यादा गांव जल रहे हैं।"

"इवान आगे के लोगों से रफ्तार जरा तेज करने को कहो।"

काला धुआं आसमान में भरता ही चला गया। तोपों के धड़ाके, एक जमी हुई रफ्तार से, बढ़ते गए। आधे घंटे के अन्दर हवा कोई बीस वर्स्ट के फासिले पर धू-धू करते गांवों की कड़वी जलायंध हेतमान-मार्ग का बड़ी सड़क पर ले आई। लोग घबड़ा उठे।

: ६० :

ओमोक को जानेवाली सड़क एक जगह भूरे पत्थरों की बाड़वाले एक घेरे की बगल से गुजरती थी और फिर एक छिछले नाले में उतर कर तेजी से दोन की तरफ मुड़ जाती थी। नाले के पार लट्ठों का एक पुल था। सूखे मौसम में नाले का तल बालू और रंगीन कंकड़ों के कारण पीला लगता और चमकता था। लेकिन गरमी की बरखा के बाद पानी

की मटमैली धार भयानक गति मे पहाडो से नीचे उतरती चली आती थी, नाले मे उमड चलती थी और पत्थरों पर लुढकती हुई, बड़ी गरज-तरज के साथ, दोन की ओर बढ़ जाती थी। ऐसे दिनों में पुल पानी मे डूबा रहता था। पर बहुत समय तक यह हालत न चलती थी। पहाडी का पानी अपने जोर पर होता था तो दीवारो को तोड़ता और बाड़ों को खम्भा सहित उखाडता चला जाता था। लेकिन फिर जल्दी ही उतर जाता था और नाले के ककड नए सिरे से चमकने लगते थे। नाले में, ढालो से बहकर आई, खड़िया और गीली मिट्टी की भभक उठने लगती थी।

नाले के बाजुओ पर सरपतों और देवदारुओ के घने झुरमुट थे। गरम से गरम दिनो मे भी उनके साये मे तरी रहती थी। व्येशेन्स्काया, गैरकज्जाक, रेजीमेंट के कोई ग्यारह लोग पुल के पास पड़ाव डाले इस तरी का मज़ा ले रहे थे। उन्हें व्येशेन्स्काया जानेवाले फौजी-उम्र के सभी कज्जाकों को गिरफ्तार कर लेने का हुक्म था। सो शरणार्थियों की पहली गाडी के नजर आने तक वे पुल के नीचे पडे ताश खेलते और धुआं उड़ाते रहे। उनमें से कुछ लोग कमीज़ें और पैन्टें उतारकर चीलर बीनते रहे। यह तो फौजियो के कपडो मे पड ही जाते हैं।

इन फौजियो मे से दो ने अपने अफसरो से इजाजत ले ली और दोन मे नहाने को चल दिए।

लेकिन वे आराम बहुत ही थोडे समय तक कर सके, क्योंकि पुल पर जल्दी ही शरणार्थियों की अकूत बाढ आ गई और उस औघाती-सी छोटी सी जगह मे लोग ही लोग नजर आने लगे। फिर वहां गरमी भी हो गई, जैसे कि गाडियो के साथ ही स्तेपी की घुमस दोन के किनारे की पहाडियों से उस इलाके मे उतर आई हो।

लम्बा, दुबला, नॉनकमीशड अफसर चौकी के कमाडर की हैसियत से अपने रिवाल्वर के केस पर हाथ रखे पुल पर खड़ा रहा। उसने बीसियो गाडिया बिना किसी तरह की अड़चन के गुजर जाने दीं। लेकिन इसके बाद उसकी निगाह कतार बीच मे अपनी गाड़ी हाँकते कोई पच्चीस साल के कज्जाक पर पड़ी तो उसने सख्ती से उसे रुकने का हुक्म दिया।

कज्ज़ाक ने त्यौरी चढ़ाई और रासें खींच लीं।

"किस रेजीमेंट के हो तुम ?" कमांडर ने गाड़ी के पास जाते हुए कहा।

"इससे आपको क्या मतलब ?"

"मैंने तुमसे पूछा कि तुम किस रेजीमेंट के हो···तुमने सुना नहीं !"

"मैं स्येजनी स्क्वैड्रन का हूँ, मगर आप कौन हैं ?"

"नीचे उतरो—"

"आप कौन हैं, मैं जानना चाहता हूँ।"

"मैं कहता हूँ, नीचे उतरो।" कमांडर का चेहरा गुस्से से तमतमा उठा। उसने अपने रिवाल्वर का केस खोला, रिवाल्वर झटके से निकाला और बाएँ हाथ में साधा। जवान कज्ज़ाक ने रासें अपनी पत्नी को थमा दीं और गाड़ी से नीचे कूद पड़ा।

"तुम अपनी रेजीमेंट के साथ क्यों नहीं हो ? कहाँ जा रहे हो इस तरह ?" कमांडर ने फिर पूछा।

"मैं बीमार रहा हूँ और अपने घर के लोगों के साथ वाजकी जा रहा हूँ।"

"बीमारी की छुट्टी का कोई सार्टिफिकेट है तुम्हारे पास ?"

"सार्टिफिकेट मैं कहाँ से ले आता। स्क्वैड्रन में कोई डॉक्टर ही नहीं था।"

"तो तुम्हारे यहाँ कोई डॉक्टर ही नहीं था ? कारपेंको !" उसने अपने एक मातहत को आवाज़ दी—"इस आदमी को स्कूल ले जाओ।"

"शैतान की शक्ल, आखिर तुम हो कौन ?"

"तुम्हें मालूम हो जायेगा कि हम कौन हैं।"

"मुझे अपने स्क्वैड्रन में वापिस जाना है···तुम्हें रोकने का कोई हक नहीं है।"

"वहां तो हम तुम्हें खुद ही भेज देंगे !···तुम्हारे पास कोई हथियार है ?"

"एक राइफिल है।"

"जल्दी से निकालो उसे वरना तुम्हारा कलेजा देखते-देखते छिद

जाएगा। ···तुम्हारी तरह का जवान कज्जाक अपनी बीवी के पेटीकोट में मुह छिपाता फिरता है ? यानी, हमे तुम्हारी हिफाजत करनी पड़ेगी ? फिर, कमाडर मुडा तो जाते-जाते नफरत से कहा—"नाली का कीड़ा !"

कज्जाक ने कम्बल के नीचे से अपनी राइफिल निकाली। इसके बाद दूसरो के सामने चूमने मे हिचकने के कारण वह अपनी पत्नी का हाथ पकडकर एक तरफ को ले गया। बुदबुदाकर कुछ बोला और फिर एक फौजी के पीछे-पीछे स्कूल की तरफ चल पडा।

सकरी सडक की ढेर की ढेर सवारिया गरजती हुई पुल के ऊपर से फिर गुज़रने लगी।

चौकी के फौजियो ने हर घटे के अन्दर कोई पचास भाग निकलने-वाले कज्जाक गिरफ्तार किए। इनमे से कुछ ने इस कार्यवाई का विरोध किया। इनमे मे भी लम्बी मूछों और भयानक चेहरेवाले एक सयानी उम्र के कज्जाक ने तो और भी जमकर खिलाफत की। कमाडर ने उसे गाडी से उतरने का आदेश दिया तो उसने घोडे पर चाबुक जमाया कि वे पूरी रफ्तार से भाग दें। लेकिन दो मिलिशियामैनो ने घोड़े की लगामे पकड़ ली और काफी दूर जाने पर पुल पर गाडी रोक ली। कज्जाक ने बिना सोचे-समझे तिरपाल के नीचे से बिना ठिठके अपनी अमरीकी विन्चेस्टर राइफिल उठाई और कधे पर लटका ली। चीखा—"हटो रास्ते से, नही तो तुम्हे मार डालूँगा अभी···मौत ले जाए तुम्हे !"

"नीचे उतरो···नीचे उतरो !" मिलिशियामैन ने उससे कहा—"हमें हुक्म है कि जो भी हमारी बात न माने हम उसे गोली से उड़ा दें। हम तुम्हे देखते-देखते दिवाल मे सटाकर खडा कर देंगे।"

"किसान कही के, अभी कल तक तो तुम लाल-फौजी थे और कज्जाकों पर हुक्म चला रहे हो···गलीज हो ! तुम किनारे हट जाओ, नही तो अभी गोली तुम्हारे सीने के आरपार हो जाएगी।···"

मिलिशिया का एक आदमी कूदकर गाड़ी के पहये पर चढ गया, और थोडी कशमकश के बाद उसने राइफिल कज्जाक के हाथ से छीन ली। कज्जाक बिल्ली की तरह बचा। तिरपाल से अपनी तलवार खींचकर बाहर निकाल ली और झुककर इस तरह दूसरी ओर जा पहुंचा कि

मिलिशियामैन का सिर धड़ से अलग होने से बाल-बाल बचा ।

"निमोफी, छोटो भी···तिमोफी···उफ···यह न करो ··इन्हें चुनौती न दो यह लोग मार डालेंगे तुम्हें !"—गुस्से के कारण आपे से बाहर कज्जाक की पतले चेहरे वाली पत्नी ने रोते हुए कहा ।

लेकिन, कज्जाक गाड़ी में तनकर खड़ा हो गया, इस्पात की चमचमाती हुई तलवार भाजने लगा और अपनी आँखें नचाते और भर्राई हुई आवाज में मोटी-मोटी गालियां देते हुए मिलिशिया के लोगों को दूर ही दूर रखने रहा । —"पीछे हटो, नहीं तो काटकर रख दूंगा अभी !" वह गरजा और उसकी आँखों में खून उतर आया ।

लोग उसे हजार मुश्किलों के बाद ही निहत्था कर सके । इसके बाद उन्होंने उसे गिरा लिया और उसके हाथ-पैर जकड़ दिए । फिर तलाशी ली तो उन्हें उसकी अकड़ के कारण का पता चला । बात यह थी कि तिरपाल के नीचे घर की बनी वोदका से भरा घड़ा रखा था ।

उस बीच पूरी सड़क गाड़ियों और जानवरों से भरी रही । गाड़ियां एक-दूसरे से इतनी सटी रहीं कि बैलों और घोड़ों को खोलना पड़ा और गाड़ियां हाथ से खींच कर पुल से नीचे लानी पड़ीं । घोड़े और बैल जब जुते रहे तो उन्हें डांसों ने परेशान कर मारा । वे बमों को झटके पर झटके देते रहे और उन्होंने मालिकों के हुक्म सुने ही नहीं । पुल के आसपास का सारा वातावरण गाली-गलौज, चाबुकों की सटकारों और औरतों के आर्त-क्रंदन से गूंजता रहा, पीछे की जिन गाड़ियों को जगह मिली वे मुड़ गईं···फिर बड़ी सड़क पर पहुंच गईं और बाजकी वाले दोन के किनारे की ओर बढ़ चलीं ।

गिरफ्तार लोगों को कड़े पहरे के साथ बाजकी के लिए रवाना कर दिया गया । लेकिन इनके हथियारबन्द होने के कारण पहरेदार इन्हें सम्हाल नहीं पाए, और पुल पार करते ही दोनों पक्षों के बीच झगड़ा शुरू हो गया । जरा देर बाद पहरेदार चौकी पर लौट आए, और जिन्हें कैद किया गया था वे फौजी तरतीब से व्येशेन्स्काया की ओर बढ़ दिए ।

खुद प्रोखोर् को ग्रोमोक में रोक लिया गया और ग्रिगोरी के द्वारा

दिया हुआ पास दिखलाने पर ही वह वहां से बेरोकटोक आगे जा सका।

शाम होने के काफी पहले-पहले व्येशेन्स्काया के सामने स्थित वाजकी पहुंच गया। सभी सड़कें, आसपास की गलियां और दोन के किनारे का कोई दो वर्स्ट फासिला शरणार्थियों की हज़ारों गाड़ियां से भरा दीखा। यहां से वहां तक फैले पचास हज़ार से ज्यादा लोग उस पर जाने को बेकल नजर आए। बैटरियां, रेजीमेंटल स्टाफ और फौजी साज सामान बजरों से इस पार से उस पार पहुचाया जाने लगा। पैदल सेना डाड़ों वाली ग्राम नावों से नदी पार करती रही। ऐसी दर्जनों नावें जहा-तहां पानी की सतह पर अंकित विन्दुओं से लगती रहीं। घाट के आस-पास जल सागर उमड़ता रहा। इस बीच चिर-नदी की तरफ से तोपों के दहाने बराबर आग उगलते रहे और धुए की कड़वी गन्ध बराबर बढती गई।

घुडसवार के पीछे हटती पहली टुकड़िया आधी रात के समय आना शुरू हुई। तय हुआ कि वे तड़के नदी पार करेंगी। पर पहली डिविज़न के घुडसवार की कोई खोज-खबर न मिली और ग्रोखोर ने वहीं रुककर उनकी राह देखने की बात सोची। उसने अपना घोड़ा एक शरणार्थी की गाडी में बाध दिया और चल पडा कि देखें यहां उस भीड़ में कौन-कौन लोग जाने पहचाने हैं।

कुछ दूर पर उसने अकसीन्या को एक छोटी-सी गठरी सीने से सटाए और एक ऊनी जैकेट कधे पर डाले नदी की ओर जाते देखा। किनारे किनारे पर उसके असाधारण सौन्दर्य ने पैदल फौजियों का ध्यान अपनी ओर खींचा। उनकी आखो मे वासना उतर आई और वे उसे आवाज़ो पर आवाज़ें देने लगे। फिर उन्होने रग मे आकर हसना शुरू किया तो उसके गर्द से भरे पसीने से तर चेहरे पर छीटे कसते से उजले दांत चमकने लगे। एक लम्बे कद और सुनहरे बालोवाले कज़्ज़ाक ने पीछे से अक्सीन्या की कमर मे हाथ डालना चाहा और अपने होंठ उसकी सांवली गर्दन पर जमाए। लेकिन औरत ने कुछ ऐसा-वैसा सा कहा, दांत पीसे और उस कज्ज़ाक को भद्दे ढग से धक्का दे दिया। फौजी ज़ोर-ज़ोर से कुछ कहने लगे। कज्ज़ाक ने अपनी टोपी सिर से उतारी और भारी गले से मिन्नत करता हुआ बोला—"बस, एक चुम्मी दे दो।

बस एक···!"

अक्सीन्या के भरे हुए होंठों पर नफरत की मुसकान नाचने लगी। उसने अपने कदम तेज किए। ग्रीगोर ने उसे आवाज नहीं दी और गाँव के दूसरे साथियों की तलाश करने लगा। वह मोड़ के बीच से धीरे-धीरे आगे बढ़ा तो नशे में चूर लोगों की आवाजें और हँसी के ठहाके उसके कानों में पड़े। फिर जल्दी ही उसे तीन बूढ़े एक गाड़ी के नीचे घोड़े वाले कपड़े पर बैठे मिले। इनमें से एक टांगों की बीच पर की बनी वोदका से भरा एक घड़ा दीखा। मस्त बूढ़े, तोप के गोलों के केस से बने मग में, बारी-बारी से वोदका ढालते और सूखी तेज गंध और मछली की खारी महक ने भूखे ग्रीगोर के पैर बांध दिए।

फौजी, आ जाओ और दो घूंट पी लो हमारे साथ। उनमें से एक ने उसे दावत दी। मानापमान की किसी तरह की भावना के बिना वह जा बैठा। उसने सलाम बनाया और मेहमाननवाज बूढ़े के हाथ से मुसकराकर वोदका भरा मग ले लिया।

"पियो जब तक दम में दम है! और लो, एक टुकड़ा यह भी मुँह में डाल लो। बूढ़ों को देखकर इस तरह नाक चढ़ाना ठीक नहीं, जवान!" दूसरा बूढ़ा बोला—"बूढ़ों के बाल धूप में सफेद नहीं होते। उन्हें अक्ल होती है। अभी तो तुम लड़कों को हम लोगों से जीना और वोद्का पीना सीखना है।" तीसरे बूढ़े की आवाज गर्जी। उसकी नाक के साथ ऊपरी होंठ पिस-उठा-सा लगा।

ग्रीगोर ने जाने कितनी आशंकाओं से भरकर बेनाक-बूढ़े पर निगाह डाली और ढालता रहा। दूसरे मग के बाद और तीसरे मग के पहले उससे रहा न गया। पूछा—'तुम्हारी नाक कहाँ गायब हो गई, बूढ़े-दादा? किसी महफिल या जश्न की कीमत नाक से अदा करनी पड़ी क्या?"

"नहीं, बेटे, यह बात ठीक नहीं है। मुझे सर्दी लग गई और फिर मैं बचपन से ही बराबर जुकाम का शिकार रहा। और, इसमें चली गई नाक।"

"लेकिन, मैं तो तुम्हारे बारे में बुरी राय बना गया। सोचने लगा

कि किसी बुरी बीमारी ने शायद तुम्हारी नाक ले ली है। मैंने हमेशा यह मुसीबत बचाई।" प्रोखोर ने कहा।

इस पर बूढ़े ने दुबारा सफाई दी तो प्रोखोर ने अपने होंठ मग पर जमाये और वोद्का की आखिरी बूंद तक बेधड़क गटक गया।

"मेरा सभी कुछ चला गया है···तो, भला अब मैं पिऊँ किसलिए नहीं?" वोद्का का मालिक प्रौढ़ बदन का बूढ़ा बोला—"मैं अपने साथ दो सौ पूड अनाज लाया हूँ, लेकिन एक हज़ार पूड पीछे छोड आया हूँ। अपने पाच जोडी बैल जैसे-तैसे यहां तक साथ ले आया हूँ, लेकिन अब तो उनसे भी महरूम होना पड़ेगा, क्योंकि उन्हें उस पार ले जाना मुमकिन नहीं है। अब तक जो कुछ भी सीने से लगाये रहा हूँ, अब वह सभी कुछ हाथ से निकल जायेगा···इसलिए, गाओ···दोस्तो, गाओ···।" उसका चेहरा पीला पड गया और आँखें भर आई।

"बेकार क्यों हाफा पीट रहे हो, ओफीम इवानिच! अगर जिन्दगी रहेगी तो दौलत फिर हो जायेगी।" दूसरे बूढ़े ने अपनी ओर से कहा।

"हाफा क्यो न पीटूं?" बूढ़ा कज्ज़ाक और ज़ोर से बोला और रोने लगा—"मेरा सारा अनाज चला जायेगा। मेरे बैल मर जायेंगे। लाल-फौजी मेरे घर में आग लगा देंगे। पिछली खिज़ा मे मेरा बेटा पहले ही मारा जा चुका है। ऐसे मे भला मैं चीखूं-चिल्लाऊँ कैसे नहीं? आखिर किसके लिये मैंने तिल-तिलकर इतना सब जुटाया? एक ज़माने मे गरमी आती थी तो दस कमीजें पीठ के पसीने से तर होने के लिए रहती थी और आज बदन ढकने को एक कपडा नही है, पैरों मे जूते नही है! चलो, ढालो!"

यानी, उधर बूढ़े बातों मे उलझे रहे और इधर जनाब प्रोखोर-साहब ने एक ग्रीम साफ कर दी और सात मग वोद्का ढाल ली। होते-होते नशा इतना हो गया कि खडे होने की कोशिश की तो पैर सधने से इन्कार करने लगे।

"फौजी, तुम हमारी जिन्दगी बचाने वाले हो···चाहो तो तुम्हारे घोड़े के लिए थोडा अनाज दे दूँ···कितना चाहिए?" वोद्का के मालिक ने

"एक बोरा दे दो।" प्रोखोर अपने चारों ओर की हर चीज़ से बेख़बर बुदबुदाया।

बूढ़े ने अव्वल दर्जे की जई से बोरा भर दिया और हाथ लगाकर बोरा उसकी पीठ पर चढ़ा दिया—' लेकिन, बोरा वापिस ले आना···भूलना नहीं···ईसा के नाम पर भूलना नहीं!" बूढ़े ने उसे सीने से लगाने और पागलों की तरह आंसू बहाते हुए कहा।

"मैं बोरा वापिस नहीं लाऊँगा···कहे देता हूँ कि नहीं लाऊँगा···और कहता हूँ तो फिर नहीं ही लाऊँगा।" प्रोखोर ने दुराग्रह और बेअक्ली से कहा।

और, वह लड़खड़ाता हुआ गाड़ी से दूर चला गया। पीठ पर बोरा झूलता और उसे आगे बढ़ाता रहा। प्रोखोर को ऐसा लगा जैसे वह तुषार से फिसलती धरती पर चल रहा हो, क्योंकि उसके पैर बर्फ़ पर कदम रखते बेनाल घोड़े के पैरों की तरह रह-रहकर रपटते रहे। कुछ कदमों तक लड़खड़ाने के बाद वह ठिठका और याद करने की कोशिश करने लगा कि मेरे सिर पर टोपी थी या नहीं? इसी समय गाड़ी से बंधे एक घोड़े को जई की महक मिली तो वह बोरे की ओर खिंचने लगा और उसने कोने में दांत गड़ा ही तो दिये। छेद से नाज के दाने हलकी सरसराहट के साथ भरने लगे। अब प्रोखोर को अपना बोरा कहीं हलका लगा और वह आगे बढ़ चला।

अब तो वह बोरा जैसे-तैसे अपने घोड़े के लिये ले ही जाता, लेकिन हुआ यह कि पास से गुजरा तो एक बैल ताबड़तोड़ लातें चलाता उसकी ओर झपटा। बैल डांसों और मच्छरों से तंग आ गया था, गरमी सहते और बराबर खड़े रहते-रहते आपे से बाहर हो गया था, किसी को पास फटकने नहीं दे रहा था, और दिन-भर में जाने कितनों पर अपना गुस्सा उतार चुका था। तो, अब पारी प्रोखोर की थी। बेचारा लुढ़कता चला गया, एक पहिये के धुरे से जा टकराया और तुरन्त ही नींद में डूब गया।

उसकी आँख कोई आधी-रात के समय खुली। उस समय आसपास में सीसे के रंग के बादल पश्चिम की ओर दौड़ते दीखे। जब तक ही नया चांद झांक उठा, फिर आसमान बादलों से ढक गया, और हवा में और ज्यादा ठंडक घुल गई। इसी बीच प्रोखोर वाली गाड़ी के बिलकुल पास

से घुड़सवार गुजरने लगे और धरती घोड़ों की नालों की चोटों से कराह उठी। हवा में धरखा की महक पाकर जानवर डकराने लगे। तलवारों की म्यानें रकाबों से लड़कर झनझनाईं और क्षण-भर को सिगरेटों की आग ने लौ दी। घोड़ों के पसीने और चमड़े के साज-सामान की कड़वी बू ग्रोखोर के नथुनों तक आई। यह बू सभी फौजी-कज्जाकों की तरह उसके भी व्यक्तित्व का एक अङ्ग बन चुकी थी, प्रशिया और बुकोविना से, उनके साथ सड़कों पर उड़ती दोन के स्तेपी के मैदानों तक आई थी और ग्रोखोर को अपने घर की महक की तरह ही प्रिय थी। वह उसे उतने ही समीप से जानता था।

यानी, उसने अपना भारी सिर उठाया तो उसके मोटे नथुने सिकुड़ उठे। पूछने लगा—"किस रेजीमेंट के हो, जवानों ?"

"घुड़सवार-फौज के हैं हम लोग !" एक व्यक्ति ने अंधेरे में यों ही से ढग से जवाब दिया।

"ठीक है···लेकिन मैंने पूछा कि तुम किस रेजीमेंट के हो ?"

"पेतलूरा के !" वही आवाज फिर गूँजी।

"सुअर हो तुम !" ग्रोखोर ने कोसा, एकाध क्षण तक इन्तजार करता रहा और फिर वही सवाल दोहराता हुआ बोला—"किस रेजीमेंट के हो तुम, साथियों ?"

"बोकोव्स्की-रेजीमेंट के।"

ग्रोखोर ने खड़े होने की कोशिश की, लेकिन उसका सिर घूमने लगा और जी मिचलाने लगा। सो, वह लेट गया और फिर सो गया।··· सुबह होने के जरा पहले हवा नदी की ओर से ठिठुरन अपने साथ लाई।

"मर गया क्या ?"—उसने सोते-सोते किसी की आवाज सुनी।

"बदन गरम है···नशे में है।"—दूसरे आदमी ने ग्रोखोर के ऐन कान के पास से कहा।

"खींचकर एक तरफ कर दो इसे ! आदमी की लाश की तरह रास्ते में पड़ा है। अपने नेजे की नोक का जरा जायका दे दो इसे !"

दूसरे आदमी ने अपने नेजे के डंडे वाले हिस्से से, आधे होश में पड़े

प्रोखोर की पसलियों को ठोकर दी, और फिर दो हाथों ने उसके पैर पकड़कर उसे घसीटा और एक तरफ कर दिया।

"इन गाड़ियों में जानवरों को खोल दो। क्या वक्त चुना है सोने का।"—एक अधिकारी गरजा—लाल-फौजी यहां हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रहे हैं और यह लोग इस तरह टांगें फैलाये खर्राटे ले रहे हैं, जैसे कि अपने-अपने घरों पर हैं।···गाड़ियों को ठेलकर रास्ते से हटा दो···अभी हमारी बैटरी आती ही है···उसे इधर से निकलना है।··· चलो···जल्दी करो···सारी सड़क घेर रखी है···यह लोग भी क्या हैं!"

गाड़ियों के अन्दर गाड़ियों के नीचे सोते शरणार्थियों के बीच हरकत होने लगी। प्रोखोर उछलकर खड़ा हो गया। उसे अपने पास न अपनी राइफल दिखी और न अपनी तलवार। दाहिने पैर का बूट गायब अलग से मिला। लगा कि पिलाई के बाद गायब हुआ है। वह अचरज से भरकर अपनी चीजें एक गाड़ी के नीचे खोजने को बढ़ा ही था कि उसी ओर बढ़ती आती एक बैटरी के ड्राइवरों और तोपचियों ने—बड़ी ही बेरहमी से, बक्सों समेत गाड़ी उलट दी और अपनी तोपों के लिए रास्ता साफ कर दिया।

गाड़ियों वाले अपने-अपने घोड़ों की ओर दौड़े। फिल्ड-गनों के बड़े-बड़े पहिये रास्ते पर कराहने लगे। लड़ाई के हथियारों वाली गाड़ी का हब, एक साधारण गाड़ी के बम में फंस गया और बम को साथ लेता चला गया।

"तुम लोग लोग लड़ाई के मैदान को पीठ दिखाकर भाग रहे हो! क्या शानदार फौजी हो!···ऐसी-तैसी में जाओ तुम सब!"—प्रोखोर का पिछली शाम का मेजबान उसकी इतनी-इतनी खातिरें करने वाला बूढ़ा अपनी गाड़ी से चीखा।

बैटरी टीम नदी पार करने की हड़बड़ी में, चुपचाप उसे उधर से गुजरी। तड़का शुरू होते ही प्रोखोर ने अपनी राइफल और घोड़े की तलाश शुरू की। किनारे उसने अपने पैर का दूसरा जूता भी उतारा और नदी में फेंक दिया। फिर, दर्द से फटता सिर बार-बार पानी में धोया।

सूर्योदय होते ही घुड़सवार नदी पार करने लगे। कज्जाक अपने घोड़ों को हांक कर एक खास मोड़ पर लाए। नदी यहां समकोण बनाती

और पूर्व की ओर मुड़ती थी। स्क्वैड्रन कमांडर की नाक चपटी और हलकी भूरी दाढ़ी आखों तक उगी हुई थी। चेहरा इतना भयानक था कि आदमी देखने मे जगली-सुअर-सा लगता था। उसका बायां हाथ खून से तर गल-पट्टी में सधा हुआ था और दाया चाबुक पर चाबुक सटकारता जा रहा था, जैसे कि थकने का नाम न जानता हो !

"घोड़ो को पानी मत पीने दो'' चालू रखो !···गधो कहीं के··· पानी से भडकते हैं या क्या है !···आगे बढाओ उन्हे···चीनी के तो बने हैं नही कि गल जायेंगे···" कज्जाक घोडो को पानी में उतारने लगे तो उसने चिल्लाकर कहा। उसके दात गुलमुच्छो के नीचे यों चमके जैसे कि जहर से बुझे हों। घोडे एक-दूसरे से सटकर खड़े ही गए और लगामों की झटको पर झटके देते हुए ठडे पानी मे से धसने से इनकार करने लगे। कज्जाक धुड़क-धुड़ककर उन्हें आगे बढाने लगे। उजले चदावाले एक काले घोड़े ने तैरना शुरू किया। साफ है कि आज वह कोई पहली बार नहीं तैर रहा था। सो, पानी की लहरें साज की दुमची तक लहराने लगी। घने बालों वाली दुम एक ओर उतराने लगी। पर, सिर और गर्दन पानी के बाहर रही। दूसरे घोडो ने हौसले और पानी छपछपाते हुए उस घोड़े का अनुकरण किया। कज्जाक, छः बजरों पर सवार होकर पीछे-पीछे चले। किसी वक्त ज़रूरत के लिए रस्सा हाथ मे लेकर एक-एक कज्जाक एक-एक बजरे के अगले हिस्से पर खडा हो गया।

"इनके सामने न पड़ो। इन्हें धार के आर-पार हाँको, ताकि यह धार मे बह न जाए !"—स्क्वैड्रन कमाडर चीखा, और हाथ का चाबुक हवा मे सटकारने लगा ! फिर, चाबुक खड़िया से तर बूट पर आ-टिका।

तेज़ धार घोड़ो की बहाव की तरफ खींचने लगी। काला घोड़ा देखते-देखते दूसरो से आगे निकल गया और सबसे पहले बाईं ओर के बलुहे किनारे पर जा निकला। ठीक इसी समय सूरज देवदारू की गभिन शाखों के ऊपर चढा, और गुलाबी किरन घोड़े के ऊपर पड़ी। नमी के कारण चमकते उसके बालों से आग की-सी लपट फूटी।

"बछेड़ी को देखो···मदद करो उसकी···उसके मुह में लगाम लगी डाइ चलाओ···चलाओ न···डाइ चलाओ।"—बैटरी कमाडर ने

भर्राए गले से चीख कर कहा।

सारे घोड़े दूर के किनारे पर सही-सलामत पहुंच गए। वहां कज्ज़ाक पहले से इन्तज़ार में थे ही। सो, इनके पहुंचते ही उन्होंने अपनी-अपनी सवारी छांटी और लगामें लगा दी। दूसरी ओर, लोग काठियां नाव पर लादकर उस पार से इस पार भेजने लगे।

"कल आग यहां लग गई थी ?"—प्रोखोर ने एक कज्ज़ाक से पूछा। वह काठी नाव पर रखने के लिए ले जा रहा था।

"आग चिर के किनारे लगी थी—"

"तोप के गोले से लगी थी ?"

"तोप का गोला जाए भाड़ में···आग तो लाल फौजियों ने जान-बूझकर लगाई थी।"

"वे लोग क्या हर चीज़ जला देते हैं ?"—प्रोखोर ने अचरज से भर कर पूछा।

"नहीं, ऐसा नहीं है···वे रईसों के लोहे की छतों या शानदार गेटों वाले मकानों को जला देते हैं—

प्रोखोर अपनी डिविज़न के बारे में पूछताछ करने के बाद, शरणार्थियों वाली अपनी गाड़ियों के पास लौट आया। जगह-जगह चिथराते की लकड़ी, टूटी फूटी बाड़ों और सूखी लीद के अलावों से तीखा धुआं उठता और हवा में घुलता मिला। औरतें नाश्ता तैयार करती दीखीं। रात को दोन के दाएं किनारे के ज़िलों से कई हज़ार शरणार्थी और आ गए। अलावों के पास लोग धीरे-धीरे बातें करते रहे। बातचीत की गूंज प्रोखोर के कानों में भी आई।

"हम लोग कब तक नदी पार कर सकेंगे ?"

"अगर ऊपर वाला यही चाहेगा कि हम नदी पार न करें तो नाज को तो मैं दोन में डाल दूंगा···लाल फौजियों के हाथों न पड़ने दूंगा।"

"तुमने देखा कि घाट के आसपास कितने लोग जमा हैं ?"

"लेकिन, हम अपने बक्से किनारे पर यों ही छोड़ कैसे सकते हैं ?"

"आखिर हमें मशक्कत और मुसीबत की कितनी कीमत अदा करनी पड़ी···हे प्रभु ईसा।"

"अच्छा होता, अगर हमने गांव के पास ही नदी पार कर ली होती !"

"हां सचमुच अच्छा होता···पता नही कौन-सा शैतान हमे यहा, इस व्येशेन्स्काया मे ले आया !"

"लोग कहते है कि कालिनोव-उगोल को जला कर राख कर दिया गया—"

"तुम्हारा खयाल था कि तुम नावो पर सवार होकर इस पार से उस पार पहुच जाओगे ।"

"सचमुच क्या तुम्हारा खयाल है कि वे हमें माफ कर देंगे ?"

"उन्हे तो हुक्म है कि छ. साल से बडे हर कज्जाक को काट कर फेंक दे ··"

"अगर उन्होंने हमें यहा पकड लिया तो क्या होगा हमारा ?"

"होगा क्या, कच्चे गोश्त की कही कोई कमी न रहेगी।"

शानदार ढग से सजी-बजी एक गाडी के पास देखने सुनने मे किसी गाव का अतामान, एक बूढा बडे जोरो से बढता दीखा—"मैंने उससे कहा—यानी लोगों को नदी किनारे अपनी जानें देनी होंगी। हम आखिर कब तक दूसरी ओर पहुंच पायेंगे ? लाल फौजी तो हमारी बोटी-बोटी काट देंगे"...और, महामहिम ने कहा—"डरो मत दादा ! हम तब तक अपने मोर्चों पर ज्यो के त्यो डटे रहेंगे जब तक कि एक-एक आदमी इस पार से उस पार पहुँच न जाएगा । हम अपने लोगों की बीवियों, बच्चों और पिताओं को तकलीफन ही होने देंगे।"

चारो ओर जमा औरतो और बूढो की भीड पूरे ध्यान से बूढे की बातें सुनती रही मगर, बूढा सांस लेने को रुका कि लोग चारों ओर से चिल्लाने लगे—

"अगर ऐसा है तो बैटरी उस पार कैसे पहुच गयी ?"

"हम उनके घोडो की टापो से पिसते-पिसते बचे—"

"और, घुडसवार फौज आ गई है"—

"लोग कहते है कि ग्रिगोरी-मेलेखोव ने मोर्चा को खुला छोड़ दिया है कि दुश्मन जब चाहे हमला करे—"

"कौन हिफाजत करेगा हमारी ? फौजी आगे-आगे चले गए हैं और लोगों को पीछे छोड़ दिए गए हैं—"

"इस वक्त तो हर आदमी अपने खुद के बचाव की बात ही सोच रहा है—"

"हर आदमी हमारे साथ गद्दारी कर रहा है—"

"हमें अपने बड़े बूढ़ों को रोटी-नमक[१] लेकर लाल फौजियों के पास भेजना चाहिए···हो सकता है कि उन्हें रहम आ जाए और हमें सजा न दें—"

इसी समय अस्पताल की ईंटों वाली बड़ी इमारत के पास की गली में एक घुड़सवार मुड़ा। उसकी राइफल काठी कमान में लटकती रही और भाला बगल में झूलता रहा।

"अरे, यह तो मेरा मिकिश्का है !"—एक सयानी उम्र की औरत खुशी से चिल्लाई। वह घोड़ों और गाड़ियों को इधर उधर ढकेलती, बमों पर उछलती-कूदती घुड़सवार से मिलने को लपकी। घुड़सवार को रकाबें पकड़कर रोक लिया गया। उसने एक मुहरबंद भूरा पैकेट ऊपर उठाया और चीखकर बोला—"चीफ-ऑफ-स्टाफ के लिये एक खत लाया हूँ। मुझे निकल जाने दो।"

"मिकिश्का, मेरे राजा-बेटे !" सयानी उम्र की औरत गद्‌गद् स्वर में चिल्लाई और सफेद बाल उसके चेहरे पर झूल-झूल आने लगे। होंठों पर मुसकान दौड़ गई। वह घोड़े की बगल से बिलकुल सट गई और कांपती हुई आवाज में पूछा—"गांव के बीच में आये हो तुम ?"

"हां···वहां तो लाल फौजी उमड़ रहे हैं हर तरफ···"

"हमारा घर···"

"हमारा घर अब भी सही-सलामत है, लेकिन फेदोन का मकान जला कर राख कर दिया गया है। हमारे शेड में भी आग लग गई थी, लेकिन वह लाल-फौजियों ने खुद ही बुझा दी। फेनिश्का यह कहता हुआ भाग गया कि लाल-फौजियों के अफसर का हुक्म है कि गरीब कज्जाकों का एक

---

१. आदर और श्रद्धा दिखलाने की एक रूसी-परम्परा।

भी घर जलाया न जाये ! जलाये सिर्फ वे घर जायें जो बुर्जुआ-लोगों के हों।"

"प्रभु, तेरी शान निराली है ! प्रभु ईसा, उन्हें हर तरह बचाना !" औरत ने क्रॉस बनाया।

एक सख्त-से बूढे ने नफरत से बीच में बात काटी—"औरत, क्या बक रही है तू ? उन्होंने तेरे पडोसी का मकान जलाकर राख कर दिया है और तू चिल्ला रही है—'प्रभु तेरी शान निराली है !"

"पडोसी को ले जाये शैतान !" औरत ने तड से जवाब दिया—"वह तो नया मकान खडा कर लेगा। मगर कही हमारा मकान जला दिया गया होता तो हम क्या करते ? फेद्रोत ने घडा-भर सोना जमीन के नीचे गाड रखा है, लेकिन मेरी तो पूरी जिन्दगी दूसरो की गुलामी करते बीती है।"

"मुझे जाने दो, मा !" घुडसवार ने काठी से झुकते हुए कहा—"मुझे यह लिफाफा फौरन ही पहुँचाना है।"

औरत मुडी, घुडसवार का हाथ चूमते हुए कुछ देर तक घोड़े की बगल-बगल चलती रही और फिर अपनी गाडी की तरफ दौड़ गई। दूसरी तरफ घुडसवार जवानी से भरी, पतली आवाज में चीखा—"रास्ता दो··· मैं कमाडर-इन-चीफ के नाम खत लाया हूँ · रास्ता दो !"

घोडा उछला, एक ओर को बढा, और भीड हिचकिचाते हुए पीछे हट गई। घुडसवार धीरे-धीरे आगे बढने लगा, लेकिन फिर जल्दी ही गाड़ियों और बैलो और घोडो के पीछे जाकर आंखों से ओझल हो गया। फिर, वह नदी के किनारे की तरफ बढा तो घुडसवार का भाला-भर भीड के ऊपर उछलता नजर आया।

६१ :

अगले दिन पूरी-की पूरी विद्रोही-सेना और सारे-के-सारे शरणार्थी उस पार पहुँचा दिए गए। सबसे आखिर मे नदी पार की ग्रिगोरी-मेलेखोव के पहले डिविजन के व्येशेन्स्काया-रेजीमेंट ने।··· शाम तक ग्रिगोरी ने बारह चुनिंदा-स्क्वैड्रनों के साथ कुबान के लाल-कज्जाकों का धक्का

सम्हाला और कुदिनोव के एक सन्देश के अनुसार सभी फौजों और शरणार्थियों के सही-सलामत पार पहुँच जाने के बाद कोई पाच बजे अपनी फौज को पीछे हटाने का आदेश दिया।

विद्रोही-सेनाओं की योजनाओं के अनुसार दोन के दायें-किनारे के गावों के स्क्वैड्रनों को नदी पार कर किनारे का मोर्चा सम्हालना था और हर स्क्वैड्रन को अपने खास गाव के सामने जमना था। सो, दोपहर होते-होते हेड-क्वार्टर्स मे खबर आ गई कि अधिकाश स्क्वैड्रनों ने अपनी-अपनी पोजीशनें ले ली हैं।

जहाँ गाव के बीच फासला ज्यादा नजर आया, वहा स्टाफ ने स्तेपी जिलों के कज्जाकों के स्क्वैड्रन भेज दिये। जो स्क्वैड्रन बचे, उन्हें पक्ति के पीछे रिजर्व रख लिया गया। इस तरह विद्रोहियों ने मोर्चा दोन के बायें किनारे पर कजान्स्काया जिले के दूरतम गावों से खोपर के दहाने तक बाध लिया। यानी, सौ वर्स्ट से ज्यादा दूर तक फौजें जमा दी गई।

कज्जाकों ने नदी पार करते ही जल्दी-जल्दी खाई-लड़ाई की तैयारी की। उन्होंने खाइया खोदी, देवदारु, बेंत और शाहबलूत के पेड़ काटे, गढ़े बनाये, मशीनगनें रखने की जगहें बनाई, शरणार्थियों से खाली बोरे लिए, उन्हें रेत मे भरा और खाइयों की पक्ति के सामने बचाव के लिए बाड़ें बनाई।

शाम होते-होते खाइयों की खोदाई का काम हर जगह पूरा हो गया। व्येशेन्स्काया के पीछे पहली और तीसरी बैटरियां देवदारुओं के झुट-मुटों के बीच छिपा दी गई। परन्तु, आठ तोपों के लिए गोले कुल पाच निकले। कारतूस भी करीब-करीब खत्म ही नज़र आये। कुदिनोव ने सन्देश-वाहकों के साथ आदेश भेजे—राइफलें बिलकुल न चलाई जायें। हर स्क्वैड्रन अपने एक-एक या दो-दो सधे-से-सधे निशानेबाज चुन ले और काफी मात्रा में गोलियां दे दे, ताकि वह लाल मशीनगन-चालकों को अपना निशाना बना सकें और दाहिने किनारे के गांवों की गली-सडकों मे से नज़र आने वालों का कलेजा छलनी कर सकें। बाकी कज्जाक तभी गोली चलायें, जब लाल फौजी नदी पार करने की कोशिश करें।···

दिन-ढले के समय ग्रिगोरी घोड़े पर सवार होकर अपने डिविज़नों

की पोज़ीशन का मुग्राइना करने गया और रात बिताने के लिये व्येशेन्स्काया लौट आया।

उस रात व्येशेन्स्काय और आस-पास की चरागाहों में किसी तरह की आग या रोशनी करने की मनाही कर दी गई। नदी के किनारे बकाइनी-धुंध मे डूबे रहे। अगले दिन तडके लाल गश्ती-टुकडियां दूर के ढालों पर नज़र आई और फिर जल्दी ही उस्त-खोपरस्काया मे कज़ान्स्काया तक के दाहिने किनारे की पहाडियों पर सामने आने और फिर आँखो से ओझल होने लगीं। आखिरकार एकदम गायब हो गई, और फिर दोपहर तक उन इलाकों मे भयानक सन्नाटा रहा। लेकिन दक्षिण में धू-धू करते गावो से बैंजनी-काला धुआं अब भी उठता रहा। हवा ने जो बादल विखरा दिये थे। वह फिर जमा होने लगे और छाया के सहारे पीली बिजली धरती पर उतरने लगी। गरज ने लटकते हुए बादलों को जैसे कि अलगा-अलगा कर दिया और फिर मूसलाधार पानी बरसने लगा। हवा के इशारे पर पानी की नाचती हुई लहरें दोन के किनारे की पहाडियों, गरमी से मुरझाते सूरजमुखी के पौधों और सूखे के शिकार बाज पर दौड़ लगाने लगी। पानी की फुहार से नई, गर्द से भरी पत्तियों मे फिर जान आ गई, वसन्ती शाखें रसमय होकर चमकने लगी, सूरजमुखी के गोल फूलों ने अपने स्याह पडते सिर फिर ऊपर उठा लिए और बागो से पकते हुए खरबूजों महक उठने लगी।

तीसरे पहर लाल गश्ती-टुकडिया सन्तरियों वाले ढूहों पर फिर नज़र आई। यह ढूह दोन के दाहिने किनारे मे अज़ोव-सागर तक फैले चले गए थे।···

ढूहों से चौरस, बलुहा पसारा कई-कई मीलों तक नजर आता था। बीच-बीच मे दर्रों की हरियाली थी।

सो, लाल गश्ती-टुकडियों के घुडसवार बडी सावधानी से गावों में उतरे। उनके पीछे पैदल सेना के लोग ढालों से उतरते चले आए। सन्तरियो वाले ढूहो के पीछे लाल सेना की बैटरिया जमा दी गई। यहीं एक जमाने मे पोलव्त्सी के सिपाहाही और खानाबदोश लोग दुश्मनो के आने की धमक से डर कर दूरी मे नज़र गड़ाये खड़े रहते थे।···

होते-होते एक बैटरी ने व्येशेन्स्काया पर आग उगलनी शुरू की। चौक में तोप का पहला धड़ाका हुआ और हवा धुएं के छोटे-छोटे अनगिनत छल्लों और गोले के दूधिया-सफेद टुकड़ों से भर गई। इसके बाद तीन बैटरियों ने और व्येशेन्स्काया और नदी के किनारे की कज्जाक-खाइयों पर मौत बरसानी शुरू की। साथ ही मशीनगनें भी भयानक ढंग से गड़गड़ाने लगीं।

दो हॉचकिस-तोपें थोड़ी-थोड़ी देर पर दागी जाने लगीं, और फिर सामने के किनारे पर पैदल-सेना को निशाने के दायरे में पाकर एक मैक्सिम तोप भी स्थिर-गति से गोले उगलने लगी। गाड़ियां टूहों तक लुढ़कती चली आईं। घाटों में सड़े ढालों पर गाड़ियां खोदी गईं। बड़ी सड़क पर इनकी गाड़ियां खड़खड़ाने लगी। इनमें धूल के बादल उठ-उठकर आसमान की ओर बढ़ने लगे।

अब तोपें पूरे-के-पूरे मोर्चे पर गरजने लगीं। लाल फौजें पहाड़ियों के ऊपर से सामने के मोर्चे पर देर शाम गये तक मौत छिड़कती रहीं। सम्पूर्ण मोर्चे पर विद्रोहियों की खाइयों वाले मैदानों में सन्नाटा रहा।

कज्जाक-घुड़सवारों के घोड़े नदी के अनजाने सुरक्षित स्थानों में छिपे रहे। यह जगहें दुर्गम थीं, और सरपत, मुस्ता के पौधों और झाड़-झाड़ियों से इस तरह भरी हुई थीं कि घोड़ों को वहां गरमी से परेशानी कम-ही-कम होती थी। फिर आम पेड़ों और लम्बे औसिर-बेंतों के कारण लाल फौजियों की निगाह इनपर बिलकुल न पड़ सकती थी।

लम्बी-चौड़ी, हरी-भरी चरागाहों में कहीं कोई नजर नहीं आता था। हां, दोन के दूर के किनारे पर, हड़बड़ी में कदम बढ़ाती शरणार्थियों की नारी-आकृतियां अवश्य ही भूले-चूके कभी-न-कभी दिखलाई पड़ जाती थी। लाल फौज के मशीनगनर इनपर गोलियां चलाते तो यह जमीन पर पड़ रहते और फिर सांझ के धूंधलके के समय तक यहीं घनी घासों के बीच पड़े रहते। उसके बाद वे उठते, मुड़कर देखे बिना, सिर-पर पैर रखकर उत्तर की ओर भाग खड़े होते और जंगलों और घने-आल्डर और भोज-वृक्षों के झुरमुटों के पसारे की ओर रुख करते। यह पसारा अपने मेहमानों के स्वागत में सहज-रूप में अपनी पलकें बिछा

देता।···

तोपें, व्येशेन्स्काया पर अगले दो दिनों तक गोले बराबर बरसाती रहीं। वहां के रहने वाले दिन-दिन-भर तहखानों में छिदे रहे। सिर्फ रातों को ही, गोलों से छलनी गली-सड़कों पर जहां-तहां कुछ लोग नजर आए।

इस सबसे विद्रोही-जनरल-स्टाफ इस नतीजे पर पहुँचा कि यह तावड़-तोड़ बमबारी नदी-पार करने की प्रस्तावना-मात्र है···इसके बाद दुश्मन व्येशेन्स्काया को लेने के विचार से सामने ही आकर उतरेगा, मोर्चे की लम्बी पंक्ति को बीच से काट देगा और फिर किनारों से हमले कर हमारी सेनाओं को पूरी तरह कुचलकर रख देगा।···

सो, कुदिनोव के आदेश पर बीस से ज्यादा मशीनगनों को लड़ाई की अतिरिक्त सामग्री देकर व्येशेन्स्काया में जमा दिया गया। बैटरी के कमांडरों को हुक्म दे दिया गया कि वे बचे-बचाए तोप के गोलों का इस्तेमाल तभी करें, जब लाल फौजें नदी पार करती नजर आयें।··· फिर नावें और तमाम बजरे नदी के व्येशेन्स्काया के पिछले वाले हिस्से में ले आए गए और उनकी रक्षा के लिए एक शक्तिशाली सेना तैनात कर दी गई।

ग्रिगोरी मेलेखोव की समझ में ही न आया कि स्टाफ की कमान इस तरह भयभीत और आशंकित है तो आखिर क्यों है? और, लड़ाई की सामान्य परिषद् की बैठक में उसने अपने मन की बात पूरी शक्ति से उनके सामने रख दी। सवाल किया—"आपका खयाल है कि दुश्मन व्येशेन्स्काया आकर नदी पार करेगा? मगर, जरा देखिये कि यह किनारा टैम्बरीन-ढोल की तरह तो छूछा है। यहां आखिर है क्या? बलुहा और चिकना ऊपर से है। खुद दोन के किनारे किसी तरह के पेड़-पौधे या झाड़-झाड़ी का नाम-निशान तक नहीं है। भला कौन बेवकूफ होगा, जो यहां नदी पार करेगा? एक-एक को भूनकर रख देंगे। यह समझना बेअक्ली की बात होगी कि लाल फौजों के कमांडर हमारे कमांडरों से ज्यादा बेअक्ल हैं। सच, पूछिए, तो उनमें से कुछ तो हमसे कहीं होशियार हैं। नहीं, वे व्येशेन्स्काया लेने की कोशिश न करेंगे। ज्यादा मुमकिन यह है कि वे नदी पार करें, जहां नदी का पानी छिछला हो,

जहां घाट हो या जहां जगत और भाड़-झंखाड़ हों। हमें ऐसी जगहों पर खास गारद बैठाल देनी चाहिए और रातों में और भी ज्यादा नजर रखनी चाहिए। कज्ज़ाकों को आगाह कर देना चाहिए कि वे दुश्मन को अपनी भनक तक न दें। साथ ही, रिजर्व फौजें ले आएं कि कोई मुसीबत टूटे तो हम लड़ तो सकें।

'तुम्हारा कहना है कि वे व्येशेन्स्काया लेने की कोशिश न करेंगे? ठीक···तो फिर वे उसपर बम क्यों बरसा रहे हैं?—एक दूसरे व्यक्ति ने पूछा।

"अच्छा हो कि यह सवाल आप उन्ही से करें—ग्रिगोरी ने जवाब दिया"—"क्या वे सिर्फ व्येशेन्स्काया पर ही बमबारी कर रहे हैं? कज़ान्स्काया और येरिन्स्काया के बारे में आपका क्या ख्याल है? उनके पास तोप के गोले गिनती में हमसे कहीं ज्यादा है। हमारे पास तो सिर्फ पांच गोले हैं, और उनके भी केस शाहबलूत के हैं।"

कुदिनोव ने हंसी का ठहाका लगाया। बोला—"ग्रिगोरी के निशाने पर तीर मारा है।"

"लेकिन,, इस तरह की बातें करने का इस वक्त कोई मतलब नहीं है।"—तीसरी बैटरी के कमांडर ने गुस्से में भरकर कहा—"हमें बातें संजीदगी से करनी चाहिये।"

"कीजिए···आपको रोकता कौन है?" कुदिनोव के माथे पर बल पड़े और वह अपनी पेटी से खिलवाई करने लगा—"आपसे बार-बार कहा गया कि गोले बरबाद न कीजिए, और उनको और नाजुक वक्त के लिए रखिये। लेकिन, नहीं, आपने एक नही सुनी, और जो कुछ सामने आया, उसी को निशाना बना दिया। यानी, लाल फौजियों की गाड़ियों तक के मामले में आपने तोपें इस्तेमाल की। ऐसे में सही बातों पर इस वक्त आपको बुरा मानने की जरूरत नहीं। आपकी हालत सचमुच हँसी बनाए जाने के लायक हैं। वेलेखोव ठीक कहता है।

ग्रिगोरी के तर्कों ने कुदिनोव को बहुत प्रभावित किया और उसने बड़े जोरदार ढंग से इस प्रस्ताव का समर्थन किया कि नदी जहां-जहां से पार की जा सके, वहां-वहां कड़ा पहरा रखा जाए और रिजर्व फौजें पास

ही रखी जाएँ ।

ग्रिगोरी के इस कथन की पुष्टि अगले दिन ही हो गई कि लाल फौजें व्येशेन्स्काया के पास नदी पार न करेंगी, बल्कि इसके लिए कोई और वाजिब जगह चुनेंगी। सुबह ग्रोमोक के सामने जमे स्क्वैड्रन के कमांडर ने रिपोर्ट दी कि लाल फौजी ग्रोमोक के सामने से नदी पार करने की कोशिश कर रहे हैं। सारी रात दुश्मन की तरफ काम होता रहा है, और पहरेदारों को इस पार उनकी भनक मिली है। वे अनगिनत गाड़ियों पर लादकर तख्ते ले आए हैं, और आरो, हथौड़ों और कुल्हाड़ियों की आवाज़ कज्जाकों ने खुद सुनी है···लाल फौजी कुछ बनाते से लग रहे हैं···—··· ।

इस पर पहले तो यह माना गया कि वे पीपों का पुल बना रहे हैं। तो, दो कज्ज़ाक नंगे, झाड़ियों से अपना सिर ढके हुए, चुपचाप कोई आधे वार्स्ट तक नदी में तैर गए। वे किनारे के एकदम पास से गुज़रे तो मशीनगन की एक आड़ के पास उन्होंने लाल फौजियों को आपस में बातें करते सुना। लेकिन पानी में कहीं पुल जैसा कोई नज़र न आया। यानी पीपे के पुल वाली बात हवाई जची।

पर, बाहर की चौकीवाले कज्ज़ाकों ने लाल फौजियों वाले किनारे पर कड़ी निगाह रखनी शुरू कर दी। पर्यवेक्षकों ने क्षण भर को भी दूरबीनों से निगाह न हटाई। पर, सुबह तड़के तक उन्हें कहीं नज़र न आया। पर थोड़ी देर बाद रेजीमेंट के सबसे अच्छे निशानेबाज ने छटते हुए अँधेरे में एक लाल फौजी को दो कसे हुए घोड़ों को किनारे की ओर ले जाते देखा।

"एक लाल फौजी किनारे की तरफ जा रहा है!" कज्ज़ाक ने अपने साथी से कहा और दूरबीन एक तरफ रख दी।

घोड़े नदी में हिले और पानी पीने लगे।

कज्ज़ाक ने राइफल साधी और होशियारी से लम्बा निशाना साधा।

गोली लगते ही एक घोड़ा एक तरफ ढह गया और दूसरा पूरी रफ्तार से ढाल से ऊपर भाग चला। लाल फौजी मृत घोड़े के बदन

से काठी को सामने को झुका। करशाक ने फिर गोली चलाई और इनके ने हमा। दूसरी तरफ, लाल फौजी तेजी से तनकर खड़ा हुआ और किनारे से पीछे भागने की कोशिश की, फिर सहसा ही मुंह के बल गिरा और हमेशा के लिए ढेर हो गया।

फिर लाल फौजियों की तैयारी की खबर पाते ही ग्रिगोरी ने अपना घोड़ा कसा और उस पर सवार होकर उस खास जगह की ओर बढ़ा। अधिकांश रास्ता उसने जंगल का चक्कर लगाकर तय किया। लेकिन अंतिम दो वर्स्ट अपना घोड़ा खुले मैदान में सरपट दौड़ाया और लाल फौजियों को गोलियों का खतरा जान-बूझ कर मोल लिया। उसने अपने घोड़े को थोड़ा आराम दिया फिर बेंतों का उस पर चाबुक सटकारा। चोट घोड़े के पुट्ठे पर पड़ी। जानवर ने अपने कान पीछे किए और चिड़िया की तरह बेंतों की झुरमुट की ओर उड़ चला। लेकिन ग्रिगोरी ने चरागाह के बीच सौ गज की भी दूरी तय न की कि नदी के दूर के किनारे से मशीनगन की आवाज आने लगी। गोलियां सीटी बजाती जमीनी गिलहरियों की तरह उसके सिर के ऊपर से सर्राटे भरती हुई गुजर गईं। 'बहुत ऊंचाई से गुजरती हैं!' रासों को झटका देते और अपना गाल घोड़े की अयाल से सटाते हुए उसने सोचा। लेकिन चालक ने जैसे कि ग्रिगोरी के मन के भाव समझ लिए। अब के उसने नीचे से निशाना साधा और गोलियां घोड़े की अगली टापों के नीचे उछल-उछल कर गिरने लगीं। इसमें धूल के बादल से उठे। धरती वसन्ती बाढ़ के पानी से अब तक गीली थी।

ग्रिगोरी रकाबों पर दबाव देकर खड़ा हुआ और घोड़े की आगे को ओर फैली हुई गर्दन के सहारे लेट सा गया। बेंतों के हरे झुरमुट उसकी ओर लपके। आधी मंजिल पार की कि सामने की पहाड़ी से उसने एक फील्ड तोप गरजी धड़ाका ऐसा हुआ कि ग्रिगोरी अपनी जगह पर हिल गया। और गोले के टुकड़े अभी हवा में उड़ ही रहे थे और गड़बड़ी की शिकार हवा के अत्याचार की सरपत की पत्तियां फिर से सीधी भी न हो पाई थीं कि तोप ने दुबारा आग उगली। धड़ाका अपने पंचम पर पहुंचकर निमिष भर को रुका? इस निमिष भर में

ही ग्रिगोरी की आखों के आगे काला बादल उमड़ा, पृथ्वी कांपी और घोडा अगले पैर के बल कहीं हवा मे भहरा पड़ा।"

विस्फोट के जोर के कारण ग्रिगोरी घोड़े से बहुत दूर जा गिरा, और इतने जोर से कि उसका पतलून घुटनों से फट गया। फिर उसने घास पर रेंगने की कोशिश की तो उसके हाथ जल गए और गाल झुलस गया।

गिरने से उसकी आखे चौंधिया गई। उस पर भी उसने खड़े होने की कोशिश की। ऊपर से मिट्टी और घास के काले-काले ढेले से बरसने लगे। ग्रिगोरी का घोडा, गोला गिरने की जगह से कोई बीस कदम के फासिले पर पडा था। उसकी गर्दन मे तो किसी तरह की कोई हरकत नहीं हो रही थी, पर उसके पैर पसीने से तर पुट्ठे और दुम बराबर काप रही थी।···

मशीनगन शांत हो गई। फिर कोई पाच मिनट तक सरपत के बीच फुदकती और चहचहाती रामचिरैयों के स्वरों के सिवाय कोई और आवाज कानों में न पड़ी। ग्रिगोरी, अपनी औघाई को दबाता अपने घोड़े की तरफ बढ़ा। उसके पैर कापते रहे और इस तरह अजीब ढग से भारी लगें, जैसे कि वह किसी कष्टदायक आसन से काफी देर तक बैठा रहा हो। उसने घोडे की काठी खोली और गोलियो के दाग़ो से भरे सरपत के पास के झुरमुट मे बीच वह पहुच भी न पाया कि मशीनगन फिर गड-गडाने लगी। लेकिन, गोलियों की सरसराहट उसके कानों तक न आई, यानी इस बार किसी और ही दिशा मे गोलिया बरसाई जाती रहीं। खैर तो ग्रिगोरी एक घटे बाद जैसे तैसे स्क्वैड्रन कमाडर की खोह तक पहुँच ही तो गया। बोला—"दुश्मन की राइफलो ने गोलिया बरसाना बद कर दिया है। लेकिन खयाल है कि वे अपना काम रात मे फिर शुरु करेंगी। हमे कारतूस चाहिए। हमारे एक-एक आदमी के पास ज्यादा-ज्यादा दो-दो क्लिपें हैं, और बस!"

"कारतूस आज शाम को पहुच जाएगे···लेकिन, दूसरे किनारे से निगाह एक लमहे को भी न हटनी चाहिए।"

"आपने कल रात ही किसी को क्यों नही भेजा?" ग्रिगोरी ने पूछा।

हमने दो आदमी भेजे थे, पर वे डर के मारे गांव तक नहीं पहुंच सके। वे किनारे के पास तक तो तैर गए, पर और आगे नहीं बढ़े। और अब वहां तक जाने के लिए किसका नाम बताओगे तुम ? काम खतरनाक है। अगर आदमी गलती से दुश्मन की किसी बाहरी चौकी से जा टकराया तो तुम अपना सारा काम तमाम समझो ! कज्ज़ाक अपने घर-गावों के पास होते हैं तो बहुत हिम्मत से काम ले नहीं पाते। जर्मनी की लड़ाई में क्रॉस जीतने के लिए उन्होंने दूर चीज की बाजी लगा दी थी, लेकिन आज सन्तरी के काम के लिए भी उन्हें भेजना चाहो तो मिन्नतें करनी पड़ेंगी। फिर यह औरतें हमारे लिए और भी परेशानी पैदा कर रही हैं। वे आ गई हैं, उन्होंने अपने-अपने आदमियों की तलाश कर ली है, और रातें वे खाइयों में उनके साथ बिताती हैं। उस पर मजा यह कि उन्हें यहां से खदेड़कर भगाया भी तो नहीं जा सकता। मैंने कल उन्हें भगाना शुरू किया तो कज्ज़ाक मुझे ही धमकाने लगे। बोले—"ज़रा मुंह बन्द रखने की कोशिश करो, वरना हम तुम्हें किनारे लगा देंगे !"

कमांडर की खोह से ग्रिगोरी सीधा खाइयों की ओर चला। दोन के किनारे से कोई पचास गज दूर उसे टेढ़ा-मीधा रास्ता पार करना पड़ा। नये शाहबलूतों और देवदारुओं के घने पेड़ों ने दमदमे के पीले ढूह को दुश्मन की नजरों से पूरी तरह बचा रखा था। सचार-खाइयों ने आगे के मोर्चे को कज्ज़ाकों के आराम की जगहों से जोड़ रखा था। खाइयों के बाहर मछलियों की सूखी खालों, भेड़ के गोश्त की हड्डियों, सूरजमुखी के बियों के छिलकों, ख़रबूजे के छिलकों और दूसरी जूठनों के अम्बार लगे हुए थे। पेड़ की शाखों पर टंगे हुए थे अभी-अभी धोये गए मोजे, जिनेत के ड्रॉर, पैरों की पट्टियां और जनानी कमीजें और स्कर्टें।

ऐसे में एक जवान औरत ने अपनी निंदासी आंखों से पहिली खाइयों में से एक से झांककर देखा और फिर जमीनी गिलहरी की तरह गायब हो गई। दूसरी खाई से धीरे-धीरे गाने की आवाज आई। कई स्वर किसी के पंचम स्वर का साथ देने लगे। तीसरी खाई के प्रवेश के पास एक सयानी उम्र की औरत साफ-सुथरे कपड़े पहिने बैठी दीखी। उसकी गोद में दीख पड़ा सोते हुए कज्ज़ाक का भूरे बालों से भरा सिर।

इस तरह आदमी चैन से आराम करता रहा, और औरत या तो अपने बुड्ढे के सिर से ढूंढ-ढूंढकर काली जुएँ निकालती और लकड़ी के कंघे पर रख-रखकर मारती रही या उसके चेहरे पर बैठने वाली मक्खियाँ उड़ाती रही। यानी इस तरह विद्रोही पक्ष की इस कम्पनी के आसपास का वातावरण इतना शांत रहा कि अगर कोई दोन के दूर के किनारे से आती मशीनगन की गड़गड़ाहट या तोप के गोलों के मिले-जुले धड़ाके न सुनता और केवल इन खाइयों के लोगों को देखता तो उसे ऐसा लगता जैसे कि सूखी घास काटनेवालों का दल यहाँ आया है, और इस समय आराम कर रहा है।

लड़ाई के अपने पाँच वर्षों के जीवन में ग्रिगोरी ने ऐसा असाधारण मोर्चा पहले कभी न देखा था। उसके होंठों पर हठात् मुस्कान दौड़ गई। वह इन खाइयों की बगल से गुज़रा तो उसे औरतें बराबर मिलीं और अपने पतियों की सेवा तरह-तरह से करती मिलीं। वे उनके कपड़ों की मरम्मत करती लिनेन धोतीं, खाना पकाती और बरतन-भांडे साफ करती नजर आईं।

फिर, ग्रिगोरी स्क्वैड्रन कमांडर की खाई में वापिस आया तो बोला, "यहाँ तो आप सबको बड़ा आराम है···बड़ी ऐश है···है न ?"

स्क्वैड्रन कमांडर ने खीसें ला दीं, "लोगों को शिकायत करने का मौका नहीं मिलना चाहिए।"

ग्रिगोरी के माथे पर बल पड़े, "हाँ, लेकिन ऐश ज़रा कुछ ज्यादा है। इन औरतों को फौरन ही यहाँ से निकाल बाहर कीजिये। यह जगह आपके घर का अहाता है, गाँव का बाज़ार है या क्या है ? ऐसे में होगा यह कि लाल-फौजें नदी पार कर इस तरह आ धमकेंगी और आपको आहट तक न मिल पायेगी। आप अपनी औरतों पर सवार हाँफ्ते ही रह जायेंगे। कुछ नहीं साँझ का धुँधलका होने के पहले-पहले इन्हें यहाँ से हाँकिये। मैं कल फिर यहाँ आऊँगा और अगर उस समय यह समीज़ें और स्कर्टें यहाँ लहराती नज़र आ गईं तो आपका सिर तोड़कर रख दूंगा।"

"आप ठीक कहते हैं" आदमी ने सहमति प्रकट करते हुए कहा, "मैं खुद औरतों के यहाँ रहने के खिलाफ हूँ, लेकिन इन कज्ज़ाकों का आखिर क्या कीजिये ? कानून-कायदा तो जैसे कोई रह ही नहीं गया है। औरतें

अपने आदमियों से मिलना चाहती थी। हमें तीन महीने लड़ते हो गये हैं···" उसका चेहरा एकदम लाल हो उठा और एक जनाने लाज ऐप्रन छिपाने के लिये वह तोशक पर बैठ गया। इसके बाद वह ग्रिगोरी की ओर मे मुड़ा और उसने एक कोने से भाकती अपनी पत्नी की भूरी आँखों में आँखें डालकर उसे पुकारा। औरत एक बोरे के पर्दे के पीछे खड़ी थी। पर्दा खाई के एक कोने में पड़ा हुआ था।

: ६२ :

अक्सीन्या व्येशेन्स्काया आई और अपनी चाची के साथ जा ठहरी। चाची बस्ती के बाहरी इलाके में रहती थी, और उसका मकान नये गिरजे से बहुत दूर न था।

सो अक्सीन्या आधे दिन जहाँ-तहाँ ग्रिगोरी की तलाश करती रही, लेकिन पता चला कि अभी तो वह व्येशेन्स्काया पहुंचा ही नहीं। पर, दोपहर के बाद सड़क-गलियों पर इस तरह गोलियाँ बरसती रहीं और गोले आ-आकर फटते रहे कि उसकी घर से बाहर निकलने की हिम्मत हो न पड़ी।

"मुझसे तो कहा कि तुम व्येशेन्स्काया पहुँचो, हम लोग साथ-साथ रहेंगे···और खुद न जाने कहाँ चला गया!" अक्सीन्या ने गुस्से में आकर सोचा और सोने के कमरे में बड़े बक्से पर लेटी अपने होंठ चबाती रही। होंठों में अब भी दम था हालांकि पहले जैसा रंग न रह गया था। बूढ़ी चाची खिड़की पर बैठी मोजा बुन रही थी, और हर फंदे के बाद रह-रह कर क्रॉस बनाने लगती थी।

इसी समय खिड़की का शीशा झनझनाकर जमीन पर गिरा और टुकड़े-टुकड़े हो गया। बुढ़िया भुनभुना उठी, "उफ···प्रभु ईसा···हालत बहुत ही बुरी है···बहुत ही बुरी! और मेरी तो समझ में ही नहीं आता कि यह लड़ाई आखिर हो क्यों रही है? इन लोगों को एक-दूसरे से क्या दुश्मनी है?"

"चाची, खिड़की से हट आओ···कहीं तुम्हें चोट-चपेट न आ जाए।" अक्सीन्या ने आग्रह किया। जवाब में बुढ़िया ने चश्मे के नीचे से उस पर

सवाल भरी निगाह डाली और गुस्से से उबलती हुई बोली, "अक्सीन्या, तू बेवकूफ है···बेवकूफ ! मैं क्या उन लोगों की कोई दुश्मन हूँ ? मुझपर वे लोग गोली आखिर क्यों चलायेंगे ?"

"चाची, यों ही गोली लग सकती है और तुम्हारी जान जा सकती है···वे यह थोड़े ही देखते है कि उनकी गोली कहाँ लग रही है और किस को लग रही है।"

"मुझे मार डालेंगे वे लोग ! वे यह नही देखेंगे कि किसे उडा रहे हैं गोली से ? वे कज्जाकों को गोली मारते हैं। कज्जाक उनके दुश्मन हैं। मैं बूढी बेवा हूँ···मुझे भला वे किसलिए गोली मारेंगे ? मैं सोचती हूँ कि वे भी यह तो सोचते ही होगे कि अपनी राइफलों और तोपों का निशाना किसे बना रहे हैं !"

दोपहर के समय ग्रिगोरी अपने घोड़े की गर्दन से सटा सडक से गुजरा। अक्सीन्या ने उसे देखा और वह भागी-भागी बाहर लताओं से ढकी बरसाती मे आई। चिल्लाई, "ग्रीशा···ग्रीशा !" लेकिन, ग्रिगोरी नुक्कड़ मे जाकर अदृश्य हो गया और उसके घोडे की टापो से उठी धूल धीरे-धीरे बैठ गई। पीछे दौडना बेकार था। अक्सीन्या सीढियों पर खडी क्रोध के आँसू बहाती रही। चाची ने पूछा, "इधर से स्तेपान घोडा दौड़ाता गया है क्या ? तुम इस तरह बौखलाकर भागी क्यों ?"

"गाँव का एक आदमी था।" अक्सीन्या ने आँसुओ के बीच जवाब दिया।

"लेकिन, तुम इस तरह रो क्यों रही हो ?" चाची ने उत्सुक होते हुए पूछा।

"तुम यह जानना क्यो चाहती हो ? तुम्हारा इससे कोई मतलब नही।"

"हूँ···यानी, मेरा उससे कोई मतलब न हो ! इसके मानी यह हैं कि घोडे पर उछलता तुम्हारा कोई यार गया है इधर से। यो ही तो तुम इस तरह ढरका बहाओगी नही। मेरे सिर के बाल धूप मे सफेद नही हुए हैं।"

और फिर शाम होने के जरा पहले प्रोखोर मकान मे दाखिल हुआ।

अक्सीन्या ने उसकी आवाज सुनी तो खुशी से खिल उठी और सोने के कमरे से चिल्लाती हुई दौड़ी आई, "प्रोखोर !"

प्रोखोर बोला, "लड़की, तूने तो मुझे हलाकान कर मारा। तेरी तलाश करते-करते मेरे पैर दर्द करने लगे हैं। और प्रिगोरी है कि बिल्कुल पगला रहा है। हर तरफ गोलियाँ बरस रही हैं, हर जिन्दा शै कहीं-न-कहीं अपना सिर छिपाये पड़ी है, और ऐसे में वह कहता है कि जाओ, अक्सीन्या को ढूंढकर लाओ, वरना तुम्हारी कब्र बन जायेगी।"

अक्सीन्या ने प्रोखोर की आस्तीन पकड़ी और उसे बरसाती में खींच लाई। पूछा, "शैतान कहीं का, वह खुद कहाँ है ?"

"हूँ...वह कहाँ नहीं है ? मोर्चे की पाँत से पैदल आया है। दुश्मनों ने उसका घोड़ा मार डाला है। तो आया तो बददिमाग, कुतिया की तरह चीखता चला आया। पूछने लगा, "अक्सीन्या मिली।" मैंने कहा, "कहाँ मिलेगी ? मैं उसे पैदा तो कर नहीं दूँगा।" उस पर बोला, "औरत कोई सुई नहीं है कि खो जायेगी !" फिर कैसा गरजा वह मुझ पर ! आदमी की शक्ल में बिल्कुल भेड़िया हो रहा है। लेकिन, तुम चलो न !"

फिर तो क्षण भर में अक्सीन्या ने अपनी छोटी-सी गठरी बाँधी और जल्दी-जल्दी अपनी चाची से रुखसत लेने लगी। बुढ़िया ने पूछा, "स्तेपान ने बुलवाया है तुम्हें ?"

"हाँ, चाची।"

"खैर, तो उससे मेरा प्यार कहना। खुद यहाँ क्यों नहीं चला आया ? आता तो थोड़ा-सा दूध पी लेता और दो-चार पकौड़ियाँ मुँह में डाल लेता···बची रखी हैं।"

अक्सीन्या ने अपनी चाची के अन्तिम शब्द नहीं सुने। वह भागती हुई बाहर आई और सड़क पर इतनी तेजी से दौड़ी कि हाँफने लगी। आखिरकार प्रोखोर तक को उससे धीरे-धीरे चलने को कहना पड़ा। बोला, 'मेरी बात सुनो। मैं जवान था तो खुद भी लड़कियों के पीछे दौड़ा करता था। लेकिन उस वक्त भी तुम्हारी तरह हड़बड़ी में मैं कभी नहीं रहता था। जरा सब्र नहीं कर सकती तुम ? कहीं आग लग रही है या क्या हो रहा है ? मेरी अपनी साँस फूल रही है···तुम मामूली लोगों को

तरह कभी कुछ कर ही नहीं सकतीं क्या ?"

और मन-ही-मन बोला, "फिर मिल गये यह देखो ! अब तो इन्हे शैतान भी एक दूसरे से अलग नहीं कर सकता ! यह लोग तो मज़ा करेंगे। लेकिन मेरा क्या होगा···मैं जो धधकती आग के बीच इस कुतिया को जगह-जगह ढूढ़ता फिरा···ईश्वर न करे कि नताल्या को कभी इसकी सुनगुन भी मिल जाए, वरना मेरी बोटी-बोटी काटकर रख देगी। मैं जानता हूँ कि उसकी रगो मे कौन-सा खून बहता है। कोरशुनोव खान्दान के लोगों के साथ मज़ाक करना मुमकिन नहीं। काश कि प्यास इतनी तेज न लगती और मैं पानी पीने के लिए रुककर अपनी राइफल से हाथ न धो बैठता ! मैं उसके पीछे मारा-मारा फिरा, मगर मेरा तो काम हो गया ! अब अपनी फिक्र यह दोनो आप करे।"

···ग्रिगोरी जिस मकान मे था, उसकी झिलमिलियाँ बिल्कुल बन्द थी, और बावर्चीखाने मे एक मोमबत्ती धुआ देती हुई जल रही थी। ग्रिगोरी मेज के किनारे बैठा था, उसने अभी-अभी अपनी राइफल की सफाई खत्म की थी, और अब वह अपनी पिस्तौल की नाली रगड रहा था।

ठीक इसी समय दरवाजा खटका और अक्सीन्या ड्योढ़ी पर खडी नज़र आई। उसकी भूरी छोटी-छोटी भौहों से पसीना चू रहा था और उसकी आखें क्रोध से फैली हुई थीं। चेहरे से ऐसा उन्माद टपक रहा था कि उसपर निगाह डालते ही ग्रिगोरी का दिल खुशी से उछलने लगा।

"तुमने मुझे पैगाम भेजकर यहाँ बुलवाया और खुद गायब ही गये।" औरत ने हांफते हुए कहा। अपने प्यार के शुरू के दिनों की तरह ही इस समय भी उसके लिए दुनिया मे ग्रिगोरी के अलावा और किसी चीज का अस्तित्व न रहा था। वह सामने नही था, तो उसके लिए सारी दुनिया मर गई थी, और वह सामने नज़र आ गया था तो दुनिया नये सिरे से अपने अतूठे साचे मे ढल गई थी।

सो, प्रोखोर के सामने होने के बावजूद वह ग्रिगोरी की ओर लपकी जगली हॉप-लता की तरह उसके गले मे लिपट गई और उसके रूखे गाल, नाक और होंठ बार-बार चूमने लगी। इस बीच रोते और सिसकते हुए

उसने बुदबुदाकर कुछ कहा भी।

"मैंने अपनी जिन्दगी चौपट कर दी···उफ, मैंने कितना सहा, मेरी साँस···मेरे राजा···मेरे प्यारे···मेरे ग्रीशा।"

"ठीक है···तो सुनो तो ''अरे रुको तो···अक्सीन्या, ज़रा साँस तो लो!" ग्रिगोरी ने चेहरा मोड़कर प्रोखोर की नज़र बचाते हुए घबड़ाहट से कहा। फिर उसने अक्सीन्या बेंच पर बैठला, उसका शॉल उतारा, और उसके बिखरे हुए बाल ठीक किये। बोला—

'तुम···"

"मैं तो वैसी ही हूँ, हमेशा की तरह। लेकिन तुम···"

"नहीं, सच मानो, तुम···तुम तो पागल हो बिल्कुल।"

अक्सीन्या ने उसके कंधे पर हाथ रखे, रोने के साथ-ही-साथ मुस्कराई और जल्दी-जल्दी बोली, "लेकिन, तुमने ऐसा किया कैसे? तुमने मुझे बुलवाया। मैं हर चीज़ छोड़छाड़ कर भागी-भागी पैदल आई और तुम खुद यहाँ नहीं रहे। तुम घोड़ा दौड़ाते रास्ते से गुज़रे तो मैंने तुम्हें ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ें लगाईं। मगर, तुम नुक्कड़ से मुड़ गये। दुश्मन तुम्हें मार भी तो सकता था। अगर ऐसा हो जाता तो मैं तुम्हें आखिरी बार देखने को भी तरस जाती।"

इसके साथ ही उसने कुछ और भी कहा—इतना कोमल कि शब्दों में बंध न सके···बहुत ही नारी सुलभ और बुद्धिहीनता से भरा। साथ ही वह उसके झुके हुए कंधे सहलाती और अपनी प्यार भरी आँखें उसकी आँखों में डालती रही। उसकी निगाहें जाल में फंसे जानवर की निगाहों-सी लगीं और उनमें इस तरह परेशानी के साथ मायूसी टपकी कि ग्रिगोरी का दिल कचोटने लगा। उसकी ओर देखने में उसकी हिम्मत जवाब देने लगी। वह अपनी पलकें नीची कर बरबस मुसकराया और फिर चुप हो रहा। दूसरी ओर, औरत के गालों की गुलाबी बराबर गहराती गई और उसकी पुतलियों के आगे जैसे किसी नीली धुंध का पर्दा तनता गया।

प्रोखोर बिना कुछ कहे बाहर चला आया। बरसाती में उसने थूका और थूक को पैर से रगड़ दिया।

"पागल है बिल्कुल!" सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए उसने एक निश्चय

के साथ मन-ही-मन कहा और जान-बूझकर दरवाज़ा खड़ाक से मारा।

: ६३ :

दो दिनों तक वे दोनों आसपास की हर चीज़ से बेखबर इस तरह जीते रहे कि न उन्होंने दिन को दिन समझा और न रात को रात। इस बीच बुद्धि पर पर्दा डालने वाली, थोड़ी-थोड़ी देर की नींद के बाद ग्रिगोरी जगा तो धुंधलके में अक्सीन्या की आँखें इस तरह अपने ऊपर गड़ी देखीं, जैसे कि वह उसके नाक-नक्शे घोटकर पी जाना चाहती हो। आम तौर पर वह कोहनी के बल गाल को हथेली से साधे लेटी रही और ग्रिगोरी को लगभग एकटक देखती रही।

"इस तरह क्या घूर रही हो ?" ग्रिगोरी ने पूछा।

"मैं तुम्हें जी भर देख लेना चाहती हूँ। मेरा दिल कहता है कि दुश्मन तुम्हें मार डालेंगे।"

"अगर तुम्हारा दिल ऐसा कहता है तो देख लो जी भर।" ग्रिगोरी मुस्कराया।

अपने आने के बाद तीसरे दिन वह पहिली बार बाहर निकला। कुदिनोव ने सदेश पर सदेश भेजे और उन्न कान्फ्रेंस के लिए स्टाफ हेड-क्वार्टर्स में बुलाया था, लेकिन उसने कहला दिया था कि कान्फ्रेंस मेरे बिना भी हो सकती है। प्रोखोर ने इस बीच अपने लिए नया घोड़ा हासिल कर लिया और रातो रात खाइयों पर जाकर काठी ले आया था। सो ग्रिगोरी को बाहर जाने के लिए तैयार होता देखकर अक्सीन्या ने चौंककर पूछा, "तुम जा कहाँ रहे हो ?"

"मैं तातारस्की जाकर यह देखना चाहता हूँ कि हमारे लोग गाँव की किस तरह हिफाजत कर रहे हैं, घरवाले कहाँ हैं।" उसने जवाब दिया।

वह काँपने लगी और उसने अपने भूरे कधों पर शॉल डाल लिया, "अपने बच्चों की याद आ रही है ?"

"हाँ, आ रही है।"

"ग्रिगोरी, देखो, तुम न जाओ···सुनते हो ?" उसने मिन्नत की और उसकी आँखें लौ देने लगी, "क्या तुम्हारे घर के लोग तुम्हें मुझसे ज्यादा

प्यारे हैं ? क्यों ? तुम इस तरफ भी झुकते हो और उधर भी टलते हो। तुममुझे भी क्यों नहीं साथ ले लेते···मैं नताल्या के साथ जैसे-तैसे निभा लूंगी···खैर···जाना ही चाहते हो तो जाग्रो, लेकिन फिर लौटकर मेरे पास न ग्राना। मैं इस तरह का बरताव नहीं चाहती···बिल्कुल नहीं चाहती।"

ग्रिगोरी चुपचाप निकलकर ग्रहाते में ग्राया ग्रौर ग्रपने घोड़े पर सवार हो गया।

तातारस्की की पैदल फौज खाइयाँ खोदने के मामले में जरा ढीली रही।

"बेकार की बकवास है इतनी।" ख्रिस्तोन्या गरजा, "ग्राखिर कहाँ समझा जाता है हमें···जर्मनी के मोर्चे पर ? लड़को, सिर्फ घुटनों-घुटनों नीची खाइयाँ खोदो···इससे गहरी खाइयाँ ऐसी कड़ी जमीन में खोदने की हमसे उम्मीद ही किस तरह की जाती है। कुदाल तो कुदाल यह जमीन तो रंभे से भी नहीं टूटेगी।"

फिर उसकी सलाह पर बायें किनारे के ढाल पर सिर्फ लेट रहने के लायक खाइयाँ खोदी गईं ग्रौर जंगल में गढों की खोदाई की गई।

"इस वक्त हमारी हालत ढेर की ढेर जमीनी गिलहरियों की सी हो रही है।" कभी निराश न होने वाले ग्रनीकुश्का ने एलान-सा किया, "ग्रब हम खरहोंवाले बाड़ों में रहेंगे ग्रौर घास खाएँगे। पैनकेक ग्रौर क्रीम, गोश्त ग्रौर पकोड़ियाँ बहुत खाईं···ग्रब तिन पत्तियाँ खानी पड़ेंगी, क्या ख्याल है ?"···

पर लाल-फौजियों ने तातारस्की के लोगों को बहुत तकलीफ न दी। गाँव के सामने बैटरियाँ नहीं रहीं। केवल बीच-बीच में ही दाहिने किनारे से एक मशीनगन, खाई से झाँकते एक पर्यवेक्षक के सिर पर रह-रहकर गोलियाँ बरसातीं ग्रौर फिर काफी देर के लिये सन्नाटा हो जाता।

लाल-सेना की खाइयाँ पहाड़ी पर रहीं ग्रौर उस सेना के लोग भी जब-तब ही गोलियाँ चलाते रहे। पर, वे गाँव-गाँव में जब भी गये रात, में गये ग्रौर उस समय भी बहुत देर तक वहाँ न ठहरे।

ग्रिगोरी शाम होते-होते ग्रपने गाँव की चरागाह के पास पहुंच गया।

यहाँ की हर चीज उसकी जानी-पहचानी थी···सो, हर पेड ने उसकी सोई हुई यादें जगाई···सडक 'बवाँरी घाटी से होकर गुजरी···यहाँ सत पीतर दिवस पर, चरागाहों के बटवारे के बाद, कज्जाक हर साल वोदका पीते थे···वह अलेक्सई जगल से निकला···बहुत-बहुत साल पहिले, इसी जगल मे, तातारस्की गाव के अलेक्सइ नाम के कज्जाक की गाय पर भेडियों ने हमला कर दिया था। अब अलेक्सेइ को मरे एक जमाना हो चुका था। कब्र के पत्थर पर खुदे शब्दों की तरह उसकी याद भी लोगों के दिमाग से मिट गई थी और उसके पडोसी और नाते-रिश्तेदार उसका उपनाम तक भूल गये थे। लेकिन, उसके नाम का लहलाता हुआ जगल अब तक यहाँ से वहाँ तक फैला हुआ था और उसके शाहबलूत और एल्म के पेड़ इस समय भी आकाश चूमते थे···यहाँ से तातारस्की के कज्जाक, घर की चीजों के लिए पेड काटकर लकडी ले जाते। लेकिन हर वसन्त में ठूँठों के आसपास नये कल्ले फूटने लगते। फिर एक-दो साल पेड चुपचाप बढ़ते रहते। इसके बाद गरमी आती तो अलेक्सेइ के जगल के पेड अपनी शाखाओं के हाथ बढाने लगते। पतझड़ आता तो शाहबलूत के पेड़ों की पत्तियों कर सोना मढ देता।

गरमी मे काली बेरी की गभिन झाडियाँ गीली जमीन पर दोहरी हो उटती और पुराने एल्मों के सिरो पर रग-बिरगी मँगेपाइ चिड़ियाँ और लकडफोड़ेव अपने घोंसले बना लेते। पतझड़ के जमाने में हवा शाहबलूत के फलों और झरी हुई पत्तियों की बास से भरी रहती तो जंगली मुर्गे कहीं और जाते हुए, राह मे इस छोटे-से जगल मे आते। पर, जाड़े मे बर्फ के पसारे पर सिर्फ लोमडी के पैरों के गोल निशान नजर आते।···ग्रिगोरी लोमडियाँ फंसाने के लिए अक्सर ही जाड़े में यहाँ आता······

सो, ग्रिगोरी इस समय पुराने रास्ते से निकला। रास्ते के दोनों ओर पेड थे और रास्ते मे पेडों की छाया की तरी थी।···फिर वह 'काली-चोटी' की तरफ बढा तो यादें शराब के नशे की, तरह उसके दिमाग को जकडने लगीं। जहाँ अपने बचपन मे उसने अक्सर जगली बत्तखों का शिकार किया था वहीं आज देवदारु के मौन पेड़ थे। 'गोल-तालाब' पर तो वह सुबह से शाम तक बैठा बसी से मछलियाँ फंसाता रहता था। जरा

दूर पर गुलाब का एक अकेला पुराना झाड़ था। झाड़ मेलखोव परिवार के अहाते में नजर आता था और ग्रिगोरी हर पतझर में अपने मकान की सीढ़ियों पर खड़ा होकर उसे देख कर खुश होता था। दूर से ऐसा लगता था जैसे कि वहाँ आग की लपटें उठ रही हों। ······

ग्रिगोरी ने शान्त उदास मन से चारों ओर नजर दौड़ाकर अपने बचपन से जुड़ी एक-एक चीज हसरत से देखी। उसका घोड़ा, अपनी दुम से डाँस और मच्छर उड़ाता धीरे-धीरे कदम-चाल से चला। घास की पत्तियाँ हवा के सामने झुक गईं और चरागाह में धब्बेदार परछाइयाँ लहरें लेने लगीं।

वह तातारस्की की पैदल कम्पनी वाली खाइयों की ओर बढ़ा और उसने ग्रिस्तोन्या से अपने पिता को बुलावा भेजा। बूढ़ा पैन्तेली मचकता भागा आया।

"मेरा आदर लो चीफ!" बूढ़े ने पास आते हुए जोर से कहा।

"हलो, पापा!"

"घरवालों से मिलने आये हो?"

"हाँ, अब तक तो निकलना मुमकिन नहीं हुआ। खैर, तो घर के लोग कैसे हैं? माँ और नताल्या कहाँ हैं?

पैन्तेली ने हाथ लहराया और उसका चेहरा सिकुड़ उठा। साँवले गाल पर एक आँसू ढलक आया। ग्रिगोरी ने तुरन्त ही उत्सुकता से पूछा, "क्यों बात क्या है? क्या हुआ?"

"नताल्या पिछले दो दिनों से बिस्तर पर पड़ी है। लगता है, टाइफस है। और बुढ़िया उसे अकेला छोड़ती नहीं···लेकिन, घबड़ाने की ऐसी कोई बात नहीं है। वे लोग ठीक ही हैं।"

"और बच्चे कैसे है? पोल्या कैसा है···मीशा कैसा है?"

"बच्चे भी वहीं हैं।" लेकिन, दून्या इस पार चली आई है। अकेली लड़की, तुम जानते हो, उसे गाँव में रहने में डर लगा। बस, तो अनीकुश्का की बीवी के साथ इधर आ गई। मैं इस बीच दो बार घर हो आया हूँ। यानी, रात में चुपचाप नाव ली और उन्हें देख आया। नताल्या की तबीयत काफी खराब है, पर बच्चे ठीक हैं—ऊपर वाले

की मेहरबानी है···नताल्या बेहोश है जब मैंने उने देखा था तो बुखार इतना था कि होंठों पर खून की पपड़ी जम गई थी।

बूढ़ा नाराज हो उठा और उसकी कांपती हुई आवाज में खीझ और फटकार घुल गई—"और, तुम आखिर कर क्या रहे थे ? तुम उन्हे वहाँ से हटाकर इस पार पहुँचाने के लिए खुद आ नहीं सकते थे ?"

"मेरे मातहत पूरी की पूरी एक डिविज़न है। मुझे उसके पार जाने का पूरा इन्तज़ाम करना और देखना पड़ा।" ग्रिगोरी ने ज़रा गरमाते हुए जवाब दिया।

"हमने व्येशेन्स्काया के तुम्हारे रग-ढंग की कहानिया सुन रखी हैं···लगता है कि अब तुम्हें अपनी बीवी और अपने बच्चों की जरूरत नही। उफ, ग्रिगोरी अगर तुम अपने खानदान के लोगों का ख्याल नही करना चाहते, तो न करो, मगर उस प्रभु का तो ख्याल करो। मैंने इधर से नदी पार नहीं की। वरना तुम सोचते हो कि, मैं उन्हें वही छोड आता ? मेरा ट्रुपवेलान्स्काया मे था, और जब तक हम यहाँ पहुँचे-पहुँचे, लाल-फौजी तातारस्की मे घुस आये।"

"व्येशेन्स्काया मे मैंने क्या किया और क्या नही इससे तुम्हें कुछ लेना-देना नही ! और, तुम···' ग्रिगोरी की आवाज़ फट गई और साफ नहीं रही।

"मेरा कोई खास मतलब नही था !" बूढा सकपका उठा और उसने थोडे फासिले पर जमा होते कज्ज़ाकों की ओर गुस्से से भरकर देखा। बेटे से बोला—"लेकिन, जरा धीरे से बोलो। हमारी बातें उन लोगों के कानों मे पड़ सकती हैं।" और, बूढे ने खुद अपना स्वर काफी नीचा कर लिया—"तुम अब बच्चे नहीं रहे। सारी बातें तुम बेहतर समझ सकते हो। मगर, अपने बच्चों की फिक्र न करो। प्रभु चाहेगा तो नताल्या जल्दी ही अच्छी हो जायेगी। जहाँ तक लाल-फौजियों का सवाल है, वे कोई खास तकलीफ नहीं दे रहे। उन्होंने हमारे बछड़े को मार डाला। लेकिन, यह कोई ऐसी बड़ी बात नही है। वैसे उन लोगों ने रहम से काम लिया है और वे हम-लोगों को नुकसान नही पहुँचायेंगे। कहने को वे नाज काफी उठा ले गये हैं···मगर, यह है कि लड़ाई में नुकसान होता ही है।"

"शायद अब हम उन लोगों को इस पार ला सकते हैं···क्यों ?"

"मैं ऐसा नहीं सोचता···नताल्या इतनी बीमार है, उसे हम कहाँ ले जा सकते हैं ? ऐसी हालत में उसे कहीं भी ले जाना बड़ा ही खतरनाक होगा। वे लोग यहाँ ही ठीक हैं। तुम्हारी माँ पूरी देख-रेख कर रही है और अब पहले की तरह मुझे उधर की उतनी फिक्र नहीं है।··· लेकिन हाल में गाँव में कई जगह आग लगा दी गई है।"

"आग में किस-किसके घर जल गये ?"

"सारा चौक तो जल ही गया है···बड़े तिजारती लोगों के मकान भी जलकर राख हो गए हैं। कोरशुनोव के घर का तो नाम-निशान भी बाकी नहीं बचा है। लुकीनीचिना तो लाल-फौजियों के आने के पहले ही वहाँ से निकल-ली लेकिन बूढ़ा ग्रीश्का फार्म की देख रेख के लिए वहीं रह गया। तुम्हारी माँ से बोला—"मैं अपना अहाता छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगा, और ईसा के दुश्मन मेरे पास फटकेंगे भी नहीं। वे क्रॉस से डरते हैं।···तुम तो जानते हो कि उस मामले में उसकी सनक किस हद तक बढ़ती रही है। लेकिन, लाल फौजियों को क्रॉस से किसी तरह का कोई डर नहीं लगा, और घर और फार्म की सभी इमारतें जला दी गईं। पता नहीं कि खुद ग्रीश्का का क्या हुआ ! वैसे तो उसका मरने का वक्त भी था। बीस साल पहले उसने अपने लिये ताबूत तैयार करवाया था, लेकिन मौत ने उसे नहीं पूछा तो आज तक नहीं पूछा···और, तुम जानते हो, इस तरह गाँव को जलाकर राख कर रहा है तुम्हारा ही एक दोस्त !"

"कौन-सा मेरा दोस्त ?"

"मीशा कोशेवोई···मौत ले जाये उसे।"

"नहीं, वह ऐसा नहीं करेगा।"

ऊपर वाला जानता है कि किया तो यह सब उसी ने है ! वह तुम्हें पूछने हमारे यहाँ आया था। तुम्हारी माँ से कहने लगा—"लाल-फौजो नदी पार कर दूसरी तरफ पहुँचेंगे तो सबसे-पहले तुम्हारे ग्रिगोरी के गले में फंदा डाला जायेगा। सबसे ऊँचे शाहबलूत पर लटकाया जायेगा उसे। मैं उसके बदन से अपनी तलवार गंदी नहीं करूँगा।" उसने मुझे भी पूछा। बोला—"वह दूसरा शैतान कहाँ चला गया ? उसे तो यहाँ स्टोव

के ऊपर की टांड पर पडा होना चाहिये था। मुझे पैन्तेली मिल जायेगा तो मैं उसे मारुँगा नही, उस पर इतने कोड़े जमाऊँगा कि उसका दम अपने आप निकल जायेगा। ऐसा निकला है वह मुग्रर का बच्चा! वह गाँव भर मे तिजारतियों और पादरियो के घर जलाता फिरता है। कहता है—इवान-अलेक्सेयेविच और स्तॉकमैन की जानों के बदले मैं पूरा का पूरा व्येशेन्स्काया जलाकर राख कर दूंगा'···यह कहता है वह!"

ग्रिगोरी कोई आधे घंटे तक और अपने पिता से बातें करता रहा और फिर अपने घोडों की तरफ बढ़ गया। बूढे ने इस बीच अकसीन्या का नाम तक नही लिया, इस पर भी ग्रिगोरी मन ही मन उदास हो उठा। सोचने लगा—'अगर पापा जानते हैं तो और लोगों ने भी इस बारे मे सुना ही होगा। आखिर इन सब को यह राज बतलाया किसने? प्रोखोर के सिवाय और किसने हमे एक साथ देखा है? कही ऐसा तो नही है कि स्तेपान को भी इसकी जानकारी हो?" उसे अपने ऊपर खीझ भी आई और शर्म भी और वह दांत पीसने लगा।

उसने कज्जाकों से थोडी सी बातें की। अनीकुश्का मजाक और स्वेंड्रन के लिए कुछ बाल्टी वोदका की मांग करता रहा। बोला—"वोदका जरूर आये, फिर कारतूस आये और चाहे न आये।" और उसने गर्दन पर उंगली का नाखून चटकाया।

ग्रिगोरी ने ख्रिस्तोनया और गाँव के अपने दूसरे साथियों को अपने पास से सिगरेटें दीं। फिर वह घोडे पर चढ़ने को हुआ ही कि उसने स्तेपान अस्ताखोव को अपनी ओर आते देखा। स्तेपान आराम से धीरे-धीरे आया और उन दोनों के बीच अभिवादन का आदान-प्रदान भी हुआ, लेकिन उसने ग्रिगोरी से हाथ नही मिलाया।

ग्रिगोरी ने विद्रोह छिड़ने के बाद आज पहली बार उसे देखा तो वह चिन्ता और उत्सुकता मे उसकी ओर देखता रहा। मन ही मन विस्मय मे सोचता रहा—"क्या उसे चीज की जानकारी है?" परन्तु, स्तेपान के खूबसूरत चेहरे पर पर किसी तरह की कोई परेशानी न दीखी। उल्टे वह प्रसन्न नजर आया।

ग्रिगोरी ने चैन की सांस ली।

. ६४

ग्रिगोरी अगले दो दिनों तक मोर्चे के अपने पहिले डिविजन के जमाव वाले हिस्सों का दौरा करता रहा। लौटा तो उसे पता चला कि स्टाफ-कमान ने अपना प्रधान कार्यालय हटा कर व्येशेन्स्काया से थोड़ी दूर चोटनी में जमा लिया है। सो, थोड़ी देर तक आराम करने और अपने घोड़े को पानी पिलाने के बाद वह सीधे उस गाँव की तरफ रवाना हुआ।

कुदिनोव ने खुशी से मिलकर उसका अभिवादन किया और अपने होंठों की मुस्कान में चुनौती घोलते हुए उसकी ओर घूर कर देखा—"हाँ, तो ग्रिगोरी-पन्तेलेयेविच, जरा बतलाओ कि इधर तुमने क्या-कुछ देखा, तुम किस-किस से मिले ?"

"मैं कज्जाकों से मिला और मैंने नदी के पार लाल-फौजियों को देखा।" ग्रिगोरी ने जवाब दिया।

"तब तो तुमने न कुछ ज्यादा देखा और न कुछ ज्यादा सुना। तुम्हें *मालूम है, तीन हवाई जहाज वहाँ कारतूस और चिट्ठियां लेकर आ चुके हैं।*"

"और, आपके दोस्त जेनेरल सिदोरिन ने क्या लिखा है ?" ग्रिगोरी ने पूछा।

"तुम्हारा मतलब मेरे पुराने दोस्त सिदोरिन से है ?" कुदिनोव उसी लहजे में बात करता रहा—"उसने लिखा है कि हम अपनी जगह मजबूती से डटे रहें और लाल-फौजियों को नदी पार न करने दें। साथ ही उसने यह भी लिखा है कि दोन की फौज अब आखिरी हमला करने ही वाली है।"

"सुनने में बात खासी अच्छी लगती है।" ग्रिगोरी ने मजाक बनाया।

उसी समय कुदिनोव अचानक ही गम्भीर हो उठा— 'दोन-फौज मोर्चा तोड़ने जा रही है। यह बात तुम अपने पास तक रखना। मैं सिर्फ तुम्हें बता रहा हूँ। एक हफ्ते के अन्दर-अन्दर लाल-सेना का मोर्चा टूट जायेगा। हमें जमे रहना चाहिये।"

"हम जमे हुए हैं।"

"ग्रोमोक मे लाल-फौज नदी पार करने की तैयारी कर रही है।"

"अब भी वे लोग अपने हथौड़े बजा रहे हैं ?" ग्रिगोरी ने आश्चर्य मे पूछा।

"हाँ···लेकिन आखिर तुम रहे कहाँ ? व्येशेन्स्काया मे महज पलग तोडते रहे हो ? परसो मैंने तुम्हें हर जगह तलाश करवाया। एक आदमी ने लौटकर बताया कि तुम क्वार्टर मे नही हो। हाँ, एक हसीन-सी औरत जरूर बाहर आई और भरी हुई आँखों से कहने लगी कि तुम घोड़े पर सवार होकर कही चले गये हो। ··इस पर मुझे तो ऐसा लगा कि तुम किसी लडकी के साथ जिन्दगी के मजे ले रहे हो और कहीं छिपे हुए हो।"

ग्रिगोरी की त्योरी चढ गई, और उसने कुदिनोव के मजाक को मज़ाक कम-ही कम समझा। सख्त पडते हुए बोला—"अच्छा हो कि आप झूठी बातों पर कान जरा कम दिया करें और पैगाम लेकर उन्हे भेजा करें जिनकी जीभें ज़रा कम लम्बी हुआ करें। वैसे अगर ऐसे लोगों की जबानें लम्बी होंगी ही, तो मैं उन्हे तलवार से काटकर कायदे मे ले आऊँगा।"

कुदिनोव ने हँसी का एक ठहाका लगाया और ग्रिगोरी की पीठ पर हाथ मारा। पूछने लगा—"तुम मज़ाक को मज़ाक नहीं समझ पाते क्या ? लेकिन, खैर, छोडो, तुमसे कुछ काम की, बड़ी बात करनी है। हम चाहते हैं कि घुड़सवारों के दो स्क्वैड्रन कज़ान्स्काया की तरफ से जायें और लाल फौजियो पर हमला कर दें। हो सके तो वे ग्रोमोक से इस तरह नदी पार करें कि दुश्मन के हाथ-पैर फूल जायें। क्या खयाल है तुम्हारा ?"

ग्रिगोरी एक क्षण तक चुप रहा और फिर बोला—"ख्याल बुरा नहीं है।"

"और, तुम उनकी कमान सम्हाल लोगे ?" कुदिनोव ने पूछा।

"मैं क्यों सम्हालूँगा कमान ?"

"इसलिये कि हम चाहते हैं कि कमान किसी लडने वालो के हाथों मे

हो। बात यह है कि सारा कुछ कोई आसान काम तो है नहीं। यानी, नदी ही ऐसे उल्टे-सीधे ढंग से पार की जा सकती है कि एक आदमी सही-सलामत न लौटे।"

कुदिनोव के शब्दों से ग्रिगोरी की बाँहें खिल उठीं और उसने बेहिचक कमान सम्हालने का फैसला किया। "खैर, तो मैं सम्हाल लूँगा कमान।"

"अब सुनो कि किस तरह इस चीज का नक्शा हम लोग अपने दिमाग में बनाते रहे हैं।" कुदिनोव अपनी जगह से उठा और फर्श के चरमराते हुए तख्तों पर चहलकदमी करते हुए, और उत्साह से बोला—"यह जरूरी नहीं कि हमारी फौज दुश्मन के मोर्चे के पिछले हिस्से तक जाये ही। जरूरी सिर्फ यह है कि हमारे फौजी दोन के किनारे-किनारे जायें, दो-तीन गाँवों में दुश्मनों को झकझोर दें, कुछ कारतूस और तोप के गोले हथिया लें, कुछ लोगों को कैद कर लें और फिर उसी रास्ते से लौट आयें। सारा-कुछ रातो रात इस तरह करना होगा कि सुबह होते-होते घाट तक लौटा जा सके। ठीक है न? तो, तुम भी एक बार सोच देखो और कल सुबह अपने मन के कज्जाक चुनकर मुहिम पर रवाना हो जाओ। हम सभी इस मामले में एक राय हैं कि यह काम तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं कर सकता। और अगर इस में तुम्हें कामयाबी मिल जायेगी तो दोन-फौज तुम्हें कभी भूल न पायेगी। फिर, यह कि हमारे दोस्त ज्यों ही हम से आ मिलेंगे, मैं खुद सिदोरिन को सारा-कुछ लिख कर भेज दूँगा। उस ब्योरे में तुम्हारे सारे कारनामों का जिक्र होगा और तुम्हारा ओहदा फौरन ही बढ़ा दिया जायेगा।" उसने अपनी बात बीच में ही खत्म कर दी, क्योंकि ग्रिगोरी का शांत चेहरा एकदम स्याह पड़ गया और क्रोध से ऐंठ उठा।

"आप मुझे समझते क्या हैं आखिर?" ग्रिगोरी ने तेजी से अपने हाथ पीठ पर बाँधे और अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ—"आपका खयाल है कि मैं कमान ओहदे के लिये सम्हालूँगा? आपका खयाल है कि आप मुझे खरीद सकते हैं? आप मुझसे मेरी तरक्की का लालच दे रहे हैं? मैं···"

"जरा सुनो तो।"

"मैं आपके इस ओहदे पर थूकता हूँ।"

"सुनो तो, तुमने मेरी बातें ठीक से समझी नहीं।"

"मैंने आपकी बात ठीक ही समझी है।" ग्रिगोरी की आवाज़ फंस गई और वह फिर बैठ गया—"आप किसी और की तलाश कर लीजिए···मैं कज्जाकों की अपनी कमान में नदी के पार नहीं ले जाऊँगा।"

"तुम बेकार ही नाराज हो रहे हो—"

"मैं कमान नहीं सम्हालूँगा। आगे और कुछ नहीं कहना चाहता।"

"खैर, तो, मैं इस मामले में न तो तुम से जोर-जबरदस्ती करूँगा और न आरज़ू-मिन्नत। चाहो तो कमान सम्हालो, और न चाहो तो न सम्हालो। हमारी हालत इस वक्त काफी पतली है। यही वजह है कि हमने फैसला किया है कि हम अपना पूरा जोर लगायेंगे और नदी पार करने की दुश्मन की तैयारी आगे न बढ़ने देंगे। तुम्हारी तरक्की और ओहदे की बात तो मैं मजाक में कह रहा था। तुम मजाक बर्दाश्त कर नहीं सकते। औरत की बात मैंने हँसी में कही, तो भी तुम उबल पड़े। मैं जानता हूँ कि तुम आधे-बोलशेविक हो, और अफसरों को पसंद नहीं करते। यानी, हद है कि तुम हर बात सजीदगी से ही लेते चले गये। मैं तो तुम्हें चिढ़ा रहा था कि तुम जरा बिगड़ो।" कुदिनोव इतने स्वाभाविक ढंग से हँसा कि ग्रिगोरी क्षण भर को गड़बड़ा गया कि शायद यह आदमी सचमुच ही मजाक करता रहा है।

"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं कमान सम्हालने से बिल्कुल इन्कार करता हूँ।" उसने हुए आग्रहपूर्वक कहा—"मैंने अपना इरादा बदल दिया है।"

कुदिनोव, तटस्थ-भाव से, अपनी पेटी से खिलवाड़ करता रहा और काफी देर तक चुप रहने के बाद बोला—"यानी, तुमने अपना इरादा बदल दिया है या तुम डर रहे हो, इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता फर्क इसमें पड़ता है कि हमने जो कुछ सोचा समझा था, जो नक्शे बनाये थे तुम उन सब को चौपट कर रहे हो। खैर, हम किसी और की तलाश

कर लेंगे। जिगरेवाले कज़्ज़ाक कोई तुम्हीं एक तो नहीं हो। लेकिन, ज़रा ख़ुद समझो कि हमारी हालत कैसी नाज़ुक है। लाल-फ़ौज ''यह लो, ख़ुद पढ़ लो, वरना शायद तुम्हें यकीन न आये।'' उसने ख़ून के छींटों वाला एक पीला कागज़ अपने पोर्टमैंटू से निकाला और ग्रिगोरी की ओर बढ़ाया—''यह उन्हें किसी अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनी के कमीसार से मिला है। कमीसार लातविया का था। दोगले ने आख़िरी कारतूस तक मोर्चा सम्हाला और फिर संगीन तानकर कज़्ज़ाकों की पूरी की पूरी टुकड़ी पर टूट पड़ा। कोन्द्रात ने ख़ुद गिराया उसे। उनके बीच भी हिम्मत वाले, बहादुर लोग हैं···ऐसे लोग हैं जो अपने ईमान में भरोसा रखते हैं। लो, उसी लातवियन के पास बरामद हुआ यह गश्ती हुक्मनामा।''

फ़ौजी— फ़ौजी-फ़रमान—

८ नं० १००

बोगुचार २५ मई १९१९

(इसे सभी कम्पनियों, स्क्वैड्रनों, बैटरियों और कमानों को पढ़कर सुनाया जाये।)

दोन के शर्मनाक विद्रोह का अंत समीप आ रहा है। आख़िरी घड़ी आ गई है। सभी जरूरी तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। बाग़ियों को तोड़ने के लिये काफ़ी फ़ौजें जमा की जा चुकी हैं। केनों से हिसाब-किताब करने का क्षण सामने है। यह लोग दो महीने से अधिक समय से दक्षिणी-मोर्चे की हमारी ज़ोरदार फ़ौजों की पीठ में बराबर छुरा भोंकते रहे हैं। साथ ही जाली लाल-झण्डे के नीचे खड़े होकर देनिकिन और कोलचाक जैसे ज़मींदारों के हाथ मज़बूत करते रहे हैं इन कज़्ज़ाक गिरोहों को रूस के किसान और मज़दूर नफ़रत और खीझ से भरकर देखते रहे हैं।

सिपाहियो, कमांडरो, और कमीसारो, सब कुछ तैयार है। अब तो इशारा मिले और तुम धावा बोल दो।

यह धोखेबाज़ और गद्दार लोग सब की निगाहों में गिरे हुए हैं। इनके घोंसलों का नाम-निशान मिट ही जाना चाहिए। इन केनों का

विनाश होना ही चाहिए। जिन जिलों के लोगों ने हमारे खिलाफ सीना ताना है, उन पर रहम दिखलाने की कोई जरूरत नही। रहम सिर्फ उन पर दिखलाया जाये जो अपने आप हथियार डाल दें और हमसे आ-मिलें। लेकिन, देनिकिन और कोलचाक के साथियो की हरकतो का जवाब हम दें महज गोलियो की बौछारों, इस्पात की काटों और आग की लपटों से! साथी-सिपाहियो, सोवियत-रूस तुम पर भरोसा रखता है। दो-चार दिनों में ही तुम्हें दोन के आचल से गद्दारी का काला धब्बा धो डालना चाहिये। कूच की घड़ी आ गई है।

आगे बढो, और इस तरह आगे बढो, जैसे कि तुम सब इतने अलग-अलग लोग न होकर मात्र एक व्यक्ति हो।"

: ६५ :

१६ मई को, नवी लाल-सेना के अभियान-ब्रिगेड के स्टाफ-चीफ ने मीशा-कोशेवोई को, एक फ़ौरी-हुक्मनामा ३२वी रेजीमेंट के हेडक्वार्टर्स मे पहुँचा आने का हुक्म दिया। दफतर गोरबातोव्स्की गाँव मे माना जा रहा था।

सो, कोशेवोई उसी दिन शाम को उस गाँव मे पहुँच गया, मगर दफ्तर वहाँ न निकला। हाँ, गाँव मे एक दूसरी युनिट की मालगाड़ियो की रेलपेल के कारण घुटन जरूर महसूस हुई। पता चला कि माल गाड़ियाँ दोनेत्स से आ रही और उस्त-मेदवेदित्सा को जा रही हैं। उनकी हिफाजत के लिये पैदल-सेना की दो बटैलियनें साथ नजर आई।

मीशा कोई दो घटे तक गाँव मे इधर-उधर भटकता और ३२वी रेजीमेंट के हेडक्वार्टर्स का पता ठीक मालूम करता रहा। आखिरकार लाल-सेना के एक घुड़सवार सिपाही ने बतलाया कि वह दफतर वोकोव्स्काया जिले येवलातयेव्स्की गाँव मे है।

तो, अपने घोड़े को खिलाने-पिलाने के बाद, उसने उसे येवलात येव्स्की की तरफ मोड़ा। कुछ देर बाद वहाँ पहुँचा, लेकिन हेडक्वार्टर्स का दफ्तर वहाँ भी न मिला।

अब वह गोरबातोव्स्की-गाँव को लौटा कि आधी रात के बाद स्तेपी

के मैदान में, वह अचानक ही लाल-सेना के एक गश्ती-दस्ते से टकरा गया।

और, अभी दूर ही रहा कि किसी की तेज आवाज उसके कानों पड़ी—"कौन है वहां ?"

"दोस्त।"

"खैर, तो आओ, जरा देख लें कि किस तरह दोस्त हो तुम···" उसने ने भर्राई हुई आवाज में जवाब दिया और गहरा नीला कोट पहने, और सफेद कुबान-टोप लगाये कि उसइनी फौजी-अफसर सामने आया। 'किस युनिट के हो ?"

'नवीं सेना के अभियान ब्रिगेड का हूं मैं।"

"कोई दस्तवेज है ?"

मीशा ने अपने कागजात दिखलाये। पेट्रोल कमांडर ने चांदनी में उन्हें देखते हुए पूछा—"तुम्हारा ब्रिगेड-कमांडर कौन है ?"

"कॉमरेड-लोजोव्स्की"—

"और, तुम्हारी ब्रिगेड इस वक्त कहां है ?"

"दोन के उस पार है···तुम किस रेजीमेंट के हो, कॉमरेड ? बत्तीसवीं रेजीमेंट के तो नहीं ?"

"नहीं···हम तैंतीसवीं डिविजन के हैं। लेकिन·· तुम कहां के ?"

"येवलानयेव्स्की का हूं।"

'और, जा कहां रहे हो ?"

"गोरबालोव्स्की जा रहा हूं।"

"अच्छा···लेकिन, गोरबालोव्स्की में तो इस वक्त कज्जाक हैं।"

"बिल्कुल नहीं हैं।" मीशा ने जोर देकर कहा।

"मेरा यकीन करो···वहां हैं और बागी कज्जाक हैं ? हम लोग अभी-अभी वहीं से आये हैं।"

"तो, बोबरोव्स्की कैसे पहुंच सकता हूं मैं ?" मीशा ने विस्मय से पूछा।

"यह तो तुम जानो।"

कमांडर ने अपने घोड़े को एड़ लगाई और उड़ चला। लेकिन, फिर एकाएक पीछे की ओर मुड़ा और चिल्लाकर बोला—"अच्छा हो कि

हम तुम उन लोगों के साथ हो लो, वरना कहीं ऐसा न हो कि सिरों के शिकारियों के हाथ लग जाओ ।"

मीशा खुशी-खुशी गश्ती-टुकडी के साथ हो लिया । उस रात वे लोग घोडों पर सवार होकर कुज़ीलिन नामक गाँव पहुँचे। वहाँ २६४वीं तगानरोग रेजीमेंट ठहरी मिली । यहाँ मीशा ने पत्र रेजीमेंटल-कमांडर को दिया सही जगह खत न पहुँचा सकने की वजह समझाई, और घुड-सवार गश्ती टुकडी के साथ रेजीमेंट में रहने की इजाज़त माँगी।···

३३वीं कुबान डिविज़न अभी-अभी बनी थी और अस्त्राखान के पास से वोरोनेज के इलाके में भेज दी गई थी। तगान रोग, देर बेंत और वॅसिल कोवस्की रेजीमेंटों की उसकी खास ब्रिगेड को कज्ज़ाकों की बगावत को कुचलने के लिये झोंक दिया गया था। यही डिविज़न ग्रिगोरी मेलेखोव की पहली डिविज़न पर टूटी और उसने उसे दोन नदी के पार खदेड दिया।

ब्रिगेड दोन की दाहिनी ओर से मजबूरन मार्च करती खोपरस्काया-जिले की ओर बढी। उसकी दाहिनी बाजू के फौजी चिर-नदी के किनारे के गाँवों पर कब्ज़ा करते गये। फिर, ब्रिगेड को उस इलाके में दो हफ्ते बिताने पड़े। इसके बाद ही कहीं वह वापिस आ सकी।

कारगिस्काया और चिर के किनारे गाँवों को लेने के लिए जो लोहे से लोहा बजा, उसमें मीशा को हिस्सा लेना पड़ा। २७ तारीख को सवेरे उसके कम्पनी-कमांडर ने अपने फौजियों को सड़क के किनारे एक कतार में खडा किया और अभी-अभी मिला हुक्म पढ़कर सुनाया। मीशा कोशेवोइ को उसके शब्द बहुत-बहुत दिनों तक याद रहे—"यह धोखेबाज़ और गद्दार लोग सबकी निगाहों में गिरे हुए हैं। इन घोसलों का नाम-निशान मिट ही जाना चाहिये, इन केनों का विनाश होना ही चाहिए।······लेकिन, देनिकिन और कोलचाक के साथियों का जवाब हम दें गोलियों की बौछारों, इस्पात की काटों और आग की लपटों में!"

···जिस दिन मीशा स्तॉकमैन के कत्ल की बात और इवान लेक्सेयेविच के साथ ही येलान्स्काया में दूसरे कम्युनिस्टों के मारे जाने की अफवाह सुनी थी, उसी दिन से उसका खून कज्ज़ाकों के प्रति घृणा से

उफनने लगा था। अब कोई बागी कज़्ज़ाक उसके हाथ लग जाता तो दिल के अन्दर से आती रहम की आवाज उसे बड़ी पतली लगती और वह उसकी सुनी अन सुनी कर देता। किसी कज़्ज़ाक के साथ भूले से भी हमदर्दी न दिखलाता और बर्फ की-सी ठंडी निगाहों से कैदी से पूछता—सोवियत-सरकार से लड़ने से जी भर गया?' इसके बाद जवाब का इन्तजार किये बिना, और उसके डर से हवा चेहरे पर निगाह डाले बिना उसे निर्ममता से काटकर फेंक देता? इस तरह वह न सिर्फ कैदियों को तलवार के घाट उतार देता, बल्कि बागियों से खाली गाँवों के मकानों की ओरियों के नीचे धुंधुआती मशाल के लाल-मुर्ग भी जमा देता। फिर डर से बौखलाई गायें और बैल बाड़े तोड़कर डकारते हुये सड़कों पर इधर-उधर दौड़ते कि मीशा उन्हें गोली से उड़ा देता।

यानी, उसने कज़्ज़ाक समृद्धि कज़्ज़ाक विश्वासघात और कज़्ज़ाक-जिन्दगी के सड़े गले तौर-तरीकों के खिलाफ पूरी बेरहमी और पूरे ज़ोर से लड़ाई छेड़ी। यह कज़्ज़ाक जिन्दगी जाने कितनी सदियों से उनके मजबूत मकानों की छतों के नीचे अबाध और अटूट-रूप से चलती रही थी। स्तोकमैन और इवान की मौतों ने उसकी नफरत की आग में ईंधन का काम किया था। फिर, 'यह धोखेबाज और गद्दार लोग सबकी निगाहों में गिरे हुए हैं। इनके घोंसलों का नाम-निशान मिट ही जाना चाहिये। इन कैंसरों का विनाश हो ही जाना चाहिये।"···आदि शब्दों ने उसकी अग्नी भावनाओं को और भड़काया था।

सो, जिस दिन फरमान पढ़कर सुनाया गया, उसी दिन उसने अपने तीन दूसरे साथियों के साथ मात्र कारगिन्स्काया में एक सौ पचास घर जलाकर राख कर दिये। उसे एक व्यापारी के गोदाम से थोड़ा सा मिट्टी का तेल मिल गया। फिर तो दियासलाई मुट्ठी में दबाये हुए उसने पूरे चौक का चक्कर काट डाला। उसके बाद वहाँ रह गया तीखा धुआँ और वह लपटें जिन्होंने पादरियों और व्यापारियों के शानदार मकानों और अमीर कज़्ज़ाकों के घरों को अपनी लपेट में ले लिया। साथ ही उन लोगों के रहने-बसने के ठिकाने भी आग के शिकार होगए, 'जिनके षड्यन्त्रों ने भोले-भाले कज़्ज़ाकों को बगावत के लिए उभाड़ा था।"

इसके बाद सबसे पहिले घुड़सवार-गश्ती टुकड़िया वीरान और उजाड़ गावों में घुसीं और पैदल-सेना के आने के पहले-पहले कोशेवोइ ने अमीर से अमीर कज्ज़ाकों के घर गोलियों से पाट दिये।

उसने इवान और चेलान्स्काया के कम्युनिस्टों की मौत का बदला अपने गाँव के लोगों से लेने का इरादा किया और इसीलिये हर कीमत पर तातारस्की पहुँचने की बात सोची। मन ही मन सोचा—"मैं आधा गाँव भूनकर रख दूंगा, यही नहीं, उसने तो अपने दिमाग में पूरी की पूरी फेहरिस्त तैयार कर ली कि तातारस्की पहुँच गया तो किस-किस के घर जलाऊँगा। सोचा—"अगर मेरी रेजीमेंट इधर से न निकलेगी तो मैं बिना इजाज़त लिये ही रात को खिसक लूंगा।"

तातारस्की जाने की उसकी इच्छा के पीछे बदले की भावना के अलावा दूसरी बातें भी रहीं। पिछले दो सालों में वह जब भी गाँव गया दून्या मेलेखोवा से मिला और दोनों के दिलों में एक अनकहा प्यार बराबर पनपता गया। दुनया की भूरी उगलियों ने उसके लिये तम्बाकू की शानदार थैली तैयार की। उसी ने उसे जाड़े के लिये, बकरी की बालदार खाल के नाजुक दस्ताने, चोरी-चोरी दिये। उसका कसीदाकारी का छोटा रूमाल वह हर वक्त अपनी ट्युनिक की सीनेवाली जेब में सहेज कर रखता रहा। रूमाल की परतें तीन महीने बाद भी लड़की के बदन की, सूखी-घास की-सी, महक से बसी रहीं। रूमाल उसे इतना प्यारा रहा कि क्या कहिये। जब भी उसने उसे हाथ में लिया उसके सामने आ गया कुएँ के पास का पाले से मढ़ा देवदारु का पेड़, आसमान से भरते बर्फ के प्यारे-प्यारे फूल, दून्या के कांपते हुए होंठ, और उसकी भौंहों पर भ्रमाभल चमकते बर्फ के दाने।

उसने घर जाने की तैयारी बड़ी मेहनत से की। कारीगिन्स्काया के एक व्यापारी के घर की दीवार से उसने एक रंग-बिरंगा कम्बल उतारा और उसे अपने घोड़े की काठी के नीचे दबा दिया। फिर, एक कज़्ज़ाक के बड़े बक्से में एक जोड़ा लगभग नई 'शारोवारी' हासिल की। पैरों की तीन पट्टियों के बदले में छ जनाने शॉल उड़ा दिये और तातारस्की की सरहद पर पहुँच कर पहिनने के लिए एक जोड़ा रेजीमेंट

ऊनी दस्ताने अपने सामान में खोंस लिये ।

एक ज़माने से परम्परा रही थी कि फौजी जब भी घर लौटे शानदार से शानदार कपड़ों में लौटे। और मीशा, लाल-सेना में होने के बावजूद अब तक कज्ज़ाक परम्परा से मुक्त हो न पाया था । इसीलिये, उसने घर लौटने की तैयारी पूरे ज़ोर-शोर से की थी।

उसका घोड़ा गहरे भूरे, लाल रंग का था और यह उसने एक हमले के दौरान एक कज्ज़ाक को तलवार के घाट उतारकर प्राप्त किया था। घोड़ा शानदार था और रफ्तार उसकी ऐसी थी कि किसी को भी उस पर सहज ही गर्व हो सकता था । लेकिन, उसकी काठी बहुत अच्छी न थी। चमड़ा जहाँ-तहाँ से कट गया था और उस पर खरोंचें पड़ी हुई थीं । धातु वाले हिस्सों में ज़ंग लग गई थी। लगाम और रासें भी उसी हालत में थीं और उसे कुछ करना था कि वे देखने में उस तरह भद्दी और खराब लगें। सौभाग्य से एक गाँव में एक व्यापारी के घर के बाहर उसे लोहे से पलंग पड़ा मिल गया था। पलंग के पायों पर धातु की घुंडियाँ थीं और यह घुंडियाँ ऐसी चमकदार थीं कि इनमें सूरज अपनी परछाईं देखता था उसे एक क्षण लगा इन घुंडियों को खोलने में और उन्हें रेशमी डोरी बाँधने में फिर, उसने इनमें से दो घुंडियाँ लगाम के छल्लों में बाँध दीं, और दो लगाम की पट्टी के सहारे घोड़े के माथे पर लटका दीं। आखिरी दो घुंडियाँ दोपहर के सूरज की तरह दमकती रहीं और इस तरह चम-चमाती रहीं कि घोड़ा चौंधिया-चौंधिया गया और चलते-चलते लड़खड़ा गया। उस तरह घोड़े के देखने में कठिनाई पड़ी और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे । फिर भी, मीशा ने वे घुंडिया हटाई नहीं।

रेजीमेंट दोन के किनारे-किनारे व्येशेन्स्काया की ओर बढ़ी । इसलिये मीशा को अपने घर-परिवार के लोगों से मिल आने के लिये एक दिन की छुट्टी आसानी से मिल गई । और, कमांडर ने उसे न सिर्फ इजाज़त दी बल्कि कुछ और भी किया। उसने मीशा से पूछा—"तुम शादी शुदा हो ?"

"नहीं ।'

"कोई औरत-वौरत रख छोड़ी है ?"

"क्या ?"

"अरे, मेरा मतलब, कोई आशूका-माशूका है ?"

"हाँ, है और बहुत ही भली लड़की है।"

"और, घड़ी और चेन है तुम्हारे पास ?"

'नहीं, कॉमरेड।"

"यह तो ठीक नहीं।" कमांडर बोला। वह जर्मनी की लड़ाई में हिस्सा ले चुका था और जानता था कि बिना शानदार चीजों के अपने घर-वालों को लौटना कितने शर्म की बात होती है। इसलिए उसने अपनी घड़ी और चेन उतारी, और मीशा को देते हुए बोला—"तुम बहादुर फौजी हो। लो, यह घड़ी और चेन। इन्हें देखकर लड़कियों की आँखें चमक-चमक उठेंगी। कभी मैं खुद जवान था। उस जमाने में मैंने जाने कितनी लड़कियों को चौपट किया और जाने कितनी औरतों को जवानी के मजे दिए। यही वजह है कि मैं सारा मामला समझता हूँ। और हाँ, अगर कोई तुमसे पूछे तो कह देना कि चेन नए, अमरीकी सोने की है। इस पर अगर वह मुहर-वुहर देखना चाहे तो एक भरपूर हाथ उसकी आँख पर जमाना। बकबकिया लोगों के साथ सिर्फ ऐसा ही बरताव करना चाहिए। बेकार जबान चलाने से कोई फायदा नहीं। बातों की बरबादी ऊपर से होती है। मेरे साथ ऐसा हुआ है कि मैं किसी आम जगह खड़ा रहा हूँ, आसपास के क्लर्क और दूकानों में काम करने वाले उमड़े चले आये हैं और उन्होंने मुझ पर छींटे कसे हैं—'आ हा···जरा घड़े जैसी तोंद पर लटकती घड़ी की चेन तो देखो ऐसा बन रहा है, जैसे कि निखालिस सोने की है···अच्छा सोने की है तो निशान दिखाओ।' लेकिन मैंने उन्हें ऐसा मुँह तोड़ जवाब दिया कि दुबारा उन्होंने फिर कभी मुँह नहीं खोला। मैंने कहा—"निशान देखना चाहते हो? आओ, दिखलाऊँ तुम्हें निशान ?" मीशा के हँसमुख कमांडर ने अपनी मुट्ठी बांधी और पूरी ताकत में दिखलाई।

मीशा ने घड़ी लगा ली। फिर, कैम्प की आग की रोशनी में दाढ़ी बनाई, अपना घोड़ा कसा और रवाना हो गया। तड़का होते-होते तातारस्की पहुँच गया।

गाँव में कोई फेर-बदल नज़र नहीं आया। ईंटों के गिरजे के घंटा घर ने काला-मुनहरा क्रॉस अब तक आसमान में साथ रक्खा। चौक में पादरियों और व्यापारियों के घर अब भी एक-दूसरे से सटे खड़े थे और देवदारू कोरोवाइ-परिवार के मकान के खडहर की कहानी अपनी जवानी अब भी उतनी ही आसानी से बयान कर रहा था। गाँव में कुछ नया, ग़ैर मामूली और आँखों में खटकने वाला था तो वह था एक गहरा सन्नाटा। इस सन्नाटे का मकड़ी का जाला सारी सड़कों और गलियों पर तना हुआ था। घर की झिलमिलियाँ पूरी तरह बंद थीं। कहीं-कहीं दरवाज़ों में ताले जकड़े हुए। बाकी दरवाजे खुले पड़े थे। ऐसा लग रहा था, जैसे कि कोई महामारी भारी पाँवों से गाँव के बीच से गुजरी हो, अहातों और सड़क गलियों की आबादी निगल गई हो, और रहने-बसने की जगहों को वीरानगी और मायूसी से भर गई हो। न गाँव में कहीं इन्सान की आवाज़ सुन पड़ती थी न गाय की डकार और न मुर्ग़ की बाग, सिर्फ गोरैयाँ, छेदों की ओरियों के नीचे और विरायते की झाड़ी में, जहाँ-तहाँ चहकती फिरती थीं।

मीशा, घोड़े पर सवार सीधे अपने घर गया तो परिवार का कोई भी आदमी उसके स्वागत को बाहर नहीं आया। बरसाती को जाने वाला दरवाज़ा चौपट खुला-पड़ा दीखा। ड्योढ़ी पर न आये। पुराना पायोश, गाढ़े सूत से सनी एक पट्टी और मक्खियों से घिरे कभी से सड़ते चूज़ों के पर और सिर। साफ है कि कुछ दिन पहिले लाल-फौजियों ने यहाँ खाना खाया था। टूटे हुए बरतन' चूज़ों की साथ हड्डियाँ सिगरेटों के जले हुए टुकड़े और अखबार के फटे कागज़ जहाँ-तहाँ बिखरे पड़े थे।

मीशा सामने के कमरे में आया। वहाँ हर चीज़ ज्यों की त्यों नज़र आई। सिर्फ़ तहखाने का आधा दरवाज़ा थोड़ा उठा हुआ समझ पड़ा। यहाँ कभी पतझर के मौसम में तरबूज़ जमा किये जाते थे।

मीशा की माँ, बच्चों से बचाने के लिये, सूखे सेब आदतन तहखानों में रखती थी।···इस बात की याद आते ही वह दरवाज़े के पास गया। सोचने लगा—"माँ ने मेरी राह ज़रूर ही देखी होगी···उसने मेरे लिये कुछ-न-कुछ छिपाकर रक्खा ही होगा।" सो, उसने अपनी तलवार खींची

और उसकी नोक से तहखाने का दरवाजा थोड़ा उचकाया। नमी और सड़ायंध का भभका बाहर आया। वह घुटनों के बल अन्दर गया और अंधेरे में इधर-उधर नजर दौड़ाई, तो आधी बोतल वोदका, तले हुए अडों समेत फ्राइंग-पैन, चूहों से बचा डबलरोटी का एक टुकड़ा और लकड़ी के मग से ढंका एक बरतन फैले हुए मेजपोश पर रक्खा दीखा। उसने अपने-आप से कहा—"यानी, मेरी बूढ़ी माँ मेरा इन्तजार करती रही है बड़ी तैयारियाँ करती रही है मेरी खातिर के लिए।"

फिर, वह तहखाने में झुका तो उसका हृदय प्यार और खुशी से भर-उठा। उसने किरमिच का एक थैला बल्ली से लटकते देखा और नीचे उतारा। उसमें अपना नीचे पहनने का पुराना लिनेन मिला। कपड़ा साफ था, फटे-कटे हिस्से सिले हुए थे और उस पर कायदे से लोहा कर दिया गया था।

चूहों ने सारा खाना चौपट कर दिया था और सिर्फ दूध और वोदका ही अछूती बची थीं।

मीशा ने वोदका ढाली, ठंडा, जायकेदार दूध पिया, लिनेन लिया और बाहर आया। सोचने लगा—"वह शायद डर के मारे यहाँ ठहरी नहीं; और, नहीं ठहरी तो अच्छा ही किया, नहीं तो कज्जाक शायद उसे मार ही डालते। लेकिन, मेरी वजह से दुश्मनों ने उसे सताया तो होगा ही।"

घर से बाहर आने पर उसने अपना घोड़ा खोला, लेकिन मेलेखोव के यहाँ सीधे न जाने का फैसला किया, क्योंकि मकान नदी के ठीक ऊपर था और कोई सधा हुआ निशानेबाज पार से भी उसका काम आसानी से तमाम कर सकता था। उसने इरादा किया पहिले कोरशुनोव परिवार में जाने का, साँझ होने-होने तक वहाँ से लौट आने का और अँधेरे में व्यापारियों और पादरियों के घर जला देने का।

तो, अहातों के पीछे से अपना घोड़ा निकालकर वह कोरशुनोव परिवार के लम्बे-चौड़े अहाते के पास पहुँचा और फाटक में घुसा। यहाँ घोड़ा बाँधकर वह घर में घुसने को हुआ ही कि ग्रीश्का सीढ़ियों पर नजर आया। उसका सिर हिल रहा था और आँखें इस तरह सिकुड़ी हुई थीं जैसे उनसे दिखलाई न देता हो। लाल-पट्टियोंवाले, बिकटहे कॉलर की

'प्राचीन' ट्यूनिक के बटन कायदे से बंद थे। हाँ, पतलून जरा गिरा जा रहा था और बूढ़े ने उसे अपने हाथों से साध रखा था।

"कैसे हो बाबा ?" मीशा ने अपना चाबुक हवा में लहराते हुए जोर से पूछा। मगर बूढ़े ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने उसपर नजर जरूर डाली। आँखों से नफरत के साथ गुस्सा टपका।

"कैसे हो ?" मीशा ने अपनी आवाज और ऊँची की।

"ईश्वर को धन्यवाद है···अच्छा हूँ।" ग्रीश्का ने हिचकिचाते हुए जवाब दिया और मीशा को उसी तरह घूरता रहा। मीशा अपने चाबुक से खिलवाड़ करता, टाँगें फैलाये शांत-भाव से सीढ़ियों के पास खड़ा रहा। फिर लड़कियों के से भरे हुए उसके होंठ सिकुड़े और माथे पर बल पड़े। पूछा, "तुम यहाँ से निकलकर दोन से पार क्यों नहीं चले गए ?"

"कौन हो तुम ?" बूढ़े ने सवाल किया।

"मीशा कोशेवोई।"

"अकीम के बेटे हो ? उसी अकीम के बेटे हो न जो हमारे यहाँ काम करता था ?"

"हाँ।"

"तो, तुम वह मीशा हो ? ···मीशा उन लोगों ने तुम्हारा बपतिस्मा किया कि नहीं ? क्या शानदार आदमी साबित हुए हो ! बिलकुल अपने बाप की ही तरह ही निकले तुम भी। वह सूखे तिलों से भी थोड़ा-बहुत तेल निकालने की कोशिश में रहता था और ऐसा ही कुछ तुम भी कर रहे हो···है न ?"

मीशा ने अपने दस्ताने उतारे और उसके माथे के बाल सहराये : "तुम्हारा इससे कोई मतलब नहीं कि मैं कौन हूँ या क्या करता हूँ। मेरी बात का जवाब दो। मैंने तो तुमसे यह पूछा कि दूसरों की तरह तुम भी उस पार क्यों नहीं चले गये ?"

"मैंने नहीं जाना चाहा, और मैं नहीं गया। लेकिन तुम अपने हाल-चाल तो बतलाओ। तुमने ईसा के दुश्मनों की नौकरी मंजूर कर ली है क्या ? तुम्हारी टोपी पर लाल सितारा है··· यानी कुतिया के बच्चे, तू हम कज्जाकों के खिलाफ और अपने गाँव के ही साथियों के खिलाफ मोर्चा

बाँधे हुए है?" बूढा धीरे-धीरे सीढ़ियों से नीचे उतरा।

साफ है कि परिवार के लोग पार चले गये थे और बूढ़े को खाने-पीने की तकलीफ थी। इस तरह अकेला रह जाने पर वह काफी झटक गया था। खैर, तो इस समय वह मीशा के पास आया और उसने आश्चर्य और क्रोध से उसे घूरकर देखा।

"हाँ, मैं उनके खिलाफ लड़ रहा हूँ और जल्दी ही हम उन्हें लाद देंगे।" मीशा ने जवाब दिया।

"तुम्हें पता है कि हमारे धर्म-ग्रंथ में क्या लिखा है?—लिखा है, 'जिस पैमाने से तुम दूसरों को नापोगे उसी पैमाने से खुद भी नापे जाओगे।'"

"मुझे तुम्हारे धर्म-ग्रथ की बातें सुनने की जरूरत नही, समझे। मैं इनके लिए यहाँ नही आया और तुम फौरन इस घर से बाहर निकल जाओ···निकलो बाहर !" मीशा ने सख्ती से कहा।

"किसलिए?"

"किसलिए की फिक्र छोडो···और बाहर निकल जाओ···मैंने कहा न तुमसे।"

"मैं अपना घर छोड़कर कहीं नही जाऊँगा। मैं जानता हूँ कि तुम्हारा इरादा क्या है?···तुम ईसा के दुश्मनों कि नौकर हो और उनका निशान तुम्हारी टोपी पर है।···धर्म-ग्रंथों मे जैसा पहिले लिखा जा चुका है, वैसा ही सब कुछ आज आँखों के आगे आ रहा है···लिखा है—बेटा बाप के खिलाफ सीना तानकर खडा होगा···भाई भाई के खिलाफ तलवार उठायेगा···"

"मुझे इधर-उधर घुलाने-मिलाने की कोशिश न करो। यहाँ भाइयों-बाइयों का कोई सवाल नही। सवाल सीधे-सीधे हिसाब का है। मेरे बाप ने अपनी जिन्दगी के आखिरी दिन तक तुम्हारी नौकरी बजाई, और लड़ाई के पहिले तक मैंने खुद अपनी हड्डियाँ गलाकर तुम्हारी खिदमत की। बस, तो आज उन सबका हिसाब-किताब होगा। तुम बाहर चले जाओ···मैं घर में आग लगाने जा रहा हूँ। तुम जिन्दगी भर शानदार हवेली में रहे। अब जरा तुम भी वैसे ही रहो जैसे हम सब रहते रहे हैं।

फ़्म की झोंपड़ियों में भी तो रहकर देखो। बात समझ में आई, बुड्ढे ?"

"हाँ, समझा···बात यहाँ तक भी आ गई···पैगम्बर इमादग्राह् के ग्रंथ में आता है—कटे हुए लोगों की लाशें बाहर फेंक दी जायेंगी··· उनसे सड़ायध आएगी ··और उनके खून से पहाड़ पिघलाये जायेंगे।"

"तुम्हारी बकवक में खोने को वक्त मेरे पास नहीं !" मीशा ने क्रोध से कहा, "तुम यहाँ से निकलते हो कि नहीं ?"

"नहीं···दुश्मन कहीं के।"

"तुम्हारे जैसे कट्टरपंथियों की वजह से ही तो आज यह मुसीबत का पहाड़ सिर पर टूट रहा है। तुम्हारे ही जैसे लोग तो लोगों को मुसीबत में फंसा रहे और उन्हें क्रान्ति के खिलाफ उभाड़ रहे हैं।" मीशा ने राइफल जल्दी-जल्दी कंधे से उतारते हुए कहा।

और गोली लगते ही ग्रीश्का मुँह के बल गिर पड़ा। लेकिन उस हालत में पड़े-पड़े भी वह अस्पष्ट ढंग से बुदबुदाया, "मेरी नहीं, तेरी इच्छा पूरी होगी···प्रभु अपने सेवक को अपनी शरण में लो···" और उसके सफेद गलमुच्छों के बीच खून उमड चला।

"वह तुम्हें लेगा अपनी शरण में ! तुम्हें तो बहुत पहिले ही इस दुनिया से कूच कर जाना चाहिये था, शैतान कहीं के !" मीशा ने बूढ़े के चारों ओर चक्कर लगाते हुए खीझ से कहा और फिर दौड़कर सीढ़ियों पर चढ़ गया।

हवा के साथ बरसाती में जमा सूखी पत्तियों और टहनियों के बीच में आग की गुलाबी लपट फूटी। बरसाती को स्टोर से अलगानेवाले के तख्तों ने जल्दी ही आग पकड़ ली। धुआँ छतों तक उमड़ने और कमरों में भरने लगा। इसके बाद कोशेवोइ बाहर आया। फिर जब तक उसने शेड और सत्ती में आग लगाई तब तक घर के अन्दर की लपटें, झिलमिलियों के देवदारु के तख्तों को चाटती छत तक अपनी उंगलियाँ फैलाती, बाहर तक आ गई।

मीशा गोधूली की वेला तक पास के एक झुरमुट में जंगली हॉव-लताओं और काँटेदार झाड़ियों के साये में सोता रहा। शाम होने को हुई तो घोड़े को प्यास लगी और उसने हिनहिनाकर मालिक को जगा दिया।

मीशा उठा। उसने उसे बगीचे के कुएँ पर पानी पिलाया, कमा और सवार होकर सड़क पर आया। कोरशुनोव परिवार के अहाते की अधजली चीज़ों से कड़वा धुआँ अब भी उठता दीखा। वहाँ हवेली के नाम पर नज़र आये महज़ नींव के ऊँचे पत्थर, अर्द्ध ध्वस्त स्टोव और कालिख में मढ़ी, *आसमान की ओर हाथ उचकाती उसकी चिमनी।*

मीशा सीधे मेलेखोव परिवार के अहाते की ओर बढ़ा। वहाँ उसका घोड़ा फाटक में दाखिल हुआ ही कि इलीनीचिना ऐप्रन में लकड़ी की चैलियाँ जमा करती दीखी।

"हलो···चाची!" मीशा ने स्नेह से कहा। लेकिन उसे देखते ही इलीनीचिना इस तरह डर गई कि उसके मुँह से एक बोल न फूटा। उलटे, हड़बड़ाहट में हाथ जो ऐप्रन से हटे तो सारी चैलियाँ ज़मीन पर और गिर गईं। मीशा ने पूछा—

"कैसी हो, चाची?"

"आसमान वाले का शुक्र है, उसका शुक्र है!" इलीनीचिना ने कुछ समझते और कुछ न समझते हुए जवाब दिया।

"ज़िन्दा हो···ठीक-ठाक हो!"

'ज़िन्दा तो हूँ···लेकिन यह न पूछो ठीक ठाक हूँ कि नहीं।"

"घर के कज्ज़ाक कहाँ हैं?" मीशा ने घोड़े से उतरते और इली-नीचिना की ओर बढ़ते हुए कहा।

"सब दोन के पार हैं···"

"कैडेटों के आने की राह देख रहे हैं?"

"मैं ठहरी औरत जात···इन सब चीज़ों के बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं।"

"और, येवदोकिया-पंन्तेलयेवना घर पर है?"

"वह भी पार चली गई है।"

'यह सारे के सारे लोग इस तरह पार क्यों चले गये?" मीशा की आवाज़ काँपी और फिर गुस्से से कड़ी पड़ी, "चाची, तुमसे बतला रहा हूँ मैं कि तुम्हारा बेटा ग्रिगोरी, सोवियत सरकार का सबसे कट्टर दुश्मन साबित हुआ है। और हम लोग उस पार पहुँचे नहीं कि सबसे पहिले उसकी

गर्दन नापी गई। लेकिन, पँन्तेली-प्रोकोफियेविच को यहाँ से भागकर जाने की कोई जरूरत न थी। बूढ़े हैं···टाँगें ठीक काम नहीं करतीं···अच्छा होता कि घर पर ही बने रहते···"

"अपनी मौत की अगवानी करने के लिए !" इलीनीचिना ने सख्ती से पूछा और फिर चैलियाँ ऐप्रन में जमा करने लगी।

"मौत अभी उनसे बहुत दूर है। हो सकता है कि कोई थोड़ा-बहुत डाँट-फटकार देता, और बस ! उन्हें मारता कोई नहीं। लेकिन मैं इन बातों के लिए यहाँ नहीं आया।" उसने घड़ी की अपने सीने पर लटकती चेन ठीक की—"मैं तो येवदोकिया-पँन्तेलेयेवना से मिलने आया हूँ और मुझे सचमुच दुःख है कि वह भी दोन नदी के पार चली गई है। खैर, तुम उसकी माँ हो इस नाते तुमसे कुछ कहना चाहूँगा। बात यह है कि मैं उसके लिये बहुत कलपता रहा हूँ। लेकिन इन दिनों हम लोगों को लड़कियों को लेकर परेशान होने का वक्त जरा कम-ही-कम मिलता है फिलहाल तो हम इन्कलाब की खिलाफत करनेवालों से जमकर लोहा ले रहे और उन्हें बहुत ही बेरहमी से कुचल रहे हैं। लेकिन जंग खत्म हो जायेगी, हर जगह सोवियत सरकार बन जायेगी, मैं तुम्हारे पास पैगाम भेजूँगा और तुम्हारी येवदोकिया से शादी करना चाहूँगा।"

"तब की तब देखी जायेगी ··आज ऐसी बातों का वक्त नहीं।"

"क्यों नहीं ?" मीशा के माथे पर बल पड़े और जिद में उसकी त्योरी चढ़ी—"इस वक्त शादी-ब्याह नहीं हो सकता, लेकिन, इस बारे में बात-चीत तो हो ही सकती है। मेरे पास वक्त के चुनाव की फुर्सत नहीं। आज मैं यहाँ हूँ और कल ही दोन के पार भेज दिया जा सकता हूँ। इसलिए मैं तुम्हें आगाह कर रहा हूँ। येवदोकिया की शादी तुम किसी और से न करना, वरना मुझसे बुरा और कोई न होगा। हाँ, अगर मेरी रेजीमेंट से तुम्हें मेरी मौत की खबर मिल जाए, तब बात दूसरी है। उस वक्त तुम जिससे चाहना उससे उसकी शादी कर देना। लेकिन फिलहाल तुम ऐसा नहीं कर सकतीं, क्योंकि हम एक-दूसरे को मोहब्बत करते हैं।···मैं उसके लिए तोहफा एक नहीं लाया, क्योंकि कहीं खरीदना मुमकिन नहीं है। लेकिन अगर बुर्जुआई तिजारतियों के घर की कोई चीज चाहो तो बताओ, मैं अभी देखते-देखते जाकर ले आऊँ।"

"ईश्वर न करे कि तुम जाकर वहाँ से कुछ लाओ। मैंने किसी दूसरे की चीज में कभी हाथ नहीं लगाया।"

"खैर तो जैसा तुम्हारा मत···वैसे अगर दुनिया से मुझसे पहले तुम्हारी

मुलाकात हो जाये तो उससे मेरा बहुत-बहुत प्यार कहना।···अच्छा···अलविदा···चाची···मैंने जो कहा है उसे भूलना नहीं।"

इलीनीचिना बात का जवाब दिये बिना घर के अन्दर चली आई और मीशा अपने घोड़े पर सवार होकर चौक की ओर बढ़ दिया। वहाँ पहुँचने पर जगह उसे लाल-फौजियों से उमड़ती नजर आई। वे रात बिताने के लिए पहाड़ियों से, गाँव में उतर आये थे। उनकी जोशीली आवाजें सड़क-गलियों में गूँज रही थी उनमें से तीन एक हलकी मशीनगन नदी की एक चौकी की ओर लिए जा रहे थे। सो मीशा को देखते ही उन्होंने उसे टोका और उसके कागजात की जाँच की। फिर सेम्योन-चुगुन के घर के पास उसे चार लाल-फौजी और मिले।

उनमें से दो एक ठेले पर जई लिए जा रहे थे और बाकी दो सेम्योन की पत्नी की मदद कर रहे थे। वह तपेदिक की मरीज थी और इस समय सिलाई की ट्रेडल मशीन और बोरा भर आटा लिये जा रही थी।···

औरत ने मीशा को पहचाना और उसका अभिवादन किया।

"वहाँ क्या कर रहे हो तुम लोग?" मीशा ने लाल फौजियों से पूछा।

"हम लोग इस मेहनतकश औरत की थोड़ी मदद कर रहे हैं। किसी बुर्जुआई-रईस की यह मशीन और यह थोड़ा-सा आटा हम इसे दिये दे रहे हैं।" एक लाल फौजी ने बड़ी उमंग से, चिल्लाकर कहा।

× × ×

मीशा ने मोखोव समेत दूसरे व्यापारियों, पादरियों और तीन कज्जाक रईसों के सात मकानों में आग लगा दी। यह सभी लोग भागकर दोनत्स के पार चले गए थे।

यानी, मीशा इतना करने के बाद ही गाँव से बाहर निकला और घोड़ा दौड़ाता हुआ पहाड़ी पर पहुँचा। यहाँ उसने मुड़कर देखा। नीचे तातारस्की में लाल लपटें उठती और काले आसमान में चिनगारियों की लम्बी-लम्बी दुमें लहराती रहीं। आग की परछाइयाँ दोन की तेज लहरों में छनती रहीं। लपटें हवा के झोंको की लपेट में आकर पश्चिम की ओर धसती और झुकती रहीं। दूसरी ओर इमारतें उनके मुख का ग्रास बराबर बनती रहीं।

···स्तेपी के पूर्वी इलाके से पवन के हलके लहरे आये। उन्होंने लपटों को हवा दी। बाद में वे धधकते हुए साँवले अंगारे दूर-दूर उड़ा ले गये······

* * *

इससे क्या ? इससे तुम्हे क्या परेशानी है ?"

"आप जानते हैं, याकोव येफिमोविच, मुझे लोग श्वेत-गार्दों के बीच का फौजी-अफसर समझते हैं। वैसे मैं अफसर किस बात का हूँ, लगता-भर हूँ।"

"खैर, तो उससे क्या हुआ !" फोमिन ने समझा कि अब पूरी स्थिति उसकी सम्हाल में है। हलके नशे से उसमें जितना आत्म-विश्वास जगा, उतना ही मिथ्याभिमान। उसने अपनी मूँछों पर हाथ फेरा और अधिकार की भावना से भरकर प्योत्र पर दृष्टि जमाई।

प्योत्र उसके हाथों में खेल गया। उसने अपने स्वर में थोड़ी घनिष्ठता घोलने की चेष्टा की। इस पर भी उसकी आवाज़ से विनय के साथ चापलूसी टपकी।

"हम दोनों ने फौज में साथ-साथ काम किया है। आप मेरे खिलाफ एक लफ्ज भी नहीं कह सकते। क्या मैं कभी किसी मामले में आपके खिलाफ रहा हूँ ? कभी भी नहीं। फिर, मैं तो हमेशा ही कज्जाकों के साथ रहा हूँ, और मैंने उनका ही साथ दिया है।"

"यह बात हम जानते हैं···तुम डरो नहीं, प्योत्र पँन्तेलेयेविच ! हम तुम लोगों को अच्छी तरह जानते हैं···तुम्हे कोई नहीं छुएगा···लेकिन, ऐसे लोग हैं जिन्हे हम धरेंगे ! कितने ही ऐसे काले नाग हैं, जिन्होंने हथियार अब तक छिपाकर रख छोड़े हैं···तुमने अपने यहाँ के सारे हथियार सौंप दिये, क्यों ?"

फोमिन के धीमे स्वर तीखी जाँच में इस तरह बदले कि क्षणभर को ···का दिमाग जवाब दे गया और उसके चेहरे पर खून छलक आया।

"तुमने अपने यहाँ के सारे हथियार सौंप दिये हैं···हैं न ? तो, बात का ···क्यों नहीं देते ?" मेज़ पर झुकते हुए फोमिन ने जरा जोर से ···।

"हाँ, हाँ···बेशक···मैंने सौंप दिये है, याकोव-येफिमोविच···हमने ···दिल से···"

"खुले दिल से !···हम तुम्हारे खुले दिलों को खूब जानते हैं। तुम ···हो कि मैं भी यहीं रहा, पला और बड़ा हूँ !" फोमिन ने जैसे नशे

में आँख मारी—"एक हाथ से किसी रईस कज्ज़ाक से हाथ मिलाओ और दूसरे हाथ में चाकू रखो···कुत्ते कहीं के ! कोई खुले दिल का आदमी नहीं है यहाँ । मैंने कितने ही लोगों को देखा है अपनी ज़िन्दगी में । गद्दार कहीं के ! लेकिन तुम्हें डरने की कोई ज़रूरत नहीं । वे लोग तुम्हारे बदन को हाथ न लगायेंगे···मेरी बात पत्थर की लकीर समझो !"

दार्या ने गोश्त की थोड़ी ठण्डी जेली खायी । अपनी विनय का परिचय देने के लिये उसने रोटी छुई नहीं । वैस फोमिन की पत्नी एक पर एक चीज़ उसके सामने रखती और उसमें खाने का आग्रह करती रही ।

प्योत्र शाम होने से ज़रा पहले अपने घर के लिये रवाना हुआ तो वह बड़ी उमग में लगा । उसमें नयी आशा लहरें लेती दीखी ।

प्योत्र को रवाना करने के बाद पैन्तेली बूढ़े कोरशुनोव से मिलने चला । वह लाल-गार्दों के गाँव में आने के थोड़ा पहले पिछली बार वहाँ गया था । लेकिन, उस समय लुकिनीचिना मीत्का की तैयारी में लगी हुई थी, सारा घर अस्त-व्यस्त था और वह लौट आया था । उसने समझा था कि उसके वहाँ जाने से काम-काज में केवल बाधा ही पड़ेगी । लेकिन आज उसने सोचा—चलूँ, ज़रा देख आऊँ कि सब लोग ठीक-ठाक तो हैं···कुछ देर बैठ आऊँ और लगे हाथों गाँव पर घिरने वाली मुसीबत के बारे में दो-चार बातें कर आऊँ ।

सो, गाँव के एक सिरे से मचकते हुए दूसरे सिरे तक पहुँचने में उसे बड़ा समय लगा । अहाते में ही ग्रीश्का-बाबा से भेंट हुई । वह बहुत कमज़ोर नज़र आया । उसके कई दाँत टूटे दीखे । मगर, यह देखकर पैन्तेली का मुँह अचरज से खुला-का-खुला रह गया, कि तुर्की की लड़ाई के ज़माने में मिले कुल के कुल क्रॉस और मेडल भेड़ की खाल के नीचे चमचमा रहे हैं । पुराने फैशन की ट्यूनिक के ऊँचे, कड़े कॉलर पर छोटी लाल पट्टियाँ चमक रही हैं । धारीदार, पुराने पतलून के पायचे सफेद मोज़ों के अन्दर हैं, सिर पर फौजी-टोपी है और उस पर कलगी लगी हुई है···बोला—'दादा, दिमाग तो ठीक है ? तुमने अपने सारे क्रॉस लगा रखे हैं और कलगीदार फौजी टोपी लगा रखी है···कुछ खयाल भी है कि आजकल कैसा ज़माना लगा है ?"

"क्या ?" बूढ़े ने अपने कान पर हाथ रखा ।

"मैं कहता हूँ कि यह कलगी उतार लो···ये सारे क्रॉस निकाल लो। यह सब करोगे तो लोग गिरफ्तार कर लेंगे तुम्हे ! सोवियत-सरकार के ज़माने मे तुम इस तरह बाहर नही निकल सकते । नये कायदों के खिलाफ माना जाता है।"

"मैंने अपने 'गोरे-जार' की खिदमत वफादारी और सच्चाई से की, साहबजादे । यह सरकार ईश्वर को नही मानती । मैं ऐसी सरकार को नही मानता । मैने वफादारी की कसम जार-अलक्सान्द्र के सामने खायी थी, किसानों के सामने नही ।" बूढ़े ने अपने होंठ चबाये और बेंत से सामने के घर की तरफ इशारा किया—"तुम मिरोन से मिलना चाहते हो ? वह घर पर है । लेकिन, मीत्का को चला जाना पड़ा है। माँ मेरी उसे सही-सलामत रखे । वैसे तुम्हारे बेटे तो कही नही गये है, घर पर ही हैं न ? दोनो ने कज्जाकों की कैसी इज्जत बढ़ाई है ? वफादारी की कसमे ली हैं, मगर फौज को जरूरत है तो खुद बीवियों के स्कर्टों मे टँके हुए हैं ! ···नताल्या तो ठीक है न ?"

'हाँ, नताल्या ठीक है ! मगर, यह क्रॉस उतार लो ··आखिर, दादा, तुम पागल हो गये हो क्या ?"

'जाओ, जाओ, अपना रास्ता लो ! मुझसे बहुत छोटे हो···मुझे नसीहत न दो ।" बूढ़ा सीधा पँन्तेली की ओर बढ़ा, और निराशा से सिर हिलाते हुए पँन्तेली ने उसे रास्ता दे दिया। खुद एक ओर को हटकर, बर्फ मे खड़ा हो गया।

वह घर पहुँचा तो लगा कि पिछले कुछ दिनो में ही मिरोन काफी बूढ़ा हो गया है। पँन्तेली को देखते ही वह उसके स्वागत के लिये उठ खड़ा हुआ। बोला—'हमारे बूढ़े-बहादुर को देखा तुमने ? हम लोगों को सच-मुच की सज़ा दे रहा है बूढ़ा, और ईश्वर है कि उसे अब भी नहीं उठाता ! हम लोगों पर मुसीबत ढहाने का क्या तरीका ढूँढा है। मेडल लगा लिये है, टोपी पहन ली है और बाहर निकल गये हैं बुजुर्गवार ! एक बच्चे मे और उनमें कुछ भी फर्क नही रह गया है···कुछ भी नही समझते !"

"जीने दो···जैसे मन करे, खुश हो लेने दो···अब बहुत दिन तो चलेंगे

नहीं"—लुकिनीचिना कज्ज़ाकों के साथ बैठ गई—"कहो, क्या हालचाल हैं तुम सबके ?" सुना था कि ग्रीश्का का पीछा ईसा की खिलाफत करने वालों ने किया था। वे लोग हमारे यहां से चार घोड़े ले गये हैं। सिर्फ एक घोड़ी और एक बछेड़ा छोड़ गये हैं। हमारा तो सभी कुछ लूट ले गये हैं।"

मिरोन ने आँखें यों मिकोड़ी, जैसे कोई निशाना साध रहा हो। फिर गुस्से से लाल होते हुए बदली हुई आवाज़ से बोला—'लेकिन हमारी जिन्दगी की बरबादी की वजह क्या है आखिर ? किसने की है यह बरबादी ? यह सारा कुछ शैतानों की इस सरकार ने ही तो किया है न ? भला हरेक को बराबर बना देना कौन-सी अक्ल की बात है ? तुम मेरी बोटी-बोटी नोचकर रख दो, मगर मैं इस बात पर राजी नहीं हो सकता। मैं ज़िन्दगी-भर खटा हूँ और वे लोग मेरे बराबर आज उस आदमी को लेना चाहते हैं जिसने गरीबी से उभरने के लिये कभी बदन नहीं हिलाया। इसीलिये तो हम अब काम नहीं करते। आखिर इस काम का मतलब भी क्या है ? फिर, किसके लिये काम करें हम ? तुम कोई चीज़ तैयार करो कि वे लोग आयेंगे और उसे उठा ले जायेंगे। अब सुनो मेरी बात—यही बात मैंने मिखरिन के अपने एक दोस्त से भी कही थी। बात यह है कि मोर्चा इस वक्त दोनेत्स के किनारे है, लेकिन क्या हमेशा वहीं बना रहेगा ? मैं तो जिन लोगों पर यकीन करता हूँ, उनसे कहता हूँ कि भाई, जो कज्ज़ाक आज दोनेत्स के पार हैं, उनके हाथ मजबूत करो !"

"यह काम हम कर कैसे सकते हैं ?" पॅन्तेली ने सावधानी से पूछा और किसी कारण अपनी आवाज़ बहुत ही धीमी कर ली।

"क्यों, यह काम हम कर सकते हैं सरकार को ठुकराकर ! हाँ, और इतनी ज़ोर से ठुकराकर कि वे फिर ताम्बोव के इलाके में पहुँच जाएँ और अपनी बराबरी का साझीदार किसानों को बनाएं। इन दुश्मनों की बरबादी और तबाही के लिये मैं अपने पास का ज़र्रा-ज़र्रा दे सकता हूँ। और इसका सही वक्त अभी है। बाद में तो बहुत देर हो जायेगी। मैंने सुना है कि दूसरे गाँवों के भी किसान खुश नहीं हैं। हमें एक साथ कदम उठाना चाहिए।" वह हाँफने और फुसफुसाने लगा—"दुश्मनों के रेजीमेंट आगे चले आये हैं। बहुत ही थोड़े पीछे रह गए हैं···हर गाँव के सदर की शक्ल

मे एक आदमी-भर बाकी है···यह समझो कि यह मामला हल करने मे हमे एक मिनट नहीं लगेगा···जहाँ तक व्येशेन्स्काया का सवाल है, अगर हम मिल-जुलकर एक साथ हमला कर देंगे तो उनकी धज्जियाँ उड जायेंगी ! हमारे अपने साथी हमारी बेइज्जती न होने देंगे। यह बात पक्की समझो।"

पैन्तेलो खडा हुआ और अपना शब्द शब्द तोलता हुआ मिरोन को सलाह देने लगा—"देखना, कही पैर रपट न जाये, वरना मुसीबत मे पड जाओगे। यह तो ठीक है कि इस वक्त कज्जाक गडबडा रहे है, लेकिन कोई नही जानता कि आखिरकार ऊँट किस करवट बैठेगा ! इन दिनों इन मामलों मे सबसे खुलकर तो बात कर नही सकते···फिर, ये नौजवान-कज्जाक तो मेरी समझ मे जरा भी नही आते। लगता है कि आँखें मूँदकर जीते हैं। इनमें से कुछ घर-गाँव छोडकर चले गये हैं। कुछ नही गये हैं। जिन्दगी दुश्वार हो रही है। और, यह तो जिन्दगी भी नही है··एक अटूट अँधेरा है, और बस !"

'शुबहे की कोई गुंजाइश नही"—मिरोन मुसकराया—"मैं जो कुछ कह रहा हूँ समझ-बूझकर कह रहा हूँ। लोग तो भेडे हैं, भेड़ें···एक भेडा जिधर जायेगा, भेडो का झुड का झुड उधर ही चला जायेगा। इसलिये हमे तो उन लोगो को रास्ता दिखलाना चाहिये। हमे तो उनकी आँखें खोलनी चाहिये कि वे इस सरकार को कायदे से देखें, समझें। जहाँ बादल नही होते, वहाँ-वहाँ गरज नहीं होती। मैं तो कज्जाकों से सीधे-सीधे कहता हूँ कि तुम्हे तो बगावत कर देनी चाहिए···सुना है कि लाल-गार्दों ने सभी कज्जाको को लटकाकर फाँसी दे देने का हुक्म दे दिया है। अब सवाल है कि इस हुक्म के जवाब मे हम क्या करेंगे ?"

मिरोन का चेहरा तमतमा उठा।—"आखिर हम किस हालत को पहुँच रहे हैं, प्रोकोफिमेविच ? मैंने सुना है कि दुश्मनो ने लोगो को गोली से उडाना तक शुरू कर दिया है···इसे तुम जिन्दगी कहते हो ! जरा देखो कि हर चीज मे किस तरह आग लग रही है···पैराफीन नही है··· दियासलाई नही है। मोखोव की दूकान मे मिठाइयों के अलावा और कुछ रह ही न गया था। आखिरकार उन्हें दूकान एकदम बन्द कर देनी पडी।

फिर, बोग्राई की हालत क्या है ? जरा मुकाबला करो कि पहले हम क्या बोते थे और आजकल हम क्या बोते हैं ! हमारे घोड़े लाल-फ़ौजी उड़ा ले गये हैं। हर चीज़ ले जाने में उनके हाथ साफ हैं, लेकिन इन चीज़ों के एवज में ऐसी ही दूसरी चीजें कौन देगा हमें ? मैं बच्चा था तो हमारे यहाँ छियासी घोड़े थे। खयाल है तुम्हें ? घोड़े हवा से बात करते थे···हर चीज को दौड़कर पकड़ लेते थे··· इनमें से एक घोड़ा बादामी रंग का था और उसके माथे पर सफ़ेद निशान था। मैं उस पर सवार होकर खरगोश का शिकार करने के लिये जाता था। तो, स्तेपी में निकल जाता था, लम्बी घास में खरगोश के पीछे उसे दौड़ा देता था, और तीन सौ गज के फासिले के अन्दर-अन्दर खर-गोश को जा पकड़ता था···आज तक याद है मुझे!" मिरोन के होठों पर उत्तेजना से भरी मुसकान दौड़ गई—"मैं एक दिन चक्की जा रहा था कि एक खरगोश ने मेरी राह काटी। मैंने उसका पीछा करने के लिये अपना घोड़ा मोड़ा, पर खरगोश पहाड़ से उतरा और दोन पार कर यह जा, वह जा ! यानी, 'ओवटाइट' के आस-पास का वक्त था, और हवा जमे हुए पानी के ऊपर पड़ी बर्फ उड़ा ले गई थी···बड़ी फिसलन थी। ऐसे में घोड़ा जो चारों खाने चित्त गिरा तो फिर उठकर खड़ा न हुआ। मुझे अपनी जिन्दगी खतरे में लगी। मैं काठी से उतरा, भागा-भागा घर गया और बोला—'पापा, आज एक खरगोश का पीछा कर रहा था कि मेरा घोड़ा मर गया।'—पापा ने पूछा—'लेकिन खरगोश तुमने पकड़ लिया ?' मैंने कहा—'नहीं, पापा !' 'तो, काला घोड़ा कसो और खरगोश पकड़कर लाओ, कुतिया के बच्चे !'···वह था ज़माना···वह ज़माना था जब कज्ज़ाकों की ज़िन्दगी सचमुच जिन्दगी थी। क्या बात थी कि खरगोश का शिकार कर लाओ, इस सिलसिले में घोड़ा मर जाये तो मर जाये। यानी, घोड़े की कीमत पूरा एक सैकड़ा, और खरगोश का दाम एक कोपेक, मगर···लेकिन, उन सारी बातों को आज दोहराने से फायदा भी क्या !"

पंन्तेली घर लौटा तो चिन्ता और उत्कंठा से उसे अपनी तबीयत और उखड़ी लगी। उसे सचमुच लगा कि अजीब विरोधी-तत्वों ने ज़िन्दगी को जकड़ना शुरू कर दिया है। कभी अपने फार्म और अपनी ज़िन्दगी को

उसने पहाड़ी-चोटी से नीचे उतरने वाले सधे हुए घोड़े की तरह सम्हाल रखा था। मगर, आज वही घोड़ा हाथ से बेहाथ हो गया था, इधर-उधर दौड़ रहा था, और अपने-आपको बचाने की कोशिश में बेबस-सा पन्तेली खुद पीछे खिसकता चला जा रहा था। कभी इस ओर को लुढ़कने लगता था, तो कभी उस ओर को!

पूरा भविष्य एक अनजानी धुंध के पीछे छिपा हुआ था। इस मिरोन कोर्शुनोव को ही लीजिये! एक ज़माना था कि जिले-भर में उससे धनी आदमी कोई दूसरा न था। लेकिन पिछले तीन सालों में सारी दौलत तीन-तेरह हो गई थी। सारी ताकत खत्म हो गई थी। उसके यहाँ काम करने वाले सभी लोग चले गये थे। बोआई पहले से कहीं कम होने लगी थी और उसे अपने बैल और घोड़े कौड़ी के मोल बेचने पड़ रहे थे। पिछला सारा कुछ, दोन-नदी पर घिरी, रिसती हुई धुंध की तरह, सपना-सा लगता था। सिर्फ एक मकान बच रहा था, जिसके बारेज़ की पच्चीकारी, और जिसकी मुंडेरों की उखड़ी हुई लकड़ी अपने पुराने ठाठ-बाट की दास्तान-सी कहती थी। मिरोन की दाढ़ी के बालों का भूरा रंग समय से पहले ही उतरने लगा था, और सफ़ेदी आने लगी थी। पहले सफेदी, बालू में उगी झाड़ियों की तरह, जहाँ-तहाँ नजर आयी थी, पीछे कनपटियों के बालों पर उतर आयी थी और अब बाल-बाल कर माथे के ऊपर के हिस्से पर जम रही थी। और, इस समय मिरोन के अन्तर में खुद दो चीज़ों के बीच कशमकश चल रही थी। एक तरफ उसका आग की तरह धधकता हुआ खून विद्रोह करता था, उसे काम की तरफ हाँकता था, और उसे खेतों की बोआई करने, खेड़ बनाने, खेती-बारी के औज़ारों की मरम्मत करने और खूब सारा धन कमाने को मजबूर करता था। दूसरी तरफ एक खयाल उसके दिमाग में रह-रहकर काँटे-से चभोता था कि आखिर खूब-सारा धन कमाने से फायदा···सारा-कुछ उड़ ही तो जायेगा?···और उदासीनता अपना मुर्दार-रंग हर चीज पर चढ़ा देती थी। काम के घट्ठों वाले उसके हाथ अब पहले की तरह हथौड़ा या आरी न साधते थे, बल्कि निकम्मे-से घुटनों पर पड़े रहते थे। बुढ़ापा उस पर वक्त के पहले ही तारी हो गया था। धरती तक उसे पीछे ढकेलने लगी थी। बसन्त में वह आदतन उसकी

तरफ मुड़ा था, जैसे कोई आदमी अपनी पत्नी को प्यार तो न करे, मगर उसके प्रति अपने कर्त्तव्य पूरे करने चाहे। उसने जमीन-जायदाद बटाई थी तो किसी तरह की खुशी का अनुभव न किया था, और वह हाथ से निकल गई थी तो पहले की तरह कोई टीस या दर्द महसूस न किया था। अभी लाल-फौजी उसके घोड़े ले गये थे तो उसने पलक तक न झपकाई थी, मगर दो साल पहले बैलों ने पटसन रौंद दी थी, तो उसने पचागुर से मारते-मारते बीवी की खाल उधेड़ ली थी। पड़ोसियों ने बड़बड़ाकर कहा था कि इसने हाथ इतनी चीजों पर पसार रखा है कि इसे जैसे एक बीमारी हो गई है।

पैन्तेली मचकता हुआ घर पहुँचा और जाकर पलग पर पड़ा रहा। उसके पेड़ू में भयानक दर्द उठा और मतली आने लगी। खाने के बाद उसने अपनी पत्नी से थोड़ा-सा नमक-पड़ा तरबूज माँगा। फिर, उसे ऐसी कँपकँपी छूटी कि कमरा पार कर स्टोव तक पहुँचना दुश्वार हो गया। सुबह होते-होते सन्निपात हो गया। तेज बुखार चढ़ आया। चेहरा पीला पड़ गया। आँखों की सफेदी साँवली पड़ गई और नीले रंग की झाई मारने लगी। बुढ़िया द्रोजदिखा ने नसों से काला खून खींचकर शोरबे की दो तश्तरियाँ भर दीं, मगर पैन्तेली को होश न आया। उसका चेहरा सफेद पड़ता गया। फिर, उसने साँस लेने की कोशिश की तो मुँह खुला-का-खुला रह गया।

: २० :

जनवरी के अंत में इवान अलेक्सेयेविच को ज़िला क्रांतिकारी समिति के अध्यक्ष से मिलने के लिये व्येशेन्स्काया बुलाया गया। उसको शाम को तातारस्की लौटना था, इसलिये मोखोव के खाली घर में, पुराने मालिक के पिछले दफ़्तर की लिखने-पढ़ने की बड़ी मेज के पीछे बैठा मीशा कोशेवोइ उसकी राह देखता रहा। व्येशेन्स्काया का ओगनानोव नाम का मिलिशिया का सिपाही खिड़की के ताखे पर बैठा गुनगुनाता, चुपचाप धुआँ उड़ाता और बड़ी होशियारी से कमरे के बाहर थूकता रहा। खिड़कियों के बाहर सूर्यास्त के रंग उतार पर आने और रात के सितारों में बदलने लगे। मीशा रह-रहकर पाले से मढ़ी खिड़की पर निगाह दौड़ाता और स्तेपान

अस्ताखोव के घर की तलाशी का हुक्म तैयार करता रहा।

इसी समय कोई बरामदे से निकलकर बरसाती में आये तो उसके फेल्ट के बूट हल्के-हल्के चरमराये।

"आ गया वह!" मीशा उठकर खड़ा हो गया। पर, पैरों की आहट अनजानी लगी, खाँसने का तरीका अनजाना लगा, और ग्रिगोरी मेलेखोव कमरे मे दाखिल हुआ। उसका चेहरा पाले से भूरा-लाल लगा, उसकी भौंहों और गलमुच्छों के बीच बर्फ के फूल झलके और कोट के बटन गले तक बंद नजर आये।

"मैंने खिड़की मे रोशनी देखी तो चला आया···कैसे हो?"

"हलो···कहो, मुसीबत क्या है?" मीशा ने उसका अभिवादन किया।

"कोई मुसीबत नहीं है···मैं तुमसे बातें करने और यह कहने आया हूँ कि माल पहुँचाने का काम मुझे न सौंपना—हमारे घर के घोड़े लगड़े हैं।" ग्रिगोरी बोला।

"लेकिन तुम्हारे यहां बैल भी तो हैं!" मीशा ने उसे कनखी से देखा।

"माल पहुँचाने का काम बैलो से नही लिया जा सकता···इस समय सडको पर बड़ी फिसलन है।"

सहसा ही लकड़ी के तख्तो पर किसी के पैरों की आहट हुई और, दूसरे ही क्षण, औरत की तरह लबादे मे लिपटा इवान अलेक्सेयेविच झटके से कमरे मे बैसा।

"मैं तो जमकर बर्फ हो गया हूँ, यारो···बर्फ हो गया हूँ, बिलकुल!" वह जोर से बोला—"हलो, ग्रिगोरी, तुम रात मे घूमते क्यो फिर रहे हो? शैतान ने ही यह लबादे, बनाये होगे···इनके बीच से हवा यों छनती है, जैसे कि यह चलनी हो।"

उसकी आँखें चमकती रही और वह लबादा उतारते-उतारते कहता गया—"हाँ, भाई, मैं अध्यक्ष से मिल आया। मैं उसके दफ्तर मे गया तो, उसने उठकर मुझसे हाथ मिलाया और बोला—'बैठिये···कॉमरेड!' सोचो जरा, जिला समिति का अध्यक्ष है···कोई ऐसा-वैसा आदमी नहीं है! अब जरा यह बतलाओ कि पिछले जमाने मे क्या हालत थी? उस समय यह

ग्रादमी होता तो मेजर-जनरल होता ग्रौर उसके सामने हमें तुम्हें इस तरह खड़ा होना पड़ता, जैसे कि हम परेड कर रहे हों ? इस तरह सरकार है अब हमारी। सब लोग बराबर हैं।"

ग्रिगोरी इवान के चेहरे के खुशी से खिलने ग्रौर शब्दों में जीत के बजने का कारण न समझा। पूछा—"क्या बात है कि तुम इतने खुश हो, इवान ग्रलेक्सेयेविच !"

"बात क्या है ?" इवान की गढ़ेवाली ठुड्डी काँपी—"उसने समझा कि मैं भी ग्रादमी हूँ, इसलिये भला मुझे खुशी क्यों न हो ? उसने बराबर के ग्रादमी की तरह मेरी तरफ़ हाथ बढ़ाया ग्रौर मुझसे बैठने को कहा···"

"ग्राजकल तो जनरल तक थोरे के कपड़े की कमीजें पहने घूमते फिरते हैं"—ग्रिगोरी ने ग्रपनी गलमुच्छों पर हाथ फेरा— "मोर्चे से पीछे हटते वक्त मैंने एक ग्रफसर को पक्की पेंसिल के निशानोंवाली पट्टियाँ पहने देखा। ग्रौर, उस-जैसे ग्रफ़सरों ने भी कज़्ज़ाकों से हाथ मिलाये थे···"

"जेनेरलों ने तो हाथ इसलिये मिलाये कि उन्हें मिलाने पड़े··· लेकिन, ये लोग तो ग्रपने मन से, स्वाभाविक रूप से ऐसा करते हैं···फ़र्क देखते हो ?"

"कोई फ़र्क नहीं है"—ग्रिगोरी ने सिर हिलाया।

"ग्रौर, तुम समझते हो कि यह सरकार भी बिलकुल वैसी ही है ? सवाल है कि ग्राखिर तुम लड़े क्यों ? तुम जेनेरलों के लिये लड़े ? ग्रौर, तुम कहते हो कि कोई फ़र्क नहीं है।"

"मैं ग्रपने लिये लड़ा, जेनेरलों के लिये नहीं। ग्रगर मेरे मन की बात पूछो तो न मुझे वह पसन्द है ग्रौर न यह।"

"ग्राखिर तुम्हें पसन्द कौन है ?"

"क्यों···कोई नहीं !"

मिलिशिया के सिपाही ग्रोलशानोव ने बीच कमरे में थूका ग्रौर हमदर्दी से मुसकराया। साफ़ है कि उसे भी न यह पसन्द था न वह।

"मैं नहीं सोचता कि पहले भी तुम्हारे विचार ऐसे ही थे···"

मीशा ने ग्रिगोरी को जान-बूझकर चोट पहुँचाने के खयाल से कहा। लेकिन ग्रिगोरी को देखने से लगा कि गोली निशाना चूक गई।

"तुम और मैं और सभी लोग कुछ दूसरी ही बातें करते रहे हैं।" ग्रिगोरी ने जवाब दिया।

इवान अलेक्सेयेविच बहुत उत्सुक था कि ग्रिगोरी जान छोड़े तो वह मीशा को अपनी यात्रा और जिलाध्यक्ष से हुई बातचीत के बारे में सभी कुछ बताये। लेकिन, बात बढ़ी तो उसे परेशानी हुई, और व्येशेन्स्काया में देखी और सुनी बातों के आधार पर वह भी बहस में कूद पड़ा। बोला—"तुम हमें उलझन में डालने के लिये यहां आये हो! ग्रिगोरी, तुम खुद नहीं जानते कि तुम चाहते क्या हो?"

"तुम ठीक कहते हो···मैं नहीं जानता"—ग्रिगोरी ने बात मानी।

"इस सरकार के खिलाफ तुम क्यों हो?"

"और, इस सरकार के हक में तुम क्यों हो? तुम्हारा रंग इतना गहरा लाल कब से हुआ?"

"हम इस बात की चर्चा इस समय न करेंगे। हम तो सिर्फ यह बात करेंगे कि आजकल हो क्या रहा है। और, सरकार का जिक्र मुझसे बहुत ज्यादा न करो, क्योंकि मैं ग्राम-अध्यक्ष हूं, और तुमसे बहस में उलझना मेरे लिये अक्ल की बात नहीं।"

"तो, बात छोड़ो···फिर मेरे जाने का वक्त वैसे भी हुआ। मैं तो माल लादकर पहुचाने के सिलसिले में यहाँ आया था···जहां तक तुम्हारी सरकार का सवाल है, तुम जो चाहे सो कहो, मगर है यह सरकार सड़ी-गली। अच्छा, एक बात सीधे-सीधे बताओ और झगड़ा वहीं खत्म हो जायेगा··यह बताओ कि तुम्हारी यह सरकार हम कज्जाकों के किस काम की है?"

"कौन-से कज्जाकों के किस काम की? कज्जाक तो सभी तरह के होते हैं!"

"सभी तरह के कज्जाकों के किस काम की?"

"आज़ादी, बराबरी का हक...सुनो ज़रा... कुछ ऐसा भी है जो तुम..."

ग्रिगोरी ने बात काटी—"यही बात उन्होंने १६१७ में भी कही थी, लेकिन अब कोई दूसरी और बेहतर दलील सोचनी चाहिये उन्हें ! सवाल है कि क्या वे लोग जमीनें दे रहे हैं हमें ? आजादी दे रहे हैं हमें ? बराबरी का हक दे रहे हैं हर एक को ? जमीनें.. जमीनें हमारे पास इतनी हैं कि हमारा दम घुटता है ; और, इससे ज्यादा आजादी हम नहीं चाहते। इससे ज्यादा आजाद हम होंगे तो एक-दूसरे को गली-सड़कों में चाकू मारने लगेंगे। हम अपने अतामान आप चुनते थे, पर अब लाल-गारद के लोग हमारे सिर पर सवार हैं। इस सरकार से कज्जाकों को सिर्फ बरबादी हासिल होगी, और कुछ नहीं। यह किसानों की सरकार है, और किसानों की सरकार हमें नहीं चाहिए। साथ ही हमें इन जनरलों की भी जरूरत नहीं। ये कम्युनिस्ट और ये जनरल, ये सब एक ही से हैं। वे सभी हमारी गर्दनों पर सधे जुये हैं।"

"माना कि धनी कज्जाकों को उसकी जरूरत नहीं, पर बाकी कज्जाकों के बारे में क्या कह सकते हो तुम ? तुम बेवकूफ हो ! गांव में धनी कज्जाक होंगे तीन, मगर यह बताओ कि गरीब कज्जाक कितने होंगे ? और, इन मेहनतकशों का क्या करोगे तुम ? यहां...यहां तो हम तुम्हारी राय सुनेंगे नहीं। धनी कज्जाकों को चाहिये कि वे अपने माल-मते के एक हिस्से का मोह त्यागें और उसे गरीबों को दे दें। वैसे अगर वे न देंगे तो हम ले लेंगे और उसके साथ उनका थोड़ा-बहुत मांस भी उधड़ता चला आयेगा ! हमने अपने ऊपर उनकी हुकूमत बहुत सही। जमीन चुराई उन्होंने...चोर कहीं के !"

"चुराई नहीं, जीती। हमारे पुरखों ने उसके लिये अपना खून बहाया था, शायद इसीलिए धरती इतनी हरी-भरी है ..."

"इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता...जिन्हें जरूरत है, उन्हें जमीन मिलनी चाहिए और इन लोगों को देनी चाहिए। मगर, तुम...तुम हो गिरगिट, मिनट-मिनट में रंग बदलते हो। तुम्हारे-जैसे लोग ही मुसीबत की जड़ होते हैं।"

"मुझे बेकार गालियां न दो। मैं तो अपनी पुरानी दोस्ती के ख़याल से आया था कि मेरे दिल में जो बात खौल रही है, वह तुम्हारे

सामने खोलकर रख दूँ...तुमने बराबरी का जिक्र किया। इसी तरह तो बोल्शेविकों ने अनजान लोगों पर रोब जमाया है। वे मीठी-मीठी बातों का चारा इस्तेमाल करते है और लोग जाल में मछलियों की तरह फसते चले जाते हैं। और, तुम्हारी यह 'बराबरी' है कहाँ ? लाल-फौज को ही लो। ये फौजें गाँव के बीच से गुजरी तो ट्रूप-अफसरों के पैर क्रोम-चमड़े के बूटों से लैस नजर आये, आम इवानों के पैर चीथड़ों से ढँके दीखे। मैंने ऐसे कमीसार देखे हैं जिनके बदन पर सारे कपड़े चमड़े के थे—क्या पैंट, क्या कोट और क्या कोई चीज़ ! दूसरी तरफ ऐसे लोग देखे हैं जिन्हें एक जोड़ी जूतों के लिए चमड़ा नसीब नहीं हुआ। अभी तो सोवियत-सरकार को सिर्फ एक साल हुआ है लेकिन जब जड़ें ज़रा गहरी हो जायेंगी, तब उनकी इस 'बराबरी' की आखिर क्या शक्ल सामने आयेगी ? मोर्चे पर हम कहते थे कि हम सब बराबर होंगे, अफसरों और मामूली फौजियों के बीच कोई फर्क न रहेगा। दोनों को ही एक-सी तनख्वाह मिलेगी। लेकिन कुछ नहीं। सब कुछ चारा-भर निकला। राजा हज़ार बुरा हो तो भी कोई बात नहीं। मगर ज़रा गंवार को राजा बना दो, फिर देखो। बुरे राजा से दस गुना बदतर साबित होगा यह गवार-राजा। माना कि पुराने अफसर बहुत बुरे थे, मगर ज़रा कज्जाक को अफसर बना दो, इससे बदतर शक्ल आयेगी नहीं आपके सामने... घुटन से आप मर जायेंगे। तालीम इस कज्जाक को भी वही मिली होगी जो किसी दूसरे कज्जाक को, यानी बैलों की पूछ ऐंठना सीखा होगा इसने। मगर हाथ-पैर मारकर, अफ़सर बन जाने पर इसे ताकत का ऐसा नशा होगा कि बस ! अपनी गद्दी सही-सलामत रखने के लिए यह किसी को जिन्दा आग में झोंकने को भी तैयार रहेगा ?"

"तुम्हारी बातें क्रांति-विरोधी हैं।" इवान अलेक्सेयेविच ने ठंडे मन से कहा, पर ग्रिगोरी की आंखों से आंखें न मिलाईं—"तुम मुझे अपनी तरफ कर न पाओगे, और मैं तुम्हें तोड़ना नहीं चाहता। आज तुमसे एक जमाने बाद मुलाकात हुई है, और इसमें दो रायें नहीं हो सकतीं कि इस बीच तुम बहुत ही ज्यादा बदल गये हो। तुम तो सोवियत-सरकार के दुश्मन हो !"

"मुझे तुमसे इसकी उम्मीद न थी। यानी, अगर मैं यह सोचता-समझता हूँ कि हमें किस तरह की सरकार चाहिए तो मैं इन्क़लाब के ख़िलाफ़ हूँ...है न ? यानी, मैं, एक कैडेट और इन्क़लाब के ख़िलाफ़ ?"

इवान ने श्रोलमानोव की तम्बाकू की थैली ली और धीमे स्वर में बोला—"यह बात कैसे समझा दूँ मैं तुम्हें ? यह तो अपने ही दिल और दिमाग से सोची जाती है। फिर तुम्हें समझाने के लिये लफ़्ज़ खोजना मेरे बस की बात नहीं, क्योंकि एक तो मैं लिखा-पढ़ा नहीं; दूसरे, कितनी ही बातें खुद नहीं जानता। कितने ही मामलों में तो मुझे खुद अंधेरे में इधर-उधर टटोलना पड़ता है..."

"ख़त्म करो बातें ..सुनते-सुनते कान पक गये !" मीशा तेज़ी से चिल्लाया।

सब लोग एक साथ घर के बाहर आये। ग्रिगोरी चुप रहा। अलग होते समय इवान अलेक्सेयेविच बोला—"अच्छा हो कि यह सारी बातें तुम अपने तक ही रखो, वरना तुम्हें पूरी तरह जानते हुए भी, मुझे तुम्हारा मुंह बंद करने के तरीक़े सोचने पड़ेंगे। तुम कज़ाकों को और डगमगाओ नहीं। वे यों ही डगमगा रहे हैं। साथ ही तुम हमारे आड़े भी न आओ, नहीं तो हमें तुम्हारे ऊपर पैर रखने पड़ेंगे। दोस्विदानिया !"

ग्रिगोरी अपने रास्ते पर बढ़ा। उसे रह-रहकर ख़याल आया कि उसने अपना मामला आप बिगाड़ लिया है। यानी जो बात पहले साफ़ नहीं थी, वह अब बिलकुल साफ़ हो गई थी। वैसे उसने तो मात्र इतना किया था कि उन बातों को इस समय शब्दों में बांध दिया था, जो पिछले कई दिनों से उसके मन में उमड़ती-घुमड़ती रही थीं।

फिर, चूंकि आज वह एक दोराहे के बीचोंबीच खड़ा दो अलग-अलग तत्त्वों के बीच डगमगा रहा था और दोनों को ही काट रहा था, इसलिए उसमें एक तरह की खीझ पैदा हो गई थी। इस खीझ की टीस बहुत गहरी थी, और इसकी आग पल-भर को भी धीमी न पड़ती थी।

मीशा और इवान साथ-साथ गये। इवान, मीशा को ज़िलाध्यक्ष से अपनी भेंट की बातें बताने लगा तो सारी बातों का रंग और महत्त्व ही

जैसे रहे-रहे मुरझा गया। उसने अपनी तबीयत में पहले की-सी उमग और खुशी भरने की बडी चेष्टा की, पर बात बनी नही। कोई चीज आकर सड़क के आर-पार अड गई और इस चीज के कारण उसको हंसी-खुशी से भरकर जीना और ताज़ा, पाले से नहायी हवा मे सास लेना दुश्वार हो गया। ग्रिगोरी और उसकी सारी बातचीत ही रास्ता रोकने लगी। उसे वहम की बातो का ध्यान आया तो अपनी आवाज़ में नफरत घोलते हुए बोला—'ग्रिगोरी-जैसे लोग ऐसे होते हैं कि वे और कुछ नहीं करते, सिर्फ आदमी के पैरो के बीच आकर अड जाते है। बकवास बिलकुल ! वह किनारे तक कभी नही पहुँचेगा, गोबर की तरह लहरों पर सिर्फ उतराता चला जायेगा। अगर वह फिर आया तो उसे बताऊंगा मैं ! अगर उसने किसी तरह की कोई गडबडी शुरु की तो उसके लिये कोई शात, छोटी जगह खोज देंगे हम लोग। खैर, तुम्हारे क्या हाल-चाल हैं, मीशा ? कैसा चल रहा है सब कुछ ?"

मीशा ने शपथ के साथ अपने विचार सामने रखे।

वे सडक पर आगे बढे कि कोशेवोइ इवान की ओर मुड़ा और उसके भरे हुए, लड़कियो के-से होंठो पर हल्की मुसकान दौड गई—"यह राजनीति भी कैसी गई-बीती चीज़ है ! शैतान ले जाये इसे ! जितनी दोस्ती-दुश्मनी राजनीति की बातो पर मोल लेनी पडती है, उतनी किसी दूसरे विषय की बातो को लेकर नही लेनी पडती। अब ग्रिगोरी को ही लो, हम स्कूल के जमाने से एक-दूसरे के दोस्त रहे हैं, हम साथ-साथ लड़कियों के पीछे भागते फिरे हैं, और वह बिलकुल मेरे भाई की तरह रहा है। लेकिन आज बातें शुरू होती हैं तो मैं अपने आपे मे नही रह जाता। कलेजा मुह को आने लगता है। तरबूज़ की तरह फटता महसूस होता है। आज ही की लो। मैं गुस्से के मारे सिर से पैर तक कापने लगा था। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे कि वह मेरा कुछ लिए ले रहा है, मुझे लूटे ले रहा है। इस तरह की बातो से मन होता है कि आदमी का गला दबाकर मार डालो। लडाई मे कोई रिश्ते या भाई-भतीजा नही होता। आदमी एक लकीर खींच लेता है, और फिर उसी पर चलता चला जाता है।" मीशा की आवाज़ असह्य-वेदना से कपकपाने लगी—

"इस समय की उसकी बातें सुनकर मुझे इतना गुस्सा आया कि बस ! इतना गुस्सा तो मुझे उस पर तब भी न आया था, जब उसने कभी मेरी कोई माशूका उड़ा दी थी । इससे सिर्फ यही मालूम होता है कि हम आज एक-दूसरे से कितनी दूर हैं, और आज हमारे बीच कितना बड़ा फ़ासिला है !"

: २१ :

बर्फ गिरते ही पिघल जाती । दोपहर को वर्फ़ के अम्बार, उदासी से भरी, भारी गड़गड़ाहट के चोटी से फिसलते नीचे चले आते । दोन-तट से दूर के जंगल में सरसराहट-सी होती रहती । शाहबलूत के तने नंगे नजर आते । शाखों से नन्ही-नन्ही बूँदें चूतीं और वर्फ को भेदकर, शरद् की सड़ती हुई पत्तियों की सतह तक जा पहुँचतीं । बहुत पहले से वसन्त की गरमी से भरी नशीली मधुगंध चारों ओर से उमड़ती रही और बगीचे से चेरी की महक आती रही । दोन पर बिछी वर्फ की चादर में सूराख पड़ने लगे, जमा हुआ वर्फ किनारों से कटकर दूर चला गया, और झलामल, हरा पानी सूराखों के सिरों तक बढ़-बढ़ आने लगा ।

दोन-प्रदेश को ले जाये जानेवाले लड़ाई के सामान की स्लेजें तातारस्की में बदली जाने को हुईं, सामान के साथ के लाल-फौजी जानदार साबित हुए । उनका कमाण्डर, इवान अलेक्सेयेविच पर निगाह रखने के लिये, क्रान्तिकारी समिति में बना रहा । उससे बोला—"मैं यहीं तुम्हारे साथ बना रहूँगा, वरना तुम उड़ जाओगे और हमें तुम्हारा अता-पता भी न मिलेगा ।"

बाकी लोग स्लेजें जुटाने को चले । दो-दो घोड़ोंवाली सैंतालीस स्लेजों की जरूरत थी ।

मोखोव का पहले का कोचवान येमेल्यान मेलेखोवों के घर गया और प्योत्र से मिला । बोला, "अपने घोड़े जोतो और बोकोवाया तक लड़ाई का सामान पहुँचा आओ ।"

प्योत्र ने अपनी जगह से टस से मस हुए बिना गुर्राकर जवाब दिया—"घोड़े लगड़े हैं ··कल मैंने घोड़ी जोतकर ज़ख्मियों को व्येशेन्स्काया पहुँचाया था ।"

येमेल्यान ने आगे कुछ नहीं कहा। वह मुड़ा और अस्तबल की ओर बढ़ा। प्योत्र, बिना टोप लगाये, उसके पीछे-पीछे घीसता भागा—"हे··· अरे, सुनो तो···एक मिनट रुको तो···वहां न जाओ।"

"तो फिर बेवकूफ न बनाओ।" येमेल्यान ने प्योत्र की ओर घूरकर देखा और बोला, "मैं तुम्हारे घोड़ों को एक नजर देखना चाहता हूँ। मेरा खयाल है कि हथौड़ा मार-मारकर तुमने खुद उन्हें लगडा बनाया है। तुम मेरी आँखों पर परदा नही डाल सकते। मैंने अपने जमाने में इतने घोड़े देखे है जितने लीद के चोथ तुमने देखे होंगे अब तक। चलो, जोतो···घोड़े जोतो और चाहे बैल जोतो, मेरे लिये बात एक है।"

ग्रिगोरी सवारी के साथ गया। रवाना होने के पहले वह दौड़ा-दौड़ा बावर्चीखाने मे गया और अपने बच्चों को चूमकर जल्दी-जल्दी बोला—"तुम्हारे लिये खूब अच्छी-अच्छी चीजें लाऊंगा, पर शरारत न करना और माँ का कहना मानना।" प्योत्र से बोला—"मेरे लिए परेशान न हो···मैं बहुत दूर नही जाऊंगा। अगर वे मुझे बोकोवाया से आगे जाने को कहेंगे तो मैं बैलो को छोड़-छाड़कर चल दूँगा। लेकिन हो सकता है कि मैं लौट-कर गांव न आऊँ और चाची के यहाँ सिनगिन चला जाऊँ! वहाँ आकर मुझसे मिलना, प्योत्र। मुँह यहाँ लटका रहना पसन्द आ नहीं रहा।" ग्रिगोरी होंठो ही होंठो मुसकराया—"खैर, अलविदा, नताल्या, मेरे लिये बहुत दु खी न होना।"

इधर मोखोव की दूकान से खाने-पीने की चीज़ों के गोदाम का काम लिया जा रहा था। सो, दूकान के पास ही गाडी मे तोप के गोले भरे गये और गाडी चल दी।

बैल एक रफ्तार से आगे ही आगे बढते रहे और ग्रिगोरी, अपने कोट लिपटा, स्लेज के पिछले हिस्से में लेटा रहा कि उसे खयाल आया—'यह ।ल-फौजी लड़ रहे है ताकि उनकी जिन्दगी बेहतर हो···लेकिन, हम तो नी जिन्दगी की बेहतरी के लिये पहले ही लड चुके है। जिन्दगी मे भी सच्चाई नही है। जो जीत जाता है, वह हारनेवाले को हड़प है। मैं एक ऐसी सच्चाई के पीछे भागता रहा हूँ जो कही है ही कहते है कि पुराने जमाने मे तातारो ने हमारे इलाको को हथियाने

और हमें गुलाम बनाने की कोशिश की। अब पारी रूसियों की है। उनके साथ चैन से रहना मुमकिन नहीं। वे मेरे और मेरी तरह सभी कज्ज़ाकों के लिये परदेशी हैं। कज्ज़ाक यह बात अब महसूस करते ही हैं। हम मोर्चे से भागकर आये, और आज किसी भी दूसरे आदमी में और मुझमें कोई फ़र्क नहीं है···लेकिन देर बहुत हो चुकी है···चिड़ियाँ खेत चुग गई हैं।"

सड़क के सिरे पर स्तेपी की घास की लहरियादार गोट थी। यह घास रहे-रहे डुबकी लगाकर झाड़ियों से भरे खड्ड में उतर जाती थी। दूर पर वर्फ से मढ़े मैदान फैलते चले गये थे। हमवार थे। सड़क जैसे अनन्त थी और मन में नींद से सीझी उदासी की भावना जगाती थी।

ग्रिगोरी जब-तब ही बैलों पर चिल्लाया। उसने सुस्ती का अनुभव किया और औंघाते हुए लड़ाई के सामान के केसों से सट गया। फिर एक सिगरेट जलाई, धुआँ उड़ाया और अपना चेहरा सूखी घास में छिपा लिया। उससे सूखी तिनपतिया और जुलाई के दिनों की सलोनी धूप की गमक आती रही। ग्रिगोरी को नींद आ गई। उसने सपना देखा कि नाज के ऊँचे-ऊँचे पौधों के बीच वह अकसीनिया के साथ चला जा रहा है। अकसीनिया की गोद में एक बच्चा है, जिसे उसने सावधानी से साध रखा है। औरत अपनी चमकती हुई आँखों से ग्रिगोरी को देख रही है। वह अपने दिल की धड़कन सुन रहा है, और नाज की एक-एक बाली की सरसराहट उसके कानों में बज रही है। वह मैदान के किनारों पर घास की गोट देखता है और आसमान के झलाझल नीलम पर नज़र डालता है। उसका प्यार नयी करवट लेता है और वह अपने पूरे तन-मन से फिर अकसीनिया पर जान देने लगता है। उसे लगता है कि उसका पूरा हृदय और हृदय की एक-एक धड़कन अकसीनिया को समर्पित हो गई है। इसके साथ ही वह यह भी समझता है कि यह सच नहीं है और उसकी आँखों के आगे के रंग स्वप्न-देश के हैं, और बेजान-सी झाड़ें मार रहे हैं। इस पर भी वह खुशी से फूला नहीं समाता और सपने को ज़िन्दगी मान लेता है। अकसीनिया इस समय भी वैसी ही है, जैसी पाँच वर्ष पहले थी। सिर्फ परिवर्तन इतना हुआ है कि उसमें थमाव आ गया है और उसका जोश ठंडा पड़ चुका है।

ग्रिगोरी के सामने पहले से कहीं साफ तसवीर आती है। अकसीनिया की गर्दन पर हवा से बिखरे घुंघराले बाल हैं और उसके सफेद रुमाल के कोने चमक रहे हैं।

इस बीच एक झटका लगा, ग्रिगोरी जाग गया और आवाजें उसे फिर इस जीती-जागती दुनिया में घसीट लायी। उसने आँख उठाकर देखा कि वह और उसके साथ के लोग विरोधी दिशा में जाती, सामान से लदी स्लेजों की आखिरी कतार की बगल से गुजर रहे हैं।

"क्या सामान है तुम्हारी स्लेजों पर, दोस्तो ?" ग्रिगोरी के आगे की स्लेज से बोदोव्स्कोव ने भर्रायी हुई आवाज में पूछा।

स्लेज दौड़ाने वाले चीखते रहे और बैलों के खुरों के नीचे बर्फ चरमराती रही। काफी देर तक सन्नाटा रहा। फिर एक आदमी बोला—"लाशें हैं—टाइफस से मरे लोगों की।"

ग्रिगोरी ने देखा तो गुजरती हुई स्लेजों में तिरपाल से ढँकी लाशें पड़ी दीखीं। उसकी अपनी स्लेज की पटरी बाहर लटकते एक हाथ के ऊपर पड़ गई। आदमी के गोश्त ने बेजान-सी ठस आवाज की। ग्रिगोरी ने बेमन से उधर से निगाह फेर ली।

तिनपतिया की मोहक महक ने फिर नींद बुन दी। अर्द्ध-विस्मृत अतीत हौले-हौले साकार हो उठा और उसने अपना कलेजा पुरानी यादों की तलवार की तेज धार पर रख दिया। वह स्लेज के पिछले हिस्से में ढहा तो उसके गाल तिनपतिया के पीले तिनकों से सट गये। एक गहरा दर्द जैसे उसे छेदने लगा। लेकिन इस पर भी बड़ा प्यारा और मधुर लगा। पिछली यादें उसे तार-तार करती रहीं। दिल रह-रहकर तेजी से धड़कता और खून थूकता रहा।

नींद का सिलसिला काफी देर तक चलता रहा।

: २२ :

कुछ लोग तातारस्की-क्रांतिकारी-समिति के आस-पास आ जमा हुए। वे थे दाविद, तिमोफी, मोखोव का पहले का कोचवान येमेल्यान और चेचक के दागों से भरे चेहरे वाला मोची फिल्का। रोजमर्रा के काम के लिए इवान

अलेक्सेयेविच को इस दल के सहयोग और सहायता पर निर्भर करना पड़ता था, क्योंकि उसे अपने और गाँव के बाकी लोगों के बीच एक दीवार-सी उठती नजर आती थी। कज्जाक बैठकों में न आते थे और अगर आते थे तो तब आते थे जब दाविद और दूसरे लोग एक-एक घर के कई-कई चक्कर लगा आते थे। आने पर वे चुपचाप बैठे रहते थे और हर बात पर हाँ-हाँ करते और सिर हिलाते चले जाते थे। ऐसे अवसरों पर कमउम्र-कज्जाकों की बहुतायत होती थी, पर साथ देनेवाले और हमदर्दी दिखाने-वाले उनमें भी नहीं मिलते थे। इवान बैठक की कार्रवाई चलाता तो पत्थर-से जड़ चेहरे, अविश्वास से भरी नजरें और नीचे झुकी हुई निगाहें उसे सामने दीख पड़ती थी। ऐसे में उसका दिल अन्दर ही अन्दर बैठने लगता, उसकी आवाज़ पतली पड़ जाती और उसका आत्मविश्वास घटने लगता। ऐसे-ऐसे एक दिन फ़िल्का उबल ही तो पड़ा—"हम सारे गाँव से कट गये हैं, कॉमरेड कोतल्यारोव! लोगों के दिलों में शैतान आ बसा है। कल जख्मी लाल-फौजियों को व्येशेन्स्काया पहुँचाने के लिये मैं स्लेजें लेने गया तो कोई तैयार ही नहीं हुआ। इस तरह तो हमारी गाड़ी बहुत दूर तक न जा सकेगी।"

"और, लोग किस तरह शराब पीते हैं!" येमेल्यान ने अपने पाइप को अंगूठे से ठोंकते हुए जोर से कहा—"हर घर में वोद्का बनाई जाती है।"

मीशा कोशेवोइ के माथे पर बल पड़े, लेकिन वह चुप रहा। पर, सब लोग शाम को घर जा रहे थे कि उसने इवान अलेक्सेयेविच से पूछा—"मुझे एक राइफिल मिल सकती है?"

"किसलिये?"

"खाली हाथों बाहर निकलना मुझे पसन्द नहीं। तुमने कुछ देखा नहीं क्या? मेरा ख़याल है कि हमें कुछ लोगों को गिरफ़्तार कर लेना चाहिये··· यानी, गिरफ़्तार करना चाहिए ग्रिगोरी-मेलेखोव, बूढ़े बोलदीरेव, मातवेई काशुलिन और मिरोन कोरशुनोव को। वे कज्जाकों के कान भर रहे हैं···काले साँप हैं! दोनेत्स के इलाके से अपने साथियों के लौट आने के इन्तजार में हैं।"

इवान अलेक्सेयेविच के चेहरे पर निराशा झलकी—"अगर हमने लोगों को इस तरह चुन-चुनकर छाटना शुरू किया तो हमे कितने ही कान भरनेवालो को गिन-गिनकर अलग करना पडेगा···लोग डगमगा रहे हैं··· उनमें से कुछ हमारे साथ हमदर्दी रखते हैं, पर कोरशुनोव का मुह जोहते रहते है। उन्हें डर है कि उसका मीत्का दोनेत्स से आयेगा और उनकी अँतड़ियाँ निकालकर रख देगा।"

फिर, इवान की गतिविधियों का सूत्र जीवन ने अपने हाथो मे ले लिया। अगले दिन व्येशेन्स्काया से एक दूत हुक्म लेकर आया कि सबसे सम्पन्न और धनी-परिवारो पर कर लगा दिया जाये और, जैसे भी हो, पूरे गाँव से चालीस हज़ार रूबल उगाहे जायँ। इस पर क्रांतिकारी समिति ने तय कर दिया कि किस परिवार से कितना वसूल किया जाये। इसके बाद अगले दो दिनों मे दो बोरे यानी कोई अठारह हज़ार रूबल जमा हो गये। इवान अलेक्सेयेविच ने ज़िला-समिति को सूचना दे दी। जवाब मे मिलिशिया-पुलिस के दो लोग आये और साथ मे हुक्म लाये—"जिन्होंने यह कर अदा नही किया है उन्हें गिरफ़तार कर लिया जाये और पहरेदारों के साथ व्येशेन्स्काया भेज दिया जाये।" नतीजा यह हुआ कि चार लोग तुरन्त ही गिरफ्तार कर मोखोव के तहखाने मे बद कर दिये गये, जहाँ वह जाड़े के दिनों मे सेब रखा करता था।

सारे गाँव मे खलबली मच गई, जैसे कि किसी ने शहद की मक्खियों के छत्ते में हाथ मार दिया हो। गिरती हुई कीमतवाली मुद्रा को जमा करनेवाले कोरशुनोव ने कर अदा करने से साफ इन्कार कर दिया। लेकिन वक्त बदल गया था और अब उसे अपनी रियासत के पिछले ज़माने की कीमत अदा करनी थी। सो, व्येशेन्स्काया का एक जवान-सा कज़ाक जाच-पड़ताल के लिये तातारस्की आया। जवान अठाईसवें रेजीमेंट में काम करता था। उसके साथ एक दूसरा आदमी भी आया। इस आदमी के बदन पर चमड़े की जर्किन थी और उस पर उसने भेड की खाल ओढ रखी थी।

इन दोनो ने इवान की क्रातिकारी-अदालत का हुक्मनामा दिखाया और उसके कमरे मे दरवाजा बद करके उससे बहुत देर तक बातें करते

रहे। जांच के लिये आये कज्जाक के, सयानी उम्र के, साफ़ दाढ़ी-मूंछवाले साथी ने गम्भीर होकर कहा—"जिले में गड़बड़ियां हो रही हैं। श्वेत-गार्द के जो लोग बाकी रह गये हैं, वे अब अपने सिर उठा रहे हैं और मेहनतकश कज्जाकों को डगमगाने की कोशिश कर रहे हैं। हमें अपने सभी विरोधियों को यहां से दूर कर देना चाहिये। हमारे ये विरोधी हैं फौजी अफ़सर, पादरी और जे*-दार्म यानी वे सभी लोग जो हमसे सक्रिय-रूप से लड़े हैं। हम ऐसे लोगों की एक सूची तैयार करेंगे। मेरे साथ के यह सज्जन जाच करेंगे। आप इन्हें हर तरह की मदद दें। कुछ लोगों को यह पहले से जानते हैं।"

इवान ने आदमी के साफ चेहरे पर निगाह डाली और एक-एक कर सभी परिवारों के नाम गिना गया। उसने प्योत्र-मेलेखोव का भी जिक्र किया, पर जाच के लिये तैनात कज्जाक ने सिर हिलाया—"नहीं, वह तो हममें से एक है। फोमिन ने कहा है कि उसे छुआ न जाये। वह बोलशेविकों का साथी और दोस्त है। मैंने खुद अठाईसवें-रेजीमेंट में उसके साथ काम किया है।"

कुछ घंटों बाद मोखोव के लम्बे-चौड़े अहाते में गिरफ़्तार कज्जाक खाने-पीने की चीजें, कपड़े-लत्ते और दूसरी जरूरी चीजें, अपने-अपने परीवार से पाने के इन्तजार में बैठे दीखे। मिलिशि या-पुलिस के लोग उनकी पहरेदारी करते मिले। मिरोन-कोरशुनोव बूढे बोगातिरयोव और मातवेई कानुलिन की बगल मे बैठा था। उसने बिलकुल नये कपड़े इस तरह पहन रखे थे, जैसे कि अपनी मौत को गले लगाने जा रहा हो। शेखीबाज अवदीच अहाते में इधर-उधर चहलकदमी कर रहा था। वह बिना मतलब कुएं की ओर घूरता या फिर लकड़ी की चैली उठाकर, अपने पसीने से तर बैंजनी चेहरे को आस्तीन से पोंछते हुए, बरसाती से छोटे फाटक तक टहल आता। बाकी लोग सिर झुकाये बैठे थे और अपने-अपने बेंतों से बर्फ खुरच रहे थे। उनके घर की औरतें आंसू बहाती, बोरे और बंडल लिये-दिये अहाते में दौड़ी चली आ रही थीं।

लुकिनीचिना ने सिसकी भरते हुए अपने बूढे पति की भेड़ की खाल

---

* हथियारबंद घुड़सवार फौज के लोग।

की जैकेट के बटन बंद किये, और उसका कॉलर एक सफेद रूमाल से बाधा। फिर उसकी धुधली-धुधली-सी आँखो मे आँखें डालती हुई बोली —"तुम दुखी हो रहे हो, मिरोन ! हो सकता है कि सब कुछ अंत में ठीक ही हो जाये। हे प्रभु ईसा !" उसका आँसुओ से तर चेहरा खिच-सा गया, पर उसने अपने होठ मिकोडे और बोली—"मैं तुमसे मुलाकात करने आऊँगी और अग्रिपिना को अपने साथ लाऊँगी। तुम्हे तो वह बहुत अच्छी लगती है न ?"

इसी समय फाटक पर मिलिशिया के पुलिसमैन की आवाज गूजी— "स्लेजें आ गई हैं। उन पर अपनी-अपनी चीजे रखो और चलो···औरतो, पीछे हटकर खडी हो···बद करो यह रोना-चिल्लाना !"

लुकिनीचिना ने अपनी जिन्दगी मे पहली बार मिरोन का बालो से भरा हाथ चूमा और फिर झटके से अलग हो गई। बैलगाडियो वाली स्लेजो ने धीमी रफ्तार से चौक पार कर दोन की ओर बढना शुरू किया। दो मिलिशिया-पुलिसमैनो के साथ सात कैदी पीछे-पीछे चले। अवदीच जूते के फीते बाधने के लिये पीछे ठिठका और फिर तेजी से भागकर बाकी लोगों के साथ हो लिया। मातवेई काशुलिन और उसका बेटा अगल-बगल चलते रहे। मैदान्निकोव और कोरोल्योव सिगरेट पी रहे थे। मिरोन-कोरशुनोव स्लेज से सटा चलता रहा। बहुत ही शानदार चाल से सबसे पीछे-पीछे चलता रहा बूढा बोगातिरयोव। हवा उसके सिर और दाढी के सफेद बाल उडाती रही। उसके कंधे पर पडा स्कार्फ हवा मे यों सरसराता रहा जैसे कि अलविदा कह रहा हो।

फरवरी महीने के बादलो से भरे दिन तातारस्की मे एक और असाधारण घटना घटी। इधर जिले से अफसर और अधिकारी आते ही रहते थे, इसलिये गाव के लोगों को उनके आने में अब कोई खास बात नजर न आती थी। यही कारण है कि जब दो घोड़ोंवाली स्लेज गाव मे आयी और कोचवान की बगल मे एक आदमी बैठा दीखा तो किसी ने कोई ध्यान न दिया। स्लेज मोखोव के घर के बाहर रुकी और कोचवान की बग़ल से वह आदमी नीचे उतरा। आदमी देखने में बुर्जुग मालूम हुआ और उसकी चाल-ढाल मे एक इत्मीनान नजर आया। उसने धुड़-

सवार सेनावाला अपना लम्बा कोट ठीक किया, फ़र की लाल टोपी के फ़्लैप कानों पर से हटाये, और मॉज़र-राइफिल का केस उठाये धीरे-धीरे सीढ़ियों की ओर बढ़ा।

क्रांतिकारी-समिति के कमरे में इवान अलेक्सेयेविच और मिलिशिया-पुलिस के दो आदमी रहे कि आगन्तुक, बिना दरवाजा खटखटाये, अन्दर घुसा, और अपनी छोटी भूरी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए बोला—"मैं अध्यक्ष से मिलना चाहता हूँ!"

इवान ने अपनी फैली हुई आंखें बोलनेवाले की ओर मोड़ी और उछलकर खड़ा होने को हुआ, परन्तु हो नहीं सका। उसने सिर्फ मछली की तरह मुह चलाया और कुर्सी के हत्थे अंगुलियों में पकड़ लिये। घुड़-सवार-सेना के लोगों वाली टोपी लगाये स्तॉकमैन उसे एकटक देखता रहा और ऐसा लगा जैसे कि वह इवान को पहचान नहीं रहा। पर एक क्षण के बाद उसकी आखें चमकने लगी और आखो के सिरों से कनपटी तक रेखियां दौड़ गई। वह दूसरी ओर पहुँचा, इवान को गले लगाया, उसे चूमा और अपनी नम दाढी से चेहरा पोछते हुए गद्गद् स्वर में बोला—"मैं जानता था··· मैं जानता था कि अगर इवान सही-सलामत और जीता-जागता होगा तो वह तातारस्की-समिति का अध्यक्ष होगा।"

"ओसिप दाविदोविच···अरे, तुम···कैसा सूअर हूँ मैं कि तुम्हें पहचानता नहीं···मैं तो अपनी आंखो पर ही यकीन नहीं कर पा रहा!" इवान की आंखों से हर्ष के आंसू बह चले।

"यह सच है!" स्तॉकमैन ने अपना हाथ इवान के हाथ से धीरे से छुड़ाते हुए जवाब दिया—"अरे भाई, तुम्हारे यहाँ कोई चीज़ ऐसी भी है जिस पर आदमी बैठ सके?"

"यह लो···यह कुर्सी लो···लेकिन बतलाओ तो तुम टपक कहाँ से पड़े?"

"मैं लाल-सेना के राजनैतिक-विभाग में हूं। मुझे लगता है कि तुम अब भी समझ नहीं पा रहे कि यह मैं हूँ···अरे बुद्धू, इसमें समझने की भी ऐसी क्या बात है! लोगों ने मुझे यहाँ से ले जाकर देश-निकाला

दे दिया और वहाँ मैं क्रांति के हाथ लग गया। एक दूसरे कॉमरेड ने और मैंने लाल-गार्दो की एक टुकड़ी पहचानी और फिर कोलचाक से लड़ने मे हमने टुकड़ी की मदद की। क्या मज़े का वक्त कटा, मेरे दोस्त! अब हमने उसे यूराल के उस पार तक खदेड़ दिया है, और मैं यहाँ तुम्हारे मोर्चे पर हाज़िर हूँ। आठवी सेना के राजनीतिक-विभाग ने मुझे यहाँ तुम्हारे ज़िले मे काम करने के लिए भेजा है, क्योंकि मैं यहाँ रह चुका हूँ और कह सकते हो कि मुझे यहा की हालत की जानकारी है···
मैं व्येशेन्स्काया पहुँचा और क्रातिकारी-समिति के लोगों से बाते करने के बाद मैंने सबसे पहले तातारस्की आने का फैसला किया। मैंने सोचा कि मैं यहाँ आकर रहूँगा...तुम्हे चीजो को एक रूप देने के काम में मदद दूँगा, और फिर कही और चला जाऊँगा। देखते हो, मुझे अपनी पुरानी दोस्ती भूली नही। लेकिन, खैर, इसकी बाते हम बाद में कर सकते हैं। *फिलहाल तो अपनी बातें करो और यहाँ की स्थिति पर प्रकाश डालो।* मुझे सबके बारे मे सब कुछ बतलाओ। तुम्हारे साथ कौन-कौन लोग काम कर रहे है? कौन-कौन लोग अभी जिन्दा है?···कॉमरेडो...!" वह मिलिशियामैनो की ओर मुड़ा—"एकाध घंटे को मुझे और अध्यक्ष-महोदय को अकेला छोड़ दो···हूँ···शैतान ले जाए···मेरी स्लेज गाव मे आयी तो पुराने दिन जैसे महक बनकर गमकने लगे···हाँ, तब तो वक्त के पैर जैसे जम गए थे, पर आज···खैर···आज तो यह है कि धुआँधार करते आगे बढ़ते जाओ।"

कोई तीन घंटे बाद स्तॉकमैन को लेकर मीशा कोशेवोइ और इवान, ऐंवी-तानी लुकेरया के घर के लिये रवाना हुए। यह स्तॉकमैन का पुराना ठिकाना था। तीनो सड़क के भरे रास्ते के किनारे-किनारे चले तो मीशा रह-रहकर स्तॉकमैन की आस्तीन इस तरह पकड़ता रहा, जैसे कि उसके देखते-देखते वह हवा हो जायेगा या कोई भूत-प्रेत साबित होगा।

वहाँ पहुँचने पर लुकेरया ने अपने पुराने मेहमान को एक प्लेट शोरबा दिया और किसी छिपे गोदाम से चीनी का एक ढोंका ले आयी। स्तॉकमैन चेरी की पत्तियों की चाय पीने के बाद, स्टोव के ऊपर की जगह में लेट गया। अब वह लगा मीशा और इवान की उलझी हुई दास्तानें सुनने,

बीच-बीच में सवाल पूछने और अपना सिगरेट-होल्डर रह-रहकर दाँतों से काटने। लेकिन, तड़का होने के ज़रा पहले उसकी आँख लग गई और सिगरेट फ्लैनेल की गंदी कमीज़ पर गिर पड़ी। इवान इसके बाद भी कोई दस मिनट तक बातें करता रहा, पर जब स्तॉकमैन ने एक सवाल का जवाब खर्राटे से दिया, तो वह उठा और पंजे के बल धीरे से बाहर निकल आया। उसे इस बीच खासी आई और उसने जो खांसी रोकी तो उसका चेहरा बैंजनी हो उठा।

"कुछ तबीयत सम्हली?" दोनों सीढ़ियों से नीचे उतरे कि मीशा ने धीरे से हँसते हुए पूछा।

कैदियों के साथ व्येशेन्स्काया जानेवाला ओलशानोव आधी रात को तातारस्की वापिस आया। उसने इवान के कमरे की खिड़की बार-बार खटखटाई। आखिरकार इवान की नींद टूटी।

"क्या बात है?" इवान ने पूछा—उसका चेहरा नींद से फूला-सा हुआ था—"खत वापिस लाये हो, या और कुछ है?"

ओलशानोव ने चाबुक से खिलवाड़ करते हुए कहा—"उन्होंने कज़्ज़ाकों को गोली से उड़ा दिया है।"

"तुम झूठ बोल रहे हो, सूअर कहीं के!"

"कज़्ज़ाकों के आते ही उन्होंने उनकी परीक्षा की और फिर अंधेरा होने के पहले उन्हें देवदारुओं के जंगल में ले गये। मैंने खुद देखा।"

अपने फेल्ट-बूट टटोलते हुए इवान ने जल्दी-जल्दी कपड़े पहने और दौड़ा-दौड़ा स्तॉकमैन के पास गया। वहाँ पहुँचने पर परेशानी से भरे स्वर में चीखा—"हमने कुछ कैदी आज व्येशेन्स्काया भेजे और उन्होंने उन्हें गोली से उड़ा दिया!···मैंने सोचा था कि वे उन्हें जेल में डाल रखेंगे, मगर यह तो बात ही दूसरी है। इस तरह तो हम कभी कुछ कर ही नहीं पायेंगे। लोग हमसे कट जायेंगे, ओसिप-दाविदोविच! उन्होंने कज़्ज़ाकों को जान से क्यों मारा? अब क्या होगा?"

इवान ने सोचा था कि उसकी तरह ही स्तॉकमैन भी पूरी घटना पर खीझ और नफ़रत से भर उठेगा। पर कमीज़ धीरे-धीरे पहनते हुए स्तॉकमैन ने जवाब दिया—"अच्छा, चीखना बंद करो···लुकेरिया की नींद टूट

जायेगी।" उसने कपड़े पहने, सिगरेट जलाई, एक बार और गिरफ्तारी का कारण पूछा और बोला—"तुम यह बात अपने दिमाग में जमा लो और याद रखो। मोर्चा यहाँ से १२० वर्स्ट दूर है। कज्जाकों की प्रमुख सख्या हमारी दुश्मन है; और इसलिए है कि तुम्हारे कुलक-*कज्जाकों, तुम्हारे अतामानों और दूसरे नेताओं का मेहनतकश कज्जाकों पर इतना रोब है। सवाल है कि यह रोब आखिर क्यों है? इसका जवाब तो तुम्हें अपने-आप दे सकना चाहिए। बात यह है कि कज्जाक खास तौर पर लड़ाई-पसन्द, फौजी कौम है, और ज़ारशाही ने इस कौम के दिल मे अधिकारियों और 'पिता-कमाडरों के लिये यह मोहब्बत और प्रेम जगाया है। और, यह पिता-कमाडर ही थे, जिन्होंने कज्जाकों को कामगारों की हड़ताल तार-तार कर देने का हुक्म दिया। उन्होंने कज्जाकों के दिमाग तीन सौ साल तक खराब रखे। उन्हे नशे में चूर रखा। नतीजा यह है कि आज, मिसाल की तौर पर, रयाज़ान-प्रदेश के कुलक और दोन-प्रदेश के कज्जाक-कुलक के बीच बड़ा अन्तर है। रयाज़ान-प्रदेश का कुलक चूसा गया है। वह असहाय हो उठा है। लेकिन, दोन-प्रदेश का कुलक हथियार-बंद कुलक है। वह खतरनाक है, ज़हरीला साँप है। वह कोरशुनोव और दूसरे लोगों की तरह हमारे खिलाफ झूठी दास्ताने फैलाकर ही चैन से नहीं बैठेगा, बल्कि हम पर खुल्लमखुल्ला हमला करने की कोशिश भी करेगा। करेगा, ज़रूर करेगा। वह तो राइफिल उठायेगा और हमे गोली से उड़ा देगा। तुम्हें मार डालेगा। वह मोटे ढग से खाते-पीते कज्जाकों के साथ ही गरीब कज्जाकों तक को अपने रास्ते पर चलने को कहेगा। आखिर यहाँ स्थिति क्या थी? उन पर हमारे खिलाफ कार्रवाइयां करने का जुर्म था न? ठीक! बातचीत कम ··दीवार से सटकर खडे हो जाइए ··और खेल खत्म! और, रोना-गाना कुछ नहीं कि 'आदमी अच्छा था' या 'ऐसा था—वैसा था···"

"मुझे अफसोस नहीं है···गलत मत सोचो।" इवान अलेक्सेयेविच ने हाथ हवा मे लहराया—"लेकिन मुझे डर यह है कि इससे कहीं दूसरे

---

*गरीब किसानों का शोषण करनेवाले धनी किसान।

भी हमारे खिलाफ सीना तानकर न खड़े न हो जायें !"

अब तक तो स्तॉकमैन ने अपने ऊपर थोड़ी रोकथाम रख छोड़ी थी, पर अब वह एकदम आगबबूला हो गया। उसने कमीज का कॉलर पकड़कर इवान को अपनी ओर खींचा और बोला—"वे हमारे खिलाफ सीना तानकर कभी भी खड़े नहीं होंगे, अगर हम उनकी आत्मा में अपना वर्ग-सत्य भरेंगे। मेहनतकश-कज्ज़ाक सिर्फ हमें अपना कॉमरेड और साथी समझ सकता है, कुलकों को नहीं। उफ, हे भगवान !···तुम···ये कुलक मेहनतकश कज्ज़ाकों की मशक्कत पर जीते हैं और उन्हीं के बल पर मोटाते चले जाते हैं कि नहीं ?···तुम बूढ़े हो गये हो···तुम्हारा दिमाग बिगड़ गया है···तुम्हारी आग ठंडी पड़ गई है ! उफ···मैं देखता हूँ कि मुझे तुम्हें मुट्ठी मे करना पड़ेगा। तुम्हारे किस्म का काम करने वाला आदमी डगमगाता है बुद्धिवादियों की तरह···किसी भी अदना, घिनौने समाजवादी-क्रांतिकारी की तरह ! आह···इवान !" उसने कॉलर छोड़ दिया, हलके से मुसकराया, सिर हिलाया, सिगरेट का कश खींचा, और शांत-भाव से आगे बोला—

"अगर हम सबसे ज्यादा इधर-उधर करने वाले दुश्मनों की धर-पकड़ न करेंगे तो बगावत हो जायेगी। दूसरी तरफ, अगर हम समय से उन्हें बाकी लोगों से काट देंगे तो बगावत शायद नहीं हो सकेगी। वैसे सबको गोली से उड़ाना जरूरी नहीं है। गोली से तो हमें सिर्फ नेताओं को उड़ाना चाहिये। बाकी लोगों को रूस के मध्य भाग में भेज देना चाहिये। लेकिन, दुश्मनों के साथ शोभा नहीं बरती जा सकती। लेनिन के शब्दों में 'क्राति दस्ताने चढ़ाकर नहीं की जा सकती।' अब बतलाओ कि इन लोगों को गोली से उड़ा देना जरूरी था या नहीं ? मेरा तो ख्याल है कि था। हो सकता है कि कोई कहे कि सबको गोली नहीं भी मारी जा सकती थी। लेकिन, मैं कहूँगा कि ठीक, पर कोरशुनोव को तो खत्म कर ही देना चाहिये था। बात साफ है। अब यह ग्रिगोरी-मेलेखोव सामने है। वह थोड़े समय के लिये टल गया है। पर हमें उसे पहले ही समझ-बूझ लेना चाहिये था। वह उतना खतरनाक है, जितने कुल मिलाकर बाकी लोग नहीं हैं। और, याद रखना—ये बातें जो उसने तुमसे की थीं, वे एक ऐसे आदमी की हैं,

जो आज नही तो कल दुश्मन साबित होगा। फिर यहाँ जो कुछ हो रहा है, वह तो कुछ भी नही है। मोर्चे पर श्रमिक वर्ग के शानदार से शानदार सपूत मर रहे हैं और हजारों की गिनती मे मर रहे हैं। हमे इनके लिये दुःखी होना चाहिये। हमे उनके लिये आसू नही बहाने चाहिये, जो उन्हें मार रहे हैं या हमारी पीठ मे छुरा मारने के मौके की ताक में हैं। अब या तो वे रहेगे या हम रहेगे। बीच का कोई रास्ता नहीं है। आज सारा नक्शा यह है, इवान साहब!"

: २३ :

ढोरों को दाना-चारा देने के बाद प्योत्र अभी-अभी बावर्चीखाने में घुसा ही था कि बाहर के दरवाजे की सिटकिनी खडकी और काला शाल ओढ़े लुकिनीचिना ने ड्योढी पार की। उसने मुंह से कुछ नही कहा। बस, छोटे-छोटे कदम रखती हुई नताल्या की तरफ बढी और उसके पैरों पर गिर पड़ी।

"मा, मेरी प्यारी-प्यारी मा, आखिर बात क्या है?" नताल्या मां का भारी शरीर साधकर उठाने की कोशिश करते हुए अजीब-सी आवाज मे बोली।

लुकिनीचिना ने बात का जवाब देने के बजाय अपना सिर कच्ची जमीन के फर्श पर दे मारा और टूटे हुए, भर्राये-से स्वर मे बोली—"मेरी रानी, दुलारी बेटी, तुने मुझे इस तरह छोड क्यो दिया है?"

दोनों औरतें इस तरह ढार मार-मारकर रोई और बच्चे भी उनके साथ इस तरह ढरका बहाने लगे कि प्योत्र ने तम्बाकू की अपनी थैली उठाई और ओसारे मे चला आया। वह फौरन ही पूरी बात समझ गया और सीडियो पर खडा होकर धुआ उडाने लगा। चीख-पुकारें खत्म हो गई तो उसने एक कपकपी-सी अनुभव की और बावर्चीखाने मे लौट गया। गीले रूमाल मे मुह छिपाये लुकीनीचिना विलाप करती मिली—

"हमारे मिरोन ग्रिगोरियेविच को उन लोगों ने गोली से उडा दिया ···मेरा राजा मेरी जिन्दगी सूनी कर गया···हम सब यतीम हो गए है··· अब हमारी फिक्र करने वाला कोई नहीं रहा।" उसका रोना तेज हो

गया—"उसकी प्यारी-प्यारी आंखें मुंद गई हैं···हमेशा-हमेशा के लिए मुंद गई हैं।"

नताल्या को गश आ गया तो दार्या ने उसके मुंह पर पानी छिड़का और इलीनीचिना ने अपने ऐप्रन से उसके गाल पोंछे। सामने के कमरे से पॅन्तेली के खासने और कराहने की आवाज़ आयी। वह वहां बीमार पड़ा था।

"ईसा के लिये ··" लुकिनीचिना ने प्योत्र का हाथ लेकर पागलों की तरह अपने सीने से लगाया—"प्रभु के लिए व्येशेन्स्काया जाओ और मर गए हैं तो क्या हुआ, उन्हें ले आओ। ओह, मा-मेरी···मैं नहीं चाहती कि वे वहां पड़े रहें और उन्हें कायदे से दफनाया भी न जा सके।"

"क्या···आखिर तुम सोच क्या रही हो ?" प्योत्र उससे इस तरह दूर हट गया, जैसे कि उसे प्लेग हो—"क्या काम बता रही हो तुम ! मुझे मिरोन की खोज करनी पड़ेगी ! काम मुश्किल है और मुझे अपनी जान भी प्यारी है। मैं उसे कहां खोजूंगा, कैसे खोजूंगा ?"···

"प्यारे प्योत्र, इन्कार न करो···ईसा के नाम पर···ईसा के लिए··· इन्कार न करो।"

प्योत्र ने अपनी मूंछ का सिरा चबाया और आखिरकार जाने को राज़ी हो गया। उसने स्लेज से व्येशेन्स्काया जाकर अपने पिता के एक परिचित कज़्ज़ाक के यहां ठहरने और फिर मिरोन की लाश तलाश करने का फैसला किया। वह रात को रवाना हो गया। वहां पहुँचा तो गांव के सारे घरों में रोशनी और हर घर के बावर्चीखाने में उस क़त्ल की बातचीत होती देखी। वह अपने पिता के रेजीमेंट के पुराने साथी के घर पर रुका और उसने उसकी मदद चाही। कज़्ज़ाक फौरन ही राज़ी हो गया। बोला—"मैं वह जगह जानता हूं जहां उन लोगों को गाड़ा गया है···लाशें गहराई में नहीं हैं···सिर्फ़ यह है कि मिरोन को पहचानना मुश्किल होगा···एक अकेला वही तो है नहीं ! कल ही उन लोगों ने एक दर्जन लोगों को गोली से उड़ाया है···खैर, कोशिश की जायेगी···शर्त एक है कि काम होने पर तुम दो पिंट वोद्का की कीमत अदा करोगे···बोलो, राज़ी ?"

आधी रात को फावड़े और एक स्ट्रैचर सँभाले वे कब्रगाह के बीच से गुजरते हुए देवदारु के पेडों के बीच आये। यही लोगो को गोली मारी गयी थी।

इस समय बडी खूबसूरत बर्फ गिर रही थी। पाले से मढी फर्न की झाडियाँ पैरो के नीचे चरमरा रही थीं। प्योत्र हर आवाज पर आहट लेते हुए इस खोज के लिए लुकिनीचिना और मृत मिरोन तक को मन-ही-मन कोस रहा था···

कज्जाक पास ही एक वलहे टीले के पास रुका। बोला—"यहीं कही आस-पास उन लाशो को होना चाहिये···"

इसके बाद वे दोनो कोई सौ कदम और चले होगे कि कुत्तों का एक गिरोह जीभें लपलपाते और भौंकते हुए भागता नजर आया। प्योत्र ने स्ट्रैचर रख दिया और भर्रायी आवाज मे फुसफुसाया—"मैं वापिस जा रहा हू··· भाड मे जाए वह···इतनी लाशो के बीच कैसे मिलेगी उसकी लाश ?··· जबरदस्ती उसने मुझे यहा भेज दिया···चुडैल कही की !"

"डर क्यो रहे हो ? आओ !" कज्जाक उसकी ओर देखकर हँसा।

वे आगे बढते-बढते एक पुरानी विलो-झाडी के पास आ निकले। यहा की बर्फ काफी रौंदी हुई दीखी। उसमे बालू मिली नजर आयी। उन्होंने खुदाई शुरू की।

प्योत्र ने मिरोन को लाल दाढी से पहचाना। उसने पेटी से पकडकर लाश बाहर निकाली और उसे स्ट्रैचर पर रखा। कज्जाक कब्र भरते-भरते खाँसा और फिर भुनभुनाते हुए स्ट्रैचर के हत्थे साधे।—"हमे देवदारुओं के पेडों तक स्लेज ले आनी चाहिये थी···हम अच्छे-खासे बेवकूफ हैं··· लाश वजन मे १८० पौंड (सवा दो मन) से ज्यादा ही है, कम नही···और, ऊपर से बर्फ पर चलना कोई आसान काम नही है।"

प्योत्र ने लाश के पैर अलग-अलग कर दिये, ताकि स्ट्रैचर के हत्थे पकडे जा सकें।

फिर, सुबह तडके तक वे कज्जाक के मकान में बैठे पीते रहे। मिरोन-कोर्शुनोव, एक कम्बल मे लिपटा, बाहर स्लेज मे पडा इन्तजार करता रहा। प्योत्र ने घोडा स्लेज मे जुता-का-जुता छोड दिया था। सो, वह

पूरे समय जुए को झटके देता, हींसता, कान फड़फड़ाता रहा; और स्लेज में पड़ी लाश की महक मिली सूखी घास की तरफ आंख उठाकर भी नहीं देखा।

सुबह के आसमान में उजाले के डोरे पड़े कि प्योत्र तातारस्की पहुंचा ···उसने चरागाह का रास्ता लिया था और घोड़े को ताबड़तोड़ हांका था। उसके पीछे मिरोन का सिर रह-रहकर स्लेज के तल्ले से टकराता रहा था और उसने रुककर दो बार उसके नीचे नम घास रखी थी।

प्योत्र लाश लेकर सीधा मिरोन के घर गया। मिरोन की प्यारी बेटी ग्रीपीना ने फाटक खोला और सहमकर स्लेज के पास से हाते में पड़ी बर्फ के टीलों के बीच भाग गई। प्योत्र ने आटे के बोरे की तरह लाश कन्धे पर लादी, उसे बावर्चीखाने में लाया और मेज़ पर बिछी लिनेन की चादर पर धीरे से रख दिया। अब लुकिनीचिना नगे सिर, लड़खड़ाती हुई आयी, और मिरोन के पास खड़ी होकर; बराबर रोते रहने के कारण, फटी-फटी-सी आवाज़ में फुसफुसाई—

"मेरे राजा, मेरे मालिक, मैंने तो सोचा था कि तुम अपने पैरों अपने घर वापिस आओगे···लेकिन, लोगों को तुम्हें उठाकर लाना पड़ा···" उसकी फुसफुसाहट के स्वर और सिसकियां अजीब थी और मुश्किल से ही सुनाई पड़ती थीं।

प्योत्र बाबा ग्रीश्का की बाँह पकड़कर कमरे में लाया। बूढ़ा सिर से पैर तक बुरी तरह कांप रहा था। इस पर भी वह चुस्ती से मेज़ के पास आया और लाश के सिरहाने खड़ा हो गया।—"कहो, बेटे मिरोन! ··· यानी, इस तरह हमारी मुलाकात एक-दूसरे से दोबारा हो रही है!"—उसने क्रॉस बनाया और मिरोन की बर्फ-सी ठंडी, धूल से भरी भौंह चूमी— "मिरोन, मैं भी अब बहुत नहीं चलूंगा···जल्दी ही···" बूढ़े की आवाज़ कराह-भरी चीख में बदल गई। उसने तेज़ी से मुर्दा हाथ अपने होंठों से लगाया और फिर मेज़ पर रख दिया।

दर्द से प्योत्र का गला भर आया। वह वहाँ से चुपचाप खिसका और अहाते में, मुर्गीख़ाने से बंधे अपने घोड़े के पास चला आया।

: २४ :

दोन-नद अपने गहन, मौन पार्श्वभागों से लहरियाँ तट के छिछले पानी के पास भेजता है और ये लहरियाँ उस पानी की बाहों में पछाड़ खा-खाकर गिर पड़ती हैं। दोन-नद मन्द, स्थिर गति से बढ़ता है तो पानी लहरियेदार हो उठता है। काले पेट वाली मछलियां दल बांधकर बलुहे-तल में जहां-तहां मुंह मारती फिरती है। कार्प किनारे की कीचड़ से सनी हरियाली के बीच जहां-तहां खाना ढूढती फिरती हैं। पाइक और पेर्च सफेद चारे की तलाश करती हैं। ढीठ घोंघों के बीच चक्कर लगाती घूमती हैं। कभी एक क्षण को झलक दिखलाती हैं तो हरे पानी की एक सिल-सी इधर से उधर हो जाती हैं। वे फैली हुई चांदनी मे अपने सुनहरे पख चमकाती हैं और फिर डुबकी लगाकर सुबह तक अपना आगे की ओर निकला हुआ सिर घोंघों के बीच जहां-तहां धंसाती रहती हैं। अपनी गलमुच्छों से सीपो को दुलराती रहती हैं। अग मे किसी गँठीली, कुदे-सी चीज के नीचे सुस्त होकर पड़ रहती हैं, और चैन से सुस्ताने लगती है···

लेकिन, जहां किनारे सकरे है वहां बदी नदी एक गहरी खाड़ी काटती है और अपनी झागों के ताजों वाली लहरो को घन-गरजन के साथ आगे ही आगे ठेलती है। अन्तरीप और आगे की बाढ़ के आस-पास भँवरें बुन उठती हैं। वहां पानी इतनी तेजी से हरहराता हुआ आगे बढ़ता है कि नजर नहीं जमती।

यानी, जिन्दगी की नदी का पानी शांति से भरे दिनों के छिछले किनारो को छोड़कर सकरी खाड़ी मे बह आया था। ऊपरी दोन के जिले उबल रहे थे। दो धाराएँ एक दूसरे से आ मिली थीं। कज्जाक दूर फेंक दिये गए थे। भंवर पूरे जोर-शोर से उमड़ रही थी। जवान और जरा गरीब कज्जाक अब भी ढीले थे और अब भी सोवियत-सरकार से शांति की आशा करते थे, लेकिन बूढ़े जोरों का विरोध कर रहे थे और कभी मे खुल्लमखुल्ला कह रहे थे कि ये लाल-गारद के लोग कज्जाकों को बीन-बीनकर खत्म कर देना चाहते हैं, उनका नाम-निशान मिटा देना चाहते

है···

ऐसे में मार्च के आरम्भ में इवान अलेक्सेयेविच ने तातारस्की की ग्रामसभा की बैठक बुलाई तो बड़ी भीड़ जमा हुई, शायद इसलिये कि स्तॉकमैन ने सुझाव रखा था कि क्रांतिकारी समिति एक मीटिंग करे और भागकर श्वेत-गार्दों से जा मिले लोगों की ज़मीन-जायदाद गरीब कज्ज़ाकों के बीच बांट दे। पर मीटिंग के पहले स्तॉकमैन और ज़िले के एक अधिकारी के बीच ऐसी चोंचें लड़ीं कि तूफान-सा खड़ा हो गया। अधिकारी ज़ब्त किए गए कपड़ों को साथ ले जाने का हुक्म लेकर वहां आया था। पर, स्तॉकमैन ने उसे समझाया—क्रांतिकारी समिति इस समय वे कपड़े दे नहीं सकती, क्योंकि अभी कल ही वे लाल-फौज के जख्मी लोगों के पास भेजे जाने के लिए दिए जा चुके हैं···' पर, जवान-अधिकारी स्तॉकमैन पर बरस पड़ा और अपनी आवाज़ तेज़ करते हुए बोला—"ज़ब्त किए गए कपड़ों को इस तरह देने की इजाज़त आपको किसने दी ?"

"हमने किसी से इजाज़त नहीं मांगी···"

"लेकिन, राष्ट्रीय सम्पत्ति मार लेने का हक आपको क्या था ?"

"कॉमरेड, चीखो मत, और बकवास बन्द करो ! किसी ने कहीं कुछ नहीं मारा। हमने भेड़ की खालें देकर यह लिखा लिया है कि जख्मी जब एक खास मंज़िल पर पहुंच जायेंगे तो वे चीज़ें वापिस भेज दी जायेंगी। फौजी आधे नंगे थे। अगर हम उन्हें इस हालत में आगे भेजते तो अपनी ओर से उन्हें मौत के मुंह में ढकेलते। और, चारा क्या था मेरे पास ? फिर, यह कि वे खालें और कपड़े कोठरी में बेकार ही तो पड़े थे।"

स्तॉकमैन ने अपना क्रोध दबाते हुए बातचीत शांत भाव से की, और बातें शांति से समाप्त होती लगीं। परन्तु वह जवान कड़ी आवाज़ में बोला—"कौन हो तुम ? क्रांतिकारी समिति के अध्यक्ष हो ? मैं तुम्हें गिरफ्तार करता हूं। अपने सहायक को अपना सारा कामकाज समझा दो। मैं तुम्हें फौरन ही व्येशेन्स्काया भेजूंगा। मेरा ख्याल है कि तुमने यहां का आधा माल-मता चोरी में हड़प लिया है···इस आदमी को ज़िला-मिलिशिया के हवाले कर उनसे इसके लिए रसीद ले लेना···" स्तॉकमैन को सिर से पैर तक देखते हुए उसने आगे कहा—"और हम लोग तुमसे बातचीत वहां

करेंगे ! तुम तो मेरी अँगुली के इशारे पर नाचोगे···बड़े तानाशाह बने फिरते हो !"

"कॉमरेड, तुम पागल हो ? तुम जानते नहीं कि···"

"बात मत करो···चुप रहो !"

इवान अलेक्सेयेविच ने पूरी बातचीत सुनी तो, मगर बीच में कुछ न बोल सका कि स्तॉकमैन ने धीरे से हाथ बढ़ाया और दीवार पर टंगी मॉजर-राइफिल झटके से उतार ली। कम-उम्र अधिकारी की आंखों में डर नाचने लगा। उसने आश्चर्यजनक शीघ्रता से पीठ से धक्का देकर दरवाजा खोला तो सीढ़ियों पर फिसल गया। उसकी रीढ़ की हड्डी हर सीढ़ी से लड़ती गई। फिर, वह जैसे-तैसे उठा, उछलकर स्लेज पर पहुंचा और कोचवान से घोड़ा दौड़ाने को कहा। फिर तो, चौक-भर रह-रहकर उसकी पीठ में अँगुली गड़ाता रहा कि और तेज चलो, और तेज ! इस बीच मुड़-मुड़कर देखता भी रहा कि कहीं कोई पीछा तो नहीं कर रहा है।

दूसरी ओर हंसी के ठहाकों से क्रांतिकारी समिति की खिड़कियां हिलने लगीं। दाविद हंसते-हंसते मेज पर दोहरा हो गया। लेकिन, स्तॉकमैन ने कांपती हुई अँगुलियों से सिगरेट रोल की तो उसकी आंखें सिकुड़ गईं—बुदबुदाया—"कैसा सूअर-आदमी था ! सूअर का बच्चा !"···

वह मीशा और इवान के साथ ग्रामसभा की बैठक में आया। पूरा चौक भरा मिला। इवान का दिल तेजी से धड़कने लगा। उसने सोचा—'हवा में कुछ-न-कुछ है ! सारा गांव जमा हो गया है आज।' लेकिन उसकी चिन्ताएं जल्दी ही समाप्त हो गईं। वह टोपी उतारकर घेरे के बीच पहुंचा तो लोगों ने उसके लिए अपने-आप रास्ता कर दिया। उनके चेहरों से आदर छलकने लगा। कुछ की तो आंखें मुसकराने तक लगीं। स्तॉकमैन ने कज्जाकों के घेरे के चारों ओर निगाह दौड़ाई। उसने वातावरण का तनाव खत्म करना और लोगों को बातचीत में खींचना चाहा। सो, इवान की देखादेखी उसने भी अपनी फर की टोपी उतारी और जोर से बोला—"कॉमरेड-कज्जाको, आपके बीच सोवियत-हुकूमत को जमे अब छः हफ्ते हो रहे हैं। लेकिन हम क्रांतिकारी-समिति के सदस्य देखते हैं कि आप अब भी हमारा यकीन नहीं करते, और हमारे खिलाफ तक हैं। आप मीटिंगों में हिस्सा नहीं

लेते। आपके बीच अफवाहें उड़ती रहती हैं। आपके बीच बेहूदी दास्तानें चालू हैं कि सोवियत-सरकार कज्जाकों को बहुत बड़े पैमाने पर गोली से उड़ा रही है और आप पर तरह-तरह के जुर्म करने जा रही है। मेरा खयाल है कि अब समय आ गया है कि हम लोगों को आपस में खुलकर बातें कर लेनी चाहिए, और एक-दूसरे के समीप आ जाना चाहिए। आपने अपनी क्रान्तिकारी-समिति के सदस्यों का चुनाव खुद किया है। इवान-कोतल्यारोव और कोशेवोइ नाम के कज्जाक आपके अपने लोग हैं और आपके और उनके बीच कोई दुराव नहीं होना चाहिए। इसी के साथ मैं यह भी दावे के साथ कह देना चाहता हूँ कि बहुत बड़ी संख्या में कज्जाकों को गोली से उड़ाए जाने की बात दुश्मनों ने फैलाई है और हम पर कीचड़ उछाला है। उनका उद्देश्य साफ है—वे कज्जाकों और सोवियत-हुकूमत के बीच दुश्मनी के बीज बोना चाहते हैं···आपको हाककर फिर श्वेत-गार्दों के हाथों में सौंप देना चाहते हैं।"

"आप कहते हैं कि लोगों के गोली से उड़ाए जाने की बात गलत है··· है न ? तो, हमारे सात आदमी कहा गए ?" भीड़ के पीछे से किसी ने चिल्लाकर पूछा।

"कॉमरेड, मैंने यह तो कहा नहीं कि गोली बिलकुल मारी ही नहीं गई। हमने लोगों को गोली से उड़ाया है, और सोवियत-हुकूमत के दुश्मनों को, जमींदारों की हुकूमत हम पर लादनेवालों को हम आगे भी गोली से उड़ायेंगे। हमने कोई इसलिए तो ज़ार का तख्ता उलटा नहीं, जर्मनी की लड़ाई खत्म की नहीं और लोगों को आज़ादी दी नहीं। आखिर जर्मनी की लड़ाई से आपको क्या मिला ? आपको मिली हज़ारों कज्जाकों की लाशें, यतीम बेवाएँ और बरबादी···"

"यह सही है।"

"और, हम सभी तरह की लड़ाइयां खत्म करना चाहते हैं"—स्तॉकमैन कहता गया—"लोगों के बीच भाईचारा पैदा करना हमारा उद्देश्य है। लेकिन, जारों के जमाने में आपके हाथों का इस्तेमाल जमींदारों और पूंजीपतियों के लिए इलाके जीतने और इन्हीं जमींदारों और पूंजीपतियों के खज़ाने भरने के लिए किया गया है। मैं लिस्तनित्स्की का नाम लेता हूं।

उसका घर यहीं कहीं आस-पास है। १८१२ की लड़ाई में विशेष-सेवा के लिए उसके दादा को दस हज़ार एकड़ ज़मीन मिली। लेकिन, आपके दादाओं को क्या मिला? उनके भाई-भतीजों और बेटों की जानें जर्मनी में गईं। उन्होंने जर्मनी की धरती अपने खून से रंग दी।"

इस पर पहले तो कुछ लोग भुनभुनाए। फिर उपस्थित लोगों के बीच से सहमति के मिले-जुले स्वर उभरे। स्तॉकमैन ने अपनी भौंहों से पसीना पोंछा और चीखकर कहा—"हम उन सभी लोगों को बरबाद कर देंगे जो मज़दूरों और किसानों की सरकार के खिलाफ हाथ उठाएंगे। और, क्रांतिकारी-अदालत के फैसले पर आपके जिन कज़्ज़ाकों को गोली मारी गई है, वे हमारे दुश्मन थे। यह बात आप भी जानते हैं। लेकिन, आपके साथ, मेहनतकशों के साथ, और अपने साथ हमदर्दी रखनेवालों के साथ हम कदम से कदम मिलाकर चलेंगे—हल में जुते बैलों की तरह कंधे से कंधा मिलाकर चलेंगे। हम नया जीवन उगाने के लिए धरती को मिल-जुलकर जोतेंगे और पुरानी घास-फूस, यानी दुश्मनों के सिर कुचलने के लिए उस पर पटेला फेरेंगे। इस तरह ये दुश्मन फिर जड़ नहीं पकड़ेंगे और नयी जिन्दगी का गला नहीं घोटेंगे।"

लोगों की थमी-थमी फुसफुसाहट और उनके चेहरों की तमतमाहट से स्तॉकमैन ने अनुभव किया कि मेरी बातें लोगों के दिलों को छू रही हैं। और, वह गलत नहीं था। लोग अपने दिलों की बातें खुलकर कहने लगे।

"ओसिप दाविदोविच, हम तुम्हें अच्छी तरह जानते हैं। तुम पहले भी हमारे बीच रह चुके हो। तुम हमारे अपने आदमी की तरह हो। डरो नहीं और हमें समझाओ···तुम्हारी यह सरकार···आखिर हमसे क्या चाहती है? जहां तक हमारा सवाल है, हम इस सरकार के साथ हैं। हमारे बेटे लड़ाई छोड़कर चले आए हैं। लेकिन, हम अनजान लोग हैं और यह सारा कुछ हमारी समझ में नहीं आता।" बूढ़ा ग्रियाजनोव बहुत देर बोलता और इधर-उधर की बातें करता रहा। उसकी आधी बातें तो समझ में ही नहीं आयीं। साफ-साफ डरना लगा कि कहीं ज्यादा कुछ न कह जाए। लेकिन, कटी बाँह वाला अलेक्सेई-शामील अपने पर काबू न रख सका, चिल्लाया—"मैं कुछ कह सकता हूँ?"

"कहो, क्या कहना चाहते हो?" दवान ने वहम से उत्तेजित होते हुए उत्तर दिया।

"कॉमरेट-स्तॉकमैन, पहले तो यह बतलाइए कि क्या मैं जो चाहूं सो कह सकता हूं?"

"हां, कह सकते हो।"

"ग्रौर, कहूंगा तो तुम मुझे गिरफ्तार तो नहीं करोगे?"

स्तॉकमैन मुसकराया ग्रौर उसने एक मूक मुद्रा से गिरफ्तारी की ग्राशंका दूर कर दी।

"लेकिन नाराज न होना···मैं सीधा-सौंदा ग्रादमी हूं···जो मेरे दिमाग में ग्राएगा, मैं कहूंगा।"

ग्रलेक्सेई के भाई मार्तिन ने पीछे से बांह खींची ग्रौर चिन्ता प्रकट करते हुए फुसफुसाकर बोला—"बकवास बंद कर, बेवकूफ···बंद कर, नहीं तो तेरा नाम दर्ज कर लिया जायेगा···ग्रलेक्सेई···!"

लेकिन, ग्रलेक्सेई ने ग्रपनी बांह छुड़ाई ग्रौर जोश से भरा चेहरा सभा की ग्रोर मोड़ा—"कज्ज़ाको, मैं ग्रपनी बात कहता हूं, ग्रौर ग्रब इसका फैसला तुम करना कि मैं सही कहता हूं या गलत कहता हूं"—वह फौजी-ढंग से एड़ियों के सहारे घूमा ग्रौर उसने स्तॉकमैन पर निगाह डाली—"मैं तो यह सोचता हूं कि ग्रगर सच कहना है तो कह दो। सीधी बात कहो कि निशाना सच्चा बैठे। ग्रब मैं यह बतलाऊंगा कि हम कज्ज़ाक क्या सोचते हैं ग्रौर हम क्यों समझते हैं कि कम्युनिस्ट हमारे साथ बुरी तरह पेश ग्राते हैं। तुमने कहा कि तुम सब मेहनतकश-कज्ज़ाकों के खिलाफ नहीं हो···जो तुमसे लड़ नहीं रहे, तुम उनके खिलाफ नहीं हो। तुम ग्रमीरों के खिलाफ हो, ग्रौर ग्रपने को गरीबों का भाई समझते हो। ठीक···तो, ग्रब तुम मुझे यह बतलाग्रो कि हमारे गांव के कज्ज़ाकों को गोली से उड़ाकर ठीक किया या ठीक नहीं किया? मैं कोरशुनोव के बारे में मुंह नहीं खोलूंगा ···वह ग्रतामान था ग्रौर ज़िन्दगी-भर वह दूसरे कज्ज़ाकों की पीठ का बोझ बना रहा। लेकिन ग्रवदीच ने क्या कसूर किया था कि उसे गोली से उड़ा दिया गया? ग्रौर मातवेइ-काशुलिन, बोगातिरयोव, माइदान्निकोव ग्रौर कोरोल्योव ने ऐसा ग्राखिर क्या किया था? वे भी हम लोगों की तरह

ही अनजान थे। चीज़ें उनके दिमाग मे भी साफ न थी। उन्होंने हल साधना सीखा था, किताबें हाथों में न ली थी। ऐसे में अगर उन्होंने कुछ बुरा-सा कह भी दिया तो क्या यह इतना बडा जुर्म था कि उन्हें दीवार के पास खडा कर दिया जाए और फिर ठायँ···!" उसने एक लम्बी सांस ली और एक कदम आगे आया। उसकी आस्तीन सीने पर फड़फड़ाती और मुह ऐंठता रहा। —"तुम लोगो ने उनको गिरफ्तार किया और उन्हे सजा दे दी जो बेवकूफों की तरह बातें करते थे, लेकिन व्यापारियो को अंगुली से नही छुआ। इन लोगो ने जिन्दगियो का सौदा रकम से किया है। लेकिन, हमारे पास क्या है कि हम अपनी जिन्दगी का सौदा करें? हम जिन्दगीभर कुआँ खोदते हैं, पर पानी निकलना है तो हमारी बगल से आगे निकल जाता है। दौलत हमारी ओर मुह मोडकर नही देखती ···तुम लोगों ने कुछ लोगों को गोली मार दी···उनका वश चलता तो वे अपनी जानें बचाने के लिए अपना आखिरी बैल तक अहाते से हाक देते। लेकिन, तुमने उनसे चदा-जैसा कुछ नही मांगा, सिर्फ गोली मार दी! ···और, हम जानते हैं कि व्येशेन्स्काया में क्या हो रहा है? वहा क्या व्यापारी और क्या पादरी, सारे के सारे सही-सलामत हैं। यही हालत कारगिन्स्काया की भी है? हम सब जानते-सुनते हैं कि हमारे चारो तरफ क्या हो रहा है। अच्छी खबरें नही मिलतीं, लेकिन बुरी खबरें तो पर लगाकर उडने लगती हैं।"

"ठीक कहता है।" पीछे से एक आदमी ने चिल्लाकर कहा।

भीड की भुनभुनाहट मे अलेक्सेइ की आवाज डूब गई। वह लोगों के शात होने की राह देखता रहा और फिर स्तॉकमैन के उठे हुए हाथ की चिन्ता किए बिना ही बोलता गया—"और, हमे लगता है कि हो सकता है कि सोवियत-सरकार अच्छी हो, पर जिन कम्युनिस्टो को सारे काम सौंपे गए हैं, वे हमे सता-सताकर मार डालना चाहते है। वे हमसे १६०५ के बदले गिन-गिनकर लेना चाहते हैं। लाल-फौजियो को हमने इस तरह की बातें करते-कहते सुना है। और हम आपस मे बातें करते हैं कि कम्युनिस्ट हमे नेस्तनाबूद कर देना चाहते हैं। वे हमारा नाम-निशान मिटा देना चाहते है, वे कज़ाकों को दोन-प्रदेश से सदा-सदा के लिए देशनिकाला दे देना चाहते हैं। बस, मुझे इतना ही कहना है। मेरी हालत तो इस समय शराबी

की-सी हो रही है। जो बात मुह में आती है, वही फट से कह देता हूँ। और इस शानदार जिन्दगी के नशे में हम सभी चूर हैं। आपके खिलाफ, यानी कम्युनिस्टों के खिलाफ हमें इतनी शिकायतें हैं कि एक पूरा नशा तो उन्हीं का रहता है।"

अलेक्सेइ कज्जाकों की भीड़ में पीछे निकल गया और फिर बहुत देर तक सन्नाटा रहा। इसके बाद स्तॉकमैन ने बोलना शुरू किया तो पीछे से चिल्लाकर लोगों ने बार-बार बात काटी—

"यह सही कहता है। कज्जाकों के मनों में धीरे-धीरे जहर घुलता जा रहा है। आप जानते है कि इस वक्त गांवों में क्या गाने गाए जाते हैं? ऐसे तो हर आदमी अपने दिल की बात कहने को तैयार होगा नहीं, लेकिन गीत के बहाने तो सभी सभी-कुछ कह सकते हैं। तो, एक गाना ऐसा है जिसमें कैडेटों के वापिस आने पर कज्जाक उन्हें उलाहना देते है। इसका मतलब यह है कि कुछ तो ऐसा उनमें होगा ही जिसे लेकर उलाहना दिया जा सके।"

इसी समय कोई हँसा। भीड़ में हलचल हुई और लोगों के स्वर हवा में सरसराए।

स्तॉकमैन ने गुस्से से अपने हाथ की टोपी मुट्ठी में भींच डाली और जेब में कोशेवोइ द्वारा तैयार की हुई सूची निकालकर ज़ोर से पढ़ना शुरु किया।

"नहीं, यह सच नहीं है। जो क्रान्ति के साथ है, उन्हें किसी तरह की कोई शिकायत नहीं है। आपके गांव के साथियों, सोवियत-हुकूमत के दुश्मनों को इसीलिए गोली से उड़ाया गया है। सुनिए!" उसने साफ-साफ और धीरे-धीरे पढ़ना शुरु किया—

सूची

सोवियत-हुकूमत के दुश्मनों की

(इन्हे गिरफ्तार किया गया और इनके मामले
क्रातिकारी-अदालत के जाच-कमीशन
को सौप दिये गये।)

कोरशुनोव, मिरोन-ग्रिगोरियेविच—कभी अतामान रहा—दूसरो की मेहनत के बल पर, उनको चूस-चूसकर अमीर बना।
सेनिलिन, इवान-अवदीच—सोवियत-सरकार का तख्ता उलटने के लिए झूठी बातों का प्रचार किया।
मैदानिकोव, सेम्योन गैवरिलोविच—फुदने लगाये और सड़कों में सोवियत-सरकार के खिलाफ नारे लगाता रहा। मेलेखोव-पंन्तेली-प्रोकोफियेविच—सैनिक-परिषद् का सदस्य रहा।
मेलेखोव, ग्रिगोरी पंन्तेलेयेविच—जूनियर-कैप्टेन है, सोवियत-सरकार का विरोध करता है, खतरनाक है।
काशुलिन, अन्द्रेइ—पिता का नाम मातवेइ—पोदत्योल्कोव के लाल-कज्जाकों की फासी मे हिस्सा लिया।
बोदोव्स्कोव, फैदोत-निकिफोरोविच—इसने भी वही किया।
वोगातिरयोव, आर्किप मातवेयेविच—गिरजे का वार्डेन रहा—सरकार के खिलाफ है और लोगो को क्राति के विरुद्ध भडकाता रहा है।
कोरोल्योव, जखार लिओनत्येविच—इसने हथियार सौंपने से इन्कार किया। इस पर यकीन नही किया जा सकता।

मेलेखोव-परिवार के दोनो सदस्यों और बोदोव्स्कोव के नाम के आगे

टिप्पणियाँ थी, जो स्तॉकमॅन ने जोर से नहीं पढ़ी—सोवियत-हुकूमत के इन दुश्मनों को अब तक गिरफ्तार नहीं किया जा सका है, क्योंकि इनमे से दो को तो माल पहुंचाने के लिये भेजा गया है और पॅन्तेली-मेलेखोव टाइफस से बीमार है। इसलिये पॅन्तेली के अच्छे होते ही और इन लोगों के सामान पहुंचकर वापिस आते ही इन्हें गिरफ्तार कर व्येशेन्स्काया भेज दिया जायेगा।

सभा में क्षणभर सन्नाटा रहा। फिर लोगों ने चिल्लाना शुरू किया—

"यह सब झूठ है!"

"यानी, उन्होने सोवियतों के खिलाफ मुह खोला!"

"आप लोगो को ऐसी बातों के लिये गिरफ्तार करते हैं?"

"इन लोगों को लेकर किसी ने ये सारी बातें गढ ली हैं!"

स्तॉकमॅन फिर बोला तो लोग उसकी बातें ध्यान से सुनने लगे; और, बीच-बीच तो समर्थन की आवाजें तक आई। लेकिन श्वेत-गार्दों से जा मिले लोगों की जमीन-जायदाद के बँटवारे का सवाल उसने उठाया तो सन्नाटा हो गया।

"आखिर हुआ क्या तुम सब लोगों को?" इवान अलेक्सेयेविच ने घबराहट से पूछा।

बेल हिला देने पर जैसे पके अंगूर बिखरने लगते हैं, वैसे ही लोग गायब होने लगे। गाव का एक सबसे गरीब आदमी.एक कदम आगे आया, फिर हिचकिचाया और पीछे लौट गया।

"इन जमीन-जायदादों के मालिक लौट आयेंगे तो···तो क्या होगा?"

स्तॉकमॅन ने लोगों को बहुत रोकना चाहा लेकिन आटे की तरह सफेद पड़ते हुए कोशेवोइ ने इवान अलेक्सेयेविच के कानों में कहा—"मैंने कहा था कि वे लोग उस जमीन-जायदाद को हाथ भी नही लगायेंगे। इस वक्त यह सब इन्हें देने से अच्छा तो यह है कि इसमें आग लगा दी जाये···"

: २५ :

कोशेवोइ विचार में डूबा, पतलून से लैंस अपने पैर पर चाबुक पटपटाता, सिर भुकाए, धीरे-धीरे मोखोव के घर की सीढ़ियों पर चढ़ा। बरामदे के फर्श पर जहाँ-तहाँ घोड़ों की जीनें पड़ी नजर आयी। साफ है कि अभी-अभी कोई आया था। एक रकाब में लीद के रंग की थोड़ी-सी वर्फ अव तक चिपकी हुई थी और नीचे पानी का नन्हा ताल-सा बन रहा था। वर्फ पर बूट का निशान था। कोशेवोइ ने जीनो और अटारी के फर्श से निगाह हटाकर जंगले के काम पर नजर डाली और फिर भाप छोड़ती खिड़कियों को देखा। लेकिन उसके दिमाग पर किसी चीज का कोई असर नहीं पडा। मीशा का हृदय ग्रिगोरी-मेलेखोव के प्रति हमदर्दी के साथ-साथ नफरत से उफनता रहा।

तम्बाकू और घोड़ों के साज-सामान की तेज बू से क्रान्तिकारी-समिति का आगेवाला कमरा भरा रहा। मोखोव-बन्धुओं के दोनेत्स के पार भाग जाने के बाद बची दो नौकरानियो मे से एक स्टोव जलाती रही। दूर के कमरे से मिलिशिया के लोगों के हँसने की आवाज आती रही।

'अजब मजाकिया लोग हैं! कुछ हँसने को मिल गया इन्हें!' मीशा ने घोड़े पर सवार बगल से निकलते हुए नफरत से सोचा और अपने पैर पर चाबुक ठोंक्ते हुए समिति के कमरे मे घुसा।

इवान-अलेक्सेयेविच अपनी लिखने की मेज के पास बैठा था। उसकी मोटी जैकेट खुली हुई थी। फर की टोपी एक ओर को भुक रही थी और पसीने से तर चेहरे से थकान टपक रही थी। माथे पर वल पडे हुए थे। स्तॉकमैन उसकी बगल में खिडकी के निकले हुए हिस्सों के पास बैठा था। उसने घुडसवार-सेनावाला लम्बा कोट अब भी पहन रखा था।

उसने मुसकराते हुए मीशा का स्वागत किया और अपनी बगल में बैठने की दावत दी। कोशेवोइ बैठ गया और उसने अपने पैर फैला लिए। बोला—

'मैंने बहुत ही भरोसे के आदमी से सुना है कि ग्रिगोरी-मेलेखोव घर

लौट आया है, लेकिन मैं अभी तक खुद उसके यहाँ नहीं जा सका हूँ।"

"तो, तुम क्या कहते हो कि क्या किया जाए?" स्तॉकमैन ने एक सिगरेट रोल की और इवान अलेक्सेयेविच की ओर जवाब पाने की आशा से देखा।

"उसे हवालात में बन्द कर दिया जाए, या और क्या किया जाए?" इवान ने तेज़ी से पलकें झपकाते हुए अपने मन के अनिश्चय को मुखर किया।

"तुम क्रान्तिकारी-समिति के अध्यक्ष हो। यह बात तो तुम्हारे तय करने की है।" स्तॉकमैन मुसकराया और कंधे झटके, जैसे कि खुद कोई फ़ैसला देने से बचना चाहता हो। पर उसकी मुसकान में ऐसा व्यंग्य घुला रहा कि कोड़े की चोट से गहरी चोट पड़ी। इवान ने जवाब दिया तो उसकी ठोड़ी पर पसीना छलक आया। कहने लगा—"अध्यक्ष के रूप में तो मैं ग्रिगोरी और उसके भाई दोनों को ही गिरफ़्तार कर व्येशेन्स्काया भेज देने को तैयार हूँ।"

"उसके भाई को गिरफ़्तार करने से कोई फ़ायदा नहीं। फ़ोमिन उसके साथ है और तुम जानते हो कि वह प्योत्र की कितनी तारीफ़ करता है। लेकिन ग्रिगोरी को आज ही जल्दी-से-जल्दी गिरफ़्तार कर लिया जाना चाहिए। हम उसे व्येशेन्स्काया कल भेजेंगे, और उसके कागज़ात, एक घुड़सवार-मिलिशियामैन के साथ क्रान्तिकारी अदालत के अध्यक्ष के पास आज।" स्तॉकमैन ने जवाब दिया।

"अच्छा हो कि ग्रिगोरी को शाम के वक़्त गिरफ़्तार किया जाए··· क्या ख़याल है, ओसिप-दाविदोविच?" इवान ने अपनी ओर से कहा।

स्तॉकमैन को खाँसी आ गई। इसके बाद उसने अपनी दाढ़ी पोंछी और बोला—"शाम को क्यों?"

"उस समय गिरफ़्तारी होगी तो लोगों को इस मामले में बातचीत करने का मौका कम मिलेगा।"

"यह तो कोई बात नहीं हुई—" स्तॉकमैन बोला।

इवान, कोशेवोइ की ओर मुड़ा—"तो मिखाइल, दो आदमियों को अपने साथ ले लो और उसे फ़ौरन गिरफ़्तार कर लो। रखना उसे दूसरों

से अलग, समझे ?"

कोशेवोइ उठा और मिलिशिया के लोगों के पास गया। स्तॉकमैन कमरे में इधर-उधर चहलकदमी करने लगा। दो-एक क्षणों के बाद वह मेज के पास रुका और पूछने लगा—' जो हथियार इकट्ठे किए गए थे, उनकी आखिरी खेप रवाना कर दी तुमने ?"

"नहीं, खेप आ रही है, व्येशेन्स्काया।"

स्तॉकमैन ने त्योरी चढ़ाई और आंखें ऊपर उठाते हुए तेज़ी से पूछा—' मेलेखोव-परिवार ने क्या-क्या हथियार दिए ?"

इवान अलेक्सेयेविच ने याद करने की कोशिश में आंखें सिकोड़ीं और मुसकराते हुए बोला—'उन लोगों ने दो राइफिलें और दो रिवाल्वर दिए हैं। तुम्हारा खयाल है कि कुल इतना ही था उनके यहां ?"

"तुम ऐसा सोचते हो ?"

"मैं क्या सोचता हूं ? मैं नहीं सोचता कि वे तुमसे ज्यादा बुद्धू हैं।"

"ठीक," स्तॉकमैन ने होंठ भींचे—' अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो मैंने उनके घर की कायदे से तलाशी ली होती। यानी कमाण्डेंट को तलाशी का हुक्म दे दो, समझे ! बात यह है कि सोचना एक चीज़ है और अमल करना बिलकुल दूसरी !"

कोशेवोइ आधे घंटे बाद लौटा। वह झपटते हुए बरामदे में आया। उसने झटके से दरवाज़े खोले, ड्योढ़ी पर सांस लेने के लिए रुका और बोला—"शैतान की मार हो…"

' आखिर हुआ क्या ?" स्तॉकमैन की आंखें आश्चर्य में फैल गईं। वह तेज़ी से उसकी ओर बढ़ा। लेकिन, पता नहीं कारण स्तॉकमैन का हाल भाव रहा या कोई और बात, कोशेवोइ एकदम गरम हो उठा और गरजा—

"इस तरह आंखें मटकाना बंद करो !" उसने गाली दी और नीचे थूका—"कहते हैं ग्रिगोरी घोड़े पर सवार होकर अपनी चाची के यहां सिनगिन चला गया है। आखिर तुम मुझसे चाहते क्या थे ? लेकिन आखिर तुम कहां थे अब तक ? मक्खियां मार रहे थे ? उसके जाने के लिए रास्ता किसने खोला ? तुमने उसे हाथ से निकल जाने दिया…मेरे ऊपर चिल्लाने की जरूरत नहीं…मैं तो अदना-सा आदमी हूं। मेरा काम है

जाना और उसे गिरफ्तार करना। पर आखिर तुम सोच क्या रहे हो ?" स्तॉकमैन उसकी ओर बढ़ा तो वह पीछे हटकर स्टोव के पास पहुंच गया और हंसा—"और आगे मत बढ़ना, ओसिप-दाविदोविच ! सच कहता हूं, और आगे न बढ़ना, वरना एक हाथ जमा दूगा।"

स्तॉकमैन उसके ठीक सामने आकर ठिठका, अपनी अंगुलियां तोड़ने लगा और मीशा की वफादारी से भरी, मुसकराती हुई आंखों में आंखें डालकर बोला—"मिनगिन की सड़क जानते हो तुम ?"

"हां, जानता हूं।"

"तो, तुम वापिस यहां क्यों आए ? और तुम्हारा दावा है कि तुमने जर्मनों से लोहा लिया है···! बदमाश कहीं का !" उसने बनावटी नफरत से भौंहें चढ़ाईं।

स्तेपी के मैदान के ऊपर धुएं से बसी धुंध की नीली चादर पड़ी रही। दोन की ओर की पहाड़ियों के पीछे से चांद उगा। चांदनी हलकी रही और चांदनी के बावजूद सितारे जगमगाते रहे।

छः घुड़सवार सिनगिन को जानेवाली सड़क पर घोड़े दौड़ाते दीखे। स्तॉकमैन मीशा की बगल में था। उसका घोड़ा बेचैनी के कारण अपने सवार के घुटने काट खाने की कोशिश कर रहा था। सवार खुद जरा भी परेशान न था और मीशा को कोई मजाकिया घटना सुना रहा था। मीशा अपनी काठी की कमानी पर झुका बच्चों की तरह ठहाके लगा रहा था। वह हांफ रहा था और उसकी निगाहें स्तॉकमैन के कनटोपे के नीचे के गम्भीर चेहरे पर जमी हुई थीं।

सिनगिन में तलाशी बड़ी मेहनत से की गई, लेकिन सारी कोशिश बेकार गई।

: २६ :

ग्रिगोरी स्लेज पर माल लेकर वोकोवस्काया आया तो उसे और आगे जाने के लिए मजबूर किया गया। फलतः वह दस दिन तक नहीं आया, और उसके आने के दो दिन पहले उसका पिता गिरफ्तार कर लिया गया। बूढ़ा पैन्तेली अभी-अभी बीमारी से उठा था और अब तक कमजोर और

पीला था । उसके बाल ऐसे हो गए थे, जैसे कि कीड़ों ने खा लिये हों। दाढ़ी के बाल घट गये थे और जो बचे थे वे किनारे-किनारे सफेद हो गये थे।

मिलिशिया के आदमी ने उसे तैयारी को दस मिनट दिये और फिर गिरफ्तार कर ले गया। फिर व्येशेन्स्काया भेजे जाने के समय तक उसे मोसोव के तहखाने में रखा गया। उसके साथ नौ सयानी उम्र के लोग और गिरफ्तार किये गये, साथ ही एक जज को भी बाँध लिया गया।

ग्रिगोरी लौटा तो अहाते में पूरी तरह घुस भी नहीं पाया कि प्योत्र ने अपने भाई को पूरी खबर सुना दी। सलाह दी—'तुम वापिस चले जाओ, ग्रिगोरी! वे लोग पूछताछ करते रहे हैं कि तुम आखिर कब आओगे! जाओ, जरा ताजा हो, बच्चों से मिलो और फिर फौरन ही रिबनी-गाव चले जाओ। वहा छिप सकोगे कि वक्त से वापिस आ सको। अगर वे लोग मुझसे पूछेंगे तो मैं कह दूंगा कि तुम अपनी चाची के यहा सिनगिन गये हो। तुमने सुना उन लोगों ने हममें से सात कज्ज़ाकों को दीवार के पास खड़ा कर गोली मार दी? मैं ईसा से अरदास करता हूं कि पापा की भी कहीं यह हालत न हो! लेकिन जहा तक तुम्हारा सवाल है···"

ग्रिगोरी आधा घंटे तक बावर्चीखाने में बैठा रहा और फिर घोड़े पर जीन कसकर रिबनी के लिए रवाना हो गया। वहाँ दूर के एक सम्बन्धी और विश्वसनीय कज्ज़ाक ने उसे कड़ियों के बीच ढेड में छिपा दिया। वहा वह दो दिन तक पड़ा रहा। सिर्फ रात में ही वहा से निकलकर बाहर आया।

: २७

सिनगिन से लौटने के दो दिन बाद, यानी दस मार्च को कम्युनिस्ट दल की बैठक का दिन और समय जानने के लिये मीशा-कोशेवोइ व्येशेन्स्काया के लिए रवाना हुआ। उसने, इवान-अलेक्सेयेविच ने, दाविद ने, येमेल्यान ने और फिल्का ने पार्टी में शामिल होने का निश्चय किया था। कज्ज़ाकों के हथियारों की आखिरी खेप, स्कूल के अहाते में मिली एक मशीनगन और जिला-क्रांतिकारी समिति के अध्यक्ष के नाम श्तॉकमैन का एक पत्र मीशा साथ ले लिया था।

···व्येशेन्स्काया के रास्ते में, चरागाहों के कितने ही खरगोश उन्हें देखकर सहम गये। लड़ाई के ज़माने में ज़िले में उनकी भरमार हो गई थी, उनकी आबादी बेरोकटोक बढ़ी थी और इस समय वे दलदली-सेवार की तरह हर कदम पर कूदते नज़र आते थे। सो, स्लेज की चरमराहट सुनते ही वे अछूती बर्फ के पार छलांगें मारने लगे। उनके सफेद पेट और दुम के नीचे के काले, कड़े हिस्से दूर से लौ देने लगे। येमेल्यान ने स्लेज हाकते-हाकते रासें ढीली कर दीं और बेतहाशा चीखा—"जाओ, राइफिल ले खरगोशों का शिकार कर लाओ!"

मीशा स्लेज से कूद पड़ा और एक घुटने के बल बैठते हुए उसने दूर की भूरी में, एक उछलती गेंद पर अपनी राइफिल खाली कर दी। फिर मायूसी से देखता रहा कि गोलियां जा-जाकर बर्फ से टकराईं और गेंद ने और तेज़ी से उछलना शुरू किया। होते-होते गेंद चिरायते की झाड़ी के पीछे जाकर आंखों से ओझल हो गई।

मीशा व्येशेन्स्काया पहुंचा तो उसने ज़िला समिति में बेवजह दौड़-धूप और परेशानी का वातावरण पाया। लोग चिन्तित इधर-उधर दौड़ते नज़र आये। घुड़सवार हरकारे आते-जाते दीखे। गलियां और सड़कें बिलकुल वीरान नज़र पड़ीं। इस सबका कारण उसकी समझ में कुछ न आया। केवल वह ताज्जुब में पड़ गया। समिति के उपाध्यक्ष ने स्तॉकमैन का पत्र यों ही जेब में रख लिया और मीशा ने जवाब की बात की तो रुखाई से बोला—"भाड़ में जाओ···तुम्हारे लिए फिलहाल मेरे पास वक्त नहीं है!"

सीमा पर तैनात कम्पनी के लाल-फौजी चौक में इधर-उधर आते-जाते दिखलाई पड़े। फौजी बावर्चीखाने की गाड़ी धुआं देती बगल से गुज़री तो गाय के गोश्त और लॉरेल की पत्तियों की महक हवा में घुल गई।

मीशा क्रांतिकारी अदालत में आया और कुछ परिचितों के साथ धुआं उड़ाते-उड़ाते उसने पूछा—"यह सब हंगामा आखिर क्यों है?"

एक ने हिचकिचाते हुए जवाब दिया—'कज़ान्स्काया में कहीं कुछ गड़बड़ी हो गई है—श्वेत-गारद के लोग घुस आये हैं, या कज़्ज़ाकों ने बगावत कर दी है, या ऐसा ही कुछ हो गया है। जो भी हो, वहां कल लड़ाई चली है। टेलीफोन के तार काट दिये गये हैं।"

"आपको कोई आदमी भेजकर खबर मगानी चाहिये ।"

"हमने भेजा है, पर आदमी अभी तक वापिस नहीं आया है । आज एक कम्पनी येलान्स्काया भेजी गई है । वहा भी कोई मुसीबत खड़ी हो गई है ।"

वे लोग खिडकी के पास बैठे धुआ उड़ाते रहे । बर्फ का चूरा व्यापारी के मकान के शीशो की बगल से उड-उडकर जाता रहा । इस मकान मे ही क्रातिकारी-अदालत का दफ्तर था ।

सहसा ही गाव के बाहर देवदारु के झुरमुट के कही पास बन्दूकों के दगने की आवाज़ हुई। मीशा का चेहरा उतर गया और सिगरेट उसके हाथ से नीचे गिर गई। हर आदमी दौड़कर अहाते में आ गया। अब गोलियों की आवाज और तेज हो गई। फिर, गोलियों की बौछार-सी हुई और वे घेडों और फाटकों से आ टकराई। हाते मे खडा एक लाल-फौजी ज़ख्मी हो गया। फौज़ी कम्पनी के बचे-खुचे लोग फौरन ही क्रांतिकारी-समिति के दफ्तर के सामने कतारों मे खड़े किए गए और कमाडर उन्हें दोन को जानेवाले ढाल की ओर दौड़ाता ले चला। एक खलबली-सी मच गई। लोग चौक के आर-पार भागने लगे। एक बिना सवार का घोड़ा तेज़ी से दौडता बगल से निकला।

मीशा को घबराहट के कारण पता ही न चला कि वह चौक मे कैसे और कब आ गया। उसने फ़ोमिन को अधड की तरह गिरजे के पीछे से उभरते देखा। घोड़े मे मशीनगन बधी नज़र आई। उसके पहिए कोने मे समाये न थे, इसलिए गन उलट गई थी, और इधर-उधर लहराती हुई, ज़मीन मे लथडती चली जा रही थी।

सो, फोमिन काठी पर झुका, बर्फ की रुपहली-लकीर पीछे छोड़ता पहाडी की तलहटी मे जाकर आखो से ओझल हो गया।

"पहले घोडो के पास चला जाए"—मीशा को सबसे पहला खयाल आया। वह दोहरा होता किनारे की सडको से दौड चला। सास लेने तक को एक बार नही रुका। उसने येमेल्यान को घोड़े कसते देखा। वह बुरी तरह सहमा हुआ जोत टटोल रहा था।

"क्या बात है, मिखाइल ? हो क्या रहा है ?" वह हकलाया और

उसके दात बजने लगे। जल्दी में उसे रासें नहीं मिलीं, और जब रासें मिली भी तो पट्टे खुले रह गए। उस जगह के अहाते से स्तेपी मैदान साफ नज़र आया। मीशा ने देवदारुओं की ओर देखा, लेकिन उस ओर से न पैदल सेना के लोग आने लगे और न घुड़सवार-सेना के। कहीं दूर पर आग बरसती रही। सड़कें वीरान रहीं। वे हमेशा की तरह सुनसान और उदास लगीं। इस पर भी कुछ भयानक कहीं घटता रहा। क्रांति सचमुच शुरू हो गई।

येमेल्यान पूरे वक्त घोड़ों में उलझा रहा। मीशा ने स्तेपी की ओर से अपनी निगाह नहीं हटाई। उसने सड़क के किनारे की दूसरी तरफ से एक आदमी दौड़ते हुए आते देखा। आदमी पुल से गुजरा ; यहां का वायरलेस पिछली दिसम्बर मे जलाया जा चुका था। पूरी रफ्तार से दौड़ता हुआ आदमी, हथियार अपने सीने से चिपटाये आगे की ओर झुका। मीशा ने कोट देखकर पहचान लिया। आदमी अदालती जांच करनेवाला ग्रोमोव था। फिर बाड के पीछे से एक घुड़सवार घोडा दौड़ाता आया। मीशा ने उसे भी पहचान लिया। वह व्येशेन्स्काया का कम-उम्र कज्जाक चेरनीचकिन था। आदमी सिर से पैर तक श्वेत-गार्द था। वह अपना घोडा दौड़ाता रहा कि ग्रोमोव ने दो बार मुड़कर देखा और अपनी जेब से रिवाल्वर निकाला। पहले एक गोली की आवाज हुई और फिर दूसरी। ग्रोमोव ने एक बलुहे टीले पर चढ़कर रिवाल्वर चलाया, चेरनीचकिन दौड़ते घोड़े से नीचे कूद पडा। उसने अपने कन्धे से राइफिल उतारी, और घोड़े की रासें थामे हुए, बर्फ के एक टीले के पीछे ज़मीन पर लेट गया। ग्रोमोव पहली गोली दागने के बाद लड़खड़ा गया और उसने अपने बाएं हाथ से चिरायते की झाड़ियों का सहारा ले लिया। फिर उसने टीले का चक्कर लगाया और बर्फ पर मुह के बल गिर पडा। "मर गया!" मीशा के बदन मे झुरझुरी-सी दौड गई।

उसने सोचा कि चेरनीचकिन पर निशाना अचूक बैठेगा। फिर, यह कि जर्मनी की लड़ाई से जो छोटी आस्ट्रियाई बन्दूक मीशा अपने साथ लाया था, उससे वह कितनी ही दूर का कोई भी निशाना साध सकता था। उस पर यह कि स्लेज पर सवार होकर वह फाटक से बाहर निकला तो भी सब कुछ साफ़ नज़र आता रहा। चेरनीचकिन दौड़ा-दौड़ा गिरे हुए शरीर के पास

गया, और उसने बर्फ में सिमटे पड़े काले कोट पर अपनी तलवार से एक भरपूर हाथ मारा।

दोन को आम जगह से पार करना खतरनाक था, क्योंकि नदी के सफ़ेद पसारे की पृष्ठभूमि के कारण घोड़े और आदमी, दूर से साफ नज़र आते थे। हेडक्वार्टर की कम्पनी की लाल-सेना के दो लोग गोलियों से छलनी होकर वहां पहले से पड़े थे। सो, येमेल्यान ने भील पार कर जंगल का रास्ता लिया, और घोड़े पागलों की तरह तातारस्की की दिशा में दौड़ा दिए। लेकिन गांव के नीचे के चौराहे पर येमेल्यान ने रासें खींची और अपना हवा से लाल चेहरा मीशा की ओर मोड़ा।

"आखिर करना क्या चाहिये? कहीं इसी तरह की मुसीबत हमारे अपने गांव पर भी न टूटी हो!"

मीशा की निगाहों से सन्ताप टपका। उसने गांव की ओर नज़र गड़ाकर देखा तो नदी के बिलकुल पास की सड़क के किनारे-किनारे दो घुड़सवार अपने घोड़े दौड़ाते नजर आए। दोनों मिलिशिया के आदमी समझ पड़े।

"गांव को ही चलो···और आखिर हम जा भी कहां सकते हैं?" उसने पक्के इरादे के साथ कहा।

येमेल्यान ने बड़ी हिचकिचाहट के साथ घोड़ों को चाबुक मारकर गांव [illegible]ी दिशा में हांका। नदी पार की गई। स्लेज ढाल के सिरे पर पहुंची कि [illegible]ाव के ऊपरी सिरे के दो बुजुर्ग से लोगों के साथ शेखीबाज़ अवदीच का बेटा [illegible]ीप दौड़कर उन्हें अपनी ओर आता समझ पड़ा।

"अरे, मीशा···!" अन्तीप के हाथ में राइफिल देखकर येमेल्यान ने [illegible] खींची और घोड़ों को झटके से मोड़ा।

"रोको!" आदेश कानों में पड़ा। साथ ही एक गोली सरसराती हुई [illegible]यी। येमेल्यान गिर गया, पर रासें अब भी उसके हाथों में रहीं। घोड़े एक [illegible] में भाग चले। मीशा स्लेज से कूद पड़ा। अन्तीप ने उसकी ओर दौड़ना शुरू किया तो फिसल गया। वह रुक गया और उसने राइफिल अपने कन्धे पर लटका ली। मीशा इस बीच बाड़ से टकराकर भहराया तो उसने उनमें से एक आदमी के हाथ में तीन दांतों वाला एक कांटा देखा।

उसने अपने कन्धे में भयानक पीड़ा अनुभव की। मुंह से बिना उफ किए वह हाथों से चेहरा ढककर लेट गया तो एक आदमी हाफते हुए उसके ऊपर लद गया और लगा कांटा गढाने—"उठ के बैठ···शैतान ले जाए तुझे··· उठ के बैठ !"

मीशा को बाकी घटना का ध्यान यों रहा, जैसे किसी को किसी सपने का ध्यान रहता है। हुआ यह कि अन्तीप उस पर टूट पड़ा और रोते हुए उसके सीने में नाखून गड़ाने लगा—"इसने मेरे पापा की जान ली है···मुझे इस तक पहुंच जाने दो, भलेमानुसो ! मुझे बदला ले लेने दो इससे !" उसे लोगों ने खींचकर अलग कर दिया। इस बीच कुछ लोग आकर आस-पास जमा हो गए थे। उनमें से किसी ने भारी गले से दलील-सी दी—"छोड़ो, इसकी जान छोड़ो, तुम ईसाई हो न ? छोड़ो···इसे मारो नहीं, अन्तीप··· तुम्हारे पापा तो अब तुम्हें वापिस मिल नहीं जायेंगे···एक आदमी की मौत की वजह बेवजह बनोगे ! जाओ, अपने-अपने घर जाओ ! भाइयो !··· गोदाम के पास चीनी बांटी जा रही है···जाओ, और अपने-अपने हिस्से की चीनी ले आओ।"

···मीशा को शाम को होश आया तो उसने अपने को उसी बाड़े के साये में लेटा पाया। कांटे के वारों के कारण उसकी बगल में जलन और दर्द होता रहा। लगा कि भेड़ की खाल और नीचे के स्वेटर के कारण कांटे के दांते मांस में ज्यादा दूर तक नहीं चुभे। वह लड़खड़ाता हुआ उठा और उसने आहट ली। स्थिति स्पष्ट हो गई। विद्रोहियों के भेजे दस्ते गांव की गश्त लगाते समझ पड़े। बीच-बीच में बन्दूक के दगने की आवाज़ हुई और कुत्ते भौंकने लगे। वह दोन के किनारे की ढोरों वाली पगडण्डी से आगे बढ़ा, चोटी के सिरे पर पहुंचा और बर्फ में हाथ गड़ाते हुए बाड़ों के किनारे-किनारे रेंगने लगा। इस सिलसिले में कई बार सम्हला और कई बार गिरा। वह यों ही रेंगता रहा और उसे पता ही न चला कि आखिर वह है कहां। उसका पूरा बदन सर्दी के कारण कांपता रहा और उसके हाथ जमकर जैसे बर्फ हो गए। अंत में ठण्डक से परेशान होकर वह किसी के छोटे फाटक में घुस गया। उसने कंटीली भाड़ी का बना दरवाज़ा खोला और अहाते के पिछले हिस्से में आया। बायीं ओर एक शेड दीखा तो वह उसकी ओर बढ़ा।

लेकिन, इसी समय किसी के कदमों की आहट के साथ खांसी की आवाज उसके कानों में पडी। शेड में दाखिल होनेवाले किसी आदमी के जूते चरमराये।—'लोग मुझे देखने ही मार डालेंगे।' मीशा ने इस तरह अन्यमनस्क-ढंग से सोचा, जैसे कि मामला किसी तीसरे आदमी का हो। आदमी दरवाजे में छनती रोशनी में आ खडा हुआ। "कौन है ?" आवाज़ पतली और डर से कातर लगी। मीशा बीच की दीवार की बगल से गुज़रा।

"कौन है ?" आदमी ने घबराकर ज़रा और जोर से पूछा। मीशा ने स्तेपान अस्ताखोव को पहचाना और खुले में आ गया—"स्तेपान, मैं हूं··· कोशेवोइ···ईसा के नाम पर मुझे बचाओ···किसी से मेरा नाम न लेना··· समझे न ? मेरी मदद करो।"

"अच्छा, तुम हो।" स्तेपान ने कमजोर आवाज में कहा। वह अभी-अभी टाइफस से उठा था। उसका मुंह फैल गया मगर मुसकान क्षणिक रही—"खैर, तो रात यहां बिता लो, मगर कल यहां से चले जाना। लेकिन, तुम यहां पहुंचे कैसे ?"

मीशा ने टटोलकर उसका हाथ अपने हाथ में लिया और फिर सोकर के अम्बार में धस गया। दूसरे दिन शाम को दोनों वक्त मिले कि वह बहुत सावधानी से अपने घर की ओर बढा और घर पहुचने पर उसने खिडकी खडकाई। मा ने दरवाजा खोला और देखते ही फूट पड़ी। उसने अपने हाथ उसकी गर्दन में डाल दिये और सिर उसके सीने पर टिका दिया—"चले जाओ, मीशा, ईसा के नाम पर चले जाओ। कज्ज़ाक आज ही सवेरे यहा आये थे। उन्होंने तुम्हें ढूंढने के लिए पूरा अहाता छान मारा। अवदीच ने मुझे चाबुक से मारा। बोला—'तुमने अपने बेटे को कहीं छिपा रखा है। मुझे अफसोस है कि मैंने उसे उसी वक्त मार क्यों नहीं डाला !"

मीशा की समझ में न आया कि वह अपने दोस्तों की तलाश कहां करे ? मा की ज़रा देर की बातों से उसे पता चला कि दोन के किनारे के सभी गावों में आग भडक उठी है। स्तॉकमॅन, इवान-अलेक्सेयेविच, दाविद और मिलिशिया के लोग भाग गए है और फिलका और तिमोफी को पिछले दिन चौक में तलवार के घाट उतार दिया गया है।

"अच्छा, अब तुम चले जाओ। यहां तुम उनके हाथ लग जाओगे।"

मा ने रोकर कहा, मगर उसकी आवाज कहीं से पतली नही पड़ी। पिछले कई वर्षों के बाद मीशा आज पहली बार बच्चों की तरह फूट-फूटकर रोया। फिर वह अपनी पुरानी घोडी अहाते मे लाया तो उसका बछेड़ा भी पीछे चला आया। मा ने मीशा को घोडी पर चढने में मदद की और उसके ऊपर क्रॉस का चिह्न बनाया। घोडी अपने बछेड़े की ओर देख-देखकर हिनहिनाती हुई आगे बढी। उसकी हर पुकार के साथ मीशा का कलेजा मुह को आ गया।

लेकिन, वह गाव मे सही-सलामत बाहर निकल आया। अब उसने हेतमान की चढाई वाली सडक पर घोड़ी बढ़ाई और उत्तर की ओर बढा।

रात ने अपना अधेरा गहराकर इन दो भागने वालो की तरफ दोस्ती का हाथ बढाया। घोडी अपने बछेडे को खोने के डर से बार-बार हीसी। मीशा ने दात भीचे और राम से घोडी के कानों को झटका दिया। इस बीच वह बार-बार रुका और उसने सुनने की कोशिश की कि आगे-पीछे से कही घोड़ों के खुरों की पटापट की आवाज तो नहीं आ रही है। पर हर तरफ एक जादुई-सन्नाटा समझ पड़ा। केवल किसी तरह की कोई आवाज़ तब आयी जब बछेडे ने इस ठहराव से फायदा उठाकर मा का दूध पीना चाहा। ऐसे में उसके छोटे-छोटे पिछले पैर बर्फ में काफी दूर तक धस-धस गए।

: २८ :

शेड से सडे हुए पुआल, सूखी लीद और सूखी घास की बदबू आ रही थी। दिन मे छत से कपूरी प्रकाश छनता और कभी-कभी दरवाजे का नरपत भेदकर सूरज की किरणें आ जाती। रात होनी तो चूहे हर तरफ चूं चूं करते और सन्नाटा बजता।

झोंपडी की मालकिन दिन में एक बार यानी शाम को चोरी-चोरी ग्रिगोरी के लिए खाना लाती। पानी का घडा कड़ों के अम्बार के बीच छिपा रखा रहता। अगर पास की तम्बाकू अचानक ही खत्म न हो गई होती, जिन्दगी ऐसी कोई बुरी न लगती। और, खत्म हो गई तो बिना तम्बाकू के काम चलाना ग्रिगोरी के लिए मुश्किल हो गया। पहला दिन तो ज्यों-त्यों कट गया, लेकिन इसके बाद जब मन किसी तरह न माना तो सवेरे कच्चे

फर्श पर रगड़कर उसने थोड़ी-सी सूखी लीद जमा की,उसे हथेली पर रखकर मला और उससे सिगरेट बना ली। शाम को मालिक ने बाइबिल से फाड़कर कुछ बदरंग पन्ने, एक दियासलाई, थोड़ी-सी सूखी तिनपतिया घास और थोड़ी-सी सूखी जड़ें भेजीं। ग्रिगोरी को बेहद खुशी हुई। वह तब तक धुआँ उड़ाता रहा जब तक कि उसके सिर में चक्कर आने लगे, कंडों के बीच पहली बार वह घोड़े बेचकर सोया।

दूसरे दिन अपने मित्र कज्जाक के शेड में आकर जोर-जोर से चिल्लाने पर उसकी नींद टूटी। कज्जाक-मित्र उसे जगाने के लिए भागा-भागा शेड में आया और जोर से चिल्लाया—"तुम सो रहे हो ? उठो···दोन की बर्फ टूट गई है।" इतना कहकर वह ज़ोर से हसने लगा।

ग्रिगोरी जो उछलकर नीचे आया तो उसके पीछे कड़िया भरभराकर गिर पड़ी। उसने पूछा—"क्या हुआ ?"

"दूसरी तरफ येलान्स्काया और व्येशेन्स्काया के कज्जाकों ने सिर उठाया है। फोमिन और व्येशेन्स्काया की सरकार के बाकी कुल लोग तोकिन को भाग गए हैं। सुनते हैं कि कज़ान्स्काया, शूमिलिन्स्काया और मिगुलिन्स्काया में भी बगावत भड़क उठी है।"

ग्रगोरी की भौंहों और गर्दन की नसें फूल आयीं। उसकी आंखें खुशी से खिल उठीं। यह प्रसन्नता उसके छिपाये नहीं छिपी। उसकी आवाज़ कांपने लगी और उसकी काली अँगुलियां बरानकोट के बटनों से खिलवाड़ करने लगीं। पूछा—"और यहां तुम्हारे गांव में···यहां भी कुछ हुआ है क्या ?"

"मैंने कुछ नहीं सुना···मैं तो अभी-अभी गांव के मुखिया से मिला। वह बोला—'हम किस भगवान की पूजा करते है, इसकी फिक्र मुझे नहीं है···मुझे इसी से सन्तोष है कि भगवान् है।' यानी, अब तुम अपनी काल-कोठरी से बाहर आ सकते हो।'

वे घर की ओर बढ़े। ग्रिगोरी ने लम्बे-लम्बे डग भरे तो कज्जाक भी उसकी बगल-बगल उतनी ही तेज़ी से चलने और उसे खबरें सुनाने लगा। —'येलान्स्काया ज़िले में सबसे पहले क्रास्नोयार्स्की ने सिर उठाया··· दो दिन पहले येलान्स्काया के बीस कम्युनिस्ट कुछ कज्जाकों को गिरफ्तार

करने के लिए वहां गए। क्रास्नोयार्स्की के लोगों ने खबर सुनी और आपस में बातें की—'यह सब आखिर हम कब तक बर्दाश्त करते रहेंगे? आज वे हमारे पिताओं को गिरफ्तार कर रहे हैं, कल हमें गिरफ्तार करेंगे। यह नहीं चलेगा। अपने-अपने घोड़े कसो, चलो और गिरफ्तार लोगों को आज़ाद कराओ!'···इस तरह कोई पन्द्रह शानदार जवान जुटाये गए। उनके पास सिर्फ दो राइफिलें, कुछ तलवारें और इनी-गिनी बर्छियां थीं। उन्होंने मेलनिकोव के अहाते में कम्युनिस्टों को आराम करते देखा तो पहले उनके घोड़ों पर ही टूट पड़े। लेकिन अहाते के चारों ओर की पत्थर की दीवार के कारण मारकर भगा दिये गए। कम्युनिस्टों ने उनमें से एक को तो मार भी डाला। प्रभु उसकी आत्मा को शांति दें। लेकिन, उस वक्त से ही जैसे सोवियत-हुकूमत के खात्मे का वक्त नज़दीक आने लगा···ऐसी-तैसी में जाये!"

ग्रिगोरी ने अपने बचे-खुचे नाश्ते की चीज़ें जल्दी-जल्दी खायी और अपने मित्र के साथ सड़क पर आया। यहां कोनों में छोटे-छोटे दलों में बंटे लोग इस तरह खड़े नज़र आये जैसे कि छुट्टी का दिन हो। ये दोनों ऐसे ही एक दल के पास गए। कज्ज़ाकों ने हाथ टोपियों से लगाकर उनका अभिवादन किया। वे ग्रिगोरी के अपरिचित चेहरे की ओर एकटक देखते रहे, जैसे कि कुछ समझ न पा रहे हों।

"यह हमारे साथी हैं···हममें से ही एक हैं···इनसे डरने की जरूरत नहीं। आपने तातारस्की के मेलेखोव-परिवार का नाम सुना है? यह हैं पैन्तेली के बेटे ग्रिगोरी। गोली से बचने के लिए मेरे यहां आये थे।" ग्रिगोरी के साथी ने अभिमान से कहा।

वे आपस में बातें करने लगे। लेकिन एक कज्ज़ाक लाल-गारदों के व्येशेन्स्काया से निकाल बाहर किए जाने की कहानी सुना ही रहा था कि दो घुड़सवार गली के सिरे पर नज़र आये। वे अपने घोड़े मोड़ते हुए कज्ज़ाकों के हर दल के पास ठिठके, कुछ चिल्लाकर कहा और हाथ हिलाये। ग्रिगोरी उत्सुक हो उठा और उनके पास आने की राह देखने लगा। कज्ज़ाक बोले—"ये हमारी तरफ के लोग नहीं हैं। ये तो नामावर है···कहीं से कुछ पैगाम लेकर आये हैं, शायद।"

वे दोनों घुडसवार अब ग्रिगोरी वाले दल के पास आये। एक घुड-सवार बूढ़ा था। उसने भेड की खाल बहुत ही ढीले-ढाले ढंग से ओढ रखी थी। चेहरा लाल और पसीने से तर था। सफेद बालो के लच्छे माथे पर झूल रहे थे···उसने जवानो की तरह झटके से घोड़ा रोका और अपना दाहिना हाथ आगे बढाया। चीखकर बोला—"कज्जाको, तुम यहा कोनो मे खडे औरतों की तरह गप्पें क्या हाक रहे हो ?" आसुओ ने उसकी आवाज तोड दी। उसके गालो की खाल उत्तेजना के कारण कपकपाने लगी।

उसकी कुम्मैद घोडी कोई चार साल की थी। उसके नथुने सफेद, पूछ गभिन और पैर ढले हुए इस्पात के-से थे। इस समय वह उछल-कूद रही थी। वह हीसती, लगाम चवाती, पिछले पैरों पर खड़ी होती और झटके देती कि रास ढीली कर दो तो मैं कान खडे कर हवा की रफ्तार से उड चलू, कि हवा सीटिया बजाये और बर्फ से मढी जमीन साफ-सुथरे खुरों के नीचे बज-बज उठे। उसके शानदार बदन का अग-अग फडकता। गर्दन और पैरो की हर मासपेशी मे रह-रहकर लहरियां-सी उठती। होंठ कापते। बडी आखो मे सफेदी के साथ लालो की-सी लाली लौ देती। घोडी बार-बार अपने मालिक की ओर देखती और इशारा पाना चाहती।

"शात दोन के सपूतो ! तुम यहा किस लिए खड़े हो ?" बूढा फिर चीखा और उसने ग्रिगोरी से हटाकर नजर दूसरे लोगो पर गडाई—"वे लोग तुम्हारे पिताओ और दादाओ को गोली से उडा रहे हैं। तुम्हारा माल-मता उठाये लिए जा रहे है। यहूदी कमीसार हमारा मजाक उडा रहे हैं और तुम हो कि सूरजमुखी के बिये कुटकुटा रहे हो और औरतो के पीछे भाग रहे हो। तुम शायद तब तक यों ही खडे रहोगे जब तक कि वे तुम्हारे गले में फदा नही डाल देंगे। कुछ देर के लिए औरतो के घाघरो का खयाल छोड दो। येलान्स्काया ज़िले के बूढे-जवानो सभी ने बगावत कर दी है। उन्होने लाल-गार्दो को व्येशेन्स्काया से खदेड दिया है, और तुम···मैं पूछता हूं कि तुम्हारी नसो मे खून की जगह क्वास है क्या ? उठो, हथियार हाथों मे लो। चीर्स्की गाव के लोगों ने हमे तुम लोगो को जगा देने के लिए भेजा है। कज्जाको, वक्त रहते घोडों पर सवार हो जाओ !" उसने जलती निगाहे एक बुजुर्ग-से जान-पहचानी के चेहरे पर जमाई और नफरत से भरकर

चीखा—"तुम यहाँ किसलिए खड़े हो, सेम्योन-निस्तोफोरोविच ? कम्यु-निस्टों ने फिलोनोवो में तुम्हारे बेटे को काटकर फेंक दिया है, और तुम स्टोव के पीछे मुंह छिपाते फिर रहे हो ?"

ग्रिगोरी से और अधिक सुना नहीं गया। वह अहाते की ओर जान छोड़कर भागा। यहाँ नाखूनों से निकलते खून की परवाह न कर उसने उनकी मदद में, सूखी हुई लीद के अम्बार के बीच से काठी खोद निकाली, घोड़ा कसा, उसे शेड के बाहर निकाला, और हवा की रफ्तार से उड़ चला।

"मैं तो चला ! ईसा तुम्हारी मदद करें।" उसने चिल्लाकर अपनी आवाज अपने मित्र तक पहुंचाई, काठी की कमान पर झुककर घोडे की अयाल के बराबर आ गया और चाबुक मारकर घोडे को भगा चला। उसके पीछे की बर्फानी-गर्द फिर बैठ गई, उसके पैर काठी से रगड खाने लगे और रकाबें जूतों से लड़कर झनझनाने लगीं। घोड़े के पैर मशीन की तरह काम करने लगे। उसे इतनी ज्यादा खुशी का अनुभव हुआ, और शक्ति और संकल्प ने उसमें इतना उत्साह भरा कि उसके गले से सीटी-सी बजने लगी। उसके अन्तर की गुप्त और बदी-भावनाएँ अन्दर-ही-अन्दर उन्मुक्त हो गई। उसे लगा कि अब मेरा रास्ता साफ है···स्तेपी के मैदान के चांदनी के रास्ते की तरह साफ है !

बात यह है कि कण्डों के अम्बारों के बीच एक जानवर की-सी जिन्दगी बिताते समय और हर आहट और हर आवाज़ पर चौंक-चौंक उठते समय उसने हर परिस्थिति को तोल लिया था, हर बात के बारे में आखिरी फैसला कर लिया था। इस समय ऐसा लग रहा था जैसे कि सत्य की खोज के लिये वह कभी परेशान रहा ही नहीं था—हिचकिचाहटों, संकल्प-विकल्पों और पीडा से भरे अन्तर्संघर्षों के बीच से वह कभी गुजरा ही नहीं था। बादल की छाया की तरह यह सब कुछ हवा हो गया था, और इस समय अपनी तमाम खोजें उसे बेमतलब और छूछी मालूम हो रही थीं। आखिर सोचने-विचारने के लिये ऐसा था भी क्या ? बचाव का रास्ता निकालने के लिये, विरोधाभासों की गुत्थियां सुलझाने के लिये उसकी आत्मा बंधे गये भेड़िये की तरह तड़पती क्यों रही थी ?

पर, जीवन अब उसे बहुत ही आसान लगा—जितना वेहूदा, उतना ही बुद्धि से भरा हुआ। उसे ऐसा अनुभव हुआ कि ऐसी कोई सच्चाई नहीं, जिसके पक्ष के साये मे सभी लोग एक साथ सहारा पा सकें! उसने सोचा हर एक की अपनी सच्चाई होती है। हर एक की अपनी लीक होती है। रोटी के एक टुकडे के लिये, ज़मीन की एक टुकडी के लिये और ज़िन्दा रहने के हक़ के लिये लोग लडते रहे हैं, और जब तक चांद-सूरज रहेंगे, जब तक उनकी नसो मे खून रहेगा, तब तक लड़ते रहेंगे। जो लोग मेरी ज़िन्दगी से, मेरे जीने के हक़ से मुझे महरूम करना चाहते हैं, उनसे लोहा लिया जाना चाहिये, जमकर लोहा लिया जाना चाहिये, और इस्पाती-नफरत से भरकर लोहा लिया जाना चाहिये। मुझे अपने जज़्बातों पर लगाम नही लगानी चाहिये उन्हे ढील दे देनी चाहिये···कज़्ज़ाकों के जीने का तरीका रूस के बेज़मीन किसानों और कारखानो के कामगारों की ज़िन्दगी के आड़े आ गया है···इनमे आखिरी सास तक लड़ना चाहिये···दौलत से धनी, कज़्ज़ाको के खून से धुली दोन की धरती को इनसे छुटकारा दिलाना चाहिये···जिस तरह कभी तातारों को इलाके के बाहर खदेड़ भगाया गया था, वैसे ही इस वक्त इन्हे हाँककर सरहद के बाहर कर देना चाहिये···मास्को पर चोट करनी चाहिये···मास्को के लोगों का मुह बन्द किया जाना चाहिये···यह रास्ता ऐसा है कि दो वसूलों का इधर से एक साथ निकलना मुमकिन नही···एक-न-एक को तो धक्का देकर एक किनारे करना ही होगा। इम्तहान हो चुका है। लाल-रेजीमेंटों के लोग कज़्ज़ाक-इलाको मे आने दिये गये हैं और लोग देख चुके हैं कि वे कैसे और क्या है! अब पारी तलवार की है।

ग्रिगोरी के दिल में नफरत की एक अंधी आग धधकती रही और दोन के उस पार पहुच जाने तक वह अपना घोडा बराबर दौड़ाता रहा। इस बीच एक क्षण को उसके मन मे सन्देह जगा—यह मामला दूसरा है "एक तरफ कज़्ज़ाक और दूसरी तरफ रूसी नही हैं, बल्कि एक तरफ दौलत-वाले लोग हैं तो दूसरी तरफ गरीब लोग है···मीशा कोशेवोइ और इवान-अलेक्सेयेविच भी कज़्ज़ाक हैं, पर वे सिर से पैर तक लाल है···कम्युनिस्ट हैं'···परन्तु, उसने इस विचार को झटककर एक ओर कर दिया।

दूर तातारस्की भलका। ग्रिगोरी ने लगाम खींची तो भाग उगलता घोड़ा आराम की दुलकी-चाल में आ गया। अपने फाटक पर पहुंचने पर उसने फिर लगाम भटकी तो घोड़े ने टक्कर से छोटा फाटक खोला और उछलता हुआ अहाते में जा पहुंचा।

: २६ :

मीशा, थकान से चूर-चूर होने पर भी, तड़के घोड़े पर सवार हुआ और उस्त-खोपर्मकाया जिले के एक गाव में पहुंचा। वहां एक चौकी पर उसे एक लाल-रेजीमेंट ने रोका और लाल-गारद के दो लोग उसे स्टाफ-हेडक्वार्टर में ले आये। एक अफसर ने अविश्वास से भरकर उससे तरह-तरह के सवाल किये और आत्मविरोधी बातें कहलाने की कोशिश की। मीशा बेहूदे सवालों के जवाब देते-देते तग आ गया—सवाल बहुत से किये गये—जैसे—'आपकी क्रांतिकारी समिति का अध्यक्ष कौन है?'····'आपके पास कुछ भी कागजात क्यों नहीं हैं?'

"मुझे बहुत जकड़ने की कोशिश न कीजिये···कज्जाकों ने बड़े हाथ-पैर मारे लेकिन कुछ बात नहीं बनी।" उसने विरोध किया, अपनी कमीज उठाई और काटे से छलनी अपनी बगल दिखलाई। उसने तो अफसर को मुह पर गाली देने की बात सोची, और शब्द होंठों पर आये भी कि उसी क्षण स्तॉकमैन कहीं से आ टपका—

"कहो रईसजादे···शैतान की मौत!" स्तॉकमैन ने उसकी पीठ पर हाथ रखा तो उसकी गूजती हुई आवाज़ काँपने लगी—"तुम इससे जिरह क्या कर रहे हो, कॉमरेड?" वह अफसर की ओर मुड़ा—"यह तो हममें में ही एक है···तुमने मुझे या कोतल्यारोव को बुलवा लिया होता तो इस पूछताछ की ज़रूरत न पड़ती···आओ, मिखाइल! लेकिन, तुम बचकर निकले कैसे? मुझे बतलाओ कि तुम कैसे बचे? हमने तो तुम्हारा नाम जिन्दा लोगों की फ़ेहरिस्त से काट दिया था। हमने तो सोचा कि तुम्हें वीर-गति मिल गई।"

मीशा को सब कुछ याद आ गया कि उसे कैसे कैद किया गया, कैसे वह अपना बचाव नहीं कर सका और कैसे उसकी राइफिल स्लेज में पड़ी

रही। उसका दिल बहुत दुखा और उसका चेहरा तमतमा उठा।

: ३० :

ग्रिगोरी के तातारस्की में आने के दिन से अब तक कज्जाकों की दो टुकड़ियाँ वहाँ कभी की जमा की जा चुकी थीं। ग्राम-सभा ने हथियार चलाने लायक सोलह से सत्तर साल के बीच की उम्र के सभी लोगों को फौज में भरती करने का फैसला कर लिया था। कितने ही लोगों ने स्थिति की विवशता समझी थी। उत्तर में वोरोनेज-प्रान्त था। वह बोल्शेविकों के अधिकार में था। खोपर-जिला था। वहा के लोगों को बोल्शेविकों से हमदर्दी थी। दक्षिण में मोर्चा था। वह उलट सकता था, और विद्रोहियों को पटरा कर सकता था। कुछ जागरुक कज्जाक ऐसे थे जो हथियार उठाना नही चाहते थे, लेकिन वे भी मजबूर थे। पर, स्तेपान अस्ताखोव ने जाने और जाकर लड़ने के सवाल पर टके जैसा जवाब दे दिया था।

यानी, ग्रिगोरी, क्रिस्तोन्या और अनीकुश्का सवेरे उसके यहाँ गए, तो उसने ऐलान-सा किया—"मैं नही जाऊँगा···तुम लोग मेरा घोडा ले लो··· मेरे साथ जो चाहो सो करो, पर मैं राइफिल हाथ मे उठाना नही चाहता।"

" 'नही चाहता' से तुम्हारा क्या मतलब ?" ग्रिगोरी ने पूछा। उसके नथुने फड़फड़ाने लगे।

'मैं नही चाहता, और बस !"

"और, अगर लाल-गारद के लोग गाव ले लेगे तो तुम क्या करोगे ? यहा से दुम भाड़कर चले जाओगे या यही बने रहोगे ?"

स्तेपान ने अपनी स्थिर, दिल भेद देनेवाली नजर ग्रिगोरी से हटाकर अकसीनिया पर गड़ाई और जरा ठहरकर जवाब दिया—"देखा जाएगा ···यह बात हम लोग बाद में तय करेंगे।"

"अगर बात यह है तो बाहर निकलो ! पकड़ो इसे, क्रिस्तोन्या। हम तुम्हे देखते-देखते, अभी दीवार से सटाकर खड़ा करेंगे।" स्टोव के पास सिकुड़ी-मुकुड़ी खड़ी अकसीनिया की ओर से नजर बचाते हुए ग्रिगोरी ने लपककर स्तेपान की आस्तीन पकड़ी—"इधर आओ !"

"ग्रिगोरी, बेवकूफी न करो ! छोड़ दो।" स्तेपान पीला पड़ गया

और उसने हलके से हाथ छुड़ाने की कोशिश की। क्रिस्तोन्या ने पीछे से उसकी कमर जकड़ ली और बोला—"अगर तुम्हारा रवैया यह है तो आओ फिर!"

"भाइयो···"

"हम तुम्हारे कोई भाई-भाई नहीं हैं! इधर आओ···तुम्हें बतलाता हूं मैं!"

"मुझे छोड़ दो। मैं स्क्वैड्रन में शामिल हो जाऊंगा। टाइफस के बाद मैं कमजोर हो गया हूं।"

ग्रिगोरी मुसकराया और उसने स्तेपान की बाह छोड़ दी। बोला—"जाओ और राइफिल ले आओ···यही बात तुम्हें पहले ही कह देनी चाहिए थी।"

उसने अपने कोट के बटन बन्द किए, और अलविदा का एक शब्द कहे बिना बाहर निकल आया। लेकिन, इतना सब होने पर भी क्रिस्तोन्या को स्तेपान से तम्बाकू मागने में किसी तरह का कोई संकोच न हुआ, और वह बैठा इस तरह बातें करता रहा, जैसे कि उनके बीच कुछ हुआ ही न हो।

शाम होते-होते दो स्लेज-भर हथियार व्येशेन्स्काया से लाए गए। इनमें चौरासी राइफिलें और सौ से ज्यादा तलवारें रहीं। कितने ही कज्जाकों ने छिपे हुए हथियार निकाल लिए। गाव ने दो सौ ग्यारह कज्जाक इकट्ठा किए। इनमें से एक सौ पचास लोग घोड़ों पर सवार हो गए। बाकी पैदल चले।

पर, विद्रोही अब भी संगठित और व्यवस्थित न हुए थे। गांवों के बीच, आरम्भ में, कोई तालमेल न था। वे स्वतन्त्र-रूप से कार्य करते, स्क्वैड्रन बनाते, लड़ाकू से लड़ाकू कज्जाकों के बीच से कमांडेंट चुनते और पद वहों, मेवाओं पर दृष्टि रखते। उनकी अपनी ओर से हमले की कार्रवाई कोई न की जाती। आस-पास के गांवों से केवल सम्पर्क स्थापित किया जाता और गश्त के लिए घुड़सवार टुकड़ियां भेजी जातीं।

यानी, ग्रिगोरी के आने के पहले प्योत्र, तातारस्की की घुड़सवार-टुकड़ी का कमांडर चुन लिया गया था और लातिशेव पैदल-सेना का।

इवान-तोमिलिन के नेतृत्व में तोपची, पास के एक गाँव में गए थे और वहां छूट-गई लाल गारदों की एक तोप की मरम्मत करने की कोशिश कर रहे थे। व्येशेन्स्काया से लाए-गए हथियार कज्ज़ाकों के बीच बाट दिए गए थे। पँन्तेली को मोखोव के तहखाने से छुटकारा मिल गया था और उसने अपनी मशीनगन जमीन खोदकर बाहर निकाल ली थी। लेकिन कारतूस की पेटियां नहीं थीं, इसलिए स्क्वैड्रन ने उस मशीनगन को अपने साज-सामान में शामिल न किया था।

अगले दिन शाम को खबर आई कि लाल-फौजियों की एक टुकडी, विद्रोह दबाने के लिए कारगिन से चली है और इस ओर बराबर बढ़ती चली आ रही है। मालूम हुआ कि टुकडी मे तीन सौ फौजी, सात फील्ड-गनें और बारह मशीनगनें है। ऐसे में प्योत्र ने एक मजबूत गश्ती-टुकडी भेजने का इरादा किया, और साथ ही व्येशेन्स्काया को सूचना दे दी। सांझ का घुधलका होते-होते बत्तीस लोगो की टोली ग्रिगोरी की कमान में रवाना हो गई। टोली के लोग घोडे दौडाते गाव से निकले तो तोकिन तक उसी रफ्तार मे घोडे दौडाते चले गए। इस गाव से कोई दो सौ वर्स्ट इस तरफ एक छिछले नाले के पास ग्रिगोरी ने अपने कज्ज़ाको को घोड़ों से उतरने का हुक्म दिया, और उन्हे नाले भर मे बाँट दिया। घोडे बर्फ के अम्बारों से भरी एक घाटी मे ले जाए गए और पेट-पेट तक बर्फ में घस गए। एक स्टॅलियन ने वसन्त की मस्ती के कारण बहुत शोरगुल किया और बडी मुसीबत खड़ी की तो मजबूरन एक आदमी उसकी देख-रेख के लिए छोड दिया गया।

ग्रिगोरी ने अनीकुश्का, मार्तिन शामील और प्रोखोर ज़िकोव नामक तीन कज्ज़ाको को गाव मे भेजा। वे कदम-चाल से रवाना हुए।

तोकिन की बगीचियां, टालो की गहरी नीली पृष्ठभूमि मे दक्षिण-पूर्व की ओर टेढी-मेढी कतार मे फैली लगी। रात हो गई। बादल, नीचे उतर-कर, स्तेपी के ऊपर लटकते मालूम हुए।

सो, कज्ज़ाक नाले में चुपचाप बैठे रहे। ग्रिगोरी को तीनों घुड़सवारों की आकृतिया तब तक नज़र आती रही, जब तक कि पहाड़ी से नीचे उतरकर वे सड़क की काली रूपरेखा के साथ एकाकार नही हो गई। अब

उनके घोड़े नहीं, बल्कि केवल उनके सिर झलकने लगे। फिर, वे पूरी तरह अदृश्य हो गए। एकाध क्षण बाद पहाड़ी की दूसरी तरफ से एक मशीनगन दगी। फिर, एक दूसरी, स्पष्टतः छोटी मशीनगन ने और जोर की आवाज की। फिर वह शात हो गई, तो पहली मशीनगन ने जल्दी-जल्दी कारतूसों की एक दूसरी पेटी खाली कर दी। नाले के काफी ऊपर गोलियां सीटियां-सी वजाने और ओले-से बरसाने लगीं। इसी समय तीनों कज्ज़ाक पूरी रफ्तार से घोड़े दौड़ाते आए।

"हम तो एक फौजी-चौकी से टकर गए"—प्रोखोर जिकोव काफी दूर से ही चिल्लाया और उसकी आवाज़ घोड़ों के खुरों से पैदा होनेवाली गरज में डूब गई।

ग्रिगोरी ने घोड़ों को तैयार रखने का हुक्म दिया, कूदकर नाले से बाहर आया और हवा में सर्राटे भरने के बाद बर्फ में धँसती हुई गोलियों की चिन्ता न कर कज्ज़ाकों से मिलने को चला, पूछा—'तुमने कुछ देखा ?"

"हमने उनके इधर-उधर आने-जाने की आहट पाई···आवाज़ से लगता है कि गिनती में काफी हैं।" अनीकुश्का ने हाफते हुए कहा और रकाब मे अटके अपने बूट की तरफ हाथ बढाया।

इधर ग्रिगोरी इन तीन घुडसवारों से पूछताछ करता रहा और उधर आठ कज्ज़ाक झटके से नाले के बाहर निकले, घोड़ों की ओर बढ़े, उन पर सवार हुए और घर-गाव की ओर उन्हें दौडा चले।

"हम इन्हें कल गोली से उड़ा देंगे!" ग्रिगोरी ने, पीछे जाते घोड़ों की टापों की आवाज सुनकर, शात-भाव से कहा।

उसकी कमान के बचे हुए कज्ज़ाक एक घंटे तक और बिलकुल मुंह सिये और आहट पर कान लगाए बैठे रहे। आखिरकार घोड़ों की टपा-टप किसी के कानों मे पड़ी। उसने ऐलान किया—"लोग लोकिन की तरफ से आ रहे हैं···"

"गलत है ?"

"हो सकती है।"

लोग एक-दूसरे के कानों मे फुसफुसाने, नाले से मुंह निकाल-निकाल-